

प्रबन्ध सम्पादक :

श्रीचन्द्र रामपुरिया,

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग
(जैन विश्व भारती)

प्रकाशन तिथि

विक्रम संवत् २०३१

कार्तिक कृष्ण १३

(२५०० वा निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक ११५०

मूल्य : ६०)

स्व० श्री बिरघोचन्द्रजी गोठी

एवं

मदनचन्द्रजी गोठी

की

पुण्य स्मृति

में

श्री जयचन्द्रलालजी

सूरजमलजी गोठी

परिवार (सरदारशहर)

के

आर्थिक सौजन्य

से

प्रकाशित

मुद्रक —

एस. नारायण एण्ड सन्स (प्रिंटिंग प्रेस)

७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI
II
BHAGAWAI
VIĀHAPANNATTI

(Bhagawati Sūtra with Original Text Critically edited)

Vācānā PRAMUKHA
ĀCHĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VIŚWA BHĀRATI
LADNUN
(Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.

Director :

Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvana Day

Pages 1150

Rs. 90/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

**Published by the kind
munificence of the members**

**of the family of
Sri Jaichand Lal
Surajmal Gouti
(Sardar Shahar)**

**in sacred memory of
Birdhichandji Gouti
and
Madan Chandji Gouti**

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। सकल्प फलवान् बना और वैसे ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समझागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में सविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह सविभाग इस प्रकार है—

संपादक :	सहयोगी	मुनि नथमल
पाठ-संशोधन :	”	मुनि दुलहराज
	”	मुनि सुदर्शन
	”	मुनि मधुकर
	”	मुनि हीरालाल

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

—

समर्पण

पुढो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं ।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भित्तुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं ।
सज्जाय - सज्जाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं ॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पट्ट,
होकर भी आगम-प्रधान था ।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत ।
श्रुत-सद्व्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से ।

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल सघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ।

ग्रन्थानुक्रम

१. प्रकाशकीय
२. सम्पादकीय (हिन्दी)
३. सूमिका (हिन्दी)
४. सम्पादकीय (अंग्रेजी)
५. सूमिका (अंग्रेजी)
६. विषयानुक्रम
७. संकेत निर्देशिका
८. भगवई : विस्महाहपणत्ती

परिशिष्ट

१. संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल
२. पूरक पाठ
३. शुद्धिपत्रम्

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुंचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी राका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गईं और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्द्रजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लाडूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री सतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से बोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। प्रति-क्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काँच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तैरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका सयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड और मै प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहाँ महासभा के सभापति श्री हनुमान-मलजी वैगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से '६६ मील दूर लाडनूँ (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो सयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य हाथ में लिया। स० २०१३ में लाडनूँ में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—“ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।” आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन कीरूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला . मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला . मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमो का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमो के समीक्षात्मक अध्ययनो का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमो से सम्बन्धित कथाओं का सकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला . आगमो का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रन्थमाला में—(१) दशवेआलिय तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आगारो तह आगारचूला, (३) निसीहज्झयण, (४) उववाइय और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइय एव सुयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दशवेआलिय एव (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायाग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रथमाला में कोई ग्रथ प्रकाशित नहीं हुआ ।

पाँचवी ग्रथमाला में दो ग्रथ निकल चुके हैं - १. दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और २. उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २) ।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एव कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा । अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एव उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था । भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूँज रहे हैं—
“धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार है, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?” उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा ।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया ।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के सग्रह और मुद्रण का कार्य अब ‘जैन विश्व भारती’ के अचल से हो रहा है । प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में ‘अगसुत्ताणि’ के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं ।

दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है ।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं ।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन ‘आगम-सुत्त ग्रथमाला’ की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है ।

ठाणाग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रथमाला के तीसरे ग्रथ के रूप में प्रस्तुत होगा ।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में ‘दशवैकालिक और उत्तराध्ययन’ का प्रकाशन हुआ है, जो एक नई योजना के रूप में है । इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है ।

दशवैकालिक एव उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है ।

‘जैन विश्व भारती’ की इस अंग एव अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है ।

मुद्रण-कार्य मे एस० नारायण एण्ड सस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने मे श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे वन्यवाद के पात्र है। इस सम्बन्ध मे श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

कार्य की प्रारम्भिक व्यवस्था मे जैन विश्व भारती के उपसभापति श्री माणिकचन्द जी सेठिया एव श्री मोतीलालजी नाहुटा ने मुझे बड़ा ही सहयोग दिया।

‘जैन विश्व भारती’ के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोडिया तथा कार्य समिति के अन्यन्त्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

सन् १९७३ मे मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था मे लगा। आचार्यश्री यात्रा मे थे। दिल्ली मुद्रण की व्यवस्था बैठाई। कार्यारम्भ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था मे विलंब होने से कार्य मे द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय मे इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम मे ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण ‘जैन विश्व भारती’ के प्रारम्भिक उपहार के रूप मे उस समय जनता के कर-कमलों मे आ रहे हैं, जबकि जगत्तद्वय श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, असादी रोड

२१, दरियागज

दिल्ली-६

श्रीचन्द रासपुरिया

निदेशक

आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग

जैन विश्व भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अग-प्रविण्ट और अंग-ब्राह्म। अग-प्रविण्ट सूत्र महा-वीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी सख्या बारह है—१ आचाराग २. सूत्रकृतांग ३ स्थानाग ४ समवायाग ५ व्याख्या-प्रज्ञप्ति ६ ज्ञातावर्मकथा ७ उपासकदशा ८ अतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदशा १० प्रश्न-व्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवा अग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अग हैं,—१. आचाराग २. सूत्रकृतांग ३ स्थानाग और ४ समवायाग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अग।

प्रस्तुत भाग अग साहित्य का दूसरा भाग है। इसमें व्याख्याप्रज्ञप्ति का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में सक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अगों की भूमिका और पांचवे भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

प्रस्तुत आगम का पाठ-संशोधन सात प्रतियों और टीकाओं के आधार पर किया गया है। हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रसंग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूल पाठ का निर्धारण करते हैं। प्रस्तुत सूत्र की मूल टीका आज उपलब्ध नहीं है। चूर्ण उपलब्ध है किन्तु वह हमें प्राप्त नहीं हुई। अभयदेव सूरि ने अपनी वृत्ति में जहा-जहा मूल टीका और चूर्ण को उद्धृत किया है, उसका भी हमने पाठ-निर्धारण में उपयोग किया है। लिपिकारों ने समय-समय पर पाठ का संक्षेप किया है। उस संक्षेपीकरण के अनेक रूप मिलते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त प्रतियों में क्रोडोपयुक्त आदि भगों की चार वाचनाएँ मिलती हैं। उनमें पाठ का संक्षेप भिन्न-भिन्न प्रकार से किया गया है, देखें—आगम पृ० ३६। लिपिभेद के कारण भी पाठ में गलतियाँ हुई हैं। १।३६५ सूत्र में प्रादोषिकी क्रिया के लिए 'पाओसियाए' पाठ है। कुछ प्रतियों में 'पाउसियाए' पाठ मिलता है। प्राचीन लिपि में 'ओ'

और 'उ' का भेद करना कठिन होता है। यही कारण है कि आधुनिक प्रतियों में बहुलतया 'ओ' के स्थान में 'उ' मिलता है। जो प्रतिया भाषाविद् लिपिकारों द्वारा लिखी गईं, उनमें 'ओकार' मिलता है, किन्तु जो केवल लिपिकों द्वारा लिखी गईं, उनमें 'ओकार' के स्थान में 'उकार' हो गया। 'ओवासतरे' और 'उवासतरे' यह पाठ-भेद भी उक्त कारण से ही हुआ है। देखे—सूत्र १।३६२ (पृ० ६६), सूत्र १।४४४ (पृ० ७७)।

८।२४२ सूत्र में 'छेत्तेहि' पाठ है। लिपिभेद होते-होते 'वित्तेहि', 'छत्तेहि', 'चित्तेहि'—इस प्रकार अनेक पाठ बन गए। ८।३०१ में 'तदा' के स्थान पर 'तहा' पाठ हो गया।

कुछ प्रतियों में सक्षिप्त वाचना है। वृत्तिकार को भी सक्षिप्त वाचना प्राप्त हुई थी इसलिए उन्होंने लिखा कि अन्ययूथिक वक्तव्यता स्वयं उच्चारणीय है। ग्रन्थ के बड़ा होने के भय से वह लिखी नहीं गई। वृत्तिकार ने वृत्ति में सक्षिप्त पाठ को पूर्ण किया। कुछ लिपिकों ने वृत्ति के पाठ को मूल में लिखा और पूर्ण पाठ की वाचना सक्षिप्त पाठ की वाचना से भिन्न हो गई।

कुछ आदर्शों में सक्षिप्त और विस्तृत—दोनों वाचनाओं का मिश्रण मिलता है। सूत्र २।४७ (पृ० ८८) में 'खदया पुच्छा' यह सक्षिप्त पाठ है। किसी लिपिकार ने प्रति के हासिये (Margin) में अपनी जानकारी के लिए इसका पूरा पाठ लिख दिया और उसकी प्रतिलिपियों में सक्षिप्त और विस्तृत—दोनों पाठ मूल में लिख दिए गए, देखें—५।१२२ सूत्र का पादटिप्पण (पृ० २०६), २।११८ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० ११२)। १।१५६ में पूरा पाठ और 'जहा ओवाइय' यह सक्षिप्त पाठ—दोनों साथ-साथ लिखे हुए हैं। असोच्चा केवली के प्रकरण में भी ऐसा ही मिलता है। कुछ प्रतियों में वृत्ति में उद्धृत पाठ का समावेश हुआ है, देखें—२।७५ सूत्र का दूसरा पादटिप्पण (पृ० ६६)। कहीं-कहीं वृत्तिकार द्वारा किया हुआ वैकल्पिक अर्थ भी उत्तरवर्ती प्रतियों में मूल पाठ के रूप में स्वीकृत हो गया, देखे—५।५१ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० १६४)।

पाठ-संशोधन में दूसरे आगमों के पाठों को भी आधार माना जाता है। २।६४ सूत्र में 'न्वियततेउरघरप्पवेसा' इस पाठ के अनन्तर सभी प्रतियों में 'बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोवासेहि' यह पाठ है। वहा इसकी अर्थ-संगति नहीं होने के कारण वृत्तिकार को 'तैर्युक्ता इति गम्य' यह लिखना पड़ा, किन्तु ओवाइय और रायपसेणइय सूत्र को देखने से पता चलता है कि उक्त पाठ प्रतियों में जहा लिखित है वहां नहीं होना चाहिए। उक्त दोनों सूत्रों के आधार पर आलोच्य पाठ का क्रम इस प्रकार बनता है—'ओसह-भेसज्जेण पडिलाभेमाणा बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोवासेहि अहापरिग्गहिहि तवोक्कमेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति।'।

२।२१ सूत्र में सभी आदर्शों में 'सारकल्लाण जाव केवइ' पाठ लिखित है, किन्तु यहां 'जाव' का कोई प्रयोजन नहीं है। भगवती ८।२१७ तथा प्रज्ञापना के प्रथम पद के आधार पर 'जाव' के स्थान पर 'जावनि' पाठ प्रमाणित होता है।

पाठ में वर्ण-परिवर्तन से बहुत बार अर्थ नहीं बदलता किन्तु कही-कही अर्थ समझने में कठिनाई होती है और वह बदल भी जाता है। ६।१० सूत्र में 'हृव्वि' पाठ है उसके 'हेट्टि' और 'हिट्टि'—ये दो पाठान्तर मिलते हैं। वृत्तिकार अभयदेवसूरि ने यहाँ 'हृव्वि' का अर्थ 'सम' किया है, देखे—वृत्ति पत्र २७१। स्थानाग सूत्र (८।४३) में इसी प्रकरण में 'हेट्टि' पाठ है। वहाँ अभयदेवसूरि ने उसका अर्थ 'ब्रह्मलोक के नीचे' किया है, देखे—स्थानागवृत्ति पत्र ४१०।

कही-कही लेखक के समझभेद और लिपिभेद के कारण भी पाठ का परिवर्तन हुआ है। ६।१६५ सूत्र में 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी' पाठ है। कुछ प्रतियों में यह पाठ 'उवधरेमाणीओ-उवधरेमाणीओ' इस रूप में मिलता है। एक प्रति में यह पाठ 'उवरिधरेमाणीओ-उवरिधरेमाणीओ' इस रूप में बदल गया।

पाठ-परिवर्तन के कुछेक उदाहरण इसलिए प्रस्तुत किए गए हैं कि पाठ-संशोधन में केवल प्रतियों या किसी एक प्रति को आधार नहीं माना जा सकता। विभिन्न आगमों, उनकी व्याख्याओं और अर्थसंगति के आधार पर ही पाठ का निर्धारण किया जा सकता है।

संक्षेपीकरण और पाठ-संशोधन की समस्या

देवर्धगणि ने जब आगम सूत्र लिखे तब उन्होंने संक्षेपीकरण की जो शैली अपनाई उसका प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करना बहुत कठिन कार्य है और वह कठिन इसलिए है कि उत्तरकाल में अनेक आगमधरो ने अनेक बार आगम पाठों का संक्षेपीकरण किया है। संभव है कुछ लिपिकों ने भी लेखन की सुविधा के लिए पाठ-संक्षेप किया है।

१३।२५ सूत्र के सक्षिप्त पाठ में भवनपति देवों के प्रकार आदि जानने के लिए दूसरे शतक के देवोद्देशक की सूचना दी गई है, किन्तु वहाँ (२।११७, पृ० १११) विस्तृत पाठ नहीं है अपितु प्रज्ञापना के स्थानपद को देखने की सूचना मिलती है। १६।३३ सूत्र के सक्षिप्त पाठ में तृतीय शतक (सूत्र २७, पृ० १३०) देखने की सूचना दी गई है, किन्तु वहाँ पाठ पूरा नहीं है। वहाँ 'रायपसेणइय' सूत्र देखने की सूचना दी गई है।

१६।७१ सूत्र के सक्षिप्त पाठ में उद्रायण का प्रकरण (१३।११७, पृ० ६१४) देखने की सूचना है। वहाँ पाठ पूरा नहीं है। इसी प्रकार १६।१२१, १८।५६, १९।७७ में विस्तृत पाठ की सूचनाएँ हैं, किन्तु सूचित स्थलों में पाठ विस्तृत नहीं है।

उक्त सूचनाओं के आधार पर यह अनुमान होता है कि जिस समय में पाठ सक्षिप्त किए गए उस समय सूचित स्थलों के पाठ पूर्ण थे। उसके पश्चात् किसी अनुयोगधर आचार्य ने उन पूर्ण पाठों का भी संक्षेपीकरण कर दिया। संक्षेपीकरण के लिए 'जाव', 'जहाँ' आदि पदों का प्रयोग किया गया है। कही-कही 'जाव' का अनावश्यक-सा प्रयोग हुआ है। वह या तो लिपिक का प्रमाद रहा है या प्रवाह के रूप में वह लिखा गया है। जहाँ 'जाव' का प्रयोग है वहाँ लिपिकारों ने पर्याप्त स्वतंत्रता वरती है। किसी ने 'पावफल जाव कज्जति' लिखा है तो किसी ने 'पावफलविवाग जाव कज्जति' लिखा है। कही-कही 'विद' (७।१६६), 'पयोग' (८।१७), 'सहस्स' (१६।१०३) जैसे छोटे

पाठो के स्थान पर भी 'जाव' पद लिखा हुआ मिलता है। इस प्रकार के पाठ-संक्षेप लिपिकारों द्वारा समय-समय पर किए हुए प्रतीत होते हैं।

वर्तमान में प्रस्तुत आगम की मुख्य दो वाचनाएँ मिलती हैं—सक्षिप्त और विस्तृत। सक्षिप्त वाचना का ग्रन्थ परिमाण १५७५१ अनुष्टुप् श्लोक परिमाण माना जाता है। विस्तृत वाचना का ग्रन्थ परिमाण सवा लाख अनुष्टुप् श्लोक माना जाता है। अभयदेवसूरि ने सक्षिप्त वाचना को ही आधार मानकर प्रस्तुत आगम की वृत्ति लिखी है। हमने इस पाठ संपादन में 'जाव' आदि पदों द्वारा सम्पित पाठों की यथावश्यक पूर्ति की है। उससे इसका ग्रन्थ परिमाण १६३१६ अनुष्टुप् श्लोक, १६ अक्षर अधिक हो गया है।

शब्दान्तर और रूपान्तर

१।४६	निगम	नियम	(ता)
१।२२४	अप्पिया	अप्पिता	(क)
१।२२४	एतेसि	तेतेसि	(क, ता, म)
१।२३७	वइ०	वत्ति०	(ता)
१।२३६	वइ०	वयि०	(ता)
१।२४५	मायो	माओ०	(ता)
१।२७३	पोयत्त	पोदत्त	(क, ता, व, म, स)
१।२७६	कज्जइ	किज्जइ	(व, स)
१।२८१	पाणाइवाय	पाणायवाय	(स)
१।२८१	नेरइयाण	नेरत्तियाणं	(अ, व, स)
१।२९८।२	उवओगे	ओवओगे	(ता)
१।३१५	अहे	अघे	(ता)
१।३५४	करेज्ज	करिज्ज करेज्जा	(क) (स)
१।३५७	दुहिण	दुक्खिण	(क, ता, म)
१।३५७	दुग्गवे	दुग्गवे	(अ, म, स)
१।३६३	आरिय	यारिय	(क, ता)
१।३६४	चउ	चतु	(ता)
१।३६५	पाओसिया	पायोसिया	(अ, व)
१।३७०	सय	सत्त	(ता)
१।३७१	सघेज्जमाणे	सघेज्जमाणे	(ता)
१।३७१	निसिद्धे	निसिद्धे	(क, ता)
१।३७१	काइयाए	कात्तियाए	(ता)
१।३८५	पाणाइवाय०	पाणायवाय०	(व, स)

१।३८६	ह्रस्वी	हुस्वी, ह्रस्वी	ह्रस्वी (क) (व); (स);
१।४१५	जहा	जघा	(अ, व, स)
१।४२४	सामाङ्यस्स	सामातियस्स	(ता)
१।४२५	जइ	जति	(अ, क, व, म, स)
१।४३४	किवणस्स	किविणस्स	(ता)
२।२६	मागहा	मागघा	(ता)
२।४१	वियट्टभोई	वियट्टभोती	(अ, ता, व, म, स)
२।५७	सामाङ्यमाङ्याड	सामाङ्यमादीयाति सामातियमातियाइ(स) (क)	
२।६६	घमणि०	घवणि०	(क, ता, व, म)
२।६६	रयणीए	रत्तणीए	(ता)
२।६८	आरुहेइ	आरुभेइ	(क, म)
२।६८	खाडमसाडम	खातिमसातिम	(व, स)
२।६८	सयमेव	सतमेव	(ता)
२।६४	अवगुय०	अवगुत०	(म)
२।६४	खाडमसाडमेण	खातिमसातिमेण	(व, स)
३।४	अयमेयारुवे	अतमेयारुवे	(ता)
३।२१	ईसाणे	तीसाणे	(ता)
३।२५	मोयाओ	मोतातो	(क, ता)
३।३३	खाडमसाडमेण	खातिमसातिमेण	(व, स)
३।११२	सयणिज्जाओ	सतणिज्जाओ	(ता)
३।११२	तिवति	तिपति	(ता)
३।१४३	वेयति	वेदति	(ता)
३।१४८	समय०	समत०	(ता)
५।३	‘पडीण’	‘पदीण’	(ता, म)
५।६०	आत्तए	आत्तगे	(ता)
५।७६	रयहरणमायाए	रत्तहरणमाताए	(ता)
५।८२	वेदावडिय	वेदावडिय	(व, म)
५।११०	समयसि	समतसि	(ता)
५।१३६	‘लोडिय’	‘लोतिय’	(अ, स)
६।६३	सकसाईहि	सकसादीहि	(ता)
६।६३	सजोगी	सजोति	(ता)
६।७६	नागो	नाओ	(ता, म)
६।६०	कण्हरातीओ	कण्हरायीतो	(व)

६।१६६	कालग	कालत	(क)
७।१७६	० जय ०	० जत ०	(ब)
७।२१३	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
८।२४८	अणुप्पदायव्वे	अणुप्पत्तातव्वे	(ता)
८।३१५	गोय	गोद	(ब)
८।३४७	अणादीय०	अणातीत०	(ता)
८।४२०	सातणयाए	सादणताए	(क, व, म)
८।४३१	इस्सरिय०	दिस्सरिय०	(म)
८।४३१	इस्सरिय	तिस्सरिय०	(म)
९।४३	सकसाई	सकसादी	(अ, ता)
९।९४	अहिओ (अ),	अहितो अधितो	(क) (ता)
९।१७४	मय०	मद० मत०	(ता) (ब)
९।१६९	सवणयाए	समणयाए	(अ)
११।१३३	धूव	धूम	(ता)
११।१३४	नीव	नीम	(ता, ब)
११।१४२	पउमसर	पदुमसर	(ता)
१६।११३	नियम	नितम	(ब)
१७।३८	एयणा	एतणा	(ता, व)
१८।१००	मायिमिच्छ०	मादिमिच्छ०	(ब)
१९।८५	जति इदियाणि	जदिदियाणि	(ता)
३०।२२	सजोगी	सजोती	(ख)

प्रति परिचय

(अ) भगवती वृत्ति (पंचपाठी) मूलपाठ सहित (हस्तलिखित)

यह प्रति गवैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र १८९ तथा पृष्ठ ३७८ है। प्रत्येक पत्र १३ $\frac{१}{२}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। पत्रों में मूलपाठ की १ से २३ तक पक्तियाँ हैं। प्रत्येक पक्ति में ८० से ८५ तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक ढंग से लिखी गई है। बीच में बावड़ी भी है। लिपि-सवत् नहीं लिखा गया है। अनुमानत यह प्रति १५-१६ वीं शताब्दि की लगती है।

(क) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति पुनमचन्द बुधमल दूधोड़िया, छापर के संग्रहालय की है। इसके पत्र ३३३ व पृष्ठ ६६६ है। प्रत्येक पत्र १० $\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पक्तियाँ

तथा प्रत्येक पंक्ति में ५२ से ५५ तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर और कलात्मक है। बीच-बीच में लाल पाइया तथा बावड़ी है। लिपि-सवत् नहीं दिया गया है। यह प्रति अनुमानत १६ वीं सदी की है।

(ख) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४२२ तथा पृष्ठ ८४४ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ३ से ६ तक पक्तियां तथा प्रत्येक पक्ति में १३० से १४० तक अक्षर हैं। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

॥ छ ॥ भगल महा श्रीः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ रा ॥

लिपि-सवत् नहीं दिया गया है। यह प्रति अनुमानत. १२ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(ता) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ३४८ तथा पृष्ठ ६६६ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ५ से ६ तक पक्तियां और प्रत्येक पक्ति में १३० से १४० तक अक्षर हैं। अंतिम पत्र पर चित्र किये हुए हैं।

अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

। छ । भगवद् समता ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ सवत् १२३५ विशाख वदि एकादश्या गुरौ अपरान्हे लेखकवणचडेन लिखितमिति ॥

(ब) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति तेरापथी सभा, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४७८ तथा ६५६ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र १० $\frac{१}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १६ पक्तियां तथा प्रत्येक पक्ति में ३८ से ४२ अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक है। प्रत्येक पत्र में तीन स्थानों पर बावड़ी तथा लाल लाइन है और हरताल से काम किया हुआ है। अंतिम प्रशस्ति के अभाव में लिपि-सवत् अज्ञात है। यह अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की प्रति लगती है।

(म) भगवती सूत्र मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४८२ तथा पृष्ठ ६६४ हैं। प्रत्येक पत्र १० $\frac{१}{४}$ इंच लम्बा तथा ४ $\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १३ पक्तियां तथा प्रत्येक पक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पत्रों के बीच-बीच में लाल पाइया तथा बावड़ी है।

इसके अन्त में लिपि-सवत् दिया हुआ नहीं है, पर यह प्रति लगभग १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

॥ छ ॥ ग्रंथाग्र १५७७५ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ श्री ॥

छ ॥ श्री कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥ छ ॥

प्रति में अनेक स्थलों पर मस्कृत में टिप्पण भी दिये हुए हैं ।

(स) भगवती सूत्र (त्रिपाठी)

केसर भगवती नाम से ख्यात यह प्रति हमारे संघीय पुस्तकालय की है । इसके ६०२ पत्र तथा १२०४ पृष्ठ हैं । पत्र के मध्य में मूल पाठ तथा ऊपर नीचे वृत्ति लिखी गई है । यह प्रति सुन्दर और काफी शुद्ध है । किसी पाठक ने भुवित प्रति को प्रमाण मानकर स्थान-स्थान पर हस्ताल लगाकर इसे शुद्ध करने का प्रयत्न किया है । जहाँ ऐसा किया गया है वहाँ प्रायः शुद्ध पाठ अशुद्ध बन गया है । इसके प्रत्येक पृष्ठ में मूल पाठ की ४ से १५ तक पक्तियाँ और प्रत्येक पक्ति में ४५ से ५३ तक अक्षर हैं । प्रशस्ति में लिखा है—

श्री भगवती सूत्र सम्पूर्ण ॥ छ ॥ श्री विवाहपञ्चती पंचम अंग सम्मत्त ॥ शुभ भवतु ।
ग्रंथाग्र १५६७५ उभयमीलने ग्र० ३४२६१ ॥ श्री ॥ लिखित यती डाहामल्ल श्री नागोरमव्ये
स० १८४८ माह शु १५ ।

वृ (वृपा) भुवित

प्रकाशक — श्रीमती आगमोदय समिति ।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है । आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं । देवद्विगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई । उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए । उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी । आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका । अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने-आप सामूहिक हो जाएगी । इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं । वाचना का अर्थ अध्यापन है । हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि । इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है । यही हमारा इस गुस्तर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है ।

मै आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सवल पा और अधिक भारी बनू ।

प्रस्तुत आगम के सम्पादन में पाठ-सम्पादन के स्थायी सहयोगी मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी और हीरालालजी के अतिरिक्त मुनिश्री कानमल जी, छत्रमलजी, अमोलकचन्दजी, दिनकरजी, -पूनमचन्दजी, कन्हैयालालजी, राजकरणजी, ताराचन्दजी, बालचन्द्रजी, विजयरामजी, मणिलालजी, महेन्द्रकुमारजी (द्वितीय), सम्पतमलजी (द्वैगर्गद), शान्तिकुमारजी, मोहनलालजी (शार्दूल) और श्रीमन्नालाल जी बोरह का योग रहा है । पाठ-सम्पादन का कार्य स० २०२६ पौष कृष्ण ९ (२८ दिसम्बर १९७२) को सरदारशहर (राजस्थान) में आरम्भ किया गया और वह स० २०३० फाल्गुन शुक्ला ११ (४ मार्च १९७४) को दिल्ली में पूरा हुआ ।

प्रति शोधन में मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी और दुलहराजजी ने बहुत श्रम किया है । इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी आमेट ने तैयार किया है ।

कार्यनिष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता । यदि वे आज होते तो भगवती के कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता ।

आगम के प्रवक्त्र सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में सलग्न रहे हैं । आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-सकल्प और प्रयत्नशील हैं । अपने सुव्यवस्थित बकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं । 'अगमुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है ।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है ।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्तिमात्र है । वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है ।

अणुव्रत विहार

नई दिल्ली

१-१०-७४

मुनि नथमल

संज्ञक भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदार शहर) ।

संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारकाहर) ।

आइमाणां अहं सयाणां वादासगाभदिसिक्कतिगावर्तववसपापटमदितरसअमदितियदिवासादाउदि
मगा॥ उदिसिक्कतिगावमातोसयातो॥ आरुकावतियकावववववतितावविद्या॥ मउदिसिक्कतिगावकोसगासं
तापिगादिशसगासकिमगा॥ दादिदिसिदिसगजहासगेतिदिदिवासादिमतोएवजावदीसदिसमतान
वरोमासालाएगदिवसगाउदिसिक्कतिजदिटियापगणसिवआयव्विलेणअसएजतिअदगादि
तोआयविलेवाउगअसुणकाशिएववीसवावोसमयादीसइसयादीयाक्कअदिवसगाउदि
सिक्कतिवउवोसतिमहादिवासादि॥ वउदिसिक्कतिगावमातोसयातो॥ आरुकावतियकाववववतितावविद्या॥ मउदिसिक्कतिगावकोसगासं
सगवसियायियाअवसयाइयागगा
वाउअसयाइ॥ वारसयागाएवावदियाणा
दियाणा॥ वारससमियएदियमदाऊमसयाइ॥
पगदिवसगाउदिसिक्कति॥ यसाया॥ गउदिसिक्कतिगावकोसगासं
सगवोसउरतिअदीरादीउरकोइयासुदावोकाणावनेहीमितीयावनेह॥ संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारकाहर) ।

‘व’ संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारकाहर) ।

[illegible][illegible][illegible][illegible]

THE UNIVERSITY OF CHICAGO LIBRARY

100

‘अ’ संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (गणेशदास गवैया हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर) ।

‘ता’ संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (जिसलमेर जैन ज्ञान भंडार) ।

'ता' संज्ञक ताडपत्रीय सगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार) ।

भूमिका

नामकरण

प्रस्तुत आगम का नाम व्याख्याप्रज्ञप्ति है। प्रश्नोत्तर की शैली में लिखा जाने वाला ग्रन्थ व्याख्याप्रज्ञप्ति कहलाता है। समवायाग और नन्दी के अनुसार प्रस्तुत आगम में छत्तीस हजार प्रश्नों का व्याकरण है^१। तत्त्वार्थवार्तिक, षट्खण्डागम और कसायपाहुड के अनुसार प्रस्तुत आगम में साठ हजार प्रश्नों का व्याकरण है^२।

प्रस्तुत आगम का वर्तमान आकार अन्य आगमों की अपेक्षा अधिक विशाल है। इसमें विषयवस्तु की विविधता है। सम्भवतः विश्वविद्या की कोई भी ऐसी शाखा नहीं होगी जिसकी इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में चर्चा न हो। उक्त दृष्टिकोण से इस आगम के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव रहा। फलतः इसके नाम के साथ 'भगवती' विशेषण जुड़ गया, जैसे—भगवती व्याख्या-प्रज्ञप्ति। अनेक शाताब्दियों पूर्व 'भगवती' विशेषण न रहकर स्वतन्त्र नाम हो गया। वर्तमान में व्याख्याप्रज्ञप्ति की अपेक्षा 'भगवती' नाम अधिक प्रचलित है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय के सम्बन्ध में अनेक सूचनाएँ मिलती हैं। समवायाग में बताया गया है कि अनेकों देवों, राजों और राजर्षियों ने भगवान् से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे और भगवान् ने विस्तार से उनका उत्तर दिया। इसमें स्वसमय, परसमय, जीव, अजीव, लोक और अलोक व्याख्यात हैं^३। आचार्य अकलक के अनुसार प्रस्तुत आगम में जीव है या नहीं है—इस प्रकार के अनेक प्रश्न निरूपित हैं^४। आचार्य वीरसेन के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रश्नोत्तरों के साथ-साथ छिद्यानवे हजार छिन्नच्छेद नयों^५ से ज्ञापनीय शुभ और अशुभ का वर्णन है^६।

१ समवायो, सूत्र ६३; नदी, सूत्र ८५।

२ तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, षट्खण्डागम १, पृ० १०१, कसायपाहुड १, पृ० १२५।

३. समवायो, सूत्र ६३।

४. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।

५ जिस व्याख्या पद्धति में प्रत्येक श्लोक और सूत्र की स्वतन्त्र, दूसरे श्लोकों और सूत्रों से निरपेक्ष व्याख्या की जाती है उस व्याख्यापद्धति का नाम छिन्नच्छेद नय है।

६ कसायपाहुड भाग १, पृ० १२५।

उक्त सूचनाओं से प्रस्तुत आगम का महत्व जाना जा सकता है। वर्तमान विज्ञान की अनेक शाखाओं ने अनेक नए रहस्यों का उद्घाटन किया है। हम प्रस्तुत आगम की गहराइयों में जाते हैं तो हमें प्रतीत होता है कि इन रहस्यों का उद्घाटन ढाई हजार वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

भगवान् महावीर ने जीवों के छह निकाय वतलाए। उनमें त्रस निकाय के जीव प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। वनस्पति निकाय के जीव अब विज्ञान द्वारा भी सम्मत हैं। पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु—इन चार निकायों के जीव विज्ञान द्वारा स्वीकृत नहीं हुए। भगवान् महावीर ने पृथ्वी आदि जीवों का केवल अस्तित्व ही नहीं वतलाया, उनका जीवनमान, आहार, श्वास, चैतन्य-विकास सज्ञाएं आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। पृथ्वीकायिक जीवों का न्यूनतम जीवनकाल अन्तर्-मुहूर्त का और उत्कृष्ट जीवनकाल बाईस हजार वर्ष का होता है। वे श्वास निश्चित क्रम से नहीं लेते—कभी कम समय से और कभी अधिक समय से लेते हैं। उनमें आहार की इच्छा होती है। वे प्रतिक्षण आहार लेते हैं। उनमें स्पर्शनेन्द्रिय का चैतन्य स्पष्ट होता है। चैतन्य की अन्य धारायें अस्पष्ट होती हैं।

मनुष्य जैसे श्वासकाल में प्राणवायु का ग्रहण करता है वैसे पृथ्वीकाय के जीव श्वासकाल में केवल वायु को ही ग्रहण नहीं करते किन्तु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति—इन सभी के पुद्गलों को ग्रहण करते हैं^१।

पृथ्वी की भांति पानी आदि के जीव भी श्वास लेते हैं, आहार आदि करते हैं। वर्तमान विज्ञान ने वनस्पति जीवों के विविध पक्षों का अध्ययन कर उनके रहस्यों को अनावृत किया है, किन्तु पृथ्वी आदि के जीवों पर पर्याप्त शोध नहीं की। वनस्पति क्रोध और प्रेम प्रदर्शित करती है। प्रेमपूर्ण व्यवहार से वह प्रफुल्लित होती है और घृणापूर्ण व्यवहार से वह मुरझा जाती है। विज्ञान के ये परीक्षण हमें महावीर के इस सिद्धान्त की ओर ले जाते हैं कि वनस्पति में दस सज्ञाएं होती हैं। वे सज्ञाएं निम्न प्रकार हैं—आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा, क्रोध सज्ञा, मान सज्ञा, माया सज्ञा, लोभ सज्ञा, ओष सज्ञा और लोक सज्ञा। इन सज्ञाओं का अस्तित्व होने पर वनस्पति अस्पष्ट रूप में वही व्यवहार करती है जो स्पष्ट रूप में मनुष्य करता है।

प्रस्तुत विषय की चर्चा एक उदाहरण के रूप में की गई है। इसका प्रयोजन इस तथ्य की ओर इंगित करना है कि इस आगम में ऐसे संकटों विषय प्रतिपादित हैं जो सामान्य बुद्धि द्वारा ग्राह्य नहीं हैं। उनमें से कुछ विषय विज्ञान की नई शोधों द्वारा अब ग्राह्य हो चुके हैं और अनेक विषयों की परीक्षण के लिए पूर्व-मान्यता के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। सूक्ष्म जीवों की गतिविधियों के प्रत्यक्षतः प्रमाणित होने पर केवल जीव-शास्त्रीय सिद्धान्तों का ही विकास नहीं होता, किन्तु अहिंसा के सिद्धान्त को समझने का अवसर मिलता है और साथ-साथ सूक्ष्म जीवों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार की समीक्षा का भी।

१. भगवई १।१।३३, पृ० ६।

२. भगवई ६।३।१२५३, २५४, पृ० ४६४।

भगवान् महावीर ने पाच मूल द्रव्यों का प्रतिपादन किया। वे पंचास्तिकाय कहलाते हैं। उनमें धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय—ये तीनों अमूर्त होने के कारण अदृश्य हैं। जीवास्तिकाय अमूर्त होने के कारण दृश्य नहीं है फिर भी शरीर के माध्यम से प्रकट होने वाली चैतन्य क्रिया के द्वारा वह दृश्य है। पुद्गलास्तिकाय [परमाणु और स्कन्ध] भूत होने के कारण दृश्य है। हमारे जगत् की विविधता जीव और पुद्गल के संयोग से निष्पन्न होती है। प्रस्तुत आगम में जीव और पुद्गल का इतना विशद निरूपण है जितना प्राचीन धर्मग्रन्थों या दर्शनग्रन्थों में सुलभ नहीं है।

प्रस्तुत आगम का पूर्ण आकार आज उपलब्ध नहीं है किन्तु जितना उपलब्ध है उसमें हजारों प्रश्नोत्तर चर्चित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आजीवक सच के आचार्य मखलिगोशाल, जमालि, शिव-राजषि, स्कन्दक सन्यासी आदि प्रकरण बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। तत्त्वचर्चा की दृष्टि से जयन्ती, मद्दुक श्रमणोपासक, रोह अनगार, सोमिल ब्राह्मण, भगवान् पार्श्व के शिष्य कालसवेसियपुत्त, तुगिया नगरी के श्रावक आदि प्रकरण पठनीय हैं। गणित की दृष्टि से पार्श्वपितृय गानेय अनगार के प्रश्नोत्तर बहुत मूल्यवान् हैं।

भगवान् महावीर के युग में अनेक धर्म-सम्प्रदाय थे। साम्प्रदायिक कट्टरता बहुत कम थी। एक धर्म सच के मुनि और परिव्राजक दूसरे धर्म सच के मुनि और परिव्राजकों के पास जाते, तत्त्व-चर्चा करते और जो कुछ उपादेश लगता वह मुक्तभाव से स्वीकार करते। प्रस्तुत आगम में ऐसे अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं जिनसे उस समय की धार्मिक उदारता का यथार्थ परिचय मिलता है। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणों से प्रस्तुत आगम पढ़ने में रुचिकर, ज्ञानवर्धक, संयम और समता का प्रेरक है।

विभाग और अवान्तर विभाग

समवायाग और नन्दीसूत्र के अनुसार प्रस्तुत आगम के सौ से अधिक अध्ययन, दस हजार उद्देशक और दस हजार समुद्देशक हैं^१। इसका वर्तमान आकार उक्त विवरण से भिन्न है। वर्तमान में इसके एक सौ अड़तीस शत या शतक और उन्नीस सौ पच्चीस उद्देशक मिलते हैं। प्रथम बत्तीस शतक स्वतन्त्र है। तेतीस से उनचालीस तक के सात शतक बारह-बारह शतकों के समवाय हैं। चालीसवा शतक इक्कीस शतको का समवाय है। इक्क्यालीसवा शतक स्वतन्त्र है। कुल मिलाकर एक सौ अड़तीस शतक होते हैं। उनमें इक्क्यालीस मुख्य और शेष अवान्तर शतक हैं।

शतकों में उद्देशक तथा अक्षर-परिमाण इस प्रकार है—

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
१	१०	३८८१	४	१०	७५३
२	१०	२३८१८	५	१०	२५६६१
३	१०	३६७०२	६	१०	१८६५२

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
७	१०	२४६३५	२५	१२	४५१०३
८	१०	४८५३४	२६	११	४४५५
९	३४	४५८५९	२७	११	१६०
१०	३४	६६०७	२८	११	६६४
११	०२	३२३३८	२९	११	१०२७
१२	१०	३२८०८	३०	११	४७६४
१३	१०	२१६१४	३१	२८	२३४४
१४	१०	१६०३३	३२	२८	३६३
१५		३६८१२	३३ (१२)	१२४	३०८६
१६	१४	१५६३६	३४ (१२)	१२४	८६६४
१७	१७	८४१२	३५ (१२)	१३२	४१८१
१८	१०	२२४४३	३६ (१२)	१३२	७३१
१९	१०	८०२७	३७ (१२)	१३२	११५
२०	१०	१६८७१	३८ (१२)	१३२	८७
२१ (आठ वर्ग) ८०		१६३०	३९ (१२)	१३२	१३६
२२ (छह वर्ग) ६०		१०६८	४० (२१)	२३१	२७३४
२३ (पाच वर्ग) ५०		७१५	४१	१६६	३५१६
२४	२४	३६६२६	कुल १३८	कुल १६२३१	कुल ६१८२२४

भाषा और रचना-शैली

प्रस्तुत आगम की भाषा प्राकृत है। कहीं-कहीं शौरसेनी के प्रयोग भी मिलते हैं। इसमें देशी शब्दों का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर मिलता है, जैसे—खत्त, डोगर (७।११७), टोल (७।११९), मगगो (७।१५२), बोदि (३।११२), चिक्खल्ल (८।३५७)।

इसकी भाषा बहुत सरल और सरस है। अनेक प्रकरण कथा-शैली में लिखे गए हैं। जीवन-प्रसंग, घटनाएँ और रूपक स्थान-स्थान पर उपलब्ध होते हैं। स्थान-स्थान पर कठिन विषयों को उदाहरणों द्वारा समझाया गया है।

प्रस्तुत आगम की रचना गद्य शैली में हुई है। कहीं-कहीं स्वतन्त्र रूप से प्रश्नोत्तरो का क्रम चलता है और कहीं-कहीं किसी घटनाक्रम के बाद उनका क्रम चलता है। प्रतिपाद्य विषय का सकलन करने के लिए सग्रहणी गथाओं के रूप में कुछ पद्य भाग भी मिलता है।

१ बीसवें शतक के छठे उद्देशक में पृथ्वी, अप् और वायु—इन तीनों की उत्पत्ति का निरूपण है। एक परम्परा के अनुसार यह एक उद्देशक है, दूसरी परम्परा के मत में ये तीन उद्देशक हैं। इस परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के कुल उद्देशक १६२५ हैं।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगम के पाठ-शोधन में लगभग सवा वर्ष लगा। इसमें अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अथवा यह गुरतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्ग्रहस्थ पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने सघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-वृत्ते पर ही आगम के इस गुरतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस वृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी का सबसे बड़ा सकलन-ग्रन्थ जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार नई दिल्ली
२५००वा निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

The Title

The title of the Āgama under review is 'Vyākhyā Prajñapti'. The work written in a dialogue-style is called 'Vyākhyā Prajñapati'. According to 'Samawāyānga' and 'Nandi-Sūtra' the present Āgama has an exposition of thirtysix thousand queries¹. On the testimony of Tatwārtha-Vārtika, Śatkhandaḡama and Kaśaya-Pāhuda the present Āgama contained an exposition of sixty thousand queries².

The present Āgama is a volume much larger than other Āgamas. It is multifarious in its contents. Probably, there is no branch of metaphysics, which has not been discussed in it, directly or indirectly. From the afore-said point of view, this Āgama was held in high esteem. The adjective 'Bhagawati' was, therefore, added to it's title, i.e. 'Vyākhyā Prajñapti'. Many centuries before, the adjective 'Bhagawati' became a part and parcel of the title. Now-a-days, the title 'Bhagawati' is more in vogue than 'Vyākhyā Prajñapti'.

The Content

Different sources provide copious information regarding the contents of the present Āgama. 'Samawāyānga' tells us that many deities, kings and king-ascetics put different types of queries before the lord and he answered them in detail. Swa-Samaya, Para-Samaya, Jeewa, Ajeewa, Loka and Aloka have been explained in detail³. According to Āchārya Akalanka queries, such as whether the Jiwa exists or not, have been answered in this Āgama.⁴ According to Āchārya Veersena, alongwith the queries and answers, predictive śubha (auspicious) and aśubha (in-auspicious)⁵ have been described by ninety-six thousand Āchinnaccheda Nayas⁶.

1 Samawao, Sutra 93 ; Nandi, Sutra 85.

2 Tatwārtha Vārtika 1/20, Satkhandaḡama 1, page 101, Kaśaya-Pāhuda-1, page 125.

3 Samawao Sutra 93

4 Tatwārtha' vārtika 1/0

5 Kaśayapāhuda Pt I, p 125

6 The explanation-method, in which each sloka and sutra is explained independently without considering other slokas and sutras, is called 'āchinnacchedanaya'

The importance of the present Āgama may well be understood by the aforesaid indications. Different branches of modern science have recently brought to light many mysteries. When we go into the depths of the present Āgama, we find that these mysteries had been revealed some 2500 years before.

Lord Mahavira has enumerated six groups of living-beings (Jivas). The living beings of the Trasa-kāya (mobile beings) group are self-evident. The living beings of the floral group (Vanapati nikāya) are supported by the modern Science also. The four groups of living beings—the earth, the water, the fire, and the air have not been accepted by the modern science. Lord Māhavira has not only cited the existence of the earth living-beings etc., but thrown enough light on their life-span, food habits, breathing, evolution of consciousness, perceptions etc. also. The minimum span of life of the living-beings of the earth group is of a Antar Muhrat only and the maximum of twenty two thousand years. They do not have a particular order of breath period. Sometimes it is less and sometimes more. They aspire every moment for food and take it. The consciousness of the touch-organ is quite distinct in them. The other currents of consciousness are indistinct.¹

As man takes in oxygen in his breath-period, the living-beings of the earth group not only take in air, but the Pudgalas (matter) of all the earth, the water, the fire, the air and the flora².

Like the earth living-beings, the other living-beings of the water etc do breathe and take food etc. Modern science has studied the different aspects of the floral living-beings and thrown light on their mysteries, but sufficient research has not been carried out on the earth living-beings. Flora expresses anger and affection. The affectionate behaviour blooms it and the hateful behaviour fades it away. These scientific experiments lead us to the maxim of lord Mahavira that there is ten fold consciousness in the floral-world.

These ten folds are—Food consciousness, fear consciousness, co-habitation consciousness, hoarding consciousness, anger consciousness, ego consciousness, deceit consciousness, greed consciousness, 'Aughā' consciousness and world consciousness. Having these folds of consciousness the floral world behaves indistinctly the same way as man does distinctly.

1. Bhagawat, 1-1-32, page 9.

2. Bhagawat, 9-34-253, 254, page 464.

This topic has been mentioned as an example. The object of it is to point out the fact that in this Āgama hundreds of such topics, that cannot be understood by common sense, have been expounded. A few of them have been so far understood with the help of the modern scientific research and many of them can be accepted as tenets for experiments.

The activities of the subtle living-beings (Sūkṣhma jīva) being perceptibly proved, not only the biological doctrines are evolved, an opportunity to understand the doctrine of Ahimsā, and side by side to review the behaviour towards the subtle living-beings, is provided also.

Lord Mahavira has expounded the five principal substances. They are named as Panchāstikāya. In them dharmāstikāya, adharmāstikāya and ākāśāstikāya, the three being formless are invisible. Though Jivāstikāya too, being formless, is invisible, it is indicated by the activities of consciousness seen through the body. Pudgalāstikāya, being concrete, is visible. The multi-formity of our world is a result of the union of Jīva and Pudgala. A clear ascertainment of Jīva and Pudgala is found in this Āgama to such a great extent as is not available in the old religious and philosophical works. The full text of the Āgama is not available today, but whatever is available discusses thousands of queries. From the historical point of view, the chapters on Ācharya Mankkhalī Gosāla, Jamālī, Śivarājarsī, Skanda Sanyāsī etc. are of great importance. From the angle of philosophical discussion Jayanti, Madduka Śramanopāsaka, Roha Anagāra, Somila Brāhmaṇa, Lord Paśśwa's disciple Kālās-vesīya-putta, śrāvakas of Tungīya City etc. are the topics worth reading. From the view point of Mathematics, discussions of Pārśwa-patyīya Gāngeya Anāgāra are of great value.

In the age of Lord Mahavira, there were different religious cults. Cultic bigots were almost un-heard. Munis and Parivṛājakas of one religious body went to engage themselves in philosophical discussions with the Munis and Parivṛājakas of another religious body, and whatever was found to be acceptable, was accepted freely. There are many contexts in this Āgama to throw light on the true free-mindedness of religion prevailing in that age. In this way, with different view-points this Āgama is a work, interesting to read, inspiring of self-control and equilibrium and promoter of knowledge.

Divisions and Sections

According to Samawāyāṅga and Nandī Sūtra, this Āgama contains more than a hundred Adhyāyanas, ten thousand Uddeśakas and ten thousand Samuddesakas¹. The present volume of it differs from the said account,

1. Samawao, Sutra 93, Nandi, Sutra 85,

Presently, there are one hundred and thirtyeight Śatas (Śatakas) and one thousand and ninehundred and twentyfive Uddeśakas. The first thirtytwo Śatakas are independent ones. The seven Śatakas, from thirtythree to thirty-nine, are unions of twelve śatakas each. The fortieth śataka is a union of twentyone śatakas. The forty-first śataka is independent. In all, there are one hundred and thirtyeight śatakas. In them, fortyone śatakas are cardinals and the rest are secondary ones.

The Uddeśakas and syllables in the Śatakas are as follows :

<i>Śataka</i>	<i>Uddeśaka</i>	<i>Total syllables</i>
1	10	28841
2	10	23818
3	10	36702
4	10	753
5	10	25691
6	10	18652
7	10	24935
8	10	48435
9	34	45859
10	34	9907
11	12	32338
12	10	32808
13	10	21914
14	10	16033
15	—	39812
16	14	15939
17	17	8412
18	10	22443
19	10	8027
20	10	19871
21 (eight vargas)	80	1630
22 (six vargas)	60	1068
23 (five vargas)	50	715
24	24	39926
25	12	45103
26	11	4455

<i>Sataka</i>	<i>Uddesaka</i>	<i>Total syllables</i>
27	11	190
28	11	694
29	11	1027
30	11	4764
31	28	2344
32	28	363
33 (12 vargas)	124	3089
34 („ „)	124	8964
35 („ „)	132	4181
36 („ „)	132	731
37 („ „)	132	115
38 („ „)	132	87
39 („ „)	132	139
40 (29 „)	231	2734
41	196	3516
<hr/>		
138	19231 ¹	618224

The Language and the Style

The language of the present Āgama is Prākṛit. Here and there the usages of Sauraseni are also found. In some instances the use of Desi words (vernacular) is also found, like khatta (खत्त), Dongar (7/117 डोंगर), Tola (7/119 टोल), Maggao (7/152 मगगो), Bondi (3/112 बोदि), Cikkhalla (8/357 चिकखल्ल).

The expression of it is very lucid and sweet. Many topics have been dealt with in the style of fable narration. Reminiscences, anecdotes and all-egories are found through out the work. The difficult topics have been explained by citing appropriate examples in many places.

The present Āgama has been written down in prose style. Somewhere, the order is an independent discussion and sometimes it is an off-shoot of some incident. Some verse-part is also available in the form of collected Gāthas to compile the ascertainable topic.

¹ In the twentieth Sataka of the sixth Uddesaka, the theory of the origin of the earth, the water, and the air, has been expounded. According to one tradition, this is one Uddesaka, but the others hold it as comprised of three Uddesakas. According to this tradition, the Āgama under review has 1925 Uddesakas in all.

Accomplishment of the work

It took about a year and a quarter to redeem the text of the present Āgama. In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many Munis. I bless them that their devotedness to the performances be ever more developed. On the occasion of this twentyfifth centenary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the biggest and most voluminous work pertaining to the life and teaching of the Lord.

Anuvrata Vihar

Āchārya Tulaṣi

Delhi

Editorial

Introduction to the work

The Āgama Sūtras have two main divisions, i.e. the Anga-Pravista and the Anga-Vāhya. The Anga-Pravista Sūtras are considered to be the nearest to the original and most authentic of all as they are composed by the principal disciples of Lord Mahāvira. They are twelve in number. 1. Āchārāṅga, 2. Sūtrakṛtāṅga, 3. Sthānāṅga, 4. Samavāyāṅga, 5. Vyākhyā-Prajñāpti, 6. Jñāta Dharma-Kathā, 7. Upāsaka-Deśa, 8. Anta-kṛta-Deśa, 9. Anuttaro-papātika Deśa, 10. Praśna-Vyākaraṇa, 11. Vipāka-Śruta, 12. Dṛṣṭiwāda. The twelfth Anga is, at present, not available.

The eleven Angas, which are available, are being published in three volumes under the title of Anga-Suttant. The first volume has four Angas, i.e. 1. Āchārāṅga, 2. Sūtrakṛtāṅga, 3. Sthānāṅga and 4. Samavāyāṅga. The second volume contains only the 'Vyākhyā Prajñāpti' and the third contains the rest six Angas.

The present work is the second volume of the Anga-Suttant. It has the original text of the Vyākhyā-Prajñāpti with its recensions. A brief preface has been added in the beginning. An elaborate preface and the word-index have not been added to it. It is planned to publish them in two independent volumes. Accordingly, the fourth volume will contain an elaborate preface to the eleven Angas and the fifth one will contain the word-index thereof.

The present text and the method of editing

The text of the present Āgama has been redeemed on the basis of the seven manuscripts (two being palm-leaf manuscripts) and vṛtties (commentaries). According to the method of text redemption in vogue, we do not proceed on the basis of regarding only one manuscript as main, but redeem the original text with the help of Artha-mīmāṃsā (critical meaning), former and later contexts, preceding text (Poorwa-Pāṭha) and the text of other Āgama-Sūtras and the explanation in the Vṛtti (commentary). The original commentary of the Bhagwati is extinct at present. The chūrṇi (commentary) was available but we could not get it. We have made use of the original Tika and chūrṇi portions quoted by Abhayadeva Sūri in his vṛtti. The scribes, from time to time have abridged the text. Many forms

of the abridgement are found. In the manuscripts used in the text-redemption, there are four different versions. The abridgement of the text found in them has been done in different ways (See, page 39). There have been mistakes also due to the difference in written forms of the letters. In sūtra 1/365, the reading 'Pāsiyāya' has been substituted for 'Prādoṣikī Kriyā'. In some manuscripts the reading is 'Pā-u-siyāya'. In the old script, it is difficult to differentiate 'O' from 'U'. This is why 'U' is abundantly found in the present manuscripts in place of 'O'. The manuscripts which were transcribed by the scholars efficient in the language, have 'O' but the copies, prepared by mere scribes have 'U' instead of 'O'. The recensions such as 'Owāsantare' and 'Uwāsantare' have taken place due to this fact only. (See, page 66, Sūtra 1/392 ; page 77, Sūtra 1/444).

In Sūtra 8/242, the reading is 'Ātettehin'. But, as the transcribing went on, many gradual alterations, such as 'Bittēhin', 'Ātettehin', 'Ātettehin' occurred. 'Tada' became 'Taha' in Sūtra 8/301. There is an abridged 'Vācna' (lesson) in same manuscripts. The commentator, too, received the abridged 'Vācna'. So he wrote 'Anyā Yūthuk waktawayata' is to be understood by one himself. It has not been written down lest the work should get bulky". The commentator completed the abridged reading in the commentary. Some transcribers have included same part of the commentary in the original text. And, thus the reading of the full text differed from that of the abridged text.

In some specimens a mixture of the readings, abridged and full, has taken place. In Sūtra 2/47, page 88, 'Khandayā Pućchā' is the abridged text. Some transcriber wrote its full text in the margin of the manuscript for his own understanding. And, in the later transcriptions, the abridged and the full text were both included. (See, foot-note of Sūtra 5/122, page 209 ; the first foot-note of Sūtra 2/118, page 112) In 11/59 the full and the abridged text 'Jahā O-wā-i-e' both have been written down. Such is the case in the chapter of Aśocā Kewālī also. In some manuscript, the quotation given in the commentary has also been included. (See, the second foot-note of Sūtra 2/75, page 99) In some instances, the secondary explanation, too, given by the commentator, was accepted as the original text in the later transcriptions. (See the first foot-note of the Sūtra 5/51, page 194).

In the task of text-redemption, the text of other Āgamas also are taken as basis. In all the manuscripts, after the text 'Āyatante uragharappawesā' in Sūtra 2/94, the text reads as 'Bahūhin Sīlawwaya-guna-weramanapaćcā-

-
1. Iha Sutra Anya Yuthuka waktawayam Swayamuecaraniyam Grantha—gaurawa—bhayenalkhitatattattasya tacedam, Vrittipatra 106,

khāna-pōs-hōwa-wasehin'. Due to the inconsistency in its meaning there, the commentator had to write 'Tairyuktā iti gamyam', but, on seeing the Sūtras 'owā-īya' and 'Rāyapaśena-īya', it is found that this reading should not be there where it has been written down. On the basis of both the above-mentioned Sūtras, the order of the text in view is constructed thus—'O-saha-Bhesajenam Paḍilābhemānā bahūhin Sīlawwaya-gūṇa weramaṇa-Paḍcakhāna Posahowa-wāsehin ahāpariggahī-e-hin tawokamméhin appānam bhāwemānā wiharanti'. In sūtra 2/1, in all the specimens, the text is sarakallāṇa Jāwa kewa-in' but 'Jāwa' serves no purpose here. On the basis of 8/217 of the Bhagwati as well as the first stanza of the Prajnāpanā, here the text is ascertained to be 'Jāwati, instead of 'Jāwa'.

In many instances, the meaning does not change by an alteration of letter but difficulty arises in understanding the meaning and sometimes it changes too. In Sūtra 6/90, the reading is 'hawwin'; and 'hetthin' as well as 'hutthin' the two recensions are also found. The commentator Abhayadeva Sūri has given the meaning as 'Sama' there. (See the commentary-leaf 271). In the sthānāṅga Sūtra (143), on the same topic, the reading is as, 'hitthin'. Abhayadeva Sūri has given its meaning there as 'below the Brahma-loka'. (See the Sthānāṅga-vṛitti leaf 410).

In same places the variant readings occur due to the mis-understanding of the transcriber and difference in characters in scripts. In Sūtra 9/195, the reading is as 'Odhareṁāni-odhareṁāni'. In some specimens this reading is found in the form of 'uwadhareṁāni-uwadhareṁāni'. In one copy, this reading is changed into 'uwar-dhare-māni-uwari-dhare-mani'.

A few examples of recensions have been cited here to show that manuscripts or only one particular copy cannot be taken as the basis in the redemption of the text. It can be redeemed only on the basis of various Āgamas, their commentaries and consistency of their meaning.

The problem of abridgement and redemption of the text

It is a task to lay down authentically the method of abridgement adopted by Devardhigani at the time of writing the Āgama Sūtras. And, it is a task because many Āgamadharas have abridged the Āgama-text in later periods. Probably, same transcribers too, for the sake of convenience of transcribing, have abridged the text.

In the abridged text of sūtra 13/25, the dewoddesaka of the second Sataka has been referred to indicate the kinds of Bhawanpati Dewas etc., but the full text is not there (2/117, page 111) and the sthānpada of the Prajnāpanā has been referred to. Likewise, in the abridged text of Sūtra 16/33, the third

Śataka (Sūtra 27, page 130) has been referred to but the full text is not there. It is indicated there to refer to 'Rayapasena-ima' sutra.

The abridged text of Sūtra 16/71 refers to the chapter of 'Udrāyana (13/117, page 614) only not to find the full text there. In the same way 16/121, 18/56 and 18/77 indicate regarding the full text, but it is not found at the places referred to.

On the basis of these references, it is inferred that the texts, at the places referred to, were complete at the time of their abridgement. But after that, some Anuyogadhara Ācharya abridged those full texts also. The words 'Jāwa', 'Jahā' etc. have been used for abridgement.

In some instances, the use of 'Jāwa' is more or less unnecessary. It is either due to negligence on the part of the transcriber or has been written as usual without discernment. The transcribers have taken plenty of freedom in the use of 'Jāwa'. If someone transcribed 'Pāwaphala Jāwa Kajjanti', the other has written it as 'Pāwaphala virvāga Jāwa Kajjati'. Along with the short readings even such as 'winda' (7/196), 'Payoga' (8/17) 'Sahassa' (16/103) the word 'Jāwa' has been added. The abridgements of the text, therefore, seem to have been done from time to time by the scribes.

The Āgama under review has two main Vācās, abridged and full. The length of the abridged version of the work is regarded to be a total of 15751 Anustupa Ślokas. The extent of the full version of the work is regarded to be a total of one lakh and a quarter Anustupa Ślokas. Abhayadeva Sūri has written his commentary on the basis of the abridged version of this Āgama. In editing the text, we have, as far as needed, completed the texts introduced by the words 'Jāwa' etc., resulting the total length of the work to a measure of 19319 Anustupa Ślokas and 16 letters more.

Change of Word and Formative

1/49	Nigama	Niyama	(Tā)
1/224	Appiyā	Appitā	(Ka)
1/224	Etesm	Tetesm	(Ka, Tā, Ma)
1/237	Wai.	Wati	(Tā)
1/239	Wai.	Wayi.	(Tā)
1/245	Māyo	Māo	(Tā)
1/273	Poyantam	Podantam	(Ka, Tā, Ba, Ma, Sa)
1/276	Kajjai	Kijjai	(Ba, Sa)
1/281	Pāñā-i-Wāya	Pāñāyawāya	(Sa)

1/281	Nera-i-yanam	Neratiyānam (A, Ba, Sa)
1/298/2	Uwa Ogé	Owa oge (Tā)
1/315	Ahe	Adhe (Tā)
1/354	Karejja	Karijja (Ka) Karejjā (Sa)
1/357	Duhī-é	Dukkhi-e (Kā, Tā, Ma)
1/357	Dugga ndhe	Dugandhe (A, Ma, Sa)
1/363	Āriyam	Yariyam (Ka, Tā)
1/364	éa-u	éatu (Tā)
1/365	Pa-O-siā	Pāyosiā (A, ba)
1/370	Saya	Sata (Tā)
1/371	Sandhijjamāne	Sandhejja. māne (Tā)
1/371	Nisithe	Nisatthe (Ka, Tā)
1/371	Kā-i-ya-e	Kātiyā-e (Tā)
1/385	Pānā-i-wāya	Pānāyāwāyao (Ba, Sa)
1/389	Hṛssi	Hussi (Ba); Hṛswi (Sa); Hassi (Ka)
1/415	Jahā	Jadhā (A; Ba, Sa)
1/424	Sāmā-i-yassa	Sāmātiyassa (Tā)
1/425	Ja-i	Jati (A, Ka, Ba, Ma, Sa)
1/434	Kiwanassa	Kiwinassa (Tā)
2/26	Māgahā	Māgadhā (Tā)
2/41	Viyadda bhoī	Viyaddabhoī (A, Tā, Bā, Ma, Sa)
2/57	Sāmā-i-yama-i-yāin	Sāmā-i-mādīy- ātīm (Ka, Ba) Sāmātiyamā- tiyāin (Sa)
2/66	Dhamayio	Dhawaṇi (Ka, Tā, Ba, Ma)
2/66	Rayaniye	Ratniye (Tā)
2/68	Ārūhe-i	Ārūbhe-i (Ka, Ma)
2/68	Khā-ima-Sāimam	Khatimā-Sāti- mam (Ba, Sa)
2/68	Sayamewa	Satmewa (Tā)
2/94	Awanguya o	Awanguta o (Ma)
2/94	Khā-ima sā-i-meṇam	Khātima- Sātimenam (Ba, Sa)

3/4	Ayameyārūwe	Atametārūwe	(Tā)
3/21	Isāne	Nisane	(Tā)
3/25	Moya-o	Motāto	(Ka, Tā)
3/33	Khā-ima Sā-imenā	Khātim-Sātī- menam	(Ba, Sa)
3/112	Sayanijā o	Satanijā o	(Tā)
3/112	Niwatim	Nipatim	(Tā)
3/143	Weyatī	Wedatī	(Tā)
3/148	Samaya o	Samata o	(Tā)
5/3	‘Paḍiṇa’	‘Paḍiṇa’	(Tā, Ma)
5/60	Ā-u-e	Ā-u-ge	(Tā)
5/79	Rayaharana māyā-e	Rataharana- māta-e	(Tā)
5/82	Weyāwadiyam	Wedāwadiyam	(Ba, ma)
5/110	Samayansi	Samatansi	(Tā)
5/139	‘Lo-i-ya’	‘Lo-ti-ya’	(A, Sa)
6/63	Sakasā-i-hin	Sakasādihin	(Tā)
6/63	Sajogī	Sajotī	(Tā)
6/79	Nāgo	Nā-o	(Tā, ma)
6/90	Kanharātīo	Kanharāyīto	(Ba)
6/166	Kalagam	Kalatam	(Ka)
7/176	o Jaya o	o Jata o	(Ba)
7/213	Ayameyākūwe	Atametākūwe	(Tā)
8/248	Aṇuppadāyawwe	Aṇuppatātawwe	(Tā)
8/315	Goyam	Godam	(Ba)
8/347	Anāḍiyā o	Anāḍita	(Tā)
8/420	Sātānayāe	Sādanatāe	(Ka, Ba, Ma)
8/431	Issariyao	Dissariya o	(Ma)
8/431	Issariya	Nissariya	(Ma)
9/43	Sakasāi	Sakasādi	(A, Tā)
9/94	Ahi-o	Ahito (Ka), Adhito	(Tā)
9/174	Maya	Mada o (Tā) Mata o	(ba)
9/169	Sawāṇayāe	Samanayae	(A)
11/133	Dhūwa	Dhūma	(Tā)
11/134	Nīwa	Nīma	(Tā, Ba)
11/142	Pa-u-ma-Sara	Padumasara	(Tā)
16/113	Niyamam	Nitamam	(Ba)
17/38	cyana	cyana	(Ta, Ba)

18/100	Mayimiccha o	Madimiccha o	(Ba)
19/85	Jat indiyāni	Jadindiyāni	(Tā)
30/22	Sajogī	Sajotī	(Kh.)

Manuscripts used :

(A) Bhagwati-vṛtti (Pañcapāthī). Manuscript with original Text.

This manuscript is from the Gadhaiya Library, Sardarshahr. It contains 189 leaves and 278 pages. Each leaf is $13\frac{1}{2}$ " in length and $4\frac{3}{4}$ " in width. There are 1 to 23 lines of the original text on each leaf and each line has 80—85 letters. The copy has been prepared in a beautiful and artistic manner. There is a 'Wāwari' (hollow space) also in the centre. The year of the transcription has not been given. It is estimatedly written in the 15th-16th century.

(Ka) Bhagwati Text (Manuscript)

This copy is from the Poonamchand Budhamal Dūdhoria, Čhapar library. It has 333 leaves and 666 pages. Each leaf is $10\frac{1}{2}$ " long and $4\frac{1}{2}$ " wide. There are 15 lines on each leaf and each line has 52-55 letters. The copy is a beautiful and artistic one. There are intermitant Pāis (full-stops) in red ink and wāwari (hollow space). It dates back probably to the 16th century.

(kha) The text on the palm-leaf (Manuscript)

This manuscript has been received from Madan Chand ji Gothi, Sardar Shahr. It belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the original written on Tāla Patra. It has 422 leaves and 844 pages. Every page contains 3 to 6 lines and there are 130-140 letters in each line. The concluding eulogy has been written as || čha || Mangalam Mahā śrī || || čha čha || čha || Rā"

The year of the transcription has not been given but estimatedly it should be of the 12th century.

(Tā) The text of the Palm-leaf (Manuscript).

This manuscript belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the Script written on the Talpatra. This, too, has been received from Madan Chand ji Gothi of Sardar Shahr. It has 348 leaves and 696 pages. Each leaf has 5 to 9 lines and there are 130-140 letters in each line. The last leaf is illustrated. The concluding eulogy reads as follows :—

|| čha || Bhagwati Samattā || čha || || čha || || čha || Sambat 1235 Viśakha-wad ekādasyām guraṇ aparāhṇe lekha -wara čandena likhitam"

(Ba) *The text of Bhagawati (Manuscript)*

This manuscript belongs to Terapanthi Sabha, Sardar Shahr. It has 478 leaves and 956 pages. Each leaf is 10½" long and 4½" wide. There are 13 lines on each leaf and each line contains 38-42 letters. The copy has been attractively and artistically prepared. There are three 'Wawadīs' and red lines in it. 'Hartal' (orniment) has been used. The concluding eulogy is not given in it and hence the year of script is unknown. Estimatedly, it dates back to the 16th century.

(Ma) *Bhagwati Sutra Text (Manuscript)*

This manuscript is from the Gadhaiyā Library, Sardar Shahr. It has 482 leaves and 964 pages. Each leaf is 10½" long and 4½" wide. Each leaf has 13 lines on it and there are 40-45 letters in each line. There are intermittent 'Pāis' (full stops) in red ink and Wāwadīs (hollow spaces).

The year of the script has not been given in the end but estimatedly it dates back to the 16th century. The concluding eulogy reads as follows :—

éha || Granthāgram 15775 || éha || éha || || éha || Śrī || éha || Śrī
Kalyānamastu || Śubham Bhawatu || éha || Śrī || Śrī || éha || éha ||

The script has notes in Sanskrit in many places.

(Sa) *Bhagwati Sutra (Tripathi)*

Known as Kesar Bhagwati, this manuscript is from the Terapanthi Bhandar, Ladnun. It has 602 leaves and 1204 pages. The text is in the middle of the leaf while the 'vritti' has been given above and below the text. This is a beautiful and sufficiently correct copy. Some reader, taking a printed copy as authentic has used 'Hartal' in many places and has tried to correct the text of this manuscript. Wherever it has been done so, the correct text has become incorrect. Each leaf of it has 4 to 15 lines of the text on it and each line contains 45-53 letters.

The concluding eulogy reads as follows :—

Śrī Bhagwati Sūtram Sampūnam || éha || Śrī Vivāha Pannatti Pañcamam
angam Sammattam || Śubham Bhavatu || Kalayanamastu Granthāgram 15675
Ubhaya Milane Gran. 34291 || Śrī || Likhatayati Dāhāmallah Śrī Nāgore
Madhye Sam. 1848 Māha Śu. 15 ||

Wri, (Wripā) Printed

Publisher : Śrīmatī Agamodaya Samiti.

ACKNOWLEDGEMENTS

The 'Vācñā' has a very ancient history in the Jaina tradition. There had been four 'Vācñās' of the Āgamas to date in different periods in the last fifteen centuries. There was no well planned Āgama-Vācñā after Dewardhigani. The Āgamas, written in his Vācñā-time, have become very much disordered during the long past period. A well planned 'Vācñā' was the need of the day again to set them in order. Ācārya Tulsī had tried for a well planned congregational Vācñā but it could not materialize. Ultimately, we reached the conclusion that if our 'Vācñā' is investigative, researching, full of a well balanced view and diligence, it will itself become congregational. With this decision in view, our work on this Āgama-Vācñā began.

Ācārya Tulsī is the Head of this Vācñā. Vācñā means to teach. There are many aspects of teaching in our 'Vācñā', i.e., redemption of the text, translation, critical study etc. etc. In all such activities, we have received active participation, able guidance and inspiration from the Ācārya. This is the source of strength below this great task.

Only the expression of gratitude to him will not suffice. Better it is that I must achieve the grace of his blessings for future work and prove myself more worthy of my duties.

In the editing of the present Āgama Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hiralalji have given constant help to me in various ways. Apart from their valuable assistance, we had co-operation from Muni Śrī Kanmalji, Čhatramalji, Amolakācandji, Dinkarji, Poonamācandji, Rajkaranji, Kanhaiyā Lalji, Tārācandji, Balācandji, Vijairaji, Manilalji, Mahendra Kumarji (second), Sampatmalji (Doongargarh), Śāntikumarji, Mohanlalji (Śārdūl) and Manna Lalji Borađ. The work of editing the text was started on the 9th dark-moon day in the month of Paush in the year 2029 of the Vikrama Era (28th December, 1972), in Sardār Śhahr (Rajasthan) and was completed in Delhi on the 11th day of bright-moon in Phālguna in the year 2030 of the Vikrama Era (4th March, 1974).

Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hiralalji and Dulaharaji took great pains in critically examining the press-copy. The counting of the total syllables of the work has been prepared by Muni Mohanlalji (Āmet).

Valuing their contribution to the accomplishment of the work, I express my gratitude to them individually.

On this occasion, the erudite Āgama scholar and active participant in editing of the Āgama, late Śrī Madan ācandji Gothi is very much missed

Had he been alive, he would have been highly contented to see this work accomplished

The Managing editor of the Āgama Śrī Śrī Chānd ji Rampuriā has been devoted to the task of the Āgama from the beginning. He has dedicated himself to the sternous work of making the Āgama Literature popular and handy to the public after giving up his well established practice of an advocate. He has highly shown his faith and dedication in this publication of the 'Āgama Suttam'

Sri Khem Chand ji Sethiā, President of the Jain Viśwa Bhāratī and his co-workers and the staff of the Ādarśa Sahitya Sangha have worked diligently in collecting the material utilized in the edition of the text.

Accounting the order of contribution to the same activity of the persons marching towards one and the same goal is nothing more than a formality. Actually, it is a solemn duty of us all and this is what we all have performed.

Anuvrata Vihar

New Delhi

Muni Nathmal

भगवई विसयाणुक्कम

पढमं सतं

सू० १-४४८

पृष्ठ ३-७८

मगल-पद १, उक्खेव-पद ४, चलयण-पदं ११, नेरइयाण णित्ति-आदि-पदं १३, आरंभ-अणारंभ-पदं ३३, नाणादीण भवतर-सकमण-पदं ३६, असवुड-सवुड-अणगार-पद ४४, असजयस्स बाणमतरदेव-पदं ४८, कम्म-ज्जेयण-पदं ५३, नेरइयादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं ६०, मणुस्सादीण समाहार-समसरीरादि-पदं ८६, लेस्सा-पद १०२, जीवाण भवपरिवट्टण-पद १०३, अतकिरिया-पदं ११२, असण्णि-आलय-पदं ११४, कंखामोहणिज्ज-पदं ११८, सद्धा-पदं १३१, अत्थि-नत्थि-पदं १३३, भगवओ समता-पदं १३६, कंखामोहणिज्जस्स वघादि-पद १४०, कम्म-पदं १७४, उवट्ठाण अवक्कमण-पदं १७५, कम्म-मोक्ख-पद १८६, पोगल-जीवाणं तेकालियत्त-पद १९१, मोक्ख-पद २००, पुढवि-पद २११, आवास-पदं २१३, नेरइयाण नाणादसासु कोहोवज्जत्तादिमग-पदं २१६, असुरकुमारादीण नाणादसासु कोहोव-ज्जत्तादिमग-पद २४५, सूरिय-पदं २५६, फुसणा-पद २६८, किरिया-पद २७६, रोहस्स पण्ह-पद २८८, लोयट्ठित्ति-पद ३०६ जीव-पोगल-पद ३१२, सिण्ह-काय-पद ३१४, देस-सज्ज-पद ३१८, विग्गहगह-पद ३३५ आयु-पद ३३६, गम्भ-पद ३४० माइय-पेइय-अग-पद ३५०, गम्भस्स नरगगमण-पद ३५३, गम्भस्स देवलोगगमण-पद ३५५, बालस्स आलय-पद ३५६, पडियस्स आलय-पदं ३६०, बालपडियस्स आलय-पद ३६२, किरिया-पद ३६४, जयपराजय-पदं ३७३, वीरिय-पद ३७५, गुरु-लघु-पदं ३८४, पसत्थ-पदं ४१७, कखापदोस-पद ४१६, इह-पर-भविद्यालय-पद ४२०, कालासवेसियपुत्त-पद ४२३, अपच्चक्खाणकिरिया-पद ४३४, आहाकम्म-पद ४३६, फासु-एसणिज्ज-पदं ४३८, परसमयवत्तज्जया-पदं ४४२, ससमयवत्त-ज्जया-पद ४४३, इरियावहिंया-सपराडया-पद ४४४, उपपात-पदं ४४६ ।

द्वीयं सतं

सू० १-१५३

पृ० ७६-१२०

उक्खेव-पदं १, सासुस्सास-पद २, वाउकायस्स कायट्ठि-पदं ६, मडाइ-नियंठ-पदं १३, खघयकहा-पदं २०, समुग्घाय-पद ७४, पुढवि-पद ७५, इंदिय-पदं ७७, परिचाराणा-वेद-पदं ७९, गम्भ-पद ८१, तुगियानयरी-समणोवासय-पद ९२, उण्हजल-कुड-पद ११२, भासा-पद ११५, ठाण-पद ११६, चमरसभा-पद ११८, समयत्तेत्त-पदं १२२, अत्थिकाय-पदं १२४, जीवत्त-उवदंसण-पद १३६, अत्थिकाय-पद १४१, फुसणा-पदं १४६ ।

तद्वयं सतं

सू० १-२८१,

पृ० १२१-१८२

उक्खेव-पद १, देवविकुब्बणा-पद ४, तामलिस्स ईसाणिद-पद २५, सक्कीसाण-पद ५४, सणकुमार-पद ७२, चमरस्स भगवओ वदण-पद ७७, असुरकुमारवण्ण-पद ७९, चमरस्स उद्धमुप्पाय-पद ९७, चमरस्स पुब्बभवे पूरणगाहावड-पद ९९, पूरणस्स दाणामपव्वज्जा-पद १०२, पूरणस्स पाओवगमण-पद १०४, भगवओ एकराइयमहापडिमा-पद १०५, पूरणस्स चमरत्त-पद १०६, चमरस्स कोव-पद १०९, चमरस्स भगवओ णीसापुव्व सक्कस्स आसायण-पद ११२, सक्केदस्स वज्जपक्खेव-पद ११३, चमरस्स भगवओ सरण-पद ११४, सक्कस्स वज्जपडिंसाहरण-पद ११५, सक्क-चमर-वज्जाण गइविसय-पद ११७, चमरस्स-चिता-पद १२७, असुरकुमाराण उद्धमुप्पयणस्स हेउ-पद १३१, किरिया-पद १३३, किरिया-वेदणा-पद १४०, अतकिरिया-पद १४३, पमत्तापमत्तद्धा-पद १४९ लवणसमुद्-बुद्धि-हाणि-पद १५२, भाविअप्प-पद १५४, वाउकाय-पद १६४, बलाहक-पद १७२, किलेसोववाय-पद १८३, भाविअप्प-विकुब्बणा-पद १८६, भाविअप्प-अभिजुज्जा-पद २०९, भाविअप्प-विकुब्बणा-पद २२२, आयरक्ख-पद २४४, लोगपाल-पद २४७, सोम-पद २५०, यम-पद २५६, वरुण-पद २६१, वेसमण-पद २६६ ।

चउत्थं सत

सू० १-९

पृ० १८३-१८५

ईसाण-लोगपाल-पद १, नेरइय-उववाय-पद ७, लेस्सा-पद ८ ।

पंचम सतं

सूत्र १-२६०

पृ० १८६-२३२

जवूदीवे सूरिय-वत्तव्वया-पद १, जवूदीवे दिवसराई-वत्तव्वया-पद ४, जवूदीवे उउ-वत्तव्वया-पद १३, जवूदीवे अयणादि-वत्तव्वया-पद १७, लवणसमुद्दादिसु सूरियादि-वत्तव्वया-पद २१, वाउ-पद ३१ । ओदणादीण किंसीरत्त-पद ५१, लवणसमुद्-पद ५५, आउ-पकरण-पडिस वेदण-पद ५७, साउयसकमण-पद ५९, छउमत्थ-केवलीण सद्दसवण-पद ६४, छउमत्थ-केवलीण हास-पद ६८, छउमत्थ-केवलीण निद्दा-पद ७२, गब्भसाहरण-पद ७६, अइमुत्तग-पद ७८, महासुक्कागयदेव-पण्ह पद ८३, देवाण नोसजयवत्तव्वया-पद ८९, देवभासा-पद ९३, छउमत्थ-केवलीण नाणभेद-पद ९४, केवलीण पणीय-मण-वइ-पद १००, अणुत्तरोववाइयाण केवलिणा आलाव-पद १०३, केवलीण इदियनाण-निसेध-पद १०८, केवलीण जोगवचलया-पद ११०, चोद्दसपुव्वीण सामत्थ-पद ११२, मोक्ख-पद ११५, एवभूय-अणेवभूय-वेदणा-पद ११६, कुलगरादि-पद १२२, अप्पायु-दीहायु-पद १२४, असुभसुभ-दीहायु-पद १२६, कयविकए किरिया-पद १२८, अगणिकाए महाकम्मादि-पद १३३, वणुपक्खेवे किरिया-पद १३४, अणउत्थिय-पद १३६, नेरइयविउव्वण-पद १३८ आहाकम्मादिआहारे आराहणादि-

पद १३६, आयरिय-उवज्झायस्स सिद्धि-पद १४७ अन्मक्खाणिस्स कम्मबंध-पदं १४७, परमाणु-खघाण एयणादि-पदं १५०, परमाणु-खघाण छदादि-पदं १५४, परमाणु-खघाणं सज्जद्धसमज्झादि-पद १६०, परमाणु-खघाण परोप्पर फुसणा-पद १६५, परमाणु-खघाण सठि-पद १६६, परमाणु-खघाण अतरकाल-पद १७५, परमाणु-खघाण परोप्पर अप्पावहुयत्त-पद १८१, जीवाण सारम सपरिगह-पद १८२, हेउ-पद १९१, नियठिपुत्त-नारयपुत्त-पद २००, जीवाण-बुद्धि-हाणि-अवद्धि-पद २०८, जीवाण सोवचय-सावचयादि-पद २२५, किमिदरायगिह-पद २३५, उज्जोय-अवयार-पद २३७ मणुस्सखेत्ते समयादि-पदं २४८, पासावच्चिज्ज-पद २५४ देवलोय-पद २५८ ।

छदं सतं

सू० १-८६

पृ० २२३-२७०

पसत्यनिज्जराए सेयत्त-पद १, करण-पद ५, महावेदणा-महानिज्जरा-चउभग-पद १५, महाकम्मादीण पोगलवधादि-पद २०, अप्पकम्मादीण पोगलभेदादि-पद २२, कम्मोवचय-पद २४, कम्मोवचयस्स सादि-अनादित्त-पद २७, जीवाण सादि-अनादित्त-पद ३०, कम्मपगडी वघ विवेयण-पद ३३, वेदगावेदगाण जीवाण अप्पावहुयत्त-पदं ५२, कालावेसेण सपवेस-अपदेस-पद ५४, पच्चक्खाणादि-पद ६४, तमुक्काय-पद ७०, कण्हराइ-पद ८६, लोगतियदेव-पद १०६, नेरइयादीण आवास-पद १२०, मारणतियसमुग्घाय-पद १२२, घन्नाण जोणिं-ठिइ-पद १२६, गणना-काल-पदं १३२, ओवमिय-काल-पद १३३, सुसम-सुसमाए भरहवास-पद १३५, पुढवि-आदिसु गेहादिपुच्छा-पद १३७, आउवघ-पदं १५१, लवणादिसमुद्-पद १५५, कम्मप्पगडिवघ-पद १६२, महिद्धीयदेव-विकुच्चणा-पद १६३, अविमुद्धेसादि देवाण जाणणापासणा-पद १६८, सुह-दुह-उवदसण-पदं १७१ जीव-वेयणा-पद १७४, वेदणा-पद १८३, नेरइयादीण आहार-पद १८६, केवलस्स नाण-पदं १८७ ।

सत्तमं सतं

सू० १-२३३

पृ० २७१-३१४,

अणाहारग-पद १, सन्वपाहारग-पद २, लोगसंठाण-पद ३, समणोवासगस्स किरिया-पद ४, समणोवासगस्स अणाउट्ठिहिसा-पद ६, समणपडिलाभेण लाभ-पद ८, अकम्मस्स गति-पद १०, दुक्खस्स दुक्खफासादि-पद १६, इरियावहिय-सपराइय-किरिया-पद २०, सइगालादिदोसदुद्द-पाणभोयण-पद २२, सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण-पद २७, पच्चक्खाण-पद २९, पच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणि-पद ३६, सासय-असासय-पद ५८, वण्णस्सइ-आहार-पद ६२, अणतकाय-पद ६६, अप्पकम्म-महाकम्म-पद ६७, वेदणा-निज्जरा-पद ७४, सासय-असासय-पदं ९३, ससारत्थजीव-पद ९७, जोणीसंगह-पद ९६, आउयपकरण-वेयणा-पदं १०१, कक्कस-अकक्कसवेयणीय-पदं १०७, सायासाय-वेयणीय-पद ११३,

दुस्तमदुस्तमा-पदं-११७, सवुडस्स किरिया-पदं १२५, काम-भोग-पदं १२७, दुव्वलसरी-
रस्स भोगपरिच्छाय-पद १४६, अकामनिकरण-वेदणा-पद १५०, पकामनिकरण-वेदणा-
पद १५३, मोक्ख-पद १५६, हत्थि-कुशु-जीव-समाणत्त-पद १५८, सुह-दुक्ख-पदं १६०,
दसविहसण्णा-पदं १६१, नेरइयाण दसविहवेदणा-पदं १६२, हत्थि-कुशुण अपच्चक्खाण-
किरिया-पद १६३, अहाकम्मादि-पद १६५, असवुड-अणगारस्स वित्तव्वणा-पद १६७,
महासिलाकउयसगाम-पद १७३, रहमुसलसगाम-पद १८२, वरुण-नागनत्तुय-पद १९२,
वरुणनागनत्तुय-मित्त-पद २०४, कालोदाइ-पमितीण पचत्थिकाए सदेह-पद २१२,
कालोदाइस्स समाहाणपुव्व पव्वज्जा-पद २१७, कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पदं
२२२ ।

अट्ठमं सत्तं

सू० १-५०४

पृ० ३१५-३९७

पोग्गलपरिणति-पद १, पयोगपरिणति-पद २, पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च पयोगपरिणति-पद १८,
सरीर पडुच्च पयोगपरिणति-पद २७, इदियं पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३२, सरीर
इदिय च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३५, वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३६,
सरीर वण्णादि च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं ३७, इदिय वण्णादि च पडुच्च पयोगपरिणति-
पद ३८, सरीर इदिय वण्णादि च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३९, मीसपरिणति-पदं ४०,
बीससापरिणति-पद ४२, एग दव्व पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ४३, पयोगपरिणति-पदं
४४, मणपयोगपरिणति-पदं ४५, बइपयोगपरिणति-पद ४८, कायपयोगपरिणति-पदं ४९,
मीसपरिणति-पदं ६५, बीससापरिणति-पदं ६७, दोणि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं
७३, तिण्णि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ७९, चत्तारि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-
पद ८२, आसीविस-पदं ८६, छउमत्थ-केवलि-पद ९६, नाण-पद ९७, जीवाण नाणि-अण्णा-
णित्त-पद १०४, अंतरालगति पडुच्च १११, इदियं पडुच्च—११५, कायं पडुच्च—११८,
सुहुम-वादर पडुच्च—१२०, पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च—१२३, भवत्थ पडुच्च—१३१,
भवसिद्धियाभवसिद्धिय पडुच्च—१३५, सण्णि-असण्णि पडुच्च—१३८, लद्धि-पद १३९,
नाणलद्धि पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद १४७, दसण पडुच्च—१५९, चरित्त पडुच्च—१६१,
चरित्ताचरित्त पडुच्च—१६३, नाणाइ पडुच्च—१६४, बालाइवीरिय पडुच्च—१६४, इदिय
पडुच्च—१६६, उवउत्ताण नाणि-अण्णाणित्त-पद १७२, जोग पडुच्च—१७६, लेस्स
पडुच्च—१७७, कसाय पडुच्च—१७९, वेद पडुच्च—१८१, आहारण पडुच्च—१८२,
नाणाण विसय-पद १८४, नाणीण सठिइ-पद १९२, नाणीण अतर-पद २००, नाणीण
अप्पावहुयत्त-पद २०५, नाणपज्जव-पद २०८ नाणपज्जवाण अप्पावहुयत्त-पद २१२,
वणस्सइ-पद २१६, जीवपएमाण अतर-पद २२२, चरिम-अचरिम-पद २२४, किरिया-पद
२२८, आजीवियसदव्वे समणोवासय-पद २३०, समणोवासगकयस्स दाणस्स परिणाम-पद
२४५, उवनिमतित्तिपिडादि परिभोगविहि-पद २४८, आलोयणाभिमुहस्स आराह्य-पद २५१,

जोति-जलण-पद २५६, किरिया-पदं २५८, अणउत्थियसवाद-पदं अदत्त पडुच्च—२७१, हिस पडुच्च—२८५, गममाणगय पडुच्च—२९१, पडिणीय-पद २९५, पचववहार पद ३०१, वध-पद ३०२, इरियावहियवध-पद ३०३, सपराइयवध-पद ३०६, कम्मप्पगडोसु परीसहसमवतार-पद ३१५, सूरिय-पद ३२६, जोइसियाण उववत्ति-पद ३४०, वंध-पद ३४५, वीससावध-पद ३४६, पयोगवध-पद ३५४, आलावण पडुच्च ३५५, अल्लियावण पडुच्च—३५६, सरीर पडुच्च—३६३, सरीरप्पयोग पडुच्च ३६६, ओरालियसरीरप्पयोग पडुच्च—३६७, वेउव्वियसरीरप्पयोग पडुच्च—३८६, आहारगसरीरप्पयोग पडुच्च—४०५, तेयासरीरप्पयोग पडुच्च—४१२, कम्मसरीरप्पयोग पडुच्च—४१६, पयोगवधस्स देसवध-सव्ववध-पद ४३४, सुय-सील-पद ४४६, आराहणा-पद ४५१, पोगलपरिणाम-पदं ४६७, पोगलपएसस्स दव्वादीहि-भग-पद ४७०, एस-परिमाण-पद ४७५, कम्माण, अविभागपलिच्छेद-पद ४७७, कम्माण परोप्पर नियमा-भयणा-पदं ४८४, पोगलि-पोगल-पद ४९६।

नवमं सतं

सू० १-२६३

पृ० ३६८-४६५

जबुदीव-पद १, जोइस-पद ३, अतरदीव-पद ७, असोच्चा उवलद्धि-पद ९, सोच्चा उवलद्धि-पद ५२, पासावच्चिज्जगगेय-पसिण-पद ७७, पवेसण-पदं ८६, सतर-निरतर-उववज्जणादि-पद १२०, सतो असतो उववज्जणादि-पद १२१, सतो परतो वा जाणणा-पद १२३, सय असय उववज्जणा-पद १२५, गगेयस्स सवोधि-पद १३३, उसभदत्त-देवाना-पद १३७, जमालि-पदं १५६, एगस्स वधे-अणेगवध-पद २४६, इसिस्स वधे अणतवध-पद २४६, वेरवध-पद २५१, पुढविकाइयादीण आण-याण-पद २५३ किरिया-पद २५८।

दसमं सतं

सू० १-१०३

पृ० ४६६-४८४

दिसा-पद १, सरीर-पद ८, सवुडस्स-किरिया-पद ११, जोणि-पद १५, वेदणा-पद १६, भिक्खुपडिमा-पद १८, अकिच्चट्ठाणपडिसेवणा-पद १९, आडड्डीए परिड्डीए वीडवयण-पद २३, देवाण विणयविहि-पद २४, आसस्स 'खु-खु' करण-पद ३६, पणवणी-भासा-पद ४०, तावत्तीसगदेव-पद ४२, देवाण तुडिण सडि दिव्वभोग-पद ६४, सुहम्मा सभा-पद ६६, सक्क-पद १००, अतरदीव-पद १०२।

एक्कारसं सतं

सू० १-१९६

पृ० ४८५-५३७

उप्पलजीवाण उववायादि-पद १, सालुयादिजीवाण उववायादि-पद ४२, सिवरायरिसि-पद ५७, खेतलोय-पदं ६०, लोयसठाण-पदं ६८, अलोयसंठाण-पद ६९, लोयालोए जीवा-जीव-मग्गणा-पद १००, लोयस्स परिमाण-पद १०६, अलोयस्स परिमाण-पदं ११०, लोगा-

गासे जीवपदेस-पदं १११, सुदंसणसेट्ठि-पदं ११५, हसिभदपुत्त-पद १७४, पोगल परिच्चायग-
पद १८६ ।

वाररसमं सतं

सू० १-२२६

पृ० ५३७-५८७

संख-पोक्खली-पद १, उदयणादीणं घम्मसवण-पद ३०, जयंती-पसिण-पद ४१, पुढवी-पद ६६,
परमाणुपोगलाणं सघात-भेद-पद ६६, पोगलपरियट्ट-पद ८१, वण्णादिं अवण्णादिं च
पडुच्च दव्ववीमसा-पदं १०२, कम्मओ विभत्ति-पद १२०, चद-सूर-गहण-पद १२२,
ससि-आइच्च-पदं १२५, चद-सूराणं कामभोग-पद १२७, जीवाणं सव्वत्थ जम्म-मच्चु-पद
१३०, असड अदुवा अणतखुत्तो उववज्जण-पदं १३३, देवाणं विसरीरेसु उववाय-पद १५४,
पच्चेदियतिरिक्खजोणियाणं उववाय-पद १५६, पचविह-देव-पद १६३, पचविह-देवाण-उववाय,
पद १६६, पचविह-देवाणं ठिड-पद १७८, पचविह-देवाणं विउव्वणा-पद १८३, पचविह-देवाणं
उव्वट्टण-पद १८५, पचविह-देवाणं सच्चिट्ठाणा-पद १९१, पचविह-देवाण-अतर-पद १९२,
पचविह-देवाणं अप्पावहुयत्त-पद १९७, अट्टविह-आय-पदं २००, अट्टविह-आयाणं अप्पावहुयत्त-
पद २०५, नाणदसणाणं अत्तणा भेदाभेद-पद २०६, सियवाद-पद २११ ।

तेरसमं सतं

सू० १-१६६

पृ० ५८७-६२३

सखेज्जवित्थडेसु नरएसु उववाय-पदं १, सखेज्जवित्थडेसु नरएसु उव्वट्टण-पद ४, सखेज्ज-
वित्थडेसु नरएसु सत्ता-पदं ५, नरय-नेरइयाणं अप्पमहत्त-पदं ४२, नेरइयाणं फासाणुभव-पद
४४, नरयाणं वाहल्ल-खुड्डत्त-पदं ४५, निरयपरिसामंत-पद ४६, लोग-मज्झ-पदं ४७, लोय-
पदं ५५, घम्मत्थिकायादीणं परोप्पर फास-पदं ६१ घम्मत्थिकायादीणं ओगाढ-पद ७४,
लोय-पद ८८, आहार-पद ९३, सतर-निरतर-उव्ववज्जणादि-पद ९५, चमरचच्च-आवास-पद
९६ उद्दायणकहा-पद १०१, भासा-पद १२४, मण-पद १२६, काय-पद १२८, कम्मपगडि-
पद १४७, भाविअप्प-विउव्वणा-पद १४९, आउमत्थियसमुग्घाय-पदं १६८ ।

चोहसम सतं

सू० १-१५५

पृ० ६२४-६५३

लेस्साणुसारि-उववाय-पद १, नेरइयादीणं गतिविसय-पद ३, नेरइयादीणं अणतरोवन्न-
गादि-पद ४, उम्माद-पदं १६, बुद्धिकायकरण-पद २१, तमुक्कायकरण-पदं २५, विणयविहि-
पद २९, पोगल-जीव-परिणाम-पद ४४, अगणिकायस्स अतिक्कमण-पद ५४, पच्चणुव्वव-
पद ६१, देवस्स उल्लघण-पल्लघण-पद ६८, नेइयादीणं किमाहारादि-पद ७१, देविदाणं
भोग-पदं ७४, गोयमस्स आसासण-पद ७७, तुल्लय-पद ८०, भत्तपच्चवक्खायस्स आहार-पद
८२, लवसत्तमदेव-पद ८४, अणुत्तरोववाइयदेव-पद ८६, अवाहाए अतर-पद ९०, रुक्खाणं
पुणव्वभव-पद १०१, अम्मड-अत्तेवासि-पद १०७, अम्मड-चरिया-पदं ११०, अच्चावाहदेव-

सत्ति-पद ११३, सवकस्स सत्ति-पद ११५, जभगदेव-पद ११७, सद्धि-सकम्मलरस-पद १२३,
अत्ताणत्त-योगल-पद १२६, इट्ठाणिट्ठादि-योगल-पद १२६ देवाण भासासहस-पद
१३०, सूरिय-पद १३२ समणाण तेयलेस्सा-पद १३६ केवलि-पद १३८ ।

पन्नरसमं सतं

सू० १-१६०

पृ०-६५४-७०६

गोसालग-पद १, भगवओ विहार-पद २०, पढम-मासखमण-पद २२, दोच्च-मासखमण-पद
३० तच्च-मासखमण-पद ३७, चउत्थ-मासखमण-पद ४४, गोसालस्स सिस्सरुवेण अगीकरण-
पद ५३, तिलथभय-पद ५७, वेसियायण-बालतवस्सि-पद ६०, तिलथभय-निप्पत्तीए
गोसालस्स अवकमण-पद ७२, गोसालरस तेयलेस्सुप्पत्ति-पद ७६, गोसालरस पुव्वकहा-
उवसहार-पद ७७, गोसालस्स अमरिस-पद ७९, गोसालरस आणदथेरसमवले अवकोसपदसण-
पद ८२, आणदथेरस्स भगवओ निवेदण-पद ९७, आणदथेरेण गायमाइण अणुणवण-पद
९९, गोसालस्स भगवत्त पइ अवकोसपुव्व ससिद्धतनिरुवण-पद १०१, भगवया गोसालग-
वयणस्स पडियार-पद १०२, गोसालस्स पुणरवकोस-पद १०३, गोसालेण सध्वाणुभूतिरस
भासरासिकरण-पद १०४, गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पद १०७, गोसालेण भगवओ
वहाए तेयनिसिरण-पद ११०, सावत्थिए जणपवाद-पद ११५, गोसालेण समणाण
पसिणवागरण-पद ११६, गोसालस्स सधभेद-पद ११६, गोसालस्स पडिगमण-पद १२०,
गोसालेण नाणासिद्धत-परुवण-पद १२१, अयपुल-आजीविओवासय-पद १२८, गोसालस्स
अप्पणो नीहरण-निद्वेस-पद १३६, गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्व कालधम्म-पद १४१,
गोसालस्स नीहरण-पद १४२, भगवओ रोगायक पाउवभवण-पद १४३, सीहस्स
माणसियदुक्ख-पद १४७, भगवया सीहस्स आसासण-पद १४९, सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-
पद १५३, भगवओ आरोग-पद १६२, सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पद १६४, सुनक्खत्तस्स
उववाय-पद १६५, गोसालस्स भववमण-पद १६६ ।

सोलसम सतं

सू० १-१३४

पृ० ७१०-७३७

वाउपाय-पद १, अगणिकाय-पद ५, कत्तिकिरिय-पद ६, अधिकरणी-अधिकरण-पद ८,
जीवाण जरा-सोग-पद २८, सवकस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पद ३३, सवक-सवधि-वागरण-
पद ३५, चेय-अचेय-कड-कम्म-पद ४१, कम्म-पद ४४, असिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पद
४७, नेरइयाण निज्जरा-पद ५१, सवकस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पद ५४, गगदत्तदेवस्स
संदब्बे परिणममाण-परिणय-पद ५५, गगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पद ५६,
गगदत्तदेवेण नट्टउवदसण-पद ६१, गगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पद ६५, सुविण-पद ७६,
भगवओ महासुभिण-दसण-पद ८१, सुविण-फल-पद ८२, गघ-योगल-पद १०६, लोगस्स
चरिमते जीवाजीवादिममणा-पद ११०, परमाणुपोग्लस्स गति-पद ११६, किरिया-पद

११७, अलोए गतिनिसेध-पदं ११८, बलिस्स सभा-पद १२१, ओहि-पद १२३, दीवकुमारादि-पद १२५ ।

सत्तरसमं सतं

सू० १-६६

पृ० ७३८-७५३

हत्थिराय-पद १, किरिया-पद ५, भाव-पद १६, वम्माधम्म-ठित-पद १६, बाल पडिय-पद २५, जीवस्स जीवायाए एगत्त-पद ३०, रुवि-अरुवि-पद ३२, रयणा-पद ३७, चरुणा पद ४३, सवेगादि-पद ४८, किरिया-पद ५०, दुवस्स-वेदणा-पद ६०, ईसाण-पद ६५, पुढविकाइयादीण देस-सव्व-मारणत्थियसमुग्घाय-पद ६७, एगिदिय-पद ८२, नागकुमारादि-पद ८७ ।

अट्ठारसमं सतं

सू० १-२२४

पृ० ७५४-७६०

पढम-अपढम-पद १, चरिम-अचरिम-पद २१ सक्करस्स कत्थिय-सेट्ठिनाम-पुव्वभव-पद ३८, मागदिय-पुत्त-पद ५६, निज्जरापोम्मल-जाणणादि-पद ६६, वध-पद ७२, कम्म-नाणत्त-पद ८०, जीवाण परिभोगापरिभोग-पद ८६, कसाय-पद ८८, जुम्म-पद ८९, अधगवहिज्जीवाण वर-पर-पद ९५, वेउव्वियावेउव्विय-असुरकुमारादि-पद ९७, नेरइयादीण महाकम्मादि-पद १००, नेरइयादीण आउय-पद १०२, असुरकुमारादीण विउव्वणा-पद १०४, नेच्छइय-ववहार-नय-पद १०७, परमाणु-खधाण वण्णादि-पद १११, केवलि-भासा-पद ११६, उवहि-पद १२०, परिगह-पद १२३, पणिहाण-पद १२५, कालोदाइ-पमितीण पचत्थिकाए सदेह-पद १३४, मददुय-समणोवासएण समाहाण-पद १४०, भगवया मददुयस्स पससा-पद १४३, विकुव्वणाए एगजीव-सवध-पद १४८, देवासुर-सगास-पद १५०, देवस्स दीवसमुद्-अणुपरियट्ठण-पद १५२, देवाण कम्मक्खवण-काल-पद १५४, ईरिय पडुच्च गोयमस्स सवाद-पद १५६, अण्णउत्थियाण आरोव-पद १६३, परमाणुपोग्गलादीण जाणणा-पासाण-पद १७४, भवियदव्व-पद १८३, आवियप्पणो असिधारादि-ओगाहणादि-पद १९१, परमाणुपोग्गलादीण वाउकाय-फास-पद १९६, दव्वाण वण्णादि-पद २००, सोमिल माहण-पद २०४ ।

एगुणवीसइमं सतं

सू० १-११२

पृ० ७६१-८०५

लेस्सा-पद १, पुढविकाइय-पद ५, आउक्काइयादि-पद २१, थावरजीवाण ओगाहणाए अप्पावहुत्त-पद २४, थावरजीवाण सव्वसुहुम सव्ववादर-पद २५, पुढवि-सरीरस्स महालयत्त-पद ३३, पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पद ३४, पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं ३५, आउकाइयादीण वेदणा-पद ३६, महासवादि-पद ४८, चरम-परम-पद ५८, वेदणा-पदं ६२, दीवसमुद्-पद ६५, असुरकुमारादीण भवणादि-पदं ६७, जीवादि-निव्वत्ति-पद ७६, करण-पद १०२ ।

वीसइमं सतं

सू० १-१२३

पृ० ८०६-८३४

वेद्विद्यादि-पदं १, अत्थिकाय-पद १०, अत्थिकायस्स अभिवयण-पद १४, पाणाइवायादीण
आयाए परिणति-पदं २०, गम्भ वक्कममाणस्स वणादि-पद २१, इदियोवचय-पदं २४,
परमाणु-खद्याण वणादिभग-पद २६, परमाणु-पद ३७, पुढविआदीण आहार-पद ४३,
वघ-पद ५२, समयखेत्ते ओसप्पिणि-उत्सप्पिणि-पद ६२, पचमहुव्वयइय-चाउज्जाम-धम्म-
पद ६६, तित्थगर-पद ६७, जिणतरेसु कालियसुय-पद ६९, पुव्वगय-पद ७०, तित्थ-पद
७२, उग्गादीण निग्गथधम्माणुगमण-पदं ७६, विज्जा-जघा-वारण-पद ७९, आउय-पदं
८९, उववज्जण-उव्वट्टण-पद ९१, कतिसचयादि-पद ९७, छक्कसमज्जियादि-पदं १०५,
वारससमज्जियादि-पद ११२, ब्रूलसीतिसमज्जियादि-पद ११७ ।

एगवीसइमं सतं

सू० १-२१

पृ० ८३५-८३९

सालिआदिजीवाण उववायादि-पद १ ।

बावीसइमं सतं

सू० १-६

पृ० ८४०-८४२

तालादिजीवाण उववायादि-पद १ ।

तेवीसइमं सतं

सू० १-९

पृ० ८४३, ८४४

आलुयादिजीवाण उववायादि-पद १ ।

चउवीसइमं सतं

सू० १-३६१

पृ० ८४५-९००

नेरइयादीसु उववायादि-पद १ ।

पंचवीसइमं सतं

सू० १-६३६

पृ० ९०१-९७७

लेस्सा-पदं १, जोगस्स-अप्पावहुग-पद २, समजोगि-विसमजोगि-पदं ४, जोग-पद ६, दव्व-
पद ९, जीवाण अजीव परिभोग-पद १७, अवगाह-पदं २१, पोग्गलाण चयादि-पदं २२,
पोग्गलगहण-पद २४, सठाण-पद ३३, रयणप्पभादिसदब्बे सठाण-पद ३७, पएसवगाहतो
सठाणनिरुवण-पद ५१, अणुसेट्ठि-विसेट्ठि-गति-पद ९२, निरयावास-पद ९५, गणिपिडय-पद
९६, अप्पावहुय-पद ९८, जुम्म-पद १०३, सरीर-पद १४०, सेय-निरये-पद १४१, पोग्गल-
पद १४७, मज्झपदेसा-पदं २४०, पज्जव-पदं २४६, निगोद-पद २७३, नाम-पद २७५,
पण्णवण-पद २७८, वेद-पद २८६, राग-पद २९६, कप्प-पद २९९, चरित्त-पद ३०४,
पडिसेवणा-पद ३०७, तित्थ-पद ३१९, लिग-पद ३२२, सरीर-पदं ३२३, खेत्त-पद ३२६,
काल-पद ३२८, गति-पद ३३६, सजमट्ठाण-पद ३४६, निगास-पद ३४९, जोग-पदं ३६३,
उवओग-पद ३६६, कसाय-पदं ३६७, लेस्सा-पदं ३७३, परिणाम-पद ३८१, वघ-पद ३९०,
वेदण-पद ३९५, उदीरणा-पद ३९८, उवसपज्जहण-पद ४०३, सण्णा-पदं ४०९, आहार-पद

४११, भव-पदं ४१३, आगरिस-पद ४१६, काल-पद ४२४, अतर-पदं ४३०, समुग्धाय-पदं ४३५, खेत्त-पद ४४०, फुसणा-पद ४४२, भाव-पदं ४४३, परिमाण-पद ४४६, अप्पावहुयत्त-पद ४५१, पण्णवण-पद ४५३, वेद-पद ४५६, राग-पद ४६०, कम्प-पद ४६१, नियठ-पद ४६४, पडिसेवणा-पद ४६७, नाण-पद ४६९, तित्थ-पद ४७३, लिग-पद ४७४, सरीर-पद ४७६, खेत्त-पद ४७७, काल-पद ४७८, गति-पद ४८०, सज्जमट्टाण-पद ४८६, निगास-पद ४९०, जोग-पद ४९७, उवयोग-पद ४९८ कसाय-पद ४९९, लेस्सा-पद ५०२, परिणाम-पद ५०३, बध-पद ५१०, वेदण-पद ५१२, उदीरणा-पद ५१४, उवसपज्जहण-पद ५१७, सण्णा-पद ५२२, आहार-पद ५२३, भव-पद ५२४, आगरिस-पद ५२६, काल-पद ५३३, अतर-पद ५३८, समुग्धाय-पद ५४२, खेत्त-पद ५४३, फुसणा-पद ५४४, भाव-पद ५४५, परिमाण-पद ५४७, अप्पावहुयत्त-पद ५५०, पडिसेवणा-पद ५५१, आलोयणा-पद ५५२, समायारी-पद ५५५, पायच्छित्त-पद ५५६, तव-पद ५५७, नेरइयादीण पुण्ठभव-पद ६२० ।

छवीसइमं सतं

सू० १-२६

पृ० ६७८-६८४

जीवाण लेस्सादिविसेसित्तजीवाण च बघावध-पद १, नेरइयादीण लेस्सादिविसेसित्तनेरइयादीण च बघावध-पद १६, जीवादीण नाणावरणादिकम्म पडुच्च बघावध-पद १८, विसेसित्तनेरइयादीण बघावध-पद २६ ।

सत्ताणीसइमं सतं

सू० १-२

पृ० ६८५

जीवाण पावकम्म-करणाकरण-पदं १ ।

अट्ठावीसइमं सतं

सू० १-८

पृ० ६८६, ६८७

जीवाण पावकम्म-समज्जण-समायारण-पद १ ।

एगूणतीसइमं सतं

सू० १-१०

पृ० ६८८, ६८९

जीवाण पावकम्म-पट्टवण-निट्टवण-पद १ ।

तीसइमं सतं

सू० १-४७

पृ० ६९०-६९७

समोसरण-पद १ ।

इक्कलीसइमं सतं

सू० १-४२

पृ० ६९८-१००२

खुड्डुज्जुम्म-नेरइयादीण उववाय-पद १ ।

वत्तीसद्वयं सतं	सू० १-७	पृ० १००३
खुडुजुम्म नेरइयादीणं उववट्टण-पद १ ।		•
तेत्तीसद्वयं सतं	सू० १-६२	पृ० १००४-१००६
एगेदियाण कम्मपगडि-पद १, भवसिद्धीयएगेदियाण कम्मपगडि-पद ४७, अभवसिद्धीय-एगेदियाण कम्मपगडि-पद ५६ ।		•
चोत्तीसद्वयं सतं	सू० १-६७	पृ० १०११-१०२४
एगेदियाण विग्गहगइ-पद १, एगेदियाण ठाण-पद ३३, एगेदियाण कम्म-पदं ३४, एगेदियाण उववत्ति-पद ३७, एगेदियाण समुग्घाय-पद ३८ । एगेदियाण तुल्ल-विसेसाहिय-कम्मकरण-पद ३६, विसेसित-एगेदियाण ठाणादि-पद ४२ ।		•
पणत्तीसद्वयं सतं	सू० १-६७	पृ० १०२५-१०३२
महाजुम्म-एगेदियाण उववायादि-पद १ ।		•
छत्तीसद्वयं सतं	सू० १-१३	पृ० १०३३, १०३४
महाजुम्म-वेदियाण उववायादि-पद १ ।		•
सत्तत्तीसद्वयं सतं	सू० १, २	पृ० १०३४
महाजुम्म-त्तेदियाण उववायादि-पद १ ।		•
अट्टत्तीसद्वयं सतं	सू० १, २	पृ० १०३४
महाजुम्म-चउरिदियाण उववायादि-पद १ ।		•
एगूणयालीसद्वयं सतं	सू० १, २,	पृ० १०३५
महाजुम्म-असण्णिपच्चिदियाण उववायादि-पद १ ।		•
चत्तालीसद्वयं सतं	सू० १-४६	पृ० १०३५-१०३६
महाजुम्म-मण्णिपच्चिदियाण उववायादि-पद १ ।		•
एगवत्तालीसद्वयं सतं	सू० १-८४	पृ० १०४०-१०८४
रामिजुम्म नेरइयादीण उववायादि-पदं १ ।		•

संकेत निर्देशिका

- ० ये दोनो बिन्दु पाठपूर्ति के चोतक हैं। पाठपूर्ति के प्रारम्भ मे भरा बिन्दु [●] और उसके समापन मे रिक्त बिन्दु [○] रखा गया है। देखे—पृष्ठ ५ सूत्र ११।
- (?) कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] आदर्शों मे अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखे—पृष्ठ ७४ सूत्र ४३९।
- [] आदर्शों मे प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण मे अनावश्यक व्याख्याश पाठ को कोष्ठक मे रखा गया है। देखे—पृष्ठ १०५ सूत्र ९७।
- ‘’ यह बो या उससे अधिक शब्दों के स्थान मे पाठान्तर होने का सूचक है। देखे—पृष्ठ ३। ‘वण्णओ’ व ‘जाव’ शब्द के टिप्पण मे उसके पूर्ति-स्थल का निर्देश है। देखे—पृष्ठ ३ सूत्र ६ और पृष्ठ ७ सूत्र ७।
- × क्रॉस (×) पाठ न होने का द्योतक है। देखे—पृष्ठ ३ टिप्पण १०।
- ० पाठ के पूर्व या अन्त मे खाली बिन्दु (०) अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखे—पृष्ठ ३ टिप्पण २, पृष्ठ ४ टिप्पण ७।
- ‘जहा’ आदि पर टिप्पण मे दिए गए सूत्राक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखे—पृष्ठ १६ टिप्पण ५।
- अ, क, ख, ता, ब, म, स—देखे—सम्पादकीय मे ‘प्रति परिचय’ शीर्षक।
- क्व० क्वचित् प्रयुक्तादर्श।
- सं० पा० संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखे—पृष्ठ ५ टिप्पण १०।
- वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखे—पृष्ठ १५ टिप्पण ४।
- वृ वृत्ति का सूचक है। देखे—पृष्ठ १५ टिप्पण ५।
- पू० पूर्णपाठार्थ द्रष्टव्यम्। देखे—पृष्ठ ४ टिप्पण १६।
- पू० प० पूरक-पाठ परिशिष्ट। देखे—पृष्ठ १२ टिप्पण ४।
- अ० अतगढदसाओ दसा० दसासुयक्खओ
- अ० अणुओगदाराइ ना० नाथाबम्मकहाओ
- उत्त० उत्तरञ्जयणाणि प० पण्णवणा
- उ० उवगा भ० भगवई
- उवा० उवासगदसाओ राय० रायपसेणइय
- ओ० ओवाइयं व० ववहारो
- ज० जवुहीवपण्णत्ती
- जी० जीवाजीवाभिगम
- ठा० ठाण

भगवई
विआहपरात्ती

1

2

3

4

5

6

7

8

9

पढमं सतं

पढमो उद्देशो

संगल-पद

१. नमो^१ अरहंताणं,
नमो सिद्धाण,
नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं,
नमो सव्वसाहूणं^२ ॥
२. नमो बंभीए^३ लिवीए ॥

सगहणी-गाहा

- रायगिह १-चलण २-दुक्खे, ३-कखपओसे य ४-पगइ ५-पुढवीओ ।
६-जावते ७-नेरइए, ८-वाले^४ ९-गुरुए य १०-चलणाओ ॥१॥
३. नमो सुयस्स ॥

उक्खेव-पदं

४. तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे नामं^५ नयरे होत्या—वण्णओ^६ ॥
५. तस्स ण रायगिहस्स नगरस्स वहिया^७ उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे गुणसिलए नामं चेइए होत्या ॥
६. 'सेणिए राया, चिल्लणा देवी'^८ ॥

-
- | | |
|---|-----------------|
| १. णमो (क) । | ६. पाने (ता) । |
| २. अरिहं ^० (अ, क, वृषा) , अरहं ^० (वृषा) । | ७. णाम (क) । |
| ३. आरिआए (क) । | ८. ओ० नू० ? । |
| ४. लोए सव्व ^० (अ, क, ता, व, म, वृषा) । | ९. दहिं (ता) । |
| ५. वभीए (ता, व) । | १०. X (ता, व) । |

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे^१ पुरिसुत्तमे^२ पुरिससीहे^३ पुरिसवरणपोडरीए^४ पुरिसवरणघट्ठयी^५ लोगुत्तमे^६ लोगनाहे^७ लोगपदीवे^८ लोगपञ्जोयगरे^९ अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए^{१०} धम्मदेसए^{११} धम्मसारही^{१२} धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठी अप्पडिहयवरणाणदंसणधरे वियट्ठउमे जिणे जाणए बुद्धे वोहए मुत्ते^{१३} मोयए सव्वणू सव्वदरिसी^{१४} सिवमयलमख्य-मणंतमक्खयमव्वावाह^{१५} सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं सपाविउकामे जाव^{१६} • पुव्वाण-पुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिख्वं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ^{१७} ॥
८. परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । पडिगया परिसा^{१८} ॥
९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे 'गोयमसगोत्ते णं'^{१९} सत्तुस्सेहे समचउरससंठाणसठिए वज्जिरिसभ-नारायसंधयणे^{२०} कणगपुलगनिधसपम्हगारे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे^{२१} महातवे ओराले^{२२} घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरवभचैरवासी 'उच्छूढसरीरे सखित्तविउल-तेयलेस्से'^{२३} चोइसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू^{२४} अहोसिरे भाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
१०. तते णं से भगव गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्न-संसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे

- | | |
|---|---|
| १. सयं ^० (अ) । | १४. °वाहमपुणरावत्तयं (अ, व); सिवमचल-मरुजं ^० (क) । |
| २. पुरिसोत्तमे (अ); पुरुसुत्तमे (व) । | १५. सं० पा०—जाव समोसरण । ओ० सू० १६-५१ । |
| ३. पुरससीहे (ता) सर्वत्र । | १६. पू०—ओ० सू० ५२-८१ । |
| ४. पुरसवरणपोडरीए (ता) । | १७. गोयमे गोत्तेण (अ, ता, व); गोयम-सगुत्ते णं (क); गोयमगोत्तेण (म) । |
| ५. °हत्थीए (अ) । | १८. °रिसहं ^० (क, म) । |
| ६. लोगोत्तमे (अ, व) । | १९. तत्ततवे घोरतवे (क) । |
| ७. °नाहे लोगहिए (अ) । | २०. उराले (अ, ता, व, म, वृपा) । |
| ८. °पड्ढे (ता, क) । | २१. °तेयलेस (अ); °तेयलेस्से (क); °तेजलेस्से (म); भूलटीकाकृता तु 'उच्छूढ-सरीरसखित्तविउल्लतेयलेस'त्ति कर्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति (वृ) । |
| ९. °करे (क) । | २२. उड्ढंजाणू (क, ता); उड्ढंजाणु (म) । |
| १०. °दए वोहिदए (अ, ता) । | |
| ११. धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायेगे (अ); धम्मदए धम्मदेनए (क, ता, व), धम्म-दएत्ति पाठांतरम् (वृ०) । | |
| १२. मुक्ते (क) । | |
| १३. सव्वदंसी (ता) । | |

समुपपन्नसंसए समुपपन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता समणं भगवं महावीरं तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुसूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे पज्जुवासमाणे एव वयासी—

चलमाण-पदं

११ से नूणं भते ! चलमाणे चलिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे वेदिए ? पहिज्जमाणे पहीणे ? छिज्जमाणे छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ? दज्जमाणे दड्ढे ? मिज्जमाणे मए ? निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ?

हुता गोयमा ! चलमाणे चलिए । • उदीरिज्जमाणे उदीरिए । वेदिज्जमाणे वेदिए । पहिज्जमाणे पहीणे । छिज्जमाणे छिण्णे । भिज्जमाणे भिण्णे । दज्जमाणे दड्ढे । मिज्जमाणे मए । ° निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ॥

१२. एए ण भते ! नव पदा^१ कि एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ?

गोयमा ! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे—एए ण चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा उप्पणपक्खस्स ।

छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्जमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे—एए णं पच पदा नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा विगयपक्खस्स ॥

नेरइयाणं ठित्तिआदि-पद

१३ नेरइयाण भते ! केवइय^२ काल ठित्ती पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं दस वामसहस्साइ, उक्कोयणं तत्तीम मागरोवमां ठित्ती पणत्ता ॥

१. एगट्ठे (क), एगट्ठे (ता, म) ।

२. पजलियडे (अ, क); पजलियडे (म) ।

३. वयासि (ता), वयामी (म) ।

४. वेदिज्जमाणे (अ, म); वेदिज्जमाणे (क) ।

५. पजिए (ता) ।

६. विज्जमाणे (अ) ।

७. उज्जमाणे उट्ठे (ता) ।

८. भेज्ज (अ, म); भिय (म) ।

९. मडे (क), मिए (ता) ।

१०. स० पा०—वजिए आर निज्जरिज्जमाणे ।

११. पया (ता) ।

१२. पजिए (अ, म, क, म) ।

१३. नेरइय (अ, क, ता), नेरइय (म) ।

१४. नेरइया णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससति वा ?
णीससंति वा ?
जहा उस्सासपदे^१ ॥
१५. नेरइया ण भंते ! आहारट्ठी ?
हंता गोयमा ! आहारट्ठी । जहा पण्णवणाए पढमए आहारुद्देसए^२ तहा
भाणियव्व—

संगहणी-गाहा

ठिइ उस्सासाहारे, कि वाऽऽहारेति सव्वओ वावि ?
कतिभागं सव्वाणि व ? कीस व भुज्जो परिणमति ? ॥१॥

१६. नेरइयाण भंते ! पुव्वाहारिया पोगला परिणया ?
आहारिया आहारिज्जमाणा पोगला परिणया ?
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा^३ पोगला परिणया ?
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोगला परिणया ?
गोयमा ! नेरइयाणं पुव्वाहारिया पोगला परिणया ।
आहारिया आहारिज्जमाणा पोगला परिणया, परिणमति^४ य ।
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोगला णो परिणया, परिणमिस्सति ।
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोगला णो परिणया, णो परिणमिस्सति ॥
१७. नेरइयाण भंते ! पुव्वाहारिया पोगला चिया ? पुच्छा—
जहा परिणया^५ तहा चियावि ॥
१८. एवं—उवचिया, उदीरिया, वेइया, निज्जिण्णा ।

संगहणी-गाहा

परिणय 'चिया उवचिया'^६ उदीरिया^७ वेइया^८ य निज्जिण्णा ।
एक्केक्कम्मि पदम्मि,^९ चउव्विहा पोगला होति^{१०} ॥१॥

१. प० ७ ।

२. प० २८।१ ।

३. आहारिज्जस्स^० (क) ।

४. परिणमयति (ता) ।

५. म० १।१६ ।

६. चिया य उवचिया (अ), चित उवचित (म)

७. उदीरिय (ता) ।

८. वेतिया (म) ।

९. पदमी (व) ।

१०. अतोन्ने 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्तः पाठो लभ्यते—

नेरइयाण भंते ! पुव्वाहारिया पोगला निज्जिण्णा । तहेव ।

- १९ नेरइया णं भते ! कइविहा पोगला भिज्जंति ?
 गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिक्किच्च दुविहा पोगला भिज्जति, तं जहा—
 अणू चेव, बादरा चेव ॥
२०. नेरइया णं भते ! कइविहा पोगला चिज्जंति ?
 गोयमा ! आहारदव्ववग्गणमहिक्किच्च दुविहा पोगला चिज्जति, तं जहा—
 अणू चेव, बादरा चेव ॥
२१. एवं उवचिज्जति^१ ॥
- २२ नेरइया ण भते ! कइविहे पोगले उदीरेति^२ ?
 गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिक्किच्च दुविहे पोगले उदीरेति, त जहा—अणू
 चेव, बादरा चेव ॥
२३. सेसावि एवं चेव भाणियव्वा^३—वेदेति, निज्जरेति ॥
२४. एव^४—ओयट्टेसु^५, ओयट्टेति, ओयट्टिस्संति ।
 सकामिंसु, सकामेति, सकामिस्सति ।
 निहत्तिंसु,^६ निहत्तेति, निहत्तिस्सति ।
 निकाएंसु, निकायति, निकाइस्सति^७ ।

सगहणी-गाहा

भेदिया^१ चिया उवचिया, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।

ओयट्टण सकामण, निहत्तण निकायणे तिविहकालो ॥१॥

२५. नेरइया णं भते ! जे पोगले तेयाकम्मत्ताए गेण्हति, ते कि तीतकालसमए गेण्हति ?
 पडुप्पन्नकालसमए गेण्हति ? अणागयकालसमए गेण्हति ?
 गोयमा ! नो तीयकालसमए गेण्हति, पडुप्पन्नकालसमए गेण्हति, नो अणागय-
 कालसमए गेण्हति ॥
- २६ नेरइया ण भते ! जे पोगले तेयाकम्मत्ताए गहिण्^२ उदीरेति, ते कि तीयकाल-
 समयगहिण् पोगले उदीरेति ? पडुप्पन्नकालसमए^३ धेप्पमाणे पोगले उदीरेति ?
 गहणसमयपुरक्खडे पोगले उदीरेति ?

१. ०भिकिच्च (अ, ब) ।

२. ०ज्जति वि (ता) ।

३. उदीरेति (क) ।

४. ०यव्वा एव (अ, क, ता) ।

५. × (अ, क, व, म) ।

६. उय^० (क, ता, म); अपवर्त्तनस्य चोप-
 लक्षणत्वादुद्धर्त्तनमपीह स्वयम् (वृ) ।

७. निव^० (ता) सर्वत्र ।

८. अतोऽग्रे अ, क, व, म प्रतिषु एतावान-
 तिरिक्त. पाठो लभ्यते—

सव्वेसु वि कम्मदव्ववग्गणमहिक्किच्च ।

९. भेतिय (क) ।

१०. × (अ, व) ।

११. ०समय (क, ता, व, म) ।

गोयमा । तीयकालसमयगहिण् पोग्गले उदीरेंति, नो पडुप्पन्नकालसमए धेप्पमाणे
पोग्गले उदीरेति, नो गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेति ॥

२७. एवं—वेदेति, निज्जरेति^१ ॥

२८. नेरइया ण भते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं बधति ? अचलिय कम्मं बधति ?
गोयमा ! नो चलिय कम्मं बधति, अचलिय कम्मं बधति ॥

२९. नेरइयाण भते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं उदीरेति ? अचलिय कम्मं
उदीरेति ?

गोयमा ! नो चलिय कम्मं उदीरेति, अचलिय कम्मं उदीरेति ॥

३०. एव—वेदेति, ओयट्ठेति, सकामेंति, निहत्तेति^२, निकाएति^३ ॥

३१. नेरइया ण भते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं निज्जरेति ? अचलिय कम्मं
निज्जरेति ?

गोयमा ! चलियं कम्मं निज्जरेति, नो अचलिय कम्मं निज्जरेति ॥

संगहणी-गाहा

बंधोदयवेदोयट्ठसकमे^४ तह निहत्तणनिकाए ।

अचलिय-कम्मं तु भवे, चलियं जीवाउ निज्जरेण^५ ॥१॥

३२. एव^६ ठिई आहारो य भाणियव्वो । ठिती जहा—

१. निज्जरेति (ता, ब) ।

२. निवत्तेति (ता) ।

३. अतोप्रे 'अ' प्रतौ एतावानतिरिक्त पाठो
लभ्यते—

सव्वेसु अचलिय नो चलिय ।

'ता' प्रतौ च—सव्वेसु नो चलिय अचलिय ।

४. °वट्ठ° (अ), °व्वट्ठ° (ता) ।

५. निज्जरेण (अ, ता, ब); निज्जरेइ (क) ।

६. अत्र विस्तृता वाचनापि लभ्यते । तस्या
'जहा नेरइयाण' इत्यादि समर्पणपदानि
लभ्यन्ते, किन्तु पूर्ववति—नैरयिकपदे तानि
न विद्यन्ते, तेन संक्षिप्तैव वाचना मूलपाठ-
रूपेणाहता । विस्तृता चैवम्—
असुरकुमाराण भते ! केवइय काल
ठिई पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ,
उक्कोसेण सातिरेण सागरोवम ॥

असुरकुमारा ण भते ! केवइकालस्स आण-
मति वा पाणमति वा ? ऊससति वा ?
णीससति वा ?

गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्को-
सेण साइरेगस्स पक्खस्स आणमति वा,
पाणमति वा, ऊससति वा, णीससति वा,
असुरकुमाराण भते ! आहारट्ठी ?
हता आहारट्ठी ।

असुरकुमाराण भते ! केवइकालस्स आहा-
रट्ठे समुप्पज्जइ ?

गोयमा ! असुरकुमाराण दुविहे आहारे
पणत्ते, तं जहा—

आभोगनिव्वत्तिण् य अणाभोगनिव्वत्तिण्

ठितिपदे^१ तहा भाणियव्वा सव्वजीवाणं । आहारो वि जहा पणवणाए पढमे
आहारुद्देसए^२ तहा भाणियव्वो, एत्तो आढत्तो—नेरइया णं भते ! आहारुद्दी ? जाव

य । तत्थ ए जे से अणुसमयमविरहिए, से
अणुसमय अविरहिए आहारदुठे समुप्पज्जइ ।
तत्थ ए जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेण
चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण साइरेगस्स वाससह-
स्सस्स आहारदुठे समुप्पज्जइ ।

असुरकुमारा ए भते ! किमाहारमाहारेति ?

गोयमा ! दव्वओ अणतपएसियाइ दव्वाइ,
खेतकालभावपणवणागमेण सेस जहा नेर-
इयाण जाव ते ए तेसिं पोगला कीसत्ताए
भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

गोयमा ! सोइदित्ताए ५ सुरूवत्ताए
सुवणत्ताए ४ इट्ठत्ताए ५ इच्छित्ताए
भिज्जित्ताए उड्ढत्ताए, एओ अहत्ताए सुहत्ताए,
एओ दुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।

असुरकुमाराण पुव्वाह्मारिया पुगला परि-
णया ? असुरकुमाराभिलावेण जहा नेरइयाण
जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति ।

नागकुमाराण भते ! केवइय काल ठिती
पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ,
उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ ।

नागकुमारा ए भते ! केवइकालस्स आणमति
वा ४ ?

गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेण
सुहुत्तपुहुत्तस्स आणमति वा ४ ।

नागकुमारा ण भते ! आहारुद्दी ? हतामाहारुद्दी ।
नागकुमाराण भते ! केवइकालस्स आहारुद्दे
समुप्पज्जइ ?

गोयमा ! नागकुमाराण दुविहे आहारे
पणत्ते, त जहा—आभोगनिव्वत्तिए य अणुभोग-
निव्वत्तिए य । तत्थ ए जे से अणुभोगनिव्वत्तिए,
१. प० ४ ।

से अणुसमयमविरहिए आहारदुठे समुप्पज्जइ ।
तत्थ ए जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेणं
चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स आहा-
रदुठे समुप्पज्जइ । सेस जहा असुरकुमाराण जाव
नो अचलिय कम्म निज्जरति ।

एव सुवणकुमाराणवि जाव थणियकुमाराण
ति ।

पुढविकाइयाण भते ! केवइय काल ठिई
पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण
वावीस वाससहस्साइ ।

पुढविकाइया केवइकालस्स आणमति वा ४ ?

गोयमा ! वेमात्ताए आणमति वा ४ ।

पुढविकाइया ए आहारुद्दी ?

हता आहारुद्दी ।

पुढविकाइयाण केवइकालस्स आहारुद्दे
समुप्पज्जइ ?

गोयमा ! अणुसमय अविरहिए आहारुद्दे
समुप्पज्जइ ।

पुढविकाइया किमाहारमाहारेति ?

गोयमा ! दव्वओ जहा नेरइयाण जाव

निव्वाघाएण छुद्दिंसि, वाघाय पडुच्च सिय

तिदिंसि सिय चउद्दिंसि सिय पचदिंसि । वण्णओ

कालनीलपीतलोहियहालिदुसुक्किल्लाणि, गधओ

सुरभिगंध २ रसओ तित्त ५ फासओ कक्खड ८

सेस तहेव । एणत्त कइभाग आहारेति ? कइ-

भाग फासाएति ?

गोयमा ! असखिज्जइभाग आहारेंति,

अणतभाग फासाएति जाव ते ण तेसिं पोगला

कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

गोयमा ! फासिदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो

परिणमति । सेस जहा नेरइयाण जाव नो

अचलिय कम्म निज्जरति । एव जाव वणस्सइ-

२. प० २८१ ।

दुःखत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ॥

काइयाण, नवर ठिती वण्णयव्वा जा जस्स, उस्सासो वेमायाए ।

वेइदियाण ठिई भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए ।

वेइदियाण आहारे पुच्छा, गोयमा ! आभोग-निव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य तहेव । तत्थ ए जे से आभोगनिव्वत्तिए, से ए असखेज्ज-समए अतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारुद्धे समुप्प-ज्जइ । सेस तहेव जाव अणतभाग आसाएति ।

वेइदिया ण भते ! जे पोगले आहारत्ताए गेहति ते किं सव्वे आहारेति, एणो सव्वे आहारेति ?

गोयमा ! वेइदियाण दुविहे आहारे पणत्ते, त जहा—लोमाहारे पक्खेवाहारे य । जे पोगले लोमाहारत्ताए गिण्हति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेति । जे पोगले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हति तेसि णं पोगलाण असखिज्जइभाग आहारेति, जेगाइ च ण भागसहस्साइ अणासाइज्जमाणाइ अफासिज्जमाणाइ विद्धसमावज्जति ।

एएसि एणं भते ! पोगलाण अणासाइज्ज-माणाण अफासाइज्जमाणाण य कयरे-कयरे अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोगला अणासाइज्ज-माणा, अफासाइज्जमाणा अणतगुणा ।

वेइदिया ण भते ! जे पोगला आहारत्ताए गिण्हति ते ण तेसि पोगला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

गोयमा ! जिन्मिदियफासिदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।

वेइदियाण भते ! पुव्वाहारिया पुगला परि-णया ? तहेव जाव चलिय कम्म निज्जरेति ।

तेइदियचउरिदियाण एणत्ता ठिईए जाव एगेइ च ण भागसहस्साइ अणासाइज्जमाणाइ

अणासाइज्जमाणाइ अफासाइज्जमाणाइ विद्धस-मावज्जति ।

एएसि ण भते ! पोगलाणं अणासाइज्जमा-णाइ ३ पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोगला अणासाइज्ज-माणा, अणासाइज्जमाणा अणतगुणा, अफा-साइज्जमाणा अणतगुणा । तेइदियाण चारिणदिय-जिन्मिदियफासिदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।

चउरिदियाण चक्खि(क्खु)दियघाणिदिय-जिन्मिदियफासिदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ।

पच्चिदियतिरिक्खजोणियाण ठिई भणिएण ऊसासो वेमायाए । आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए अणुसमय अविरहिओ । आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेण अतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेण छट्ठभत्तस्स । सेस जहा चउरिदियाण जाव चलिय कम्म निज्जरेति ।

एव मणुस्साणवि, नवर आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अट्ठभत्तस्स, सोइदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । सेस जहा चउरिदियाण तहेव जाव निज्जरेति । वाणमताराण ठिईए नाणत्त, परिणमति अवसेस जहा नागकुमाराण । एव जोइसियाणवि, नवर उस्सासो जहण्णेण मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्को-सेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स । आहारो जहण्णेण दिवस-पुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स । सेस तहेव ।

वेमाणियाण ठिई भाणियव्वा ओहिया । ऊसासो जहण्णेण मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेण तेत्ती-साए पक्खाण । आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेण दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेण तेत्तीसाए वाससहस्साण । सेस चलियाइयं तहेव जाव निज्जरेति (क, ता, वृ, प० २८।१) ।

आरंभ-अणारंभ-पदं

३३. जीवा ण भंते । कि आयाारभा ? परारभा ? तदुभयाारभा ? अणारंभा ?
गोयमा ! अत्येगइया जीवा आयाारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयाारंभा वि,
णो अणारंभा ॥

अत्येगइया जीवा नो आयाारभा, नो परारभा, नो तदुभयाारंभा, अणारंभा ॥
३४ से केणट्टेण भते । एव वुच्चइ—अत्येगइया जीवा आयाारंभा वि, *परारंभा
वि, तदुभयाारभा वि, णो अणारभा ? अत्येगइया जीवा नो आयाारंभा, नो
परारभा, नो तदुभयाारभा, अणारंभा° ?

गोयमा । जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—ससारसमावण्णगा य, अससार-
समावण्णगा य ।

तत्थ ण जे ते अससारसमावण्णगा, ते ण सिद्धा । सिद्धा ण नो आयाारभा,^१
*नो परारभा, नो तदुभयाारभा°, अणारभा ।

तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सजया य,
असजया य ।

तत्थ ण जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसजया य, अप्पमत्त-
सजया य ।

तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया, ते ण नो आयाारंभा, नो परारभा,^१ *नो तदु-
भयाारभा°, अणारभा ।

तत्थ ण जे ते पमत्तसजया, ते सुहं जोग पडुच्च नो आयाारभा^१, *नो परा-
रंभा, नो तदुभयाारभा°, अणारभा । असुभ जोग पडुच्च आयाारभा वि,^१
*परारभा वि, तदुभयाारभा वि°, नो अणारभा ।

तत्थ ण जे ते असजया^१, ते अविरत्ति पडुच्च आयाारभा वि^१, *परारंभा वि,
तदुभयाारभा वि°, नो अणारभा । से तेणट्टेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—
अत्येगइया जीवा *आयाारभा वि, परारभा वि, तदुभयाारभा वि, नो
अणारंभा । अत्येगइया जीवा नो आयाारभा, नो परारभा, नो तदुभयाारभा,^१
अणारभा ॥

३५. नेरइया ण भते । कि आयाारभा ? परारभा ? तदुभयाारभा ? अणारंभा ?

१. स० पा०—एव पडिच्चारेत्तव्व ।

६. अस्मजया (ता, व) ।

२. स० पा०—आयाारभा जाव अणारभा ।

७. स० पा०—वि जाव नो ।

३. स० पा०—परारभा जाव अणारभा ।

८. एणट्टेणं (अ, क), एतेणट्टेण (ता, व, म) ।

४. स० पा०—आयाारभा जाव अणारभा ।

९. स० पा०—जीवा जाव अणारभा ।

५. स० पा०—वि जाव नो ।

गोयमा ! •नेरइया आयाारभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारभा ॥

३६. से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेणं° •गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया आयाारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारभा ॥

३७. एवं जाव° पचिदियतिरिक्खजोणिया । मणुस्सा जहा जीवा, नवरं—सिद्धविर-
हिया भाणियव्वा । वाणमतारा जोइसिया वेमाणिया तहा नेरइया° ॥

३८. सलेस्सा जहा ओहिया° । कण्हलेस्स°, नीललेस्स° काउलेस्स°, जहा ओहिया
जीवा, नवरं—पमत्ताप्पमत्ता न भाणियव्वा° । तेउलेस्स°, पम्हलेस्स°, सुक्क-
लेस्स° जहा ओहिया जीवा, नवरं—सिद्धा न भाणियव्वा ॥

१. सं० पा०—वि जाव नो ।

२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।

३. अणारभा एव असुरकुमारा वि जाव (ता) ।

४. पू० प० २ ।

५. म० १।३५, ३६ ।

६. म० १।३३, ३४ । 'सिद्धा न भाणियव्वा'
इति अव्याहर्तव्यम् । 'सिद्धानामलेश्यत्वात्—
इति वृत्तिकार' ।

७. कण्ह° (अ) ।

८. कण्हलेस्सा ण भंते ! जीवा कि आयाारभा ?
परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारभा ?

गोयमा ! अत्येगइया कण्हलेस्सा जीवा
आयाारभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा
वि, नो अणारभा ।

अत्येगइया कण्हलेस्सा जीवा नो आया-
रंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा,
अणारंभा ।

से केणट्ठेणं जाव अणारंभा ?

गोयमा ! कण्हलेस्सा जीवा दुविहा पणत्ता,
त जहा—संजया य असंजया य ।

तत्थ ण जे ते सजया ते सुह जोग पडुच्च
नो आयाारंभा जाव अणारंभा ।

असुभ जोग पडुच्च आयाारंभा वि जाव
नो अणारंभा ।

तत्थ ण जे ते असजया ते अविरति पडुच्च
आयाारंभा वि जाव नो अणारंभा । से
तेणट्ठेणं जाव अणारंभा ।

नीलकापोतलेश्याना एष एव गमः ।

तेउलेस्सा ण भंते ! जीवा कि आयाारंभा
जाव अणारंभा ?

गोयमा ! अत्येगइया आयाारंभा वि जाव
नो अणारंभा, अत्येगइया आयाारंभा वि
जाव नो अणारंभा, अत्येगइया नो आया-
रंभा जाव नो अणारंभा ।

से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! दुविहा तेउलेस्सा पणत्ता, त
जहा—सजया य असजया य ।

तत्थ णं जे ते सजया ते दुविहा पणत्ता,
त जहा—पमत्तसजया य, अप्पमत्तसजया य ।
तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया ते ण नो
आयाारंभा जाव अणारंभा ।

तत्थ णं जे ते पमत्तसजया ते सुह जोग
पडुच्च नो आयाारंभा जाव अणारंभा ।
असुभ जोग पडुच्च आयाारंभा वि जाव नो
अणारंभा ।

तत्थ ण जे ते असजया ते अविरति पडुच्च
आयाारंभा वि जाव नो अणारंभा । से
तेणट्ठेणं जाव अणारंभा ।

नाणादीणं भवंतर-संकमण-पदं

३६. इहभविण भते । नाणे ? परभविण नाणे ? तदुभयभविण नाणे ?
 गोयमा । इहभविण वि नाणे, परभविण वि नाणे, तदुभयभविण वि नाणे ॥
४०. 'इहभविण भते । दसणे ? परभविण दसणे ? तदुभयभविण दसणे ?
 गोयमा । इहभविण वि दसणे, परभविण वि दसणे, तदुभयभविण वि दसणे ॥
४१. इहभविण भते । चरित्ते ? परभविण चरित्ते ? तदुभयभविण चरित्ते ?
 गोयमा । इहभविण चरित्ते, नो परभविण चरित्ते, नो तदुभयभविण चरित्ते ॥
४२. 'इहभविण भते ! तवे ? परभविण तवे ? तदुभयभविण तवे ?
 गोयमा ! इहभविण तवे, नो परभविण तवे, नो तदुभयभविण तवे ॥
४३. इहभविण भते । सजमे ? परभविण सजमे ? तदुभयभविण सजमे ?
 गोयमा ! इहभविण सजमे, नो परभविण सजमे, नो तदुभयभविण सजमे ॥

असंबुड-संबुड-अणगार-पदं

४४. असंबुडे' ण भते । अणगारे' सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सब्ब-
 दुक्खाण अत करेइ ?

पद्मशुक्ललेश्याना एष एव गमः ।

अभयदेवसूरिभिः भिन्नमतमनुसृत्य कृष्ण-
 लेश्यादिपाठो व्याख्यातः । कृष्णादिषु हि
 अप्रशस्त-भावलेश्यासु सयतत्व नास्ति
 एतद्मतमनुसृत्य तैरेव पाठरचना कृता—
 “कण्हलेस्सा ण भते ! जीवा कि आयारभा
 परारभा तदुभयारभा अणारभा ?

गोयमा ! आयारभा वि जाव नो
 अणारभा ।

से केणट्टेण भते ! एव वुच्चइ ?

गोयमा ! अविरइ पडुच्च" एव नील-
 कापोतलेश्यादडकावपीति । किन्तु अभयदेव-
 सूरिणामेतद्मत पर्यालोच्यमस्ति—

(१) सूत्रकारेण 'प्रमत्ताप्पमत्ता न
 भाणियव्वा' इति निर्देशः कृतः किन्तु
 'सज्जतासज्जता न भाणियव्वा' इति न
 सूचितम् ।

(२) कषायकुशीलसंयता षट्सु लेश्यासु
 भवन्ति । प्रस्तुतागमस्य २५ शतके षण्ठीहेने
 एतद् साक्षालिखितमस्ति—कषायकुशीले
 पुच्छा । गोयमा ! सलेस्से होज्जा राो
 अलेस्से होज्जा । जदि सलेस्से होज्जा से यं

भते ! कतिसु लेसासु होज्जा । गोयमा !
 छल्लेस्सासु होज्जा, त जहा—कण्हलेस्साए
 जाव सुक्कलेस्साए ।

अस्य वृत्तौ अभयदेवसूरिणा एतद्
 व्याख्यातमस्ति—कषायकुशीलस्तु, षट्-
 प्वपि सकषायमाश्रित्य (वृ) ।

(३) प्रज्ञापनासूत्रे कृष्णलेश्यजीवस्य
 मनःपर्यवज्ञानस्य अस्तित्वं प्रतिपादितम्—
 कण्हलेस्से ण भते ! जीवे कतिसु राणोसु
 होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा
 चउसु वा राणोसु होज्जा (प० १७।३) ।
 अस्यागमस्य वृत्तिकृता सहेतुकमिदं
 व्याख्यातम्—इह लेश्याना प्रत्येकमसख्येय-
 लोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि अध्यवसाय-
 स्थानानि, तत्र कानिचिन्मदानुभावान्यध्यव-
 सायस्थानानि, प्रमत्तसयतस्यापि लभ्यन्ते,
 अतएव कृष्ण-नील-कापोतलेश्या प्रमत्तसय-
 तस्यापि गीयन्ते (प्र०वृ) ।

(४) प्रथमशतकस्य १०१ सूत्रं द्रष्टव्यम् ।

१. स० पा०—दसण पि एमेव ।

२. स० पा०—एव तवे सजमे ।

३. अस्संबुडे (ता) ।

४. अणगारे किं (अ, ब) ।

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

४५. से केणट्ठेण^१ भते ! एव वुच्चइ—असवुडे ण अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ^२, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ?

गोयमा ! असवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिद्धिलबध-
णवद्धाओ धणियबधणवद्धाओ पकरेइ, हस्सकालट्ठिइयाओ^३ दीहकालट्ठिइयाओ
पकरेइ, मदानुभावाओ^४ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पएसग्गाओ^५ बहुप्पए-
सग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय वधइ, सिय नो बधइ, अस्साया-
वेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च ण अणवदग्ग^६
दीहमद्ध चाउरत^७ संसारकतार अणुपरियट्ठइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! असवुडे
अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ, नो सव्वदुक्खाण
अत करेइ ॥

४६. सवुडे णं भते ! अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण
अत करेइ ?

हता ! सिज्झइ,^८ •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण^९ अत करेइ ॥

४७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडे ण अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ,
परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अंतं करेइ ?

गोयमा ! सवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ^{१०} धणियबंधण-
वद्धाओ सिद्धिलबधणवद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ,
तिव्वाणुभावाओ मदानुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ ।
पकरेइ; आउय च ण कम्म न बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म नो भुज्जो-भुज्जो
उवचिणाइ, अणादीय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत संसारकतार बीईवयइ^{११} ।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सवुडे अणगारे सिज्झइ^{१२}, •बुज्झइ, मुच्चइ,
परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणं^{१३} अत करेइ ॥

असंजयस्स वाणमंतरदेव-पदं

४८. जीवे ण भते ! असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए
पेच्चा^{१४} देवे सिया ?

गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए णो देवे सिया ॥

१. सं० पा०—केणट्ठेण जाव नो ।

२. हस्सं (ता), रहस्सं (स) ।

३. ० भागाओ (ता, म) ।

४. ० सयाओ (क) ।

५. अणवयग (अ) ।

६. चाउरत (व, म, स) ।

७. सं० पा०—सिज्झइ जाव अत ।

८. ० प्पग (स) ।

९. वीतीवतति (क, व, म) ।

१०. सं० पा०—सिज्झइ जाव अत ।

११. पिच्चा (अ, क, व) ।

४६ से केणट्टेण^१ *भते ! एवं वुच्चइ—अस्सजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे^२ इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए^३ देवे सिया, अत्थेगइए नो देवे सिया ?

गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-नगर-निगम^४-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडव-दोणमुह-पट्टणासम-सणिवेसेसु अकामतण्हाए, अकामल्लुहाए, अकामबभचेरवासेण, 'अकामसीतातव-दस-मसग'^५-अण्हाणग^६-सेय-जल्ल-मल-पक-परिदाहेण^७ 'अप्पतरं वा भुज्जतरं'^८ वा काल अप्पाण परिकिलेसति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ॥

५०. केरिसा ण भते ! तेसि वाणमताराण देवाण देवलोगा पणत्ता ?

गोयमा ! से जहानामए इह^९ असोगवणे इ वा, सत्तवणवणे^{१०} इ वा, चपयवणे इ वा, चयवणे इ वा, तिलगवणे इ वा, लउयवणे^{११} इ वा, नगोहवणे^{१२} इ वा, छत्तोहवणे^{१३} इ वा, असणवणे इ वा, सणवणे इ वा, अयसिवणे इ वा, कुसुभवणे इ वा, सिद्धत्थवणे इ वा, बधुजीवगवणे इ वा, णिच्च^{१४} कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलुइय-गोच्छिय-जमलिय^{१५}-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुबिभत्तपिडिमजरि-वडेसगधरे^{१६} सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।

एवासेव^{१७} तेसि वाणमताराण देवाणं देवलोगा जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएहि, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएहि, बहूहि वाणसंतरेहि देवेहि य देवीहि य आइण्णा वित्तिक्किणा^{१८} उवत्थडा सथडा फुडा अवगाढगाढा सिरीए अतीव-अतीव उवसो-भेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ।

एरिसगा ण गोयमा ! तेसि वाणमताराण देवाण देवलोगा पणत्ता, से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवे णं अस्सजए^{१९} *अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपाव-कम्मे इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए^{२०} देवे सिया ॥

१ स० पा०—केराट्टेण जाव इओ ।

२ नियम (ता) ।

३ वृत्तौ 'अकामसीतातव-दस-मसग' इति पाठो नास्ति व्याख्यातः ।

४ अकामबण्हाणग (क, वृ) ।

५ 'तरो वा भुज्जतरो (अ, ता, व, म), 'अप्पतरं वा भुज्जतरो वा काल' ति प्राकृतत्वेन विभक्तिविपरिणामादल्पतरं वा भूयस्तरं वा बहुतरं कालं यावत् (वृ) ।

६ इहं मणुस्सलोगंसि (अ, क, व, म, स) ।

७ सत्ति० (म) ।

८ लाउय० (अ, क, व, स), लोअ० (म) ।

९ × (अ, क, ता); प्रत्यंतरे—णिग्गोहवणे इ वा (अ), णिग्गोह० (स) ।

१० छत्तोअ० (क); छित्तो० (व); × (म), छत्तो (स) ।

११ × (अ, क, ता, व) ।

१२ जमइय (अ) ।

१३ ०पेडि० (क), ०वेण्टमजरि० (ता) ।

१४ एवमेव (ता, म) ।

१५ वित्तिक्किणा (क, व, वृपा); × (वृ) ।

१६ स० पा०—अस्सजए जाव देवे ।

५१—सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगवं महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता सज्जमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

बीओ उद्देसो

५२. रायगिहे नगरे समोसरण । परिसा णिग्गया जाव' एव वयासी—
कम्म-वेयण-पदं

५३ जीवे ण भते ! सयकड दुक्खं वेदेइ ?

गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५४ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ ? अत्थेगइयं नो वेदेइ ?

गोयमा ! उदिण्णं वेदेइ, 'नो अणुदिण्ण'^१ वेदेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५५. एव'—जाव वेमाणिए ॥

५६. जीवा ण भते ! सयकड दुक्खं वेदेति ?

गोयमा ! अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति ? अत्थेगइय नो वेदेति ?

गोयमा ! उदिण्णं वेदेति, नो अणुदिण्णं वेदेति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५८. एव—जाव' वेमाणिया ॥

५९. जीवे ण भते ! सयकड आउय वेदेइ ?

गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ । जहा^२ दुक्खेण दो दडगा तहा आउएण वि दो दडगा—एगत्त-पोहत्तिया^३ ॥

नेरइयादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

६०. नेरइया ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुत्सास-नीसासा^४ ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१. भ० १।८-१० ।

२. अणुदिण्णं नो (स) ।

३. एव चउव्वीसदडएण (स) ।

४. पू० प० २ ।

५. भ० १।५३-५८ ।

६. पोहत्तिया । एगत्तेण जाव वेमाणिया । पुह-त्तेणं तहेव (व, म, स) ।

७. °णित्तासा (ता) ।

६१. से केणट्टेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे सम-
सरीरा ? नो सव्वे समुस्ससानीसासा ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य ।
तत्थ ण जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेति, बहुतराए पोग्गले
परिणामेति, बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससति ; अभिक्खणं
आहारेति, अभिक्खण परिणामेति, अभिक्खण उस्ससति, अभिक्खण नीससति ।
तत्थ ण जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेति, अप्पतराए पोग्गले
परिणामेति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससति, अप्पतराए पोग्गले नीससति ; आहच्च
आहारेति, आहच्च परिणामेति, आहच्च उस्ससति, आहच्च नीससति । से तेणट्टेणं
गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो
सव्वे समुस्ससानीसासा ॥

६२ नेरइया णं भंते ! सव्वे समकम्मा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे^१ समट्ठे ॥

६३. से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य ।
तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा
ते णं महाकम्मतरागा । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे
समकम्मा ॥

६४. नेरइया ण भंते ! सव्वे समवण्णा ।

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य ।
तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धवण्णतरागा^२ । • तत्थ ण जे ते पच्छोव-
वन्नगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा^३ । से तेणट्टेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया
नो सव्वे समवण्णा ॥

६६. नेरइया ण भंते ! सव्वे समलेस्सा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७. से केणट्टेणं • भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया^४ नो सव्वे समलेस्सा ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य ।
तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा

१. परिणमति (ता) ।

२. तिणट्ठे, (क म) ।

३. स० पा०—^०तरागा तद्देव ।

४. स० पा०—केणट्ठेण जाव नो ।

- ते ण अविमुद्धलेस्सतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समलेस्सा ॥
६८. नेरइया ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
६९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पणत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य ।
तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा । तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते ण
अप्पवेयणतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे
समवेयणा ॥
७०. नेरइया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
७१. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नेरइया तिविहा पणत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी^१, मिच्छदिट्ठी, सम्मा-
मिच्छदिट्ठी^२ ॥
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ पणत्ताओ, तं जहा—
आरभिया, पारिग्गहिया^३, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया ।
तत्थ ण जे ते मिच्छदिट्ठी तेसि ण पच किरियाओ कज्जति^४, तं जहा—आरं-
भिया^५, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया^६, मिच्छादसण-
वत्तिया । एव सम्मामिच्छदिट्ठीण पि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया
नो सव्वे समकिरिया ॥
७२. नेरइया ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
७३. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समो-
ववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया चउव्विहा पणत्ता, तं जहा—(१) अत्थेगइया समाउया
समोववन्नगा (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा (३) अत्थेगइया
विसमाउया समोववन्नगा (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । से
तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोव-
वन्नगा ॥
७४. असुरकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा^१ ? सव्वे समसरीरा ?

१. सम्मा^० (अ) ।२. सम्मामिच्छा^० (ता, म) ।३. परि^० (अ, म) ।

४. किज्जति (अ, क, व) ।

५. स० पा०—आरभिया जाव मिच्छा^० ।६. ^० हारगा (अ, ता, व, म) ।

जहा^१ नेरइया तहा भाणियव्वा, नवरं—कम्म-वण्ण-लेस्साओ परिवत्तेयव्वाओ^२
[पुव्वोववन्ता महाकम्मतरा, अविसुद्धवण्णतरा, अविसुद्धलेसतरा । पच्छोववन्ता
पसत्था । सेस तहेव]^३ ॥

७५ एव—जाव^४ थणियकुमारा^५ ॥

७६ पुढविकाइयाण^६ आहार-कम्म-वण्ण-लेस्सा जहा^७ णेरइयाणं ॥

७७ पुढविकाइया^८ ण भते ! सव्वे समवेदणा ?

हता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ?

गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे असण्णी^९ असण्णिभूत^{१०} अणिदाए वेदणं वेदेति । से
तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७९ पुढविकाइया णं भते ! सव्वे समकिरिया ?

हता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ?

गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे मायीमिच्छदिट्ठी^{११} । ताण गेयतियाओ^{१२} पच किरियाओ
कज्जति, त जहा—आरभिया^{१३}, *पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खान-
किरिया^{१४}, मिच्छादसणवत्तिया । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया
सव्वे समकिरिया ॥

८१ समाउया, समोववन्नगा जहा^{१५} नेरइया तहा भाणियव्वा ॥

८२ जहा^{१६} पुढविकाइया तहा जाव^{१७} चउरिदिया ॥

८३ पचिदियतिरिक्खजोणिया जहा^{१८} णेरइया, नाणत्तं किरियासु ।

८४ पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१ भ० १।६०-७३ ।

२. परिवण्णयव्वाओ (अ, क, व, स), परि-
त्यल्लेयव्वाओ (ता); परित्यणोतव्वाओ
(म), कम्मादीनि नारकापेक्षया विपर्ययेण
वाच्यानि (वु) ।

३ अ, क, ता, स एणु चतुर्षु आदर्शेषु असौ
कोष्ठकवर्ती पाठो नास्ति । व, म सके-
तितयोरादर्शयोरेसौ लभ्यते । असौ च
व्याख्याशोस्ति तेन कोष्ठके गृहीत ।

४. पू० प० २ ।

५. ° कुमारा ए (अ, क, ता, व, म, स) ।

६. ° कातिया (म) ।

७. भ० १।६०-६७ ।

८. ° व्काइया (क, ता, स) ।

९ असण्णी य (अ, व) ।

१०. असण्णोभूय (ता, स) ।

११. मायामिच्छा^० (अ); मायीमिच्छा^० (ता);
मायामिच्छा^० (म) ।

१२. रोएतियाओ (ता), शियइयाओ (स) ।

१३. सं० पा०—आरभिया जाव मिच्छा^० ।

१४ भ० १।७२, ७३ ।

१५ भ० १।७६-८१ ।

१६. पू० प० २ ।

१७. भ० १।६०-६६, ७२, ७३ ।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वे समकिरिया ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पणत्ता, त जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पणत्ता, त जहा—असजया य, संजया-संजया य ।

तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि णं तिण्णि किरियाओ कज्जति, तं जहा—
आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।

असजयाणं चत्तारि । मिच्छदिट्ठीणं पच्च । सम्मामिच्छदिट्ठीणं पच्च ॥

मणुस्सादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

८६. 'मणुस्सा णं भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सासनीसासा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा ? नो सव्वे समुस्सासनीसासा ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पणत्ता, तं जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य ।
तत्थ णं जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेति, बहुतराए पोग्गले परिणामेति, बहुतराए पोग्गले उस्ससति, बहुतराए पोग्गले नीससति; आहच्च आहारेति, आहच्च परिणामेति, आहच्च उस्ससति, आहच्च नीससति ।

तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते ण अप्पतराए पोग्गले आहारेति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससति, अप्पतराए पोग्गले नीससति; अभिक्खणं आहारेति, अभिक्खणं परिणामेति, अभिक्खणं उस्ससति, अभिक्खणं नीससति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ।

- ८८ मणुस्सा णं भते ! सव्वे समकम्मा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पणत्ता, तं जहा—पुब्बोववन्तगा य, पच्छोववन्तगा य ।
तत्थ णं जे ते पुब्बोववन्तगा ते णं अप्पकम्मतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्तगा ते णं महाकम्मतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ॥

- १ स० पा०—मणुस्सा जहा गेरइया नाएत्तं
जे महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेति
आहच्च आहारेति । जे अप्पसरीरा ते अप्प-

तराए पोग्गले आहारेति अभिक्खण
आहारेति सेस जहा नेरइयाणं जाव वेयणा ।

६०. मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवण्णा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६१. से केणट्ठेणं भते ! एव बुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छो-ववन्नगा ते ण अविसुद्धवण्णतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव बुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ॥

६२. मणुस्सा णं भते ! सव्वे समलेस्सा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६३. से केणट्ठेणं भते ! एव बुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा । तत्थ ण जे ते पच्छो-ववन्नगा ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं बुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ॥

६४. मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवेयणा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. से केणट्ठेणं भते ! एव बुच्चइ—मस्साणु नो सव्वे समवेयणा ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य । तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा । तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयण-तरागा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव बुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा ० ॥

६६. मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकिरिया ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७. से केणट्ठेणं भते ! एवं बुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकिरिया ?

गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मा-मिच्छदिट्ठी ।

तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सजया, अस्संजया, सजयासजया ।

तत्थ णं जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सरागसंजया य, वीतराग-सजया य ।

तत्थ णं जे ते वीतरागसजया, ते णं अकिरिया ।

तत्थ णं जे ते सरागसंजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्त-संजया य ।

तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया, तेसि ण एगा भायावत्तिया किरिया कज्जइ ।

तत्थ ण जे ते पमत्तसंजया, तेसि ण दो किरियाओ कज्जति, तं जहा—आरभिया य, मायावत्तिया य ।

तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि ण आइल्लाओ^१ तिण्णि किरियाओ कज्जति, तं जहा—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।

असंजयाण चत्तारि किरियाओ कज्जति—आरभिया पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खानकिरिया ।

मिच्छदिट्ठीणं पच्च—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खानकिरिया, मिच्छादसणवत्तिया ।

सम्भामिच्छदिट्ठीण पच्च ॥

६८. मणुस्सा^१ ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वेसमोववन्नगा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समोववन्नगा ?

गोयमा ! मणुस्सा चउव्विहा पणत्ता, त जहा—(१) अत्येगइया समाउया समोववन्नगा । (२) अत्येगइया समाउया विसमोववन्नगा । (३) अत्येगइया विसमाउया समोववन्नगा । (४) अत्येगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा ।

१०० वाणमतर्^१जोतिस-वेमाणिया जहां असुरकुमारा, नवर—वेयणाए णाणत्त-मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेयणतरा, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य महावेयणतरा भाणियव्वा जोतिसवेमाणिया ॥

१. आदिमालो (क, ता, म) ।

२. ८६ सूत्रस्य पादटिप्पणत्वे समर्पणपाठे 'सेस जहा नेरइयाण जाव वेयणा' इति उल्लेखो-स्ति, अतोऽनन्तरं क्रियासूत्रं नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नमस्ति तेन समर्पणपाठे तद् ग्रहणं न कृतम् । समायुषः सूत्रं क्रिया सूत्रात् अग्रे वर्तते, किन्तु तद् नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नमस्ति तेन पूर्ववर्तिसमर्पणपाठेनैव तस्य ग्रहणं कृतमिति सभान्वयते । तदस्माभिः साक्षालिखितम् ।

३. प्रज्ञापनाया (१७।१) अस्य रचना सुस्पष्टा-

स्ति, यथा—वाणमतर् ए जहा असुरकुमारा ए ।

एव जोइसिय-वेमाणियाण वि । एवर ते वेदणाए दुविहा पणत्ता, त जहा—माइमिच्छदिट्ठिउववण्णगा य, अमाइसम्मदिट्ठिउववण्णगा य । तत्थ ए जे ते माइमिच्छदिट्ठोववण्णगा ते ए अप्पवेदणतरागा । तत्थ ए जे ते अमाइसम्मदिट्ठोववण्णगा ते ए महावेदणतरागा ।

४. भ० १।७४ ।

१०१. सलेस्सा णं भते ! नेरइया सव्वे समाहारगा ?

ओहियाणं^१, सलेस्साणं, सुक्कलेस्साणं—एतेसि ण तिण्हं एक्को गमो ।

कण्हलेस्सं^२ नीललेस्साणं पि एगो^३ गमो, नवरं—वेदणाए मायिमिच्छदिट्ठीउव-
वन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियव्वा ।

मणुस्सा किरियासु सराग-वीयरगा पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा ।

काउलेस्साण वि एसेव^४ गमो, नवर—नेरइइ जहा ओहिए दइए तहा भाणि-
यव्वा ।

तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा 'जस्स अत्थि'^५ जहा ओहिओ दइओ तहा भाणियव्वा,
नवर—मणुस्सा सराग-वीयरगा न भाणियव्वा ।

संगहणी-गाहा

दुक्खाउए उदिण्णे, आहारं कम्म-वण्ण-लेस्सा य ।

समवेयण-समकिरिया, समाउए चेव बोधव्वा^६ ॥१॥

लेस्सा-पदं

१०२. कइ ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा,
तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा । लेस्साण बीओ^७ उद्देसो भाणियव्वो जाव^८
इइढी ॥

जीवाणं भवपरिवट्ठण-पदं

१०३ जीवस्स ण भते ! तीतद्वाए आदिट्ठस्स कइविहे ससारसच्चिट्ठणकाले पण्णत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे ससारसच्चिट्ठणकाले पण्णत्ते, त जहा—नेरइयससारसच्चिट्ठ-
णकाले, तिरिक्खजोणियससारसच्चिट्ठणकाले, मणुस्ससंसारसच्चिट्ठणकाले, देव-
ससारसच्चिट्ठणकाले^९ ॥

१०४. नेरइयससारसच्चिट्ठणकाले^{१०} ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥

१०५. तिरिक्खजोणियसंसार^{११} संचिट्ठिणकाले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते^{१२} ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—असुन्नकाले य, मिस्सकाले य ॥

१. पू०—म० १।६०-७३ ।

२. °लेस्सा (ता, म) ।

३. एसो (अ, ता, व) ।

४. एसोव (अ) ।

५. जस्सत्थि (क, ता, व) ।

६. बोद्धव्वा (क, ता, म) ।

७. वीयओ (अ, व, स); वित्तिओ (क) ।

८. प० १७।२ ।

९. ° काले प (अ, क, ता, व, म, स) ।

१०. नेरइयाण० (अ, व, स) ।

११. °जोणिससार० (अ, क, ता, व, म);

स० पा०—°ससारपुच्छा ।

१०६. 'मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले णं भते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! तिविहे पणत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥
१०७. देवसंसारसंचिट्ठणकाले णं भते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! तिविहे पणत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ० ॥
१०८. एतस्स ण भते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स—सुन्नकालस्स, असुन्नकालस्स, मीसकालस्स^१ य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसा-
 हिए वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले अणतगुणे ॥
१०९. तिरिक्खजोणियाण सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे ॥
११०. मणुस्स-देवाण य^१ सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणतगुणे, सुन्नकाले
 अणतगुणे ॥
१११. एयस्स ण भते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स^२, 'तिरिक्खजोणियसंसार-
 संचिट्ठणकालस्स, मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकालस्स, देवसंसारसंचिट्ठणकालस्स कयरे
 कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? ० विसेसाहिए वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले, नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले
 असखेज्जगुणे, देवसंसारसंचिट्ठणकाले असखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियसंसारसंचि-
 ट्ठणकाले अणतगुणे ॥

अंतकिरिया-पदं

११२. जोवे ण भते ! अतकिरियं करेज्जा ?
 गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए नो करेज्जा । अतकिरियापय^३ नेयव्व ।
११३. अह भते ! असंजयभवियदव्वदेवाण, अविराहियसजमाण, विराहियसजमाण,
 अविराहियसजमासजमाण, विराहियसजमासंजमाण, असण्णीण, तावसाण,
 कदप्पियाण, चरग-परिव्वायमाण, किब्बिसियाण, तेरिच्छियाण^४, आजीवियाण
 आभिओगियाण^५, सलिगीण दंसणवावण्णमाण—एतेसि ण देवल्लोगेसु उववज्ज-
 माणाण कस्स कहि उववाए पणत्ते ?
 गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण उवरिम-
 गेवेज्जएसु । अविराहियसजमाण जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेण सव्वट्ठसिद्धे
 विमाणे । विराहियसजमाणं जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे ।

१. सं० पा०—मणुस्साण य देवाण य जहा ५ प० २० ।

नेरइयाणं ।

२. मीसा (ता, व, म) ।

६. तेरिच्छियाण (अ, व, स) ।

३. सं० पा०—य जहा नेरइयाणं ।

७. आभियोगियाण (अ, व, म), आभोगियाण

४. सं० पा०—कालस्स जाव देवसंसार जाव

(स) ।

विसेसाहिए ।

अविराहियसजमासजमाणं जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे ।
विराहियसजमासजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण जोइसिएसु ।
असण्णीणं जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण वाणमतरेसु ।

अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेण^१ वोच्छामि—

तावसाण जोतिसिएसु, कदप्पियाण सोहम्मे कप्पे, चरग-परिव्वायगाण बंभ-
लोए कप्पे, किट्ठिसियाण लंतगे कप्पे, तैरिच्छियाण सहस्सारे कप्पे, आजीवियाण
अच्चुए कप्पे, आभिओगियाणं अच्चुए कप्पे, सलिगीणं दसणवावन्नगाण उवरि-
मगेविज्जएसु ॥

असण्णि-आउय-पदं

११४ कतिविहे ण भते ! असण्णिआउए पणत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पणत्ते, त जहा—नेरइयअसण्णिआउए^१,
तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए, देवअसण्णिआउए ॥

११५ असण्णी ण भते ! जीवे कि नेरइयाउय पकरेइ ? तिरिक्खजोणियाउय
पकरेइ ? मणुस्साउय पकरेइ ? देवाउय पकरेइ ?

हता गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेइ,
मणुस्साउयं पि पकरेइ, देवाउय पि पकरेइ ।

नेरइयाउयं पकरेमाणे जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स
असखेज्जइभागं पकरेइ ।

तिरिक्खजोणियाउय पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पलिओवमस्स
असखेज्जइभागं पकरेइ ।

मणुस्साउय^१ •पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पलिओवमस्स
असखेज्जइभागं पकरेइ ।

देवाउय पकरेमाणे जहण्णेणं दस वाससहस्साइ, उक्कोसेणं पलिओवमस्स
असखेज्जइभागं पकरेइ^० ॥

११६ एयस्स ण भते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स,
मणुस्सअसण्णिआउयस्स, देवअसण्णिआउयस्स कयरे^२ •कयरेहितो अप्पे वा ?
बहुए वा ? तुल्ले वा^० ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए असखेज्जगुणे^३,
तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए असखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिआउए असखेज्जगुणे ।

११७. सेवं भते ! सेव भते^४ !

१. उक्कोसग (क, ता, व, म, स) ।

४ स० पा०—कयरे जाव विसेसाहिए वा ।

२. नेरइयस्स^० (ता) ।

५. सखेज्ज^० (अ, क, व, म) ।

३. स० पा०—मणुस्साउए वि एव चेव, देवा
जहा नेरइया ।

६ म० १।५१ ।

तइओ उहेसो

कंखामोहणिज्ज-पवं

११८. जीवाणं भते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?

हता कडे ॥

११९. से भते ! कि १ देसेण देसे कडे ? २. देसेण सव्वे कडे ? ३ सव्वेण देसे कडे ? ४. सव्वेण सव्वे कडे ?

गोयमा ! १. नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे ४. सव्वेण सव्वे कडे ॥

१२०. नेरइयाण भते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?

हंता कडे^१ ॥

१२१. ●से भते ! कि १. देसेणं देसे कडे ? २. देसेण सव्वे कडे ? ३. सव्वेण देसे कडे ? ४. सव्वेण सव्वे कडे ?

गोयमा ! १ नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे^० ४ सव्वेणं सव्वे कडे ॥

१२२. एवं जाव^१ वेमाणियाण दंडओ भाणियव्वो ॥

१२३. जीवा णं भते ! कंखामोहणिज्ज कम्म करिसु ?

हता करिसु ॥

१२४ तं भते ! कि १. देसेणं देस करिसु ? २. देसेण सव्व करिसु ? ३ सव्वेण देस करिसु ? ४ सव्वेण सव्व करिसु ?

गोयमा ! १ नो देसेण देसं करिसु २ नो देसेण सव्व करिसु ३. नो सव्वेण देस करिसु । ४. सव्वेण सव्वं करिसु ॥

१२५. एएणं अभिलावेणं दंडओ भाणियव्वो, जाव^१ वेमाणियाण ॥

१२६ एवं करेति । एत्थ वि दंडओ जाव^१ वेमाणियाणं ॥

१२७. एवं करिस्सति । एत्थ वि दंडओ जाव^१ वेमाणियाण ॥

१२८. एव चिए, चिणिंसु, चिणति, चिणिस्सति । उवचिए, उवचिणिंसु, उवचिणति, उवचिणिस्सति । उदीरेसु, उदीरेति, उदीरिस्सति । वेदेसु, वेदेति, वेदिस्सति ।

निज्जरेसु, निज्जरेति, निज्जरिस्सति ।

संगहणी-गाहा

कड-चिय-उवचिय, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।

आदितिए चउभेदा, तियभेदा पच्छिमा तिण्णि ॥१॥

१. स० पा०—कडे जाव सव्वेण ।

३, ४, ५. पू० प० २ ।

२. पू० प० २ ।

१२६. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्म वेदेति ?

हता वेदेति ॥

१३०. कहण्णं^१ भते ! जीवा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?

गोयमा ! तेहि तेहि कारणेहि सकिया, कखिया, वित्तिगिच्छिया^२, भेदसमावन्ना,
कलुससमावन्ना—एवं खलु जीवा कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ॥

सद्धा-पदं

१३१. से नूण भते ! तमेव सच्च णीसक, जं जिणेहि पवेइयं ?

हता गोयमा ! तमेव सच्च णीसक, जं जिणेहि पवेइय ॥

१३२. से नूण भते ! एव मण धारेमाणे, एव पकरेमाणे, एवं चिट्ठेमाणे, एवं संवरे-
माणे आणाए आराहए भवति ?

हता गोयमा ! एव मण धारेमाणे^३ •एव पकरेमाणे, एव चिट्ठेमाणे, एव संवरे-
माणे आणाए आराहए^४ भवति ॥

अत्थि-नत्थि-पद

१३३. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ? नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ?

हता गोयमा^५ ! •अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ । नत्थित्त नत्थित्ते^६ परिणमइ ।

१३४. 'ज ण'^५ भते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तं किं
पयोगसा ? वीससा ?

गोयमा ! पयोगसा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते
परिणमइ]^५ ।

वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ]^६ ॥

१३५. जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ?

जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहा ते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ?
हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते
परिणमइ ।

जहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ, तहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ॥

१३६. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ? •नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्जं ?

हता गोयमा ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज । नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्जं ॥

१. कह ण (क); कह ण (व, स) ।

२. वित्तिगिच्छिया (अ, व, स), वित्तिगिच्छिता
(क), वित्तिगिच्छिया (म) ।

३. स० पा०—धारेमाणे जाव भवति ।

४. स० पा०—गोयमा जाव परिणमइ ।

५. त (अ, व, स); × (ता) ।

६, ७. कोष्ठकवर्त्तिपाठ. व्याख्याशोस्ति ।

८. स० पा०—जहा परिणमइ दो आला-
वगा तहा गमणिज्जेण वि दो आलावगा
भाणियव्वा जाव तहा ।

१३७. ज ण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं, त कि पयोगसा ? वीससा ?
 गोयमा ! पयोगसा वि तं [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्जं, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्ज] ।
 वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज] ॥
१३८. जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ?
 जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्जं ?
 हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ।
 जहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज°, तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ॥

भगवन्नो समता-पदं

- १३९ जहा ते भते ! एत्थ गमणिज्ज, तहा ते इह गमणिज्ज ? जहा ते इह गमणिज्ज,
 तहा ते एत्थ गमणिज्ज ?
 हता गोयमा ! जहा मे एत्थ गमणिज्ज', °तहा मे इह गमणिज्ज । जहा मे इहं
 गमणिज्जं°, तहा मे एत्थं गमणिज्जं ॥

कंखामोहणिज्जस्स बधादि-पदं

१४०. जीवा ण भते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं बधति ?
 हता बधति ॥
१४१. कहण्ण^१ भते ! जीवा कंखामोहणिज्ज कम्म बधति ?
 गोयमा ! पमादपच्चया, जोगनिमित्त^२ च ॥
१४२. से णं भते ! पमादे किपवहे^३ ?
 गोयमा ! जोगप्पवहे ॥
१४३. से णं भते ! जोए किपवहे ?
 गोयमा ! वीरियप्पवहे ॥
१४४. से णं भते ! वीरिए किपवहे ?
 गोयमा ! सरीरप्पवहे ॥
१४५. से ण भते ! सरीरे किपवहे ?
 गोयमा ! जीवप्पवहे ॥
१४६. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-
 परक्कमेइ वा ॥

१. स० पा०—गमणिज्ज जाव तहा ।

२. कह ण (अ) ।

३. °निमित्तय (क) ।

४. किपवहे (क, वृषा) सर्वत्र ।

१४७ से नूणं भते ! अप्पणा चेव उदीरेति ? अप्पणा चेव गरहति ? अप्पणा चेव संवरेति ?

हता गोयमा ! अप्पणा चेव *उदीरेति । अप्पणा चेव गरहति । अप्पणा चेव संवरेति ० ॥

१४८ 'ज ण' भते ! अप्पणा चेव उदीरेति, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, त किं—१ उदिण्णं उदीरेति ? २ अणुदिण्ण उदीरेति ? ३ अणुदिण्णं उदीरणाभिवियं कम्म उदीरेति ? ४ उदयाणतरपच्छाकडं कम्म उदीरेति ? गोयमा ! १. नो उदिण्ण उदीरेति । २ नो अणुदिण्ण उदीरेति । ३ अणु-दिण्ण उदीरणाभिवियं कम्म उदीरेति । ४. नो उदयाणतरपच्छाकडं कम्म उदीरेति ॥

१४९. जं ण भते ! अणुदिण्ण उदीरणाभिवियं कम्म उदीरेति, त किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभिवियं कम्म उदीरेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेणं, अवीरिएण, अपुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभिवियं कम्म उदीरेति ?

गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्ण उदीरणाभिवियं कम्म उदीरेति । णो त अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेण, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणा-भिवियं कम्मं उदीरेति ॥

१५० एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५१. से नूणं भते ! अप्पणा चेव उवसामेइ ? अप्पणा चेव गरहइ ? अप्पणा चेव संवरेइ ?

हता गोयमा ! *अप्पणा चेव उवसामेइ । अप्पणा चेव गरहइ । अप्पणा चेव संवरेइ ॥

१. संवरइ (अ, व, म, स) ।

२ स० पा०—त चेव उच्चारेतव्व ।

३ त (अ, क, ता, व, म, स), क्वचित्प्रयुक्त-प्रत्याधारेण स्वीकृतोऽसौ पाठ ।

४ उदयअणुतर० (अ, क, ता, व, स) ।

५ स० पा०—एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवर अणुदिण्ण उवसामेइ सेसा पडिसेहे-यव्वा तिण्णि । ज तं भते ! अणुदिण्ण

उवसामेइ त किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा । से नूणं भते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा । से नूणं भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प० एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअणुतरपच्छा-कडं कम्म निज्जरेइ एव जाव परक्कमेइ वा ।

१५२ ज ण भते ! अप्पणा चेव उवसामेइ, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव सवरेति, त कि—१. उदिण्ण उवसामेइ ? २ अणुदिण्ण उवसामेइ ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उवसामेइ ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म उवसामेइ ?

गोयमा ! १ नो उदिण्ण उवसामेइ । २ अणुदिण्ण उवसामेइ । ३. नो अणु-दिण्णं उदीरणाभविय कम्म उवसामेइ । ४. नो उदयाणतरपच्छाकड कम्म उवसामेइ ॥

१५३ ज ण भते ! अणुदिण्ण उवसामेइ, त किं उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अबीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ?

गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्ण उवसामेइ । नो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अबीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिण्ण उवसामेइ ॥

१५४ एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५५. से नून भते ! अप्पणा चेव वेदेति ? अप्पणा चेव गरहति ?

हता गोयमा ! अप्पणा चेव वेदेति । अप्पणा चेव गरहति ॥

१५६ ज ण भते ! अप्पणा चेव वेदेति, अप्पणा चेव गरहति त किं—१ उदिण्ण वेदेति ? २ अणुदिण्ण वेदेति ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म वेदेति ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म वेदेति ?

गोयमा ! १ उदिण्ण वेदेति । २. नो अणुदिण्ण वेदेति । ३. नो अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म वेदेति । ४. नो उदयाणतरपच्छाकड कम्म वेदेति ॥

१५७ ज ण भते ! उदिण्ण वेदेति त किं उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरि-सक्कार-परक्कमेण उदिण्ण वेदेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेणं, अबीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदिण्णं वेदेति ?

गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदिण्ण वेदेति । नो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अबीरि-एण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदिण्ण वेदेति ॥

१५८. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५९. से नून भते ! अप्पणा चेव निज्जरेति ? अप्पणा चेव गरहति ?

हता गोयमा ! अप्पणा चेव निज्जरेति । अप्पणा चेव गरहति ॥

१६० ज ण भते । अप्पणा चेव निज्जरेति, अप्पणा चेव गरहति, त कि—
१. उदिण्ण निज्जरेति ? २ अणुदिण्ण निज्जरेति ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभवियं
कम्म निज्जरेति ? ४ उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ?
गोयमा ! १ नो उदिण्ण निज्जरेति । २. नो अणुदिण्ण निज्जरेति । ३. नो
अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म निज्जरेति । ४ उदयाणतरपच्छाकडं कम्म
निज्जरेति ॥

१६१ ज ण भते ! उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति त कि उट्ठाणेणं, कम्मेण,
बलेण, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्मं निज्ज-
रेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कार-
परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्मं निज्जरेति ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-
परक्कमेण वि उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति । णो त अणुट्ठाणेण,
अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदयाणतरपच्छाकडं
कम्म निज्जरेति ॥

१६२. एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरि-
सक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१६३. नेरइया णं भते ! कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
जहा^१ ओहिया जीवा तहा नेरइया जाव^२ थणियकुमारा ॥

१६४ पुढविकाइया ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
हुता वेदेति ॥

१६५. कहण्ण भते ! पुढविकाइया कखामोहणिज्जं कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेसि ण जीवाण णो एव तक्का इ वा, सण्णा इ वा, पण्णा इ वा,
मणे इ वा, वई ति वा—अम्हे ण कखामोहणिज्जं कम्म वेदेमो, वेदेति पुण ते ॥

१६६ से नूण भते ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय ?
हुता गोयमा ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय ।
सेस त चेव जाव^३ अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा,
पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१६७ एव जाव^४ चउरदिया ॥

१६८ पचिदियतिरिक्खजोणिया जाव^५ वेमाणिया जहा^६ ओहिया जीवा ॥

१. भ० ११२६-१६२ ।

२. पू० प० २ ।

३. भ० ११३२-१६२ ।

४. पू० प० २ ।

५. पू० प० २ ।

६. भ० ११२६-१६२ ।

१६६. अस्थि णं भते ! समणा वि निग्गथा कखामोहणिज्जं कम्म वेएति ?
'हता अस्थि' ॥

१७०. कहण्ण भते ! समणा निग्गथा कखामोहणिज्जं कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेहि तेहि नाणतरेहि, दसणतरेहि^१, चरित्ततरेहि^२, लिगतरेहि, पव-
यणतरेहि, पावयणतरेहि, कप्पतरेहि, मग्गतरेहि, मततरेहि^३, भंगतरेहि, णय-
तरेहि, नियमतरेहि, पमाणतरेहि सकिता कखिता वित्तिकिच्छिता^४ भेदसमा-
वन्ता कलुससमावन्ता—एव खलु समणा निग्गथा कखामोहणिज्जं कम्म
वेदेति ॥

१७१. से नूण भते ! तमेव सच्च नीसकं, ज जिणेहि पवेदित ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च नीसकं, ज जिणेहि पवेदितं ॥

१७२. एवं जाव^५ अस्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरि-
सक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१७३. सेवं भते ! सेवं भते^६ !

चउत्थो उद्देसो

कम्म-पदं

१७४. कति णं भते ! कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ, कम्मप्पगडीए पढमो उद्देसो नेयव्वो
जाव^७—अणुभागो समत्तो ।

सगहणी-गाहा

कति पगडी ? कह^८ बधति ? कतिहि व ठाणेहि बधती पगडी ?

कति वेदेति व पगडी ? अणुभागो कतिविहो कस्स ? ॥१॥

उवट्ठावण-अवक्कमण-पदं

१७५. जीवे ण भंते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिण्णेण उवट्ठाएज्जा ?

हता उवट्ठाएज्जा^९ ॥

१. हतस्थि (ता) ।

६. भ० १।१३२-१६२ ।

२. दरिसणतरेहि (क) ।

७. भ० १।५१ ।

३. चरित्ततरेहि तित्थतरेहि (क) ।

८. प० २३।१ ।

४. मततरेहि (अ, व); × (क) ।

९. किह (अ, क, ता, म); कहि (स) ।

५. वित्तिकिच्छिया (ता) ।

१०. उवट्ठाएज्ज (क, ता) ।

१७६. से भंते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
 गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥
१७७. जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पडिय-
 वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
 गोयमा ! बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो पडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।
 नो बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥
१७८. जीवे णं भंते ! मोह्णिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणं अवक्कमेज्जा ?
 हुंता अवक्कमेज्जा ॥
१७९. से भंते ! *कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
 गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥
१८०. जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पडिय-
 वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? * बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
 गोयमा ! 'बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो पडियवीरियत्ताए अवक्क-
 मेज्जा । सिय बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा' ॥
१८१. *जीवे णं भंते ! मोह्णिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उवसंतेणं उवट्ठाएज्जा ?
 हुंता उवट्ठाएज्जा ॥
१८२. से भंते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
 गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥
१८३. जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पडिय-
 वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
 गोयमा ! 'नो बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । पडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।
 नो बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा' ॥
१८४. जीवे णं भंते ! मोह्णिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उवसंतेणं अवक्कमेज्जा ?
 हुंता अवक्कमेज्जा ॥
१८५. से भंते ! कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
 गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥

१. स० पा० —भंते जाव बालपडियवीरियत्ताए ।

२. वाचनान्तरे त्वेवम्—'बालवीरियत्ताए नो
 पडियवीरियत्ताए नो बालपडियवीरियत्ताए'
 (वृ) ।

३. स० पा०—जहा उदिण्णेणं दो आलावगा
 तहा उवसंतेणं वि दो आलावगा भाणि-

यत्वा, नवर उवट्ठाएज्जा पडियवीरियत्ताए
 अवक्कमेज्जा बालपडियवीरियत्ताए ।

४ वृद्धेस्तु काञ्चिद्वाचनामाश्रित्येदं व्याख्यातं—
 मोहनीयेनोपशान्तेन सता न मिथ्यादृष्टि-
 र्जायते, साधु-श्रावको वा भवतीति (वृ) ।

१८६. जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पडिय-
वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! नो बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो पडियवीरियत्ताए अवक्क-
मेज्जा । बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा° ॥

१८७. से भते ! कि आयाए अवक्कमइ ? अणायाए अवक्कमइ ?
गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, नो अणायाए अवक्कमइ—मोहणिज्ज कम्मं
वेदेमाणे ॥

१८८. से कहमेयं भते ! एव ?
गोयमा ! पुंवि से एयं एव रोयइ । इयाणि से एय एव नो रोयइ—एवं खलु
एय एवं ॥

कम्ममोक्ख-पदं

१८९. से नृणं भते ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स^१ वा, देवस्स
वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण^२ तस्स अवेदइत्ता^३ मोक्खो ?
हुता गोयमा ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स
वा^४ •जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

१९०. से केणट्ठेण भते ! एव बुच्चइ नेरइयस्स वा^५ •तिरिक्खजोणियस्स वा, मणु-
स्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ?
एवं खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते, त जहा—पदेसकम्मे य, अणु-
भागकम्मे यं ।

तत्थ ण ज ण^६ पदेसकम्म त नियमा वेदेइ । तत्थ ण ज ण अणुभागकम्मं त^७
अत्येगइय वेदेइ, अत्येगइयं णो वेदेइ ।

णायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, विण्णायमेय अरहया—इम कम्म अयं जीवे
अब्भोवगमियाए^८ वेदणाए वेदेस्सइ, इम कम्म अय जीवे उवक्कमियाए वेदणाए
वेदेस्सइ ।

अह्राकम्म, अह्रानिकरण जहा जहा त भगवथा दिट्ठु तहा तहा त विप्परि-
णमिस्सतीति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव बुच्चइ—नेरइयस्स वा^९, •तिरिक्ख-
जोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स
अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

१. मणुस्सस्स (क, ता), मणुस्सस्स (ब, म, स) । ६. त (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. × (अ, स) । ७. × (ता) ।

३. अवेदयत्ता (अ, व), अवेदत्ता (म, स) । ८. अब्भोवगमियाए (क) ।

४. स० पा०—वा जाव मोक्खो । ९. स० पा०—वा जाव मोक्खो ।

५. स० पा०—वा जाव मोक्खो ।

पोगल-जीवाणं तेकालियस-पदं

- १६१ एस ण भते । पोगले^१ तीत अणतं सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण पोगले तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्वं
सिया ॥
- १६२ एस णं भते । पोगले पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा । ^२एस ण पोगले पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं
सिया^० ॥
- १६३ एस ण भते । पोगले अणागयं अणतं सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्वं
सिया ?
हता गोयमा ! ^३एस ण पोगले अणागय अणतं सासयं समय भविस्सतीति
वत्तव्व सिया^० ॥
- १६४ ^४एस णं भते ! खधे तीत अणत सासय समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ॥
- १६५ एस ण भते ! खधे पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे पडुप्पण्ण सासय समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ॥
- १६६ एस ण भते ! खधे अणागय अणत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्वं
सिया ॥
- १६७ एस णं भते । जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा । एस ण जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ॥
- १६८ एस ण भते । जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा । एस ण जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्वं सिया ॥
- १६९ एस ण भते । जीवे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा । एस ण जीवे अणागय अणत सासय समयं भविस्सतीति वत्तव्व
सिया^० ॥

सोक्ख-पदं

- २०० छउमत्थे ण भते । मणूसे^१ तीत अणत सासय समय—केवलेण सजमेणं,
केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि^२ सिञ्जिभुसु ?

- | | |
|--|--|
| १. पोगलेति परमाणुस्तरत्रस्कन्धग्रहणात्
(वृ) । | एव जीवेण वि तिण्णि आलावगा भाणि-
यव्वा । |
| २. स० पा०—त चेव उच्चारयेव्व । | ५. मणुस्से (अ, म) । |
| ३. स० पा०—त चेव उच्चारयेव्व । | ६. °माताहि (ता, म) । |
| ४. स० पा०—एव खधेण वि तिण्णि आलावगा । | |

- बुजिभसु^१ ? •मुच्चिसु ? परिनिव्वाइंसु^० ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
 गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
- २०१ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ^२ छउमत्थे ण मणुस्से तीत अणतं सासयं समयं
 —केवलेण सज्जेण, केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयण-
 मायाहि नो सिज्झिभसु ? नो बुजिभसु ? नो मुच्चिसु ? नो परिनिव्वाइंसु ?
 नो सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
 गोयमा ! जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा—सव्वदुक्खाणं अंतं करेसु
 वा, करेति वा, करिस्सति वा—सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा^३
 केवली भवित्ता तथो पच्छा 'सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति',
 सव्वदुक्खाणं अंतं करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा । से तेणट्ठेण
 गोयमा^४ ! •एव वुच्चइ छउमत्थे ण मणुस्से तीत अणतं सासयं समयं—केवलेणं
 संजमेणं, केवलेणं सवरेणं, केवलेणं बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि नो
 सिज्झिभसु, नो बुजिभसु, नो मुच्चिसु, नो परिनिव्वाइंसु, नो^५ सव्वदुक्खाणं अंतं
 करिंसु ॥
२०२. पडुप्पण्णे वि एव^६ चेव, नवरं—सिज्झंति भाणियव्वं ॥
२०३. अणागए वि एव^७ चेव, नवरं—सिज्झिभस्सति भाणियव्वं ॥
२०४. जहा^८ छउमत्थो तहा आहोहिओ वि, तहा परमाहोहिओ^९ वि । तिण्णि तिण्णि
 आलावगा भाणियव्वा ॥
२०५. केवली ण भते ! मणुसे तीत अणतं सासयं समयं^{१०} •सिज्झिभसु ? बुजिभसु ?
 मुच्चिसु ? परिनिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
 हुता गोयमा ! केवली ण मणुसे तीतं अणतं सासयं समयं सिज्झिभसु, बुजिभसु,
 मुच्चिसु, परिनिव्वाइंसु, सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ॥
२०६. केवली णं भते ! मणुसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति ? बुज्झंति ?
 मुच्चंति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
 हुता गोयमा ! केवली णं मणुसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति, बुज्झंति,
 मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

१. सं० पा०—बुजिभसु जाव सव्वं ।

२. सं० पा०—त चेव जाव अत ।

३. जिरो (अ, क, ता, व, स) ।

४. 'सिज्झंति' त्यादिपु चतुर्षु पदेषु वर्तमान-
 निदेशस्य शेषोपलक्षणत्वात् 'सिज्झिभसु
 सिज्झंति मिज्झिभस्सती' त्येवमतोतादिनिदेशो
 द्रष्टव्यः (वृ) ।

५. सं० पा०—गोयमा जाव सव्वं ।

६. अ० १।२००, २०१ ।

७. अ० १।२००, २०१ ।

८. अ० १।२००-२०३ ।

९. परमोहिओ (अ, क ता, व, म, वृपा) ।

१०. सं० पा०—समयं जाव अत हुता सिज्झिभसु
 जाव अते एते तिण्णि आलावगा भाणि-
 यव्वा । छउमत्थस्स जहा नवरं सिज्झिभसु
 सिज्झंति सिज्झिभस्सति ।

२०७. केवली णं भते ! मणूसे अणागय अणत सासय समय सिज्झिस्सति ? बुज्झिस्सति ? मुच्चिस्सति ? परिनिव्वाइस्सति ? सव्वदुक्खाणं अतं करिस्सति ? हंता गोयमा ! केवली ण मणूसे अणागयं अणत सासय समयं सिज्झिस्सति, बुज्झिस्सति, मुच्चिस्सति, परिनिव्वाइस्सति, सव्वदुक्खाणं अतं करिस्सति° ॥

२०८. से नूण भते ! तीत अणतं सासयं समय, पडुप्पण्ण वा सासय समयं, अणागयं अणतं वा सासय समय जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अतं करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति^१ ? *बुज्झति ? मुच्चति ? परिनिव्वायति ? सव्वदुक्खाणं अतं करेसु वा ? करेति वा ? करिस्सति वा ? ° हता गोयमा ! तीत अणतं सासयं^१ °समय, पडुप्पण्ण वा सासय समय, अणागय अणत वा सासय समयं जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अतं करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति, सव्वदुक्खाण अतं करेसु वा, करेति वा°, करिस्सति वा ॥

२०९. से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली, अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?

हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२१०. सेवं भते ! सेवं भते^१ !

पंचमो उद्देशो

पुढवि-पदं

२११. कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा^१, *सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पक्कप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा°, तमतमा ॥

१. स० पा०—सिज्झति जाव अतं करिस्सति । ३. भ० १।५१ ।

द्वष्टव्य १।२०१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. स० पा०—रयणप्पभा जाव तमतमा ।

२. स० पा०—सासयं जाव करिस्सति ।

२१२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

तीसा य पन्नवीसा, पन्नरस दसेव या सयसहस्सा ।
तिन्नेग पच्चूण, पंचेव अणुत्तरा निरया ॥१॥

आवास-पदं

२१३. केवइया ण भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठी असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एव—

चोयट्ठी^१ असुराण, चउरासीई य होइ नागाण ।
बावत्तरि सुवण्णाणं, बाउकुमाराण छन्नउई ॥१॥
दीव-दिसा-उदहीण, विज्जुकुमारिद-थणियमग्गीण ।
छण्ह पि जुयलयाण^२, छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥२॥

२१४. केवइया ण भंते ! पुढविवकाइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

गोयमा असखेज्जा पुढविवकाइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता जाव^३ असंखिज्जा
जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२१५. सोहम्मे ण भंते ! कप्पे कति विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एवं—

बत्तीसट्ठावीसा, बारस-अट्ठ^४-चउरो सयसहस्सा ।
पन्ना-चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणय-पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ।
सत्त विमाणसयाइ, चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥
एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमए^५ सत्तुत्तरं सय च मज्झमए ।
सयमेयं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥३॥

नेरइयाणं नाणावसासु कोहोवउत्तादिभंग-पदं

पुढवी द्वित्ति-ओगाहण-सरीर-संघयणमेव सठाणे ।
लेस्सा द्विट्ठी णाणे, जोमुवओगे य दस ठाणा^६ ॥४॥

१. चोवट्ठी (क); चोसट्ठी (म, स) ।

२. जुवलयाण (अ, क, ता, व) ।

३. पु० प० २ ।

४. अट्ठ य (क, ता, म) ।

५. हेट्ठिमेसु (क, ता, म), हेट्ठिमएसु (स) ।

६. ठाणे (अ, व) ।

२१६. इमीसे ण भते । रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि नेरइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—जहण्णिंया ठिती, समयाहिया जहण्णिंया ठिती, दुसमयाहिया जहण्णिंया ठिती जाव असंखेज्ज-समयाहिया जहण्णिंया ठिती । तप्पाउम्मुक्कोसिया ठिती ॥
२१७. इमीसे ण भते । रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि जहण्णिंयाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया कि—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
 गोयमा ! सब्बे वि ताव होज्जा १. कोहोवउत्ता । २ अहवा कोहो-वउत्ता य, माणोवउत्ते य । ३ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य^१ । ४. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ५. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य^२ । ६. अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । ७ अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य^३ । ८. अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य । ९. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य । १०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ११. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य^४ । १२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । १३ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १४. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १५. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । १६ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १७. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १८ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १९. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । २०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य,

१. 'य' प्रती—अतोप्रे एवं माया वि लोभो वि कोहेण भइयव्वो अथवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ते य पच्छा माणेण लोभेण य पच्छा मायाए लोभेण य पच्छा माणेण मायाए लोभेण य कोहो भणियव्वो ते कोहो अमुचत्ता कोहो अमुचत्ता एव सत्तावीस भगा ऐयव्व्वा ।

२. 'ता' प्रती—अतोप्रे एवं सत्तावीस भगा ऐतव्व्वा ।

३. 'क', 'व' प्रत्योः—अतोप्रे एव सत्तावीस भगा ऐतव्व्वा ।

४ 'अ' प्रती—अतोप्रे एव कोहे माणेण लोभेण

वत्तारि भगा ८ एवं कोहेण मायाए लोभेण वत्तारि भगा १२ अहवा कोहोवउत्ता माणो-वउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते १ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभो-वउत्ता २ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ते ३ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ४ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ५ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६ अहवा कोहोव-उत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते य ७ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोव-उत्ता लोभोवउत्ता ८ एवं सत्तावीस भगा ऐयव्व्वा ।

मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । २१ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायो-
वउत्ते य, लोभोवउत्ता य । २२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता
य, लोभोवउत्ते य । २३ कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य,
लोभोवउत्ता य । २४ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभो-
वउत्ताय । २५ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता
य । २६ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य ।
२७ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य ॥

२१८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि
निरयावाससि समयाहियाए जहण्णट्ठितीए वट्ठमाणा नेरइया कि—कोहो-
वउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य ।
कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । अहवा
कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य । अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ता य । एव
असीतिभगा^१ नेयव्वा ।

१. १—(८)—१. कोहोवउत्ते २. माणोवउत्ते
३. मायोवउत्ते ४. लोभोवउत्ते ५. कोहो-
वउत्ता ६. माणोवउत्ता ७. मायोवउत्ता
८. लोभोवउत्ता ।

२—(२४)—९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते
१०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता ११. कोहो-
वउत्ता माणोवउत्ते १२. कोहोवउत्ता माणो-
वउत्ता १३. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते १४
कोहोवउत्ते मायोवउत्ता १५ कोहोवउत्ता
मायोवउत्ते १६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता
१७. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ते १८. कोहोवउत्ते
लोभोवउत्ता १९. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ते
२०. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ता २१. माणो-
वउत्ते मायोवउत्ते २२. माणोवउत्ते मायो-
वउत्ता २३. माणोवउत्ता मायोवउत्ते
२४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता २५. माणो-
वउत्ते लोभोवउत्ते २६. माणोवउत्ते लोभो-
वउत्ता २७. माणोवउत्ता लोभोवउत्ते

२८. माणोवउत्ता लोभोवउत्ता २९. मायो-
वउत्ते लोभोवउत्ते ३०. मायोवउत्ते लोभो-
वउत्ता ३१. मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
३२. मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

३—(३२)—

३३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३५ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते
३६ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता
३७ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते
४०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता
४१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४२ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ते
४४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४५ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ते

एवं जाव सखेज्जसमयाहियाए ठितीए, असखेज्जसमयाहियाए ठितीए तप्पाउ-
गुक्कोसियाए ठितीए सत्तावीसं भगा भाणियव्वा' ॥

२१६. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमे-
गंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ओगाहणाठाणा पणत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा ओगाहणाठाणा पणत्ता, त जहा—जहणिया ओगाहणा,
पदेसाहिया जहणिया ओगाहणा, दुपदेसाहिया जहणिया ओगाहणा जाव
असखेज्जपएसाहिया जहणिया ओगाहणा । तप्पाउगुक्कोसिया ओगाहणा ॥

२२०. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि
निरयावाससि जहणियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ?

असीइभगा भाणियव्वा' जाव सखेज्जपदेसाहिया जहणिया ओगाहणा ।

असखेज्जपदेसाहियाए जहणियाए ओगाहणाए वट्टमाणाण, तप्पाउगुक्कोसि-

४८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ता

४९. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते

५०. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता

५१. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते

५२. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता

५३. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते

५४. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता

५५. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते

५६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता

५७. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते

५८. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता

५९. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते

६०. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता

६१. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते

६२. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता

६३. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते

६४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

४—(१६)—६५. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते

मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ६६. कोहोवउत्ते

माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता

६७. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता

लोभोवउत्ते ६८. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते

मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ६९. कोहोवउत्ते

माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते

७०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते

लोभोवउत्ता ७१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता

मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७२. कोहोवउत्ते

माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता

७३. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते

लोभोवउत्ते ७४. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते

मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७५. कोहोवउत्ता

माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते

७६. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता

लोभोवउत्ता ७७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता

मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७८. कोहोवउत्ता

माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता

७९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता

लोभोवउत्ते ८०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता

मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

१. भ० १।२।१७ ।

२. भ० १।२।१८ पाटिप्पण ।

याए ओगाहणाए वट्टमाणाणं सत्तावीस भगा^१ ॥

२२१. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए^२ तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु^३ एग-
मेगंसि निरयावाससि नेरइयाण कइ सरीरया पणत्ता ?

गोयमा ! तिण्णि सरीरया पणत्ता, त जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ॥

२२२. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^४ वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-
वउत्ता ? सत्तावीसं भगा^५ ॥

२२३. एएणं गमेण तिण्णि सरीरया भाणियव्वा ॥

२२४. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव^६ नेरइयाण सरीरया किसघयणा^७ पणत्ता ?
गोयमा ! छण्ह सघयणाण असंघयणी नेवट्टी, नेव छिरा^८, नेव ण्हारुणि । जे
पोगला अणिट्ठा अकंता अप्पिया^९ असुहा अमणुणा अमणामा एतेसि^{१०} सरीर-
संघायत्ताए परिणमंति ॥

२२५. इमीसे णं भते ? रयणप्पभाए जाव^{११} छण्ह सघयणाणं असघयणे वट्टमाणा नेर-
इया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा^{१२} ॥

२२६. इमीसे ण भते ? रयणप्पभाए जाव^{१३} नेरइयाण सरीरया किसठिया पणत्ता ?
गोयमा^{१४} ! दुविहा पणत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य ।
तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पणत्ता, तत्थ ण जे ते उत्तर-
वेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पणत्ता ॥

२२७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^{१५} हुंडसठाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-
वउत्ता ? सत्तावीस भगा^{१६} ॥

२२८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^{१७} नेरइयाणं कति लेस्साओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! एगा काउलेस्सा पणत्ता ॥

२२९. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव^{१८} काउलेस्साए वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-
वउत्ता ? सत्तावीस भगा ॥^{१९}

१. वट्टमाणाण नेरइयाण दोसु वि (अ), वट्ट- १०. तेतेसि (क, ता, म) ।

माणाणं जाव नेरइयाण दोसु वि (क, स), ११. भ० १।२१७ ।

वट्टमाणाण दोसु वि (म) । १२. भ० १।२१७ ।

२. भ० १।२१७ । १३. भ० १।२१६ ।

३. स० पा०—पुढवीए जाव एगमेगसि । १४. 'नेरइयाण सरीरया' इति शेषः ।

४. भ० १।२१७ । १५. भ० १।२१७ ।

५. भ० १।२१७ । १६. भ० १।२१७ ।

६. भ० १।२१६ । १७. भ० १।२१६ ।

७. किसघयणी (क, ता, स) । १८. भ० १।२१७ ।

८. च्छिरा (ता, म, स) । १९. भ० १।२१७ ।

९. अप्पिता (क) ।

२३०. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव^१ नेरइया कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ?
सम्मामिच्छदिट्ठी ?
तिणिण वि ॥

२३१. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव^२ सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-
वउत्ता ? सत्तावीस भगा^३ ॥

२३२. एव मिच्छदसणे वि ॥

२३३. सम्मामिच्छदसणे असीतिभगा^४ ॥

✓ २३४. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^५ नेरइया कि नाणी,अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिणिण^६ नाणाइ नियमा । तिणिण अण्णाणाइ
भयणाए ॥

२३५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^७ आभिनिबोहियनाणे वट्टमाणा नेरइया कि
कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा^८ ॥

२३६. एव तिणिण नाणाइ, तिणिण अण्णाणाइ भाणियव्वाइं ॥

२३७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^९ नेरइया कि मणजोगी ? वइजोगी ?
कायजोगी ?
तिणिण वि ॥

२३८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^{१०} मणजोए वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-
वउत्ता ? सत्तावीस भगा^{११} ॥

२३९. एव वइजोए ॥

२४०. एव कायजोए ॥

२४१. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए जाव^{१२} नेरइया कि सागारोवउत्ता ? अणागारो-
वउत्ता^{१३} ?

गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

२४२. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव^{१४} सागारोवउत्ता वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-
वउत्ता ? सत्तावीसं भगा^{१५} ॥

१. भ० १।२।१६ ।

२. भ० १।२।२७ ।

३. भ० १।२।१७ ।

४. भ० १।२।१८ पाटटिप्पण ।

५. भ० १।२।१६ ।

६. तिणिण वि (ता) ।

७. भ० १।२।१७ ।

८. भ० १।२।१७ ।

९. भ० १।२।१६ ।

१०. भ० १।२।१७ ।

११. भ० १।२।१७ ।

१२. भ० १।२।१६ ।

१३. अणगारोवउत्ता(अ), अणागारोवउत्ता (ता) ।

१४. भ० १।२।१७ ।

१५. भ० १।२।१७ ।

२४३. एव अणागारोवउत्ते वि सत्तावीस भंगा^१ ॥

२४४. एवं सत्तं वि पुढवोओ^२ नेयव्वाओ, नाणत्तं लेसासु ॥

संगहणी-गाहा

काऊ य दोसु, तइयाए भीसिया, नीलिया चउत्थीए ।

पचमियाए भीसा, कण्हा तत्तो परमकण्हा ॥१॥

असुरकुमारादीणं नाणादसासु कोहोवउत्तादि भंग-पदं

२४५. चउसट्ठीए णं भत्ते । असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता । जहणिया ठिई जहा^३ नेरइया तहा, नवरं—पडिलोमा भगा भाणियव्वा ।

सव्वे वि ताव होज्ज लोभोवउत्ता ।

अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ता य । एएण गमेण नेयव्व जाव^४ अणियकुमारा, 'नवरं—नाणत्तं जाणियव्व'^५ ॥

२४६. असखेज्जेसु ण भत्ते । पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइया-वाससि पुढविकाइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता तं जहा—जहणिया ठिई जाव^६ तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिई ॥

२४७. असखेज्जेसु ण भत्ते । पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइया-वाससि जहणियाए ठित्तीए वट्टमाणा पुढविकाइया कि कोहोवउत्ता ? माणो-वउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! कोहोवउत्ता वि, माणोवउत्ता वि, मायोवउत्ता वि, लोभो-वउत्ता वि ।

एवं पुढविकाइयाण सव्वेसु वि ठाणेसु अभगयं, नवरं—तेउलेस्साए असीत्ति-भगा^७ ॥

२४८. एव आउक्काइया वि ॥

२४९. तेउक्काइय—वाउक्काइयाणं सव्वेसु वि ठाणेसु अभगय ॥

२५०. वणप्फइकाइया जहा^८ पुढविकाइया ॥

१. भ० १।२१७ ।

सस्थानलेश्यासूत्रेषु भवति (वृ) ।

२. भ० १।२११ ।

६. भ० १।२१६ ।

३. भ० १।२१६-२४३ ।

७. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।

४. पृ० प० २ ।

८. भ० १।२४७ ।

५. तच्च नारकाणामसुरकुमारादीना च सहनन-

- ✓ २५१. वेइदिय-तेइंदिय-चउरिदियाण जेहि ठाणेहि नेरइयाणं असीइभंगा तेहि ठाणेहि असीइ चेव, नवरं—अब्भहिया सम्मत्ते । आभिणिबोहियनाणे, सुय-नाणे य एएहि असीइभगा । जेहि ठाणेहि नेरइयाण सत्तावीस भंगा तेसु ठाणसु सव्वेसु अभगय ॥
२५२. पचिदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहा भाणियव्वा', नवरं—जेहि सत्ता-वीस भगा तेहि अभगय कायव्व' ॥
२५३. मणुस्सा वि । जेहि ठाणेहि नेरइयाण असीतिभंगा तेहि ठाणेहि मणुस्साण वि असीतिभगा भाणियव्वा । जेसु सत्तावीसा तेसु अभगय, नवरं—मणुस्साण अब्भहिय जहणियाए ठिईए, आहारए य असीतिभगा ॥
२५४. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा भवणवासी, नवरं—नाणत्त जाणियव्व ज जस्स जाव अणुत्तरा ॥
२५५. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

छट्ठो उद्देसो

सूरिय-पदं

२५६. जावइयाओ' णं भते ! ओवासंतराओ उदयते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमाग-च्छति, अत्थमते वि य ण सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति ?
हंता गोयमा । जावइयाओ णं ओवासंतराओ उदयते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमते वि^१ *य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं^० हव्वमागच्छति ॥
२५७. 'जावइय' णं^१, भते । खेत्तं उदयते सूरिए आयवेण सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ ? उज्जोएइ ? तवेइ ? पभासेइ ?

१. भ० १।२१६-२४३ ।

५. स० पा०—वि जाव हव्व ० ।

२. कायव्व जत्थ असीति तत्थ असीति चेव (अ) ।

६. जावइयाओ ए (अ); जावइयाणं (ता); जावइया ए (म, स); स्वीकृतपाठे 'ए' पदस्य योगे 'जावइय' पदस्य अनुस्वारलोपो जातः ।

३. भ० १।५१।

४. जावइया (अ) ।

हता गोयमा ! जावतिय ण खेत्त' •उदयते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोइए तवेइ पभासेइ, अत्थमते वि य ण सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेण सव्वओ समता ओभासेइ उज्जोइए तवेइ° पभासेइ ॥

२५८. त भते ! कि पुट्ठं ओभासेइ ? अपुट्ठ ओभासेइ ?

•गोयमा ! पुट्ठ ओभासेइ, नो अपुट्ठ ॥

२५९. त भते ! कि ओगाढ ओभासेइ ? अणोगाढ ओभासेइ ?

गोयमा ! ओगाढ ओभासेइ, नो अणोगाढ ॥

२६०. तं भते ! कि अणतरोगाढ ओभासेइ ? परंपरोगाढं ओभासेइ ?

गोयमा ! अणंतरोगाढं ओभासेइ, नो परंपरोगाढं ॥

२६१. तं भते ! कि अणु ओभासेइ ? बायर ओभासेइ ?

गोयमा ! अणु पि ओभासेइ, बायर पि ओभासेइ ॥

२६२. त भते ! कि उड्ढ ओभासेइ ? तिरिय ओभासेइ ? अहे ओभासेइ ?

गोयमा ! उड्ढं पि ओभासेइ, तिरिय पि ओभासेइ, अहे पि ओभासेइ ॥

२६३. त भते ! कि आइ ओभासेइ ? मज्झे ओभासेइ ? अते ओभासेइ ?

गोयमा ! आइ पि ओभासेइ, मज्झे पि ओभासेइ, अते पि ओभासेइ ॥

२६४. तं भते ! कि सविसए ओभासेइ ? अविसए ओभासेइ ?

गोयमा ! सविसए ओभासेइ, नो अविसए ॥

२६५. तं भते ! कि आणुपुण्वि ओभासेइ ? अणानुपुण्वि ओभासेइ ?

गोयमा ! आणुपुण्वि ओभासेइ, नो अणानुपुण्वि ॥

२६६. त भते ! कइद्दिसि ओभासेइ ?

गोयमा ! नियमा° छद्दिसि ओभासेइ ॥

२६७. एव—उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ ॥

फुसणा-पदं

२६८. से नूण भते ! सव्वति सव्वावति फुसमाणकालसमयसि जावतियं खेत्त फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति वत्तव्व सिया ?

हता गोयमा ! सव्वति' •सव्वावति फुसमाणकालसमयसि जावतिय खेत्त फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति° वत्तव्व सिया ॥

२६९. तं भते ! कि पुट्ठ फुसइ ! ? अपुट्ठ फुसइ ?

गोयमा ! पुट्ठं फुसइ, नो अपुट्ठ जाव' नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

१. स० पा०—खेत्त जाव पभासेइ ।

सारि चापि न दृश्यते, किन्तु सर्वासु प्रतिषु

२. स० पा०—ओभासेइ जाव छद्दिसि ।

उपलब्धमस्ति ।

३. स० पा०—सव्वति जाव वत्तव्व ।

५. अ० १।२५८-२६६ ।

४. एतत् सूत्रं वृत्तौ व्याख्यात नास्ति, प्रकरणात्-

२७०. लोयते भंते ! अलोयंतं फुसइ ? अलोयते वि लोयंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! लोयते अलोयतं फुसइ, अलोयते वि लोयतं फुसइ ॥
२७१. तं भंते ! कि पुट्टु फुसइ ? अपुट्टु फुसइ ?
गोयमा ! पुट्टु फुसइ, नो अपुट्टु जाव^१ नियमा छद्दिसि फुसइ ॥
२७२. दीवते भंते ! सागरतं फुसइ ? सागरते वि दीवंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! दीवते सागरतं फुसइ, सागरते वि दीवंतं फुसइ जाव^२ नियमा छद्दिसि फुसइ ॥
२७३. • उदयते भंते ! पोयतं फुसइ ? पोयते वि उदयतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! उदयते पोयतं फुसइ, पोयते उदयतं फुसइ जाव^३ नियमा छद्दिसि फुसइ ॥
२७४. छिद्दते भंते ! दूसतं फुसइ ? दूसते वि छिद्दंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! छिद्दते दूसतं फुसइ, दूसते वि छिद्दंतं फुसइ जाव^४ नियमा छद्दिसि फुसइ ॥
२७५. छायतं भंते ! आयवतं फुसइ ? आयवते वि छायतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! छायते आयवतं फुसइ, आयवते वि छायतं फुसइ जाव^५ नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

किरिया-पदं

२७६. अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाए णं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥
२७७. सा भंते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव^१ निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघायं पडुच्च सिया तिदिसि, सिया चउदिसि, सिया पंचदिसि ॥
२७८. सा भंते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥
२७९. सा भंते ! कि अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥
२८०. सा भंते कि 'आणुपुण्वि कडा' कज्जइ ? अणुपुण्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा ! आणुपुण्वि कडा कज्जइ, नो अणुपुण्वि कडा कज्जइ । जा य

१. म० ११२५८-२६६ ।

४. पोदंत (क, ता, व, म, स) ।

२. म० ११२५८-२६६ ।

५. ६, ७. म० ११२५८-२६६ ।

३. स० पा०—एवं एएणं अभिलावेण उदयते
पोयतं छिद्दते दूसतं छायते आयवतं जाव
नियमा ।

८. म० ११२५९-२६६ ।

९. आणुपुण्विकडा (अ, क, व) ।

कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सन्वा सा अणुपुव्वि कडा, नो अणुपुव्वि
'कडा ति' वत्तव्व सिया ॥

२८१. अत्थि णं भते ! नेरइयाण पाणाइवायकिरिया कज्जइ ?

हता अत्थि ॥

२८२. सा भते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?

गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव^१ नियमा छद्दिसि कज्जइ ॥

२८३. सा भते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?

गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२८४. त चेव जाव^१ नो अणुपुव्वि कडा ति वत्तव्व सिया ॥

२८५. जहा^१ नेरइया तहा एगिदियवज्जा भाणियव्वा जाव^१ वेमाणिया । एगिदिया
जहा^१ जीवा तहा भाणियव्वा ॥

२८६. जहा^१ पाणाइवाए तहा मुसावाए तहा अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे,^१
•माणे, माया, लोभे, पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए,
अरतिरती, मायामोसे, ° मिच्छादंसणसल्ले—एवं एए अट्ठारस । चउवीस दंडगा
भाणियव्वा ॥

२८७. सेव भते ! सेवं भते ! ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति जाव^१
विहरति ॥

रोहस्स पण्ह-पदं

२८८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी रोहे णामं
अणगारे पगइभद्दए^{१०} पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे^{११} मिउमद्दव-
सपन्ते^{१२} अल्लीणे^{१३} विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते उड्डुजाणू
अहोसिरे भाणकोट्टोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१. कडा इति(क), कड ति (व, स) ।

२. भ० १।२५६-२६६ ।

३. भ० १।२७६, २८० ।

४. भ० १।२८१-२८४ ।

५. पू० प० २ ।

६. भ० १।२७६-२८० ।

७. भ० १।२७६-२८५ ।

८. स० पा०—कोहे जाव मिच्छादसणसल्ले ।

९. भ० १।५१ ।

१०. °भद्दए पगइमउए पगइविणीए (अ क, ता.
व, म, स, वृ) ।

११. °माय ° (ता) ।

१२. °सपुण्णे (स) ।

१३. अल्लीणे भद्दए (अ, क, व); अल्लीणे
भद्दए (ता, म, स, वृ) । आदर्शेषु वृत्तौ च
'पगइभद्दए' इत समादाय 'विणीए' एत-
दतानि सर्वाण्यपि पदानि वर्तन्ते, किन्तु
औपपातिक (६१, ११६) सूत्रस्य मंदर्भे
'पगइमउए पगइविणीए भद्दए' एतानि
त्रीणि पदानि द्विरुक्तानि सन्ति, तानि
पाठान्तरे गृहीतानि । द्रष्टव्य भ० २।७०
सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

२८६. ततेण से रोहे अणगारे^१ जायसड्ढे जाव^२ पज्जुवासमाणे एवं वदासी—
२८७. पुण्वि भते ! लोए, पच्छा अलोए ? पुण्वि अलोए, पच्छा लोए ?
रोहा ! लोए य अलोए य पुण्वि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा,
अणणुपुण्वी एसा रोहा ॥
२८८. पुण्वि भते ! जीवा, पच्छा अजीवा ? पुण्वि अजीवा, पच्छा जीवा ?
* रोहा ! जीवा य अजीवा य पुण्वि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया
भावा, अणणुपुण्वी एसा रोहा !
२८९. पुण्वि भते ! भवसिद्धिया^३, पच्छा अभवसिद्धिया ? पुण्वि अभवसिद्धिया,
पच्छा भवसिद्धिया ?
रोहा ! भवसिद्धिया य, अभवसिद्धिया य पुण्वि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते
सासया भावा, अणणुपुण्वी एसा रोहा !
२९०. पुण्वि भते ! सिद्धि, पच्छा असिद्धी ? पुण्वि असिद्धी, पच्छा सिद्धी ?
रोहा ! सिद्धी य असिद्धी य पुण्वि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा,
अणणुपुण्वी एसा रोहा !
२९१. पुण्वि भते ! सिद्धा, पच्छा असिद्धा ? पुण्वि असिद्धा, पच्छा सिद्धा ?
रोहा ! सिद्धा य असिद्धा य पुण्वि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा,
अणणुपुण्वी एसा रोहा ! *
२९२. पुण्वि भते ! अडए, पच्छा कुक्कुडी ? पुण्वि कुक्कुडी, पच्छा अडए ?
रोहा ! से^४ ण अडए कओ ?
भयव ! कुक्कुडीओ !
सा ण कुक्कुडी कओ ?
भते ! अडयाओ !
एवामेव रोहा ! से य अडए, सा य कुक्कुडी पुण्वि पेटे, पच्छा पेटे—‘दो वेते’^५
सासया भावा, अणणुपुण्वी एसा रोहा !
२९३. पुण्वि भते ! लोयंते, पच्छा अलोयते ? पुण्वि अलोयते, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अलोयते य^६ * पुण्वि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया
भावा^७, अणणुपुण्वी एसा रोहा !

१. भगव अणगारे (क, व), अणगारे भगव (ता) ।

२. भ० १।१० ।

३. वेते (ता) ।

४. स० पा०—जहेव लोए य अलोए य तहेव

जीवा य अजीवा य । एवं भवसिद्धिया य अभवसिद्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा ।

५. भवसिद्धीया (क, ता, स) ।

६. दुवेए (स) ।

७. स० पा०—य जाव अणणुपुण्वी ।

२६७. पुंवि भंते ! लोयंते, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ? *पुंवि सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा लोयंते ?
 रोहा ! लोयते य सत्तमे ओवासंतरे य पुंवि पेटे, *पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा°, अणानुपुव्वी एसा रोहा !
२६८. एवं लोयंते य सत्तमे य तणुवाए । एवं घणवाए, घणोदही, सत्तमा पुढवी । एवं लोयंते एक्केक्केणं संजोएतव्वे इमेहि ठाणेहि, त जहा—

संगहणी-गाहा

- ओवास-वात-घणउदहि-पुढवि-दीवा य सागरा वासा ।
 नेरइयादि^१ अत्थिय, समया कम्माइ^२ लेस्साओ ॥१॥
 दिट्ठी दंसण-नाणे, सण्ण-सरीरा य जोग-उवओगे ।
 दव्व-पएसा-पज्जव, अद्धा किं पुंवि लोयते ॥२॥
२६९. *पुंवि भंते ! लोयंते, पच्छा अतीतद्धा ? पुंवि अतीतद्धा, पच्छा लोयंते ?
 रोहा ! लोयते य अतीतद्धा य पुंवि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा, अणानुपुव्वी एसा रोहा !
३००. पुंवि भंते ! लोयंते, पच्छा अणागतद्धा ? पुंवि अणागतद्धा, पच्छा लोयंते ?
 रोहा ! लोयते य अणागतद्धा य पुंवि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा, अणानुपुव्वी एसा रोहा !
३०१. पुंवि भंते ! लोयते, पच्छा सव्वद्धा ? पुंवि सव्वद्धा, पच्छा लोयते ?
 रोहा ! लोयते य सव्वद्धा य पुंवि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा, अणानुपुव्वी एसा रोहा ।°
३०२. जहा^३ लोयतेणं सज्जोइया सव्वे ठाणा एते, एवं अलोयंतेण वि संजोएतव्वा सव्वे ॥
३०३. पुंवि भंते ! सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा सत्तमे तणुवाए^४ ? *पुंवि सत्तमे तणुवाए, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ?
 रोहा ! सत्तमे ओवासंतरे य सत्तमे तणुवाए य पुंवि पेटे, पच्छा पेटे—दो वेते सासया भावा, अणानुपुव्वी एसा रोहा ।°
३०४. एव सत्तम ओवासंतरं सव्वेहि सम संजोएतव्व जाव^५ सव्वद्धाए ॥
३०५. पुंवि भंते ! सत्तमे तणुवाए ? पच्छासत्तमे घणवाए^६ ? *पुंवि सत्तमे घणवाए, पच्छा सत्तमे तणुवाए ?

१. स० पा०—पुच्छा ।

२. स० पा०—पेटे जाव अणानुपुव्वी ।

३. चत्तवीस दहगा ।

४. कम्माइ (अ, क, व, म, स) ।

५. स० पा०—पुंवि भंते ! लोयते पच्छा सव्वद्धा ।

६. अ० १।२६७-३०१ ।

७. स० पा०—तणुवाए° ।

८. अ० १।२६८-३०१ ।

९. स० पा० घणुवाए° ।

रोहा ! सत्तमे तणुवाए य सत्तमे घणवाए य पुब्बि पेते, पच्छा पेते—दो वेते
सासया भावा, अणणुपुब्बी एसा रोहा ! °

३०६ एव' तहेव नेयव्व जाव' सव्वद्धा ॥

३०७ एव उवरिल्ल एक्केक्कं संजोयतेणं, जो जो हिट्ठिल्लो त तं छुट्ठेण नेयव्वं जाव'
अतीत-अणागतद्धा, पच्छा सव्वद्धा जाव' अणणुपुब्बी एसा रोहा !

३०८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

लोयट्ठित्ति-पदं

३०९. भतेत्ति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर जाव' एव वयासी—

३१०. कत्तिविहा ण भते ! लोयट्ठिती पणत्ता ?

गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठित्ति पणत्ता, त जहा—१. आगासपइट्ठिए वाए ।

२. वायपइट्ठिए उदही । ३. उदहिपइट्ठिया पुढवी । ४. पुढविपइट्ठिया तस-

थावरा पाणा । ५. अजीवा जीवपइट्ठिया । ६. जीवा कम्मपइट्ठिया । ७. अजीवा

जीवसगहिया । ८. जीवा कम्मसगहिया ॥

३११. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव' जीवा कम्मसंगहिया ?

गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ, वत्थिमाडोवेत्ता उप्पि

सित बंधइ, बधित्ता मज्झे गठि बंधइ, बधित्ता उवरिल्लं गंठि मुयइ, मुइत्ता

उवरिल्ल देस वामेइ, वामेत्ता उवरिल्लं देस 'आउयायस्स पूरेइ', पूरेत्ता उप्पि

सित बंधइ, बधित्ता मज्झिक्कलं गठि मुयइ । से नूण गोयमा ! से आउयाए तस्स

आउयायस्स उप्पि उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ ।

से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव जीवा

कम्मसगहिया ।

से जहा वा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ, वत्थिमाडोवेत्ता कडीए बंधइ,

बधित्ता अत्थाहमतारमपोरुसियसि^{११} उदगसि ओगाहेज्जा । से नूण गोयमा !

से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ ।

एव वा अट्ठविहा लोयट्ठिई जाव जीवा कम्मसंगहिया ॥

१. एव पि (क, ता, व, म, स) ।

७. म० १।३१० ।

२. म० १।२६८-३०१ ।

८. वत्थि° (क) ।

३. म० १।२६८-३०१ ।

९. मज्झिक्कल (व) ।

४. म० १।३०१ ।

१०. आउयाए सपूरेइ (अ) ।

५. म० १।५१ ।

११. चेद्वइ (अ), चेत्ति (व) ।

६. म० १।१० ।

१२. अत्थाहमतार ° (वृषा) ।

जीव-पोगल पदं

३१२. अत्थि ण भते ! जीवा य पोगला य अणमणबद्धा, अणमणपुट्ठा, अणमण-
मोगाढा, अणमणसिणेहपडिबद्धा, अणमणघडत्ताए चिट्ठति ?

हता अत्थि ॥

✓ ३१३. से केणट्ठेण भते ! • एव वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य पोगला य अणमण-
बद्धा, अणमणपुट्ठा, अणमणमोगाढा, अणमणसिणेहपडिबद्धा, अणमण-
घडत्ताए० चिट्ठति ?

गोयमा ! से जहाणामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे
समभरघडत्ताए चिट्ठइ ।

अहे ण केइ पुरिसे तसि हरदसि एगं महुं जाव सयासव^१ सयछिहुं^२ ओगा-
हेज्जा । से नूण गोयमा ! सा नावा तेहि आसवदारेहि आपूरमाणी-आपूरमाणी
पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ ।

से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य^३ • पोगला य अण-
मणबद्धा, अणमणपुट्ठा, अणमणमोगाढा, अणमणसिणेहपडिबद्धा, अण-
मणघडत्ताए० चिट्ठति ॥

सिणेहकाय-पदं

३१४. अत्थि ण भते ! सदा समित सुहुमे सिणेहकाए पवडइ ?

हता अत्थि ॥

३१५. से भते ! कि उड्ढे पवडइ^४ ? अहे पवडइ ? तिरिए पवडइ ?

गोयमा ! उड्ढे वि पवडइ, अहे वि पवडइ, तिरिए वि पवडइ ॥

३१६. जहा से बायरे आउयाए अणमणसमाउत्ते चिरं पि दीहकालं चिट्ठइ तहा ण
से वि ?

णो इणट्ठे समट्ठे । से ण खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ।

३१७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^५ ॥

१. स० पा०—भते जाव चिट्ठति ।

२. महा (ता) ।

३. सदा० (अ, क, ता, व, स) ।

४. सदाछिहु (अ), सतछिहु (ता); सदछिहु (व) ।

५. स० पा०—य जाव चिट्ठति ।

६. पडइ (अ, व) ।

७. भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

देस-सव्व-पदं

३१८. नेरइएणं भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१. देसेण देसं उववज्जइ ?
२. देसेण सव्वं उववज्जइ ? ३. सव्वेणं देसं उववज्जइ ? ४. सव्वेण सव्वं उववज्जइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देसं उववज्जइ । २. नो देसेणं सव्वं उववज्जइ । ३. नो सव्वेण देस उववज्जइ । ४. सव्वेण सव्व उववज्जइ ॥
३१९. जहा नेरइए, एव जाव वेमाणिए ॥
३२०. नेरइएण भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २. देसेण सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४. सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस आहारेइ । २. नो देसेण सव्व आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥
३२१. एव जाव वेमाणिए ॥
३२२. नेरइएण भते ! नेरइएहितो उव्वट्टमाणे, कि—१. देसेण देस उव्वट्टइ ?
२. देसेणं सव्व उव्वट्टइ ? ३. सव्वेण देस उव्वट्टइ ? ४. सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस उव्वट्टइ । २. नो देसेण सव्व उव्वट्टइ । ३. नो सव्वेण देस उव्वट्टइ । ४. सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ॥
३२३. एव जाव वेमाणिए ॥
३२४. नेरइएण भते ! नेरइएहितो उव्वट्टमाणे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २. देसेण सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४. सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देस आहारेइ । २. नो देसेण सव्व आहारेइ । ३. सव्वेण वा देस आहारेइ । ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

१. पू० प० २ ।

२. पू० प० २ ।

३. वेमाणिया (म) ।

४. नेरइएसु (ता, म) ।

५. स० पा०—जहा उववज्जमाणे तद्देव उव्वट्ट-
माणे वि दडगे भाणियव्वो । नेरइए ण
भते ! नेरइएहितो उव्वट्टमाणे कि देसेण
देस आहारेइ तद्देव जाव सव्वेण वा देस
आहारेइ । सव्वेण वा सव्व आहारेइ । एव

जाव वेमाणिया । नेरइए ण भते ! नेरइएसु
उववज्जणे कि देसेण देस उववज्जणे एसो वि
तद्देव जाव सव्वेण सव्व उववज्जणे । जहा
उववज्जमाणे उव्वट्टमाणे य चत्तारि दडगा
तहा उववज्जणे उव्वट्टेण वि चत्तारि दडगा
भाणियव्वा—सव्वेण सव्वं उववज्जणे, सव्वेण
वा देस आहारेइ, सव्वेण वा सव्व आहारेइ ।
एएण अभिलावेण उववज्जणे वि उव्वट्टे वि
नेयव्व ।

३२५. एव जाव वेमाणिए ॥

३२६. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववण्णे, कि—१. देसेण देस उववण्णे ? २. देसेण सव्व उववण्णे ? ३. सव्वेण देस उववण्णे ? ४. सव्वेण सव्व उववण्णे ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस उववण्णे । २. नो देसेण सव्व उववण्णे । ३. नो सव्वेण देस उववण्णे । ४. सव्वेणं सव्व उववण्णे ॥

३२७. एवं जाव वेमाणिए ॥

३२८. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववण्णे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २. देसेणं सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४. सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस आहारेइ । २. नो देसेण सव्व आहारेइ । ३. सव्वेण वा देस आहारेइ । ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३२९. एवं जाव वेमाणिए ॥

३३०. नेरइए णं भते ! नेरइएहितो उव्वट्ठे, कि—१. देसेण देस उव्वट्ठे ? २. देसेण सव्व उव्वट्ठे ? ३. सव्वेण देसं उव्वट्ठे ? ४. सव्वेण सव्व उव्वट्ठे ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देस उव्वट्ठे । २. नो देसेण सव्व उव्वट्ठे । ३. नो सव्वेण देस उव्वट्ठे । ४. सव्वेण सव्व उव्वट्ठे ॥

३३१. एव जाव वेमाणिए ॥

३३२. नेरइए णं भते ! नेरइएहितो उव्वट्ठे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २. देसेण सव्वं आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४. सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देसं आहारेइ । २. नो देसेण सव्व आहारेइ । ३. सव्वेण वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३३३. एव जाव वेमाणिए ॥^०

३३४. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१. अद्धेण अद्ध उववज्जइ ? २. अद्धेण सव्व उववज्जइ ? ३. सव्वेण अद्ध उववज्जइ ? ४. सव्वेण सव्व उववज्जइ ?

जहा पढमिल्लेण अट्ठ दडगा तहा अद्धेण वि अट्ठ दडगा भाणियव्वा, नवर—
जहिं देसेणं देस उववज्जइ, तहिं अद्धेण अद्ध उववज्जइ इति भाणियव्व, एय नाणत्तं । एते सव्वे वि सोलस दंडगा भाणियव्वा ॥

विग्गहगइ-पद

३३५. जोवे ण भति ! कि विग्गहगइसमावण्णए ? अविग्गहगइसमावण्णए ?
गोयमा ! सिय विग्गहगइसमावण्णए, सिय अविग्गहगइसमावण्णए ॥

१. अस्मिन्नालापके वृत्तिकृता पाठान्तरस्य
उल्लेख कृतोस्ति—‘पुस्तकान्तरे तृत्पादतदा-
हारदडकानन्तरमुत्पादे सत्युत्पन्नतदाहार-

दडकौ ततस्तृत्पादप्रतिपक्षत्वादुद्धर्तनाया
उद्धर्तनातदाहारदडकौ उद्धर्तनाया चोद्वृत्त-
स्यादित्युद्वृत्ततदाहारदडकौ’ (वृ) ।

३३६. एवं जाव^१ वेमाणिए ॥

३३७. जीवा ण भते ! कि विग्गहगइसमावण्णया ? अविग्गहगइसमावण्णया ?
गोयमा ! विग्गहगइसमावण्णगा वि, अविग्गहगइसमावण्णगा वि ॥

३३८. नेरइया ण भते ! कि विग्गहगइसमावण्णगा ? अविग्गहगइसमावण्णगा ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज अविग्गहगइसमावण्णगा । अह्वा
अविग्गहगइसमावण्णगा, विग्गहगइसमावण्णगे य । अह्वा अविग्गह-
गइसमावण्णगा य, विग्गहगइसमावण्णगा य । एव जीव—एगिदियवज्जो
तियभंगो ।

आयु-पदं

३३९. देवे ण भते ! महिड्ढिए^१ महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे^२ महाणुभावे
अविउक्कतिय चयमाणे^३ किचिकाल^४ हिरिवत्तिय^५ दुगछावत्तिय^६ परीसहवत्तिय^७
आहारं नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामि-
ज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ तं आउयं पडि-
सवेदेइ, तं जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा, मणुस्साउय वा ?
हुता गोयमा ! देवेण महिड्ढिए^१ •महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे
महाणुभावे अविउक्कतिय चयमाणे किचिकाल हिरिवत्तिय दुगछावत्तियं परी-
सहवत्तिय आहार नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए,
परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ त
आउय पडिसवेदेइ, तं जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा^८ मणुस्साउयं वा ।

गढम-पदं

३४०. जीवे ण भंते ! गढम वक्कममाणे कि सइदिए वक्कमइ ? अणिदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय सइदिए वक्कमइ । सिय अणिदिए वक्कमइ ॥

३४१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय सइदिए वक्कमइ ? सिय अणिदिए
वक्कमइ ?

गोयमा ! दंविदियाइ पडुच्च अणिदिए वक्कमइ । भाविदियाइ पडुच्च
सइदिए वक्कमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सइदिए वक्कमइ ।
सिय अणिदिए वक्कमइ ॥

१. पू० प० २ ।

२. महिड्ढिए (क) ।

३. महासुक्खे (अ) ; महासोक्खे (म, वृपा) ।

४. चय चयमाणे (अ, ता, व, म, स, वृपा) ।

५. क्वि० (ता) ।

६. हिरिवित्ति (स) ।

७. परिस्सह^० (क, ता, स) ।

८. स० पा०—महिड्ढिए जाव मणुस्साउय ।

३४२. जीवे णं भंते ! गढभं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ । सिय असरीरी वक्कमइ ॥
३४३. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी वक्कमइ ? सिय असरीरी
वक्कमइ ?
गोयमा ! ओरालिय-वेउव्विय-आहारयाइ^१ पंडुच्च असरीरी वक्कमइ ।
तेया-कम्माइ पंडुच्च ससरीरी वक्कमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ-
सिय ससरीरी वक्कमइ । सिय असरीरी वक्कमइ ॥
३४४. जीवे ण भते ! गढभ वक्कममाणे तप्पढमयाए किमाहारमाहारेइ ?
गोयमा ! माउओय पिउसुक्क—त तदुभयससिट्ठ^२ तप्पढमयाए आहार-
माहारेइ ॥
३४५. जीवे ण भते ! गढभगए समाणे किं आहारमाहारेइ ?
गोयमा ! ज से माया नाणाविहाओ रसविगतीओ^३ आहारमाहारेइ,
तदेकदेसेण ओयमाहारेइ ॥
३४६. जीवस्स ण भते ! गढभगयस्स समाणस्स अत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा
खेले इ वा सिघाणे इ वा 'वते इ वा पित्ते इ वा'^४ ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
३४७. से केणट्ठेण ?
गोयमा ! जीवे ण गढभगए समाणे जमाहारेइ त चिणाइ, त जहा
—सोइदियत्ताए,^५ चक्खिदियत्ताए, घाणिदियत्ताए, रसिदियत्ताए^६,
फासिदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिज-केस-मसु-रोम-नहत्ताए । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव
वुच्चइ—जीवस्स ण गढभगयस्स समाणस्स णत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा
खेले इ वा सिघाणे इ वा वते इ वा पित्ते इ वा ॥
३४८. जीवे ण भते ! गढभगए समाणे पभू मुहेण कावलिय आहारमाहारित्तए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
३४९. से केणट्ठेण ?
गोयमा ! जीवे ण गढभगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ,
सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ, अभिक्खण आहारेइ, अभिक्खण
परिणामेइ, अभिक्खण उस्ससइ, अभिक्खण निस्ससइ, आहच्च आहारेइ,
आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ^६ ।

१. आहारादी (अ, व), आहाराइ (ता, स) । ४. × (अ, क, ता, व) एते पदे वृत्तावपि न

२. °ससिट्ठं कलुस किंविस्स (अ, क, म, स) । व्याख्याते ।

३. रसवतीओ (अ, क, व, म),

५. स०पा०—सोइदियत्ताए जाव फासिदियत्ताए ।

रसविस्तीओ (ता) ।

६. नीससति (अ, क, ता, म, स) ।

माउजीवरसहरणी, पुत्तजीवरसहरणी, माउजीवपडिवद्धा पुत्तजीवफुडा^१—तम्हा
आहारेइ, तम्हा परिणामेइ ।

अवरा वि य ण पुत्तजीवपडिवद्धा माउजीवफुडा^१—तम्हा चिणाइ, तम्हा
उवचिणाइ । से तेणट्ठेण^२ गोयमा^३ । एव वुच्चइ—जीवे ण गब्भगए समाणे^४
नो पभू मुहेणं कावलयि आहारमाहारित्तए ॥

माइय-पेइय-अग-पद

३५०. कइ ण भते ! माइयगा पण्णत्ता ?

गोयमा^५ ! तन्नो माइयगा पण्णत्ता, त जहा—मसे, सोणिए, मत्थुलुगे^६ ॥

३५१. कइ ण भते ! पेतियगा^७ पण्णत्ता ?

गोयमा^५ ! तन्नो पेतियगा पण्णत्ता, त जहा—अट्ठि, अट्ठिभिजा, केस-मसु-
रोम-नहे ॥

३५२. अम्मापेइए^८ ण भते ! सरीरए केवइय काल सच्चिट्ठइ ?

गोयमा ! जावइय से काल भवधारणिज्जे सरीरए अव्वान्ने भवइ एवतिय
काल सच्चिट्ठइ, अहे ण समए-समए वोयसिज्जमाणे-वोयसिज्जमाणे चरिम-
कालसमयसि वोच्छिण्णे भवइ ॥

गब्भस्स नरगगमए-पद

३५३. जीवे ण भते ! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो
उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! से ण सण्णां पच्चिदिए सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तए वीरियलद्धीए
वेउव्वियलद्धीए पराणीय आगय सोच्चा निसम्म^९ पएसे निच्छुभइ, निच्छुभित्ता
वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ,^६ समोहणित्ता चाउरगिणि सेण^७ विउव्वइ,
विउव्वित्ता चाउरगिणीए सेणाए पराणीएण सद्धि सगाम सगामेइ ।

से ण जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए, अत्थकखिए
रज्जकखिए भोगकखिए कामकखिए, अत्थपिवासिए रज्जपिवासिए भोग-
पिवासिए कामपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-
साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तन्भावणाभाविए, एयसि ण अतरसि काल

१. पुत्तजीव फुडा (वृ) ।

६. ० पिइए (अ, म, स) ।

२. माउजीव फुडा (वृ) ।

७. निसम्मा (ता) ।

३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो ।

८. समोहणइ (अ, स) ।

४. ० लुए (अ, क, स), ० लिगे (म) ।

९. सेण (क, ता, व, म, स) ।

५. पितियगा (अ, म, स) ।

करेज्ज नेरइएसु उववज्जइ । से तेणट्ठेण गोयमा^१ ! • एव वुच्चइ—अत्येगइए उववज्जेज्जा^२, अत्येगइए नो उववज्जेज्जा ॥

गम्भस्स देवलोगगमण-पद

३५५. जीवे णं भते ! गम्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्येगइए उववज्जेज्जा, अत्येगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्येगइए उववज्जेज्जा, अत्येगइए नो उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! से ण सण्णी पचिदिए सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्ते तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मियं सुवयण सोच्चा निसम्म तन्नो भवइ सवेगजायसइ^३ तिब्बधम्माणुरागरत्ते ।

से ण जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए, धम्मकखिए पुण्णकखिए सग्गकखिए मोक्खकखिए, धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्ग-पिवासिए मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयसि ण अतरसि काल करेज्ज देवलोगेसु उववज्जइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्येगइए उववज्जेज्जा, अत्येगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५७. जीवे णं भते ! गम्भगए समाणे उत्ताणए^४ वा पासल्लए^५ वा अब्बुज्जए वा अच्छेज्ज वा ? चिट्ठेज्ज वा ? निसीएज्ज वा ? तुयट्ठेज्ज वा ? माउए सुयमाणीए^६ सुवइ ? जागरमाणीए जागरइ ? सुहियाए सुहिए भवइ ? दुहियाए दुहिए भवइ ?

हता गोयमा ! जीवे ण गम्भगए समाणे^७ • उत्ताणए वा पासल्लए वा अब्बुज्जए वा अच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्ठेज्ज वा । माउए सुयमाणीए सुवइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ^८ दुहियाए दुहिए भवइ ।

अहे ण पसवणकालसमयसि सीसेण वा पाएहि वा आगच्छति सममागच्छति^९, तिरियमागच्छति विणिहायमावज्जति ।

वण्णवज्जमाणि य से कम्माइं बद्धाईं पुट्ठाइ निहत्ताईं कडाइ पट्ठवियाइ अभिनिविट्ठाइ अभिसमण्णागयाइ उदिण्णाइ—नो उवसताइ भवति,

१. स० पा०—गोयमा जाव अत्ये० ।

२. ० जाइसइडे (व, स) ।

३. उत्तारो (ता) ।

४. पोसल्लए (अ), पासल्लए (क); पासल्लए (ता, म) ।

५. सुवमाणीए (क, ता, म) ।

६. स० पा०—समाणे जाव दुहियाए ।

७. सम्ममा० (अ, व, स, वृपा) ।

तओ भवइ दुख्खे दुवण्णे 'दुग्गधे दुरसे' दुफासे अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे 'अणाएज्जवयणे पच्चायाए'^१ या वि भवइ ।

वणवज्झाणि य से कम्माइ नो बद्धाइ^२ •नो पुट्ठाइं नो निहत्ताइ नो कडाइ नो पट्ठवियाइं नो अभिनिविट्ठाइ नो अभिसमण्णागयाइं नो उदि-
ण्णाइं—उवसताइ भवन्ति, तओ भवइ सुखे सुवण्णे सुगधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते
पिए सुभे मणुण्णे मणामे अहीणस्सरे अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कतस्सरे पियस्सरे
सुभस्सरे मणुण्णस्सरे मणामस्सरे^३ 'आदेज्जवयणे पच्चायाए'^४ या वि भवइ ॥
३५८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^५ ॥

अट्ठमो उद्देशो

बालस्स आउय-पद

३५९. एगंतबाले णं भते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति ? तिरिक्खाउयं पकरेति ?
मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उवव-
ज्जति ? तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा
मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगंतबाले ण मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेति, तिरियाउयं वि
पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति, नेरइयाउय किच्चा
नेरइएसु उववज्जति, तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति, मणुस्साउयं
किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ॥

पडियस्स आउय-पदं

३६०. एगंतपडिए ण भते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति^१ ? •तिरिक्खाउयं
पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा

१. दुग्गधे (म) ।

३. स० पा०—पसत्थ नेयव्व जाव आदेज्ज^० ।

२. ° वयसपच्चाए (अ, क, ता, व, म, स),

४. ° वयसपच्चाए (क, ता) ।

स्थानाङ्गे (८।१०) 'पच्चायाए' इत्येव

५. भ० १। ५१ ।

पाठोक्ति ।

६. स० पा०—पकरेति जाव देवाउयं ।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? °देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जति ? गोयमा ! एगंतपंडिए णं मणुस्से' आउयं सिय पकरेति, सिय णो पकरेति, जइ पकरेति णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरियाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

३६१. से केणट्ठेणं जाव' देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?

गोयमा ! एगंतपंडियस्स णं मणुस्सस्स केवलमेव दो गतीओ पणायंति, त जहा—अंतकिरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

बालपंडियस्स आउय-पदं

३६२. बालपंडिए णं भते ! मणुस्से कि नेरइयाउयं पकरेति ? °तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?

गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरिक्खाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति°, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

३६३. से केणट्ठेणं जाव' देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?

गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से तहाखवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं' बम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म' देसं उवरमइ, देसं णो उवरमइ, देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ ।

'से तेणं' देसोवरम-देसपच्चक्खाणेणं णो नेरइयाउयं पकरेति जाव' देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

१. मणुस्से (ता) ।

२. भ० १।३६० ।

३. सं० पा०—पकरेति जाव देवाउयं ।

४. भ० १।३६२ ।

५. यारियं (क, ता) ।

६. निसम्मा (अ, ता, व) ।

७. सेणं ते (क); सेणं तेण (ता, व) ।

८. भ० १।३६० ।

किरिया-पदं

३६४. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा दहसि वा उदगसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा नूमसि वा गहणसि वा गहणविदुग्गसि वा पच्चयसि वा पच्चयविदुग्गसि वा वणसि वा वणविदुग्गसि वा मियवत्तीए^१ मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय^२ ति काउ अण्णयरस्स मियस्स वहाए कूडपास उद्दाति^३, ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय^४ तिकिरिए, सिय चउकिरिए^५, सिय पंचकिरिए ॥

३६५. से केणट्ठेण भते ! एव बुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पंचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उद्दवणयाए—णो बधणयाए, णो मारणयाए—तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए^६—तिहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए वि, बधणताए वि—णो मारणताए—तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए^७, पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए^८ वि, बधणताए वि, मारणताए वि, तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए—पंचहि किरियाहि पुट्ठे । से तेणट्ठेण^९ •गोयमा ! एव बुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय^{१०} पंचकिरिए ॥

३६६. पुरिसे णं भते ! कच्छसि वा जाव^{११} वणविदुग्गसि वा तणाइ ऊसविय-ऊसविय अगणिकायं निसिरइ—तावं च णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

३६७. से केणट्ठेणं भते ! एवं बुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पंचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए^{१२}—•णो निसिरणयाए, णो दहणयाए—तावं

१. मियवत्तिए (अ), मियवत्तीए (स) ।

८. उद्दयायाए (ता) ।

२. मिए (अ, ता, व, म, स) ।

९. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव पंच० ।

३. उद्दाइ (अ, क, ता, व, स) ।

१०. भ० १।३६४ ।

४. जाव च णं से पुरिसे कच्छसि वा जाव कूडपासं उद्दाइ तावं च णं से पुरिसे सिय (क, ता, म, स) ।

११. सं० पा०—उस्सवणयाए तिहि, उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि नो दहणयाए चउहि, जे भविए उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि तावं च ण से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि ।

५. चत्तुं (ता) ।

६. पाउसियाए (अ, व, म) ।

७. पायोसियाए (व) ।

च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, णो दहणयाए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, दहणयाए वि, तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए^०—पचहि किरियाहि पुट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव बुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

३६८. पुरिसे णं भते ! कच्छसि वा जाव^१ वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते 'मिय त्ति'^२ काउ अण्णतरस्स मियस्स वहाए उसु निसिरति, ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ।

३६९. से केणट्ठेणं भते ! एवं बुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए निसिरणयाए—णो विद्धसणयाए, णो मारणयाए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए निसिरणताए वि, विद्धसणताए वि—णो मारणयाए—तावं च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ।

जे भविए निसिरणयाए वि, विद्धसणयाए वि, मारणताए वि—ताव च ण से पुरिसे^३ काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणाति-वायकिरियाए^०—पचहि किरियाहि पुट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं बुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

३७०. पुरिसे णं भते ! कच्छसि वा जाव^४ वणविदुग्गसि वा ? मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय त्ति काउ^५ अण्णतरस्स मियस्स वहाए आयत-कण्णायतं उसु आयामेत्ता चिट्ठेज्जा, अण्णयरे^६ पुरिसे मग्गतो आगम्म सयपाणिणा^७ असिणा सीसं छिदेज्जा, से य उसु ताए चैव पुव्वायामणयाए तं

१. भ० १।३६४ ।

४. भ० १।३६४ ।

२. मिए त्ति (ज); मिया ति (ता, म); मिये ति (व, स) ।

५. अण्णे य से (क, ता, म) ।

६. सत^० (ता) ।

३. स० पा०—पुरिसे जाव पचहि ।

मियं विधेज्जा, से णं भते ! पुरिसे कि मियवेरेण पुट्ठे ? पुरिसवेरेण पुट्ठे ?
गोयमा ! जे मियं मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे पुरिस मारेइ, से
पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

३७१. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ^१—जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे ? जे
पुरिस मारेइ, से^२ पुरिसवेरेण पुट्ठे ?

से नूण गोयमा ! कज्जमाणे कडे, सध्विज्जमाणे^३ सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे
निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे^४ त्ति वत्तव्व सिया ?

हता भगवं ! कज्जमाणे कडे^५, सध्विज्जमाणे सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे
निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे^६ निसिट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ।

से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जे मियं मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे
पुरिस मारेइ, से पुरिसवेरेण पुट्ठे ।

अतो छ्हं मासाणं मरइ—काइयाए^७, अहिगरणियाए, पाओसियाए,
पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए^८—पंचहि किरियाहि पुट्ठे । बाहि
छ्हं मासाणं मरइ—काइयाए^९ अहिगरणियाए, पाओसियाए^{१०} पारितावणि-
याए—चउहि किरियाहि पुट्ठे ॥

३७२ पुरिसे णं भते ! पुरिसं सत्तीए समभिधसेज्जा, सयपाणिणा^{११} वा से असिणा
सीसं छिदेज्जा, ततो णं भते ! से पुरिसे कत्तिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे तं पुरिस सत्तीए समभिधसेति^{१२}, सय-
पाणिणा^{१३} वा से असिणा सीसं छिदति—ताव च णं से पुरिसे काइयाए, अहि-
गरणियाए^{१४} पाओसियाए, पारितावणियाए^{१५}, पाणातिवातकिरियाए—पंचहि
किरियाहि पुट्ठे ।

आसण्णवधएण य अणवकंखणवत्तीए^{१६} णं पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

जय-पराजय-पदं

३७३. दो भते । पुरिसा सरिसया^{१७} सरित्तया^{१८} सरिव्वया सरिसभडमत्तोवगरणा
अण्णमण्णेण सद्धि संगामं संगामेति तत्थ णं एगे पुरिसे पराइणति, एगे पुरिसे
परायिज्जति^{१९} । से कहमेयं भते ! एवं ?

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव पुरिस^० ।

८. अभिधसेइ (अ, व, स) ।

२. सधेज्जमाणे (ता) ।

९. सपाणिणा (क, ता) ।

३. निसिट्ठे (क, ता) ।

१०. सं० पा०—अहिगरणियाए जाव पाणा^० ।

४. सं० पा०—कडे जाव निसिट्ठे ।

११. अणवकंखवत्तीए (अ, स) ।

५. सं० पा०—काइयाए जाव पंचहि ।

१२. सरसया (व) ।

६. सं० पा०—काइयाए जाव पारिया^०;

१३. सरिसत्तया (ता) ।

कातियाए (ता) ।

१४. पराइयिज्जइ (अ, ता, व); पराएज्जइ

७. सपाणिणा (क, ता) ।

(स) ।

गोयमा ! सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ॥

३७४ से केणट्ठेण^१ भते ! एव वुच्चइ—सवीरिए परायिणति ? अवीरिए^२ परायिज्जति ?

गोयमा ! जस्स णं वीरियवज्झाइ कम्माइ नो बद्धाइ नो पुट्ठाइ^३ नो निहत्ताइ नो कडाइं नो पट्ठवियाइ नो अभिनिविट्ठाइ^४ नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइ—उवसंताइं भवति से ण परायिणति ।

जस्स ण वीरियवज्झाइ कम्माइं बद्धाइं^५ पुट्ठाइ निहत्ताइ कडाइं पट्ठवियाइ अभिनिविट्ठाइ अभिसमण्णागयाइं^६ उदिण्णाइ णो उवसताइ भवन्ति से ण पुरिसे परायिज्जति, से तेणट्ठेण । गोयमा ! एव वुच्चति—सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ॥

वीरिय-पदं

३७५ जीवा ण भते ! किं सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ॥

३७६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! जीवा दुविहा पणत्ता, त जहा—संसारसमावण्णगा य, असंसार समावण्णगा य ।

तत्थ णं^१ जे ते असंसारसमावण्णगा ते ण सिद्धा । सिद्धा णं अवीरिया । तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा^२ ते दुविहा पणत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया वि, अवीरिया वि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवा दुविहा पणत्ता, त जहा—सवीरिया वि, अवीरिया वि ॥

३७७ नेरइया ण भते ! किं सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य ॥

३७८ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया ? करणवीरिएण सवीरिया य ? अवीरिया य ?

गोयमा ! जेसि णं नेरइयाण अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-

१. सं० पा०—केणट्ठेण जाव परायिज्जति ।

४. × (क, ता, व, म) ।

२. सं० पा०—पुट्ठाइ जाव नो ।

५. ° वण्णया (क, ता, म) ।

३. सं० पा०—बद्धाइ जाव उदिण्णाइं ।

परक्कमे, ते णं नेरइया लद्धिवीरिएण वि सवीरिया, करणवीरिएण वि सवीरिया ।

जेसि णं नेरइयाण गत्थि उट्ठाणे^१ •कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार^२-परक्कमे, ते ण नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया । करणवीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य ॥

३७९. जहा नेरइया एवं जाव^३ पच्चिदियतिरिक्खजोणिया ॥

३८०. ^४मणुस्सा णं भते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ॥

३८१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पणत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य ।

तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया वि, अवीरिया वि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि, अवीरिया वि^५ ॥

३८२. वाणमतर-जोतिस-वेमाणिया जहा^६ नेरइया ॥

३८३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव^७ विहरइ ॥

नवमो उद्देशो

गुरु-लघु-पदं

३८४. कहण्ण^१ भते ! जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति ?

गोयमा ! पाणाइवाएण मुसावाएण अदिण्णादाणेण मेहुणेण परिग्गहेण कोह-माण-माया-लोम-पेज्ज-दोस-कलह-अव्वक्खाण-पेसुन्न-‘परपरिवाय-अरति-रति’^२-मायामोस-मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्त^३ हव्वमागच्छति ॥

१. स० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे ।

२. पू० प० २ ।

३. स० पा०—मणुस्सा जहा ओहिया जीवा एवर सिद्धवज्जा भाणियव्वा ।

४. भ० १।३७७, ३७८ ।

५. भ० १।५१ ।

६. कह ण (अ, ब) ।

७. रतिअरतिपरपरिवाय (अ, ब, स) ।

८. गुरुयत्त (व) ।

- ३८५ कहुण्ण भते । जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ?
 गोयमा । पाणाइवायवेरमणेण^१ •मुसावायवेरमणेण अदिण्णादाणवेरमणेण
 मेहुणवेरमणेण परिग्गह्वेरमणेण 'कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-
 अढभवखाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस^०-मिच्छादसणसल्ल वेर-
 मणेण'^२—एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ॥
३८६. ^१कहुण्ण भते । जीवा ससार आउलीकरेति ?
 गोयमा । पाणाइवाएण जाव^३ मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा
 ससार आउलीकरेति ॥
३८७. कहुण्ण भते । जीवा ससारं परित्तीकरेति ?
 गोयमा । पाणाइवायवेरमणेण जाव^४ मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु
 गोयमा ! जीवा ससार परित्तीकरेति ॥
३८८. कहुण्ण भते । जीवा ससारं दीहीकरेति ?
 गोयमा । पाणाइवाएण जाव^५ मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा
 ससार दीहीकरेति ॥
३८९. कहुण्णं भते जीवा ससार ह्हस्सीकरेति ?
 गोयमा । पाणाइवायवेरमणेण जाव^६ मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु
 गोयमा ! जीवा ससार ह्हस्सीकरेति ॥
३९०. कहुण्ण भते । जीवा ससार अणुपरियट्ठति ?
 गोयमा ! पाणाइवाएण जाव^७ मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा !
 जीवा ससार अणुपरियट्ठति ॥
३९१. कहुण्ण भते । जीवा ससार वीतिवयति ?
 गोयमा । पाणाइवायवेरमणेण जाव^८ मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु
 गोयमा ! जीवा ससार वीतिवयति ॥
३९२. सत्तमे णं भते । ओवासतरे^९ किं गरुए^{१०} ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगारुयलहुए ?
 गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगारुयलहुए ॥

१. पाणाइवाय^० (व, स);

४. भ० १।३८४ ।

स० पा०—पाणाइवायवेरमणेण जाव
 मिच्छा^० ।

५. भ० १।३८५ ।

६. भ० १।३८४ ।

२. स्थानाङ्गे १।११४-१२६ क्रोधादीनामग्रे
 'विवेगे' इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।

७. भ० १।३८५ ।

८. भ० १।३८४ ।

३. स० पा०—एव ससार आउलीकरेति एव
 परित्तीकरेति एव दीहीकरेति एव ह्हस्सी-
 करेति एव अणुपरियट्ठेति एव वीट्ठियति
 पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि ।

९. भ० १।३८५ ।

१०. उवासतरे (क, व, म, स) ।

११. गुरुए (अ) ।

३६३. सत्तमे ण भते ! तणुवाए कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
 गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो अगरुयलहुए ॥
३६४. एव सत्तमे घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी ॥
३६५. ओवासतराइ सव्वाइ जहा^१ सत्तमे ओवासतरे ॥
३६६. 'जहा तणुवाए एव—ओवास-वाय-घणउदही, पुढवी दीवा य सागरा वासा'^२ ॥
३६७. नेरइया ण भते ! कि गरुया ? ●लहुया ? गरुयलहुया ? ° अगरुयलहुया ?
 गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥
३६८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया
 वि ? अगरुयलहुया वि ?
 गोयमा ! विउविय-तेयाइ पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया,
 णो अगरुयलहुया । जीव च कम्मग^४ च पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, णो
 गरुयलहुया, अगरुयलहुया । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो
 गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥
३६९. एव जाव^५ वेमाणिया, नवर—नाणत्त जाणियव्व सरीरेहि ॥
४००. धम्मत्थिकाए^६ ● ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
 गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥
४०१. अहम्मत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
 गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥
४०२. आगासत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
 गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥
४०३. जीवत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
 गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ° ॥
४०४. पोम्मलत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
 गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए वि, अगरुयलहुए वि ॥
४०५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—णो गरुए ? णो लहुए ? गरुयलहुए वि ?
 अगरुयलहुए वि ?
 गोयमा ! गरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए,

१. भ० १।३६२ ।

२. 'एव गरुयलहुए' इति पाठ एकस्मिन् क्व-
 चित् प्रयुक्ते आदर्शे लभ्यते । एतत् सग्रह-
 भाषायादवरणद्वयमस्ति तेन पूर्वोक्तस्यापि
 'ओवास' पदस्य पुनरुल्लेखोत्र जातोति ।

३. सं० पा०—गरुया जाव अगरुय ° ।

४. कम्मक (क), कम्मण (वृत्तौ लिं
 पाठसंकेते) ।

५. पू० प० २ ।

६. सं० पा०—धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थि-
 चउत्थपएण ।

अगरुयलहुए । अगरुयलहुयदब्बाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए,
अगरुयलहुए ॥

४०६. *समया णं भते ! कि गरुया ? लहुया ? गरुयलहुया ? अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया ॥

४०७. कम्माणि ण भते ! कि गरुयाइ ? लहुयाइ ? गरुयलहुयाइ ? अगरुयलहुयाइ ?
गोयमा ! णो गरुयाइ, णो लहुयाइ, णो गरुयलहुयाइ, अगरुयलहुयाइ ° ॥

४०८. कण्हलेस्सा ण भते ! कि गरुया ? लहुया ? गरुयलहुया ? अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ॥

४०९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—कण्हलेस्सा णो गरुया ? णो लहुया ?
गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! दव्वलेस्स पडुच्च ततियपदेण, भावलेस्स पडुच्च चउत्थपदेण° ॥

४१०. एव जाव' मुक्कलेसा ॥

४११. दिट्ठी-दंसण-‘णाण-अण्णाण’-सण्णाओ चउत्थएण पदेण नेतव्वाओ ॥

४१२. हेट्ठिल्ला चत्तारि' सरीरा नेयव्वा' ततिएण पदेण । कम्मय' चउत्थएण पदेण ॥

४१३. मणजोगो, वइजोगो चउत्थएण पदेण, कायजोगो ततिएण पदेण ॥

४१४. सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थएण पदेण ॥

४१५. सव्वदब्बा, सव्वपएसा, सव्वपज्जवा जहा'° पोगलत्थिकाओ° ॥

४१६. तोतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा चउत्थएण° पदेण ॥

पसत्थ-पदं

४१७. से नूण भते ! लाघवियं अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिवद्धया समणाण
निग्गथाण पसत्थ ?

हुता गोयमा ! लाघविय° *अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिवद्धया समणाण
निग्गथाण° पसत्थ ॥

४१८. से नूण भते ! अकोहत्त अमाणत्त अमायत्त अलोभत्त समणाण निग्गथाण
पसत्थ ?

१. सं० पा०—समया कम्माणि य चउत्थपदेण । ८ नायव्वा (अ, व स) ।

२. सं० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।

३. गरुयलहुया ।

४. अगरुयलहुया ।

५. म० १।१०२ ।

६. नाणाण्णाण (ता) ।

७. ओरालियवेज्जवियआहारगतेया ।

९ कम्मया (क, म, स), कम्मइए (ता) ।

१०. जघा (अ, व, स) ।

११ म० १।४०४ ।

१२. चउत्थेण (क, ता, व, म) ।

१३. सं० पा०—लाघविय जाव पसत्थ ।

हता गोयमा ! अकोहत्त अमाणत्त^१ •अमायत्त अलोभत्त समणार्णं निग्गन्थाणं^२
पसत्थ ॥

कखापदोस-पदं

४१६. से नूण भते । कखापदोसे खीणे समणे निग्गथे अंतकरे भवति, अतिमसरीरिए वा ?

बहुमोहे वि य ण पुंवि विहरित्ता अहं^३ पच्छा संवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति^४ •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं^५ अंत करेति ?

हता गोयमा ! कखापदोसे^६ खीणे^७ •समणे निग्गथे अंतकरे भवति, अतिम-सरीरिए वा ।

बहुमोहे वि य ण पुंवि विहरित्ता अहं पच्छा संवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं^८ अंत करेति ॥

इह-पर-भविआउय-पदं

४२०. अण्णउत्थिया ण भते । एवमाइक्खति, एव भासति, एवं पण्णवेति, एव पख्वेति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, तं जहा—इहभविआउय^१ च, परभविआउय च ।

ज समय इहभविआउयं पकरेति, तं समय परभविआउय पकरेति ।

ज समय परभविआउय पकरेति, तं समय इहभविआउय पकरेति ।

इहभविआउयस्स पकरणयाए परभविआउय पकरेति,

परभविआउयस्स पकरणयाए इहभविआउय पकरेति ।

एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, तं जहा—इहभविआउय च, परभविआउय च ॥

४२१. से कहमेयं^२ भते । एव ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव^३ एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, तं जहा—इहभविआउय च, परभविआउय च ।

जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि^४,

•एवं भासेमि, एव पण्णवेमि, एव^५ पख्वेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, तं जहा—इहभविआउय वा, परभविआउयं वा ।

१. स० पा०—अमाणत्त जाव पसत्थ ।

२. अहा (अ, ता, व, म) ।

३. स० पा०—सिज्झति जाव अत ।

४. कख^० (अ, व, स) ।

५. स० पा०—खीणे जाव अत ।

६. ०आउग (क) ।

७. ०मेत (ता, म), ०मेव (स) ।

८. म० १।४२० ।

९. स० पा०—एवमाइक्खामि जाव पख्वेमि ।

ज समय इहभविद्याउय पकरेति, णो त समयं परभविद्याउय पकरेति ।
 ज समय परभविद्याउय पकरेति, णो त समय इहभविद्याउयं पकरेति ।
 इहभविद्याउयस्स पकरणताए णो परभविद्याउयं पकरेति ।
 परभविद्याउयस्स पकरणताए णो इहभविद्याउय पकरेति ।
 एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, तं जहा—इहभविद्याउय
 वा, परभविद्याउय वा ॥

४२२. सेव भते । सेव भते । त्ति भगव गोयमे जाव^१ विहरति ॥

कालासवेसियपुत्त-पदं

- ✓ ४२३. तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णाम अणगारे जेणेव
 थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता थेरे भगवते^१ एवं वयासी—
 थेरा सामाइय न याणति, थेरा सामाइयस्स अट्ठ न याणति ।
 थेरा पच्चक्खाण न याणति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं न याणति ।
 थेरा संजम न याणति, थेरा सजमस्स अट्ठ न याणति ।
 थेरा सवर न याणति, थेरा सवरस्स अट्ठ न याणति ।
 थेरा विवेग न याणति, थेरा विवेगस्स अट्ठ ण याणति ।
 ० थेरा विउस्सग्ग न याणति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठ न याणति ॥
- ✓ ४२४. तएण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एवं वदासी—
 जाणामो ण अज्जो ! सामाइय, जाणामो णं अज्जो ! सामाइयस्स^१ अट्ठ^२ ।
 • जाणामो ण अज्जो ! पच्चक्खाण, जाणामो णं अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठं ।
 जाणामो ण अज्जो ! सजम, जाणामो णं अज्जो ! सजमस्स अट्ठ ।
 जाणामो ण अज्जो ! सवर, जाणामो ण अज्जो ! सवरस्स अट्ठ ।
 जाणामो ण अज्जो ! विवेग, जाणामो ण अज्जो ! विवेगस्स अट्ठ ।
 ✓ जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्ग^३, जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठ ॥
- ✓ ४२५. तते ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवते एव वयासी—जइ^४ णं
 अज्जो ! तुब्भे जाणह सामाइयं, तुब्भे जाणह सामाइयस्स अट्ठ जाव^५ जइ णं
 अज्जो ! तुब्भे जाणह विउस्सग्ग, तुब्भे जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठ । के भे^६

१. भ० १।५१ ।

२. भगव (अ, व) ।

३. सामात्तियस्स (ता) ।

४. स० पा०—अट्ठ जाव जाणामो ।

५. जति (अ, क, व, म) ।

६. भ० १।४२३ ।

७. ते (व, म) ।

अज्जो ! सामाइए ? के भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव के भे अज्जो !

✓ विउस्सग्गे ? के भे अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठे ?

✓ ४२६. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—

आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे^१ ।

•आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठे ।

आया णे अज्जो ! सजमे, आया णे अज्जो ! सजमस्स अट्ठे ।

आया णे अज्जो ! संवरे, आया णे अज्जो ! संवरस्स अट्ठे ।

आया णे अज्जो ! विवेगे, आया णे अज्जो ! विवेगस्स अट्ठे ॥

✓ आया णे अज्जो ! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो ! ° विउस्सग्गस्स अट्ठे ॥

✓ ४२७. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते एवं वदासी—

जइ भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव^२ आया विउस्सग्गस्स अट्ठे—अवहट्ठु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठ अज्जो ! गरहह^३ ? कालासा^४ ! सजमट्ठयाए ॥ //

४२८. से भते ! कि गरहा सजमे ? अजरहा सजमे ?

कालासा ! गरहा सजमे, णो अजरहा संजमे । गरहा वि य ण सव्व दोस पविणेति, सव्व बालिय परिण्णाए । एव खु णे आया संजमे उवहिते भवति । एव खु णे आया सजमे उवचिए भवति । एव खु णे आया संजमे उवट्ठिते भवति ॥

४२९. एत्थ ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे सबुद्धे थेरे भगवते वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एएसि ण भते ! पयाण पुव्वि अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए^५ अणभिगमेण अदिट्ठाण अस्सुयाण अमुयाणं^६ अविण्णायाणं अव्वोकडाणं^७ अव्वोच्छिण्णाण अणिज्जूडाण अणुवधारियाण एयमट्ठे नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए ।

इदाणि भते ! एतेसि पयाणं जाणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाण मुयाणं^८ विण्णायाणं वोगडाण वोच्छिण्णाण णिज्जूडाण उव-धारियाणं^९ एयमट्ठ सद्दहामि पत्तियामि रोएमि । एवमेय से जहेयं^{१०} तुव्वे वदह ॥

४३०. तए ण ते थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्तं अणगार एव वयासी—सद्दहाहि

१. स० पा०—अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स ।

२. भ० १।४२३ ।

३. गरहट्ठु (व) ।

४. कालास (स) ।

५. अबोहियाए (अ, स) ।

६. असुयाणं (म), वृत्तौ 'अस्मृताता' इति व्याख्यातमस्ति ।

७. अव्वोगडाण (अ, व, स); अव्वोकडाए (क, म) ।

८. सुयाण (व); × (म) ।

९. अवधारियाण (म) ।

१०. जहेद (ता) ।

अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! रोएहि अज्जो ! से जहेय अम्हे वदामो ॥

४३१. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—इच्छामि ण भते ! तुव्व अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइय सपडिक्कमणं धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिबध् । ॥

४३२. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइय सपडिक्कमणं धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥

४३३. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नगभावे मुडभावे अण्हाणय अदतवणय^१ अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलसेज्जा कट्टसेज्जा केसलोओ बभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकट्ठा बावीस परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति, तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे^२ सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

४३४. भते ति । भगव गोयमे समण भगवं महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—से नूण भते ! सेट्ठियस्स^३ य तणुयस्स य किवणस्स^४ य खत्तियस्स य 'समा चेव'^५ अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?

हता गोयमा ! सेट्ठियस्स^३ •य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव^५ अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ॥

४३५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स^३ •य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया^५ कज्जइ ॥

आहाकम्म-पदं

४३६. 'आहाकम्म ण'^६ भजमाणे समणे निग्गये कि बंधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवच्चिणाइ ?

१. कुरुव्व इति गम्यम् (वृ) ।

२. अदंतवण्णयं (क);

अदंतधुवण्णय (ता, व, स) ।

३. परिणिव्वुए (अ, ता, व);

परिणिव्वुते (क, म) ।

४. सेट्ठिस्स (ता, व), सिट्ठिस्स (म) ।

५. किविणस्स (ता) ।

६. समच्चेव (व, म) ।

७. स० पा०—सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण^५ ।

८. स० पा०—तणुयस्स जाव कज्जइ ।

९. आहाकम्मे ण (क), आहाकम्म ण (ता),

आहाकम् ण (व), आहाकम्मणं (म) ।

गोयमा ! आहाकम्म णं भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलवधणवद्धाओ धणियवधणवद्धाओ पकरेइ^१, *हस्सकालठिइयाओ दीहकाल-
ठिइयाओ पकरेइ, मदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पएसग्गाओ
वहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय वधइ, सिय नो वधइ, अस्साया-
वेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च ण अणवदग्गं
दीहमद्ध चाउरत ससारकतार^० अणुपरियट्टइ ॥

४३७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—आहाकम्म ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त
कम्मप्पगडीओ सिढिलवधणवद्धाओ धणियवधणवद्धाओ पकरेइ जाव^२ चाउरतं
ससारकतार अणुपरियट्टइ ?

गोयमा ! आहाकम्म णं भुजमाणे आयाए धम्म अइक्कमइ, आयाए
धम्म अइक्कममाणे पुढविकाय णावकखइ^३, *आउकाय णावकखइ, तेउकायं
णावकखइ, बाउकाय णावकखइ, वणस्सइकाय णावकखइ^४, तसकाय णाव-
कखइ, जेसि पि य ण जीवाण सरीराइं आहारमाहारेइ ते वि जीवे णावकखइ ।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—आहाकम्म ण भुजमाणे आउयवज्जाओ
सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलवधणवद्धाओ धणियवधणवद्धाओ पकरेइ जाव
चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ ॥

फासु-एसणिज्ज-पदं

४३८. फासु-एसणिज्ज ण भते ! भुजमाणे समणे निग्गथे कि वंघइ ? कि पकरेइ ?
कि चिणाइ ? कि उवचिणाइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्ज ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ
धणियवधणवद्धाओ सिढिलवधणवद्धाओ पकरेइ, *दीहकालट्ठिइयाओ
हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मदाणुभावाओ पकरेइ,
वहुप्पएसग्गाओ अप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च णं कम्म सिय वंघइ, सिय
नो वधइ, अस्सायावेयणिज्ज च णं कम्म नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ,
अणादीय च ण अणवदग्गं दीहमद्ध चाउरतं ससारकतार^० वीईवयइ ॥

४३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—फासु-एसणिज्ज ण भुजमाणे आउयवज्जाओ
सत्त कम्मपयडीओ धणियवधणवद्धाओ सिढिलवधणवद्धाओ पकरेइ जाव^२
चाउरत संसारकतारं वीईवयइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्ज णं भुजमाणे समणे निग्गथे आयाए धम्मं

१. स० पा०—पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ ।

कम्म सिय वधइ सिय एओ वधइ सेसं तहेव

२. भ० १।४३६ ।

जाव वीईवयइ ।

३. स० पा०—णावकखइ जाव तसकाय ।

४. भ० १।४३८ ।

४. स० पा०—जहा संबुडे, नवरं आउयं च ए

नाइक्कमइ, आयाए घम्मं अणइक्कममाण पुढविकायं^१ अवक्खइ जाव^२ तसकायं
अवक्खइ, जेसि पि य णं जीवाणं सरीराइं (आहारं ?^३) आहारेइ ते वि जीवे
अवक्खइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्ज णं भुंजमाणे
आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ घणियवघणवद्धाओ सिद्धिलवंधणवद्धाओ
पकरेइ जाव^४ चाउरतं संसारकतारं बीईवयइ ॥

४४०. से नूणं भंते ! अथिरे पलोट्टइ, नो थिरे पलोट्टइ ? अथिरे भज्जइ, नो थिरे
भज्जइ ? सासए वालए, वालियत्तं असासयं ? सासए पंडिए, पंडियत्त
असासयं ?

हुंता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ, *नो थिरे पलोट्टइ । अथिरे भज्जइ,
नो थिरे भज्जइ । सासए वालए, वालियत्तं असासयं । सासए पंडिए^५, पंडियत्त
असासयं ॥

४४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव^६ विहरइ ॥

दसमो उद्देशो

परसमयवत्तव्वया-पदं

४४२. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति^७, *एवं भासंति, एवं पण्णवेति, एवं^८
परुवेति—

एवं खलु च्चलमाणे अचलिए^९ । *उदीरिज्जमाणे अणुदीरिए । वेदिज्जमाणे
अवेदिए । पहिज्जमाणे अपहीणे । छिज्जमाणे अच्छिज्जणे । भिज्जमाणे अभिज्जणे ।
दज्जमाणे अदज्जणे । मिज्जमाणे अमए^{१०} । निज्जरिज्जमाणे अनिज्जिज्जणे ।

दो परमाणुपोगला एगयओ^{११} न^{१२} साहण्णंति,

कम्हा दो परमाणुपोगला एगयओ न साहण्णंति ?

दोण्हं परमाणुपोगलाणं नत्थि सिणेह्काए, तम्हा दो परमाणुपोगला एगयओ
न साहण्णंति ।

१. पुढविकायं (ता, म, स) ।

२. भ० १।४३७ ।

३. द्रष्टव्यं—भ० १।४३७ सूत्रम् ।

४. भ० १।४३८ ।

५. स० पा०—पलोट्टइ जाव पंडियत्त ।

६. भ० १।५१ ।

७. सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परुवेति ।

८. स० पा०—अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।

९. एगत्तो (क, म); एगतओ (ता) ।

१०. एगो (ता) ।

तिण्णि परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति,
कम्हा तिण्णि परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति ?
तिण्ह परमाणुपोगलाणं अत्थि सिण्हेकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोगला
एगयओ साहण्णति ।

ते भिज्जमाणा 'दुहा वि', तिंहा^१ वि कज्जति ।

दुहा कज्जमाणा^१ एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोगले भवइ—एगयओ वि
दिवड्ढे परमाणुपोगले भवइ ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोगला भवति । एव^२ चत्तारि ।
पच परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति, एगयओ साहणित्ता^३ दुक्खत्ताए
कज्जति । दुक्खे वि य ण से सासए सया समित^४ उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य ।
पुवि^५ भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा अभासा । भासासमयवित्तिकतं
च ण भासिया भासा ।

जा सा पुवि^५ भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा अभासा । भासासमय-
वित्तिकत च ण भासिया भासा । सा कि भासओ भासा ? अभासओ भासा ?
अभासओ ण सा भासा । नो खलु सा भासओ भासा ।

पुवि^५ किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया अदुक्खा । किरियासमय-
वित्तिकत च ण कडा किरिया दुक्खा ।

जा सा पुवि^५ किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया अदुक्खा । किरिया-
समयवित्तिकत च ण कडा किरिया दुक्खा । सा कि करणओ दुक्खा ?
अकरणओ दुक्खा ?

अकरणओ ण सा दुक्खा । नो खलु सा करणओ दुक्खा—सेव वत्तव्वं सिया ।
अकिच्चं दुक्खं, अफुस दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं, अकट्ठु-अकट्ठु पाण-
भूय-जीव-सत्ता वेदण वेदेति—इति वत्तव्वं सिया ॥

ससमयवत्तव्वया-पद

४४३—से कहमेय भते ! एव ?

- | | |
|---|--|
| १. दुविहा (व) । | संभाव्यते । किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं |
| २. तिविहा (व, स) । | नास्ति । |
| ३. किज्जमाणा (व) । | ५. माहणित्ता (ता, व) । |
| ४. एव जाव (अ, क, ता, व, म, म); अत्र
'जाव' पद प्रवाहपनितमायातमिति | ६. समिय (अ, म) । |
| | ७. पुव्वं (क, म, स) । |

गोयमा ! जण्ण^१ ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव^२ वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया ।

जे ते एवमाहसु, मिच्छा^३ ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा । एवमाइक्खामि, एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एव खलु चलमाणे चलिए^४ ।

• उदीरिज्जमाणे उदीरिए । वेदिज्जमाणे वेदिए । पहिज्जमाणे पहीणे । छिज्जमाणे छिण्णे । भिज्जमाणे भिण्णे । दज्जमाणे दड्ढे । मिज्जमाणे मए^५ ।

निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ।

दो परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति,

कम्हा दो परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति ?

दोण्ह परमाणुपोगलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति ।

ते भिज्जमाणा दुहा कज्जन्ति । दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोगले—एगयओ परमाणुपोगले भवति ।

तिणिण परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति,

कम्हा तिणिण परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति ?

तिण्ह परमाणुपोगलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिणिण परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति ।

ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि कज्जन्ति । दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खंघे भवति ।

तिहा कज्जमाणा तिणिण परमाणुपोगला भवति । एव^६ चत्तारि^६ ।

पंच परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति । एगयओ साहणित्ता खधत्ताए कज्जन्ति । खंघे वि य ण से असासए सया समित उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य ।

पुठ्वि भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासभयवित्तिकत्त च ण भासिया भासा अभासा ।

१. ज ण (ता) ।

२. भ० १।४४२ ।

३. मिच्छ (ता) ।

४. स० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।

५. एव जाव (अ, क, ता, व, म, स), अत्र 'जाव' पद प्रवाहपतितमायात्तमिति सभाव्यते । किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति ।

६. अस्य पाठस्य रचना एव सभाव्यते—

चत्तारि परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति, कम्हा चत्तारि परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति ?

चउण्ह परमाणुपोगलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा चत्तारि परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति ।

ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि

जा सा पुर्वि भासा अभासा । भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमय-
वित्तिकत च ण भासिया भासा अभासा । सा कि भासओ भासा ? अभासओ
भासा ?

भासओ ण भासा, नो खलु सा अभासओ भासा ।

पुर्वि किरिया अदुक्खा ।^१ •कज्जमाणी किरिया दुक्खा । किरियासमय-
वित्तिकत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा ।

जा सा पुर्वि किरिया अदुक्खा । कज्जमाणी किरिया दुक्खा । किरिया-
समयवित्तिकत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा । सा कि करणओ दुक्खा ?
अकरणओ दुक्खा ? °

करणओ ण सा दुक्खा । नो खलु सा अकरणओ दुक्खा—सेव वत्तव्व सिया ।
किच्च दुक्ख, फूस दुक्ख, कज्जमाणकड दुक्ख, कट्ठ-कट्ठ पाण-भूय-जीव-
सत्ता वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया ॥

इरियावहिया-सपराइया-पद

४४४. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति,^१ •एव भासति, एवं पण्णवेति, एव
परुवेति °—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, तं जहा
—इरियावहियं^२ च, सपराइय च ।

ज समय इरियावहिय पकरेइ, त समय सपराइय पकरेइ ।

•ज समय सपराइय पकरेइ, त समय इरियावहियं पकरेइ ।

इरियावहियाए पकरणयाए सपराइय पकरेइ ।

सपराइयाए पकरणयाए इरियावहिय पकरेइ ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, त जहा—इरिया-
वहिय च, सपराइय च ॥

४४५. से कहमेयं भते ! एव ?

गोयमा । जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति,

कज्जति । दुहा कज्जमाणा एग्यओ दुपएसिए
खधे—एग्यओ वि दुपएसिए खधे । अहवा
एग्यओ तिपएसिए खधे—एग्यओ परमाणु-
पोगले भवइ ।

तिहा कज्जमाणा एग्यओ दुपएसिए खधे—
एग्यओ एगे-एगे परमाणुपोगले भवइ ।

चउहा कज्जमाणा चत्तारि परमाणुपोगला
भवति ।

१ स० पा०—जहा भासा तहा भाणियव्वा
किरिया वि जाव करणओ ।

२ स० पा०—एवमाइक्खति जाव एव ।

३. रिया० (अ, ता, व, म) ।

४ स० पा०—परउत्थियवत्तव्व रोयत्व ससमय-
वत्तव्वयाए रोयव्व जाव इरियावहियं, 'क',
'ता' सकेतितयोरादर्शयोवृत्तौ च सक्षिप्तपाठो
लभ्यते । शेषादर्शेषु वृत्तिकृता विस्तारं नीतः

एव परूवेति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति,
जाव' इरियावहिय च, सपराइय च ।

जे ते एवमाहसु । मिच्छा ते एवमाहसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि,
एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेण समएणं
एक्क किरिय पकरेइ, त जहा—इरियावहिय वा, सपराइय वा ।

ज समय इरियावहिय पकरेइ, नो त समय सपराइयं पकरेइ ।

ज समय सपराइय पकरेइ नो त समय इरियावहिय पकरेइ ।

इरियावहियाए पकरणयाए नो सपराइयं पकरेइ ।

सपराइयाए पकरणयाए नो इरियावहिय पकरेइ ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ, त जहा^०—इरिया-
वहिय वा, सपराइय वा ॥

उपपात-पदं

४४६. निरयगई ण भते । केवतिय काल विरहिया उववाएण पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥

३४७ एव वक्कतीपय^३ भाणियव्व निरवसेस ॥

४४८. सेवं भते । सेव भते त्ति जाव^३ विहरइ ॥

पाठो दृश्यते । अत्र च १।४२०, ४२१ सूत्रा-

नुसारेण स पूर्ति नीतोस्ति ।

१. भ० १।४४४ ।

२. प० ६ ।

३. भ० १।५१ ।

बीअं सतं

पढमो उद्देशो

संगहणी-गाहा

१ 'ऊसास खदए वि य, २ समुग्घाय ३, ४ पुढविदिय ५ अण्णउत्थि ६ भासा य ।
७ देवा य ८ चमरचचा, ९, १० समयक्खित्तत्थिकाय बीयसए'^१ ॥१॥

उक्खेव-पद

१ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम नयरे होत्था—वण्णओ^२ । सामी
समोसढे । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । पडिग्गया परिसा ॥

सासुस्सास-पदं

२. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी जाव^३
पज्जुवासमाणे एव वदासी—
जे इमे भते ! बेइदिया तेइदिया चउरिदिया पचिदिया जीवा, एएसि णं
आणाम वा पाणाम वा उस्सास वा निस्सास वा जाणामो पासामो ।
जे इमे पुढविकाइया जाव^४ वणप्फइकाइया—एगिदिया जीवा, एएसि णं
आणाम वा पाणाम वा उस्सास वा निस्सास वा न याणामो न पासामो ।
एए ण भते ! जीवा आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति वा ? नीससति
वा ?

हुता गोयमा ! एए वि ण जीवा आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति
वा, नीससति वा ॥

१. × (अ, ता, व, म, स) ।

३. म० १।९, १० ।

२. ओ० सू० १ ।

४. म० १।४३७ ।

३. किण्णं भते । एते जीवा आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति वा ? नीस-
संति वा ?

गोयमा ! दव्वओ^१ अणतपएसियाइ दव्वाइ, खेतओ असखेज्जपएसोगाढाइ,
कालओ अण्णयरठितियाइ^२, भावओ वण्णमताइ गधमताइ रसमताइ फासमताइ
आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससति वा ॥

४. जाइ भावओ वण्णमंताइ आणमति वा, पाणमति वा ऊससति वा, नीससति
वा ताइ कि एगवण्णाइ^३ •जाव^४ कि पचवण्णाइ आणमंति वा ? पाणमति
वा ? ऊससति वा ? नीससति वा ?

गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि जाव^५ पचवण्णाइ पि आणमति
वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससति वा । विहाणमग्गणं पडुच्च
कालवण्णाइ पि जाव सुक्किलाइ पि आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति
वा, नीससति वा । आहारगमो नेयव्वो^६ जाव—

५. पुढविकाइया ण भते ! कइदिस आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति
वा ? नीससति वा ?

गोयमा ! निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि सिय चउदिसि
सिय पचदिसि^७ ॥

६. किण्ण भते ! नेरइया आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति वा ? नीससति
वा ?

तं चेव जाव^८ नियमा छद्दिसि आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा,
नीससति वा ॥

७. जीव-एगिदिया वाघाय-निव्वाघाया च भाणियव्वा^९ । सेसा नियमा छद्दिसि ॥

८. वाउयाए णं भते ! वाउयाए चेव आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति वा ?
नीससति वा ?

हता गोयमा ! वाउयाए णं^{१०} •वाउयाए चेव आणमति वा, पाणमति वा,
ऊससति वा^{११}, नीससति वा ॥

वाउकायस्स कायट्ठिइ-पदं

९. वाउयाए णं भते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव
भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?

१. कि ए (ता) ।

५, ६, ७ प० २८१ ।

२. दव्वओ ण (अ, म, स) ।

८ प० २८१ ।

३. °ठितियाइ (अ, क, ता, व, म, स) ।

९. प० २८१ ।

४. सं० पा०—एगवण्णाइ आणमति वा पाण-
मति वा ऊससति वा नीससति वा आहार-
गमो नेयव्वो जाव पचदिस ।

१०. सं० पा०—वाउयाए णं जाव नीससति ।

- हता गोयमा^१ ! •वाउयाए णं वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-
उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो^० पच्चायाति ॥
१०. से भते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥
११. से भते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥
१२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी
निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पणत्ता, तं जहा—ओरालिए,
वेउव्विए, तेयए, कम्मए । ओरालिय-वेउव्वियाइ^१ विप्पजहाय तेयय-कम्मएहि
निक्खमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय
असरीरी निक्खमइ ॥

मडाइ-नियंठ-पदं

१३. मडाई^१ णं भंते ! नियठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवचे^२, नो पहीणसंसारे, नो
पहीणससारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, नो
निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं^३ हव्वमागच्छइ ?
हता गोयमा ! मडाई ण नियठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवचे, नो
पहीणसंसारे, नो पहीणससारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्ण-
ससारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं^३
हव्वमागच्छइ ॥
१४. से ण भंते ! किं ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! पाणे त्ति वत्तव्वं सिया । भूए त्ति वत्तव्वं सिया । जीवे त्ति
वत्तव्वं सिया । सत्ते त्ति वत्तव्वं सिया । विण्णु^४ त्ति वत्तव्वं सिया । 'वेदे त्ति'^५
वत्तव्वं सिया । पाणे भूए जीवे सत्ते विण्णू वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ॥
१५. से केणट्ठेण पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! जम्हा आणमइ वा, पाणमइ वा, उस्ससइ वा, नीससइ वा
तम्हा पाणे त्ति वत्तव्वं सिया ।
जम्हा भूते भवति भविस्सति य तम्हा भूए त्ति वत्तव्वं सिया ।

१. स० पा०—गोयमा जाव पच्चायाति ।

ख्यातमस्ति, तेन तत्रापि इत्थत्थमिति पाठः

२. मडादी (ता) ।

सभाव्यते ।

३. ° पववे (व) ।

५. विन्नुय (व) ।

४. इत्थत्त (अ, ता, व, स, वृपा), इत्थत्थं

६. वेदाति (क, ता, व, म) ।

(क); वृत्तौ 'इत्थत्थं—एनमर्थम्' इति व्या-

जम्हा जीवे जीवति^१, जीवत्त आउयं च कम्म उवजीवति^२ तम्हा जीवे त्ति वत्तव्व सिया ।

जम्हा सत्ते सुभासुभेहि कम्मोहि तम्हा सत्ते त्ति वत्तव्व सिया ।

जम्हा 'तित्तकडुकसायंबिलमहुंरे रसे'^३ जाणइ तम्हा विण्णु त्ति वत्तव्व सिया ।

जम्हा वेदेति य सुह-दुक्खं तम्हा वेदे त्ति वत्तव्व सिया । से तेणट्ठेणं^४ पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्व सिया ॥

१६. मडाई णं भते ! नियठे निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे^५, *पहीणससारे, पहीणसंसार-वेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे^६, निट्ठियट्ठकरणिज्जे नो पुणरवि इत्थत्थं हव्वमागच्छइ ?

हता गोयमा ! मडाई णं नियठे^७ *निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे, पहीणससारे, पहीणसंसारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे, निट्ठियट्ठकरणिज्जे^८ नो पुणरवि इत्थत्थं हव्वमागच्छइ ॥

१७. से ण भते ! किं त्ति वत्तव्व सिया ?

गोयमा ! सिद्धे त्ति वत्तव्व सिया । बुद्धे त्ति वत्तव्वं सिया । मुत्ते त्ति वत्तव्व सिया । पारगए त्ति वत्तव्वं सिया । परंपरगए त्ति वत्तव्व सिया । सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अतकडे^९ सव्वदुक्खप्पहीणे त्ति वत्तव्व सिया ॥

१८. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समणं भगव महावीर वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

१९. तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइआओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

खदयकहा-पदं

२०. तेण कालेणं तेण समएण कयगला नाम नगरी होत्था—वण्णओ^{१०} ॥

२१. तीसे णं कयगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे विसीभाए छत्तपलासए नामं चेइए होत्था—वण्णओ^{११} ॥

२२. तए ण समणे भगव महावीरे उप्पन्ननाणदसणघरे^{१२} *अरहा जिणे केवली जेणेव कयगला नयरी जेणेव छत्तपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

१. जीवति (क) ।

७. अतगडे (क) ।

२. उवजीवेइ (ब) ।

८. ओ० सू० १ ।

३. *कटु० (ब); *महुंरसे (ता, म) ।

९. ओ० सू० २-१३ ।

४. तेणट्ठेणं जाव (अ, क, ता, ब, म) ।

१०. स० पा०—उप्पन्ननाणदसणघरे जाव समो-

५. स० पा०—निरुद्धभवपवचे जाव निट्ठिय० ।

सरण्ण ।

६. स० पा०—नियठे जाव नो ।

अहापडिख्वं ओगह ओगिण्हइ, ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ जाव^{१०} समोसरण । परिसा निग्गच्छइ ॥

२३. तीसे ण कयगलाए नयरीए अदूरसामते सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ^१ ॥
२४. तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स^१ अतेवासी खदए^१ नामं कच्चायणसगोत्त परिव्वायगे परिवसइ^१ रिज्वेद^१ जजुव्वेद^१ सामवेद^१ अहव्वेद^१ इतिहास-पचमाणं निघट्छट्ठाण—चउण्ह वेदाण सगोवगाण सरहस्साण सारए धारए^१ पारए सडगवी सट्ठिततविसारए, सखाणे सिक्खा-कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोति-सामयणे^१, अण्णेसु य बहूसु बभण्णएसु^१ परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिण या वि होत्था ॥
२५. तत्थ ण सावत्थीए नयरीए पिगलए नाम नियठे वेसालियसावए^१ परिवसइ ॥
२६. तए ण से पिगलए नाम नियठे वेसालियसावए अण्णया कयाइ^१ जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खदगं कच्चायणसगोत्त इणमक्खेव पुच्छे—मागहा^१ !
- १ किं सअते^१ लोए ? अणते लोए ? २. सअते जीवे ? अणते जीवे ? ३. सअता सिद्धी ? अणता सिद्धी ? ४. सअते सिद्धे ? अणते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव^१ आइक्खाहि वुच्चमाणे एव ॥
२७. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते पिगलएण नियंठेण वेसालियसावएणं इणम-क्खेव पुच्छिए समाने सकिए कखिए वित्तिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमा-वन्ने णो सच्चाएइ पिगलयस्स नियठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्ख-मक्खाइउ, तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥
२८. तए ण से पिगलए नियंठे वेसालियसावए खदयं कच्चायणसगोत्त दोच्चं पि तच्च पि इणमक्खेव पुच्छे—मागहा !

१. ओ० सू० १६-५१ ।

(ब, वृ); धारए (वृपा) ।

२. ओ० सू० १ ।

६ जोतिसांअयणे (ता) ।

३. गद्दभालस्स (व) ।

१०. बम्हण्णए (क) ।

४. खदए (व) ।

११. वेसालीसावए (क, ता); वेसालियस्सावए

५. वसइ (अ) ।

(म) ।

६. रिज्वेद (अ, व, स); रिजुव्वेद (क) ।

१२. कयाए (स) ।

७. अथव्वए० (अ); अथव्वेय (क), अथव्वेद

१३. मागघा (ता) ।

(ता, म), अहव्वेद (ब) ।

१४. संते (ता) ।

८. जारए धारए (अ, क, म, स); वारए

१५. एतावता (अ, क, व); एतावताव (ता, म) ।

१. किं सञ्जते लोए' ? •अणते लोए ? २. सञ्जते जीवे ? अणते जीवे ?
 ३. सञ्जता सिद्धी ? अणता सिद्धी ? ४. सञ्जते सिद्धे ? अणते सिद्धे ? •
 ५. केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव
 आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ॥

२६. तए णं से खदए कच्चायणसगोत्ते पिगलएण नियठेण वेसालियसावएणं दोच्च
 पि तच्चं पि इणमक्खेव पुच्छिए समाणे सकिए कखिए वित्तिगिच्छिए^१ भेदसमा-
 वन्ते कलुससमावन्ते णो संचाएइ पिगलस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि
 वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

३०. तए ण सावत्थीएनयरीए सिघाडग^२ •तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^३ -
 पहेसु महया जणसंमद्दे^४ इ वा जणवूहे इ वा^५ •जणवोले इ वा जणकलकले
 इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्ण-
 मण्णस्स एवमाइक्खइ, एव भासेइ, एव पण्णवेइ, एवं परूवेइ—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव^६ सिद्धिगतिनामधेय
 ठाणं संपाविउकामे पुब्बाणुपुक्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए
 इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव कयंगलाए नयरीए वहिया छत्तपलासए चेइए अहा-
 पडिक्खं ओगहं ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताण भगवताण नाम-
 गोयस्सवि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जु-
 वासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण
 विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महा-
 वीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगल देवयं चेइय पज्जुवा-
 सामो । एयं णे पेच्चभवे इयभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामि-
 यत्ताए भविस्सइ त्ति कट्ठु वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुप्पडोया-
 रेणं—राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता,
 अण्णे य वहवे राईसर-तलवर-माइविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-
 प्पभित्तओ जाव^७ महया उक्किट्ठसीहनाय-बोल-कलकलरवेण पक्खुभियमहासमु-
 द्दर वभूयं पिब करेमाणा सावत्थीए नयरीए मज्झमज्झेण^८ निग्गच्छति ॥

३१. तए ण तस्स खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा
 निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

१. सं० पा०—लोए जाव केण ।

२. ° गिच्छिए (अ) ।

३. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

४. ° सद्दे (अ, म, वृपा) ।

५. सं० पा०—जणवूहे इ वा परिसा निग्गच्छइ ।

६. अ० १।७ ।

७. अ० सू० ५२ ।

‘एवं खलु समणे भगव महावीरे कयगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाण भवेमाणे विहरइ । तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वदामि नमसामि’^१ । सेय खलु मे समण भगव महावीरं वदित्ता, नमसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासित्ता इमाइ च णं एयारूवाइं अट्ठाइ हेऊइं पसिणाइ कारणाइं^२ वागरणाइं पुच्छित्ताए त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त्तिदंढं च कुडिय च कंचणियं च करोडिय च भिसियं च केसरिय च छण्णालयं^३ च अकुसयं च पवित्तियं^४ च गणेतियं च छत्तयं च वाहणाओ^५ य पाउयाओ^६ य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता त्तिदंढ-कुडिय-कंचणिय-करोडिय-भिसिय-केसरिय-छण्णालय-अकुसय-पवित्तिय-गणेतिय-हत्थगए, छत्तोवाहणसजुत्ते^७, धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कयगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

३२ गोयमाइ^८ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एव वयासी—

दच्छिसि णं गोयमा ! पुव्वसंगइय ।

क^९ भते ! ?

खदय नाम ।

से काहे वा ? किह वा ? केवच्चिरेण वा ?

३३ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ^{१०} । तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अतेवासी खदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ । त चेव जाव^{११} जेणेव ममं अतिए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए । से अदूरागते^{१२} बहुसंपत्ते अट्ठाणपडिवण्णे अतरा पहे वट्ठइ । अज्जेव ण दच्छिसि^{१३} गोयमा !

३४. भत्तेति ! भगव गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—पहू णं भते ! खदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंढे

१. × (क, ता, व) ।

७. ° वाण्ह° (क) ।

२. × (अ, व, म) ।

८. ° दि (क, ता, म) ।

३. छण्णालय (ता) ।

९. क त (अ, क, ता) ।

४. पवित्तिय (क) ।

१०. ओ० सू० १ ।

५. पाहणाओ (ता) ।

११. म० २।२५-३१ ।

६. ओवाइय (सू० ११७) सूत्रे ‘पाउयाओ’ इति

१२. अदूराइते (क); अदूरियाते (व) ।

पवं नास्ति, प्रस्तुतप्रकरणे पि किंचिदग्रे

१३. दिच्छिसि (अ, स); दच्छिसि (म) ।

‘छत्तोवाहणसजुत्ते’ इत्यत्रापि तन्नास्ति ।

भविता^१ अगाराओ^२ अणगारियं पव्वइत्तए ?

हता पभू ॥

३५. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से खदए कच्चायणसगोत्ते त देस हव्वमागए ॥

३६. तए णं भगवं गोयमे खंदय कच्चायणसगोत्त अदूरागत^३ जाणित्ता खिप्पामेव अम्भुट्ठेति, अम्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ,^४ जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—हे खदया ! सागयं खदया ! सुसागय खदया ! अणुरागय^५ खंदया ! सागयमणुरागय खंदया ! से नूणं तुम खदया ! सावत्थीए नयरीए पिगलएण नियंठेण वेसालिय-सावएण इणमक्खेव पुच्छिए—मागहा ! कि सअते लोगे ? अणते लोगे ? एव तं चेव जाव^६ जेणेव इहं, तेणेव हव्वमागए । से नूणं खदया ! 'अट्ठे समट्ठे' ?^७ हंता अत्थि ॥

३७. तए णं से खदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—'से केस ण गोयमा'^८ ! तहाख्वे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव^९ रहस्स-कडे हव्वमक्खाए, जओ ण तुम जाणसि ?

३८. तए ण से भगवं गोयमे खंदय कच्चायणसगोत्त एव वयासी—एव खलु खदया ! ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगव महावीरे उप्पण्णनागदसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयविद्याणए सव्वणू सव्वदरिसी जेण मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ ण अह जाणामि खदया !

३९. तए णं से खदए कच्चायणसगोत्ते भगव गोयम एव वयासी—गच्छामो ण गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसय समण भगव महावीर वदामो नमंसा^{१०}मो" ●सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मगल देवय चेइय^{११} पज्जुवासामो ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

४०. तए ण से भगव गोयमे खदएण कच्चायणसगोत्तेणं सद्धि जेणेव समणे भगव महा-वीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१. तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे वियट्ठभोई^{१२} यावि होत्था ॥

१. भविता णं (क, ता, व, स) ।

२. आगाराओ (अ, क, व, स) ।

३. अदूरआगय (अ, व, स) ; अदूरमागत (ता) ।

४. पच्चुगच्छइ (अ, क, ता, म) ; पत्थुगच्छइ (व) ।

५. रेफस्य आगमिकत्वात् (वृ) ।

६. भ० २।२६-३५ ।

७. अत्थे समत्थे (क, वृ) ; अट्ठे समट्ठे (वृषा) ।

८. से केण गोयमा (अ, व) ; केस ण गोयमा से (ता) ।

९. आय (ता) ।

१०. स० पा०—नमंसा^{१०}मो जाव पज्जुवासामो ।

११. वियट्ठभोति (अ, ता, व, म, स) ।

४२. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्ठभोइस्स^१ सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाण सिव घन्न मंगल्ल^२ अणलकियविभूसियं लक्खण-वज्जण-गुणोववेय सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाण चिट्ठइ ॥
४३. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्ठभोइस्स सरीरयं ओरालं^३ •सिंगारं कल्लाणं सिवं घन्न मंगल्ल अणलकियविभूसियं लक्खण-वज्जण-गुणोववेय सिरीए^४ अतीव-अतीव उवसोभेमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए णदिए^५ पीइमणे^६ परमसोमणस्सिए^७ हरिसवसविसप्प-माणहियए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिव्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ^८, •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने नातिदूरे सुत्तसुसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पज्जलियडे^९ पज्जुवासइ ॥
४४. खदयाति ! - समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्त एव वयासी—से नूणं तुम खदया ! सावत्थीए नयरीए पिगलएणं नियठेण वेसालियसावएणं इणम-क्खेव पुच्छिए—मागहा !
१. कि सअते लोए ? अणते लोए ? २. सअते जीवे ? अणते जीवे ? ३. सअता सिद्धी ? अणता सिद्धी ? ४. सअते सिद्धे ? अणते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ? एव त चेव जाव^{१०} जेणेव ममं अतिए तेणेव हव्वमागए । से नूण खदया ! अट्ठे समट्ठे ?
- हुता अत्थि ॥
४५. जे वि य ते खदया ! अयमेयारुवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्झित्था—कि सअते लोए ? अणते लोए ?—तंस्स वि य ण अयमट्ठे—एव खलु मए खदया ! चउव्विहे लोए पणत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
- दव्वओ ण एगे लोए सअते ।
- खेत्तओ णं लोए असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खभेणं, असखे-ज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिकखेवेणं पणत्ते, अत्थि पुण से अते ।
- कालओ ण लोए न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए^{११} सासए अक्खए अव्वए अव-ट्ठिए निच्चे, नत्थि पुण से अते ।

१. वियट्ठभोगिस्स (ता, व, म) ।

२. मंगल्ल सत्तिरीय (क) ।

३. स० पा०—ओराल जाव अतीव ।

४. × (अ, क, व, म, स) ।

५. पीतमणे (अ, स) ।

६. परमसोमणस्सिए (अ, क, ता, व, म, स) ।

७. स० पा०—करेइ जाव पज्जुवासइ ।

८. म० २।२६-३५ ।

९. णित्तिए (अ, क, ता), णितए (व) ।

भावओ णं लोए अणता वणपज्जवा, अणता गंधपज्जवा, अणता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता सठाणपज्जवा, अणता गरुलहुयपज्जवा, अणता अगुरुलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अते ।

सेत्तं खदगा^१ ! दव्वओ लोए सअते, खेत्तओ लोए सअते, कालओ लोए अणते, भावओ लोए अणते ॥

४६. जे वि य ते खंदया^१ ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअते जीवे ? • अणते जीवे ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु^१ •मए खंदया ! चउव्विहे जीवे पणत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ^० ।

दव्वओ णं एगे जीवे सअते ।

खेत्तओ णं जीवे असखेज्जपएसिए, असखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण अते ।

कालओ ण जीवे न कयाइ न आसी^२, •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ— भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अव-
दिठए^० निच्चे, नत्थि पुण^३ से अते ।

भावओ णं जीवे अणता नाणपज्जवा, अणता दसणपज्जवा, अणता चारित्तप-
ज्जवा, अणता गरुलहुयपज्जवा, अणता अगुरुलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अते ।

सेत्तं खदगा ! दव्वओ जीवे सअते, खेत्तओ जीवे सअते, कालओ जीवे अणते, भावओ जीवे अणते ॥

४७. जे वि य ते खदया^१ ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअता सिद्धी ? अणता सिद्धी ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे । एव खलु मए खंदया ! चउव्विहा सिद्धी पणत्ता, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ^० ।

दव्वओ ण एगा सिद्धी सअता ।

खेत्तओ ण सिद्धी पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविकखभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणा-
पन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पणत्ता, अत्थि पुण से अते ।

१. × (क, व) ।

२. सं० पा०—खंदया जाव अणता ।

३. सं० पा०—खलु जाव दव्वओ ।

४. सं० पा०—आसी जाव निच्चे ।

५. पुण्णाइ (ता, व, म) ।

६. सं० पा०—खदया पुच्छा ।

कालओ णं सिद्धी न कयाइ न आसी^१, *न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवा नियया सासया अक्खया अक्खया अवट्ठया निच्चा, नत्थि पुण सा अंता ।

भावओ णं सिद्धीए अणता वण्णपज्जवा, अणता गघपज्जवा, अणता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता संठाणपज्जवा, अणता गरुयलहुयपज्जवा, अणता अगुरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण सा अंता ।

सेत्तं खदया ! °दव्वओ सिद्धी सअता, खेत्तओ सिद्धी सअता, कालओ सिद्धी अणता, भावओ सिद्धी अणता ॥

४८. जे वि य ते खदया^२ ! *अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

कि सअते सिद्धे ? अणते सिद्धे ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एवं खलु मए खदया ! चउव्विहे सिद्धे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।°

दव्वओ ण एगे सिद्धे सअते ।

खेत्तओ ण सिद्धे असखेज्जपएसिए, असखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते ।

कालओ णं सिद्धे सादीए, अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अंते ।

भावओ णं सिद्धे अणता नाणपज्जवा, अणता दसणपज्जवा, अणता^३ अगुरुयलहुय-पज्जवा, नत्थिपु ण से अंते ।

सेत्तं खदया ! दव्वओ सिद्धे सअते, खेत्तओ सिद्धे सअते, कालओ सिद्धे अणते, भावओ सिद्धे अणते ॥

४९ जे वि य ते खदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए* °पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—

केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एव खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—बालमरणे य, पंडियमरणे य ।

से कि त बालमरणे ?

बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

१. बलयमरणे २. वसट्ठमरणे ३. अंतोसल्लमरणे ४. तव्वभवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९. विसभक्खणे १०. सत्थोवाडणे

१. सं० पा०—कालओ य भावओ य जहा चेव जाव दव्वओ ।

लोयस्स तहा भाणियव्वा, तत्थ ।

३. जाव पज्जवा (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. सं० पा० खदया जाव कि अणते सिद्धे त ४ सं० पा०—चितिए जाव समुप्पज्जित्था ।

११ वेहाणसे १२. गद्धपट्ठे—इच्चेतेण खंदया ! दुवालसविहेण बालमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहि अप्पाणसंजोएइ, अणतेहि तिरियभवग्गहणेहि अप्पाण संजोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाण संजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण संजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग^१ चाउरत ससारकतार अणपरियट्ठइ । सेत्त मरमाणे वड्ढइ-वड्ढइ ।

सेत्त बालमरणे ।

से किं तं पडियमरणे ?

पडियमरणे दुविहे पणत्ते, तं जहा—पाओवगमणे^२ य, भत्तपच्चक्खाणे य ।

से किं तं पाओवगमणे ?

पाओवगमणे दुविहे पणत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा अप्पडिकम्मे ।

सेत्त पाओवगमणे ।

से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ?

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पणत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा सपडिकम्मे ।

सेत्त भत्तपच्चक्खाणे ।

इच्चेतेण खंदया ! दुविहेणं पडियमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहि नेरइय-भवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ^३, *अणतेहि तिरियभवग्गहणेहि अप्पाणं विस-जोएइ, अणतेहि मणुयभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहि अप्पाण विसजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग चाउरत ससारकतार^४ वीईवयइ ।

सेत्त मरमाणे हायइ-हायइ ।

सेत्त पडियमरणे ।

इच्चेएण खंदया ! दुविहेण मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा ॥

५०. एत्थ ण से खदए कच्चायणसगोत्ते सबुद्धे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए केवलपणत्तां धम्मं निसामित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

५१. तए ण समणे भगव महावीरे खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स, तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए धम्म परिकहेइ । धम्मकहा भाणियव्वा^५ ॥

१. अणवयग्ग (अ, ब); अणवइग्गं (ग) ।

२. पाओयं (ता, म) ।

३. सं० पा—विसंजोएइ जाव वीईवयइ ।

४. ओ० सू० ७१-७७ ।

५२. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठ^१ •चित्तमाणदिणे णदिऐ पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वसविसप्पमाण^२ हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्धामि णं भते । निग्गथ पावयण, पत्तिायमि णं भते । निग्गथं पावयण, रोएमि णं भते । निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि ण भते । निग्गथ पावयण । एवमेयं भते । तहमेय भते । अवितहमेय भते । असदिद्धमेयं भते । इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते । — से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्ठु समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नम-सित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाय अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदड च कूडिय च जाव^३ धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता^४ •वदइ नमसइ, वदित्ता^५ नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते । लोए, पलित्ते ण भते । लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते । लोए जराए मरणेण य ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारसि भियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे^६ मोल्लगरुए^७, त गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ । एस से नित्था-रिए समाणे पच्छा 'पुरा य'^८ हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामिय-त्ताए भविस्सइ ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे^९ वेस्सासिए सम्मए 'बहुमए अणुमए'^{१०} भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण चोरा, मा ण वाला, मा ण दसा, मा ण मसया, मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइय^{११} विविहा रोगायका परीस-

१. स० पा०—हट्ठुट्ठे जाव हियए, ° ह्रिदये (क) ।

२. म० २।३१ ।

३. स० पा०—करेत्ता जाव नमसित्ता ।

४. अप्पसारे (अ, क, ता, ब, स, वृ); एतव परिवर्तन लिपिहेतुक सम्भाव्यते । वृत्तिकारेण परिवर्तित पाठो लब्धः, तथैव व्याख्यातः । अथवा वृत्तावपि भारस्थ साररूपेण परिवर्तन

जात स्यात् । अर्थमीमांसया भारपदस्यैवात्र सगतिर्वर्तते ।

५. ° गुरुए (क, स) ।

६. पुराए (अ, ता, ब), पुरा (क, म) ।

७. धेज्जे (अ), पेज्जे (म) ।

८. अणुमए बहुमए (ता) ।

९. इह प्रथमावहुवचनलोपो दृश्य (वृ) ।

होवसग्गा^१ फुसतु त्ति कट्ठु एस मे^२ नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

तं इच्छामि ण देवाणुप्पिया । सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुडाविय, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय^३ धम्ममाइक्खिय ॥

५३. तए ण समणे भगवं महावीरे खदयं कच्चायणसगोत्त सयमेव पव्वावेइ,^४ *सयमेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय^५ धम्ममाइक्खइ^६—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एवं निसीइयव्वं, एव तुयट्ठियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्वं, एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमियव्वं, अस्सि च ण अट्ठे णो किंचि वि^७ पमाइयव्व ॥

५४. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म सपडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्ठइ, तह भुजइ, तह भासइ, तह उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमेइ, अस्सि च ण अट्ठे णो पमायइ ॥

५५. तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाते—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिकखेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-परिद्धावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते^८ कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू^९ वन्ते खतिखमे जिइदिए सोहिए अनियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दत्ते इणमेव निग्गथ पावयण पुरओ काउ विहरइ ॥

५६. तए णं समणे भगव महावीरे कयंगलाओ नयरीओ छत्तपलासाओ चेइयाओ पडि-निकखमइ, पडिनिकखमिता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

५७. तए ण से खदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराणं अतिए सामाइयमाइयाइ^१ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वदासी—इच्छामि ण भते । तुम्हेहि अबभणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

१. परिस्सहो० (ता, म) ।

२. × (अ, क, ता, ब, म) ।

३. °वित्तिय धुव(क); °वित्तिय (ता, म, स) ।

४. स० पा०—पव्वावेइ जाव धम्म० ।

५. ° माइक्खाइ (अ, ता, ब, स) ।

६. × (अ, व, स) ।

७. वय० (अ) ।

८. लज्ज (अ, व) ।

९. सामाइयमादियाति (क, ब), सामात्तिय-मातियाइ (स) ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं ॥

५८. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठे जाव' नमसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता ण विहरइ ॥

५९. तए णं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं अहासम्मं सम्मं^१ काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तोरेइ पूरेइ किट्ठेइ अणु-पालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासेत्ता^२ •पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता पूरेत्ता किट्ठेत्ता अणुपालेत्ता आणाए^३ आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं^४ •महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता^५ नमं-सित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भते ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं । तं चेव^६ ॥

६०. एव^१ तेमासियं, चउम्मासियं, पचमासियं, छम्मासियं, सत्तमासियं, पढमसत्तरा-तिदियं, दोच्चसत्तरातिदियं, तच्चसत्तरातिदियं, रातिदियं^२, एगरातिर्य^३ ॥

६१. तए णं से खंदए अणगारे एगरातिर्य भिक्खुपडिमं अहासुत्तं जाव' आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर"^४ •वदइ नमसइ, वदित्ता^५ नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुव्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसवच्छरं^६ तवोकम्मउवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं ॥

६२. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठे जाव'^१ नमसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्त, तं जहा—

पढमं मासं चउत्थं चउत्थेणं अणिविखत्तेण तवोकम्मेणं दिया ठाणुककुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेण अवाउडेण य ।

दोच्चं मासं छट्ठछट्ठेणं अणिविखत्तेणं तवोकम्मेण दिया ठाणुककुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ।

१. भ० २।५२ ।

(अ, क, ता, व, म, स) ।

२. × (ता, म, वृ); समं (म, स), स्थानाङ्गे (७१३) 'अहासम्म' इति पद नास्ति, केवलं 'सम्म' वर्तते ।

६. भ० २।५८-५९ ।

७. अहोरातिदियं (अ, ता, म, स) ।

८. एगरातिदियं (अ, क, म, स) ।

३. सं० पा०—फासेत्ता जाव आराहेत्ता ।

९. भ० २।५९ ।

४. सं० पा०—भगव जाव नमसित्ता ।

१०. सं० पा०—महावीर जाव नमसित्ता ।

५. भ० २।५८, ५९ । चेव एव दोमासिय

११. गुणरयण (क, ता, म, स) ।

१२. भ० २।५२ ।

एव तच्चं मासं अट्ठमअट्ठमेण । चउत्थ मास दसमदसमेण । पचम मासं बारसमबारसमेण । छट्ठं मासं चउद्दसमचउद्दसमेण । सत्तम मास सोलसमसोलसमेण । अट्ठमं मासं अट्ठारसमअट्ठारसमेण । नवम मास वीसइमवीसइमेण । दसमं मास बावीसइमबावीसइमेण । एक्कारसमं मास चउवीसइमचउवीसइमेण । बारसमं मास छव्वीसइमंछव्वीसइमेण । तेरसम मासं अट्ठावीसइमंअट्ठावीसइमेण । चउद्दसमं मास तिसइमतिसइमेण । पण्णरसमं मासं बत्तीसइमबत्तीसइमेण । सोलसं मास चोत्तीसइमचोत्तीसइमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण दिया ठाणुक्कुडुए सूरभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्ति वीरासणेणं अवाउडेण य ॥

६३ तए ण से खदए अणगारे गुणरयणसवच्छरं तवोकम्म अहासुत्त अहाकप्प जाव^१ आराहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

६४. तए ण से खदए अणगारे तेण ओरालेण विउलेणं पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्वेण मगल्लेण सत्तिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणु-भाणेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्के^२ निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए^३ किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था । जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भास भासित्ता वि गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामीति गिलाइ । से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-‘तिल-भडग-सगडिया’ इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया^४ इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, एवामेव खदए^५ अणगारे ससद्द गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवच्चिए तवेण अवच्चिए भस-सोणिएण, हुयासणे विव भासरसिपडिच्छण्णे तवेण, तेएण, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

६५. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे समोसरण जाव^६ परिसा पडिगया ॥

६६ तए णं तस्स खदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए^७ पत्थिए मणोगए सकप्पे^८ समुप्पज्जित्था—

१. भ० २।५६ ।

२. भुक्खे (अ, म) ।

३. ० किडियं (अ, ब) ।

४. तिलसठगसगडिया (वृणा) ।

५. इगालकट्ठसगडिया (अ, व) ।

६. खदए वि (ता, म) ।

७. ओ० सू० १६-८० ।

८. स० पा—चितिए जाव समुप्पज्जित्था ।

एव खलु अह इमेण एयारूवेणं ओरालेण^१ •विउलेण पयत्तेणं पगगहिएणं कल्लाणेण सिवेण धन्नेणं मगल्लेणं सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेणं उदारेणं महानुभारेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मंसं अट्ठि-चम्मावणद्धे किडि-किडियाभूए^२ • किसे धमणिसतए^३ जाए । जीवजीवेण गच्छामि, जीवजीवेण चिट्ठामि^४, •भास भासित्ता वि गिलामि, भासं भासमाणे गिलामि, भास भासि-स्सामीति गिलामि ।

से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भंडगस-गडिया इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद् गच्छइ, ससद् चिट्ठइ^५, एवामेव अह पि ससद् गच्छामि, ससद् चिट्ठामि ।

त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए,^६ फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहपडुरे^७ पभाए, रत्तासोयप्पकासे^८, किसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे, कमलागरसंडबोहए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीरं वदित्ता नमं सित्ता^९ •णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्ससमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे^{१०} पज्जुवा-सित्ता समणेण भगवया महावीरेणं अब्भणुणाए समाणे सयमेव पच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहि सद्धिं वि-पुलं पव्वय 'सणियं-सणियं' दुह्हित्ता^{११} मेह्वणसनिगासं^{१२} देवसन्निवात पुढवीसि-लापट्टयं पडिलेहित्ता, दब्भसंथारग सथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाभू-सणाभूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगवं महा-वीरे^{१३} •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्ससमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे^{१४} पज्जुवासइ ॥

१. उरालेण (क ता, म, स); सं० पा०—

ओरालेण जाव किसे ।

२. धवणि^० (क, ता, व, म) ।

३. सं० पा०—चिट्ठामि जाव गिलामि जाव एवामेव ।

४. रत्तणीए (ता) ।

५. अहपडुरे (अ, ता, व); अहपडुरे (स) ।

६. • प्यगासें (क), • सकासे (ता) ।

७. सं० पा०—नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता ।

८. सणित्तं सणित्तं (क) ।

९. दूहिता (क, म); दूहिता (ता); रुहिता (व), दुरुहिता (स) ।

१०. मेघ० (अ) ।

११. सं० पा०—महावीरे जाव पज्जुवासइ ।

६७. खंदयाइ ! समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी—से नूनं तव खदया ! पुव्वरत्तावरत्तं^१ कालसमयंसि धम्मजागरियं^२ जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए^३ चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^४ समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेणं एयारूवेणं तवेण ओरालेणं विउलेणं तं चैव जाव^५ कालं अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्ठु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^६ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव ममं अत्तिए तेणेव हव्वमागए । से नूनं खदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

६८. तए ण से खंदए अणगारे समणेण भगवया महावीरेण अज्झणुण्णाए समाणे हट्ठ-
तुट्ठं^७ चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणं^८ हि-
यए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिकवुत्तो आयाहिणं-पया-
हिणं करेइ^९, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदितां^{१०} नमसित्ता सयमेव पच महाव्वयाइं
आरुहेइ^{११}, आरुहेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहि थेरेहि
कडादीहि^{१२} सिद्धि विपुल पव्वय सणियं-सणियं द्रुहइ, द्रुहिता मेहघणसन्निगासं देव-
सन्निवात पुढविंसिलापट्टयं^{१३} पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ,
पडिले हेत्ता दब्भसंथारगं सथरइ, सथरित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे
करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु एव वयासी—
नमोत्थु णं अरहताणं भगवताणं जाव^{१४} सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं ।
नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव^{१५} सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं
संपाविउकामस्स ।

वंदामि ण भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे^{१६} भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्ठु वंदइ
नमंसइ, वदिता नमसित्ता एवं वयासी—पुव्वि पि मए समणस्स भगवओ महा-
वीरस्स अत्तिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव^{१७} मिच्छादंसणसल्ले
पच्चक्खाए जावज्जीवाए । इयाणि पि य ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिए

१. पुव्वरत्तावरत्तं (क); स० पा०—पुव्व-

रत्तावरत्तं जाव जागरमाणस्स ।

२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

३. म० २।६६ ।

४. म० २।६६ ।

५. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियए ।

६. सं० पा०—करेइ जाव नमसित्ता ।

७. आरुहेइ (क, म) ।

८. कडादीहि (अ, व, स), कडादीहि (ता, म) ।

९. ° वट्टय (अ, क, म, स) ।

१०. औ० सू० २१ ।

११. ओ० सू० २१ ।

१२. मे से (क, व, म, स) ।

१३. म० १।३८४ ।

सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जं पि य इमं सरीर इट्ठं कंतं पियं जाव' मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइय' विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्ठु एयं पिणं चरिमेहि उस्सास-नीसासेहि वोसिरामि त्ति कट्ठु सलेहणाभूसणाभूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंसमाणे विहरइ ॥

६६. तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइ अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामणपरियागं पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥

७०. तए ण ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्ग करेति, करेत्ता पत्त-चीवराणि गेण्हति, गेण्हित्ता विपुलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं पच्चोरुहति', पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी खंदए नामं अणगारे 'पगइभइए पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमइवसपन्ने अल्लीणे' विणीए' । से ण देवाणुप्पिएहि अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पच महव्वयाणि आरुहेत्ता', समणा' य समणीओ य खामेत्ता, अम्हेहि सद्धि विपुलं पव्वयं' । सणियं-सणियं द्रुहित्ता जाव' मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते' आणुपुव्वीए कालगए । इमे य से आयारभंडए ॥

७१. भंतेति ! भगवं गोयमे समण भगवं महावीरं वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी खंदए नामं अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववण्णे ?

गोयमाइ ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी—एवं खलु

१. भ० २।५२ ।

२. द्रष्टव्यं २।५२ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

३. पच्चोसक्कति (स) ।

४. अलीणे (क, व) ।

५. औपपातिके (६१, ११६) एतावान् एव पाठोस्ति । अत्र केपुचिदादर्शेषु 'पगइमउए पगइविणीए' इति पाठोऽप्यस्ति तथा 'मिउ-मइवसपन्ने भइए विणीए' इत्यपि वर्तते ।

इति द्विस्तमस्तित्तेन औपपातिकपाठ एव समीचीनोस्ति ।

६. आरोवेत्ता (अ, क, ता, व, स); आरोहेत्ता (म) ।

७. समणे (अ, ता, व, म) ।

८. सं० पा०—पव्वयं तं चेव निरव्वेसं जाव आणुपुव्वीए ।

९. भ० २।६८, ६९ ।

गोयमा ! मम अतेवासी खदए नामं अणगारे पगइभद्दए^१ •पगइउवसंते पगइपय-
णुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपण्णे अत्तीणे विणीए^२, से ण मए अब्भ-
णुणाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेत्ता^३ •जाव^४ मासियाए सलेहणाए
अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता^५ आलोइय-पडिक्कंते समा-
हिपत्ते कालमासे काल किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥

७२. तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं वावीस सागरोवमाइ ठिई पणत्ता तत्थ ण खदयस्स
वि देवस्स वावीस सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥

७३. से णं भंते ! खंदए देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण
अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति^{*} ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणव्वाहिति
सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ॥

वीओ उद्देसो

समुग्घाय-पदं

७४. कइ ण भते ! समुग्घाया पणत्ता?

गोयमा ! सत्त समुग्घाया पणत्ता, त जहा—१. वेदणासमुग्घाए २. कसा-
यसमुग्घाए ३. मारणतियसमुग्घाए ४. वेउव्वियसमुग्घाए ५. तेजससमुग्घाए
६. आहारगसमुग्घाए ७. केवलियसमुग्घाए । छाउमत्थियसमुग्घायवज्ज^{*} समु-
ग्घायपदं नेयव्वं^१ ॥

१. स० पा०—‘गइभद्दए जाव सेण ।

२. स० पा०—‘आरुहेत्ता त चेव सव्वं अविसेसित
रोधव्व जाव आलोइय० ।

३. अ० २।६८, ६९ ।

४. गमिहिति (अ, व, स), गच्छिही (ता) ।

५. एव समुग्घायपदं छाउमत्थियसमुग्घायवज्ज
भाणियव्वं जाव—वेमाणियाण । कसाय-
समुग्घाया, अप्पावहुय । अणुगारस्स णं भते !

भाविग्रप्पणो केवली समुग्घाए जाव—सासत,
अणुगयद्ध चिट्ठति ? समुग्घायपदं नेयव्व
(अ, व) ।

६. सूत्रकृता प्रज्ञापनायाः ‘मरणात्ता जहा जीवा,
नवर—मरणसमुग्घाएण समोहया असखेज्ज-
गुणा’ इत्येव पाठोत्र विवक्षित, अतः परवर्ती
छादमत्थिकसमुद्घातप्ररूपकपाठो नात्र अधि-
कृतोस्ति । द्रष्टव्यम्—प्रज्ञापना, पद ३६ ।

तइओ उद्देसो

पुढवि-पदं

७५. कइ ण भते ! पुढवीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! सत्त पुढवीओ पणत्ताओ, त जहा—१. रयणप्पभा २. सक्कर-
प्पभा ३. बालुयप्पभा ४. पकप्पभा ५. धूमप्पभा ६. तमप्पभा ७. तमतमा ।
जीवाभिगमे^१ नेरइयाण जो वितिओ उद्देसो सो नेयव्वो^२ जाव—

७६. 'किं सव्वे पाणा उववण्णपुव्वा ?'

हुंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदिय-पदं

७७. कइ ण भते ! इदिया पणत्ता ?

गोयमा ! पच इदिया पणत्ता, त जहा—१. सोइदिए २. चक्खिंदिए ३. घाणिदिए
४. रसिंदिए ५. फांसिंदिए । पढमिल्लो इंदियउद्देसओ^३ नेयव्वो^४ जाव—

७८. अलोगे ण भते ! किणा फुडे ? कतिहि वा काएहि फुडे ?

१. जी० ३।२ ।

२. अतोअे 'क, ता, म' सकेलितादशेषु 'पुढवी
ओगाहिता, निरया सठाणमेव बाहल्लं । जाव
किं' एव पाठो वर्तते । शेषादशेषु 'बाहल्लं'
इति पदस्याअे 'विकल्पाभ-परिवर्त्तव्यो, वण्णो गघो
य फासो य जाव किं' एव पाठोस्ति । वृत्ति-
कृता एका टिप्पणी कृतास्ति—अत्रपुस्तकेषु
च पूर्वार्द्धमेव लिखितं, शेषाणां विवक्षितार्थानां
यावच्छब्देन सूचितत्वात् । असौ गाथा जीवा-
भिगमस्य नारकद्वितीयोद्देशकार्यसंग्रहपरा वर्तते

३. अत्र सक्षिप्तपाठः । जीवाभिगमे (३।२) पूर्ण-
पाठः एवमस्ति—

इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए
निरयावाससयसहस्सेसु इक्कमिक्कसि निरया-
वाससि सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा
सव्वे सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइ-
काइयत्ताए, नेरइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?

४. प० १५।१ ।

५. अतोअे सर्वादिशेषु 'सठाणं बाहल्लं पोहत्त
जाव अलोगे' इति पाठोस्ति, इह च सूत्रपुस्त-
केषु द्वारत्रयमेव लिखितं, शेषास्तु तदर्थं
यावच्छब्देन सूचिताः (वृ) ।

६. प० १५।१ ।

गोयमा ! नो धमत्थिकाएणं फुडे जाव' नो आगासत्थिकाएण फुडे, आगा-
सत्थिकायस्स देसेणं फुडे आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, नो पुढविकाइएणं फुडे
जाव' नो अद्दासमएणं फुडे, एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणंतेहिं अगुरुलहुयगु-
णेहिं संजुत्ते सव्वगासे अणंतभागूणे ॥

पंचमो उद्देशो

परिचारणा-वेद-पदं

७९. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवंति परूवेति—

१. एवं खलु नियंते कालगए समाणे देवब्भूएणं^१ अप्पाणेणं से ण तत्थ नो
अण्णे देवे, नो अण्णेसि देवाणं देवीओ 'अभिजुंजिय-अभिजुजिय'^२ परियारेइ, नो
अप्पणिच्चियाओ^३ देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं
विडव्विय-विडव्विय परियारेइ ।

२. एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा—इत्थिवेदं
च, पुरिसवेदं च ।

^४जं समयं इत्थिवेयं वेएइ तं समयं पुरिसवेयं वेएइ ।

जं समयं पुरिसवेयं वेएइ तं समयं इत्थिवेयं वेएइ ।

इत्थिवेयस्स वेयणाए पुरिसवेयं वेएइ, पुरिसवेयस्स वेयणाए इत्थिवेयं वेएइ ।

एवं खलु एगे वि य ण जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा^५—इत्थिवेदं
च, पुरिसवेदं च ॥

८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव' इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं
च । जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइ-
क्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—

१. प० १५।१ ।

२. प० १५।१ ।

३. प्राकृतत्वात् भकारस्य द्वित्वम् ।

४. अहियंजिय (व) ।

५. अप्पणो ०. (अ, क, ता, व); अप्पिणिच्चि-
याओ (वृ); अप्पिणिज्जियाओ (ठा० ३।९) ।

६. सं० पा०—एवं परजत्थियवत्तव्वया शेषव्वा
जाव इत्थिवेद ।

७. भ० २।७६ ।

१. एवं खलु णियठे कालगए समाणे अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उवव-
त्तारो भवति^१—महिडिण्णएसु^२ •महज्जुतीएसु महाबलेसु महायसेसु महासोकखेसु^३
महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरदिठतीएसु । से ण तत्थ देवे भवइ महिडिण्ण जाव^४ दस
दिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे^५ •पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे^६ पडिरूवे ।
से णं तत्थ अण्णे देवे, अण्णेसि देवाणं देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय
परियारेइ, अप्पणिच्चियाओ^७ देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, नो
अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय-विउव्विय परियारेइ ।

२ एगे वि य णं जीवे एगेण समएण एगं वेद वेदेइ, त जहा—इत्थिवेदं वा,
पुरिसवेद वा ।

ज समयं इत्थिवेद वेदेइ नो त समय पुरिसवेद वेदेइ ।

ज समय पुरिसवेदं वेदेइ, नो त समय इत्थिवेदं वेदेइ ।

इत्थिवेदस्स उदएण नो पुरिसवेद वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएणं नो इत्थिवेदं
वेदेइ ।

एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण एग वेदं वेदेइ, तं जहा—इत्थीवेदं वा,
पुरिसवेदं वा ।

इत्थी इत्थिवेदेण उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ । पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिण्णेणं
इत्थि पत्थेइ । दो वि ते अण्णमण्णं पत्थेति, त जहा—इत्थी वा पुरिसं, पुरिसे
वा इत्थि ॥

गणभ-पदं

८१. उदगम्भे^१ ण भते ! उदगम्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ ?

गोयमा ! जहण्णेण एक समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥

८२. तिरिक्खजोणियगम्भे ण भते ! तिरिक्खजोणियगम्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अट्ठ संवच्छराइ ॥

८३. मणुस्सीगम्भे णं भते ! मणुस्सीगम्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वारस संवच्छराइ ॥

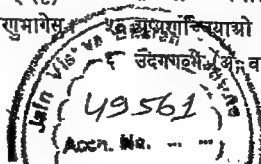
८४. कायभवत्थे ण भते ! कायभवत्थे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण चउवीसं संवच्छराइ ॥

१ प्राकृतशैल्या उपपत्ता भवतीति दृश्यम् (वृ) । ४. स० पा०—पभासेमाणे जाव पडिरूवे ।

२. स० पा०—महिडिण्णएसु जाव महारणुभागेसु । ५. पासाइए दरिसणिच्चियाओ (अ, क, ता, व) ।

३. ठा० ८।१० ।



८५. मणुस्स-पंचेदियतिरिक्खजोणियवीए णं भंते ! जोणिव्यूए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस्स मुहुत्ता ॥
८६. एगजीवे णं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं इक्कस्स वा 'दोण्ह वा तिण्ह' वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तस्स जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥
८७. एगजीवस्स णं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥
८८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—●जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-
सेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए० हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! इत्थीए० पुरिस्सस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं
संजोए समुप्पज्जइ । ते दुहओ सिणेहं चिणंति, चिणित्ता० तत्थ णं जहण्णेणं एक्को
वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमाग-
च्छंति । से तेणट्ठेणं ●गोयमा ! एवं वुच्चइ-जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि
वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए० हव्वमागच्छंति ॥
८९. मेहुणणं भंते ! सेवमाणस्स केरिसए० असंजमे कज्जइ ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रुयनालियं० वा वूरनालियं० वा तत्तेणं
कणएणं समभिद्वेस्सज्जा, एरिसएणं गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ ॥
९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव१३ विहरइ ॥
९१. तए णं समणे भवगं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ
पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

तुंगियानयरी-समणोवासय-पदं

९२. तेणं कालेण तेण समएणं तु गिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ१० ॥
९३. तीसे णं तुंगियाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे११ पुप्फवतिए नामं
चेइए होत्था—वण्णओ१२ ॥

१. दोण्ह वा तिण्ह (अ, स) ।

२. पुहुत्तस्स (क, स) ।

३. एगजीव० (स) ।

४. सं० पा०—वुच्चइ जाव हव्व० ।

५. इत्थीए य (क, ता, व, म) ।

६. संचिणति, संचिणित्ता (म) ।

७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव हव्व० ।

८. मेहुणं (अ); मेहुणेणं (स) ।

९. केरिसे (अ, ता, व, स) ।

१०. रुवनालियं (क); रुयणाणालियं (ता); रुव-
णाणालियं (म) ।

११. पूर० (ता, व) ।

१२. म० १।५१ ।

१३. ओ० सु० १ ।

१४. दिसाभागे (क) ।

१५. ओ० सु० २-१३ ।

६४. तत्थ ण तुगियाए नयरोए बहुवे समणोवासया परिवसति—अड्ढा दित्ता वित्थि-
ण्णविपुलभवण-सयणासण-जाणवाहुणाइण्णा बहुधण-वहुजायरूव-रयया आयोग-
पयोगसपउत्ता विच्छड्ढियविपुलभत्तपाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेल-
यप्पभूया बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-पावा
असिक्क^१-सवर-निज्जर^२-किरियाहिकरणबध^३-पमोक्खकुसला^४ असहेज्जा^५ देवासुर-
नागसुवण्ण जक्खरक्खस्सकिन्नरकिपुरिसगरुलगंधवमहोरगादिएहि^६ देवगणेहि
निग्गथाओ पावयणाओ^७ अणत्तिकमणिज्जा, निग्गथे पावयणे निस्सकिया
निक्कखिया निव्वित्तिगिच्छा^८ लद्धट्ठा^९ गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा
विणिच्छियट्ठा अट्ठमिजपेम्माणुरागरत्ता^{१०} अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे
अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवगुयदुवारा^{११} “चियत्ततेउर-
घरप्पवेसा^{१२}” चाउहसट्ठसुहिट्ठपुण्णमासिणीसु^{१३} पडिपुण्ण पोसहं सम्म अणुपाले-
माणा, समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-‘खाइम-साइमेण’^{१४} वत्थ-
पडिग्गह-कबल-पायपुंछणेण पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं ‘ओसह-भेसज्जेण’^{१५}
पडिलाभेमाणा बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहाप-
रिग्गहिएहि^{१६} तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरति ॥

१. पावासव (ता) ।
२. निज्जरा (अ) ।
३. °हिरणकुसला (अ) ।
४. प्पमोक्ख ° (क, ता, म, स), मोक्ख ° (व) ।
५. असहेज्ज (अ, क, ता, व, म, स); असा-
हाय्यास्ते च ते देवादयस्वेति कर्मधारयः
अथवा व्यस्तमेवेदम् (वृ) ।
६. °महोरगादी ° (अ, म, स) ।
७. पवयणाओ (व) ।
८. निव्वित्तिगिच्छिया (ता) ।
९. लद्धिट्ठा (व) ।
१०. °पेमाणुराव ° (ता) ।
११. अपगुय ° (क); अवगुत ° (म) ।
१२. चियत्ततेउरपरघर ° (ता) । अतोत्रे सर्वेषु
आदर्शेषु ‘बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-
पच्चक्खाण—पोसहोववासेहि’ इति पाठो
दृश्यते । वृत्तिकृतापि असौ अत्रैव व्याख्यातः,

वाक्यरचनायाः सम्बन्धयोजनार्थं च ‘त्रैर्युक्ता
इति गम्यम्’ इति उल्लिखितम् । किन्तु
ओवाइय — रायपसेराइयसूत्रयोरवलोकनेन
प्रतीयते असौ पाठ ‘पडिलाभेमाणा’
इति पदस्यानन्तरं युज्यते । ओवाइयसूत्रे
(१२०) ‘पडिलाभेमारो सीलव्वय-गुण-
वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहाप-
रिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमारो’ ।
रायपसेराइयसूत्रे (६६८) ‘पडिलाभेमारो
बहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-
पोसहोववासेहि अप्पाणं भावेमारो ।’ अन्वयो.
पाठयोराधारेण अत्रापि असौ पाठ. ‘पडिला-
भेमाणा’ इति पदस्यानन्तरं गृहीतः ।

चाउहसि ° (ता) ।

खातिम-सातिमेणं (व, स) ।

× (क) ।

अहापडि ° (स, वृ) ।

६५. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूवसंपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दसणसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिदा^१ जिइदिया^२ जियपरीसहा जीवियास^३—मरण-भयविप्पमुक्का^४ • तवप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा निग्गह-प्पहाणा निच्छयप्पहाणा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जाप्पहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुपणा सोही अणियाणा अप्पुस्सुया अबहिल्लेसा सुसामणेरया अच्छिद्दपसिणवागरणा^५ कुत्तियावणभूया बहुस्सुया बहुपरिवारा^६ पंचहि अणगारसएहि सद्धि संपरिवुडा अहाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहसुहेणं विहरमाणा जेणेव तुंगिया नगरी जेणेव पुप्फवइए चेइए 'तेणेव उवागच्छति'^७, उवागच्छिता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हिता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥
६६. तए णं तुंगियाए नयरीए सिच्चाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह^८—महापह-पहेसु जाव^९ एगदिसाभिमुहा निज्जायंति ॥
६७. तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ^{१०} • चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया अणमण^{११} सद्वावेति, सद्वावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना जाव^{१२} अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हिता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।
- तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाण थेराणं भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासण-याए^{१३} ? • एगस्स वि आरियस्स घम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्य अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! थेरे भगवते वंदामो नमंसामो^{१४} • सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मंगलं देवयं चेइय पज्जुवा-सामो । एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामि-

१. × (क) ।

२. जित्तेंदिया (अ, क, व); जित्तिदिया (म) ।

३. जीवियासा (अ, ता, व, स) ।

४. सं० पा०—मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तिया^० ।

५. × (अ, व) ।

६. तेणेवाग^० (अ, क, व) ।

७. × (अ, क, व, म, स) ।

८. राय० सू० ६८७-६८९ ।

९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ षाव सद्वावेति ।

१०. राय० सू० ६८६ ।

११. सं० पा०—पज्जुवासणयाए जाव गहणयाए ।

१२. सं० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो जाव भविस्सति ।

यत्ताए० भविस्सति इति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडि-
सुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया
कयवलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइ 'वत्थाइं
पवर परिहिया' अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहिंतो'
पडिनिकखमति, पडिनिकखमिता एगयओ 'मेलायति, मेलायित्ता' पायविहार-
चारेण तुगियाए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फ-
वतिए' चेइए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवतो पंचविहेण अभिगमेणं
अभियच्छति, [त जहा—१ सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए २. अचित्ताणं
दव्वाणं अविओसरणयाए ३ एगसाडिएण उत्तरासगकरणेण ४. चक्खुप्फासे
अजलिप्पगहेण ५. मणसो एगत्तीकरणेण] जेणेव थेरा भगवतो तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता' *वदति
नमंसति, वदित्ता नमसित्ता० तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥

६८. तए णं ते थेरा भगवंतो तेसि समणोवासयाणं तीसे 'महइमहालियाए महच्चपरि-
साए चाउज्जामं धम्मं परिकहेति, तं जहा—

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण ॥

६९. तए ण ते समणोवासया थेराण भगवताण अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठुत्तुठ
जाव' हरिसवसविसप्पमाणहियया तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, 'करेत्ता
एव' वयासी—सजमेणं भते ! किफले ? तवे' किफले ?

१००. तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एवं वयासी—संजमे ण अज्जो !
अण्णह्यफले, तवे वोदाणफले ॥

१०१. तए ण ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ ण भते ! संजमे अण्णह-
यफले, तवे वोदाणफले । किपत्तिथ ण भते ! देवा देवलोएसु उववज्जति ?

१. पवराइं परिहिया (क); वत्थाइ पवराइ-
परिहियं त्ति क्वचिहइयते, क्वचिच्च वत्थाइ
पवर परिहियं त्ति (वृ) ।

२. गेहेहिंतो (म, स) ।

३. एगओ (ता) ।

४. मिलायति २ (अ, म) ।

५. पुप्फवतीए (अ, क, व, स) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यातः प्रतीयते ।

७. स० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।

८. महइमहालियाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेति ।

जहा केसि सामिस्स, जाव समणोवासियत्ताए
आराए आराहए भवति जाव धम्मो कहिओ
(अ, म, स), महइमहालियाए जाव धम्मो
कहिओ (क, ता, व) ।

९. भ० २।४३ ।

१०. करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जु-
वासति २ एवं (ता, म, स); करेत्ता जाव
एवं (क) ।

११. तवे णं भते ! (अ) ।

१२. वदिसु (क) ।

१०२. तत्थ णं कालियपुत्ते नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएमु उववज्जंति ।
तत्थ णं मेहिले नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वसंजमेणं अज्जो ! देवा देवलोएमु उववज्जंति ।
तत्थ णं आणंदरक्खिए नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयानी—कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएमु उववज्जंति ।
तत्थ णं कासवे नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएमु उववज्जंति ।
पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएमु उववज्जंति । सच्चे णं एसं अट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ॥
१०३. तए णं ते समणोवासया 'थेरेहि भगवंतेहि इमाइं एयारुवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठुत्तुट्ठा' थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, पसिणाइं पुच्छंति, अट्ठाइं उवादियंति, उवादिएत्ता जामेव दिंसि पाउब्भूया तामेव दिंसि पडिगया ॥
१०४. 'तए णं ते थेरा अण्णया कयाइं तुंगियाओ नयरीओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिग्गच्छंति', वहिया जणवयविहारं विहरंति ॥
१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—सामी समोसडे जाव' परिसा पडिगया ॥
१०६. तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव' संखित्तविपुलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
१०७. तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि' पढमाए पोरिसीए" सज्झायं करेइ, वीयाए पोरिसीए ऋणं ऋयाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं" पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे

१. एसे (क, व, म) ।

५. X (ता, व) ।

२. X (क, ता, व) ।

६. भ० १।७, ८ ।

३. उवादिएत्ता उट्ठाए छट्ठेन्ति छट्ठेत्ता थेरे

७. भ० १।६ ।

भगवंते तिव्वुत्तो वंदंति नमंसंति २ थेराणं

८. एसे (अ, क, ता, म, स); सणं समणे (व) ।

भगवंताणं अनियाओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ

९. ० नंमि (ता) ।

पडिनिक्खमंति (अ, म, स) ।

१०. पोस्सीए (क, ता, म) ।

४. पडिनिक्खमंति (अ) ।

११. भावणाइं वत्थाइं (अ, व, स) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुम्हेहि अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठ-क्खमणपारणगसि रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खारिय्याए अडित्तए ।

अहामुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

१०८. तए ण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता अतुरियमचवलमसभते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं 'सोहेमाणे-सोहेमाणे' जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खारिय अडइ ।

१०९. तए ण भगव गोयमे रायगिहे नगरे^१ *उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमु-दाणस्स भिक्खारिय्याए^२ अडमाणे बहुजणसइ निसामेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो समणोवासएहि इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिया—सजमे ण भते ! किफले ? तवे किफले ?

तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एव वयासी—सजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले त चेव जाव^३ पुव्वतवेण, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति । सच्चे ण एस मट्ठे^४, नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ।

से कहमेय मन्ने^५ एवं ॥

११०. तए ण भगवं गोयमे इमीसे कहाए लद्धे समाणे जायसइडे जाव^६ समुप्पन्न-कोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनि-क्खमइ अतुरिय^७ *मचवलमसभते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे^८—सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्त-पाणं पडिदसेइ, पडिदसेत्ता समण भगव महावीर^९ *वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता^{१०} एवं वदासी—एवं खलु भते ! अह तुम्हेहि अब्भणुण्णाए समाणे राय-

१. सोहेमाणे (क, ता, व) ।

२. ए से (अ, क, व, म, स) ।

३. स० पा०—नयरे जाव अडमारो ।

४. म० २।०१, १०२ ।

५. मट्ठे समट्ठे (क), अट्ठे (ता) ।

६. भते ! (अ, व) ।

७. ए से (अ, क, ता, व, म, स) ।

८. म० १।१० ।

९. स० पा०—अतुरिय जाव सोहेमाणे ।

१०. स० पा०—महावीर जाव एव ।

गिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खारियाए
अडमाणे बहुजणसहं निसामेमि—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुगियाए नयरीए
बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो समणोवासएहि इमाइं
एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिया—सजमे णं भते ! किफले ? तवे किफले ? त चेव
जाव' सच्चे णं एस मट्ठे,^१ नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए । १

त' पभू णं भते ! ते थेरा भगवतो तेसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ
वागरणाइ वागरेत्तए ? उदाहु अप्पभू ? समिया णं भते ! ते थेरा भगवतो
तेसि समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए ? उदाहु
असमिया ? आउज्जिया ण भते ! ते थेरा भगवतो तेसि समणोवासयाण
इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए ? उदाहु अणाउज्जिया ? पलि-
उज्जिया णं भते ! ते थेरा भगवतो तेसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ
वागरणाइ वागरेत्तए ? उदाहु अपलिउज्जिया ?—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा
देवलोएसु उव्वज्जति । पुव्वसज्जेण, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा
देवलोएसु उव्वज्जति । सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए । २
पभू ण गोयमा ! ते थेरा भगवतो तेसि समणोवासयाण इमाइं एयारूवाइ
वागरणाइ वागरेत्तए (नो 'चेव ण' अप्पभू । *समिया ण गोयमा ! ते थेरा
भगवतो तेसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए ।
आउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवतो तेसि समणोवासयाण इमाइं एया-
रूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए । पलिउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवतो
तेसि समणोवासयाण इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेत्तए + पुव्वतवेणं
अज्जो ! देवा देवलोएसु उव्वज्जति पुव्वसज्जेण, कम्मियाए, संगियाए
अज्जो ! देवा देवलोएसु उव्वज्जति । ३ सच्चे ण एस मट्ठे, नो चेव ण आय-
भाववत्तव्वयाए । ३

अह पि णं गोयमा ! एवमाइवखाभि, भासामि, पणवेमि, परूवेमि—पुव्वतवेण
देवा देवलोएसु उव्वज्जति । पुव्वसज्जेण देवा देवलोएसु उव्वज्जति । कम्मि-
याए देवा देवलोएसु उव्वज्जति । संगियाए देवा देवलोएसु उव्वज्जति ।
पुव्वतवेण, पुव्वसज्जेण, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु
उव्वज्जति । सच्चे ण एस मट्ठे, नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए । ॥

१. म० २।६६-१०२ ।

२. अट्ठे (ता) ।

३. एयं (व) ।

४. अस्समिया (क, ता, म) ।

५. X (अ, क, व) ।

६. स० पा०—तह चेव नेयव्वं अविसेसियं जाव
पभू समिय आउज्जियपलिउज्जिय जाव
सच्चे ।

१११. तहारूव ण भते ! समण वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किफला
 पज्जुवासणा ?
 गोयमा ! सवणफला ।
 से णं भते ! सवणे किफले ?
 नाणफले ।
 से णं भते ! नाणे किफले ?
 विण्णाणफले ।
 से ण भते ! विण्णाणे किफले ?
 पच्चक्खाणफले ।
 से ण भते ! पच्चक्खाणे किफले ?
 सजमफले ।
 से ण भते ! संजमे किफले ?
 अणण्हयफले ।
 से ण भते ! अणण्हए किफले ।
 तवफले ।
 से ण भते ! तवे किफले ?
 वोदाणफले ।
 से ण भते ! वोदाणे किफले ?
 अकिरियाफले ।
 सा ण भते ! अकिरिया किफला ?
 सिद्धिपज्जवसाणफला—पणत्ता गोयमा !

संगहणी-भाहा

सवणे नाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।

अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥१॥

उण्हजलकुड-पदं

११२. अन्नउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति, भासंति, पणवेति, पख्वेति—एवं खलु
 रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे, एत्थ ण महं एगे हरए'
 अघे' पणत्ते—अणेगाइ जोयणाइं आयाम-विक्खभेणं, नाणादुमसंडमंडिउद्देसे,
 सस्सिरीए' *पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे । तत्थ णं बहुवे ओराला

१. ° हरणे (ता) ।

३ सं० पा०—सस्सिरीए जाव पडिरूवे ।

२. अप्पे (अ, क, व, म, स); क्वचित्तु हरए त्ति
 न दृश्यते 'अघे' इत्यस्य च स्थाने 'अप्पे' त्ति
 दृश्यते (वृ) ।

बलाहया ससेयति समुच्छति वासंति । तव्वइरित्ते यं ण सया समियं उंसिणे-
उंसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ ।

११३. से कहमेय भते ! एवं ?

गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाइक्खति,
मिच्छ ते एवमाइक्खति^१ । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि,
पण्णवेमि, परूवेमि—एव खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स
अदूरसामते, एत्थ णं महातवोवतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते—पच्च धणु-
सयाइ आयास-विक्खभेण, नाणादुमसडमडिउद्वेसे सस्सिरीए पासादीए दरि-
सणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे । तत्थ ण बहुवे उंसिणजोणिया^२ जीवा य पोगगला
य उदगत्ताए^३ वक्कमति बिउक्कमति चयति उववज्जति^४ । तव्वइरित्ते वि य णं
सया समिय उंसिणे-उंसिणे आउयाए अभिनिस्सवइ । एस ण गोयमा !
महातवोवतीरप्पभवे^५ पासवणे । एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स
पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

११४. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ ॥

छट्ठो उद्देशो

भासा-पदं

११५. से नूण भते ! मन्नामी ति ओहारिणी भासा ? एव भासापदं भाणियव्व ॥

सत्तमो उद्देशो

ठाण-पदं

११६. कति^१ णं भते ! देवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवणवइ-वाणमतर-जोइस-
वेमाणिया ॥

१. एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्वं (अ, स),

एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्व जाव
(क, ता, म) ।

२. उंसिणजोणीया (अ, ता, म, स); उसुण-
जोणीया (व) ।

३. उदत्ताए (ता) ।

४. उवचयति (अ, व) ।

५. महातवोतीर^० (क, ता, व, म) ।

६. प० ११ ।

७. कतिविहा (अ, ता, म) ।

११७. कहि णं भते ! भवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे^१ देवाण वत्तव्वया सा भाणियव्वा^२ । उववाएण^३ लोयस्स असखेज्जइभागे एव सव्व भाणियव्वं, जाव^४ सिद्धगडिया समत्ता ।^५

कप्पाण पइट्ठाण, बाहुल्लुच्चत्त मेव सठाणं ।

जीवाभिगमे जो^६ वेमाणिउद्देशो^७ सो^८ भाणियव्वो सव्वो ॥

अट्ठमो उद्देशो

चमरसभा-पदं

११८. कहि ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररणो^१ सभा सुहम्मा पण्णत्ता ? गोयमा ! जव्वदीवे^२ दीवे मंदरस्सं पव्वयस्स दाहिणे ण तिरियमसखेज्जे^३ दीव-समुद्दे वोईवइत्ता^४ अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदयं^५ समुद्द बायालीसं जोयणसयसहस्साइ^६ ओगाहिता, एत्थ णं चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररणो तिगिच्छिकूडे^७ नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते—सत्तरस-एकवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारितीसे जोयणसए कोसं च 'उव्वेहेण मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण, मज्झे चत्तारि चउवीसे जोयणसए विक्खं-भेण, [उवरि सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खभेण,] मूले तिणिण जोयणसहस्साइ, दोणिण य बत्तीसुत्तरे जोयणसए किञ्चि विसेसूणे परिकखेवेण, मज्झे एग जोयण-सहस्स तिणिण य इगयाले^८ जोयणसए किञ्चि विसेसूणे परिकखेवेण, उवरि दोणिण

१. प० २ ।

८ × (अ, म, स) ।

२. भाणियव्वा नवर भवणा पण्णत्ता (अ, क, १ असुररणो (क, ता, व) ।

ता, व, म, स), नवर भवणा पण्णत्त ति १०. जव्वदीवे (म) ।

क्वचिद् दृश्यते तस्य च फल न सम्यगव- ११ ० मसखेज्ज (ता, व, स) ।

गम्यते (वृ) ।

१२ वीति ० (अ, क, व, म) ।

३ उववादेण (अ, क, व, म) ।

१३ अरुणोद (क, म) ।

४. प० २ ।

१४. जोयणसहस्साइ (अ, क, ता, म, स) ।

५. सम्मत्ता (क, व, म, स) ।

१५. तिगिच्छि० (क); तिगिच्छ० (म) ।

६. जाव (अ) ।

१६. इयाले (अ) ।

७. वेमाणियुद्देशो (ता, व) ।

य जोयणसहस्साइं, दोण्णि य छलसीए जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिकखेवेण,^१ मूले वित्थडे, मज्जे संखित्ते, उप्पिं विसाले, वरवइरविग्गहिए^२ महामउदसंठाण-
संठिए सव्वरयणामए अच्चे^३ सण्हे लण्हे घट्टे मट्टे निरए निम्मले निप्पके निक्क-
कडच्छाए सप्पमे समिरीए सउज्जोए पासादीएद रिसणिज्जे अभिरूवे^४ पडिरूवे ।
से णं एगाए पउमवरवेइयाए, वणसंडेण य सव्वओ समंता सपरिकखित्ते ।
पउमवरवेइयाए वणसंडस्स य वण्णओ^५ ॥

११९. तस्स णं तिगिच्छिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पि बहुसम-रमणिज्जे भूमिभागे
पणत्ते—वण्णओ^६ ॥

१२०. तस्स ण बहुसम-रमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्जदेसभागे, एत्थ णं महं एगे
पासायवडेसए पणत्ते—अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण, पणुवीसं^७
जोयणसय विक्खंभेणं । पासायवण्णओ^८ । उल्लोयभूमिवण्णओ^९ । अट्ठजोयणाइं
मणिपेडिया । चमरस्स सीहासण सपरिवारं^{१०} भाणियव्व ॥

१२१. तस्स णं तिगिच्छिकूडस्स दाहिणे ण छक्कोडिसए पणवन्न च कोडीओ पणत्तीसं
च सयसहस्साइं पण्णास च सहस्साइं अरुणोदए समुद्दे तिरिय वीइवइत्ता अहे
रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीस जोयणसहस्साइ, ओगाहिता, एत्थ णं चमरस्स
असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचा नामं रायहाणी पणत्ता एग जोयणसय-
सहस्सं आयाम-विक्खंभेण जवूदीवप्पमाणा ।

१. उब्बहेण गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पमाणेण
नेयव्व, नवर उवरिल्ल पमाण मज्जे
भाणियव्व जाव (क, ता, व, वृ) । अ, म,
स सकेतितादक्षेणु द्वयोवर्नायोर्मिश्रणं दृश्यते ।

२. ° विग्गहे (अ, व, स) ।

३. स० पा०—अच्चे जाव पडिरूवे ।

४. राय० सू० १८६-२०१ ।

५. राय० सू० २४-३१ ।

६. पण० (अ, स) ।

७. राय० सू० २०४ ।

८. राय० सू० २४-३४, भ० वृत्ति ।

९. तच्चैवम्—तस्स ण सिंहासणस्स अवसत्तरे ण,
उत्तरे ण, उत्तरपुरत्थिमे णं, एत्थ ण चमरस्स

चउसट्ठी सामाणियसाहस्सीण, चउसट्ठी
भद्दासणसाहस्सीओ पणत्ताओ, एव पुरत्थिमे
ए पचण्हं अगमहिंसीए सपरिवाराए पच
भद्दासणाइ सपरिवाराइ, दाहिणपुरत्थिमे
ण अम्भितरियाए परिसाए चउब्बीसाए
देवसाहस्सीए चउब्बीस भद्दासणसाहस्सीओ,
एव दाहिणे ए पचत्थिमे ए सत्तण्ह अण-
याहिवईए मज्झिमाए अट्ठावीस भद्दासण-
साहस्सीओ, दाहिणपचत्थिमे ण दाहिराए
वत्तीस भद्दासणसाहस्सीओ, सत्त भद्दा-
सणाइं, चउद्दिं आयरक्खदेवाए चत्तारि
भद्दासणसहस्सचउसट्ठीओ (वृ) ।

ओवारियलेण सोलसजोयणसहस्साइं आयाम-विक्खमेणं, पण्णास जोयणसहस्साइं पच्च य सत्ताणउए जोयणसए किच्च विसेसूणे परिकखेवेणं, सव्वप्पमाण वेमाणि-यप्पमाणस्स अद्धं नेयव्व^१ ॥

नवमो उद्देशो

समयखेत्त-पदं

१२२. किमिद भंते ! समयखेत्ते त्ति पवुच्चति ?

गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा, दो य समुद्दा, एस णं एवइए समयखेत्तेत्ति पवुच्चति ॥

१२३. तत्थ णं अयं जंबुदीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वभतरे । एवं जीवाभिगम-वत्तव्वया नेयव्वा जाव^२ अम्भितर-पुक्खरद्ध जोइत्तविहूण^३ ॥

१. एतदेव वाचनान्तरे उक्तम्—‘चत्तारि परि-वादीओ पासायवडेंसगाए अद्धदहीणाओ (वृ), राय० सू० २०४-२०८ ।

२ जी० ३ ।

३. वाचनान्तरे तु ‘जोइसअट्टविहूण’ त्ति इत्यादि बहु दृश्यते, तत्र ‘जंबुदीवे एं भते ! कइ चदा पभासिसु वा ३ ? कति सूरीया तविसु वा ३ ? कइ नक्खत्ता जोइ जोइसु वा ३ ? इत्यादिकानि प्रत्येक ज्योतिष्क-सूत्राणि, तथा—से केणट्ठेण भते ! एव बुच्चइ जंबुदीवे दीवे ?, गोयमा ! जंबुदीवे

ण दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण लवणस्स दाहिणे ए जाव तत्थ २ बहवे जंबुक्खत्ता जंबुवण्णा जाव उवसोहेमाणा चिट्ठति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव बुच्चइ जंबुदीवे दीवे इत्यादीनि प्रत्येकमर्थसूत्राणि च सन्ति, तत-श्चैतद्विहीन यथा भवत्येव जीवाभिगमवत्त-व्यतया नेय अस्थोद्देशकस्य सूत्रं ‘जाव इमा गाह’ त्ति संग्रहगाथा, सा च—‘अरहत्त समय वायर, विज्जू थरिणया बलाहगा अगणी । आगर निहि नइ उवराग निग्गमे बुद्धिबयणं च (वृ) ।

दसमो उद्देशो

अस्थिकाय-पदं

१२४. कति णं भते ! अस्थिकाया पणत्ता ?

गोयमा ! पंच अस्थिकाया पणत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोगलत्थिकाए ॥

१२५. धम्मत्थिकाए ण भते ! कतिवण्णे ? कतिगघे ? कतिरसे ? कतिफासे ?

गोयमा ! अवण्णे, अगघे, अरसे, अफासे;

अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।

से समासओ पच्चविहे पणत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ ण धम्मत्थिकाए एगे दव्वे,

खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,

कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ^१ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु

य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए^२, णिच्चे ।

भावओ अवण्णे, अगघे, अरसे, अफासे ।

गुणओ गमणगुणे ॥

१२६. अधम्मत्थिकाए^३ ण भते ! कतिवण्णे ? कतिगघे ? कतिरसे ? कतिफासे ?

गोयमा ! अवण्णे, अगघे, अरसे, अफासे;

अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।

से समासओ पच्चविहे पणत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।

दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगे दव्वे ।

खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।

कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु

य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।

भावओ अवण्णे, अगघे, अरसे, अफासे ।

गुणओ ठाणगुणे^० ॥

१. स० पा०—कयाइ जाव णिच्चे ।

२. स० पा०—अधम्मत्थिकाए एव चैव नवर गुणओ ठाणगुणे ।

१२७ आगासत्थिकाए^१ *णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
 गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे;
 अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्टिए लोगदव्वे ।
 से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ,
 गुणओ ।

दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगे दव्वे ।

खेत्तओ लोयालोयप्पमाणमेत्ते—अणत्ते ।

कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य,
 भवत्ति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्टिए, णिच्चे ।
 भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे । °

गुणओ अवगाहणागुणे ॥

१२८ जीवत्थिकाए ण भते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?

गोयमा ! अवण्णे^१, *अगधे, अरसे, अफासे ° ;

अरूवी, जीवे, सासए, अवट्टिए लोगदव्वे ।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,—तं जहा—दव्वओ^१, *खेत्तओ, कालओ, भावओ ° ,
 गुणओ ।

दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणताइ जीवदव्वाइ ।

खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।

कालओ न कयाइ न आसि^२, *न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु
 य, भवत्ति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्टिए °
 णिच्चे ।

भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे ।

गुणओ उव्वोगगुणे ॥

१२९. पोमालत्थिकाए ण भते ! कतिवण्णे^१ ? *कतिगंधे ? कतिरसे ° ? कतिफासे ?

गोयमा ! पंचवण्णे, पंचरसे, दुग्धे, अट्ठफासे,

रूवी, अजीवे, सासए, अवट्टिए, लोगदव्वे ।

१. स० पा०—आगासत्थिकाए वि एव चेव २. स० पा०—दव्वओ जाव गुणओ ।

नवर खेत्तओ ए आगासत्थिकाए लोयालो-

यप्पमाणमेत्ते अणत्ते चेव जाव गुणओ ।

३. स० पा०—अवण्णे जाव अरूवी ।

४. स० पा०—आसि जाव णिच्चे ।

५. स० पा०—कतिवण्णे जाव कतिफासे ।

से समासओ पचविहे पणत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ गुणओ ।

दव्वओ ण पोग्गलत्थिकाए अणंताई दव्वाइ ।

खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते ।

कालओ न कयाइ न आसि^१, •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—घुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठि^२, णिच्चे ।

भावओ वण्णमते, गघमंते, रसमते, फासमते ।

गुणओ गहणगुणे ॥

१३०. एगे भते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३१. एव दोण्णि,^३ 'तिण्णि, चत्तारि'^४ पच, छ, सत्त, अट्ठ, नव, दस, संखेज्जा, असं-
खेज्जा । भते ! धम्मत्थिकायपदेसा धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३२. एगपदेसूणे वि य ण भते ! धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३३. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति
वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य ण धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति
वत्तव्वं सिया ?

से नूण गोयमा । खडे चक्के ? सगले चक्के ?

भगव ! नो खडे चक्के, सगले चक्के ।

•खडे छत्ते ? सगले छत्ते ?

भगव ! नो खडे छत्ते, सगले छत्ते ।

खडे चम्मे ? सगले चम्मे ?

भगव ! नो खडे चम्मे, सगले चम्मे ।

खडे दडे ? सगले दडे ?

भगव ! नो खडे दडे, सगले दडे ।

खडे दूसे ? सगले दूसे ?

१. स० पा०—आसि जाव णिच्चे ।

२. दोण्णि वि (अ, स), दो (क) ।

३. तिण्णि वि चत्तारि वि (अ, स) ।

४. स० पा०—एव छत्ते चम्मे दडे दूसे आउहे
भोदए ।

भगवं ! नो खडे दूसे, सगले दूसे ।

खडे आयुहे ? सगले आयुहे ?

भगव ! नो खडे आयुहे, सगले आयुहे ।

खडे मोदए ? सगले मोदए ?

भगवं ! नो खडे मोदए, सगले मोदए ।° से तेणट्टेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—
एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि
य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१३४. से किखाइ^१ ण भते ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! असंखेज्जा धम्मत्थिकायपदेसा, ते सव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा
एकगहणगहिया—एस ण गोयमा ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१३५ एवं अधम्मत्थिकाए वि । आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोगलत्थिकाया वि
एवं चेव, नवर—तिण्ह पि पदेसा अणता भाणियव्वा । सेस तं चेव ॥

✓ जीवत्त-उवदंसण-पदं

१३६ जीवे ण भते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे
आयभावेण जीवभावं उवदसेतीति वत्तव्वं सिया ?

हता गोयमा ! जीवे ण सउट्ठाणे° सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-
परक्कमे आयभावेण जीवभावं° उवदसेतीति वत्तव्वं सिया ॥

✓ १३७ से केणट्टेण^४ °भते ! एव वुच्चइ—जीवे ण सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए
सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभाव उवदसेतीति° वत्तव्वं सिया ?

(गोयमा ! जीवे ण अणंताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण, अणताण सुयनाण-
पज्जवाण, अणताण ओहिनाणपज्जवाण, अणताणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं,
अणताण केवलनाणपज्जवाण, अणंताण मइअण्णाणपज्जवाण, अणंताणं
सुयअण्णाणपज्जवाण, अणंताण विभगनाणपज्जवाण, अणंताणं चक्खुदंसण-
पज्जवाणं, अणताणं अचक्खुदंसणपज्जवाण, अणंताणं ओहिदंसणपज्जवाण,
अणंताण केवलदंसणपज्जवाण उवओग गच्छइ । उवओगलक्खणे ण जीवे । से
एएणट्टेण एव वुच्चइ—गोयमा ! जीवे णं सउट्ठाणे° सकम्मे सबले सवीरिए
सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभावं उवदंसंतीति° वत्तव्वं सिया ॥)

१. आउहे (क, व) ।

२. मोयए (अ, क, व, स) ।

३. किखाइए (ता) ।

४. स० पा०—सउट्ठाणे जाव उवदसेतीति ।

५. स० पा०—केणट्टेणं जाव वत्तव्वं ।

६. स० पा०—सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं ।

आगास-पदं

१३८. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे^१ य अलोयागासे य ॥

१३९. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?

गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवप्पदेसा वि; अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवप्पदेसा वि ।

जे जीवा ते नियमा एगिदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिदिया, पंचिदिया, अण्णिदिया ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा^२, वेइंदियदेसा, तेइंदियदेसा, चउरिदियदेसा, पंचिदियदेसा^३, अण्णिदियदेसा ।

जे जीवप्पदेसा ते नियमा एगिदियपदेसा^४, वेइंदियपदेसा, तेइंदियपदेसा, चउरिदियपदेसा, पंचिदियपदेसा^५, अण्णिदियपदेसा ।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य ।

जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणु-पोगला ।

जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा; अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, अद्दासमए ॥

१४०. अलोयागासे णं भंते ! किं जीवा^६ ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?^७

गोयमा ! नो जीवा^८, नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा; नो अजीवा, नो अजीवदेसा^९, नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगख्यलहुए अणंतंहि अगख्यलहुयगुणेहि संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

अत्थिकाय-पदं

१४१. धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१. ° कासे (क, ता, म) ।

४. सं० पा०—जीवा पुच्छा तह चेव ।

२. सं० पा०—एगिदियदेसा जाव अण्णिदियदेसा ।

५. सं० पा०—जीवा जाव नो ।

३. सं० पा०—एगिदियपदेसा जाव अण्णिदिय-पदेसा ।

१४२. *अधम्मत्थिकाए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चैव फुसित्ता ण चिट्ठइ ॥

१४३. लोयाकासे णं भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चैव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

✓ १४४. जीवत्थिकाए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चैव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४५. पोमगलत्थिकाए णं भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चैव फुसित्ता णं चिट्ठइ ० ॥

फुसरपा-पदं

१४६. अहोलोए णं भते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?

गोयमा ! सातिरेगं अद्ध फुसति ॥

१४७. तिरियलोए णं भते ! *धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ? ०

गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसति ॥

१४८. उड्ढलोए णं भते ! *धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ? ०

गोयमा ! देसुणं अद्ध फुसति ॥

१४९. इमा ण भते ! रयणप्पभापुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?

गोयमा ! णो संखेज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जे भागे फुसति, णो असंखेज्जे भागे फुसति, णो सव्वं फुसति ॥

१५०. इमीसे णं भते ! रयणप्पभापुढवीए धणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?

जहा रयणप्पभा तहा धणोदहि-धणवाय-तणुवाया वि ॥

१५१. इमी से णं भते ! रयणप्पभापुढवीए ओवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?

गोयमा ! संखेज्जइभागं फुसति, नो असंखेज्जइभागं फुसति, नो संखेज्जे भागे फुसति, नो असंखेज्जे भागे फुसति, नो सव्वं फुसति ।

ओवासंतराइ सव्वाइ ॥

१. सं० पा०—एव अधम्मत्थिकाए लोयाकासे २. सं० पा०—भते पुच्छा ।

जीवत्थिकाए पोमगलत्थिकाए पच वि ३. सं० पा०—भते पुच्छा ।

एक्काभिलावा ।

१५२. जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया^१ एवं जाव^२ अहेसत्तमाए^३ ॥
 एवं सोहम्मं कप्पे जाव^४ ईसीपव्वभारा पुढवी—एते सव्वे वि असखेज्जइभागं
 फुसंति । सेसा पडिसेहियव्वा ।

१५३. एवं अघम्मत्थिकाए, एवं लोयाकासे वि ।

संगहणी-गाहा

पुढवोदही घण-त्तणू, कप्पा गेवेज्जणुत्तरा सिद्धी ।
 संखेज्जइभाग अंतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥१॥

१. भाणिया (अ, ता, व, स) ।

२. अ० २।१४६-१५१; २।७५ ।

३. अहेसत्तमाए जवुहीवाइया दीवसमुट्टा (अ,
 ता, म) ।

४. अ० सू० २८७ ।

तइयं सत्तं

पढमो उद्देशो

संगहणी-गाहा

१ केरिसविउव्वणा २ चमर ३. किरिय ४, ५. जाणित्थि ६ नगर ७ पाला य ।
 ८. अहिवइ ९. इंदिय १०. परिसा, ततियम्मि सए^१ दसुद्देसा ॥१॥

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नाम नयरी होत्था—वण्णओ^२ ॥
२. तीसे ण मोयाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे नदणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ^३ ॥
३. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं'^४ सामी समोसढे । परिसा निग्गच्छइ, पडिगया परिसा ॥

देवविक्रुव्वणा-पदं

४. तेणं कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अतेवासी अग्गिभूई नाम अणगारे गोयमे गोत्तेण सत्तुस्सेहे जाव^५ पज्जुवासमाणे एवं वदासि—चमरे ण भते ! असुरिदे असुरराया केमहिड्डीए^६ ? केमहज्जुतीए ? केमहावले ? केमहायसे ? केमहासोक्खे ? केमहाणुभागे ? केवइय च णं पभू विक्रुव्वित्तए ?
- गोयमा ! चमरे णं असुरिदे असुरराया महिड्डीए,^७ •महज्जुतीए, महावले, महायसे, महासोक्खे^८, महाणुभागे । से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं,^९ चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तावत्तीसाए^{१०} तावत्तीसगाणं^{११},

१. सदे (ता) ।

२. ओ० सू० १ ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

४. X (ता) ।

५. भ० १।६, १० ।

६. केमहड्डीए (क, म) ।

७. स० पा०—महिड्डीए जाव महाणुभागे ।

८. भवण० (अ, क, ता, म) ।

९. तावत्तीसाए (अ, ता, व, म, स) ।

१०. सं० पा०—तावत्तीसगाणं जाव विहरइ ।

●चउण्हं लोगपालाण, पंचण्हं अग्गमहिंसीणं सपरिवाराण, चउसट्ठीण आयरक्ख-
देवसाहस्सीण, अण्णेसि च बहूण चमरच्चचा रायहाणिवत्थव्वाण देवाण य
देवीण य आह्वेच्च पोरेवच्चं सामित्तं भट्ठित्तं आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे
पालेमाणे महयाहयनट्ठीगीय-वाइय-ततो-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइयर-वेणं
दिब्बाइं भांगभोगाइ भुजेमाणे°विहरइ । एमहिड्डीए,^१ ●एमहज्जुतीए,
एमहावले, एमहायसे, एमहासोक्खे,^२ एमहाणुभागे । एवतियं च ण पभू
विकुव्वित्तए । से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स
वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा ! चमरे असुरिदे असुरराया
वेउव्विय समुग्घाएणं समोहण्णइ,^३ समोहणित्ता 'सखेज्जाइ जोयणाइ', दडं^४
निसिरइ, त जहा—रयणाण' ●वयराण वेरुलियाण लोहियक्खाण मसारगल्लाणं
हसगम्भाण पुलगाणं सोगधियाण जोईरसाणं अजणाण अजणपुलगाण रययाण जाय-
रूवाण अकाण फलिहाण° रिट्ठाण अहावायरे पोगले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहा-
सुहुमे पोगले परियायइ', परियाइत्ता दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति ।
पभू ण गोयमा ! चमरे असुरिदे असुरराया केवलकप्प जुबुदीवं दीव बहूहिं
असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य आइण्ण वित्तिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अवगाढाव-
गाढं करेतए ।

अदुत्तरं च ण गोयमा ! पभू चमरे असुरिदे असुरराया तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे
बहूहिं असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य आइण्णे वित्तिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे
अवगाढावगाढं करेतए ।

एस ण गोयमा ! चमरस्स असुरिदस्स असुररणो अयमेयारूवे^५ विसए विसयमेत्तं
बुइए, णो चेव णं संपतीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्संति वा ॥

५. जइ णं भते ! चमरे असुरिदे असुरराया एमहिड्डीए जाव^६ एवइय च ण पभू
विकुव्वित्तए, चमरस्स ण भते ! असुरिदस्स असुररणो सामाणिया देवा
केमहिड्डीया ? जाव^७ केवइय च णं पभू विकुव्वित्तए ?

- | | |
|--|--------------------------------|
| १. स० पा०—एमहिड्डीए जाव एमहाणुभागे । | जोतीरसाण अकाण अंजणाण रयणाण |
| २. समोहणइ (अ, ता, स) । | जायरूवाणं अजणपुलगाण फलिहाण । |
| ३. सखेज्जाणि जोयणाणि (अ, ब) । | ६. परियाति (क) । |
| ४. उड्ड दड (ता, म) । | ७. अरगाढावगाढ (अ, ता, व) । |
| ५. स० पा०—रयणाण जाव रिट्ठाण । अस्य- | ८. अरगाढावगाढे (अ, क, ता, व) । |
| पूर्तिः—'रायपसेयाइय' (१०) सूत्रेण कृता । | ९. अतमेता° (ता) । |
| भगवतीवृत्तौ तु एतत् पूर्तिरित्थमस्ति— | १०. भ० ३।४ । |
| वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाण मसार- | ११. भ० ३।४ । |
| गल्लाण हसगम्भाण पुलगाणं सोगधियाण | |

गोयमा ! चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा महिड्ढीया^१
 •महज्जुतीया महाबला महायसा महासोक्खा^२ महानुभागा । ते णं तत्थ साण-साणं
 भवपाणं, साणं-साणं सामाणियाण, साणं-साणं अगमहिंसीण जाव^३ दिव्वाइं
 भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति । एमहिड्ढीया जाव^४ एवइयं च णं पभू विकुव्वि-
 त्तए । से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी
 अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो एगमेगे
 सामाणियदेवे वेज्जवियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव^५ दोच्च पि वेज्जवियसमुग्घाएणं
 समोहण्णइ ।

पभू ण गोयमा ! चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे केवलकप्पं
 जंबुदीव दीवं बहूहि असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य आइण्ण वित्तिक्किण उवत्थडं
 संथड फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए ।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे
 तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहि असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य आइण्ण वित्ति-
 क्किणे उवत्थडे सथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए ।

एस णं गोयमा ! चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणियदेवस्स
 अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्विति
 वा विकुव्विस्संति वा ।

६. जइ ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा एमहिड्ढीया जाव^६
 एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण भते ! असुरिदस्स असुररण्णो
 तावत्तीसया^७ देवा केमहिड्ढीया^८ ?

तावत्तीसया जहा सामाणिया तहा नेयव्वा । लोयपाला तहेव, नवरं—सखेज्जा
 दीव-समुद्दा भाणियव्वा ।

७. जइ ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो लोगपाला देवा एमहिड्ढीया जाव^९
 एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण असुरिदस्स असुररण्णो अगमहिंसीओ
 देवीओ केमहिड्ढीयाओ जाव^{१०} केवइयं च ण पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुररण्णो अगमहिंसीओ देवीओ महिड्ढीयाओ

१. स० पा०—महिड्ढीया जाव महानुभागा ।

२. भ० ३।४ ।

३. भ० ३।४ ।

४. भ० ३।४ ।

५. भ० ३।४ ।

६. तायत्ती ० (क) ।

७. महिड्ढीया (स) ।

८. भाणियव्वा बहूहि असुरकुमारेहि देवेहि देवेहि
 य आइन्ने जाव विकुव्विस्संति वा (अ, व) ।

९. भ० ३।४ ।

१०. भ० ३।४ ।

जाव^१ महाणुभागाओ^२ । ताओ णं तत्थ साणं-साणं भवणाणं, साणं-साणं सामाणिय-
साहस्सीण, साण-साणं महत्तरियाण^३, साण-साण परिसाणं जाव^४ एमहिड्ढीयाओ ।
अण्णं जहा लोगपालाणं अपरिसेसं ।

८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति भगव दोच्चे^५ गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ,
वदिता नमसित्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता तच्च गोयम वायुभूति अणगार एव वदासि—एव खलु गोयमा !
चमरे असुरिदे असुरराया एमहिड्ढीए त चेव एव सव्वं अपुट्ठवागरणं नेयव्वं
अपरिसेसिय^६ जाव^७ अगमहिसीण वत्तव्वया समत्ता ।

९. तेण से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूतिस्स अणगारस्स
एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्हइ
नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठ असद्हमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उट्ठाए
उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव^८ पज्जुवासमाणे
एवं वयासी—एवं खलु भते ! दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे मम एवमाइक्खइ
भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिदे असुरराया महिड्ढीए^९
जाव^{१०} महाणुभागे । से ण तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साण त चेव सव्वं
अपरिसेस भाणियव्वं जाव^{११} अगमहिसीण^{१२} वत्तव्वया समत्ता ।

१०. से कहमेयं भते ! एवं ?

गोयमादि ! समणे भगव महावीरे तच्च गोयम वायुभूति अणगार एवं वयासी—
जं ण गोयमा ! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ
परूवेइ—एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिदे असुरराया महिड्ढीए त चेव सव्वं
जाव^{१३} अगमहिसीओ । सच्चे ण एसमट्ठे । अह पि ण गोयमा ! एवमाइक्खामि
भासामि पण्णवेमि परूवेमि—एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिदे असुरराया
महिड्ढीए^{१४} त चेव जाव^{१५} अगमहिसीओ । 'सच्चे णं एसमट्ठे'^{१६} ।

१. भ० ३।४ ।

२. महाणुभावाओ (ता) ।

३. मयहरिया० (अ, व) ।

४. भ० ३।४ ।

५. × (क, ता, म) ।

६. अपरिसेसं (अ, क, स) ।

७. भ० ३।४-७ ।

८. भ० १।१० ।

९. एमहिड्ढीए (अ, क, ता, व) ।

१०. भ० ३।४ ।

११. भ० ३।४-७ ।

१२. अगमहिसीओ (अ, क, ता, व) ।

१३. भ० ३।४-७ ।

१४. महिड्ढीए सो चेव वित्तिओ गमो भाणि-
यव्वो (अ, व, म, स) ।

१५. भ० ३।४-७ ।

१६. सच्चमेसे अट्ठे (अ, क, ता, व) ।

११. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्निभूई अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्चं गोयमं अग्निभूई अणगार वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमद्धं सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥
१२. 'तए णं से तच्चे गोयमे वायुभूति अणगारे दोच्चे णं गोयमेण अग्निभूतिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव' पज्जुवासमाणे एवं वयासी'—जइ णं भते ! चमरे असुरिदे असुरराया एमहिइदीए जाव' एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, वली णं भते ! वइरोयणिदे वइरोयणराया केमहिइदीए ? जाव' केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?
- 'गोयमा ! वली णं वइरोयणिदे वइरोयणराया महिइदीए जाव' महाणुभागे । जहा चमरस्स तहा वलिस्स वि नेयव्वं, नवरं—सातिरेणं केवलकप्पं जंबुदीवं दीवं भाणियव्वं, सेसं तं चेव निरवसेसं नेयव्वं, नवरं—नाणत्तं जाणियव्व भवणेहिं सामाणिएहिं य' ॥

१. भ० १।१० ।

२. ततेणं से दोच्चे गोतमे अग्निभूती अणगारे तच्चेणं गोतमेणं वायुभूइणा अणगारेणं एतमद्धं सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामिए समारे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता तच्चेणं गोतमेण वायुभूतिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी (क, ता), अत्र प्रश्नकर्ता तृतीयो गोतमो वर्तते तेन प्रस्तुतवाचना समीचीना न दृश्यते ।

३. भ० ३।४ ।

४. भ० ३।४ ।

५. भ० ३।४ ।

६. गोयमा ! वली वइरोयणिदे वइरोयणराया महिइदीए, से णं तत्थ तीसाए भवणावास-सयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्ह सट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसि जाव भुंज-

मारो विहरति । से जहानामए एवं जहा चमरस्स तहा वलिस्स वि नेयव्व, नवरं—सातिरेण केवलकप्प जंबुदीव भाणियव्व सेसं त चेव निरवसेस नेयव्व, नवरं—नाणत्त जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहिं (अ); गोयमा ! जाव महिइदीए ।५। से णं तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्ह सट्ठीए आतरक्खदेवसाह-स्सीण अन्नेसि च जाव भुंजमारो विहरइ । से जहानामए एवं जहा चमरस्स, नवरं—साइरेणं जंबुदीव जाव एयमेमाए अग्गम-हिसीए देवीए इमे बुइए विसए जाव विउ-व्विस्सति वा (क); गोयमा ! जाव महि-इदीए ।५। से णं तत्थ तीसाए भवणावास-सतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्ह सट्ठीए आतरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेति च जाव भुंजमारो विहरइ । से जहानामए एव जहा चमरस्स, नवरं साइरेण केवलकप्पं जंबुदीव

१३. सेव भते ? सेव भते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगव महावीरं वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे^१ •णातिदूरे सुस्सुसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पजलियडे^२ पज्जुवासइ^३ ॥
१४. तते ण से दोच्चे गोयमे अग्निभूई अणगारे समण भगव महावीरं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—जइ ण भते ! बली वइरोयणिदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए जाव^४ एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, धरणे ण भते ! नागकुमारिदे नागकुमारराया केमहिड्ढीए ? जाव^५ केवइय च ण पभू विकुव्वित्तए ? गोयमा ! धरणे ण नागकुमारिदे नागकुमारराया महिड्ढीए जाव^६ महाणुभागे । से णं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साण, छण्ह सामाणियसाहस्सीण, तायत्तीसाए तावत्तीसगण, चउण्हं लोगपालाण, छण्ह अग्गमहिंसीण सपरिवाराण, तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसि, च जाव^७ विहरइ । एवतिय च णं पभू विउव्वित्तए । से जहानामए जुवती जुवाणे जाव^८ पभू केवलकप्पं जवुदीव दीव जाव तिरियं सखेज्जे दीव-समुद्धे बहूहि नागकुमारोहि जाव विकुव्विस्सति वा । सामाणिया तावत्तीस-लोगपालग्गमहिंसीओ य तहेव जहा^९ चमरस्स, नवरं—सखेज्जे दीव-समुद्धे भाणियव्वे ॥
१५. एवं जाव^{१०} अणियकुमारा, वाणमतारा, जोईसिया वि, नवरं—दाहिणिल्ले सव्वे अग्निभूई पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥
१६. भतेत्ति ! भगव दोच्चे गोयमे अग्निभूई अणगारे समण भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—जइ ण भते ! जोइसिदे जोइसराया एमहिड्ढीए जाव^{११} एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, सक्के ण भते ! देविदे देवराया केमहिड्ढीए ? जाव^{१२} केवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए ?

दीव भाणितव्व सेस तहेव जाव विउव्वि-
स्सति वा ।

जइय भते ! बली वइरोयणिदे वइरोयण-
राया एवमहिड्ढीए जाव एवतिय च ण पभू
विउव्वित्तए, बलिस्सण भते । वइरोयणस्स
वइ^० सामाणिया देवा केमहिड्ढीया एव
सामाणिया तावत्तीसा तावत्तीसा लोगपाल-
ग्गमहिंसीओ य जहा चमरस्स, नवर—
सातिरेग जवुदीव जाव एगमेगाए अग्गमहि-
सीदेवीए इमे वतिए विसए जाव विउव्वि-
स्सति वा (ता) ।

१. स० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।

२. वायुभूई जाव विहरइ (अ, ब, म, स) ।

३. भ० ३।१२ ।

४. भ० ३।१२ ।

५. भ० ३।४ ।

६. भ० ३।४ ।

७. भ० ३।४ ।

८. भ० ३।५-७ ।

९. पू० प० २ ।

१०. भ० ३।४ ।

११. भ० ३।४ ।

गोयमा ! सक्वे णं देविदे देवराया महिड्ढीए जाव^१ महाणुभागे । से णं वत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साण, चउरासीए^२ सामाणियसाहस्सीणं,^३ तायत्तीसाए तावत्ती-सगाण, चउण्हं लोगपालाण अटुणह अग्गमहिशीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिर्वईण^४, चउण्हं चउरासीण आयरक्खसाहस्सीणं, अण्णेसि च जाव^५ विहरइ । एमहिड्ढीए जाव^६ एवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव^७ चमरस्स तहेव भाणियव्व, नवर—दो केवलकप्पे जंबुदीवे दीवे, अवसेसं तं चेव ।

एस ण गोयमा ! सक्कस्स देविदस्स देवरणो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते^८ बुइए, नो चेव णं सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा ॥

१७ जइ णं भंते । सक्वे देविदे देवराया एमहिड्ढीए जाव^९ एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासि तीसए नाम अणगारे पगइभइए^{१०} पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्वसपन्ने अल्लीणे^{११} विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्वित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ट संवच्छराइ सामणपरियाग पाउणित्ता, मासियाए^{१२} सलेहणाए अत्ताण भूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालभासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए^{१३} ओगाहणाए सक्कस्स देविदस्स देवरणो सामा-णियदेवत्ताए उवण्णे ।

तए ण तीसए देवे अहुणोववण्णमेत्ते समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव^{१४} गच्छइ [त जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इदियपज्जत्तीए, आणापाणु-पज्जत्तीए, भासा-मणपज्जत्तीए^{१५}]

तए णं त तीसय देव पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव^{१६} गयं समाण सामाणिय-परिसोववण्णया देवा करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु जएण विजएण वद्धाविति वद्धावित्ता एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिएहि

१. भ० ३।४ ।

२. चउरासीतीए (क, ता, म) ।

३. स० पा०—सामाणियसाहस्सीण जाव चउण्ह ।

४. भ० ३।४ ।

५. भ० ३।४ ।

६. भ० ३।४-७ ।

७. विसयमेत्ते ए (म, स) ।

८. भ० ३।४ ।

९. स० पा०—पगइभइए जाव विणीए ।

१०. मासिय (क, व) ।

११. असखेज्जभाग^० (अ, व), असखेज्जभागमे-त्ताए (स) ।

१२. पज्जत्तभाव (ता) ।

१३. जसो कोष्ठकवत्तिपाओ व्याख्याः प्रतीयते ?

१४. पज्जत्तभाव (अ, स) ।

दिवा देविड्डी दिवा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।
जारिसिया' णं देवाणुप्पिएहि दिवा देविड्डी दिवा देवज्जुई दिव्वे देवाणु-
भावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केण वि देविदेण देवरण्णा
दिवा देविड्डी जाव अभिसमण्णागए । जारिसिया णं सक्केण देविदेणं देवरण्णा
दिवा देविड्डी जाव अभिसमण्णागए । जारिसिया णं देवाणुप्पिएहि दिवा
देविड्डी जाव अभिसमण्णागए ।

से ण भंते । तीसए देवे केमहिड्डीए जाव केवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! महिड्डीए जाव' महाणुभागे । से णं तत्थ सयस्स विमाणस्स,
चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराण, तिण्ह
परिसाणं, सत्तण्ह अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिर्वीणं, सोलसण्ह आयरक्खदेव-
साहस्सीण, अण्णेसि च ववूण वेमाणियाण देवाणं, देवीण य जाव' विहरइ ।
एमहिड्डीए जाव' एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए । से जहानामए जुवती
जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव' एस ण गोयमा !
तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, णो चेव ण संपत्तीए
विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा ॥

१८. जइ ण भते ! तीसए देवे महिड्डीए जाव' एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए,
सक्कस्स ण भंते ! देविदस्स देवरण्णो अक्खसेसा सामाणिया देवा केमहिड्डीया ?
तहेव सव्व जाव' एस ण गोयमा ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो एगमेगस्स
सामाणियस्स' देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते वुइए, नो चेव ण संपत्तीए
विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा ।

तावत्तीसय—लोगपालगमहिसी ण जहेव' चमरस्स, नवर—दो केवलकप्पे
जवुदीवे दीवे, अण्णं त चेव ॥

१९. सेव भते ! सेवं भंते ! त्ति दोच्चे गोयमे जाव' विहरइ ॥

२०. भतेति ! भगव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समण भगव" •महावीरं वंदइ
नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता° एवं वदासी—जइ ण भते ! सक्के देविदे देवराया

१. जारिसाण (अ, व) ।

२. भ० ३।४ ।

३. भ० ३।४ ।

४. भ० ३।४ ।

५. भ० ३।१६ ।

६. भ० ३।४ ।

७. भ० ३।१७ ।

८. सामाणिय (अ) ।

९. भ० ३।६, ७ ।

१०. भ० १।५१ ।

११. स० पा०—भगव जाव एव ।

महिद्वीए जाव^१ एवइय च णं पभू विकुव्वित्तए, ईसाणे णं भते ! देविदे देवराया केमहिद्वीए ? एवं तहेव^२, नवरं—साहिए दो केवलकप्पे जंबुदीवे दीवे, अवसेस तहेव ।।

२१. जइ णं भते ! ईसाणे^३ देविदे देवराया एमहिद्वीए जाव^४ एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं खलु देवाणुप्पियाणं अतेवासी कुरुदत्तपुत्ते नामं अणगारे पगति-भइए जाव^५ विणीए अट्ठमंअट्ठमेण अणिवित्तेण, पारणए आयबिलपरिग्गहिएणं तवोकप्पेण उड्डं बाहाओ पणिज्झिय-पणिज्झिय सूरभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणिता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता,^६ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे सयसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अंगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणस्स देविदस्स देवरणो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे । जा तीसए वत्तवया^७ सच्चेव^८ अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्ते वि. नवरं—सातिरेगे दो केवलकप्पे जंबुदीवे दीवे, अवसेस तं चेव ।

एवं सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं जाव^९ एस ण गोयमा ! ईसाणस्स देविदस्स देवरणो एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसय-मेत्ते बुइए, नो चेव ण संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा ।

२२ एव सणकुमारे वि,^{१०} नवरं—वत्तारि केवलकप्पे जंबुदीवे दीवे, अदुत्तर च णं तिरियमसखेज्जे ।

एव^{११} सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं^{१२} । असखेज्जे दीव-समुद्वे सव्वे विकुव्वति, सणकुमाराओ आरद्धा^{१३} उवरिल्ला लोगपाला^{१४} सव्वे वि असखेज्जे दीव-समुद्वे विकुव्वति ।।

१. अ० ३।१६ ।

२. अ० ३।१६ ।

३. तीसाणे (ता) ।

४. अ० ३।४ ।

५. अ० ३।१७ ।

६. भोसेत्ता (अ, व, स); भोसेत्ता (ता, म) ।

७. अ० ३।१७ ।

८. सा० (ता) ।

९. अ० ३।५-७ ।

१०. अ० ३।१६ ।

११. अ० ३।५-७ ।

१२ यद्यपि सनत्कुमारे स्त्रीणामुत्पत्तिर्नास्ति तथापि या. सौधमोत्पत्त्याः समयाविकप-ल्योपमादिदशपल्योपमान्स्थितयोऽपरिगृही-तदेव्यस्ताः सनत्कुमारदेवाना भोगाय सप-द्यन्ते इति कृत्वाग्रमहिष्य इत्युक्तम् (वृ); इत्यपि सभान्व्यते 'अग्गमहिसीए' इति पाठः आदर्शेषु प्रवाहल्लपेण आगतः, वृत्तिकृता सगत्यर्थं उक्तव्याख्या कृता ।

१३. आरद्ध (अ) ।

१४. लोगपाला (म) ।

२३. एवं माहिदे^१ वि, नवर—सातिरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे ।

एवं वंभलोए वि, नवर—अट्ठ केवलकप्पे ।

एव लतए वि, नवर—सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे ।

महामुक्के सोलस केवलकप्पे । सहस्सारे सातिरेगे सोलस ।

एव पाणए वि, नवर—वत्तीस केवलकप्पे ।

एव अच्चुए वि, नवर—सातिरेगे बत्तीस केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अण्ण त चेव ॥

२४. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमंसइ जाव^१ विहरइ ॥

तामलिस्स ईसाणिद-पवं

२५. तए ण समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ^१ नयरीओ नदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

२६. तेण कालेण तेण समएणं रायणिहे नाम नगरे होत्था—वण्णओ^१ जाव^१ परिसा पज्जुवासइ ॥

२७. तेण कालेण तेण समएण ईसाणे देविदे देवराया^१ ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव^१ दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुति दिव्व देवाणुभाग दिव्व बत्तीसइवद्ध नट्टविहि उवदसित्ता जाव जामेव दिसि पाउब्भूए, तामेव दिसि पडिगए ।

२८. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता । एवं वदासी—अहो ण भते ! ईसाणे देविदे देवराया महिड्ढीए जाव^१ महाणुभागे । ईसाणस्स ण भते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहि गते ? कहि अणुपविट्ठे ? गोयमा ! सरीर गते, सरीरं अणुपविट्ठे ॥

२९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सरीर गते ! सरीर अणुपविट्ठे ? गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगभीरा । तीसे ण^१ कूडागारसालाए अदूरसामते, एत्थ ण महेगे जणसमूहे एगं महं अम्भवद्दलग वा वासवद्दलग वा महावाय वा एज्जमाण

१. भ० १।५१ ।

२. मोतातो (क, ता) ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० १६-५२ ।

५. देवराया सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरइद्धलो-

गाहिबई अट्ठावीसविमाणवाससयसहस्साहि-
वई अरयवर वत्थवेरे आलइयमालमउडे

नवहेमचारुचित्तचलकुडलविलिहिज्जमाण-
गडे जाव दस दिसावो उज्जोवेमाणे पभासे-
माणे (अ, म, स) ।

६. राय० सू० ७-१२० ।

७. भ० ३।४ ।

८. स० पा०—कूडागारसालदिट्ठतो, भाणियव्वो ।

पासति, पासित्ता तं कूडागारसाल अतो अणुपविसित्ता णं चिट्ठइ । से तेणट्ठेणं गोयमा । एव वुच्चति—सरीर गते, सरीर अणुपविट्ठे° ॥

३०. ईसाणेण भते ! देविदेण देवरणा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? के वा एस आसि पुव्वभवे ? किनामए वा ? किगोत्ते वा ? कयरसि वा गामसि वा नगरंसि वा जाव' सण्णिवेससि वा' ? कि वा दच्चा ? कि वा भोच्चा ? कि वा किच्चा ? कि वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म ? ज ण ईसाणेणं देविदेण देवरणा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?

३१. एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलिती' नाम नयरी होत्था—वण्णओ' ॥

३२. तत्थ ण तामलितीए नयरीए तामली नाम मोरियपुत्ते गाहावई होत्था—अड्ढे दित्ते जाव' वहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ॥

३३. तए णं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयसि कुटुवजागरियं जागरमाणस्स इमेयाह्वे अज्झत्थिए' •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोरानाण सुचिण्णाणं सुपरक्कताणं सुभाण कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेण वड्ढामि सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहि वड्ढामि, पसूहि वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-भोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, त कि णं अहं पुरा पोरानाणं सुचिण्णाणं •सुपरक्कताण सुभाण कल्लाणाणं° कडाण कम्माणं 'एगतसो खय' उवेहमाणे विहरामि ?

त जावताव' अहं हिरण्णेण वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे भित्त-नाति-नियग-सयण-सवधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवय विणएण चेइय पज्जुवासइ, तावता मे सेय कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

१. भ० १।४६ ।

२. वा कि वा सोच्चा (क) ।

३. तामलत्ती (म) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. भ० २।१४ ।

३. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । ११. भ० २।६६ ।

७. सुपरि० (अ, म), सुपर० (क, ता, स); सुपरि० (व) ।

८. स० पा०—सुचिण्णाण जाव कडाण ।

९. °सोक्खय (अ, क, व, स, स) ।

१०. जाव (व) ।

जलते सयमेव दारुमयं पडिग्गह्गं' करेत्ता विउल 'असण-पाण-खाइम-साइम'^१ उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ नियग-सयण^२,-संवधि-परियण आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणं विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण^३ वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुवे^४ ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गह्गं गहाय मुडे भवित्ता पाणामाए^५ पव्वज्जाए पव्वइत्तए । पव्वइए वि य ण समाणं इम एयारूव अभिग्गह् अभिगिणिहस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिविखत्तेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'^६ सूरामिमुहस्स आयावणभूमीए आया-वेमाणस्स विहरित्ताए, छट्ठस्स वि य ण पारणयसि^७ आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गह्गं गहाय तामलिक्कीए नयरीए उच्च-नीय-मण्णिभमाइं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदणं पडिग्गाहेत्ता त तिस-त्तक्खुत्तो उदएण^८ पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारित्ताए त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^९ उट्ठियम्मि सूर सहुस्स-रस्सिम्मि विणयरे तेयसा जलते सयमेव दारुमयं पडिग्गह्गं करेइ, करेत्ता विउल असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ततो पच्छा ण्हाए कयव-लिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमह्गघाभरणालकियसरीरे^{१०} भोयणवेलाए भोयणमडवसि सुहासण-वरगए तेण^{११} मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परिजणेण सद्धिं त विउल असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ । जिमियभुत्ततरागए वि य ण समाणे आयते चोक्खे परमसुइड्ढूए त मित्त^{१२}—नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ^{१३}—नियग-सयण-संवधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुवे ठावेइ, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ^{१४}—नियग-सयण-

१. पडिग्गह्ग (अ, म, स) ।

२. असण पाण खाइम साइम (अ, स) ।

३. × (क, ता, व, म, स) ।

४. स्थातिमसातिमेण (व, स) ;

५. कुटुवे (ता) ।

६. पाणायामाए (व) ।

७. पगिज्झिय २ (स) ।

८. पारणसि (म) ।

९. दएण (ता, म) ।

१०. म० २।६६ ।

११. अप्पमह्गघालकारभूसित्तसरीरे (ता) ।

१२. तए णं (अ, ता, व, म, स) ।

१३. स० पा०—मित्त जाव परियण ।

१४. स० पा०—नाइ जाव परियणस्स ।

१५. स० पा०—नाइ जाव परियण ।

संबन्धि-परियणं जेटुपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छिता मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए । पव्वइए वि य ण समाणे इमं एयारूव अभिगगहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेण जाव आहारित्तए त्ति कट्ठु इमं एयारूव अभिगगहं अभिगिण्हित्ता जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिविक्खत्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूरामिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ । छट्ठस्स वि य ण पारणयसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिगगह्य गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खारियारिया अडइ, अडित्ता सुद्धोयण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता तिसत्तक्खुत्तो उदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारेइ ॥

३४. से केणट्ठेण भते ! एव बुच्चइ—पाणामा पव्वज्जा ?

गोयमा ! पाणामाए ण पव्वज्जाए पव्वइए समाणे ज जत्थ पासइ—इदं वा खंदं वा रुदं वा सिव वा वेसमण वा अज्जं वा कोट्टकिरियं वा राय वा °ईसरं वा तलवरं वा माडबियं वा कोडुबिय वा इभं वा सेट्ठि सेणावइ वा °सत्थवाहं वा काक वा साण वा पाणं वा—उच्च पासइ उच्चं पणाम करेइ, नीय पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणाम करेइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं बुच्चइ पाणामा पव्वज्जा ॥

३५. तए ण से तामली मोरियपुत्ते तेणं ओरालेण विपुलेण पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेण सुक्के लुक्खे °निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे ° धमणिसत्तए जाए यावि होत्था ।

३६. तए ण तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए °चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे °समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेण ओरालेण विपुलेण °पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेणं सिवेण धन्नेण मंगल्लेण सस्सिरीएणं ° उदग्गेणं उदत्तेण उत्तमेण महानुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे जाव ° धमणिसत्तए जाए, त अत्थि जा ° मे उट्ठाणं कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेय

- | | |
|--|--|
| १. अभिगगह अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स); 'उवगा' (३१४२) सूत्रे सोमिलस्य प्रव्रज्याप्रसंगे एतत् पदं नास्ति । अत्रापि तथैव युक्तमस्ति । | ६. पाणुण (अ) । |
| २. पच्चोरुहइ (अ, व) । | ७. भुक्खे (अ, क, व, स), सं० पा०—लुक्खे जाव धमणि० । |
| ३. ° इरिय (ता) । | ८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । |
| ४. सं० पा०—राय वा जाव सत्थवाह । | ९. सं० पा०—विपुलेण जाव उदग्गेण । |
| ५. सत्थाहं (ता) । | १०. भ० ३।३५ । |
| | ११. × (अ); ता (ता) ; इ (व) । |

कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिण्यरे तेयसा जलते तामलिक्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य^१ परियायसगतिए य आपुच्छित्ता तामलिक्तीए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता पादुग^२-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडित्ता तामलिक्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहिक्ता^३ सलेहणा भूसणा भूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्ते त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिण्यरे तेयसा जलते^४ तामलिक्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता तामलिक्तीए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग^२-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता तामलिक्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मडल आलिहइ, आलिहिक्ता सलेहणाभूसणाभूसि^५ए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

३७. तेण कालेण तेण समएण बलिचंचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

३८. तए ण ते बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि बालतवस्सि ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता अणमण सदावेति, सदावेत्ता एव वयासि—एव खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इदाहिट्ठिया इदाहीणकज्जा, अय च ण देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलिक्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे^६ नियत्तणिय-मडल आलिहिक्ता सलेहणाभूसणाभूसि^५ए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह तामलि बालतवस्सि बलिचंचाए रायहाणीए ठित्तिपकप्प पकरावेत्ते त्ति कट्ठु अणमणस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव रुयगिदे^७ उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणति, समोहणित्ता जाव^८ उत्तरवेउव्वियाइं रुवाइ विकुव्वति, विकुव्वित्ता ताए उव्विकट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए ‘उट्ठयाए दिव्वाए’^९ देवगईए तिरिय असखेज्जाणं दीवसमुद्दाण मज्झमज्झेण ‘वीईव्वयमाणा-वीईव्वयमाणा’^{१०}

१. य पच्छासंगतिए य (अ, म) ।

२. पाउग (अ, क, व, म) ।

३. आलिभिक्ता (ता) ।

४. स० पा०—जलते जाव आपुच्छइ २ तामलिक्तीए एगते एडेइ जाव भत्त^५ ।

५. दिसामाए (क, ता) ।

६. रुययिदे (अ, व); रुयइदे (क, ता, म) ।

७. राय० सू० १० ।

८. दिव्वाए उट्ठयाए (अ, क, ता, व, स, वृ) ।

९. एते पदे ‘रायपसेणइय’ (१०) सूत्रात् पूरिते ।

जेणेव जंबुद्वीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलिक्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता तामलिस्स बालतवस्सिस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिस्सि ठिच्चा दिव्व देविड्ढि दिव्व देवज्जुति दिव्व देवाणुभाणं दिव्वं बत्तोसतिविहं नट्टुविहि उवदंसेति, उवदसेत्ता तामलि बालतवस्सि तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति^१, करेत्ता वदंति नमसति, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे बलिचचारायहाणीवत्थव्वया वहवे असुर-कुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिय वदामो नमसामो^२ *सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवय चेइय^३ पज्जुवासामो । अम्हण^४ देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इंदाहिद्विया इदाहीणकज्जा, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! बलिचच रायहाणि आढाह^५ परियाणह सुमरह, अट्ट बंधह, निदाण पकरेह, ठित्तिपकप्प पकरेह, तए णं तुब्भे कालमासे काल किच्चा बलिचचाए^६ रायहाणीए उववज्जिस्सह, तए ण तुब्भे अम्ह इदा भविस्सह, तए ण तुब्भे अम्हेहि सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुज्जमाणा विहरिस्सह ॥

३६. तए ण से तामली बालतवस्सी तेहि बलिचचारायहाणिवत्थव्वएहि बहूहि असुर-कुमारेहि देवेहि देवीहि य एवं वुत्ते समाणे एयमट्ट नो आढाइ, नो परियाणेइ^७, तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥

४०. तए णं ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया वहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि मोरियपुत्त दोच्च पि तच्च पि तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति जाव^८ अम्ह च ण देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा^९ *अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इंदाहिद्विआ इदाहीणकज्जा, त तुब्भे ण देवाणु-प्पिया ! बलिचचं रायहाणि आढाह परियाणह सुमरह, अट्ट बंधह, निदाणं पकरेह^{१०}, ठित्तिपकप्प पकरेह जाव दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे^{११} *एयमट्ट-नो आढाइ, नो परियाणेइ^{१२}, तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥

४१. तए ण ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया वहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

४२. तेण कालेणं तेणं समएण ईसाणे कप्पे अणिदे अपुरोहिण या वि होत्था ॥

१. पकरेति (अ, ता) ।

२. स० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो ।

३. अम्हाणं (अ, स) ।

४. आढह (अ, स) ।

५. बलिचचा (अ, व, म, स) ।

६. परियाणइ (अ, क, ता, म); परियाणाइ^{१३} (व) ।

७. भ० ३।३८ ।

८. स० पा०—अणिदा जाव ठित्ति० ।

९. स० पा०—समाणे जाव तुसिणीए ।

४३. तए ण से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइ सट्ठि वाससहस्साइं परियागं पाउ-
णित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सबीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता
कालकासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसय-
णिज्जंसि देवदूसतरिए^१ अंगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविद-
विरहियकालसमयसि ईसाणदेविदत्ताए^२ उववण्णे ॥
४४. तए ण से ईसाणे देविदे देवराया अट्ठणीववण्णे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव
गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव^३ भासा-मणपज्जत्तीए]^४ ॥
४५. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया वहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि
बालतवस्सि कालगतं जाणित्ता, ईसाणे य कप्पे देविदत्ताए उववण्ण पासित्ता
आसुसत्ता रुद्धा कुविया चंडिकिया मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए
मज्झमज्झेण निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव^५ जेणेव भारहे वासे
जेणेव तामलिती नयरी जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवा-
गच्छति, बामे पाए^६ सुवेण^७ बघति, तिक्खुत्तो मुहे निट्ठुहति^८, तामलितीए नगरीए
सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु 'आकड्ड-विकड्ड'^९ करे-
माणा, महया-महया सह्णेण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयासि—केस^{१०} णं
भो ! से तामली बालतवस्सी सयंगहियल्लिगे^{११} पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए ?
केस ण से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविदे देवराया ?—ति कट्ठु तामलिस्स बालतव-
स्सिस्स सरीरयं हीलति^{१२} निदति खिसंति गरहति अवमण्णंति तज्जेति तालेति
परिवहेति पव्वहेति, आकड्ड-विकड्ड करेति, हीलेत्ता^{१३} *निदिता खिसित्ता
गरहित्ता अवमण्णत्ता तज्जेत्ता तालेत्ता परिवहेत्ता पव्वहेत्ता^{१४} आकड्ड-विकड्ड
करेत्ता एगते एडंति, एडित्ता जामेव दिसि पाउव्वभूया तामेव दिसि पडिगया ॥
४६. तए ण ते^{१५} ईसाणकप्पवासी^{१६} वहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचाराय-
हाणिवत्थव्वएहिं बहूहि असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य तामलिस्स बालतवस्सिस्स
सरीरयं हीलिज्जमाणं निदिज्जमाणं^{१७} *खिसिज्जमाणं गरहिज्जमाणं अवमणि-
ज्जमाणं तज्जिज्जमाणं तालेज्जमाणं परिवहिज्जमाणं पव्वहिज्जमाणं^{१८} आकड्ड-

- | | |
|--|-----------------------------------|
| १. ° दूसतरियसि (अ); ° दूसतरिय (व) । | ९. आकट्ट-विकट्टि (क, व, म, स) । |
| २. ईसाणे ° (अ, ता) । | १०. से के (अ, व) । |
| ३. भ० ३।१७ । | ११. सईगहिय ° (क, ता, व) । |
| ४. असो कोणकवर्त्तिपाठो व्याख्यास. प्रतीयते । | १२. हीलयति (ता) । |
| ५. भ० ३।३८ । | १३. स० पा०—हिलेत्ता जाव आकड्ड । |
| ६. पायसि (क) । | १४. × (अ, व) । |
| ७. सुवेण (अ) । | १५. ईसाणसि (व) । |
| ८. उट्ठुहति (अ, व, म, स) । | १६. स० पा०—निदिज्जमाण जाव आकड्ड । |

विकडिद्ध कीरमाणं पासति, पासित्ता आसुरुत्ता^१ जाव^२ मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविदे देवराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएण विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे य कप्पे इंदत्ताए उववण्णे पासित्ता आसुरुत्ता जाव एगते एडेति, एडेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

४७. तए ण ईसाणे देविदे देवराया तेसि ईसाणकप्पवासीणं बहूण वेमाणियाण देवाण य देवीण य अतिए एयमहुं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव^३ मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलियं भिउडि निडाले साहट्टु बलिचंचारायहाणि अहे सपक्खि सपडिदिसि समभिलोएइ ॥

४८. तए णं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेण देविदेणं देवरणा अहे सपक्खि सपडिदिसि समभिलोइया समाणी तेणं दिव्वप्पभावेणं इगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था ॥

४९. तए ण ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तं बलिचंचं^४ रायहाणि इगालब्भूयं जाव^५ समजोइब्भूय पासति, पासित्ता भीआ तत्था^६ तसिआ^७ उव्विग्गा सजायभया सव्वओ समता आधावेति परिधावेति, आधावेत्ता परिधावेत्ता अणमणस्स कायं समतुरगेमाणा—समतुरगेमाणा चिट्ठति ॥

५०. तए ण ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविद देवराय परिकुविय जाणित्ता ईसाणस्स देविदस्स देवरणो तं दिव्वं देविडिद्ध दिव्व देवज्जुइं दिव्व देवाणुभाग दिव्वं तेयलेस्स असहमाणा सव्वे सपक्खि सपडिदिसि किच्चा करयलपरिगहिय दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—अहो ! ण देवाणुप्पिएहि दिव्वा देविड्डी^८ •दिव्वा देवज्जुइं दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते^९ अभिसमण्णागए, तं दिट्ठा ण देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्डी^{१०} •दिव्वा देवज्जुइं दिव्वे देवाणुभावे^{११} लद्धे पत्ते अभिसमण्णामाए, त खामेमो णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं

१. आसुरुत्ता (व, म) ।

२. भ० ३।४५ ।

३. भ० ३।४५ ।

४. बलिचंचा (अ, क, व, म, स) ।

५. भ० ३।४८ ।

६. उत्तथा (ता, स) ।

७. तेसिया (व), सुसिया (स); हस्तलिखितवृत्तौ क्वचित्सियत्ति शुषितानदरसाः, क्वचिच्च 'सुसियत्ति' शुषितानदरसा इति लभ्यते ।

८. स० पा०—देविड्डी जाव अभिसमण्णागए ।

९. स० पा०—देविड्डी जाव लद्धे ।

देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहति' णं देवाणुप्पिया ! णाइ' भुज्जो' एवं करणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेति ॥

५१. तए णं से ईसाणे देविदे देवराया तेहि वलिचचारायहाणिवत्थव्वएहि बहूहि असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य एयमट्ठं सम्मं विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेति समाणे तं दिव्वं देविड्ढि जाव' तेयलेस्स पडिसाहरइ । तप्पभित्ति च ण गोयमा ! ते वलिचंचारायहाणिवत्थव्वया' बहूवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाण देविदं देवरायं आढति' •परियाणंति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाण मगल देवय विणएणं चेइय' पज्जुवासंति, ईसाणस्स य देविदस्स देवरणो आणा-उववाय-वयण-निहेसे चिट्ठति ।

एवं खलु गोयमा ! ईसाणेण देविदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी' •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते' अभिसमण्णागए ॥

५२. ईसाणस्स भंते ! देविदस्स देवरणो केवतिय' काल ठिई पणत्ता ?

गोयमा ! सातिरेगाइ दो सागरोवमाइं ठिई पणत्ता ॥

५३. ईसाणे णं भंते ! देविदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण' •भवक्खएण ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता' कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति' •वुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदु-क्खाणं' अंतं काहिति ॥

सक्कीसाण-पदं

५४. सक्कस्स णं भंते ! देविदस्स देवरणो विमाणेहितो ईसाणस्स देविदस्स देवरणो विमाणा ईसि उच्चतरा चेव ईसि उन्नयतरा' चेव ? ईसाणस्स वा देविदस्स देवरणो विमाणेहितो सक्कस्स देविदस्स देवरणो विमाणा ईसि णीयतरा चेव ईसि निण्णतरा चेव ?

हंता गोयमा ! सक्कस्स त चेव सव्वं नेयव्वं ॥

५५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—

१. खतुमरिहतु (अ, व); लमतुमरिहतु (ता, स) । ७. स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।

२. एाइ (ता, स) । ८. केवइ (ता) ।

३. भुज्जो-भुज्जो (अ, क, स) । ९. स० पा०—आउक्खएण जाव कहि ।

४. भ० ३।५० । १०. स० पा०—सिज्झिहिति जाव अंत ।

५. ° वत्थव्वा (अ, ता, व, म, स) । ११. उन्नयरा (अ, ता, व, व, स) ।

६. आढायति (क, ता); स० पा०—आढति जाव पज्जुवासति ।

गोयमा ! से जहानामए करयले सिया—देसे उच्चे, देसे उन्नए । देसे णीए, देसे निण्णे । से तेणट्ठेण गोयमा ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो जाव' ईसि निण्णतरा चेव ॥

५६. पभू ण भते ! सक्के देविदे देवराया ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो अतियं पाउव्ववित्तए ?

हता पभू ॥

५७. से भते ! कि आढामाणे^१ पभू ? अणाढामाणे^१ पभू ?

गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

५८. पभू णं भते ! ईसाणे देविदे देवराया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो अतियं पाउव्ववित्तए ?

हंता पभू ॥

५९. से भते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?

गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ॥

६०. पभू ण भते ! सक्के देविदे देवराया ईसाणं देविद देवरायं सपक्खं^४ सपडिदिसि समभिलोइत्तए ?

^१हता पभू ॥

६१. से भते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?

गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

६२. पभू णं भते ! ईसाणे देविदे देवराया सक्क देविदं देवरायं सपक्खं सपडिदिसि समभिलोइत्तए ?

हता पभू ॥

६३. से भते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?

गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ॥

६४. पभू णं भते ! सक्के देविदे देवराया ईसाणेण देविदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?

हता पभू ॥

६५. ^१से भते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?

गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

१. भ० ३।५४ ।

४. सपक्खं (क, ता) ।

२. आढामीणे (अ, क, ता, व, म); आढाय-
माणे (स) ।

५. स० पा०—जहा पाउव्ववणा तहा दो वि
आलावगा रोयव्वा ।

३. अणाढामीणे (अ, क, ता, व, म); अणा-
ढायमाणे (स) ।

६. स० पा०—जहा पाउव्ववणा ।

६६. पभू णं भंते ! ईसाणे देविदे देवराया सक्केणं देविदेण देवरणा सद्धि आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥
६७. से भंते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ° ॥
६८. अत्थि णं भंते ! तेसि सक्कीसाणाणं देविदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं समुप्पज्जंति ?
हंता अत्थि ॥
६९. से कहमिदाणि पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविदे देवराया ईसाणस्स देविदस्स देवरणो अतियं पाउब्भवति, ईसाणे वा देविदे देवराया सक्कस्स देविदस्स देवरणो अतियं पाउब्भवति इति भो ! सक्का ! देविदा ! देवराया ! दाहिणइढलोगाहिंवई ! इति भो ! ईसाणा ! देविदा ! देवराया ! उत्तरइढलोगाहिंवई ! इति भो ! इति भो ! त्ति ते अणमणस्स किच्चाइ करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरति ॥
७०. अत्थि णं भंते ! तेसि सक्कीसाणाणं देविदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जति ?
हंता अत्थि ॥
७१. से कहमिदाणि पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं ते सक्कीसाणा देविदा देवरायाणो सणकुमार देविदं देवराय मणसीकरेति । तए णं से सणकुमारे देविदे देवराया तेहि सक्कीसाणेहि देविदेहि देवराईहि मणसीकए समाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविदाणं देवराईणं अतियं पाउब्भवति, जं से वदइ तस्स आणा-उववाय-वयण-निहेसे चिट्ठति ।

सणकुमार-पदं

७२. सणकुमारे णं भंते ! देविदे देवराया कि भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्म-
द्धिटी ? मिच्छद्धिटी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभवोहिए ?
दुल्लभवोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! सणकुमारे ण देविदे देवराया भवसिद्धिए^१, नो अभवसिद्धिए । ^२सम्म-

१. × (अ, ब, क) ।

२. ° वोहीए (अ, व, स) ।

३. भवसिद्धीए (ता) ।

४. स० पा०—एव स प सु आ च पसत्थ
नेयव्व ।

दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी । परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए । सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए । आराहए, नो विराहए । चरिमे, नो अचरिमे° ॥

७३ से केणट्ठेणं भते !

गोयमा ! सणकुमारे णं देविदे देवराया बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणकुमारे ण देविदे देवराया भवसिद्धिए', •नो अमवसिद्धिए । सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी । परित्तसंसारिए, नो अणतसंसारिए । सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए । आराहए, नो विराहए । चरिमे°, नो अचरिमे ॥

७४. सणकुमारस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिती पणत्ता ?

गोयमा ! सत्त सागरोवमाणि ठिती पणत्ता ॥

७५. से ण भते ! ताम्मो देवलोगाम्मो आउक्खएणं° भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिइ° ? कहि उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति° बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सब्बदुक्खाणं° अतं करेहिति ॥

७६. सेवं भते ! सेवं भते ।°

संगहणी-गाहा

छट्ठममासो, अद्धमासो वासाइं अट्ठ छम्मासा ।

तीसग-कुरुदत्ताणं, तव-भत्तपरिण-परियाम्मो ॥१॥

उच्चत्त विमाणाण, पाउब्भव पेच्छणा य सलावे ।

किच्च विवादुप्पत्ती, सणकुमारे य भवियत्त° ॥२॥

१. सं० पा०—भवसिद्धिए जाव नो ।

२. सं० पा०—आउक्खएण जाव कहि ।

३. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अत ।

४. भ० १।५१ ।

५. भवियत्तं (ता); अतोप्रे सर्वेज्जादशेषु 'भोया सम्मत्ता' इति पाठोस्ति, वृत्तिकृतापि व्याख्यातोसौ, किन्तु भोया-प्रकरणं तामलि-तापसप्रकरणात् पूर्वमेव समाप्तम्, तेन नावश्यकोत्तौपाठः ।

बीओ उहेसो

७७. तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था जाव' परिसा पज्जुवासइ ॥
७८. तेण कालेणं तेण समएण चमरे असुरिदे असुरराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि, चउसट्ठींए सामाणियसाहसहि जाव' नट्टविहि उवदसेत्ता जामेव दिसि' पाउवभूए तामेव दिसि पडिगए ॥
७९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
८०. एव जाव' अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव' अत्थि ण भते ! ईसिप्पभाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
८१. से कहि खाइ ण भते ! असुरकुमारा देवा परिवसति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीतुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए' एव असुरकुमारादेववत्तव्वया जाव' दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति ॥
८२. अत्थि ण भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए ?
हता अत्थि ॥
८३. केवतियण्ण' भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए पणत्ते ?
गोयमा ? जाव अहेसत्तमाए पुढवीए । तच्चं पुण पुढवि गया य गमिस्सति य ॥
८४. किपत्तियण्ण' भते ! असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ?
गोयमा ! पुंव्वेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसगतियस्स वा वेदणउवसाम-
णयाए—एव खलु असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ॥
८५. अत्थि ण भते ? असुरकुमाराण देवाण तिरियं गतिविसए पणत्ते ?
हता अत्थि ॥
८६. केवतियण्ण भते ! असुरकुमाराण देवाण तिरिय गतिविसए पणत्ते ?
गोयमा ! जाव असखेज्जा दीव-समुद्दा, नदिस्सरवर पुण दीव गया य गमिस्सति य ॥
८७. किपत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा नदिस्सरवर दीव गया य गमिस्सति य ?

१. ओ० सू० १६-५२ ।

२. राय० सू० ७-१२० ।

३. दिसं (ता, व, म, स) ।

४. अ० सू० २८७ ।

५. अ० सू० २८७ ।

६. असीउत्तर० (अ, व, म, स) ।

७. प० २ ।

८. केवतियं ण (स) ।

९. किपत्तिय ण (अ, ता, व, म) ।

गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवतो^१, एसि णं जम्मणमहेसु वा, तिक्खमणमहेसु वा, नाणुप्पायमहिमासु^२ वा, परिनिब्बाणमहिमासु वा—एव खलु असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीव गया य गमिस्संति य ॥

८८. अत्थि णं भंते असुरकुमाराण देवाणं उड्ढं गतिविसिए ?

हंता अत्थि ॥

८९. केवतियण्णं भते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसिए ?

गोयमा ! 'जाव अच्चुतो'^३ कप्पो, सोहम्मं पुण कप्प गया य गमिस्संति य ॥

९०. किपत्तियण्णं भते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्प गया य गमिस्संति य ?

गोयमा ! तेसि ण देवाणं भवपच्चइए^४ वेराणुबधे, ते ण देवा विक्कुव्वेमाणा परियारेमाणा वा आयरक्खे देवे वित्तासेति^५ अहालहुसगाइ रयणाइ गहाय आया । एगंतमत अवक्कमति ॥

९१. अत्थि ण भते ! तेसि देवाणं अहालहुसगाइ रयणाइ ?

हंता अत्थि ॥

९२. से कहमिदाणि पकरेति ?

तओ से पच्छा कायं पव्वहति ॥

९३. पभू ण भते ! असुरकुमारा देवा तत्पं गया चेव^६ समाणा ताहि अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरित्तए ?

णो इणद्वे समद्वे । ते ण ततो पडिनियत्तति, ततो पडिनियत्तत्ता इहमागच्छति^७ । जइ ण ताओ अच्छराओ आढायंति परियाणति, पभू ण ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरित्तए । अह ण ताओ अच्छराओ नो आढंति,^८ नो परियाणति, नो णं पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरित्तए । एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गया य गमिस्संति य ॥

९४. केवइयकालस्स^९ णं भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयति जाव सोहम्मं कप्पं गया य गमिस्संति य ?

गोयमा ! अणंताहिं 'ओसप्पिणीहि, अणताहिं उस्सप्पिणीहि'^{१०} समतिक्कताहि

१. भगवता (क, व, स) ।

२. नाणुप्पत्ति ° (क) ।

३. जावच्चुए (अ ता, व, म, स) ।

४. "पच्चइय (अ, व, म, स) ।

५. तासेति २ (ता) ।

६. च्चेव (ता) ।

७. इह समागच्छति (अ, व) ।

८. आढायति (क, ता, म, स) ।

९. केवइकालस्स (अ, क, व, म, स) ।

१०. उस्सप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं (अ, व, स) ।

अत्थि ण एस भावे लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ, जं णं असुरकुमारा देवा उड्ढं
उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

६५. किं निस्साए ण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ?
गोयमा ! से जहानामए इह सबरा^१ इ वा बब्बरा इ वा टकणा^२ इ वा चुचुया^३
इ वा पल्हा^४ इ वा पुलिदा इ वा एग मह 'रणं वा'^५ गड्ढं वा दुग्ग वा दरि वा
विसम वा पव्वय वा नीसाए सुमहल्लमवि आसबल वा हत्थिबल वा जोहबल वा
धणुबलं वा आगलेति, एवामेव असुरकुमारा वि देवा नण्णत्थ^६ अरहते वा
अरहतचेतियाणि वा अणगारे वा भाविअप्पणो निस्साए उड्ढ उप्पयति जाव
सोहम्मो कप्पो ॥

६६. सव्वे वि णं भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ?
गोयमा ! णो इण्ठे समट्ठे । महिड्ढिया ण असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव
सोहम्मो कप्पो ॥

६७. एस वि य ण भंते । चमरे असुरिदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो
कप्पो ?

हता गोयमा ! एस वि य णं चमरे असुरिदे असुरराया उड्ढ उप्पइयपुव्वे जाव
सोहम्मो कप्पो ॥

६८. अहो णं भते ! चमरे असुरिदे असुरराया महिड्ढीए महज्जुईए^७ जाव^८ महाणु-
भागे । चमरस्स ण भते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे
कहि गते^९ ? कहि अणुपविट्ठे ?

कूडागारसालादिट्ठतो^{१०} भाणियव्वो^{११} ॥

६९. चमरेण भते ! असुरिदेण असुररणा सा दिव्वा देविड्ढी^{१२} दिव्वे देवज्जुती दिव्वे
देवाणुभागे^{१३} किण्णा लद्धे ? पत्ते ? अभिसमण्णागए ?

१००. एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जट्ठदीवे दीवे भारहे वासे
विभ्भगिरिपायमूले बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ^{१४} ॥

१. सव्वरा (अ, व) ।

२. टकणा (क) ।

३. भुमुया (अ), चुचुया (अ), (क, व); भुत्तुया
(स) ।

४. पण्हाया (अ); पण्हा (क, ता); पण्हा
(व, स) ।

५. × (अ, क, व, स) ।

६. × (अ, ता, व) ।

७. स० पा०—महज्जुईए जाव कहिं ।

८. भ० ३।४ ।

९. ० सालदिट्ठतो (क, ता, व, स) ।

१०. भ० ३।२६ ।

११. स० पा०—त चेव ।

१२. ओ० सू० १; एतदवर्णन 'नंदणवण-सन्निभि-
प्यगासे' एतावदेव आहम् ।

१०१. तत्थ ण वेभेले सण्णिवेसे पूरणे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे दित्ते' •जाव' बहुजणस्स अपरिभूए या वि होत्था ॥

१०२. तए णं तस्स पूरणस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुटुवजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाण सुचिण्णाणं सुपरक्कताणं सुभाणं कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाह हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेण वड्ढामि, घण्णेण वड्ढामि, घण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहि वड्ढामि, पसूहि वड्ढामि, विपुलघण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं कि णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाण जाव कडाणं कम्माणं एगतसो खयं उवेहमाणे विहरामि ?

त जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नात्ति-नियग-सयण-सवधि-परियणो आढात्ति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवयं विणएणं चेइयं पज्जुवासइ, तावता मे सेयं कल्ल पाउप्पभायाए रयणोए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयमेव चउप्पुडय दारुमयं पडिग्गहगं करेत्ता, विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणं आमतत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणं विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं, वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुवे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियणं जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता°, सयमेव चउप्पुडय दारुमयं पडिग्गहगं गहाय मुडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए । पव्वइए वि य ण समाने° •इमं एयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणसि° आयावणभूमीओ पच्चोखित्ता सयमेव चउप्पुडय दारुमयं पडिग्गहगं गहाय वेभेले सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कूलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खा-यरियाए अडित्ता ज मे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे त पथे पहियाण दलइत्तए ।

१. स० पा०—जहा तामलस्स वत्तव्वया तहा २. भ० २।६४ ।

नेतव्वा, नवरं चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहय ३. भ० २।६६ ।

करेत्ता जाव विउल असणपाणखाइमसाइम ४. स० पा०—त चेव जाव आयावए° ।

जाव सयमेव ।

‘जं मे’ दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं काग-सुणयाण’ दलइत्तए । ‘जं मे’^१ तच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं मच्छ-कच्छभाणं दलइत्तए । जं मे चउत्थे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं अप्पणा आहारं आहारेत्तए—त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं जाव जं से चउत्थे पुडए पडइ, तं अप्पणा आहारं आहारेइ ॥

१०३. तए णं से पूरणे वानतवस्सी तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिणं वालतवोकम्मेणं^२ •सुकके लुक्खे निम्मंसे अट्ठि—चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे भमणिसंतए जाए यावि होत्था ॥

१०४. तए णं तस्स पूरणस्स वालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेणं पग्गहि-एणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगलेणं सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे जाव^३ भमणिसंतए जाए, तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव^३ उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्ग-च्छित्ता, पादुग-कुडिय-मादीय उवगरणं चउप्पुडयं दारुमय च पडिगगहं एगते एडित्ता, वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अट्ठनियत्तणिय-मंडल आलिहिता संलेहणा-भूसणा-भूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्ते त्ति कट्ठु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्प-भायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेले सण्णिवेसे दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियाय-संगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्ग-च्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीय उवगरणं दारुमय च पडिगगहं एगते एडेइ, एडेत्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अट्ठनियत्तणिय-मंडलं आलिहिता संलेहणा-भूसणाभूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्वत्तेण तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणु-

१. मुणकाण (क, ता); सुणगाण (म) ।

४. म० ३।३५ ।

२. जम्मे (ता) ।

५. म० २।६६ ।

३. सं० पा०—त चेव जाव वेभेलस्स ।

पुविं चरमाणे गामाणुगामं दृइज्जमाणे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोय-
संडे^१ उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढवीसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि,
उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढवीसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पणिण्हामि,^२
दो वि पाए साहट्टट्ट वग्घारियपाणी एगपोगलनिविट्टुट्टिओ अणिमिसणयणे
ईसिपवभारगएण^३ काएण, अहापणिहिण्हि गत्तेहि, सर्व्विदिण्हि गुत्तेहि एगराइयं
महापडिमं उवसपज्जेत्ता णं विहरामि ॥

१०६. तेण कालेण तेण समएणं चमरचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया या वि
होत्था ॥
१०७. तए णं से पूरणे वालतवस्सी वहुपडिपूण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता,
मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, कालभासे
काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इदत्ताए उववण्णे ॥
१०८. तए णं से चमरे असुरिदे असुरराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति-
भाव^४ गच्छइ, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव^५ भास-मणपज्जत्तीए^६] ॥
१०९. तए णं से चमरे असुरिदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गए
समाणे उड्डं बीससाए ओहिणा आभोएइ जाव^७ सोहम्मो कप्पो, पासइ य
तत्थ—

सक्कं देविदं देवरायं, मघवं पाकसासणं ।

सयक्कतुं सहस्सक्खं, वज्जपाणि पुरंदरं^८ ॥

● दाहिणड्डलोगाहिवइ वत्तीसविमाणसयसहस्साहिवइ एरावणवाहणं सुरिदं
अरयवरवत्थघरं आलइयमालमउडं नव-हेम-चारुचित्त-चंचल-कुडल-विलिहिज्ज-
माणगंड भासुरवोदि पलववणमाल दिव्वेणं वण्णेण जाव^९ दस दिसाओ
उज्जोवेमाण पभासेमाण सोहम्मो कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे सभाए सुहम्माए
सक्कंसि सीहासणसि जाव^{१०} दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणं पासइ, पासित्ता
इमेयारूवे^{११} अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—केस णं
एस अपत्थियपत्थिए^{१२} दुरतपंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे

१. असोयवणसंडे (क, म, स) ।

२. परिणिण्हामि (स) ।

३. ईसि^० (क, स) ।

४. भ० ३।४३ ।

५. पज्जत्तभाव (व) ।

६. भ० ३।१७ ।

७. असौ कोणकवर्ती पाठो व्याख्यासः प्रतीयते ।

८. सयक्कउं (क, ता) ।

९. स० पा०—पुरंदरं जाव दस ।

१०. उवा० २।४० ।

११. उवा० २।४०; भ० ३।१६ ।

१२. इमे एया^० (क, व) ।

१३. ^०पत्थिए (व, म, स) ।

ज ण ममं इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविइदीए^१ •दिव्वाए देवज्जुतीए^० 'दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिससण्णागए'^२ उप्पि अप्पुस्सुए दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सामाणियपरिसोववण्णए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—केस ण एस देवाणुप्पिया ! अपत्थियपत्थए जाव दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ?

११०. तए ण ते सामाणियपरिसोववण्णगा देवा चमरेण असुरिदेण असुररणा एव वुत्ता समाणा हट्ठु^३ •चित्तमाणादिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण^४ हियया करयलपरिगहियं दसनहं सिरसावत्त मत्थए अजलं कट्ठु जएणं विजएण वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एव वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ! सक्के देविदे देवराया जाव^५ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥

१११. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया तेसि सामाणियपरिसोववण्णगाण देवाणं अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरत्ते^६ छट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववण्णगे देवे एव वयासी—अण्णे खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अण्णे खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, महिइदीए खलु भो ! से सक्के देविदे देवराया, अप्पिइदीए खलु भो ! से चमरे असुरिदे असुरराया, त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सक्क देविदं देवरायं सयमेव अच्छासाइत्तए^७ त्ति कट्ठु उस्सिणे उस्सिणव्वभूए जाए यावि होत्था ॥

११२. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया ओहि पउजइ^८, पउजित्ता ममं ओहिणा आभो-एइ^९, आभोएत्ता^{१०} इमेयारूवे अज्झत्थिए^{११} •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^{१२} समु-प्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे जब्बदीवे दीवे भारहे वासे सुसुमार-पुरे^{१३} नयरे असोसडे^{१४} उज्जाणे असोसवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्ठयसि अट्ठमभत्त पगिण्हित्ता एगराइय महापडिम उवसपज्जित्ता ण विहरत्ति, त सेय खलु मे समण भगव महावीर णीसाए सक्क देविद देवराय सयमेव अच्छासा-इत्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता सयणिज्जाओ^{१५} अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूस्स परिहेइ, परिहेत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे

१. सं० पा०—देवइदीए जाव दिव्वे ।

७. पयुजइ (ता) ।

२. एतान्यपि अत्र सप्तम्यन्तानि पदानि विद्यन्ते ।

८. आलोएइ (व) ।

९. अतोअ्रे 'तस्स' इति पदमध्याहार्यम् ।

३. सं० पा०—हट्ठु तुडु जाव हियया ।

१०. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

४. म० ३।१०६ ।

११. सुसमारपुरे (स) ।

५. आसुरत्ते (अ, व) ।

१२. ० वयसडे (अ, क, ता, व, म, स) ।

६. अच्छासादेत्तए (अ, ता, व, स) ।

१३. सत्तणिज्जाओ (ता) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फलिहरयणं परामुसइ, एगे अवीए^१ फलिहर-
यणमायाए महया अमरिस वहमाणे चमरचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण-
णिगगच्छइ, णिगगच्छित्ता जेणेव तिगिच्छिकूडे^२ उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता जाव^३ उत्तरवेउ-
व्विय^४ रुव विकुव्वइ, विकुव्वित्ता ताए उव्विकट्टाए तुरियाए चवलाए चंडाए
जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उट्ठयाए दिव्वाए देवगईए तिरिय असखे-
ज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जंबुदीवे
दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव सुसुमारपुरे नगरे जेणेव असोयसडे उज्जाणे
जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव ममं अतिए तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्सुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ^५, *करेत्ता
वदइ, नमंसइ, वदित्ता^६ नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छासि ण भते ! तुभं
नीसाए सक्क देविदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं
दिसीभाग अवक्कमेइ, अवक्कमेत्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति, समोह-
णित्ता जाव^७ दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ^८ एग मह घोरे घोरा-
गार भीम भीमागारं भासुरं^९ भयाणीयं गभीर उत्तासणय कालड्ढरत्त-मास-
रासिसकास^{१०} जोयणसययसाहस्सीय^{११} महावीदि विउव्वइ, विउव्वित्ता अप्फोडेइ^{१२}
वग्गइ^{१३} गज्जइ, हयहेसियं करेइ, हत्थिगुलगुलाइय करेइ, रहघणघणाइयं करेइ,
पायदहरां करेइ, भूमिचवेडय दलयइ, सीहणादं नदइ, उच्छोल्लेइ
पच्छोल्लेइ, तिवति^{१४} छिदइ, वाम भुय ऊसवेइ, दाहिणहत्थपदेसिणीए
अंगुट्ठणहेण य वित्तिरिच्छं मुह विडवेइ, महया-महया सहेण कलकलरवं करेइ
एगे अवीए^{१५} फलिहरयणमायाए उड्ढ वेहास उप्पइए—खोभते चेव^{१६} अहेल्लोयं
कपेमाणे व^{१७} मेइणीतल^{१८} साकड्ढते^{१९} व तिरियल्लोय, फोडेमाणे व अबरत्तलं,

१. अवितिए (क, ता) ।

२. तिगिच्छि (ता, म); तिगिच्छ (व) ।

३. राय० सू० १० ।

४. ०वेउव्वियरुव (म) ।

५. स० पा०—करेइ जाव नमसित्ता ।

६. राय० सू० १० ।

७. समोहणइ (अ, स) ।

८. सामर (क, ता) ।

९. भासरासि ० (अ) ।

१०. जोतण ० (ता) ।

११. बहुलासु प्रतिषु क्रियानन्तर सर्वत्र कत्वा-
प्रत्ययस्स प्रयोगो ह्यन्ते, यथा—अप्फोडेइ,
अप्फोडेत्ता ।

१२. × (क, ता, व, म) ।

१३. तिपत्ति (ता) ।

१४. अन्वितिए (क, ता, व) ।

१५. च्चेव (ता) ।

१६. तिव (ता); वा (व, म) ।

१७. मेयणि० (अ); मेतिणी० (क, म);
मेदिणी० (ता) ।

१८. आकड्ढते (अ, म, स), आसाकड्ढते(व) ।

कत्थइ गज्जते, कत्थइ विज्जुयायते, कत्थइ वासं वासमाणे^१, कत्थइ रयुग्घायं पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्कायं पकरेमाणे, वाणमतरे देवे वित्तासेमाणे-वित्तासेमाणे^२, जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे-विभयमाणे, आयरक्खे देवे विपलायमाणे-विपलायमाणे^३, फलिहरयण अंबरतलसि वियट्टमाणे-वियट्टमाणे, विजब्भाएमाणे-विजब्भाएमाणे^४ ताए उक्किट्ठाए^५ •तुरियाए चव्वलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए^६ तिरियमसखेज्जाणं दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडे-सए विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, एगं पाय पउमवरवेइयाए करेइ, एग पायं सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेण महया-महया सहेण तिक्खुत्तो इदकील आउडेइ, आउडेत्ता एव वयासी—कहि ण भो^७ ! सक्के देविदे देवराया ? कहि ण ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ^८ ? •कहि ण ते तायत्तीसयतावत्तीसगा ? कहि ण ते चत्तारि लोगपाला ? कहि ण ताओ अट्ठ अग्गमहिंसीओ सपरिवाराओ ? कहि ण ताओ तिण्णि परिंसाओ ? कहि ण ते सत्त अणिया ? कहि ण ते सत्त अणियाहिंवी^९ ? •कहि ण ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ? कहि ण ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज मम अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमतु त्ति कट्ठु त अणिट्ठ अकंत अप्पिय असुभं अमणुण्णं अमणुण्णं फरुस गिर निसिरइ ।

११३. ताए ण से सक्के देविदे देवराया त अणिट्ठ^{१०} •अकतं अप्पिय असुभं अमणुण्णं •अमणाम अस्सुयपुव्वं फरुस गिरं सोच्चा निसम्म आसुरत्ते^{११} •रुद्धे कुविए चडि-विकए^{१२} मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिज्जिं निडाले साहट्ठु चमरं असुरिद असुररायं एवं वदासि—ह भो ! चमरा ! असुरिदा ! असुरराया ! अपत्थियपत्थया^{१३} ! •दुरतपतलक्खणा ! हिरिसिरिपरिवज्जिया ! •हीणपुण्ण-चाउइसा ! अज्ज न भवसि, नाहि^{१४} ते सुहमत्थीति कट्ठु तत्थेव सीहासणवरगए वज्जं परामुसइ, परामुसित्ता तं जलंत फुडत तडतडंत^{१५} उक्कासहस्साइं विणि-

१. वासेमाणे (अ, क) ।

२. वित्तासमाणे (अ) ।

३. विपलासमाणे (अ) ।

४. विजब्भासेमाणे (ता) ।

५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव तिरिय० ।

६. से (क) ।

७. सं० पा०—•सामाणियसाहस्सीओ जाव कहि ।

८. सं० पा०—अणिट्ठ जाव अमणाम ।

९. सं० पा०—आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे ।

१०. सं० पा०—अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण०

११. नहि (ब) ।

१२. तडवडत (ता), तडतडत (ब) ।

म्मुयमाणं-विणिम्मुयमाणं, जालासहस्साइ पमुंचमाण-पमुंचमाणं, इंगालसह-
स्साइ पविक्खरमाणं-पविक्खरमाणं, फुलिगजालामालासहस्सेहि चक्खुविकखे-
वविट्ठिपडिघातं पि पकरेमाणं हुयवहअइरेगतेयदिप्पतं जइणवेग फुल्लकिंसुय-
समाणं महवभयं भयंकरं चमरस्स असुरिदस्स असुररणो वहाए वज्ज निसिरइ ॥

११४. तए णं से चमरे असुरिदे असुरराया त जलतं जाव^१ भयंकरं वज्जमभिमुह
आवयमाण पासइ, पासित्ता भियाइ पिहाइ, पिहाइ भियाइ, भियायित्ता
पिहाइत्ता तहेव संभग्गमउडविडवे^२ सालवहत्थाभरणे उड्ढपाए अहोसिरे
कक्खागयसेयं पिव विणिम्मुयमाणे-विणिम्मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव^३
तिरियमसखेज्जाणं दीव-समुद्धानं मज्झमज्झेण वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव
अंबूदीवे दीवे जाव^४ जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मम अंतिए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता भीए भयगगरसरे 'भगवं सरणं' इति वुयमाणे मम दोण्ह वि
पायाण अतरसि भत्ति वेगेण समोवडि^५ ॥

११५. तए ण तस्स सक्कस्स देविदस्स देवरणो इमेयारूवे अज्झत्थिए^६ °चित्तिए
पत्थिए मणोगए सक्कप्पे ° समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिदे असुर-
राया, नो खलु समत्थे चमरे असुरिदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स
असुरिदस्स असुररणो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो,
नण्णत्थ अरहते^७ वा, अरहतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं
उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, त महादुक्ख खलु तहारूवाणं अरहंताण भगवताण
अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्ठ ओहि पउंजइ, मम ओहिणा आभोएइ,
आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्ठ ताए उक्किट्ठाए जाव^८
दिवाए देवगईए वज्जस्स वीहि अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे तिरियमसखेज्जाणं
दीव-समुद्धानं मज्झमज्झेण जाव^९ जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव मम अत्तिए
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम चउरंगुलमसंपत्त वज्जं पडिसाहरइ, अवि
याइ मे गोयमा ! मुट्ठिवाएण केसगे वीइत्था ॥

११६. तए ण से सक्के देविदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता मम तिकखुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासि—एव खलु
भते ! अह तुव्भं नीसाए चमरेण असुरिदेण असुररणा सयमेव अच्चासाइए ।
तए णं मए परिकुविणं समाणेणं चमरस्स असुरिदस्स असुररणो वहाए

१. भ० ३।११२ ।

२. °विडए (अ, क); °पिडए (व) ।

३. भ० ३।११२ ।

४. भ० ३।११२ ।

५. समोवडए (ता) ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. अरहतं (क); अन्हता (ना) ।

८. भ० ३।११२ ।

९. भ० ३।११२ ।

वज्जे निसट्ठे^१ । ताए णं भमं इमेयारूवे अज्झत्थिए^२ •चित्थिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^३ समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिदे असुरराया^४, •नो खलु समत्थे चमरे असुरिदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिदस्स असुररणो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहाख्खाणं अरहंताणं भगवताणं अणगाराणं य अच्चासायणाए त्ति कट्ठु^५ ओहि पउजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्ठु ताए उविकट्ठाए जाव^६ जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसपत्ता वज्जं पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्ठयाए ण इहमागए इह समोसठे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ता णं विहरामि । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु ण देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहति^७ णं देवाणुप्पिया ! नाइ^८ भुज्जो एव करणयाए^९ त्ति कट्ठु मम वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमि विदलेइ^{१०}, विदलेत्ता चमरं असुरिदं असुररायं एव वदासि—मुक्को सि णं भो चमरा ! असुरिदा ! असुरराया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं—नाहिं^{११} ते^{१२} दाणिं^{१३} ममातो^{१४} भयमत्थि त्ति कट्ठु जामेव दिसि पाउव्भूए तामेव दिसि^{१५} पडिगए ॥

११७. भतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव^{१६} महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्ठित्ता णं गेण्हित्तए ?

हुंता पभू ॥

११८. से केणट्ठेणं^{१७} •भते ! एव वुच्चइ—देवे णं महिड्ढीए जाव^{१८} महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्ठित्ता णं^{१९} गेण्हित्तए ?

गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते^{२०} समाणे पुव्वामेव सिग्घगई^{२१} भवित्ता ततो पच्छा

- | | |
|---|--|
| १. निसिट्ठे (अ, स) । | १०. भे (व) । |
| २. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । | ११. इदाणि (क, म) । |
| ३. सं० पा०—तहेव जाव ओहि । | १२. ममातो (अ, क) । |
| ४. अ० ३।११५ । | १३. दिसं (ता, व, म) । |
| ५. °मरुहंतु (अ, स) । | १४. अ० ३।४ । |
| ६. नाइ (ता, व) । | १५. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव गेण्हित्तए । |
| ७. पकरणयाए (वृ, स) । | १६. अ० ३।४ । |
| ८. दालेइ (अ, क, व, स), दलइ (य) । | १७. खित्ते णं (अ), विखित्ते (स) । |
| ९. णाहिं (अ, क, ता); नहि (व) । | १८. सिग्घगई (व) । |

मदगती भवति, देवे ण महिड्ढोए जाव महाणुभागे पुंवि पि पच्छा वि सीहे सीहगती चैव तुरिए तुरियगती चैव । से तेणट्ठेण जाव पभू गेण्हित्तए ॥

११६. जइ ण भते ! देवे^१ महिड्ढोए जाव^२ पभू तमेव अणुपरियट्ठित्ता ण गेण्हित्तए, कम्हा ण भते ! 'सक्केण देविदेण देवरणा'^३ चमरे असुरिदे असुरराया नो सचाइए^४ साहित्थ गेण्हित्तए ?

गोयमा ! असुरकुमाराण देवाण अहे गइविसए 'सीहे-सीहे' चैव तुरिए-तुरिए चैव, उड्ढ गइविसए अप्पे-अप्पे चैव मदे-मदे चैव । वेमाणियाण देवाण उड्ढ गइविसए सीहे-सीहे चैव । तुरिए-तुरिए चैव, अहे गइविसए अप्पे-अप्पे चैव मदे-मदे चैव ।

जावतिय खेत सक्के देविदे देवराया उड्ढं उप्पयइ एक्केण समएण, तं वज्जे दोहि, ज वज्जे दोहि, त चमरे तिहि । सव्वत्थोवे सक्कस्स देविदस्स देवरणो उड्ढल्लोयकडए, अहेल्लोयकडए^५ सखेज्जगुणे ।

जावतिय खेत चमरे असुरिदे असुरराया अहे ओवयइ एक्केण समएण, तं सक्के दोहि, ज सक्के दोहि, त वज्जे तीहि । सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिदस्स असुररणो अहेल्लोयकडए, उड्ढल्लोयकडए सखेज्जगुणे ।

एव खलु गोयमा ! सक्केण देविदेण देवरणा चमरे असुरिदे असुरराया नो सचाइए साहित्थ गेण्हित्तए ॥

१२०. सक्कस्स ण भते ! देविदस्स देवरणो उड्ढ अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत सक्के देविदे देवराया अहे ओवयइ एक्केण समएण तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, उड्ढ सखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२१ चमरस्स ण भते ! असुरिदस्स असुररणो उड्ढ अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत चमरे असुरिदे असुरराया उड्ढ उप्पयइ एक्केण समएण, तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, अहे सखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२२. *वज्जस्स ण भते ! उड्ढ अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत वज्जे अहे ओवयइ एक्केण समएण, तिरिय विसेसाहिए भागे गच्छइ, उड्ढ विसेसाहिए भागे गच्छइ ॥

१. देविदे (अ, ता, व, स) ।

२. भ० ३।१।५ ।

३. सक्के देविदे देवराया (स) ।

४. सचाइति (अ); सचाएति(स) ।

५. सिग्गे-सिग्गे (अ, स) ।

६. अहो० (अ, व) ।

७. स० पा०—वज्ज जहा सक्कस्स तहेव नवरं विसेसाहियं कायव्व ।

१२३. सक्कस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिं वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले सखेज्जगुणे ॥
१२४. चमरस्स वि जहा सक्कस्स, नवर—सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले सखेज्जगुणे ॥
१२५. वज्जस्स पुच्छा । गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिं ॥
१२६. एयस्स ण भंते ! वज्जस्स, वज्जाहिं वइस्स, चमरस्स य असुरिदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिं वा ? गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले, चमरस्स य ओवयणकाले—एए ण दोण्णि^१ वि तुल्ला सव्वत्थोवा । सक्कस्स य ओवयणकाले, वज्जस्स य उप्पयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले सखेज्जगुणे । चमरस्स य उप्पयणकाले, वज्जस्स य ओवयणकाले—एस ण दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिं ॥
१२७. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के, सक्केण देविदेण देवरण्णा महया अवमाणेण अवमाणिए समाणे चमरचचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरसि सीहासणसि ओहयमणसकप्पे चितासोयसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए भियाति ॥
१२८. तए णं चमर असुरिदं असुरराय सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसकप्प जाव^२ भियायमाण पासति, पासित्ता करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु जएण विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—कि ण देवाणुप्पिया ! ओहयमणसकप्पा चितासोयसागरसंपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठिया भियायह ?
१२९. तए ण से चमरे असुरिदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववण्णए देवे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए समण भगव महावीरं नीसाए सक्के देविदे देवराया सयमेव अच्चासाइए । तए ण तेणं परिकुविएण समाणेणं मम वहाए वज्जे निसिट्ठे^३ । त भट्ठणं^४ भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्समिह^५ पभावेण अकिट्ठे अव्वहिं अपरित्ताविं इहमागए इह समोसडे

१. विणिं (ता, म) ।

२. भ० ३।१२७ ।

३. निसिट्ठे (अ, स) ।

४. भट्ठ ण (अ, स) ।

५. जस्ससि (ता) ।

इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसपिज्जत्ता णं विहरामि । तं गच्छामो ण देवाणुप्पिया । समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव^१ पज्जुवासामो त्ति कट्ठु चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहि जाव^२ सन्विड्ढीए जाव^३ जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण^४ •करेत्ता वंदेता^५ नमसित्ता एव वयासि-एवं खलु भते ! मए तुव्वं नीसाए सक्के देविदे देवराया सयमेव अच्छासाइए^६ । •तए ण तेण परिकुविएण समाणेण ममं वहाए वज्जे निसट्ठे^७ । त भट्ठण भवतु देवाणुप्पियाण जस्समिह पभावेण अकिट्ठे^८ •अव्वहिए अपरित्तविए इहमागए इह समोसडे इह संपत्ते इह अज्ज उवसप-ज्जित्ता णं विहरामि । त खामेमि णं देवाणुप्पिया^९ ! •खमतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहति ण देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एव करणयाए त्ति कट्ठु मम वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता^{१०} उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जाव^{११} बत्तीसइवद्धं^{१२} नट्टविहि उवदसेइ, उवदसेत्ता जामेव दिसि पाउव्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥

१३०. एवं खलु गोयमा ! चमरेण असुरिदेण असुरररणा सा दिव्वा देविड्ढी^{१३} •दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धं पत्ते^{१४} अभिसमण्णागए । ठिई सागरोवम महा-विदेहे वासे सिज्झिहइ जाव^{१५} अत काहिइ ॥

१३१. किपत्तिथं ण भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! तेसि णं देवाणं अट्ठणोववण्णाण^{१६} वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए^{१७} •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^{१८} समुप्पज्जइ—अहो ! णं अम्हेहि दिव्वा देविड्ढी जाव^{१९} अभिसमण्णागए, जारिसिया णं अम्हेहि दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया ण सक्केणं देविदेणं देवरणा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए । जारिसिया ण सक्केणं देविदेणं देवरणा जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया ण अम्हेहि वि जाव अभिसमण्णागए । तं गच्छामो णं सक्कस्स देविदस्स देवरणो अंतियं पाउव्भवामो पासामो ताव सक्कस्स देविदस्स देवरणो दिव्वं देविड्ढि जाव अभिसमण्णागयं, पासउ ताव अम्ह वि सक्के देविदे देवराया

१. भ० २।३० ।

२. भ० ३।४ ।

३. राय० सू० ५८ ।

४. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमंसित्ता ।

५. सं० पा०—अच्छासाइए जाव तं ।

६. सं० पा०—अकिट्ठे जाव विहरामि ।

७. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव उत्तर० ।

८. राय० सू० ६५-१२० ।

९. वत्तीसविह (क) ।

१०. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभि० ।

११. भ० २।७३ ।

१२. अट्ठणोववण्णाण (अ, व) ।

१३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ ।

१४. भ० ३।१३० ।

दिव्व देविड्ढ जाव अभिसमण्णागयं । तं जाणामो ताव सक्कस्स देविदस्स
देवरण्णो दिव्वं देविड्ढ जाव अभिसमण्णागय, जाणत्त ताव अम्ह वि सक्के
देविदे देवराया दिव्व देविड्ढ जाव अभिसमण्णागय ।

एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

१३२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

किरिया-पवं

१३३. तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे नामं नयरे होत्था जाव^१ परिसा पडिगया ॥
१३४. तेण कालेण तेण समएण^२ *समणस्स भगवओ महावीरस्स^३ अतेवासी मडिअपुत्ते
नाम अणगारे पगइभद्दए जाव^४ पज्जुवासमाणे एव वयासी—कइ ण भते !
किरियाओ पणत्ताओ ?
मडिअपुत्ता ! पंच किरियाओ पणत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिआ,
*पाओसिआ^५, पारियावणिआ, पाणाइवायकिरिया ॥
१३५. काइया णं भते ! किरिया कइविहा पणत्ता ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पणत्ता, त जहा—अणुवरयकायकिरिया य, दुप्पउत्तकाय-
किरिया^६ य ॥
१३६. अहिगरणिआ ण भते ! किरिया कइविहा पणत्ता ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पणत्ता, तं जहा—सजोयणाहिगरणकिरिया^७ य, निवत्त-
णाहिगरणकिरिया^८ य ॥
१३७. पाओसिआ^९ ण भते ! किरिया कइविहा पणत्ता ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पणत्ता, त जहा—जीवपाओसिआ य, अजीवपाओ-
सिआ य ॥

१. भ० १।५१ ।

२. भ० १।४-८ ।

३. स० पा०—समएणं जाव अतेवासी ।

४. भ० १।२८८, २८९ ।

५. पायो^० (क, ता) ।

६. दुप्पयुत्त^० (ता) ।

७. °करण^० (क, ता, स) ।

८. °करण^० (ता, व, स) ।

९. पादोसिया (अ, क, व); पाओसिगा (ता) ।

१३८. पारियावणिआ णं भते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता' ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपारियावणिआय, परहत्थपारि-
यावणिआ य ॥
१३९. पाणाइवायकिरिया णं भते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता' ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपाणाइवायकिरिया य, परहत्थ-
पाणाइवायकिरिया य ॥

किरिया-वेदणा-पदं

१४०. पुण्वि भते ! किरिया, पच्छा वेदणा ? पुण्वि वेदणा, पच्छा किरिया ?
मडिअपुत्ता ! पुण्वि किरिया, पच्छा वेदणा । णो पुण्वि वेदणा, पच्छा किरिया ॥
१४१. अत्थि ण भते ! समणाण निग्गथाण किरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥
१४२. कहणं भते ! समणाणं निग्गथाणं किरिया कज्जइ ?
मडिअपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्तं च । एवं खलु समणाण निग्गथाण
किरिया कज्जइ ॥

अंतकिरिया-पदं

१४३. जीवे णं भते ! सया समितं एयति वेयति* 'चलति फंदइ घट्टइ' खुब्भइ उदीरइ
त त भाव परिणमइ ?
हता मडिअपुत्ता ! जीवे णं सया समितं एयति* •वेयति चलति फंदइ घट्टइ
खुब्भइ उदीरइ° तं त भावं परिणमइ ॥
१४४. जाव च ण भते ! से जीवे सया समितं •एयति वेयति चलति फंदइ घट्टइ
खुब्भइ उदीरइ त त भावं° परिणमइ, तावं च ण तस्स जीवस्स अते अत
किरिया भवइ ?
नो इणट्टे° समट्टे ॥
१४५. से केणट्टेण भते ! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे सया समितं •एयति वेयति
चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव परिणमइ, तावं च ण तस्स
जीवस्स° अते अतकिरिया न भवति ?
मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समितं •एयति वेयति चलति फंदइ

१. पुच्छा (व) ।

२. पुच्छा (ता, व) ।

३. कह णं (अ, क, व); कहं ण (ता); कहि
ण (स) ।

४. समिय (अ, ता, व, म, स) ।

५. वेदति (ता) ।

६. चलेइ फंदइ घट्टइ (अ, व, स) ।

७. स० पा०—एयति जाव तं ।

८. स० पा०—समित जाव परिणमइ ।

९. तिणट्टे (अ, क, व, म, स) ।

१०. सं० पा०—समित जाव अते ।

११. स० पा०—समित जाव परिणमइ ।

घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं° परिणमइ, ताव च णं से जीवे—‘आरभइ सारभइ समारभइ’, आरभे वट्टइ सारभे वट्टइ समारभे वट्टइ, ‘आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे’, आरभे वट्टमाणे सारभे वट्टमाणे समारभे वट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाण जीवाणं सत्ताणं दुक्खावणयाए° सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए परियावणयाए वट्टइ ॥

से तेणट्टेण मंडिअपुत्ता ! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे सया समितं एयति° •वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भावं° परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अंतकिरिया न भवति ॥

१४६. जीवे णं भते ! सया समित नो एयति° •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ ?

हुता मंडिअपुत्ता ! जीवे ण सया समित° •नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त तं भाव परिणमइ ॥

१४७. जाव च णं भते ! से जीवे नो एयति° •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भावं परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अंतकिरिया भवइ ?

हुता° मंडिअपुत्ता ! जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अंतकिरिया° भवइ ॥

१४८. से केणट्टेण° •भते ! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं त भावं परिणमइ, ताव च णं तस्स जीवस्स अते अंतकिरिया° भवइ ?

मंडिअपुत्ता ! जाव च णं से जीवे सया समित नो एयति° •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो तं त भाव परिणमइ, तावं च णं से जीवे नो आरभइ नो सारभइ नो समारभइ, नो आरभे वट्टइ नो सारभे वट्टइ नो समारभे वट्टइ, अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे, आरभे अवट्टमाणे सारभे अवट्टमाणे समारभे अवट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाणं,

१. आरभइ सारभइ समारभइ (अ, स) ।

५. स० पा०—एयति जाव नो ।

२. आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे (अ, क, ता, स) ।

६. स० पा०—समित जाव नो ।

३. वचचित्पठ्यते—‘दुक्खावणयाए’ इत्यादि, तच्च व्यक्तमेव, यच्च तत्र ‘किलामणयाए उद्वणयाए, इत्याधिकमभिधीयते° (वृ) ।

७. स० पा०—एयति जाव नो ।

८. स० पा०—हुता जाव भवइ ।

९. स० पा०—केणट्टेण जाव भवइ ।

१०. स० पा०—एयति जाव नो ।

४. स० पा०—एयति जाव परिणमइ ।

जीवाण सत्ताण अदुक्खावणयाए' •असोयावणयाए अजूरावणयाए अतिप्पावण-
याए अपिट्टावणयाए° अपरियावणयाए वट्टइ ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्क' तणहत्थयं जायतेयसि पक्खिवेज्जा, से नूण
मडिअपुत्ता ! से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाने खिप्पामेव
मसमसाविज्जइ ?

हंता मसमसाविज्जइ ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लसि उदयविदु पक्खिवेज्जा, से नूणं
मडिअपुत्ता ! से उदयविदु तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाने खिप्पामेव
विद्वसमागच्छइ ?

हता विद्वसमागच्छइ ।

से जहानामए हरए सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे बोलट्टमाणे बोसट्टमाणे समभर-
वडत्ताए चिट्ठति' । अहे णं केइ पुरिसे तंसि हरयसि एगं महं नाव सत्तसवं ✓
सतच्छिइ ओगाहेज्जा, से नूणं मडिअपुत्ता ! सा नावा तेहि आसवदारेहि" ✓
आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा बोलट्टमाणा बोसट्टमाणा समभर-
वडत्ताए चिट्ठति ?

हता चिट्ठति ।

अहे ण केइ पुरिसे तीसे नावाए सम्बओ समंता आसवदाराइं पिहेइ, पिहेत्ता
नाव-उस्सिचणएण उदय उस्सिचेज्जा से नूण मडिअपुत्ता ! सा नावा तसि
उदयसि उस्सित्तसि समानसि खिप्पामेव उदाइ' ?

हंता उदाइ ।

एवामेव मडिअपुत्ता ! अत्तत्ता-सवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स' •भासा-
समियस्स एसणासमियस्स आयाणभडमत्तनिकखेवणासमियस्स उच्चारपासवण-
खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स बइसमियस्स कायस-
मियस्स मणगुत्तस्स वइगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिदियस्स° गुत्तवभया-
रिस्स, आउत्त गच्छमाणस्स चिट्ठमाणस्स" निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स, आउत्त
वत्थ-पडिगह-कवल-पायपुच्छण गेण्हमाणस्स निक्खिवमाणस्स जाव चक्खुपम्ह-
निवायमवि वेमाया' सुहमा इरियावहिया' किरिया कज्जइ—सा पढमसमय-

१ स० पा०—अदुक्खावणयाए जाव अपरिया-
वणयाए ।

२. सुक्क (अ, व) ।

३ चिट्ठइ हता चिट्ठइ (ता, म, स) ।

४. °दारेहि (ता, व, म) ।

५. तुदाति (ता), उदाइ (म); उद्ध उदाइ (स)

६. रिया० (ता, व, म); स० पा०—इरिया-
समितस्स जाव गुत्तवभयास्सि ।

७. सर्वेण्वपि पदेषु 'आउत्त' इति पदं गम्यम् ।

८. वेमाता (ता), सपेहाए (वृपा) ।

९. रिया० (अ, ता, व) ।

वद्धपुट्टा^१, वित्तियसमयवेइया^२, तत्तियसमयनिज्जरिया^३ । सा बद्धा पुट्टा उदीरिया वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्म वावि^४ भवति । से तेणट्ठेण मडिअपुत्ता ! एवं बुच्चइ—जावं च णं से जीवे सया समित नो एयत्ति^५ *नो वेयत्ति नो चलत्ति नो फदइ नो घटइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं त भावं परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स^६ अते अतकिरिया भवइ ॥

पमत्तापमत्तद्धा-पदं

१४९. पमत्तसजयस्स णं भते ! पमत्तसजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं पमत्तद्धा कालओ केवच्चिर^१ होइ ?

मडिअपुत्ता ! एगं जीव पडुच्च जहण्णेणं एककं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी । नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा ॥

१५०. अप्पमत्तसजयस्स णं भते ! अप्पमत्तसजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं अप्पमत्तद्धा कालओ केवच्चिरं होइ ?

मडिअपुत्ता ! एगं जीव पडुच्च जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी^२ नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं ॥

१५१. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति भगव मडिअपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा प्रप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

लवणसमुद्-बुडिड-हाणि-पदं

१५२. भतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव बयासी—कम्हा णं भते ! लवणसमुद्दे चाउहसट्टमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अतिरेगे वड्ढइ वा ? हायइ वा ?

लवणसमुद्दवत्तव्वया^३ नेयव्वा जाव^४ लोयट्ठिइ, लोयाणुभावे ॥

१५३. सेव भते ! सेव भते ? त्ति जाव^५ विहरति^६ ॥

१. °समत० (ता) ।

२. वीयसमयवेत्तिता (क); °वेदिता (ता); वीय० (व) ।

३. टित्तिय० (व) ।

४. चावि (ता) ।

५. स० पा०—एयत्ति जाव अते ।

६. केवच्चिर (अ, क) ।

७. पुव्वकोडी देसूणा (क, ता, व, म, स) ।

८. जहा जीवाग्निगमे लवण० (स) ।

९. जी० ३ मन्दरोद्देशकः ।

१०. भ० १।५१ ।

११. विहरइ किरिया समत्ता (अ, क, ता, व, म, स)

चउत्थो उद्देसो

भाविअप्प-पदं

१५४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा देव वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जामाणं^१ जाणइ-पासइ ?

गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं पासइ, नो जाणं पासइ । २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देवं पासइ । ३. अत्थेगइए देवं पि पासइ, जाणं पि पासइ । ४. अत्थे-गइए नो देव पासइ, नो जाणं पासइ ॥

१५५. अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा देवि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जामाणि^२ जाणइ-पासइ ?

गोयमा ! १. ^३अत्थेगइए देवि पासइ, नो जाणं पासइ । २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देवि पासइ । ३. अत्थेगइए देवि पि पासइ, जाणं पि पासइ । ४. अत्थे गइए नो देवि पासइ, नो जाण पासइ ° ॥

१५६. अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा देवं सदेवीअं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाण-रूवेणं जामाणं जाणइ-पासइ ?

^४गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं सदेवीअं पासइ, नो जाणं पासइ । २. अत्थेगइए जाण पासइ, नो देवं सदेवीअं पासइ । ३. अत्थेगइए देव सदेवीअं पि पासइ, जाणं पि पासइ । ४. अत्थेगइए नो देवं सदेवीअं पासइ, नो जाण पासइ ° ॥

१५७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ ? बाहिं पासइ ?

^५गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पासइ, नो बाहिं पासइ । २. अत्थे-गइए रुक्खस्स बाहिं पासइ, नो अतो पासइ । ३. अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पि पासइ, बाहिं पि पासइ । ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो अंतो पासइ, नो बाहिं पासइ ° ॥

१५८. ^६अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं मूलं पासइ ? कंदं पासइ ?

गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स मूलं पासइ, नो कंदं पासइ । २. अत्थेगइए रुक्खस्स कंदं पासइ, नो मूलं पासइ । ३. अत्थेगइए रुक्खस्स मूलं पि पासइ, कंदं पि पासइ । ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो मूलं पासइ, नो कंदं पासइ ° ॥

१. जायमाण (अ, क, ब, स) ।

२. जाइमाणि (अ, ब); जायमाणि (क, स) ।

३. स० पा०—एव चेव ।

४. स० पा०—एतेण अभिजावेण चत्तारि अंगा ।

५. सं० पा०—चउमगो ।

६. स० पा०—एवं किं मूलं पासइ, कंदं पासइ ? चउमगो ।

१५६. मूलं पासइ ? खंघं पासइ ? चउभंगो ॥
 १६०. एवं मूलेण' [जाव ?] बीजं संजोएयव्वं ॥
 १६१. एवं कदेण वि समं सजोएयव्वं जाव बीयं ॥
 १६२. एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं ॥
 १६३. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा ख्वखस्स किं फलं पासइ ? बीयं पासइ ?
 चउभंगो' ॥

वाउकाय-पदं

१६४. पभू णं भते ! वाउकाए एगं महं इत्थिरूवं वा पुरिसरूवं वा [आसरूवं वा ?]
 हत्थिरूवं वा जाणरूवं वा जुगगरूवं वा गिल्लिरूवं वा थिल्लिरूवं वा सीयरूवं
 वा संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
 गोयमा ! नो इण्ठे समठ्ठे । वाउकाए' ण विकुव्वमाणे एगं महं पडागासठियं
 रूवं विकुव्वइ ॥
 १६५. पभू णं भते ! वाउकाए एगं महं पडागासठियं रूवं विउव्वित्ता अणगेइं जोय-
 गाइं गमित्तए ?
 हंता पभू ॥

१. एवमिति मूलकदसुत्राभिलाषेन मूलेन सह
 कंदादिपदानि वाच्यानि यावद्बीजपदम् । तत्र
 मूलम्, कंदः, स्कन्ध, त्वक्, शाखा, प्रवालम्,
 पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, बीजम् चेति दश पदानि,
 एषां च पञ्चचत्वारिंशद् द्विकसयोगाः भङ्गाः—

- | | |
|----------------|------------------|
| १. मूल कद | २. मूल स्कंध |
| ३. मूल त्वक् | ४. मूल शाखा |
| ५. मूल प्रवाल | ६. मूल पत्र |
| ७. मूल पुष्प | ८. मूल फल |
| ९. मूल बीज | १०. कद स्कंध |
| ११. कंद त्वक् | १२. कंद शाखा |
| १३. कद प्रवाल | १४. कंद पत्र |
| १५. कंद पुष्प | १६. कद फल |
| १७. कद बीज | १८. स्कंध त्वक् |
| १९. स्कंध शाखा | २०. स्कंध प्रवाल |
| २१. स्कंध पत्र | २२. स्कंध पुष्प |
| २३. स्कंध फल | २४. स्कंध बीज |

- | | |
|-------------------|------------------|
| २५. त्वक् शाखा | २६. त्वक् प्रवाल |
| २७. त्वक् पत्र | २८. त्वक् पुष्प |
| २९. त्वक् फल | ३०. त्वक् बीज |
| ३१. शाखा प्रवाल | ३२. शाखा पत्र |
| ३३. शाखा पुष्प | ३४. शाखा फल |
| ३५. शाखा बीज | ३६. प्रवाल पत्र |
| ३७. प्रवाल पुष्प | ३८. प्रवाल फल |
| ३९. प्रवाल बीज | ४०. पत्र पुष्प |
| ४१. पत्र फल | ४२. पत्र बीज |
| ४३. पुष्प फल | ४४. पुष्प बीज |
| ४५. फल बीज (वृ) । | |

२. चउभंगो एवं (ता) ।

३. १७६ सूत्रे 'आसरूवं' इति पाठो विशेषे
 वृत्तावपि तस्योत्प्लेखोस्ति, तेनात्रापि
 संभाव्यते ।

४. खिल्लि० (क) ।

५. वाउयाए (क, ता) ।

१६६. से भते ! किं आइड्डीए^१ गच्छइ ? परिड्डीए गच्छइ ?
 गोयमा ! आइड्डीए गच्छइ, नो परिड्डीए गच्छइ ॥
१६७. १०से भते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
 गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥
१६८. से भते ! किं आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेण गच्छइ ?
 गोयमा ! आयप्पयोगेण गच्छइ, नो परप्पयोगेण गच्छइ^० ॥
१६९. से भते ! किं ऊसिओदयं^३ गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
 गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ ॥
१७०. से भते ! किं एगओपडागं गच्छइ ? दुहुओपडागं गच्छइ ?
 गोयमा ! एगओपडाग गच्छइ, नो दुहुओपडागं गच्छइ ॥
१७१. से भते ! किं वाउकाए ? पडागा^४ ?
 गोयमा ! वाउकाए णं से, नो खलु सा पडागा ॥

बलाहक-पदं

१७२. पभू णं भते ! बलाहए एग महं इत्थिरूवं वा जाव^५ संदमाणियरूवं वा परिणा-
 मेत्तए ?
 हुता पभू ॥
१७३. पभू णं भते ! बलाहए एग महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जौयणाइं
 गतित्तए ।
 हुता पभू ॥
१७४. से भते ! किं आइड्डीए गच्छइ ? परिड्डीए गच्छइ ?
 गोयमा ! नो आइड्डीए गच्छइ, परिड्डीए गच्छइ ॥
१७५. १०से भते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
 गोयमा ! नो आयकम्मुणा गच्छइ, परकम्मुणा गच्छइ ॥
१७६. से भते ! किं आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ ?
 गोयमा ! नो आयप्पयोगेणं गच्छइ, परप्पयोगेणं गच्छइ ॥
१७७. से भते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
 गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ^० ॥

१. आयड्डीए (अ, व, स), आतिड्डीए (क, म)

५. भ० २।१६४ ।

२. स० पा०—जहा आयड्डीए एव अयकम्मुणा
 वि आयप्पयोगेण वि भाणियन्वं ।

६. स० पा०—एव नो आयकम्मुणा, परक-
 म्मुणा । नो आयप्पयोगेणं, परप्पयोगेणं ।

३. ऊसिओदयं (म, स) ।

ऊसिओदयं वा गच्छइ पतोदयं वा गच्छइ ।

४. पडाग वा (ता) ।

१७८. से भंते ! किं बलाहए ? इत्थी ?

गोयमा ! बलाहए णं से, नो खलु सा इत्थी ॥

१७९. एवं^१ पुरिसे, आसे, हत्थी ॥

१८०. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाईं जोयणाईं गमित्तए ?

जहा^२ इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं ॥

१८१. '●से भंते ! कि एगओचक्कवालं गच्छइ ? दुहओचक्कवालं गच्छइ ?

गोयमा ! एगओचक्कवालं पि गच्छइ, दुहओचक्कवालं पि गच्छइ^३ ॥

१८२. जुग-गिल्लि-थिल्लि-सीया-संदमाणिया^४ तहेव^५ ॥

किलेसोववाय-पदं

१८३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए,^६ से ण भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ ?

गोयमा ! जल्लेस्साइ^७ दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—कण्हलेस्सेसु वा, नीललेस्सेसु वा, काउलेस्सेसु वा । एव जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा । जाव^८—

१८४. जीवे णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए^९, से ण भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ^{१०} ?

गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु ॥

१८५. जीवे ण भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किलेस्सेसु उववज्जइ ?

गोयमा ! जल्लेस्साइ दव्वाइ परियाइत्ता^{११} कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, त जहा—तेउलेस्सेसु वा, पम्हलेस्सेसु वा, सुक्कलेसे वा ॥

१. भ० ३।१७३-१७८ ।

२. भ० ३।१७३-१७८ ।

३. सं० पा०—नवर एगओ चक्कवालं पि दुह-ओचक्कवालं पि भाणियव्वं ।

४. संदमाणिया ण (अ, व, स) ।

५. भ० ३।१७३-१७८ ।

६. उववज्जइए (अ) ।

७. जं लेसाइ (अ, स) ।

८. जाव जीवेण भंते जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जइ से भंते किलेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ ? जल्लेसाइ दव्वाइ परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ । त कण्हनीलकाउतेउलेसेसु वा एव जहा नेरइ-याण नवरं अब्भहियं तेउलेसेसु वा एव जस्स जा सा भाणियव्वा जाव (ता); पृ० प० २ ।

९. सं० पा०—पुच्छा ।

१०. परियाइत्ता (अ, व, स) ।

भाविअप्पा-विकुव्वणा-पदं

१८६. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभारं पव्वयं उल्लघेत्तए वा ? पल्लघेत्तए वा ?

गोयमा ! नो इण्ठे समट्ठे ॥

१८७. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारं पव्वयं उल्लघेत्तए वा ? पल्लघेत्तए वा ?

हुंता पभू ॥

१८८. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रुवाइ, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वय अतो अणुप्पविसित्ता पभू सम वा विसम करेत्तए ? विसम वा समं करेत्तए ?

गोयमा ! नो इण्ठे समट्ठे ॥

१८९. *अणगारे णं भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता जावइयाइं राय-गिहे नगरे रुवाइ, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वय अतो अणुप्पविसित्ता पभू सम वा विसम करेत्तए ? विसम वा समं करेत्तए ?

हुता पभू ° ॥

१९०. से भते ! किं माई विकुव्वइ ? अमाई ? विकुव्वइ गोयमा ! माई विकुव्वइ, नो अमाई विकुव्वइ ॥

१९१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—*माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ? गोयमा ! माई णं पणीयं पाण-भोयण भोच्चा-भोच्चा वामेत्ति । तस्स णं तेणं पणीएण पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिजा बहलीभवति, पयणुए मंस-सोणिए भवति । जे वि य से अहावायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—सोइदियत्ताए* चक्खिदियत्ताए घाणिदियत्ताए रसिदियत्ताए ° फासिदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिज-केस-मसु-रोम-नहत्ताए, सुक्कत्ताए, सोणियत्ताए । अमाई ण लूह पाण-भोयण भोच्चा-भोच्चा णो वामेइ । तस्स ण तेणं लूहेणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिजा पयणूभवति, बहले मंस-सोणिए । जे वि य से अहावायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—उच्चारत्ताए पासवण-त्ताए* खेलत्ताए सिघाणत्ताए वतत्ताए पित्तत्ताए पूयत्ताए ° सोणियत्ताए । से तेणट्ठेणं *भते ! एव वुच्चइ—माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ॥

१. वेभार (ता) ।

२. सं० पा०—एव चेव वित्तिओ वि आलावणो नवरं परियात्तिइत्ता पभू ।

३. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो ।

४. सं० पा०—सोइदियत्ताए जाव फासिदियत्ताए ।

५. सं० पा०—पासवणत्ताए जाव सोणियत्ताए ।

६. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव नो ।

१६२. माई णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते^१ कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा ।
अमाई णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ, अत्थि तस्स
आराहण ॥
१६३. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^२ ॥

पंचमो उद्देशो

१६४. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं
इत्थीरूवं वा जाव^३ सदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
१६५. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं
इत्थीरूवं वा जाव^४ सदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू ॥
१६६. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा केवइआइं पभू इत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइं जुवाणे हत्थेण हत्थसि गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा
नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियससमुग्घाएणं
समोहण्णइ जाव^५ पभू ण गोयमा ! अणगारे ण भाविअप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीव
दीव बहूहि इत्थिरूवेहि आइण्ण वित्तिकिण्ण^६ *उवत्थडं संथड फुडं अवगाढा-
वगाढं करेत्तए^७ । एस ण गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे
विसए, विसयमेत्ते बुइए, णो जेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वति वा,
विउव्विस्सति वा । एव परिवादीए नेयव्व जाव^८ संदमाणिया ॥
१६७. से जहानामए केइ पुरिसे^९ असिचम्मपायं^{१०} गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि
भाविअप्पा असिचम्मपायहत्थकिच्चगएण अप्पाणेणं उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

१. अणालोतिय^० (अ, व, स) ।

२. भ० १।५१ ।

३. भ० ३।१६४।

४. भ० ३।१६४।

५. भ० ३।४ ।

६. स हा०—वित्तिकिण्ण जाव एस ।

७. भ० ३।१६४।

८. असि चम्म^० (ता) ।

१६८. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू असिचम्म (पाय ?) हत्थकिच्च-
गयाइ रुवाइ विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, त चेव जाव'
विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा ॥
१६९. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपडागं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे
वि भाविअप्पा एगओपडागाहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्डं वेहासं
उप्पएज्जा ?
हता उप्पएज्जा ॥
२००. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा केवइयाइ पभू एगओपडागाहत्थकिच्चगयाइं
रुवाइ विकुव्वित्तए ?
एव चेव जाव' विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥
२०१. एव दुहओपडाग पि ।
२०२. से जहानामए केइ पुरिसे एगओजण्णोवइत काउ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि
भाविअप्पा एगओजण्णोवइतकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्डं वेहासं उप्पएज्जा ?
हता उप्पएज्जा ॥
२०३. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू एगओजण्णोवइतकिच्चगयाइं
रुवाइ विकुव्वित्तए ?
तं चेव जाव' विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।
२०४. एव दुहओजण्णोवइयं पि ॥
२०५. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपल्हत्थिय काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि
भाविअप्पा एगओपल्हत्थिय किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्डं वेहासं उप्पएज्जा ?
त चेव जाव' विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥
२०६. एव दुहओपल्हत्थिय पि ॥
२०७. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपलियंका काउ चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि
भावियप्पा एगओपलियंकाकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्डं वेहासं उप्पएज्जा ?
तं चेव जाव' विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥
२०८. एवं दुहओपलियंका पि ॥

१. भ० ३।१६६ ।

२. एगततोपडागा० (ता) ।

३. वेहायस (व) ।

४. हता गोयमा (अ, ता, व, स) ।

५. भ० ३।१६६ ।

६. भ० ३।१६६ ।

७. भ० ३।२०२, २०३ ।

८. भ० ३।२०२, २०६ ।

भाविअप्प-अभिजुज्जण-पदं

२०६. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोगगले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा विगघरूवं वा विगरूवं^१ वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं^२ वा अभिजुज्जितए ?
नो इण्हु सम्हु ॥
२१०. अणगारे णं^३ भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोगगले परियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा वगघरूवं वा विगरूवं वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं वा अभिजुज्जितए ?
हंता पभू^४ ॥
२११. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा (पभू ?) एगं महं आसरूवं वा अभिजुज्जितए अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ॥
२१२. से भंते ! कि आइड्डीए गच्छइ ? परिड्डीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्डीए गच्छइ, नो परिड्डीए गच्छइ ॥
२१३. *से भंते ! कि आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥
२१४. से भंते ! कि आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ !
गोयमा ! आयप्पयोगेणं गच्छइ, नो परप्पयोगेणं गच्छइ ॥
२१५. से भंते ! कि ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ^५ ॥
२१६. से णं भंते ! कि अणगारे ? आसे ?
गोयमा ! अणगारे णं से, नो खलु से आसे ॥
२१७. एवं जाव^६ परासररूवं वा ॥
२१८. से भंते ! कि 'मायी विकुव्वइ', ? अमायी विकुव्वइ ?
गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायी विकुव्वइ ॥

१. वग^० (क, ता, व, म) ।

२. इह अन्यान्यपि शृंगालादिपदानि वाचनान्तरे दृश्यन्ते (व) ।

३. सं० पा०—एवं बाहिरए पोगगले परियाइत्ता पभू ।

४. सं० पा०—एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो परप्पयोगेण उस्सिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।

५. भ० ३।२०६, २११-२१६ ।

६. 'मायी अभिजुज्जइ' अचिकृतवाचनायां 'मायी विकुव्वइ' ति दृश्यते (व) ।

२१६. मायी णं भते ! तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ, कहि उववज्जइ ?
 गोयमा ! अण्णयरेसु आभियोगिएसु^१ देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ ॥
२२०. अमायी णं भते ! तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ, कहि उववज्जइ ?
 गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ ॥
२२१. सेव भते ! सेवं भते । त्ति^२ ।

संगहणी-गाहा

१. इत्थी असी पडागा, जण्णोवइए य होइ बोद्धव्वे^३ ।
 पट्हुत्थिय पलियके, अभिओग विकुव्वणा मायी ॥

छट्ठो उद्देशो

भावियप्प-विकुव्वणा-पदं

२२२. अणगारे ण भते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउध्वियलद्धीए विभगनाणलद्धीए वाणारसि नगरि समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रुवाइं जाणइ-पासइ ?
 हता जाणइ-पासइ ॥
२२३. से भते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
 गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥
२२४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
 गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—एव खलु अहं रायगिहे नगरे समोहए, समोह-
 णित्ता वाणारसीए नगरीए रुवाइं जाणामि-पासामि । 'सिंसे दसण-विवच्चासे'^४
 भवइ । से तेणट्ठेण^५ गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्ण-
 हाभावं जाणइ-पासइ ॥

१. आभियोगेसु (अ, व, स); आभिओगिएसु ४. से से दसणे विवच्चासे (अ, व, स, वृ); से
 (ता) । से दसणे विवरीए विवच्चासे (वृपा) ।
 २. भ० १।५१ । ५. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव पासइ ।
 ३. बोद्धव्वे (अ, क, म, स) ।

२२५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी^१ •वीरियलद्धीए वेजव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए^२ रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥
२२६. ^३•से भंते ! किं तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥
२२७. से केणट्ठेणं^४ भंते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! • तस्स ण एव भवइ—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइ जाणामि-पासामि । सेस दसण-विवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं^५ •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ^६, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥
२२८. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेजव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरि, रायगिहं च नगर, अतरा^७ एगं महं जणव-यग्गं^८ समोहए, समोहणित्ता वाणारसिं नगरि रायगिहं च नगरं अतरा^९ एगं महं जणवयग्गं जाणति-पासति ?
हता जाणति-पासति ।
२२९. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥
२३०. से केणट्ठेणं^{१०} •भंते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ^{११}-पासइ ?
गोयमा ! तस्स खलु एवं भवति—एसं खलु वाणारसी नगरी, एसं खलु रायगिहे नगरे, एसं खलु अंतरा एगे महं जणवयग्गे, नो खलु एसं महं वीरियलद्धी वेज-व्वियलद्धी विभंगनाणलद्धी इड्ढि जुती जसे वले वीरिए पुरिसक्कार-परवकमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए 'सेस दसण-विवच्चासे'^{१२} भवति । से तेणट्ठेणं^{१३} •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ^{१४}-पासइ ॥

१. स० पा०—मिच्छदिट्ठी जाव रायगिहे ।

सम्मुखवतिपु आदर्शपु 'जणवयवग्ग' इति

२. स० पा०—त चेव जाव तस्स ।

पाठ आसीत् तेन तथा व्याख्यातोसौ लभ्यते ।

३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव अण्णहाभावं ।

६. तं० च अतरा (क, ता, व, म) ।

४. अतरा य (क, ता, व) ।

७. स० पा०—केणट्ठेण जाव पासइ ।

५. जणवयवग्गं (क, म, स, वृ); अत्र स्वीकृतः

८. से से दसणे विवच्चासे (अ, क, व, स) ।

पाठः समीचीनः प्रतिभाति । वृत्तिकृतः

९. स० पा०—तेणट्ठेण जाव पासइ ।

२३१. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगर समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रुवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥
२३२. से भते ! किं तहाभाव^१ जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥
२३३. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रुवाइ जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥
२३४. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए वाणारसिं नगरि समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रुवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥
२३५. से भते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥
२३६. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एव भवइ—एवं खलु अहं वाणारसिं नगरि समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रुवाइ जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ^२ ॥
२३७. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगर, वाणारसिं च नगरि, अतरा एगं महं जणवयगं^३ समोहए, समोहणित्ता रायगिहं नगरं, वाणारसिं च नगरि, अतरा^४ एगं महं जणवयगं जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥

१. तहारूव (क) ।

३. जणवयवगं (क, म, स), जणवदग्ग (ता) ।

२. स० पा०—वित्तिओ वि आलावगो एवं चेव नवर वाणारसीए समोहणा रोयव्वा । राय-गिहे नगरे रुवाइ जाणइ पासइ ।

४. त च अंतरा (क, ता, व, म) ।

२३८. से भते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
 गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥
२३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
 गोयमा ! तस्स णं एव भवति—नो खलु एस रायगिहे नगरे, नो खलु एस वाणारसी नगरी, नो खलु एस अतरा एगे जणवयग्गे, एस खलु मम वीरियलद्धी वेजव्वियलद्धी ओहिनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए । सेस दसण-अविवच्चासे भवइ । से तेणट्ठेण गोयमा !
 एव वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥
२४०. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूव वा नगररूवं वा जाव^१ सण्णिवेसरूव वा विउव्वित्तए ?
 नो तिणट्ठे समट्ठे ॥
२४१. ^२अणगारे णं भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एग महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव सण्णिवेसरूव वा विउव्वित्तए ?
 हता पभू^३ ॥
२४२. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ?
 गोयमा ! से जहानामए—जुवति जुवाणे हत्थेण हत्थे गेहेज्जा त चेव जाव^४ विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥
२४३. एवं जाव^५ सण्णिवेसरूव वा ॥

आयरक्ख-पदं

२४४. चमरस्स णं भते ! असुरिदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पणत्ताओ ?
 गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पणत्ताओ । ते ण आयरक्खा—वण्णओ^६ ॥
२४५. एव सव्वेसि इदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा^७ ॥
२४६. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^८ ॥

१. भ० १।४९ ।

२. स० पा०—एव वित्तिओ वि आलावगो नवरं
 बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ।

३. भ० ३।१८६ ।

४. भ० १।४९ ।

५. राय० सू० ६६४; वण्णओ जहा रायपसेण-
 इज्जे (व, म); अथ च पुस्तकान्तरे साक्षाद्
 दृश्यत एव (वृ) ।

६. प० २ ।

७. भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देशो

लोगपाल-पदं

२४७. रायगिहे नगरे जाव पञ्जुवासमाणे एवं वयासी—सक्कस्स णं भत्ते ! देविदस्स देवरण्णो कति लोगपाला पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे जमे वरुणे वेसमणे ॥

२४८. एएसि णं भत्ते ! चउहं लोगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—सम्भप्पमे वरसिट्ठे सयजले वग्गु ॥

२४९. कह्णि णं भत्ते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सम्भप्पमे नाम महाविमाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसभरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त ताराख्वाण वहुइं जोयणाइं जाव पंच वडेसया पण्णत्ता, तं जहा—असोगव-डेंसए, सत्तवण्णवडेसए, चंपयवडेसए, चूयवडेसए, मज्जे सोहम्मवडेसए ॥

सोम-पदं

२५०. तस्स णं सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं सोहम्मे कप्पे असखे-ज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सम्भप्पमे नाम महाविमाणे पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं^१ आयाम-विक्खभेण, उयालीस^२ जोयणसयसहस्साइं वावत्तं च सहस्साइं अट्ठय^३ अडयाले जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते । जा सूरिया-भविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव अभिसेओ, नवरं—सोमो देवो ॥

२५१. सम्भप्पभस्स णं महाविमाणस्स अहे, सपक्खि, सपडिदिंसि असखेज्जाइं जोयण-सहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो

१. सूरिम (क, ता, म) ।

२. गह (ता) ।

३. राय० सू० १२४, १२५ ।

४. भूय० (व, म, स) ।

५. अड्ढ० (ता) ।

६. ऊया० (क, ता, व) ।

७. × (व, स) ।

८. राय० सू० १२६-१८० ।

९. जोयणसयसहस्साइं (क, व) ।

सोमा नामं रायहाणी पणत्ता—एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबु-
द्वीवप्पमाणा । वेमाणियाणं पमाणस्स अद्ध नेयव्व^१ जाव^२ ओवारियलेण^३ सोलस
जोयणसहस्साइ आयाम-विक्खंभेण, पणासं जोयणसहस्साइ पच य सत्ताणउए
जोयणसते किंचि विसेसूणे परिकखेवेण पणत्त । पासायाण चत्तारि परिवाडीओ
नेयव्वाओ, सेसा नत्थि ॥

२५२. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-
वयण-निद्देसे चिट्ठति, तं जहा—सोमकाइया इ वा, सोमदेवयकाइया
इ वा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा, अग्गिकुमारीओ,
वायकुमारा^४, वायकुमारीओ^५, चदा, सूरा, गहा णक्खत्ता, ताराखा—
जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते त्थभत्तिया, तप्पविख्या, त्थभारिया सक्कस्स
देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति ॥

२५३. जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण जाइ इमाइं समुप्पज्जति, तं जहा—
गह्दडा इ वा, गह्मुसला इ वा, गह्गज्जिया इ वा, गह्जुद्धा^६ इ वा, गह्सि-
घाडगा इ वा, गहावसव्वा इ वा, 'अब्भा इ वा'^७ अब्भक्खत्ता इ वा, सभा इ
वा, गंधव्वतगरा इ वा, उक्कापाया इ वा, दिसिदाहा इ वा, गज्जिया इ वा,
विज्जुया इ वा, पसुवुट्ठी इ वा, जूवे इ वा, जक्खालित्तए त्ति वा, धूमिया इ वा,
महिया इ वा, रयुग्घाए त्ति वा, चदोवरागा इ वा, सूरुवरागा इ वा, चदपरि-
वेसा^८ इ वा, सूरपरिवेसा^९ इ वा, पडिचदा इ वा, पडिसूरा इ वा, इदधणू इ
वा, उदगमच्छा^{१०} इ वा, कपिहसिया इ वा, अमोहा इ वा, पाईणवाया इ वा,
पईणवाया इ वा^{११}, *दाहिणवाया इ वा, उदीणवाया इ वा, उड्ढावाया इ वा,
अहोवाया इ वा, तिरियवाया इ वा, विदिसीवाया इ वा, वाउब्भामा इ वा,
वाउक्कलिया इ वा, वायमडलिया इ वा, उक्कलियावाया इ वा, मडलियावाया
इ वा, गुजावाया इ वा, भुम्मावाया इ वा^{१२}, सवट्टयवाया इ वा, गामदाहा
इ वा, जाव^{१३} सण्णिवेसदाहा इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, घणक्खया, कुल-
क्खया, वसणब्भूया मणारिया^{१४}—जे यावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देवि-

१. राय० सू० २०४-२०८ ।

२. भ० २।१२१ ।

३. उवगारियलेण (अ, स) ।

४. वायु० (क); वाउ० (ता) ।

५. वायु० (क); वाउ० (ता) ।

६. एव गह्जुद्धा (अ, क, ता, व, म, स) ।

७. X (अ, ता, म, स) ।

८. °परिएसा (व, म) ।

९. °परिएसा (व, म) ।

१०. उदगमच्छेणे (व, म) ।

११. स० पा०—पईणवाया इ वा जाव सवट्टय-
वाया ।

१२. भ० १।४६ ।

१३. मकारोलाक्षणिक ।

दस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया^१ अविण्णाया,
तेसि वा सोमकाइयाण देवाणं ॥

२५४. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा
अभिण्णाया^१ होत्था, तं जहा—इंगालए वियालए लोहियक्खे सण्णिच्चरे^२ चदे
सूरे सूक्के वुहे वहस्सई राहू ॥

२५५. सक्कस्स णं देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सतिभागं^३ पलिओवमं ठिई
पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं^४ देवाणं एग पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । एमहि-
ड्ढीए जाव^५ महाणुभागे सोमे महाराया ॥

यम-पदं

२५६. कहि ण भंते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं
महाविमाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! सोहम्मवडेसयस्स^६ महाविमाणस्स दाहिणे णं सोहम्मे कप्पे
असत्तेज्जाइं जोयणसहस्साइ वीईवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो
जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे^७ पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसय-
सहस्साइ—जहा सोमस्स विमाण तहा जाव^८ अभिसेओ । रायहाणी तहेव
जाव^९ पासायपंतीओ ।

२५७. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा^{१०}—उववाय-
वयण-निहेसे^{११} चिट्ठंति, त जहा—जमकाइया इ वा, जमदेवयकाइया^{१२} इ वा,
पेतकाइया इ वा, पेतदेवयकाइया इ वा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा,
निरयपाला^{१३}, अभियोगा^{१४}—जे यावण्णे तहप्पगारा^{१५} सव्वे ते तब्भत्तिगा,
तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो आणा^{१६}—
उववाय-वयण-निहेसे^{१७} चिट्ठंति ॥

१ असुया (अ, क, म); अस्मृतपदस्य असुयं न. विमाणो (क. ता, व) ।

अमुय इतिरूपद्वयं भवति । वृत्तिकृता असु- ६. भ० ३।२५० ।

यत्ति अस्मृता इति व्याख्यातम् । १०. भ० ३।२५१ ।

२. अहाभिण्णाया (क, ता) ११. स० पा०—आणा जाव चिट्ठंति ।

३ सण्णिचरे (अ); सण्णिच्चरे (क, व, म); १२. जमदेवतक्काइया (ता); जमदेवकाइया
सण्णिचरे (ता) । (म, स) ।

४. सइभाग (ता), सत्तिभाग (व, म) । १३. निरयवाला (अ) ।

५. अहापच्चभिण्णायाण (क); अहापच्चभिण्णा- १४. अभियोगा (ता, व) ।

ताण (ता) । १५. तप्पगारा (ता, व) ।

६. भ० ३।४ ।

१६. स० पा०—आणा जाव चिट्ठंति ।

७. सोहम्मवडसयस्स (स) ।

२५८. जंबुद्वीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जति, तं जहा—
 डिवा इ वा, डमरा इ वा, कलहा इ वा, बोला इ वा, खारा इ वा, महाजुद्धा
 इ वा, महासंगामा इ वा, महासत्थनिवडणा इ वा, महापुरिसनिवडणा^१ इ वा,
 महारुहरिनिवडणा इ वा, दुब्भूया इ वा, कुलरोगा इ वा, गामरोगा इ वा,
 मंडलरोगा इ वा, नगररोगा इ वा, सीसवेयणा इ वा, अच्छिवेयणा इ वा
 कण्णवेयणा इ वा, नह्वेयणा इ वा, दंतवेयणा इ वा, इंदग्गहा इ वा, खदग्गहा
 इ वा, कुमारग्गहा इ वा, जक्खग्गहा इ वा, भूयग्गहा^२ इ वा, एगाहिया इ
 वा, बेहिया इ वा, तेहिया इ वा, चाउत्थया^३ इ वा, उव्वेयगा इ वा, कासा इ
 वा, 'सासाइवा, सोसा'^४ इ वा, जरा इ वा, दाहा इ वा, कच्छकोहा इ वा,
 अजीरगा इ वा, पंडुरोगा इ वा, अरिसा^५ इ वा, भगंदला^६ इ वा,
 हियसूला इ वा, मत्थयसूला इ वा, जोणिसूला इ वा, पाससूला इ वा,
 कुच्छिसूला इ वा, गाममारी इ वा, नगरमारी इ वा, खेडमारी इ वा, कव्वड-
 मारी इ वा, दोणमुहमारी इ वा, मडंवमारी इ वा, पट्टणमारी इ वा, आसममारी
 इ वा, सवाहमारी इ वा, सण्णिवेसमारी इ वा, पाणक्खया, जणक्खया,
 धणक्खया, कुलक्खया, 'वसणब्भूया मणारिया'^७ जे यावण्णे^८ तहप्पगारा ण ते
 सक्कस्स देविदस्स देवरण्णे जमस्स महारण्णे अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया
 अविण्णाया, तेसि वा जमकाइयाण देवाण ॥
२५९. सक्कस्स देविदस्स देवरण्णे जमस्स महारण्णे इमे देवा अहावच्चा
 अभिण्णाया^९ होत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अबे अंबरिसे चेव, सामे सवले त्ति यावरे ।
 रुद्धोवरुद्धे काले य, महाकाले त्ति यावरे ॥१॥
 'असिपत्ते घणू कुंभे'^{१०}, वालुए^{११} वेतरणी^{१२} त्ति य ।
 खरस्सरे महाघोसे, एते^{१३} पण्णरसाहिया ॥२॥

१. एवं महापुरिस^० (अ, क, ता, व, म, स) । ८. जे या वि अन्ने (व, म) ।
 २. भूमग्गहा (ता) । ९. अहाभिण्णाया (क, ता) ।
 ३. चतुत्थया (ता, म) । १०. असी य असिपत्ते कुंभे (क, वृ); असिपत्त
 ४. खासा इ वा सासा (अ) । घणू कुंभे (वृणा) ।
 ५. अरसा (अ); हरिसा व, म) । ११. वालू (अ, ता, व, म, स) ।
 ६. भगंदरा (ता) । १२. वेदरणी (व, म) ।
 ७. भूयमणारिया (अ, क, ता); ^०भूतामणा- १३. एमेए (क, व, वृ) ।
 रिया (व) ।

२६०. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सतिभागं पलिअ ठिई पणत्ता, अहावच्चाभिण्णायान देवाण एगं पलिओवम ठिई पणत्ता । एमहिइदीए जाव^१ महाणुभागे जमे महाराया ॥

वरुण-पदं

२६१. कहि ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सयंजले नामं महाविमाणे पणत्ते ?

गोयमा ! तस्स ण सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमे णं जहा सोमस्स तहा विमाण-रायघाणीओ भाणियव्वा जाव^१ पासादवडेसया, नवरं—नाभं-नाणत्त ॥

२६२ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो^१ •इमे देवा आणाउववाय-वयण-निद्देसे^० चिट्ठति, त जहा—वरुणकाइया इ वा, वरुणदेवयकाइया इ वा, नागकुमारा, नागकुमारीओ, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीओ, थणियंकुमारा, थणियंकुमारीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया^१, •तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे^० चिट्ठति ॥

२६३. जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाई इमाई समुप्पज्जंति, तं जहा—अइवासा इ वा, मंदवासा इ वा, सुवुट्ठी इ वा, दुवुट्ठी^१ इ वा, उदम्भेदा^१ इ वा, उदप्पीला^१ इ वा, ओवाहा^१ इ वा, पवाहा इ वा, गामवाहा इ वा, जाव^१ सण्णिवेसवाहा इ वा, पाणक्कखया^१, •जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया मणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया असुया अविण्णाया^०, तेसिं वा वरुणकाइयाण देवाणं ॥

२६४. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाय होत्था, त जहा—

कक्कोडए कद्दमए, अंजणे संखवालए पुडे ।

पलासे मोए जए, दहिमुहे^१ अयपुले कारयिए ॥

१. भ० ३।४ ।

२. भ० ३।२५०, २५१ ।

३. स० पा०—महारण्णो जाव चिट्ठति ।

४. स० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठति ।

५. मदवुट्ठी (अ, क, ता, व, म) ।

६. उदम्भेदा (क, व) ।

७. उज्ज्वीला (क, व) ।

८. उदवाहा (अ, क) ।

९. भ० ३।२५८ ।

१०. स० पा०—पाणक्खया जाव तेसिं ।

११. ओहिमुहे (क); उदधिमुहे (ता) ।

२६५. सक्कस्स णं देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो देसूणाइ दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायानं देवाण एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता । एमहिड्डीए जाव^१ महानुभागे वरुणे महाराया ॥

वेसमण-पदं

२६६. कहि णं भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गू नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! तस्स ण सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स उत्तरे णं जहा सोमस्स विमाण-रायहाणि-वत्तव्वया तथा नेयव्वा जाव^१ पासादवडेसया ॥

२६७. सक्कस्स णं देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति, त जहा—वेसमणकाइया इ वा, वेसमणदेवयकाइया इ वा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, 'दीवकुमारा, दीवकुमारीओ,^२ दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमतारा, वाणमतरीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया^३ •तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे^४ चिट्ठति ॥

२६८. जब्बुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं संमुप्पजंति, तं जहा—अयागरा इ वा, तउयागरा इ वा, तवागरा इ वा, 'सीसागरा इ वा, हिरण्णागरा इ वा^५ सुवण्णागरा इ वा, रयणागरा इ वा, वइरागरा इ वा, वसुहारा इ वा, हिरण्णवासा इ वा, सुवण्णवासा इ वा, रयणवासा इ वा, वइरवासा इ वा, आभरणवासा इ वा, पत्तवासा इ वा, पुप्फवासा इ वा, फलवासा इ वा, बीय-वासा इ वा, मल्लवासा इ वा, वण्णवासा इ वा, चुण्णवासा इ वा, गंधवासा इ वा, वत्थवासा इ वा, हिरण्णवुट्ठी इ वा, सुवण्णवुट्ठी इ वा, रयणवुट्ठी इ वा, वइरवुट्ठी इ वा, आभरणवुट्ठी इ वा, पत्तवुट्ठी इ वा, पुप्फवुट्ठी इ वा, फलवुट्ठी इ वा, बीयवुट्ठी इ वा, मल्लवुट्ठी इ वा, वण्णवुट्ठी इ वा, चुण्णवुट्ठी इ वा, गंधवुट्ठी इ वा, वत्थवुट्ठी इ वा, भायणवुट्ठी इ वा, खीरवुट्ठी इ वा, सुकाला^६ इ वा, दुक्काला इ वा, अण्णग्घा इ वा, महग्घा इ वा, सुभिक्षा इ वा, दुग्भिक्षा इ वा, कयविककया इ वा, सण्णिही इ वा, सण्णिचया इ वा, निही इ वा, निहाणाइ वा—चिरपोराणाइ वा, पहीणसामियाइ वा, पहीणसेतुयाइ वा, पहीणमग्गाइ^७ वा, पहीणगोत्तागाराइ वा, उच्छण्णसामियाइ वा, उच्छण्णसेतुयाइ वा, (उच्छण्णमग्गा इ वा ?) उच्छण्णगोत्तागारा इ वा, सिंघाडग-त्तिग-चउक्क-

१. भ० ३।४ ।

२. भ० ३।२५०, २५१ ।

३. × (क, ता, म) ।

४. सं० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठति ।

५. एवं सिंसाग हिरण्ण० (ता) ।

६. सुयाला (ता) ।

७. × (क, ता, व, म) ।

चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वा' नगरनिद्धमणेसु' वा, सुसाण-गिरि-कदर-
सति-सेलोवट्ठाण-भवणगिहेसु सनिक्खित्ताइ' चिट्ठति, न ताइं सक्कस्स देविदस्स
देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो 'अण्णायाइ अदिट्ठाइं असुयाइं अमुयाइं अविण्ण-
याइ' तेसि वा वेसमणकाइयाणं देवाणं ॥

२६६. सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाया
होत्थे, त जहा—पुण्णभदे माणिभदे सालिभदे सुमणभदे चक्करक्खे पुण्णरक्खे
सव्वाणे सव्वजसे सव्वकामे' समिद्धे अमोहे असणे' ॥

२७०. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइ ठिई
पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं देवाण एगं पलिओवम ठिई पण्णत्ता । एम-
हिड्ढीए जाव' म्हाणुभागे वेसमणे महाराया ॥

२७१. सेव भंते ! सेव भते ! ति' ॥

अट्ठमो उद्देसो

२७२. रायंगिहे नगरे जाव' पज्जुवासमाणे एव वयासी—असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं
कइ देवा आहेवच्च जाव' विहरति ?
गोयमा ! दस देवा आहेवच्च जाव विहरति, तं जहा—चमरे असुरिदे असुर-
राया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे, बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया, सोमे, जमे,
वेसमणे', वरुणे ॥

१. °द्ववणेषु (वृ) ।

२. सनिक्खित्ता (अ, ता) ।

३. अन्नाया अदिट्ठा असुया असुया अविण्णाया
(अ, क, ता, व) ।

४. सव्वकामं (अ, ता, म) ।

५. असमे (अ), असते (क, स) ।

६. भ० ३।४ ।

७. भ० १।५१ ।

८. भ० १।४-१० ।

९. भ० ३।४ ।

१०. स्थानागे ४।१२२ सूत्रे 'दाक्षिणात्यलोकपालेषु

यौ तृतीयचतुर्थौ तौ ओदीच्येषु चतुर्थतृतीयौ
स्तः । प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु वृत्तौ च नैव क्रमो
लभ्यते । वृत्तिकृता अस्य क्रमस्य पाठान्तर-
रूपेणोत्प्लेखः कृतः—इह च पुस्तकान्तरेऽप्य-
मर्थो ऽन्यते—दाक्षिणात्येषु लोकपालेषु प्रति-
सूत्र यौ तृतीयचतुर्थौ तावदीच्येषु चतुर्थ-
तृतीयाविति । किन्तु वैमानिकदेवेषु वृत्तिकृता
तृतीयचतुर्थयोर्व्यत्ययः स्वीकृतः—

सनत्कुमारादीन्द्रयुग्मेषु पूर्वैन्द्रापेक्षयोत्तरेन्द्र-
सम्बन्धिना लोकपालानां तृतीयचतुर्थयोर्व्यं-
त्ययो वाच्यः (वृ) । अस्मां क्रमः पूर्वक्रमान्
भिन्नोस्ति । अस्माभिः सर्वत्र स्थानाङ्गा-
नुसारी एक एव क्रमः स्वीकृतः ।

२७३. नागकुमाराणं भते !^१ • देवाणं कइ देवा आहेवच्च जाव^२ विहरति ?
 गोयमा ! दस देवा आहेवच्च जाव विहरंति, तं जहा—धरणे णं नागकुमारिदे
 नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, सेलवाले, संखवाले, भूयाणदे नागकुमारिदे
 नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, 'सखवाले, सेलवाले'^३ ॥
२७४. जहा नागकुमारिदाणं एताए वत्तव्वयाए नीयं एव इमाण नेयव्व—
 सुवण्णकुमाराणं—वेणुदेवे, वेणुदाली, चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे ।
 विज्जुकुमाराणं—हरिकत-हरिस्सह-पभ-सुप्पभ-पभकत-सुप्पभकता ।
 अग्गिकुमाराणं—अग्गिसिह-अग्गिमाणव-तेउ-तेउसिह^४—तेउकत-तेउप्पभा ।
 दीवकुमाराणं—पुण्ण-विसिट्ठ^५—रूय-रूयस-रूयकत-रूयप्पभा ।
 उदहीकुमाराणं—जलकत-जलप्पभ-जल-जलरूय^६—जलकत-जलप्पभा ।
 दिसाकुमाराणं—अमितगति, अमितवाहण-तुरियगति-खिप्पगति-सीहगति-सीह-
 विक्कमगती ।
 वाउकुमाराणं—वेलंब-पभंजण-काल-महाकाल-अजण-रिट्ठा ।
 थणियकुमाराणं—घोस-महाघोस-आवत्त-वियावत्त-नदियावत्त-महानदियत्ता ।
 एव भाणियव्वं जहा^७ असुरकुमारा^८ ॥
२७५. पिसायकुमाराणं^९ • भते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्च जाव^{१०} विहरति ?
 गोयमा ! दो देवा आहेवच्च जाव विहरति, त जहा—

संगहणी-नाहा

काले य महाकाले, सुरूव-पडिरूव-पुण्णभद्दे य ।
 अमरवई माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ॥१॥
 किन्नर-किपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे ।
 अइकाय-महाकाए, गीयरई चेव गीयजसे ॥२॥
 एते वाणमताराण देवाण ॥

१. स० पा०—पुच्छा ।

२. भ० ३।४ ।

३. सेलवाले सखवाले (अ, क, म) ।

४. तेउसीह (अ) ।

५. वसिट्ठ (ता, व); विसिट्ठ (स) ।

६. जलरूय (अ); जलरते (ठा० ४।१२२) ।

७. भ० ३।२७२ ।

८. अतोप्रे आदर्शेषु वृत्ती च साकेतिक. पाठो ६. स० पा०—पुच्छा ।

वर्तते । वृत्तिकृता तस्योल्लेख एव कृतः— १०. भ० ३।४ ।

सो १ का २ चि ३ प्य ४ ते ५ रु ६ ज ७

तु ८ का ९ आ १० इत्यनेनाक्षरदशकेन
 दाक्षिणभवनपतीन्द्राणां प्रथमलोकपालनामानि
 सूचितानि, वाचनान्तरे त्वेताव्येव गाथाया,
 साचेयम्—सोमे य १ महाकाले २ चित्त ३
 प्यभ ४ तेउ ५ तह रुए चेव ६ । जल तह ७
 तुरिय गई य ८ काले ९ आउत्त १० पढमा
 उ ॥ एव द्वितीयादयोप्यभ्यूहा. (वृ) ।

२७६. जोइसियाणं देवाणं दो देवा आहेवच्चं जाव^१ विहरति, तं जहा—चंदे य, सूरे य ॥
२७७. सोह्म्मीसाणेसु ण भते ! कप्पेसु कइ देवा आहेवच्चं जाव^२ विहरति ?
 गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरति, त जहा—सक्के देविदे देवराया,
 सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे । ईसाणे देविदे देवराया, सोमं, जमे, 'वेसमणे,
 वरुणे'^३ ।
 एसा वत्तव्वया सव्वेसु वि कप्पेसु एए चेव भाणियव्वा । जे य इंदा ते य
 भाणियव्वा ॥
२७८. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^४ ॥

नवमो उद्देशो

२७९. रायगिहे जाव^१ एव वयासी—कइविहे णं भते ! इदियविसए पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे इंदियविसए^२ पणत्ते, तं जहा—सोत्तियविसए चक्खिदि-
 यविसए घाणियविसए रसियविसए फासियविसए । जीवाभिगमे जोइ-
 सियउद्देशओ नेयव्वो अपरिसेसो ॥

१. भ० ३।४ ।

२. भ० ३।४ ।

३. वरुणे वेसमणे (क, व, म, स) ।

४. भ० १।५१ ।

५. भ० १।४-१० ।

६. वाचनान्तरे च—'इदियविसए उच्चावय—
 सुब्भिणो' त्ति व्यते, तत्र इन्द्रियविषयसूत्रं

दर्शितमेव, उच्चावयसूत्रं त्वेवम्—'से नूए
 भते ! उच्चावएहिं सद्परिणामेहिं परिणम-
 माणा पोग्गला परिणमतीति वत्तव्वं सिया ?
 हंता गोयमा !' इत्यादि, 'सुब्भिणो त्ति,
 इदं सूत्रं पुनरेवम्—'से नूण भते ! सुब्भिसद्-
 पोग्गलां दुब्भिसद्वत्तोए परिणमति ? हंता
 गोयमा !' इत्यादि ।

दसमो उद्देशो

२८०. रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—चमरस्स णं भते ! असुरिदस्स असुररणो कइ
परिसाओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! तओ परिसाओ पणत्ताओ, तं जहा—समिया, चंडा, जाया । एवं
जहाणुपुव्वीए 'जाव अच्चुओ'^२ कप्पो ॥

२८१. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति^३ ॥

१. भ० १।४-१० ।

३. भ० १।३१ ।

२. जावच्चुओ (अ, क, व); ठा० ३।१४३-१६०;

जी० ३ ।

चउत्थं सतं

१, २, ३, ४ उद्देशो

संगहरणी-गाहा

चत्तारि विमाणोहि, चत्तारि य होति रायहाणीहि ।

नेरइए लेस्साहि य, दस उद्देशो चउत्थसए ॥१॥

१. रायगिहे नगरे जाव' एवं बयासी—ईसाणस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो कइ लोगपाला पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पणत्ता, तं जहा—सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे' ॥
२. एसि ण भते ! लोगपालाण कइ विमाणा पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणा पणत्ता, त जहा—सुमणे, सब्बओभदे, वग्गू, सुवग्गू ॥
३. कहि ण भते ! ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पणत्ते ?
'गोयमा ! जबुद्धीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स' उत्तरे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव' ईसाणे नाम कप्पे पणत्ते । तत्थ णं जाव' पच वडेसया पणत्ता, त जहा—अकवडेसए, फलिहवडेसए, रयणवडेसए, जायरुववडेसए, मज्जे ईसाणवडेसए ॥

१. अ० १।४-१० ।

४. प० २ ।

२. वरुणे वेसमणे (व) ।

५. मज्जे तत्थ (अ); मज्जे यत्थ (क, ता, म) ।

३ प० २ ।

४. तस्स णं ईसाणवडेसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं तिरियमसंखेज्जाइं
जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता, एत्थ णं ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स
महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पणत्ते अद्धतेरसजोयसणसयहस्साइं, जहा
सक्कस्स वत्तव्वया तइयसए तहा ईसाणस्स वि जाव^१ अन्वणिया समत्ता ॥
५. चउण्ह वि लोगपालाण विमाणे-विमाणे उद्देसओ, चऊसु वि विमाणेसु चत्तारि
उद्देसा अपरिसेसा, नवरं—ठिईए नाणत्तं—

संगहणी-गाहा

आदि दुय तिभागूणा, पलिया घणयस्स होंति दो चेव ।
दो सतिभागा वरुणे, पलियमहावच्चदेवाणं ॥१॥

५, ६, ७, ८ उद्देसो

६. रायहाणीसु वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा जाव एमहिइदीए जाव^१ वरुणे
महाराया ॥

नवमो उद्देसो

७. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? अनेरइए^१ नेरइएसु उववज्जइ ?
पणवणए लेस्सापए तइओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं ॥

दसमो उद्देशो

८. से नूण भते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागघत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
 हंता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेस पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागघत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एवं चउत्थो उद्देशओ पणवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो जाव'—

संगहणी-गाहा

परिणाम-वण्ण-रस-गंध-सुद्ध-अपसत्थ-सकिलिट्ठुण्हा ।

गइ-परिणाम-पएसोगाह-वग्गणायणमप्पबहुं ॥१॥

९. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

१. जावेत्यादि परिणामेत्यादि द्वारगाथोक्तद्वार- २. अ० १।५१ ।
 परिसमाप्ति यावदित्यर्थ. (वृ) ।

पंचमं सतं

पढमो उद्देशो

संगहणी-गाहा

१ चंप-रवि २ अनिल ३ गठिय ४ सहे ५-६ छउमाउ ७^१ एयण = नियठे ।
६ रायगिह १० चपा-चदिमा य दस पंचमम्मि सए ॥१॥

जंबुद्दीवे सूरिय-वत्तवया-पदं

१. तेण कालेणं तेण समएणं चंपा नाम नगरी होत्था—वण्णओ^१ ॥
२. तीसे ण चपाए नगरीए पुण्णभदे नाम चेइए होत्था—वण्णओ^१ । सामी समोसढे जाव^२ परिसा पडिगया ॥
३. तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे गोयमे गोत्तेण जाव^३ एव वयासी—जंबुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ^४ पाईण-दाहिणमागच्छति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छति^५, दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छति^६, पडीण-उदीण-मुग्गच्छ उदीचि-पाईणमागच्छति ?
हता गोयमा ! जंबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ जाव उदीचि-पाईणमागच्छति ॥

१. व्मायु (अ, स) ।

२. ओ० सू० १ ।

३. ओ० सू० २।१३ ।

४. भ० १।७, ८ ।

५. भ० १।६, १० ।

६. पादीण^० (अ, ता) ।

७. °पदीण^० (ता, म) ।

८. उदीचि^० (क, ता, व, म) ।

जंबुद्दीवे दिवसरार्ई-वत्तव्वया-पदं

४. जया णं भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणइडे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरइडेवि दिवसे भवइ; जया ण उत्तरइडे^१ दिवसे भवइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम^२-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणइडे^३ दिवसे जाव पुरत्थिम-पच्च-त्थिमे ण राई भवइ ॥
५. जयाण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि दिवसे भवइ; जया ण पच्चत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण दिवसे जाव उत्तर-दाहिणे ण राई भवइ ॥
६. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणइडे उक्कोसए अट्टारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरइडे वि उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ; जया ण उत्तरइडे उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणइडे उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे जाव दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ॥
७. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे उक्कोसए अट्टारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे वि उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया ण पच्चत्थिमे ण उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे उत्तर^४ - •दाहिणे ण जहणिया दुवालसमुहुत्ता^० राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ॥
८. जया णं भते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणइडे अट्टारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरइडे वि अट्टारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया ण उत्तरइडे अट्टारस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया ण जंबुद्दीवे जाव राई भवइ ॥

१. उत्तरइडेवि (अ, ता, स) ।

२. पुरत्थिमेण (अ, ता) ।

३. दाहिणइडे वि (ता) ।

४. स० पा०—उत्तर जाव राई ।

६. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं अट्टारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे वि अट्टारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ ; जया ण पच्चत्थिमे अट्टारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तदा ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव भवइ ॥
१०. एवं एएण कमेण ओसारेयव्व—सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राई । सत्तर-समुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा तेरसमुहुत्ता राई । सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोइसमुहुत्ता राई । सोलसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा चउइसमुहुत्ता राई ।
पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरसमुहुत्ता राई । पण्णरसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइ-रेगा पण्णरसमुहुत्ता राई ।
चोइसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राई । चोइसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा सोलसमुहुत्ता राई ।
तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राई । तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई ॥
११. जया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणइडे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरइडे वि , जया ण उत्तरइडे, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हता गोयमा ! एवं चेव उच्चारेयव्व जाव राई भवइ ॥
१२. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ; जया ण पच्चत्थिमे^१, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥

जंबुद्दीवे उज-वत्तव्या-पदं

१३. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणइडे वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण उत्तरइडे वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ; जया ण उत्तरइडे^२ वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे समयसि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ?

१. पच्चत्थिमे ण वि (अ, क, ता, व, म, स) । २. उत्तरइडे वि (स) ।

हृता गीयमा । जया ण जंबुद्दीवे दीवे दाहिणइडे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ,
तह चैव जाव पडिवज्जइ ॥

१४. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण पच्चत्थिमे ण वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ; जया ण पच्चत्थिमे ण वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तथा ण^१ •जंबुद्दीवे दीवे• मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणतरपच्छाकडसमयसि वासाण पढमे समए पडिवन्ते भवइ ?

हृता गीयमा । जया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण एव चैव उच्चारयव्वं जाव पडिवन्ते भवइ ॥

१५. एव जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाण तहा आवलियाएवि भाणियव्वो । आणापाणूणवि^२, थोवेणवि, लवेणवि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणवि । एएसि सव्वेसि जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥
१६. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणइडे हेमंताण पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाण अभिलावो तहेव हेमताण वि, गिम्हाण वि भाणियव्वो जाव^३ उऊए । एवं तिण्णि वि । एएसि तीसं आलावगा भाणियव्वो ॥

जंबुद्दीवे अयणादि-वत्तव्वया-पदं

१७. जया ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणइडे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तथा ण उत्तरइडे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएण अभिलावो तहेव अयणेण वि भाणियव्वो जाव^४ अणतरपच्छाकडसमयसि पढमे अयणे पडिवन्ते भवइ ॥
१८. जहा अयणेण अभिलावो तहा सवच्छरेण वि भाणियव्वो । जुएण वि, वास-सएण वि, वाससहस्सेण वि, वाससयसहस्सेण वि, पुव्वंगेण वि, पुव्वेण वि, तुडियगेण वि, तुडिएण वि—एवं पुव्वगे, पुव्वे, तुडियगे, तुडिए, अडडगे, अडडे, अडवगे, अडवे^५, हूहयगे, हूहए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नल्लिणगे, नल्लिणे, अत्थेणित्तरे, अत्थेणित्तरे, अउयगे, अउए, णउयगे, णउए, पउयंगे पउए, चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे सीसपहेलिया—पलिओवमेण, सागरो-वमेण वि भाणियव्वो ॥

१. स० पा०—तयाए जाव मदरस्स ।

४. भ० ५।१३, १४ ।

२. °पाणूण (व) ।

५. अपपे (व, म) ।

३. भ० ५।१३-१५ ।

१९. जया णं भते ! जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पणत्ते समणाउसो ?
हता गोयमा ! त चेव उच्चारेयव्व जाव समणाउसो ॥
२०. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो ॥

लवणसमुद्दाविसु सूरियादि-वत्तव्वय-पदं

२१. लवणे णं भते ! समुद्दे सूरिया उदीण-पाईणमुगच्छ पाईण-दाहिणमागच्छति, जच्चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्स वि भाणियव्वा^१, नवर—अभिलावो इमो जाणियव्वो ॥
२२. जया ण भते ! लवणसमुद्दे^२ दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तं चेव जाव^३ तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवति ॥
२३. एएणं अभिलावेण नेयव्व जाव^४ जया ण भते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया ण उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी^५, •नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिएण तत्थ काले पणत्ते^६ समणाउसो ?
हता गोयमा ! जाव समणाउसो^७ ॥
२४. धायइसडे णं भते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुगच्छ पाईण-दाहिणमागच्छति, जहेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसडस्स वि भाणियव्वा, नवरं—इमेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भाणियव्वा^८ ॥
२५. जया णं भते ! धायइसडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तदा णं उत्तरड्ढे वि; जया णं उत्तरड्ढे, तया ण धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवइ ?
हता गोयमा ! एव चेव जाव राई भवइ ॥

१. उदीचि (अ) ।

२. अ० ५।३ ।

३. लवणे समुद्दे (क, ब, स) ।

४. अ० ५।४ ।

५. अ० ५।५-१८ ।

६. स० पा०—ओसप्पिणी जाव समणाउसो ।

७. अतोमे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्र अच्याहार्यम् ।

८. अ० ५।३ ।

२६. जया णं भते ! धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाणं पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि; जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं धायइसडे दीवे मदराणं पव्वयाणं उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव भवइ ॥
२७. एव एएणं अभिलावेण नेयव्व जाव^१ जया णं भते ! दाहिणइडे पढमा ओसप्पिणी, तया णं उत्तरइडे वि; जया णं उत्तरइडे वि; तया ण धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नत्थि ओसप्पिणी जाव^२ समणाउसो ?
हता गोयमा ! जाव समणाउसो^३ ॥
२८. जहा लवणसमुहस्स वत्तव्वया^४ तहा कालोदस्स वि भाणियव्वा, नवरं—कालो-दस्स नाम भाणियव्वं ॥
२९. अभिभतरपुक्खरद्धे ण भते ! सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमा-गच्छति, जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया^५ तहेव अभिभतरपुक्खरद्धस्स वि भाणियव्वा, नवरं—अभिलावो जाणियव्वो जाव तया ण अभिभतरपुक्खरद्धे मदराण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ॥
३०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^६ ॥

वीओ उहेसो

वाउ-पदं

३१. रायगिहे नगरे जाव^१ एव वयासी—अत्थि ण भते ! ईसिं पुरेवाया^२ पत्था^३ वाया मदा वाया 'महावाया वायति ?'^४
हता अत्थि ॥

१. भ० ५।५-१८ ।

२. भ० ५।१६ ।

३. अतोमि 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्र अध्याहार्यम् ।

४. भ० ५।२१-२३ ।

५. भ० ५।२४-२७ ।

६. भ० १।५१ ।

७. भ० १।४-१० ।

८. सत्रेहवाता. (वृ) ।

९. पच्छा (अ, क, ता, स) ।

१०. महावाता वाता वातति (क, ता) सर्वत्र ।

३२. अत्थि णं भते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति ?
हता अत्थि ॥
३३. एव पच्चत्थिमे णं, दाहिणे ण, उत्तरे ण, उत्तर-पुरत्थिमे ण, 'दाहिणपच्चत्थिमे णं, दाहिण-पुरत्थिमे ण' 'उत्तर-पच्चत्थिमे णं ॥
३४. जया ण भते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, जया ण पच्चत्थिमे णं ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ?
हता गोयमा ! जया णं पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति; जया ण पच्चत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति ॥
३५. एव दिसासु, विदिसासु ॥
३६. अत्थि णं भते ! दीविच्चया^१ ईसि पुरेवाया^२ ?
हता अत्थि ॥
३७. अत्थि ण भते ! सामुद्दया ईसि पुरेवाया^३ ?
हता अत्थि ॥
३८. जया णं भते ! दीविच्चया ईसि पुरेवाया^४, तया ण सामुद्दया वि ईसि पुरेवाया^५, जया णं सामुद्दया ईसि पुरेवाया^६, तया णं दीविच्चया वि ईसि पुरेवाया^७ ?
णो इण्ठे समुद्दे ॥
३९. से केण्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—जया णं दीविच्चया ईसि पुरेवाया^८, णो ण तया सामुद्दया ईसि पुरेवाया^९, जया ण सामुद्दया ईसि पुरेवाया^{१०}, णो ण तया दीविच्चया ईसि पुरेवाया^{११} ?
गोयमा ! तेसि ण वायाण अण्णमण्णविक्कचासेणं लवणसमुद्दे वेल नाइक्कमइ ।
से तेण्ठेणं जाव णो ण तया दीविच्चया ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति ॥

१. दाहिणपुरत्थिमे ण दाहिणपच्चत्थिमे ण (स) ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११,

२. एव विदिसासु (क, ता) ।

१२. पू० भ० ५।३१ ।

३. दीविच्चता (व) ।

४०. अत्थि णं भते ! ईसि पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायति ?
हंता अत्थि ॥
४१. कया णं भंते ! ईसि पुरेवाया जाव' वायति ?
गोयमा ! जया णं वाउयाए अहारिय रियति', तया ण ईसि पुरेवाया जाव
वायति ॥
४२. अत्थि ण भते ! ईसि पुरेवाया' ?
हंता अत्थि ॥
४३. कया ण भंते ! ईसि पुरेवाया' ?
गोयमा ! जया ण वाउयाए उत्तरकिरिय रियइ, तया णं ईसि पुरेवाया जाव'
वायति ॥
४४. अत्थि ण भंते ! ईसि पुरेवाया' ?
हंता अत्थि ॥
४५. कया ण भंते ! ईसि पुरेवाया पत्था वाया' ?
गोयमा ! जया ण वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा अप्पणो' परस्स वा तटु-
भयस्स वा अट्टाए वाउकायं उदीरेति तया ण ईसि पुरेवाया जाव' वायति" ॥
४६. वाउयाए ण भते ! वाउयायं चेव आणमति वा ? पाणमंति वा ? ऊससति
वा ? नीससति वा ?
"हंता गोयमा ! वाउयाए ण वाउयाए चेव आणमति वा, पाणमति वा, ऊस-
सति वा, नीससति वा ॥
४७. वाउयाए णं भते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता
तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?
हंता गोयमा ! वाउयाए ण वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-
उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ॥
४८. से भते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

१ भ० ५।४० ।

२ रियति (ज, क, स) ।

३, ४ पू० भ० ५।४० ।

५ भ० ५।४० ।

६, ७. पू० भ० ५।४० ।

८. अप्पणो वा (क, ता, व) ।

९ भ० ५।४० ।

१०. इह चैकसुत्रेणैव वायुवानकारणत्रयस्य ब्रवतु
शक्यत्वे यत्सूत्रत्रयकरणं तद्विचित्रत्वात्सूत्र-
गतेरिति मन्तव्यं, वाचनान्तरे त्वाद्य कारण
महावातवर्जितानां, द्वितीयं तु मन्दवातवर्जि-
तानां, तृतीयं तु चतुर्णामप्युक्तमिति [५] ।

११. स० पा०—जहां तदए तहा चनाग्निं क्षान्ता-
वणा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दा-
नसरीने निग्गमत्त ।

४९. से भंते ! कि ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?

गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

५०. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ ? सिय असरीरी निक्खमइ ?

गोयमा ! वाउथायस्स ण चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहि निक्खमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ० ॥

ओदणादीणां किसरीरत्त-पदं

५१. अह णं भते ! ओदणे, कुम्मासे, सुरा—एए ण किसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! ओदणे, कुम्मासे, सुराए य जे वणे दव्वे—एए ण पुव्वभावपण्णवण पडुच्च वणस्सइजीवसरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थपरिणामिया, अगणि-ज्झामिया, अगणिभूसिया^१, अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया । सुराए य जे दवे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवण पडुच्च आउजीव-सरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरा^२ ति वत्तव्वं सिया ॥

५२. अह णं भते ! अये, तवे, तउए, सीसए, उवले, कसट्ठिया—एए ण किसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ? अये, तवे, तउए, सीसए, उवले, कसट्ठिया—एए ण पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवीजीवसरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया जाव^३ अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ॥

५३. अह ण भते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे, चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे, सिगे, सिगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नखे, नखज्झामे—एए णं किसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! अट्ठी, चम्मे, रोमे, सिगे, खुरे, नखे—एए णं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, 'सिगज्झामे, खुरज्झामे, नखज्झामे'^४—एए णं पुव्वभावपण्णवण पडुच्च तसपाणजीवसरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया जाव^५ 'अगणिजीवसरीरा ति'^६ वत्तव्वं सिया ॥

१. ० भूसिया अगणिसेविया (अ, स) । वृत्तौ ३ भ० ५।५१ ।

अगणिभूसिया इति पदस्य अग्निना सेवितानि ४. सिग-खुर-नखज्झामे (अ, ता, स) ।

वा इति वैकल्पिकोर्थः आसीत् सएव केपुचित् ५. भ० ५।५१ ।

उत्तरवर्त्यादर्शेषु मूलपाठरूपेण स्वीकृतोभूत् । ६. अगणि ति (अ, स) ।

२. अगणिकायसरीरा (स) ।

५४. अहं णं भंते ! इंगाले, छारिए, भुसे^१, गोमए—एए णं किसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! इंगाले, छारिए, भुसे, गोमए—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एगिदियजीवसरीरप्पयोगपरिणामिया वि जाव^२ पचिदियजीवसरीरप्पयोग-परिणामिया^३ वि । तओ पच्छा सत्थातीया जाव^४ अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ॥

लवणसमुद्द-पदं

५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवइयं चक्कवालविकखंभेण पण्णत्ते ?

एव नेयव्व जाव^५ लोगट्टिई, लोगणुभावे ॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव^६ विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

आउ-पकरण-पडिसंवेदण-पदं

५७. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खति भासंति पण्णवेति परूवेति^७—से जहा-नामए जालगठिया सिया—आणुपुण्विगढिया^८ अणंतरगढिया परंपरगढिया अणमण्णगढिया, अणमण्णगरुत्ताए अणमण्णभारियत्ताए अणमण्णगरु-सभारियत्ताए अणमण्णघट्ताए चिट्ठइ, एवामेव बहूणं जीवाण बहूसु आज्ञाति-सहस्सेसु^९ बहूइं आउयसहस्साइ आणुपुण्विगढियाइं जाव चिट्ठति ।

एगे वि य ण जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसवेदेइ^{१०}, तं जहा—इह-भविआउयं च, परभविआउयं च ।

जं समय इहभविआउय पडिसंवेदेइ, तं समय परभविआउयं पडिसवेदेइ^{११} ।

●ज समयं परभविआउय पडिसवेदेइ, तं समय इहभविआउयं पडिसवेदेइ ।

१. तुसे (क) ।

२. म० २।१३६ ।

३. °परिणता (म) ।

४. म० ५।५१ ।

५. जी० ३ मदरोद्देशक ।

६. म० १।५१ ।

७. एव परूवेति (क, व, स) ।

८. आणुपुण्वि° (व, स) ।

९. आयति° (क); आयाति° (व) ।

१०. पडिसवेदयति (अ, क, व, म) ।

११. सं० पा०—पडिसवेदेइ जाव से ।

इहभविआउयस्स पडिसवेदणयाए परभविआउयं पडिसवेदेइ,
परभविआउयस्स पडिसवेदणयाए इहभविआउयं पडिसवेदेइ ।
एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाई पडिसवेदेइ, त जहा—इहभविआ-
उय च, परभविआउय च० ॥

५८. से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! जण त अणउत्थिया त चेव जाव परभविआउय च । जे ते एव-
माहसु तं मिच्छा, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पणवेमि पळ-
वेमि—से जहानामए जालगठिया सिया*—●आणुपुव्विगठिया अणतरगठिया
परपरगठिया अणमणगठिया, अणमणगठ्याए अणमणभारियत्ताए
अणमणगठ्या-संभारियत्ताए० अणमणगठ्याए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स
जीवस्स वहुहि आजातिसहस्सेहि वहुइ आउयसहस्साइ आणुपुव्विगठियाइ जाव
चिट्ठति ।

एगे वि य ण जीवे एगेण समएण एगं आउय पडिसवेदेइ, तं जहा—इहभवि-
आउयं वा, परभविआउय वा ।

ज समय इहभविआउय पडिसवेदेइ, नो त समयं परभविआउय पडिसवेदेइ ।

ज समय परभविआउय पडिसवेदेइ, नो त समयं इहभविआउय पडिसवेदेइ ।

इहभविआउयस्स पडिसवेदणाए, नो परभविआउय पडिसवेदेइ ।

परभविआउयस्स पडिसवेदणाए, नो इहभविआउय पडिसवेदेइ ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पडिसवेदेइ, त जहा—इहभ-
विआउय वा, परभविआउय वा ॥

साउयसंकमण-पदं

५९ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कि साउए
सकमइ ? निराउए सकमइ ?

गोयमा ! साउए सकमइ, नो निराउए संकमइ ॥

६०. से ण भते ! आउए^१ कहि कडे ? कहि समाइण्णे ?

गोयमा ! पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे ॥

६१. एव जाव^२ वेमाणियाणं दडओ ॥

६२. से नून भते ! जे 'ज भविए जोणि'^३ उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, त

१. स० पा०—सिया जाव अणमणगठ्याए । ४. विभक्तिपरिणामाद् यो यस्या योनावुत्पत्तु

२. आउगे (ता) ।

योग्य इत्यर्थः (व) ।

३. पू० प० २ ।

जहा—नेरइयाउयं वा ? •तिरिक्खजोणियाउयं वा ? मणुस्साउय वा ? •
देवाउयं वा ?

हता गोयमा । जे ज भविए जोणि उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, त
जहा—नेरइयाउय वा, तिरिक्खजोणियाउयं वा, मणुस्साउयं वा देवाउय वा ।
नेरइयाउय पकरेमाणे सत्तविह पकरेइ, त जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयाउय
वा, •सक्करप्पभापुढविनेरइयाउय वा, वालुयप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, पक-
प्पभापुढविनेरइयाउयं वा, धूमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, तमप्पभापुढविनेर-
इयाउय वा°, अहेसत्तमापुढविनेरइयाउय वा ।

तिरिक्खजोणियाउय पकरेमाणे पच्चविह पकरेइ, त जहा—एगिदियतिरिक्ख-
जोणियाउय वा, •वेइदियतिरिक्खजोणियाउय वा, तेइदियतिरिक्खजोणिया-
उय वा, चउरिदियतिरिक्खजोणियाउय वा, पच्चिदियतिरिक्खजोणियाउय
वा° ।

मणुस्साउय दुविह° •पकरेइ, त जहा—सम्मुच्छिममणुस्साउय वा, गब्भवक्क-
तियमणुस्साउय वा° ।

देवाउय चउव्विह° •पकरेइ, तं जहा—भवणवासिदेवाउयं वा, वाणमतरदेवा-
उय वा, जोइसियदेवाउय वा, वेमाणियदेवाउय वा° ॥

६३ सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति° ॥

चउत्थो उद्देशो

छउमत्थ-केवलीणं सहसवरण-पदं

६४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणाइ सहाइ सुणेइ, त जहा—संखसहाणि
वा, सिंगसहाणि वा, सखियसहाणि वा, खरमुहीसहाणि वा, पोयसहाणि वा,
पिरिपिरियासहाणि वा, पणवसहाणि वा, पडहसहाणि वा, भभासहाणि वा,
होरभसहाणि वा, भेरिसहाणि वा, भल्लरीसहाणि वा, दुदुभिसहाणि वा,
तताणि वा, वितताणि वा, घणाणि वा, भुसिराणि वा ?

१. स० पा०—नेरइयाउय वा जाव देवाउय ।

५ स० पा०—देवाउय चउव्विहं ।

२. स० पा०—रयणप्पभापुढविनेरइयाउय वा
जाव अहेसत्तमा° ।

६ अ० १।५१ ।

७. परि° (अ, स) ।

३ स० पा०—भेदो सब्बो भाणियव्वो ।

८. सुसिराणि (क) ।

४ स० पा०—मणुस्साउय दुविह ।

हंता गोयमा ! छउमत्थे णं मणुस्से-आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—
संखसद्दाणि वा जाव भुसिराणि वा ।

ताइ भते ! कि पुट्ठाइ सुणेइ ? अपुट्ठाइं सुणेइ ?

गोयमा ! पुट्ठाइ सुणेइ, नो अपुट्ठाइ सुणेइ^१ ।

●जाइ भते ! पुट्ठाइ सुणेइ ताइ कि ओगाढाइ सुणेइ ? अणोगाढाइ सुणेइ ?

गोयमा ! ओगाढाइ सुणेइ, नो अणोगाढाइ सुणेइ ।

जाइ भते ! ओगाढाइ सुणेइ ताइ कि अणतरोगाढाइ सुणेइ ? परपरोगाढाइ सुणेइ ?

गोयमा ! अणतरोगाढाइ सुणेइ, नो परपरोगाढाइ सुणेइ ।

जाइ भते ! अणतरोगाढाइ सुणेइ ताइ कि अणूइं सुणेइ ? बादराइ सुणेइ ?

गोयमा ! अणूइ पि सुणेइ, बादराइ पि सुणेइ ।

जाइं भते ! अणूइ पि सुणेइ बादराइ पि सुणेइ ताइ कि उड्ढ सुणेइ ? अहे सुणेइ ? तिरिय सुणेइ ?

गोयमा ! उड्ढ पि सुणेइ, अहे वि सुणेइ, तिरिय पि सुणेइ ।

जाइ भते ! उड्ढ पि सुणेइ अहे, वि सुणेइ तिरिय पि सुणेइ ताइ कि आइं सुणेइ ? मज्जे सुणेइ ? पज्जवसाणे सुणेइ ?

गोयमा ! आइ पि सुणेइ, मज्जे पि सुणेइ, पज्जवसाणे वि सुणेइ ।

जाइ भते ! आइ पि सुणेइ मज्जे वि सुणेइ पज्जवसाणे वि सुणेइ ताइ कि सविसए सुणेइ ? अविसए सुणेइ ?

गोयमा ! सविसए सुणेइ, नो अविसए सुणेइ ।

जाइ भते ! सविसए सुणेइ ताइ कि आणुपुव्वि सुणेइ ? अणानुपुव्वि सुणेइ ?

गोयमा ! आणुपुव्वि सुणेइ, नो अणानुपुव्वि सुणेइ ।

जाइ भते ! आणुपुव्वि सुणेइ ताइ कि तिदिसि सुणेइ जाव छद्दिसि सुणेइ ?

गोयमा ! ० नियमा छद्दिसि सुणेइ ॥

६५. छउमत्थे ण भते ! मणूसे कि आरगयाइ सद्दाइ सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! आरगयाइ सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइ सद्दाइं सुणेइ ॥

६६. जहा ण भते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइ सद्दाइं सुणेइ, तथा ण^१ केवली कि आरगयाइ सद्दाइ सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! केवली ण आरगय वा, पारगय वा सब्बदूर-मूलमणतिय सह जाणइ-पासइ ॥

६७ से केणट्टेण^१ •भते । एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सब्बदूर-
मूलमणतियं सद् जाणइ^०-पासइ ?
गोयमा ! केवलीणं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ । एवं
दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि
जाणइ ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली ।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली ।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली ।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली ।
अणते नाणे केवलस्स, अणते दसणे केवलस्स ।
निव्वुडे नाणे केवलस्स, निव्वुडे दसणे केवलस्स^१ । से तेणट्टेण^१ •गोयमा !
एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सब्बदूर-मूलमणतियं सद्
जाणइ^०-पासइ ॥

छउमत्थ-केवलीणं हास-पदं

- ६८ छउमत्थे णं भते ! मणुस्से हसेज्जं वा ? उस्सुयाएज्जं वा ?
हता हसेज्जं वा, उस्सुयाएज्जं वा ॥
- ६९ जहा णं भते ! छउमत्थे मणुस्से हसेज्जं वा, उस्सुयाएज्जं वा, तथा णं केवली
वि हसेज्जं वा ? उस्सुयाएज्जं वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
- ७० से केणट्टेण^१ •भते ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्जं वा, उस्सुया-
एज्जं वा^०, नो णं तथा केवली हसेज्जं वा ? उस्सुयाएज्जं वा ?
गोयमा ! ज णं जीवा चरित्तमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं हसति वा,
उस्सुयायति वा । से णं केवलस्स नत्थि । से तेणट्टेण^१ •गोयमा ! एवं
वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्जं वा, उस्सुयाएज्जं वा^०, नो णं तथा
केवली हसेज्जं वा, उस्सुयाएज्जं वा ॥
- ७१ जीवे णं भते ! हसमाणे वा, उस्सुयमाणे वा कइ^१ कम्मपगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा । एवं जाव^० वेमाणिए^१ ।
पोहत्तएहि जीवेगिदियवज्जो तियभगो ॥

१. स० पा०—त चेव केवलीणं आरगयं वा
पारगयं वा जाव पासइ ।
२. वाचनान्तरे तु 'निव्वुडे वित्तिमिरे विसुद्धे' त्ति
विशेषणत्रयं ज्ञानदर्शनयोरधीयते (वृ) ।
३. स० पा०—तेणट्टेणं जाव पासइ ।

४. स० पा०—केणट्टेणं जाव नो ।
५. स० पा०—तेणट्टेणं जाव नो ।
६. कति (क, व, म) ।
७. पू० प० २ ।
८. वेमाणिए नेरइया णं भते ! हसमाणा कइ^० ।

छउमत्थ-केवलीणं निहा-पदं

७२. छउमत्थे णं भते ! मणुस्से निहाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
हता निहाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा ॥
७३. 'जहा ण भते ! छउमत्थे मणुस्से निहाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, तहा णं केवली
वि निहाएज्ज वा ? पयलाएज्जा वा ?
गोयमा ! णो इण्ठे समट्ठे ॥
७४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जहा ण छउमत्थे मणुस्से निहाएज्ज वा,
पयलाएज्ज वा, नो ण तहा केवली निहाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
गोयमा ! ज ण जीवा दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निहायति वा,
पयलायति वा । से ण केवलस्स नत्थि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—
जहा णं छउमत्थे मणुस्से निहाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो ण तहा केवली
निहाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा° ॥
७५. जीवे ण भते ! निहायमाणे वा, पयलायमाणे वा कह कम्मप्पगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा । एवं जाव वेमाणि । पोहत्ति-
एसु जीवेगिदियवज्जो तियभगो ॥

गब्भसाहरण-पदं

७६. 'से नूणं भते ! हरि-नेगमेसी' सक्कदूए इत्थीगब्भ सहरमाणे कि गब्भाओ
गब्भ साहरइ ? गब्भाओ जोणि साहरइ ? जोणीओ गब्भं साहरइ ? जोणीओ
जोणि साहरइ ?
गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भ साहरइ, नो गब्भाओ जोणि साहरइ, नो जोणीओ
जोणि साहरइ, परामुसिय-परामुसिय अवावाहेण अवावाह जोणीओ गब्भ
साहरइ ॥
७७. पभू ण भते ! हरि-नेगमेसी सक्कदूए इत्थीगब्भ नहसिरंसि वा, रोमकूवसि
वा साहरित्तए वा ? नीहरित्तए वा ?

गोयमा ! सन्वे वि ताव होज्ज सत्तविह-
बधगा । अहवा सत्तविहबधगा य अट्ठविहबधगे
य । अहवा सत्तविहबधगा य अट्ठविहबधगा
य (क, व, म, स) ।

१. सं० पा०—जहा हसेज्ज वा तहा नवर
दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण निहा-
यति वा पयलायति वा, से ण केवलस्स
नत्थि अण्ण त चेव ।

२. पयलाइति (स) ।

३. पू० प० २ ।

४. हरी ण भते ! हरिरोगमेसी (अ, क, ता),
हरी ण भते ! हरिरोगमेसी (स), 'हरी ण
भते ! हरिरोगमेसी' इति द्वयर्थक पद द्वयो
वर्चिनायो समिश्रणेन जातम् ।

५. सक्कस्स ण दूते (व, स), सक्कस्स दूए (म) ।

हंता पभू, नो चेव णं तस्स गवभस्स किंचिं आवाह वां विवाह वा उप्पाएज्जा,
छविच्छेद पुण करेज्जा । एसुहुमं च णं साहरेज्ज वा, नीहरेज्ज वा ।

अइमुत्तग-पदं

- ७८ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते^१
नामं कुमार-समणे पगइभट्टए^२ *पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे
मिउमट्टवसपत्ते अत्तलीणे^३ विणीए ॥
- ७९ तए ण से अइमुत्ते कुमार-समणे अण्णया कयाइ महावुट्ठिकायसि निवयमाणंसि
कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए^४ बहिया सपट्ठिए विहाराए ॥
८०. तए ण से अइमुत्ते कुमार-समणे वाहय वहमाणं पासइ, पासित्ता मट्ठियाए पालि
बंधइ, बंधित्ता 'णाविया मे, णाविया मे' नाविओ विव णावमय पडिग्गहण
उदगसि^५ पव्वाहमाणे-पव्वाहमाणे अभिरमइ । त च थेरा अट्ठक्खु^६ । जेणेव समणे
भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एव वदासी—
एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी अइमुत्ते नाम कुमार-समणे, से ण मंते ! अइ-
मुत्ते कुमार-समणे कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झिहिति^७ *बुज्झिहिति मुच्चिहिति
परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं^८ अत करेहिति ?
- ८१ अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते थेरे एव वयासी—एव खलु अज्जो ! मम
अतेवासी अइमुत्ते नाम कुमार-समणे पगइभट्टए जावं^९ विणीए, से णं अइमुत्ते
कुमार-समणे इमेण चेव भवग्गहणेण सिज्झिहिति जावं^{१०} अत करेहिति । त मा
ण अज्जो ! तुव्भे अइमुत्त कुमार-समण हीलेह निदह खिसह गरहह अवमण्णह^{११} ।
तुव्भे ण देवाणुप्पिया^{१२} । अइमुत्त कुमार-समण अगिलाए सणिण्हह, अगिलाए
उवणिण्हह, अगिलाए भत्तेण पाणेण विणएण वेयावडिय करेह । अइमुत्ते ण
कुमार-समणे अतकरे चेव, अतिमसरीरिए चेव ॥
- ८२ तए ण ते थेरा भगवतो समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ता समाणा समण
भगव महावीरं वदति नमसति, अइमुत्त कुमार-समणं अगिलाए सणिण्हति^{१३},
*अगिलाए उवणिण्हति, अगिलाए भत्तेण पाणेण विणएणं^{१४} वेयावडिय करेति ॥

१. किंचि वि (स) ।

२. तैसुहुम (ता) ।

३. अतिमुत्ते (क, व, म) ।

४. स० पा०—पगइभट्टए जाव विणीए ।

५. रतहरणमाताए (ता) ।

६. उदगसि कट्ट (क, ता, व, म, स) ।

७. अदवखु (ता, म) ।

८. स० पा०—सिज्झिहिति जाव अत ।

९. भ० ५।७८ ।

१०. भ० २।७३ ।

११. अवमण्णह परिभवह (वृपा) ।

१२. स० पा०—सणिण्हति जाव वेयावडियं ।

१३. वेदावडिय (व, म) ।

महासुक्कायदेव-पण्ह-पदं

८३. तेण कालेण तेण समएणं महासुक्काओ कप्पाओ, महासामाणाओ^१ विमाणाओ दो देवा महिड्ढया जाव^२ महानुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय पाउब्भूया। तए ण ते देवा समण भगव महावीर^३ वदति नमसति, मणसा चेव इम एयारूव वागरण पुच्छति—
८४. कति ण भते^४ ! देवानुप्पियाण अतेवासीसयाइं सिज्झिहति जाव^५ अतं करेहति ? तए ण समणे भगवं महावीरे तेहि देवेहि मणसा पुट्ठे तेसि देवाण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरेइ—एवं खलु देवानुप्पिया ! मम सत्त अतेवासी-सयाइं सिज्झिहति जाव अतं करेहति । तए ण ते देवा समणेण भगवथा महावीरेण मणसा, पुट्ठेण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरिया समाणा हट्ठुट्ठु^६ चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण^७ हियया समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता मणसा चेव सुस्ससमाणा नमसमाणा अभिमुहा^८ विणएणं पजलियडा^९ पज्जुवासति ॥
८५. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूर्इ नामं अणगारे जाव^{१०} अदूरसामते उड्ढजाणू^{११} अहोसिरे भाणकोट्टोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे^{१२} विहरइ । तए ण तस्स भगवओ गोयमस्स भाणत-रियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए^{१३} चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^{१४} समुप्पज्जित्था—एव खलु दो देवा महिड्ढया जाव^{१५} महानुभागा समणस्स भग-वओ महावीरस्स अतिय पाउब्भूया^{१६}, तं नो खलु अह ते देवे^{१७} जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा कस्स वा अत्थस्स अट्टाए इह हव्वमा-गया ? तं गच्छामि ण समण भगवं महावीर वदामि नमसामि जाव^{१८} पज्जु-वासामि, इमाइं च ण एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिस्सामि त्ति कट्ठु एव सपेहेइ,

१. महासमाणाओ (अ, ब, म), महासग्गाओ ६. स० पा०—हट्ठुट्ठु जाव हियया ।
 (स) । एकस्मिन्नादर्शे 'महासग्गाओ' इति ७. स० पा०—अभिमुहा जाव पज्जुवासति ।
 पाठो लभ्यते, किन्तु समवायागसूत्रस्य सप्त- ८. भ० १।६ ।
 दशसमवायस्य (१८) सदर्थे 'महासामाणाओ' ९. स० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ ।
 इत्येव पाठः समीचीनोस्ति । १०. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
 २. भ० ३।४ । ११. भ० ३।४ ।
 ३. महावीर मणसा चेव (अ, स); महावीर १२. पाडुब्भूता (क, व, म) ।
 मणसा (ब, म) । १३. देवा (ता, व) ।
 ४. × (क, ता, व, म) । १४. भ० २।३० ।
 ५. भ० २।७३ ।

संपेहेत्ता उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव^१ पञ्जुवासइ ॥

८६. गीयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगव गीयम एव वयासी—से नूणं तव गीयमा ! भगवतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव^२ जेणेव ममं अतिए तेणेव हव्वमागए, से नूण गीयमा ! अट्टे^३ समट्टे^४ ? हंता अत्थि । तं गच्छाहि ण गीयमा ! एए चेव देवा इमाइ एयारूवाइ वागर-णाइ वागरेहि ॥

८७ तए ण भगव गीयमे समणेणं भगवथा महावीरेणं अब्भणुणाए समाणे समण भगवं महावीर वदइ नमंसइ, जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

८८ तए ण ते देवा भगवं गीयम एज्जमाण^५ पासति, पासित्ता हट्टे^६ नुदुच्चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण^७ हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव अब्भुवगच्छंति^८ जेणेव भगवं गीयमे तेणेव उवा-गच्छति जाव^९ नमसित्ता एवं वयासी—एव खलु भते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ^{१०} विमाणाओ दो देवा महिड्डिया जाव^{११} महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय पाउवभूया । तए णं अम्हे समण भगव महावीर वदामो नमसामो, वदित्ता नमसित्ता मणसा चेव इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छामो—कइ ण भते ! देवाणुप्पियाण अतेवासीसयाइं सिज्झिहि ॥ जाव^{१२} अत करेहि ? तए ण समणे भगवं महावीरे अम्हेहि मणसा पुट्टे अम्हे^{१३} मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अतेवासीसयाइं जाव अत करेहि ॥ तए ण अम्हे समणेणं भगवथा महावीरेणं मणसा चेव पुट्टेण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरिया समाणा समणं भगव महावीर वदामो नमसामो जाव^{१४} पञ्जुवासामो त्ति कट्टु भगव गीयम वदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउवभूया तामेव दिस पडिगया ॥

देवाणं नोसंजयवत्तवया-पदं .

८९. भंतेति ! भगव गीयमे समण भगवं महावीर वदति नमसति जाव^{१५} एवं वयासी—देवा णं भते ! संजया ति वत्तव्व सिया ?

१. भ० १।१० ।

८. भ० १।१० ।

२. भ० ५।८५ ।

९. महासग्गाओ (स) ।

३. अत्ये (अ, क, ता, स) ।

१०. भ० ३।४ ।

४. समत्ये (अ) ।

११. भ० २।७३ ।

५. इज्जमाण (व) ।

१२. अम्हे (क, म) ।

६. स० पा०—हट्टु जाव हियया ।

१३. भ० २।३० ।

७. पच्चुवगच्छति २ (अ, क, ता, स) ।

१४. भ० १।१० ।

- गोयमा । णो तिण्ठे समट्ठे । अब्भक्खाणमेय देवाणं^१ ॥
 ६०. देवा ण भते ! असजता^२ ति वत्तव्व सिया ?
 गोयमा ! णो तिण्ठे समट्ठे । निट्ठुरवयणमेय देवाणं^३ ॥
 ६१. देवा ण भते ! णो सजयासजया ति वत्तव्व सिया ?
 गोयमा ! णो तिण्ठे समट्ठे । असब्भूयमेय देवाणं^४ ॥
 ६२. से किं खाइ ण भते ! देवा ति वत्तव्व सिया ?
 गोयमा ! देवा ण नोसजया ति वत्तव्व सिया ॥

देवभाषा-पदं

६३. देवा ण भते ! कयराए भासाए भासति ? कयरा व भासा भासिज्जमाणी
 विसिस्सति ? गोयमा ! देवा ण अब्बमागहाए भासाए भासति । सा वि य ण
 अब्बमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ॥

छउमत्थ-केवलीणं नाणभेद-पदं

६४. केवली ण भते ! अतकर वा, अतिमसरीरिय^१ वा जाणइ-पासइ ?
 हुता^२ जाणइ-पासइ ॥
 ६५. जहा ण भते ! केवली अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ, तहा^३ ण
 छउमत्थे^४ वि अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ ?
 गोयमा ! णो इण्ठे समट्ठे । सोच्चा जाणइ-पासइ, पमाणत्तो वा ॥
 ६६. से किं त सोच्चा ?
 सोच्चा ण केवलस्स वा, केवलिसावगस्स^५ वा, केवलिसावियाए वा, केवलि-
 उवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा,
 तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा ।
 से त सोच्चा ॥
 ६७. से किं त पमाणे ?
 पमाणे चउव्विहे पणत्ते, त जहा—पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा
 अणुओगदारे तहा नेयव्व पमाण जाव^६ तेण पर सुत्तस्स वि अत्थस्स वि नो
 अत्तागमे, नो अणतरागमे, परपरागमे ॥

१. × (स) ।

२. अस्सजता (अ, क, ता, व, म) ।

३. × (स) ।

४. °सारीरिय (अ, क, व, स) ।

५. गोयमा (क, म); हुता गोयमा (स) ।

६. तथा (अ, स) ।

७. छउमत्थे (ता) ।

८. °सावयस्स (क, व, म, स) ।

९. अ० सू० ५१६-५५१ ।

६८ केवली ण भते । चरिमकम्म वा, चरिमणिज्जर वा जाणइ-पासइ ?
हता^१ जाणइ पासइ ॥

६९ जहा ण भते । केवली चरिमकम्म वा, चरिमणिज्जर वा जाणइ-पासइ, तहा ण
छउमत्थे वि चरिमकम्म वा, चरिमणिज्जर वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा । णो इणट्ठे समट्ठे । सोचा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा । जहा ण
अतकरेण^२ आलावगो^३ तहा चरिमकम्मेण वि अपरिसेसिओ नेयव्वो ॥

केवलीणं पणीय-मण-वइ-पदं

१००. केवली ण भते । पणीय मण वा, वइ वा धारेज्जा ?
हता धारेज्जा ॥

१०१ जण्ण^४ भते । केवली पणीय मण वा, वइ वा धारेज्जा, तण्ण^५ वेमाणिया देवा
जाणति-पासति ?

गोयमा । अत्थेगतिया जाणति-पासति, अत्थेगतिया ण जाणति, ण पासति ॥

१०२. से केणट्ठेण^६ भते । एव वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणति-पासति, अत्थेगतिया ण
जाणति^७, ण पासति ?

गोयमा । वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा
य, अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा य । तत्थ ण जे ते माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा
ते ण जाणति ण पासति । 'तत्थ ण जे ते अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा ते ण
जाणति-पासति ।

से केणट्ठेण ? गोयमा । अमाइसम्मदिट्ठी दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरोव-
वण्णगा य, परपरोवण्णगा य । तत्थ ण जे ते अणतरोववण्णगा ते ण जाणति, ण
पासति । तत्थ ण जे ते परपरोववण्णगा ते ण जाणति-पासति ।

से केणट्ठेण ? गोयमा । परपरोववण्णगा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अपज्जत्तगा
य, पज्जत्तगा य । तत्थ ण जे ते अपज्जत्तगा ते ण जाणति, ण पासति । तत्थ ण
जे ते पज्जत्तगा ते ण जाणति-पासति ।

से केणट्ठेण ? गोयमा । पज्जत्तगा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणुवउत्ता य
उवउत्ता य । तत्थ ण जे ते अणुवउत्ता ते ण जाणति, ण पासति । तत्थ ण जे ते
उवउत्ता ते ण जाणति-पासति । से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ—अत्थेगतिया
जाणति-पासति, अत्थेगतिया ण जाणति, ण पासति^८ ॥

१ गोयमा (अ, म), हता गोयमा (स) ।

२ अतकरेण वा (म, स) ।

३ म० ५।६६, ६७ ।

४ ज ए (ता), जहा ण (म, स) ।

५ त ए (क, ता, व, म) ।

६ स० पा०—केणट्ठेण जाव ए ।

७ एव अणतर परपर पज्जत्त अपज्जत्ता य
उवउत्ता अणुवउत्ता । तत्थ ण जे ते उवउत्ता

अणुत्तरोववाइयाणं केवलिया आलाव-पदं

१०३. पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धि आलावं वा, संलाव वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥
१०४. से केणट्टेण^१ •भंते ! एवं वुच्चइ—पभू ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धि आलावं वा, संलाव वा^२ करेत्तए ?
गोयमा ! जण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठ वा हेउं वा पसिण वा कारण वा वागरण वा पुच्छति, तण्ण इहगए केवली अट्ठ वा^३ •हेउ वा पसिण वा कारणं वा^४ वागरण वा वागरेइ । से तेणट्टेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धि आलाव वा, संलाव वा करेत्तए ॥
१०५. जण्ण भते ! इहगए केवली अट्ठं वा^५ •हेउ वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा^६ वागरेइ, तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति-पासति ?
हता जाणति-पासति ॥
१०६. से केणट्टेण^१ •भते ! एव वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति^७-पासंति ?
गोयमा ! तेसि ण देवाण अणंताओ मणोदब्बवग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवति । से तेणट्टेणं^८ •गोयमा ! एव वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउ वा पसिण वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्ण अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणति^९-पासति ॥
१०७. अणुत्तरोववाइया ण भते ! देवा कि उदिण्णमोहा ? उवसतमोहा ? खीण मोहा ? गोयम्भ ! नो उदिण्णमोहा, उवसतमोहा, नो खीणमोहा ॥

केवलीणं इंदियनाण-निसेघ-पदं

१०८. केवली णं भते ! आयाणेहि जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तिणट्टे समट्टे ॥

ते जाणति पासति से तेणट्टेण त चेव (अ, क, ता, व, म, वृ); वाचानान्तरेत्विद सूत्र साक्षादेव उपलभ्यते (वृ) ।

१. सं० पा०—केणट्टेण जाव पभू णं अणु-त्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ।

२. सं० पा०—अट्ठ वा जाव वागरणं ।

३. सं० पा०—अट्ठ वा जाव वागरेइ ।

४. सं० पा०—केणट्टेण जाव पासति ।

५. सं० पा०—तेणट्टेण जण्ण इहगए केवली जाव पासति ।

१०६. से केणट्टेण^१ •भते ! एवं वुच्चइ^२—केवली णं आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ ? गोयमा ! केवली ण पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ^३ । •एवं दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ । सव्व जाणइ केवली, सव्व पासइ केवली । सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली । सव्वकाल जाणइ केवली, सव्वकाल पासइ केवली । सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली । अणते नाणे केवलस्स, अणते दसणे केवलस्स । निव्वुडे नाणे केवलस्स निव्वुडे दसणे केवलस्स । से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ^४ ॥

केवलीणं जोगच्चलया-पदं

११०. केवली णं भते ! अस्सि समयसि^५ जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरु^६ वा ओगाहिता ण चिट्ठति, पभू ण केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा^७ •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा^८ ओगाहिताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! णो तिणट्टे समट्टे ॥

१११. से केणट्टेण भते^९ ! •एव वुच्चइ^{१०}—केवली णं अस्सि समयसि जेसु आगासपदेसेसु^{११} •हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहिताणं^{१२} चिट्ठति, णो ण पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा^{१३} •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहिता णं^{१४} चिट्ठित्तए ? गोयमा ! केवलस्स ण वीरिय-सजोग-सह्वयाए चलाइ उवकरणाइ भवति । चलोवकरणट्टयाए य ण केवली अस्सि समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा^{१५} •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहिता णं^{१६} चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव^{१७} •आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहिताणं^{१८} चिट्ठित्तए । से तेणट्टेण^{१९} •गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली ण अस्सि समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगा-

१. स० पा०—केणट्टेण जाव केवली ।

७. स० पा०—हत्थं वा जाव चिट्ठित्तए ।

२. स० पा०—जाणइ जाव निव्वुडे दसणे केवलस्स से तेणट्टेण ।

८. जसि (व) ।

३. समतसि (ता) ।

९. स० पा०—हत्थं वा जाव चिट्ठित्तए ।

४. स० पा०—हत्थं वा जाव ओगाहिता ।

१०. स० पा०—चेव जाव चिट्ठित्तए ।

५. स० पा०—भते जाव केवली ।

११. स० पा०—तेणट्टेण जाव वुच्चइ । केवली ण अस्सि समयसि जाव चिट्ठित्तए ।

६. स० पा०—आगासपदेसेसु जाव चिट्ठति ।

हिता णं चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु
हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरुं वा ओगाहिता णं चिट्ठत्तए ॥

चोद्दसपुव्वीणां सामत्थ-पदं

११२. पभू ण भते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ 'घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्स, कडाओ
कडसहस्स, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्स, दडाओ दडसहस्स अभिनि-
व्वट्ठेत्ता उवदसेत्तए ?

हता पभू ॥

११३. से केणट्ठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव' उवदसेत्तए ?

गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्स ण अणताइ दव्वाइ उक्कारियाभेएणं भिज्जमाणाइ
लद्धाइ पत्ताइ अभिसमण्णागयाइ भवति ।

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—पभू णं चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्स,
पडाओ पडसहस्स, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्स,
दडाओ दडसहस्स अभिनिव्वट्ठेत्ता उवदसेत्तए ॥

११४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देशो

मोक्ख-पदं

११५. छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणत्त सासय समय केवलेण सज्जेण, केवलेण
सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ?
बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइसु ? सव्वदुक्खाण अत्त करिसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावणा तहा नेयव्वा
जाव' अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया ॥

एवंभूय-अरणेवंभूय-वेदणा-पदं

११६. अणणउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खंति जाव' परूवेत्ति—सव्वे पाणा सव्वे भूया
सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एव भूय वेदण वेदेत्ति ॥

१. भ० ५।११२ ।

३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव उवदसेत्तए ।

२. प्रज्ञापनासूत्रे आपापदे 'उक्कारियाभेए' इति

४. भ० १।५१ ।

पद लभ्यते, तथापि केपुज्झिदादसोपु उक्का-
रियाभेए इत्यपि पाठो लभ्यते ।

५. भ० १।२०१-२०६ ।

६. भ० १।४२० ।

११७. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जणं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव^१ सव्वे सत्ता एवंभूयं वेदण वेदेति । जे ते एवमाहंसु, मिच्छ^२ ते एवमाहसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव^१ परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूयं वेदेण वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणवभूयं वेदणं वेदेति ॥

११८. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया^३ *पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणवभूय वेदण वेदेति^४ ?

गोयमा ! जे ण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति, ते ण पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूय वेदेण वेदेति ।

जे ण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेति, ते ण पाणा भूया जीवा सत्ता अणवभूय वेदणं वेदेति । से तेणट्ठेण^५ *गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूयं वेदणं वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणवभूयं वेदण वेदेति^६ ॥

११९. नेरइया ण भंते ! किं एवंभूयं वेदणं वेदेति ? अणवभूयं वेदणं वेदेति ?

गोयमा ! नेरइया ण एवंभूयं पि वेदण वेदेति, अणवभूयं पि वेदणं वेदेति ॥

१२०. से केणट्ठेण^७ *भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया ण एवंभूयं पि वेदणं वेदेति, अणवभूयं पि वेदणं वेदेति^८ ?

गोयमा ? जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति, ते ण नेरइया एवभूयं वेदणं वेदेति ।

जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेति, तेण नेरइया अणवभूयं वेदणं वेदेति । से तेणट्ठेण ॥

१२१. एव जाव^१ वेमाणिया ॥

कुलगरादि-पदं

१२२. संसारमडल नेयव्व^९ ॥

१२३. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव^१ विहरइ ॥

१. भ० ५।११६ ।

२. मिच्छा (अ, क, व, म, स) ।

३. भ० १।४२१ ।

४. स० पा०—त चेव उच्चारियव्वं ।

५. स० पा०—तहेव ।]

६. सं० पा०—तं चेव ।

७. पू० प० २ ।

८. नेयव्व । जव्वदीवे ण भंते ! इह भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ?

गोयमा ! सत्त । एवं तित्थयरमायरो, पियरो, पढमा सिस्सिणीयो, चक्कवट्ठिमायरो, इत्थि-

छट्ठो उद्देशो

अप्पायु-दीहायु-पदं

१२४. कहण्णं भते ! जीवा अप्पायत्ताए कम्म पकरेति ?

गोयमा^१ । पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहण वा अफासु-
एण अणेसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा
अप्पायत्ताए कम्मं पकरेति ?

१२५. कहण्ण भते ! जीवा दीहायत्ताए कम्म पकरेति ?

गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहणं वा
फासुएण^२ एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा
दीहायत्ताए कम्मं पकरेति ॥

असुभसुभ-दीहायु-पदं

१२६. कहण्णं भते ! जीवा असुभदीहायत्ताए कम्म पकरेति ?

गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुस वइत्ता, तहारूव समण वा माहण वा हीलित्ता^३
निदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमणित्ता 'अण्णयरेण अमणुण्णेण अपीतिकार-
एण'^४ असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा असुभदीहा-
यत्ताए कम्म पकरेति ॥

१२७. कहण्ण भते ? जीवा सुभदीहायत्ताए कम्म पकरेति ?

गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुस वइत्ता, तहारूव समणं वा माहण वा
वदित्ता नमसित्ता जाव^५ पज्जुवासित्ता 'अण्णयरेण मणुण्णेण पीतिकारएण'^६
असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेत्ता—एव खलु जीवा सुभदीहायत्ताए
कम्म पकरेति ॥

रयणं, बलदेवा, वासुदेवा, वासुदेवमायरो,
पियरो; एएसि पडिसत्तु जहा समवाए नाम-
परिवाडीए तहा नेयव्वा (अ, क, व, स);
एषु आदर्शेषु द्वयोर्वचनयोः सम्मिश्रण जातम् ।
वृत्तिकृता अस्य वाचनान्तरस्य उल्लेखोपि
कृतोस्ति, यथा—अथ चेह स्याते वाचनान्तरे
कुलकर तीर्थकरादि वक्तव्यता दृश्यते, ततश्च
'ससारमडल' शब्देन पारिभाषिकसञ्ज्ञया सेह
सूचितेति सभाव्यते (वृ) । पइण्णगसमवाय
२१८-२४७ ।

१. भ० १।५१ ।

२ कह ण (अ, ता, म), कहि ण (क), । कह
ण (व) ।

३. गोयमा तिहि ठारोहि त (व, स) सर्वत्र;
द्वष्टव्य—ठा० ३।१७-२० ।

४. °हेत्ता (म) ।

५ अतिवतित्ता (अ, म) ।

६. फासु (अ, क, ता, म, स) ।

७ हीलित्ता (क, ता, व, म) ।

८. वाचनान्तरे तु अफासुएण अणेसणिज्जेण
ति दृश्यते (वृ) ।

९. भ० २।३० ।

१०. वाचनान्ते तु फासुएण इत्यादि दृश्यते (वृ) ।

कयविकए किरिया-पदं

१२८. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा, तस्स णं भंते ! 'भंडं अणुगवेसमाणस्स' कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? पारिग्गहिया^१ किरिया कज्जइ ? मायावत्तिया किरिया कज्जइ ? अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ? मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जइ ?
- गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ, पारिग्गहिया किरिया कज्जइ, मायावत्तिया किरिया कज्जइ, अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, मिच्छादसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।
- अहं से भंडे अभिसमण्णागए भवइ, तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुई-भवति ॥
१२९. गाहावइस्स ण भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए^२ भंडं साइज्जेजा, भंडे य से अणुवणीए सिया ।
- गाहावइस्स ण भंते ! ताओ भंडाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव^३ मिच्छादसणकिरिया कज्जइ ?
- कइयस्स वा ताओ भंडाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादसण-किरिया कज्जइ ?
- गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ 'जाव' अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादसणकिरिया^४ सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।
- कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवति ॥
१३०. गाहावइस्स ण भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स^५ कइए भंडं साइज्जेजा^६, भंडे से उवणीए सिया ।
- कइयस्स ण भंते ! ताओ भंडाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव^७ मिच्छादसणकिरिया कज्जइ ?
- गाहावइस्स वा ताओ भंडाओ कि आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादसणकिरिया कज्जइ ?
- गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति । मिच्छादसणकिरिया भयणाए ।
- गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवति ।

१. त भइय गवेस^० (व, म) ।

२. परि^० (अ, स) ।

३. कतिए (क, ता, व, म, स) ।

४. भ० ५।१२८ ।

५. भ० ५।१२८ ।

६. जाव अपच्चक्खाण मिच्छादसणवत्तिया^०

(अ, स), जाव मिच्छादसणवत्तिया^० (क, ता, म); जाव मिच्छादसण^० (व) ।

७. सं० पा०—विक्किणमाणस्स जाव भंडे ।

८. भ० ५।१२८ ।

१३१. गाहावइस्स णं भते ! भंडं^१ •विविकणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, धणे य से अणुवणीए सिया ?
 कइयस्स णं भते ! ताओ घणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव^२ मिच्छा-
 दंसणकिरिया कज्जइ ?
 गाहावइस्स वा ताओ घणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छा-
 दंसणकिरिया कज्जइ ?
 गोयमा ! कइयस्स ताओ घणाओ हेट्ठिलाओ चत्तारि किरियाओ कज्जति ।
 मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ।
 गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवन्ति ॥
१३२. गाहावइस्स णं भते ! भंडं विविकणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेजा, धणे से उवणीए सिया ।
 गाहावइस्स णं भते ! ताओ घणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव^३
 मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
 कइयस्स वा ताओ घणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसण-
 किरिया कज्जइ ?
 गोयमा ! गाहावइस्स ताओ घणाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्च-
 क्खानकिरिया कज्जइ । मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।
 कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवन्ति^४ ॥

अगणिकाए महाकम्मदि पदं

१३३. अगणिकाए णं भते ! अहुणोज्जलिए^५ समाणे महाकम्मतराए चेव^६, महाकिरिया-
 तराए चेव, महासवतराए^७ चेव, महावेदणतराए चेव भवइ । अहे ण समए-
 समए 'वोक्कसिज्जमाणे-वोक्कसिज्जमाणे'^८ चरिमकालसमयसि इंगालवभूए
 मुम्मुरवभूए छारियवभूए^९, तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए

१. स० पा०—भंड जाव धरो य से अणुवणीए
 सिया ? एय पि जहा भडे उवणीए तहा
 नेयव्व ।
 चउत्थो आलावगो—'धरो य से उवणीए
 सिया' जहा पढमो आलावगो—'भडे य से
 अणुवणीए सिया', तहा नेयव्वो ।
 पढम-चउत्थाण एक्को गमो, वितिय-तइथाण
 एक्को गमो ।
२. भ० ५।१२८ ।
 ३. भ० ५।१२८ ।
 ४. अहुणुज्जलिए (ता), अहुणुज्जलिए (व) ।
 ५. च्चेव (ता) ।
 ६. महस्सव० (अ, ता, व) ।
 ७. वोयसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २
 (अ,स), वोक्कसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २
 (ता), वोयसिज्जमाणे २ (म) ।
 ८. छारवभूए (अ) ।

चेव, अप्पासवतराए चेव, अप्पवेयणतराए चेव भवइ ?
हंता गोयमा ! अगणिकाए ण अहुणोज्जलिए समाणे तं चेव ॥

धणुपक्खेवे किरिया-पदं

१३४ पुरिसे ण भते ! धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं^१ ठाइ, ठिच्चा आयतकण्णातय^२ उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु उन्विहइ । तए^३ ण से उसू^४ उड्ढ वेहास^५ उन्विहिण समाणे जाइ तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइ अभिहणइ वत्तेति लेसेति^६ संघाएइ सघट्टेति परितावेइ किलामेइ^७, ठाणाओ ठाण संकामेइ, जीवियाओ ववरोवेइ । तए ण भते ! से पुरिसे कति-किरिए ?

गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे धणु परामुसइ^१, *उसु परामुसइ, ठाण ठाइ, आयतकण्णातय उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु^२ उन्विहइ, ताव च णं से पुरिसे काइयाए^३ *अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारियावणियाए^४, पाणाइवाय-किरियाए—पंचहि किरियाहि पुट्टे । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहि धणू निव्वत्तिए ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्टा^५ । एव धणुपट्टे^६ पंचहि किरियाहि, जीवा पंचहि, ण्हारू पंचहि, उसू पंचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पंचहि ॥

१३५ अहे^१ ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए, गुरुसभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइ जाव^२ जीवियाओ ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव^३ चउहि किरियाहि पुट्टे । जेसि पि य णं जीवाण सरीरेहि धणू निव्वत्तिए ते वि जीवा चउहि किरियाहि, धणुपट्टे^४ चउहि,

१. परामसइ (व, म) ।

२. वेसाह ठाण (उ० १।२२) ।

३. °कण्णाइय (अ, स); कण्णायय (म, उ० १।२२) ।

४. ततो (क, ता, व, स) ।

५. उसू (स) ।

६. वेहासे (ता) ।

७. लेस्सेति (अ, व, स) ।

८. किलोमेह उड्ढेह (भ० ८।२८७) ।

९. स० पा०—परामुसइ जाव उन्विहइ ।

१०. स० पा०—काइयाए जाव पाणाइवाय० ।

११. पुट्टे (अ, ता, व, म, स), पट्टो (क) । अत्र जीवा इति कर्तृपद बहुवचनान्तमस्ति तेन 'पुट्टा' इति पद स्वीकृतम् ।

१२. धणू० (अ, ता, स), धणूपट्टे (व) ।

१३. अवे (ता) ।

१४. भ० ५।१३४ ।

१५. भ० ५।१३४ ।

१६. °पुट्टे (अ, म, स) ।

जीवा चउहि, ण्हारू चउहि, उसू पंचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पंचहि ।
जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे^१ वट्ठति ते वि य णं जीवा
काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

अण्णउत्थिय-पदं

१३६. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमातिवखति जाव^२ पख्वेति—से जहानामए जुवति
जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव
जाव चत्तारि पच्च जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए^३ मणुस्सेहि ॥

१३७. से कहमेयं भते ! एवं ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमातिवखति जाव^४ बहुसमाइण्णे मणुयलोए
मणुस्सेहि । जे ते एवमाहसु, 'मिच्छं ते एवमाहसु'^५ । अह पुण गोयमा ! एव-
माइक्खामि^६ •जाव^७ पख्वेमि—से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा,
चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया^८, एवामेव जाव चत्तारि पच्च जोयणस-
याइ बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहि ॥

नेरइयविउव्वगा-पदं

१३८. नेरइया ण भते ! कि एगत्त पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं पभू विउव्वित्तए ?

गोयमा ! एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए, पुहत्तपि पहू विउव्वित्तए । जहा जीवा-
भिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव^९ विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स काय अभिहण-
माणा-अभिहणमाणा वेयण उदीरेति—उज्जल विउलं पगाढ कक्कस कहुय
फरुस निट्ठुर चडं तिउव्व दुवख दुग्ग दुरहियास ॥

आहाकम्मादिआहारे आराहणादि-पदं

१३९. आहाकम्म 'अणवज्जे' ति मणं पहारेत्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-
पडिक्कते^{१०} काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा । से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-
पडिक्कते काल करेइ—अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४०. एएण गमेणं नेयव्वं—कीयगडं^{११}, ठविय^{१२}, रइय^{१३}, कत्तारभत्त 'हुविभवत्तभत्त,
वहलियाभत्त'^{१४}, गिलाणभत्तं, सेज्जायरपिडं, रायपिडं^{१५} ॥

१. ओवग्गहे (अ) ।

६. जी० ३, नेरइय-उद्देशो २ ।

२. भ० १।४२० ।

१०. °लोतिय° (अ, स) ।

३. मणुस्स° (ता) ।

११. कीयकड (क, व), उद्देशिय कीयकड (ता)

४. भ० ५।१३६ ।

१२. ठवियक (क, ता); ठवित्तकडं (व) ।

५. मिच्छा (अ, क, व, म, स) ।

१३. रत्तियक (क, व); रइयक (ता) ।

६. स० पा०—एवमाइक्खामि जाव एवामेव ।

१४. °वत्तं वहलियावत्तं (व) ।

७. भ० १।४२१ ।

१५. × (क) ।

८. पवत्तं (ता) ।

१४१. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति^१ सयमेव परिभुजित्ता भवति, से ण तस्स ठाणस्स^२
 *अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा । से ण तस्स ठाणस्स
 आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ^३—अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४२. एयं पि तेह चैव जाव^४ रायपिड ॥

१४३. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति अणमण्णस्स अणुप्पदावइत्ता भवइ, से णं तस्स^५
 *ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा । से णं
 तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ—अत्थि तस्स आराहणा^६ ॥

१४४. एयं पि तेह चैव जाव^४ रायपिड ॥

१४५. आहाकम्मं ण 'अणवज्जे' त्ति बहुजणमज्जे पण्णवइत्ता भवति, से ण तस्स^७
 *ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा । से ण
 तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ^८—अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४६. एयं पि तेह चैव जाव^४ रायपिड ॥

आयरिय-उवज्झाएस्स सिद्धि-पदं

१४७. आयरिय-उवज्झाए ण भते । सविसयसि गणं अगिलाए सगिण्हमाणे, अगि-
 लाए उवगिण्हमाणे कइहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव^९ सव्वदुक्खाण अतं
 करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति, अत्थेगतिए दोच्चेण भव-
 ग्गहणेणं सिज्झति, तच्च पुण भवग्गहणं नाइक्कमति ॥

अवभक्खाणिस्स कम्मबंध-पदं

१४८. जे ण भते । परं अलिण्ण असत्तएण^{१०} अवभक्खाणेणं^{११} अवभक्खाति^{१२}, तस्स णं
 कहप्पगारा कम्मा कज्जति ?

गोयमा ! जे ण परं अलिण्ण, असत्तएणं^{१३} अवभक्खाणेणं अवभक्खाति, तस्स
 ण तहप्पगारा चैव कम्मा कज्जति । जत्थेव ण अभिसमागच्छति तत्थेव णं
 पडिसंवेदेति, तन्नो से पच्छा वेदेति ॥

१४९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^{१४} ॥

१. त्ति बहुजणस्स मज्जे भासित्ता (अ, स) ।

८. भ० ५।१४० ।

२. स० पा०—ठाणस्स जाव अत्थि ।

९. भ० १।४४ ।

३. भ० ५।१४० ।

१०. X (अ) ।

४. अहाकम्मं (अ) ।

११. अवभाइक्खइ (क, ता, व) ।

५. स० पा०—तस्स^० ।

१२. असत्तवयणेण (म, स) ।

६. भ० ५।१४० ।

१३. भ० १।५१ ।

७. स० पा०—तस्स जाव अत्थि ।

सत्तमो उद्देशो

परमाणु-खंडाणां एयणादि-पदं

१५०. परमाणुपोगले णं भंते ! एयति वेयति' •चलति फंदइ षट्ठइ खुब्भइ उदीरइ°, तं तं भावं परिणमति ?
 गोयया ! सिय एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति; सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति ॥
१५१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंघे एयति जाव' तं तं भावं परिणमति ?
 गोयमा ! सिय एयति जाव तं तं भावं परिणमति । सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति । सिय देसे एयति, देसे नो एयति ॥
१५२. तिप्पएसिए णं भंते ! खंघे एयति ?
 गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयति । सिय देसा एयति, नो देसे एयति ॥
१५३. चउप्पएसिए णं भंते ! खंघे एयति ?
 गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयति । सिय देसा एयति, नो देसे एयति । सिय देसा एयति, नो देसा एयति ।
 जहा चउप्पएसिओ तहा पंचपएसिओ, तहा जाव अणंतपएसिओ ॥

परमाणु-खंडाण छदादि-पदं

१५४. परमाणुपोगले णं भंते ! असिघारं वा खुरघारं वा ओगाहेज्जा ?
 हुंता ओगाहेज्जा' ।
 से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
 गोयमा नो तिण्ठे सम्भे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥
१५५. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ॥
१५६. अणंतपएसिए णं भंते ! खंघे असिघारं वा खुरघारं वा ओगाहेज्जा ?
 हुंता ओगाहेज्जा ।
 से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
 गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा ॥

१. स० पा०—वेयति जाव तं ।

३. ओगाहिज्ज (क, व, य, स) ।

२. भ० ५।१५० ।

१५७. *परमाणुपोगले ण भंते ? अगणिकायस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
 हता वीइवएज्जा ।
 से ण भंते ! तत्थ भियाएज्जा ?
 गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
 से ण भंते ! पुक्खलसवट्ठगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
 हता वीइवएज्जा ।
 से ण भंते ! तत्थ उल्ले सिया ?
 गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
 से ण भंते ! गंगाए महाणदीए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा ?
 हता हव्वमागच्छेज्जा ।
 से ण भंते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
 गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
 से ण भंते ! उदगावत्त वा उदगविदु वा ओगाहेज्जा ?
 हता ओगाहेज्जा ।
 से ण भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
 गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥
१५८. एव जाव असखेज्जपएसिओ ॥
१५९. अणत्तपएसिए ण भंते ! खधे अगणिकायस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
 हता वीइवएज्जा ।
 से ण भंते ! तत्थ भियाएज्जा ?
 गोयमा ! अत्थेगइए भियाएज्जा, अत्थेगइए नो भियाएज्जा ।
 से ण भंते ! पुक्खलसवट्ठगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ।
 हता वीइवएज्जा ।
 से ण भंते ! तत्थ उल्ले सिया ?
 गोयमा ! अत्थेगइए उल्ले सिया, अत्थेगइए नो उल्ले सिया ।
 से ण भंते ! गंगाए महानईए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा ?
 हता हव्वमागच्छेज्जा ।
 से ण भंते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?

१. स० पा०—एव अगणिकायस्स मज्झमज्झेण
 तहि नवरं भियाएज्ज भाणियव्व । एव
 पुक्खलसवट्ठगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण
 तहि उल्ले सिया । एवं गंगाए महाणदीए

पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा तहि विणिहाय-
 मावज्जेज्जा । उदगावत्त वा उदगविदु वा
 ओगाहेज्जा । ने ए तत्थ परियावज्जेज्जा ।

गोयमा ! अत्येगइए विणिहायमावज्जेज्जा, अत्येगइए नो विणिहाय-
मावज्जेज्जा ।

से णं भते ! उदगावत्त वा उदगविदु वा ओगाहेज्जा ?

हता ओगाहेज्जा ।

से णं भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्येगइए परियावज्जेज्जा, अत्येगइए नो परियावज्जेज्जा° ॥

परमाणु-खंधाणं सअड्ढेसमज्झादि-पदं

१६०. परमाणुपोगले ण भते ! किं सअड्ढे^१ समज्झे सपएसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे
अपएसे ?

गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे, नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपएसे ॥

१६१. दुप्पएसिए णं भते ! खंधे किं सअड्ढे समज्झे सपएसे ? उदाहु^२ अणड्ढे अमज्झे
अपएसे ?

गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे सपएसे, नो अणड्ढे नो समज्झे नो अपएसे ॥

१६२ तिप्पएसिए णं भते ! खंधे पुच्छा ।

गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे, नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे ॥

१६३ जहा दुप्पएसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिप्पएसिओ
तहा भाणियव्वा ॥

१६४. सखेज्जपएसिए ण भते ! खंधे किं सअड्ढे ? पुच्छा ।

गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे सपएसे ।

जहा सखेज्जपएसिओ तहा असखेज्जपएसिओ वि, अणंतपएसिओ वि ॥

परमाणु-खंधाणं परोप्परं फुसणा-पदं

१६५. परमाणुपोगले ण भते ! परमाणुपोगल फुसमाणे किं—

१. देसेण देस फुसइ २. देसेहि देसे फुसइ ३. देसेण सव्वं फुसइ ४. देसेहि देसे
फुसइ ५. देसेहि देसे फुसइ ६. देसेहि सव्वं फुसइ ७. सव्वेणं देस फुसइ ८.
सव्वेणं देसे फुसइ ९. सव्वेण सव्वं फुसइ^१ ?

गोयमा ! १ नो देसेण देस फुसइ २. नो देसेणं देसे फुसइ ३. नो देसेण सव्वं
फुसइ ४. नो देसेहि देसं फुसइ ५. नो देसेहि देसे फुसइ ६ नो देसेहि सव्वं

१. सअड्ढे (व) ।	(२) देसेन देशान्	(५) देसं देशान्	(८) सर्वेण देशान्
२. उदाहु (व) ।	(३) देसेन सर्वम्	(६) देसै. सर्वम्	(९) सर्वेण सर्वम् ।
३. (१) देसेन देशम्	(४) देसं देशम्	(७) सर्वेण देसम् ।	

- फुसइ ७ नो सव्वेण देसं फुसइ ८ नो सव्वेण देसे फुसइ ९ सव्वेण सव्वं फुसेइ ॥
१६६. परमाणुपोगले^१ दुप्पएसियं फुसमाणे सत्तम-णवमेहि फुसइ ।
 परमाणुपोगले तिप्पएसियं फुसमाणे निपच्छिमएहि^२ तिहि फुसइ ।
 जहा परमाणुपोगले तिप्पएसियं फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणत-
 पएसिओ ॥
१६७. दुप्पएसिए ण भते ! खंधे परमाणुपोगलं फुसमाणे कि देसेण देस फुसइ ?
 पुच्छा ।
 ततिय-नवमेहि फुसइ ।
 दुप्पएसिओ दुप्पएसियं फुसमाणे पढम-ततिय-सत्तम-नवमेहि फुसइ ।
 दुप्पएसिओ तिप्पएसियं फुसमाणे आदिल्लएहि य, पच्छिल्लएहि य तिहि^३
 फुसइ, मज्झिमएहि तिहि विपडिसेहेयव्व ।
 दुप्पएसिओ जहा तिप्पएसियं फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणतपएसिय ॥
१६८. तिप्पएसिए ण भते ! खंधे परमाणुपोगलं फुसमाणे पुच्छा ।
 ततिय-छट्ठ-नवमेहि फुसइ ।
 तिप्पएसिओ दुप्पएसियं फुसमाणे पढमएण, ततिएणं, चउत्थ-छट्ठ-सत्तम-नवमेहि
 फुसइ ।
 तिप्पएसिओ तिप्पएसियं फुसमाणे सव्वेसु वि ठाणेसु फुसइ ।
 जहा तिप्पएसिओ तिप्पएसियं फुसाविओ एवं तिप्पएसिओ जाव अणतपएसिएण
 सजोएयव्वो ।
 जहा तिप्पएसिओ एवं जाव अणतपएसिओ भाणियव्वो ॥

परमाणु-खंधाणं संधिइ-पदं

- १६९ परमाणुपोगले ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं, उक्कोसेण असखेज्जं कालं । एव जाव
 अणतपएसिओ ॥
१७०. एगपएसोगाढे ण भते ! पोगले सेए^४ तम्मि वा ठाणे वा, अणम्मि वा ठाणे
 कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । एव
 जाव असखेज्जपएसोगाढे ॥

१. एवं पर० (क, ता) ।

२. अन्त्यः ।

३. × (क, ता) ।

४. सेते (ता) ।

१७१. एगपएसोगाढे ण भते ! पोगले निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव असखेज्ज-
पएसोगाढे ॥
१७२. एगगुणकालए ण भते ! पोगले कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव अणत-
गुणकालए ।
एव वण्ण-गध-रस-फास जाव^३ अणतगुणलुक्खे । एव सुहुमपरिणए पोगले, एव
बादरपरिणए पोगले ॥
१७३. सहपरिणए ण भते ! पोगले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥
१७४. असहपरिणए^४ •ण भते ! पोगले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज कालं^५ ॥

परमाणु-खंधाणं अंतरकाल-पवं

१७५. परमाणुपोगलस्स ण भते ! अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥
१७६. दुप्पएसियस्स ण भते ! खधस्स अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण अणत काल । एव जाव अणतपएसिओ ॥
१७७. एगपएसोगाढस्स ण भते ! पोगलस्स सेयस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्जं काल । एवं जाव असखेज्ज-
पएसोगाढे ॥
१७८. एगपएसोगाढस्स ण भते ! पोगलस्स निरेयस्स अंतर कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । एव
जाव असखेज्जपएसोगाढे ।
वण्ण-गध-रस-फास-सुहुमपरिणय-बायरपरिणयाणं—एतेसि 'जं चेव' सच्चिट्ठणा
त चेव अंतर पि भाणियव्व^६ ॥
१७९. सहपरिणयस्स ण भते ! पोगलस्स अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥
१८०. असहपरिणयस्स ण भते ! पोगलस्स अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

१. ५० १ ।

३. जच्चेव (अ, क, ता, व, य) ।

२. स० ५०—असहपरिणए जहा एगगुण-

४. स० ५१, १७२ ।

कालए ।

परमाणु-खंडाणं परोष्परं अप्पाबहुयत्त-पदं

१८१. एयस्स ण भते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणाउयस्स कयरे कयरेहिंतो* अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? °
विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए, असखेज्जगुणे, दव्व-
ट्ठाणाउए असखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असखेज्जगुणे ।

संगहणी-गाहा

खेत्तोगाहणदव्वे, भावट्ठाणाउयं च अप्प-वहुं ।
खेत्ते सव्वत्थोवे, सेसा ठाणा असखेज्जगुणा ॥१॥

जीवाणं सारंभ सपरिग्गहा-पदं

१८२. नेरइया णं भते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहुं अणारंभा अपरिग्गहा ?
गोयमा ! नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा ।
१८३. से केणट्ठेण* भते ! एव वुच्चइ—नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा °
अपरिग्गहा ?
गोयमा ! नेरइया ण पुढविकायं समारभति*, °आउकायं समारभति, तेउकायं
समारभति, वाउकायं समारभति, वणस्सइकायं समारभति ° तसकायं समारभति,
सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, सच्चित्ताचित्त-मीसयाइ
दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्ठेण* गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया
सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा ॥
१८४. असुरकुमारा ण भते ! किं सारभा ? पुच्छा ।
गोयमा ! असुरकुमारा सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा ॥
१८५. से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमारा ण पुढविकायं समारंभति जाव* तसकायं
समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, भवणा
परिग्गहिया भवति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरि-
क्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवति, आसण-सयण-भंड-भत्तोवगरणा परिग्गहिया
भवति, सच्चित्ताचित्त-मीसयाइ° दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्ठेण°

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ५ स० पा०—त चेव ।

२. स० पा०—केणट्ठेण जाव अपरिग्गहा । ६. अ० ५।१८३ ।

३. नो अपरि° (ता) । ७. मिसियाइ (व); मीसजाइ (क) ।

४. स० पा०—समारभति जाव तसकाय । ८. स० पा०—तहेव ।

●गोयमा ! एवं वृच्चइ—असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा ॥

१८६ एव जाव^१ थणियकुमारा । एगिदिया जहा^२ नेरइया ॥

१८७ वेइदिया ण भंते ! कि सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ? त चेव^३ वेइदिया ण पुढविकाय समारभति जाव^४ तसकायं समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, बाहिरा^५ भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवति, 'सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति' ॥

१८८. एव जाव^६ चउरिदिया ॥

१८९. पच्चिदियतिरिक्खजोणिया ण भंते ! कि सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ?

तं चेव जाव^७ कम्मा परिग्गहिया भवति, टका कूडा सेला सिंहरी पम्भारा परिग्गहिया भवति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा परिग्गहिया भवति, उज्झर-निज्झर चिल्लल-पल्लल^८-वप्पिणा परिग्गहिया भवति, अगड-तडाग^९-दह-नईओ दावी-पुक्खरिणीदीहिया गुजालिया सरा सरपतियाओ सरसरपतियाओ बिलपतियाओ परिग्गहियाओ भवति, आरामुज्जाण^{१०}-काणणा वणा वणसडा वणराईओ^{११} परिग्गहियाओ भवति, देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवति, पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवति, पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा परिग्गहिया भवति, सिघाडग-तिग-चउक्क-वच्चर-चउमुह-महापह-पहा परिग्गहिया भवति, सगड-रह-जाण-जुग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छया परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्साओ तिरिक्ख-जोणिया तिरिक्खजोणिओ परिग्गहिया भवति, आसण-सयण-खंभ-भंड-सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्टेण ॥

१९० जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा । वाणमतर-जोइस-वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा^{१२} ॥

१. पू० प० २ ।

२. भ० ५।१८२, १८३ ।

३. ४. भ० ५।१८३ ।

५. बाहिरिया (अ, क, व, म, स) ।

६. × (अ) ।

७. भ० २।१३८ ।

८. भ० ५।१८३ ।

९. पिल्लव (ब) ।

१०. तलाग (क, ता, व, म) ।

११. °मुज्जाणा (क, व, स) ।

१२. वणरातीओ (अ, ता, स) ।

१३. भ० ५।१८४, १८५ ।

हेउ-पदं

१६१. पंच' हेऊ पणत्ता, तं जहा—हेउं जाणइ, हेउं पासइ, हेउ बुज्झइ, हेउं अभिस-
मागच्छइ, हेउ छउमत्थमरण मरइ ॥
१६२. पंच हेऊ पणत्ता, त जहा—हेउणा जाणइ जाव' हेउणा छउमत्थमरण मरइ ॥
१६३. पंच हेऊ पणत्ता, त जहा—हेउ ण जाणइ जाव' हेउ अण्णाणमरण मरइ ॥
१६४. पंच हेऊ पणत्ता, त जहा—हेउणा ण जाणइ जाव' हेउणा अण्णाणमरण मरइ ॥
१६५. पंच अहेऊ पणत्ता, त जहा—अहेउं जाणइ जाव' अहेउ केवलमरण मरइ ॥
१६६. पंच अहेऊ पणत्ता, त जहा—अहेउणा जाणइ जाव' अहेउणा केवलमरण
मरइ ॥
१६७. पंच अहेऊ पणत्ता, त जहा—अहेउ न जाणइ जाव' अहेउ छउमत्थमरण
मरइ ॥
१६८. पंच अहेऊ पणत्ता, त जहा—अहेउणा न जाणइ जाव' अहेउणा छउमत्थमरण
मरइ ॥
१६९. सेव भते ! सेव भते । त्ति' ॥

अट्ठमो उद्देशो

नियंठिपुत्त-नारयपुत्त-पद

२००. तेण कालेणं तेण समएणं जाव' परिसा पडिगया ॥
२०१. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी नारयपुत्ते
नाम अणगारे पगइभट्टए जाव' विहरति ।
तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी नियंठिपुत्ते
नाम अणगारे पगइभट्टए जाव विहरति ।

- | | |
|---|----------------|
| १. स्थानाङ्गस्य पञ्चमस्थाने (७५-८२) एतानि | ६. भ० ५।१६१ । |
| अष्टसूत्राणि क्रमभेदेन तथा किञ्चित् पाठ- | ७. भ० ५।१६१ । |
| भेदेन लभ्यन्ते । | ८. भ० ५।१६१ । |
| २. भ० ५।१६१ । | ९. भ० १।५१ । |
| ३. भ० ५।१६१ । | १०. भ० १।४-८ । |
| ४. भ० ५।१६१ । | ११. भ० १।२८८ । |
| ५. भ० ५।१६१ । | |

तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छिता नारयपुत्तं अणगार एव वयासी—सव्वपोगला ते अज्जो ! किं
सअइढा समज्झा सपएसा ? उदाहु अणइढा अमज्झा अपएसा ?
अज्जो ! त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्त अणगारं एवं वयासी—सव्वपोगला
मे अज्जो ! सअइढा समज्झा सपएसा, नो अणइढा अमज्झा अपएसा ।

२०२. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगार एवं वयासी—जइ णं ते
अज्जो ! सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, नो अणइढा अमज्झा
अपएसा, कि—

दव्वादेसेण अज्जो ! सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, नो अणइढा
अमज्झा अपएसा ?

खेत्तादेसेण अज्जो ! सव्वपोगला सअइढा ^१समज्झा सपएसा, नो अणइढा
अमज्झा अपएसा ? °

कालादेसेण ^२अज्जो ! सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, नो अणइढा
अमज्झा अपएसा ? °

भावादेसेण ^३अज्जो ! सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, नो अणइढा
अमज्झा अपएसा ? °

तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण
वि मे अज्जो ! सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, नो अणइढा अमज्झा
अपएसा,

‘खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि’^४ ।

२०३. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगार एवं वयासी—जइण अज्जो !
दव्वादेसेणं सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, नो अणइढा अमज्झा
अपएसा, एव ते परमाणुपोगल्ले वि सअइढे समज्झे सपएसे, नो अणइढे
अमज्झे अपएसे ।

जइ णं अज्जो खेत्तादेसेण वि सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, एव ते
एगपएसोगाढे वि पोगले सअइढे समज्झे सपएसे ।

जइ णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोगला सअइढा समज्झा सपएसा, एव ते
एगसमयट्ठितीए वि पोगले सअइढे समज्झे सपएसे^५ ।

१. स० पा०—तहू चेव ।

२. स० पा०—तं चेव ।

३. स० पा०—तहेव ।

४. एव खेत्तकालभावादेसेण वि नेतव्वं (ता) ।

५. सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स) ।

जइ णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोगला सअइढ्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगगुणकालए वि पोगगले सअइढ्ढे समज्झे सपएसे^१ ।

अह ते एव न भवति तो जं वयसि 'दव्वादेसेण वि सव्वपोगला सअइढ्ढा समज्झा सपएसा, नो अणइढ्ढा अमज्झा अपएसा, एव खेत्तादेसेण वि, काला-देसेण वि, भावादेसेण वि' त णं मिच्छा ॥

२०४. तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगारं एवं वयासी—नो खलु एवं^२ देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ जाणामो-पासामो । जइ णं देवाणुप्पिया नो गिलायति परिकहित्तए, त इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मं जाणित्तए ॥

२०५. तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोगला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।

खेत्तादेसेण वि^३ •मे अज्जो ! सव्वे पोगला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।

कालादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोगला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।

भावादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोगला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।^४

जे दव्वओ अपएसे से खेत्तओ नियमा अपएसे, कालओ सिय सपएसे 'सिय-अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ।

जे खेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे 'सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।

जहा खेत्तओ एव कालओ, भावओ ।

जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे^५ । एव कालओ, भावओ वि ।

जे खेत्तओ सपएसे से दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।

जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओ वि ॥

२०६. एएसि ण भते ! पोगगलाणं दव्वादेसेण, खेत्तादेसेणं, कालादेसेणं, भावादेसेणं संपएसाणं अपएसाणं य कयरे कयरेहित्तो^६ •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^७ विसेसाहिया वा ?

नारयपुत्ता ! सव्वत्थोवा पोगला भावादेसेण अपएसा, कालादेसेणं अपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेण अपएसा असखे-

१. सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स) ।

२. एय (अ, क, तद्, ब); × (स) ।

३. सं० पा० खेत्तादेसेण वि एव चेव कालदेसेण वि भावादेसेण वि एव चेव ।

४. सं० पा०—कयरेहित्तो जाव विसेसाहिया ।

- ज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपएसा असखेज्जगुणा, दब्बादेसेणं सपएसा विसेसा-
हिया, कालादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, भावादेसेण सपएसा विसेसाहिया ॥
२०७. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार वदइ नमसइ, वंदित्ता नम-
सित्ता एयमट्ठ सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति, खामेत्ता सजमेण तवसा
अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

जीवाणं-वुड्ढि-हाणि-अवट्ठि-पदं

२०८. भतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं *भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नम-
सित्ता° एव वयासी—जीवा णं भते ! कि वड्ढति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! जीवा नो वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया ॥
२०९. नेरइया ण भते ! कि वड्ढति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! नेरइया वड्ढति वि, हायति वि, अवट्ठिया वि ॥
२१०. जहा नेरइया एव जाव^१ वेमाणिया ॥
२११. सिद्धा ण भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया वि ॥
२१२. जीवा णं भते ! केवतियं कालं अवट्ठिया ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥
२१३. नेरइया ण भते ! केवतियं कालं वड्ढति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥
२१४. एव हायति वि^२ ॥
२१५. नेरइया ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेण एगं समय, उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता ॥
२१६. एवं 'सत्तसु वि'^३ पुढवीसु 'वड्ढति, हायति' भाणियव्व, नवरं—अवट्ठिएसु इम
नाणत्त, त जहा—रयणप्पभाए पुढवीए अड्डयालीस मुहुत्ता, सक्करप्पभाए
चौद्दस राइदिया^४, वालुयप्पभाए मासं, पक्कप्पभाए दो मासा, भूमप्पभाए चत्तारि
मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा ॥
२१७. असुरकुमारा वि वड्ढति, हायति जहा नेरइया । अवट्ठिया जहण्णेण एवक समय,
उक्कोसेणं अट्ठ चत्तालीस^५ मुहुत्ता ॥
२१८. एव दसविहा वि ॥

१. स० पा०—समण जाव एव ।

२. पू० प० २ ।

३. वा (अ, क, ता, स) ।

४. सत्त (ता) ।

५. राइदियाइ (अ, क, व, स); राइदिया ए
(स) ।

६. अड्डतालीस (ता) ।

- २१६ एगिदिया वड्ढति वि, हायति वि अवट्टिया वि । एएहि तिहि वि जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं^१ ॥
२२०. वेइदिया^२ 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्टिया जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण दो अतोमुहुत्ता ॥
२२१. एव जाव^३ चउरिदिया ॥

२२२. अवसेसा सव्वे 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्टियाण नाणत्त इम, त जहा—समुच्छिमपचिदियतिरिक्खजोणियाण दो अतोमुहुत्ता, गवभवक्कतियाणं चउव्वीस मुहुत्ता, समुच्छिममणुस्साण अट्टचत्तालीस मुहुत्ता, गवभवक्कतियमणुस्साण चउव्वीस मुहुत्ता, वाणमतर-जोतिसियं^४ सोहम्मीसाणेसु अट्टचत्तालीसं मुहुत्ता, सणकुमारे अट्टारस राइदियाइ चत्तालीस य मुहुत्ता, माहिदे चउव्वीसं राइदियाइ वीस य मुहुत्ता, बभलोए पचचत्तालीसं राइदियाइ, लतए नउइ^५ राइदियाइ, महासुक्के सट्ठि^६ राइदियसय, सहस्सारे दो राइदियसयाइ,^७ आणय-पाणयाण सखेज्जा भासा, आरणच्चुयाणं सखेज्जाइं वासाइं, एव गेवेज्जदेवाणं^८, विजय-वेजयत-जयत-अपराजियाण असखेज्जाइ वाससहस्साइ, सव्वट्ठसिद्धे पलिओवमस्स सखेज्जइभागो ।

एव भाणियव्व — 'वड्ढति, हायति जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग, अवट्टियाण ज भणिय'^९ ॥

२२३. सिद्धा ण भते ! केवइय काल वड्ढति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ट समयो ॥
- २२४ केवइय काल अवट्टिया ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥

जीवानं सोवचय-सावचयादि-१दं

२२५. जीवा णं भते ! किं सोवचया ? सावचया ? सोवचय-सावचया ? निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! जीवा नो सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया ।
एगिदिया ततियपदे, सेसा जीवा चउहि वि^१ पदेहि भाणियव्वा ॥

१ असखेज्जभाग (क, व, म) ।

२ वेत्तिदिया (अ, स) ।

३. म० २।१३८ ।

४. जोतिस (अ, क, स) ।

५. नउयं (अ, स) ।

६ सट्ठ (ता, व) ।

७ गेवेज्जग० (ता) ।

८ एतद् निगमनवाक्य तेन पूर्वोक्तस्य पुनरुक्त-मस्ति ।

९. × (अ; क, स) :

२२६. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा ।
 गोयमा ! सिद्धा सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-
 निरुवचया ॥
२२७. जीवा ण भंते ! केवत्तियं काल निरुवचय-निरुवचया ?
 गोयमा ! सव्वद्धं ॥
२२८. नेरइया णं भंते ! केवत्तियं कालं सोवचया ?
 गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥
२२९. केवत्तियं कालं सावचया ?
 एवं चेव ॥
२३०. केवत्तियं कालं सोवचय-सावचया ?
 एव चेव ॥
२३१. केवत्तियं कालं निरुवचय-निरुवचया ?
 गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ।
 एगिंदिया सव्वे सोवचय-सावचया सव्वद्धं । सेसा सव्वे सोवचया वि, सावचया
 वि, सोवचय-सावचया वि^१, जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेण आवलियाए
 असखेज्जइभागं । अवट्टिएहि वक्कतिकालो भाणियव्वो ॥
२३२. सिद्धा ण भंते ! केवत्तियं काल सोवचया ?
 गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेणं अट्ट समया ॥
२३३. केवत्तिय काल निरुवचय-निरुवचया ?
 जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेणं छ मासा ॥
२३४. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति^१ ॥

नवमो उद्देशो

किमिदं रायगिह-पदं

२३५. तेण कालेणं तेण समएणं जाव' एव वयासी—किमिद' भंते । नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? कि पुढवी नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? कि आऊ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? •कि तेऊ वाऊ वणस्सई नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? कि टका कूडा सेला सिहरी पम्भारा नगर राहगिह ति पवुच्चइ ? कि जल-थल-बिल-गुह-लेणा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि उज्झर-निज्झर-चित्तल-पल्लल-वप्पिणा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि अगड-तडाग दह-नईओ बावी-पुक्खरिणी-दीहिंया गुजालिया सरा सरपतियाओ सरसरपतियाओ बिलपतियाओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि आरामुज्जाण-काणणा वणा वणसडा वणराईओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि देवउल-सभ-पव-शूभ-खाइय-परिक्खाओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि सिघाडग-तिग-वउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि सगड-रह-जाण-जुग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणियाओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि लोही-लोहकडाह-कडुच्छया नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि भवणा नगर रायगिहं ति पवुच्चइ ? कि देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिंया तिरिक्खजोणि-णीओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि सयण-खभ-भड°-सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? गोयमा । पुढवि वि नगर रायगिह ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ॥

२३६. से केणट्टेण ? गोयमा । पुढवी जीवा इ य, अजीवा इ य नगर रायगिह ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ जीवा इ य, अजीवा इ य नगर रायगिह ति पवुच्चइ । से तेणट्टेण त चेव ॥

उज्जोय-अंधयार-पदं

२३७. से नूण भते ! दिया उज्जोए ? राई अंधयारे ?
हंता गोयमा ! •दिया उज्जोए, राई° अंधयारे ॥

१. म० १।४-१० ।

२. किमिय (क); किमित (ब, म) ।

३. स० पा०—पवुच्चइ जाव वरास्सई ? जहा-
एयणुहेसए पंचिदियतिरिक्खजोणिंयाणं वत्त-
व्वया तहा भाणिंयव्वा जाव सचित्ताचित्त ।

४. स० पा०—गोयमा जाव अंधयारे ।

२३८. से केणट्टेणं ? गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, राइ^१ असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्टेण ॥
२३९. नेरइयाणं भते ! कि उज्जोए ? अघयारे ?
गोयमा ! नेरइयाणं नो उज्जोए, अघयारे ॥
२४०. से केणट्टेणं ?
गोयमा ! नेरइयाणं असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्टेण ॥
२४१. असुरकुमाराणं भते ! कि उज्जोए ? अघयारे ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोए, नो अघयारे ॥
२४२. से केणट्टेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्टेणं । जाव^२ थणियकुमाराणं^३ ॥
२४३. पुढविक्काइया जाव^४ तेइदिया 'जहा नेरइया'^५ ॥
२४४. चउरिदियाणं भते ! कि उज्जोए ? अघयारे ?
गोयमा ! उज्जोए वि, अघयारे वि ॥
२४५. से केणट्टेणं ? गोयमा ! चउरिदियाणं सुभासुभा य पोग्गला सुभासुभे य पोग्गलपरिणामे । से तेणट्टेण ॥
२४६. एवं जाव^६ मणुस्साण ॥
२४७. घाणमंतर-जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा^७ ॥
- मणुस्सखेत्ते समयदि-पव^८**
२४८. अत्थि ण भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एव पण्णायए, तं जहा—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव^९ ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥
२४९. से केणट्टेणं^{१०} भते ! एव वुच्चइ—नेरइयाणं तत्थगयाणं नो एव पण्णायए, तं जहा^{११}—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव^{१२} ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
गोयमा ! इहं तेसि माण, इहं तेसि पमाण, इहं तेसि एव पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्टेण जाव नो एव पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा ॥

१. रत्ति (ता, ब, म) ।

६. पू० प० २ ।

२. जाव एव वुच्चइ जाव (अ, क, ता, ब, म, स)

७. म० १।२४१, २४२ ।

३. थणियाण (क, ता, ब, म, स) ।

८. ठा० २।३८७-३८९ ।

४. पू० प० २ ।

९. स० पा०—केणट्टेण जाव समया ।

५. नेरइया जहा (क, ता, ब, म); म० १।२३९, १०. ठा० २।३८७-३८९ ।

२५०. एवं जाव^१ पच्चिदियतिरिक्खज्जोणियाणं ॥

२५१. अत्थि ण भते ! मणुस्साणं इहगयाणं एव पण्णायते^२, तं जहा—समया इ वा जाव^३ उस्सप्पिणी इ वा ?

हता अत्थि ॥

२५२. से केणट्ठेण^४ ? गोयमा ! इहं तेसि माण, इहं तेसि पमाण, इह चेव तेसि एवं पण्णायते, तं जहा—समया इ वा जाव^५ उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेण ॥

२५३. वाणमत-र-जोइस-वेमाणियाण जहा नेरइयाण^६ ॥

पासावच्चिज्ज-पदं

२५४. तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते ठिच्चा एव वयासी—से नूण भते ! असखेज्जे लोए अणता राइदिया उपज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जिस्सति वा ? विगच्छिसु^७ वा, विगच्छति वा, विगच्छिस्सति वा ? परिता राइदिया उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जि-स्सति वा ? विगच्छिसु वा, विगच्छति वा, विगच्छिस्सति वा ?

हता अज्जो ! असखेज्जे लोए अणता राइदिया त चेव ॥

२५५. से केणट्ठेण जाव विगच्छिस्सति वा ?

से नूण भे अज्जो ! पासेण अरहया पुरिसादाणिण सासए लोए वुइए—अणा-दीए अणवदग्गे परिस्से परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्जे सखित्ते, उप्पि विसाले, अहे पलियकसठिए, मज्जे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकारसठिए । तेसि च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्जे सखित्तसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियकसठियसि, मज्जे वरवइरविग्गहियसि, उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परिता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति । से भूए^८ उप्पण्णे विगएपरिणए, अजीवेहि लोककइ पलोककइ, जे लोककइ से लोए ?

हता भगव ! से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—असखेज्जे लोए अणता राइदिया त चेव ।

१. पू० प० २ ।

२. पण्णायति (अ, क, व, म); पण्णायइ ता ।

३. ठा० २।३८७-३८९ ।

४. ठा० २।३८७-३८९ ।

५. भ० ५।२४८-२४९ ।

६. विगिच्छिसु (अ, ता, म) ।

७. नूण (स) ।

तप्पभिद्दं च णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभि-
जाणंति सव्वणू सव्वदरिसी ॥

२५६. तए ण ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीर वंदंति नमसति, वंदित्ता नमंसित्ता
एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुव्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-
महव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबघं ॥

२५७. तए णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं
सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति जाव' चरिमेहि उस्सास-निस्सा-
सेहि सिद्धा° बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा । अत्येगतिया
देवलोएसु' उववणा ॥

देवलोय-पदं

२५८. कइविहा णं भंते ! देवलोगा पणत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पणत्ता, तं जहा—भवणवासी 'वाणमंतर-
जोतिसिय-वेमाणियभेदेण'° ।

भवणवासी दसविहा, वाणमंतरा अट्ठविहा, जोतिसिया पंचविहा वेमाणिया
द्विविहा ।

संगहणी-गाहा

किमिदं रायगिह ति य, उज्जोए अंधयार-समए य ।

पांसंतिवासिपुच्छा, रातिंदिय देवलोया य ॥१॥

२५९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

दसमो उद्देशो

२६०. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी, जहा पढमिल्लो उद्देशओ° तहा
नेयव्वो एसो वि, नवरं—चंदिमा भाणियव्वा ॥

१. म० १।४३३ ।

२. सं० पा०—सिद्धा जाव सव्व° ।

३. देवा देवलोएसु (अ, क, ता, व, म) ।

४. वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया भेदेणं

(अ, ता, म) ।

५. म० १।५१ ।

६. अत्येव शतकस्य ।

छट्ठं सतं

पढमो उद्देशो

संगहणी-गाहा

१. वेदण २. आहार ३. महस्सवे य ४. सपदेश ५. तमुए^१ ६. भविए ।
७. साली ८ पुढवी ९ 'कम्म' १०. अण्णउत्थि^२ दस छट्ठगम्मि सए ॥१॥

पसत्थनिज्जराए सेयत्त-पदं

१. से नूण भंते ! जे महावेदणे से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ?
महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?
हता गोयमा ! जे महावेदणे^३ से महानिज्जरे, जे महानिज्जरे से महावेदणे,
महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए^४ ॥
२. छट्ठ-सत्तमासु ण भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेदणा ?
हता महावेदणा ॥
३. ते ण भंते ! समणेहितो निग्गयेहितो महानिज्जरतरा ?
गोयमा ! नो इण्ठे समट्ठे ॥
४. से केण ख्वाइ अट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जे महावेदणे^५ से महानिज्जरे ? जे
महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे^६ पसत्थ-
निज्जराए ?
गोयमा ! से जहानामए दुवे वत्था सिया—एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते, एगे वत्थे
खंजणरागरत्ते । एएसि ण गोयमा ! दोण्ह वत्थाणं कयरे वत्थे दुद्धोयतराए चेव,
दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव; कयरे वा वत्थे सुद्धोयतराए चेव,

१. तमुयाए (क्व०) ।

३. सं० पा०—एव चेव ।

२. कम्मणउत्थि (क, ता, व, म) ।

४. सं० पा०—महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए

सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, जे वा से वत्ये कद्मरागरत्ते ? जे वा से वत्ये खजणरागरत्ते ?

भगव ! तत्थ णं जे से^१ कद्मरागरत्ते, से ण वत्ये^२ दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुप्परिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढी-कयाइ, चिक्कणीकयाइ^३, सिलिट्टीकयाइ^४, खिलीभूताइ^५ भवति । सपगाढं पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवति ।

से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरण आउडेमाणे^६ महया-महया सदेण, महया-महया घोसेण, महया-महया परपराघाएण नो संचाएइ तीसे अहिगरणीए केइ अहा-बायरे पोमले परिसाडित्ते, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइ, *चिक्कणीकयाइ, सिलिट्टीकयाइ, खिलीभूताइ भवति । सपगाढं पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवति ।

भगव ! तत्थ जे से^१ खजणरागरत्ते, से ण वत्ये सुद्धोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ सिद्धिलीकयाइ, निट्टियाइ कयाइ^७, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्ध-त्थाइ भवति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा, महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थय जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा !

स/ से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ? हुता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ^८, *सिद्धिलीकयाइं, निट्टियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा, महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदगविदु^९ *पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगविदु तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ? °

हुता विद्धसमागच्छइ ।

१. से वत्ये (क, व, म) ।

२. भंते (व, म) ।

३. × (अ) ।

४. सिद्धिलीकयाइ (म, स) ।

५. खिलीकयाइ (अ, स) ।

६. आकोडेमाणे (अ, क, ता, व, म, स) ।

७. सं पा०—गाढीकयाइ जाव नो ।

८. °सायाइ (अ, स) ।

९. से वत्ये (अ, क, ता, व, म, स) ।

१०. कडाइ (अ, क, ता, व, म, स) ।

११. सं पा०—कम्माइ जाव महा° ।

१२. सं पा०—उदगविदु जाव हुता ।

एवामेव गोयमा ! समणार्णं निग्गथाणं^१ •अहाबायराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवन्ति । जावतियं तावतियं पि ण ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा,^२ महापज्जवसाणा भवति । से तेणट्ठेण जे महावेदणं से महानिज्जरे^३ •जे महानिज्जरे से महावेदणं, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थ^४ निज्जराए ॥

करण-पद^५

५. कतिविहे णं भते ! करणे पणत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे करणे पणत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ॥
६. नेरइयाण भते ! कतिविहे करणे पणत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पणत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ॥
७. एव पच्चिदियाणं सव्वेसि चउव्विहे करणे पणत्ते ।
एगिदियाणं दुविहे—कायकरणे य, कम्मकरणे य ।
विगल्लिदियाणं ति विहे—वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ।
८. नेरइयाण भते ! कि करणओ असायं वेदणं वेदेति ? अकरणओ असायं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! नेरइया णं करणओ असायं वेदणं वेदेति, नो अकरणओ असायं वेदणं वेदेति ॥
९. से केणट्ठेण ? गोयमा ! नेरइया णं चउव्विहे करणे पणत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे । इच्चेएणं चउव्विहेणं असुभेणं करणेणं नेरइया करणओ अस्सायं वेदणं वेदेति, नो अकरणओ । से तेणट्ठेण ॥
१०. असुरकुमारा णं कि करणओ ? अकरणओ ?
गोयमा ! करणओ, नो अकरणओ ॥
११. से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराणं चउव्विहे करणे पणत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे । इच्चेएणं सुभेणं करणेणं असुरकुमारा करणओ सात्तं वेदणं वेदेति, नो अकरणओ ॥
१२. एवं जाव^६ थणियकुमारा ॥

१. सं० पा०—निग्गथाणं जाव महा^० ।

३. पू० प० २ ।

२. सं० पा०—महानिज्जरे जाव निज्जराए ।

१३. पुढवीकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं—इच्चेएणं सुभासुभेणं^१ करणेणं पुढविवका-
इया करणओ वेमायाए वेदणं वेदेत्ति, नो अकरणओ ॥
१४. ओरालियसरीरा सव्वे सुभासुभेणं वेमायाए^२ ।
देवा सुभेणं सायं ॥

महावेदणा-महानिज्जरा-चउभंग-पदं

१५. जीवा णं भंते ! किं महावेदणा महानिज्जरा ? महावेदणा अप्पनिज्जरा ?
अप्पवेदणा महानिज्जरा ? अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! अत्येगतिया जीवा महावेदणा महानिज्जरा, अत्येगतिया जीवा महा-
वेदणा अप्पनिज्जरा, अत्येगतिया जीवा अप्पवेदणा महानिज्जरा, अत्येगतिया
जीवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ॥
१६. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! पडिमापडिबन्नए अणगारे महावेदणे महानिज्जरे । छट्ठ-सत्तमासु^३
पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा । सेलेसि पडिबन्नए अणगारे
अप्पवेदणे महानिज्जरे । अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ॥
१७. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति^४ ।

संगहणी-गाहा

महावेदणे य वत्थे, कइम-खज्जणकए य अहिगरणी ।
तणहत्थे य कवल्ले, करण-महावेदणा जीवा^५ ॥१॥

१. असुभेणं (म) ।

२. विविधमात्रया कदाचित् साताम्, कदाचित्
असातामित्यर्थः (वृ) ।

३. सत्तमीसु (क, ता, व, म) ।

४. अ० १।५१ ।

५. अतोप्रे 'सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति' पाठ.
सर्वेषु आदर्शेषु अस्ति, किन्तु संग्रहणी-गाथाया
अनन्तर अस्य किं प्रयोजनं न ज्ञायते ।

बीओ उद्देसो

१८. रायगिहं नगरं जाव^१ एवं वयासी—आहारुद्देसओ जो पण्णवणाए^२ सो सव्वो
निरवसेसो नेयव्वो ॥
१९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^३ ॥

तइओ उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. बहुकम्म २. वत्थपोगल-पयोगसा-वीससा य ३ सादीए ।
४ कम्मट्ठित्ति ५ त्थि ६. संजय ७ सम्मदिट्ठी य ८. सन्नी य ॥१॥
९ भविए १०. दसण ११ पज्जत्त १२ भासय १३ परित्ते १४. नाण १५ जोगेय ।
१६, १७. उवयोगाहारग १८. सुहुम १९. चरिमबंधे य २० अप्पबहुं ॥२॥

महाकम्मादीण पोगलबंधादि-पदं

- २० से नूण भते ! 'महाकम्मस्स, महाकिरियस्स, महासवस्स'^४, 'महावेदणस्स सव्वओ पोगला वज्झति, सव्वओ पोगला चिज्जति, सव्वओ पोगला उवचिज्जति; सया समिय पोगला वज्झति, सया समिय पोगला चिज्जति, सया समिय पोगला उवचिज्जति; सया समिय च ण तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए, अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुणत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छित्ताए अभिज्झित्ताए अहत्ताए—नो उइदत्ताए, दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हता गोयमा ! महाकम्मस्स त चेव ॥
२१. से केणट्ठेण ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स अहयस्स वा, धोयस्स वा, ततुगयस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोगला वज्झति, सव्वओ पोगला चिज्जति जाव^५ परिणमति से तेणट्ठेण ॥

१. भ० १।४-१० ।

२. प० २८ ।

३. भ० १।५१ ।

४. महस्सवस्स (ता, म) ।

५. महाकम्मस्स महासवस्स महाकिरियस्स (अ);

महासवस्स, महाकम्मस्स महाकिरियस्स

(क, ता, म, स) ।

६. भ० ६।२० ।

अप्पकम्मादीणं पोग्गलभेदादि-पदं

२२. से नूणं भंते ! अप्पकम्मस्स, अप्पकिरियस्स, अप्पासवस्स, अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति, सव्वओ पोग्गला छिज्जंति, सव्वओ पोग्गला विद्धसति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति; सया समियं पोग्गला भिज्जंति, सया समियं पोग्गला छिज्जंति, सया समियं पोग्गला विद्धसति, सया समियं पोग्गला परिविद्धंसंति; सया समियं च ण तस्स आया सुखत्ताए^१ •सुवण्णत्ताए सुगंधत्ताए सुरसत्ताए सुफासत्ताए इट्ठत्ताए कंतत्ताए पियत्ताए सुभत्ताए मणुण्णत्ताए मणांमत्ताए इच्छियत्ताए अणभिज्जिभयत्ताए उड्ढत्ताए—नो अहत्ताए^२, सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?
हता गोयमा ! जाव परिणमंति ॥

२३. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा, पकियस्स वा, मइल्लियस्स वा, रइल्लियस्स^३ वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुट्ठेण वारिणा धोव्वेमाणस्स^४ सव्वओ पोग्गला भिज्जंति जाव^५ परिणमति । से तेणट्ठेणं ॥

कम्मोवचय-पदं

२४. वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि ॥
२५. जहा णं भंते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि, तहा णं 'जीवाणं कम्मोवचए'^६ कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा^७, नो वीससा ॥
२६. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवाणं तिविहे पयोगे पण्णत्ते, त जहा—मणप्पयोगे, वइप्पयोगे, कायप्पयोगे । इच्चेएणं तिविहेणं पयोगेण जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा ।
एवं सव्वेसि पच्चिदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे ।
पुढवीकाइयाणं एगविहेणं पयोगेण, एव जाव^८ वणस्सइकाइयाण ।
विगल्लिदियाणं दुविहे पयोगे पण्णत्ते, त जहा—वइपयोगे,^९ कायपयोगे य ।

१. सं० पा०—पसत्थ नेयव्व जाव सुहत्ताए ।

२. रतिल्लियस्स (व, म, स) ।

३. धोव्वं (अ, क, व, म) ।

४. भ० ६।२२ ।

५. भंते ! जीवस्स पुरगलोवचए (व) ।

६. पयोगसा (स) ।

७. भ० १।४३७ ।

८. वयं (क, व, म, स) ।

इच्चेएण दुविहेण पयोगेणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा । से तेणट्ठेण'
 *गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा°, नो वीससा । 'एव
 जस्स जो पयोगो जाव वेमाणियाण'^१ ॥

कम्मोवचयस्स सादि-अनादित्त-पद

- २७ वत्थस्स ण भते । पोगलोवचए कि सादीए सपज्जवसिए ? सादीए अपज्जव-
 सिए ? अणादीए सपज्जवसिए ? अणादीए अपज्जवसिए ?
 गोयमा । वत्थस्स ण पोगलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जव-
 सिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए ॥
- २८ जहा ण भते ! वत्थस्स पोगलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए
 अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा
 ण जीवाण कम्मोवचए पुच्छा ।
 गोयमा ! अत्थेगतियाण जीवाण कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, अत्थेगति-
 याणं अणादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाण अणादीए अपज्जवसिए, नो चेव
 ण जीवाण कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए ॥
- २९ से केणट्ठेण ? गोयमा ! इरियावहियवधयस्स^१ कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए,
 भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धियस्स कम्मो-
 वचए अणादीए अपज्जवसिए । से तेणट्ठेण ॥

जीवाणं सादि-अनादित्त-पदं

- ३० वत्थे ण भते ! कि सादीए सपज्जवसिए—चउभगो ?
 गोयमा । वत्थे सादीए सपज्जवसिए, अवसेसा 'तिण्णि वि'^१ पडिसेहेयव्वा ॥
- ३१ जहा ण भते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो
 अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा ण जीवा किं सादीया
 सपज्जवसिया ? चउभगो—पुच्छा ।
 गोयमा ! अत्थेगतिया सादीया सपज्जवसिया—चत्तारि वि भाणियव्वा ॥
- ३२ से केणट्ठेण ? गोयमा । नेरतिय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा गतिरागतिं
 पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, सिद्धा गति पडुच्च सादीया अपज्जवसिया,
 भवसिद्धिया लद्धि पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसार पडुच्च
 अणादीया अपज्जवसिया । से तेणट्ठेण ॥

१. स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो ।

२ एतद् द्विरुक्तमिव आभाति ।

३. रिया° (अ, ता, व, म) ।

४. × (अ), तिण्णि (क, ता, व, म) ।

कम्मपगडी बंध विवेचन-पदं

३३. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. नाणावरणिज्जं २. दरिसणावरणिज्जं^१ ३. वेदणिज्जं ४. मोहणिज्जं ५. आउगं ६. नाम ७. गोयं^० ८. अंतराइयं ॥

३४. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बधट्ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिणिणं य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिआ कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।

^१दरिसणावरणिज्जं जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिणिणं य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिआ कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ^० ।

वेदणिज्जं जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेणं^१ तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिणिणं य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिआ कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ^० ।

मोहणिज्जं जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तिसागरोवमकोडाकोडीओ, सत्तं य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिआ कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।

आउगं जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाणि पुव्वकोडित्ति-भागमभहियाणि, कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।

नाम-गोयाणं जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, दोणिणं य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिआ कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।

अंतराइयं^१ जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिणिणं य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिआ कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ^० ॥

३५. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? नपुसओ बधइ ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ बधइ ?

गोयमा ! इत्थी वि बधइ, पुरिसो वि बधइ, नपुसओ वि बधइ । नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ सिय बधइ सिय नो बधइ ।

एव आउगवज्जाओ सत्तं कम्मपगडीओ ॥

३६. आउगं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? नपुसओ बधइ ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ बधइ ?^१

१. दसणा^० (ब); सं० पा०—दरिसणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ।

२. सं० पा०—एव दरिसणावरणिज्जं पि ।

३. सं० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।

४. सं० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।

५. नाणावरणिज्जे (अ, स) ।

६. पुच्छा (अ, क, ता, व, म, स) ।

गोयमा । इत्थी सिय बघइ, सिय नो बंधइ ।^१ *पुरिसो सिय बंधइ, सिय नो बघइ । नपुसओ सिय बंधइ, सिय नो बघइ ।^२ नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ न बघइ ॥

३७ नाणावरणिज्ज णं भते । कम्मं किं सजए बंधइ ? अस्संजए बंधइ ? सजया-
सजए बंधइ ? नोसजए नोअसंजए नोसजयासजए बंधइ ?

गोयमा । सजए सिय बघइ, सिय नो बघइ । अस्संजए बंधइ, संजयासजए वि बंधइ । नोसजए नोअस्सजए नो संजयासजए न बघइ ।

एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्टिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥

३८ नाणावरणिज्ज णं भते । कम्मं किं सम्मदिट्ठी बंधइ ? मिच्छदिट्ठी^३ बंधइ ?
सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ ?

गोयमा । सम्मदिट्ठी सिय बघइ, सिय नो बघइ । मिच्छदिट्ठी बंधइ, सम्मा-
मिच्छदिट्ठी बंधइ ।

एवं आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्टिल्ला दो भयणाए, सम्मामिच्छदिट्ठी न बंधइ ॥

३९. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्मं किं सण्णी बघइ ? असण्णी बघइ ? नोसण्णी
नोअसण्णी बघइ ?

गोयमा । सण्णी सिय बंधइ, सिय नो बघइ । असण्णी बंधइ । नोसण्णी
नोअसण्णी न बंधइ ।

एव वेदणिज्जाउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ । वेदणिज्जं हेट्टिल्ला दो बंधति,
उवरिल्ले भयणाए । आउग हेट्टिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥

४०. नाणावरणिज्जं णं भते । कम्मं किं भवसिद्धि^४ए बघइ ? अभवसिद्धि^५ए बघइ ?
नोभवसिद्धि^६ए नोअभवसिद्धि^७ए बंधइ ?

गोयमा । भवसिद्धि^४ए भयणाए, अभवसिद्धि^५ए बघइ । नोभवसिद्धि^६ए नोअभव-
सिद्धि^७ए न बघइ ।

एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउग हेट्टिल्ला दो भयणाए । उवरिल्ले न बघइ ॥

४१ नाणावरणिज्ज ण भते । कम्मं किं चक्खुदसणी बघइ ? अचक्खुदसणी बंधइ ?
ओहिदसणी बघइ ? केवलदसणी बघइ ?

गोयमा । हेट्टिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बघइ ।

एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्ज हेट्टिल्ला तिण्णि बंधति, केवल-
दसणी भयणाए ॥

४२. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं पज्जत्तए बंधइ ? अपज्जत्तए बंधइ ?
 नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए बंधइ ?
 गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बंधइ । नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए
 न बंधइ ।
 एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥
४३. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं भासए बंधइ ? अभासए बंधइ ?
 गोयमा ! दो वि भयणाए ।
 एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्ज भासए बंधइ, अभासए भयणाए ॥
४४. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं परित्ते बंधइ ? अपरित्ते बंधइ ? नोपरित्ते
 नोअपरित्ते बंधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते बंधइ । नोपरित्ते
 नोअपरित्ते न बंधइ । एव आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगळीओ । आउय^१ परित्ते
 वि, अपरित्ते वि भयणाए, नोपरित्ते नोअपरित्ते न बंधइ ॥
४५. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं आभिणिबोहियनाणी बंधइ ? सुयनाणी
 बंधइ ? ओहिनाणी बंधइ ? मणपज्जवनाणी बंधइ ? केवलनाणी बंधइ ?
 गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए । केवलनाणी न बंधइ ।
 एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला चत्तारि बधत्ति, केवल-
 नाणी भयणाए ॥
४६. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं मइअण्णाणी बंधइ ? सुयअण्णाणी बंधइ ?
 विभगनाणी बंधइ ?
 गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्तवि बधत्ति, आउग भयणाए ॥
४७. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं मणजोगी बंधइ ? वइजोगी^२ बंधइ ?
 कायजोगी बंधइ ? अजोगी बंधइ ?
 गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, अजोगी न बंधइ ।
 एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला बधत्ति, अजोगी न बंधइ ॥
४८. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं सागारोवउत्ते^३ बंधइ ? अणागारोवउत्ते
 बंधइ ?
 गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए ॥
४९. नाणावरणिज्ज णं भते ! कम्मं किं आहारए बंधइ ? अणाहारए बंधइ ?
 गोयमा ! दो वि भयणाए ।
 एव वेदणिज्जाउगवज्जाण छण्ह । वेदणिज्ज आहारए बंधइ, अणाहारए भय-
 नाए । आउए आहारए भयणाए, अणाहारए न बंधइ ॥

१. आउए (अ, ब, स) ।

३. सागारोवयुत्ते (अ, स) ।

२. वय^० (म, स) ।

५०. नाणावरणिज्जं णं भत्ते ! कम्मं किं सुहुमे बंधइ ? बादरे बंधइ ? नोसुहुमे नोबादरे बधइ ?
 गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बादरे भयणाए । नोसुहुमे नोबादरे न बंधइ ।
 एवं आउगवज्जाओ सत्तं वि । आउगं सुहुमे बादरे भयणाए । नोसुहुमे नोबादरे न बधइ ॥
५१. नाणावरणिज्जं णं भत्ते ! कम्मं किं चरिमे बंधइ ? अचरिमे बधइ ?
 गोयमा ! अट्ठं वि भयणाए ॥

वेदगावेदगाण जीवाण अप्पाबहुयत्त-पदं

५२. एएसि णं भत्ते ! जीवाण इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं, नपुसगवेदगाणं, अवेदगाणं य कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुसगवेदगा अणंतगुणा ।
 एएसि सव्वेसि पदाणं^२ अप्प-बहुगाइं उच्चारयेव्वाइं जाव^३ सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा ॥
५३. सेव भत्ते ! सेव भत्ते ! तिं ॥

चउत्थो उद्देसो

कालादेसेणं सपदेस-अपदेस-पदं

५४. जीवे णं भत्ते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
 गोयमा ! नियमा सपदेसे ॥
५५. नेरइए णं भत्ते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
 गोयमा ! सिय सपदेसे, सिय अपदेसे ॥
५६. एव जाव^४ सिद्धे ॥
५७. जीवा णं भत्ते ! कालादेसेणं किं सपदेसा ? अपदेसा ?
 गोयमा ! नियमा सपदेसा ॥

१. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया । ४. भ० १।५१ ।

२. भ० ६।३७-५१ ।

५. पु० प० २ ।

३. प० ३ ।

५८. नेरइया णं भते ! कालादेसेणं कि सपदेसा ? अपदेसा ?
 गोयमा ! १. सव्वे वि ताव होज्जा सपदेसा २ अहवा सपदेसा य अपदेसे य
 ३. अहवा सपदेसा य अपदेसा य ॥
५९. एव जाव^१ थणियकुमारा ॥
६०. पुढविकाइया ण भते ! कि सपदेसा ? अपदेसा ?
 गोयमा ! सपदेसा वि, अपदेसा वि ॥
६१. एवं जाव^१ वणप्फइकाइया^१ ॥
६२. सेसा जहा^१ नेरइया तहा जाव^१ सिद्धा ॥
६३. आहारगाण जीवेगिदियवज्जो तियभंगो । अणाहारगाण जीवेगिदियवज्जा^१
 छब्भगा एव भाणियव्वा—१. सपदेसा वा २. अपदेसा वा ३ अहवा सपदेसे य
 अपदेसे य ४. अहवा सपदेसे य अपदेसा य ५. अहवा सपदेसा य अपदेसे य
 ६. अहवा सपदेसा य अपदेसा य । सिद्धेहि तियभंगो ।
 भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया जहा^१ ओहिया । नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिय-
 जीव-सिद्धेहि तियभंगो ।
 सण्णीहि जीवादिओ तियभंगो । असण्णीहि एगिदियवज्जो तियभंगो । नेरइयदेव-
 मणुएहि छब्भगो । नोसण्णि-नोअसण्णि-जीव-मणुय-सिद्धेहि तियभंगो ।
 सलेसा जहा ओहिया । कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा जहा आहारओ,
 नवरं—जस्स अत्थि एयाओ । तेउलेस्साए जीवादिओ तियभंगो, नवर—
 पुढविककाइएसु, आउवणप्फतीसु छब्भगा । पम्हलेस्स-सुवकलेस्साए जीवादिओ
 तियभंगो । अलेसेहि जीव-सिद्धेहि तियभंगो । मणुएसु छब्भगा ।
 सम्मदिट्ठीहि जीवादिओ तियभंगो । विगलिदिएसु छब्भगा । मिच्छदिट्ठीहि
 एगिदियवज्जो तियभंगो । सम्मामिच्छदिट्ठीहि छब्भगा । सजएहि जीवादिओ
 तियभंगो । अस्सजएहि^१ एगिदियवज्जो तियभंगो । सजयासजएहि तियभंगो
 जीवादिओ । नोसजय-नोअसजय-नोसजयासजय-जीव-सिद्धेहि तियभंगो ।
 सकसाईहि^१ जीवादिओ तियभंगो । एगिदिएसु अभगक । कोहकसाईहि जीवे-
 गिदियवज्जो तियभंगो । देवेहि छब्भगा । माणकसाई-मायाकसाईहि जीवेगि-

१. पू० प० २ ।

२. पू० प० २ ।

३. वणस्सइ० (क) ।

४. भ० ६।५५, ५८ ।

५. पू० प० २ ।

६. जीवपदे एकैन्द्रियपदे च सपएसो य अप्पएसो

य इत्येवरूप. एक एव भगवद्, बहूना
 विग्रहगत्यापन्नानां सप्रदेशानामप्रदेशानां च
 लाभात् (वृ) ।

७. भ० ६।५४, ५७ ।

८. असजएहि (क, म) ।

९. सकसादीहि (ता) ।

दियवज्जो तियभंगो । नेरइय-देवोहि छद्मभंगा । लोभकसाईहि जीवेगिदियवज्जो तियभंगो । नेरइएमु छद्मभंगा अकसाई-जीव-मणुएहि, सिद्धोहि तियभंगो ।
 (ओहियनाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे जीवादिओ तियभंगो । विगलिदिएहि छद्मभंगा । ओहिनाणे 'मणपज्जवनाणे केवलनाणे' जीवादिओ तियभंगो । ओहिए अण्णाणे, भडअण्णाणे, मुयअण्णाणे, एगिदियवज्जो तियभंगो । विभंग-नाणे जीवादिओ तियभंगो ।
 सजोती^१ जहा ओहिओ, मणजोगी, वडजोगी, कायजोगी जीवादिओ तियभंगो, नवर—कायजोगी एगिदिया, तेसु अभगय^२ । अजोगी जहा अलेस्सा । सागारोवउत्त-अणागारोवउत्तेहि जीवेगिदियवज्जो तियभंगो ।
 सवेदगा जहा सकसाई । इत्थिवेदग-पुरिसवेदग-नपुसगवेदगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवर—नपुसगवेदे एगिदिएसु अभगय । अवेदगा जहा अकसाई । ससरीरी जहा ओहिओ । ओरालिय-वेउच्चियसरीराणं जीवेगिदियवज्जो तियभंगो । आहारगसरीरे जीव-मणुएमु छद्मभंगा, तेयग-कम्मगाइ^३ जहा ओहिया । असरीरेहि जीव-सिद्धोहि तियभंगो ।
 आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इदियपज्जत्तीए, आणापाणपज्जत्तीए^४ जीवेगिदियवज्जो तियभंगो, भासा^५-मणपज्जत्तीए जहा सण्णी । आहार-अपज्ज-त्तीए जहा अणाहारगा, सरीर-अपज्जत्तीए, इदिय-अपज्जत्तीए, आणापाण-अपज्जत्तीए जीवेगिदियवज्जो तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहि छद्मभंगा, भासा-मणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहि छद्मभंगा ।

संगहणो-गाहा

सपदेसाहारग-भविअ-सण्णि-लेसा-दिट्ठि-सजय-कसाए ।
 नाणे जोगुवओगे, वेदे य सरीर-पज्जत्ती ॥१॥

पचचक्खाणादि-पदं

६४. जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ?
 गोयमा ? जीवा पच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि ॥

१. मणकेवलनाणे (अ, क, ता, म, स) ।

२ सजोति (ता) ।

३. अभगग (ता) ।

४. कम्माइ (अ, ता, म); कम्मगाण (स) ।

५. आणापाणु^० (क, ता, व, म) ।

६. भास (अ, क, ता, व) ।

६५. सव्वजीवाणं एवं पुच्छा ।

गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव' चउरिदिया [सेसा दो पडिसेहेयव्वा'] ।
पचिदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणा-
पच्चक्खाणी वि । मणूसा तिण्णि वि । सेसा जहा नेरइया ॥

६६. जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाण जाणति ? अपच्चक्खाण जाणति ? पच्च-
क्खाणापच्चक्खाण जाणति ?

गोयमा ! जे पचिदिया ते तिण्णि वि जाणति, अवसेसा 'पच्चक्खाणं न
जाणति', अपच्चक्खाण न जाणति, पच्चक्खाणापच्चक्खाण न जाणति ॥

६७. जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाण कुव्वति ? अपच्चक्खाण कुव्वति ? पच्च-
क्खाणापच्चक्खाण कुव्वति ?

जहा ओहिओ तहा कुव्वणा ॥

६८. जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? अपच्चक्खाणनिव्वत्तिया-
उया ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ?

गोयमा ! जीवा य, वेमाणिया य पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, तिण्णि वि ।
अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ।

संगहणी-गाहा

१. पच्चक्खाणं २. जाणइ, ३. कुव्वइ तिण्णेव ४. आउनिव्वत्ती ।

सपएसुहेसम्मि य, एंभेए दडगा चउरो ॥१॥

६९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देशो

तमुक्काय-पदं

७०. किमियं भते ! तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ? कि पुढवी^१ तमुक्काए त्ति
पव्वुच्चति ? आऊ^२ तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ?

गोयमा ! नो पुढवि तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ॥

१. पू० प० २ ।

२. असौ कोष्ठकर्वातिपाठो व्याख्यांश. प्रतीयते ।

३. अपच्चक्खाण जाणति (ता, म) ।

४. म० १।५१ ।

५. पुढवि (अ, क, ता, स) ।

६. आउ (अ, क, व, म, स) ।

७१ से केणट्टेणं ? गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेइ, अत्थेगइए^१ देसं नो पकासेइ । से तेणट्टेण ॥

७२ तमुक्काए^२ ण भते ! कहि समुट्ठिए ? कहि सनिट्ठिए ?
गोयमा ! जवुदीवस्स दीवस्स बहिया तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे वीईवइत्ता, अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदय समुद्दे बायालीस जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ जलताओ एगपएसियाए सेढीए—
एत्थं^३ ण तमुक्काए समुट्ठिए । सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ड उप्पइत्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे-पवित्थरमाणे सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता ण उड्डं पि य ण जाव^४ बभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थड सपत्ते—एत्थ ण तमुक्काए सनिट्ठिए^५ ॥

७३ तमुक्काए ण भते ! किसिठिए पणत्ते ?
गोयमा ! अहे मल्लग-मूलसिठिए, उप्पि कुक्कुडग^६-पजरगसिठिए पणत्ते ॥

७४ तमुक्काए ण भते ! केवतिय विक्खभेण, केवतिय परिकखेवेण पणत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पणत्ते, त जहा—सखेज्जवित्थडे य, असखेज्जवित्थडे य ।
तत्थ ण जे से सखेज्जवित्थडे, से ण सखेज्जाइं जोयणसहस्साइ विक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिकखेवेण पणत्ते ।
तत्थ णं जे से असखेज्जवित्थडे, से ण असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ विक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिकखेवेण पणत्ते ॥

७५. तमुक्काए ण भते ! केमहालए पणत्ते ?
गोयमा ! अयण^७ जवुदीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्ववभतराए जाव^८ एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च अणुसय तेरस अगुलाइ अद्धगुलग च किच्चिविसेसाहिए परिकखेवेण पणत्ते । देवे ण महिड्डीए जाव^९ महाणुभावे इणामेव-इणामेवत्ति कट्ठ केवलकप्प जवुदीव दीव तिहिअच्छ-रानिवाएहि तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्ठित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से ण देवे ताए जक्किट्ठाए तुरियाए जाव^{१०} दिव्वाए देवगइए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव

१ × (क, ता) ।

२ तमुक्काए (अ, क, ता, व, म) ।

३. सणिट्ठिए (ता) ।

४ तत्थ (अ, स) ।

५ × (अ) ।

६. सनिविट्ठिए (अ, स), सनिहिते (क) ।

७. कुक्कुडग (म, स) ।

८. अय ए (क, म), अय ण (ता, स) ।

९. ठा० १।२४८ ।

१०. अ० ३।४ ।

११. अ० ३।३८ ।

एकाहं वा, दुयाहं वा, तियाहं वा, उक्कोसेण छम्मासे वीईवएज्जा, अत्थेगतिं तमुक्कायं वीईवएज्जा अत्थेगतिं तमुक्कायं नो वीईवएज्जा । एमहाएण गोयमा ! तमुक्काए पण्णत्ते ॥

७६. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो तिण्ठे समट्ठे ॥

७७. अत्थि णं भते ! तमुक्काए गामा इ वा ? जाव' सण्णिवेसा इ वा ?
णो तिण्ठे समट्ठे ॥

७८. अत्थि ण भंते ! तमुक्काए ओराला वलाहया ससेयति ? सम्मुच्छति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि ॥

७९. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो वि पकरेति ॥

८०. अत्थि ण भते ! तमुक्काए वादरे थणियसद्दे ? वादरे विज्जुयारे ?
हंता अत्थि ॥

८१. तं भते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
तिण्णि वि पकरेति ॥

८२. अत्थि णं भते ! तमुक्काए वादरे पुढविकाए ? वादरे अगणिकाए ?
णो तिण्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

८३. अत्थि ण भते ! तमुक्काए चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-ताराख्खा ?
णो तिण्ठे समट्ठे, पलियस्सओ पुण अत्थि ॥

८४. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए चंदाभा ति वा ? सूरभा ति वा ?
णो तिण्ठे समट्ठे, 'कादूसणिया पुण' सा ॥

८५. तमुक्काए ण भंते ! केरिसए वण्णएण पण्णत्ते ?
गोयमा ! काले कालोभासे गभीरे^१ लोमहरिसज्जणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते । देवे वि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा^२, अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा^३ सीह-सीहं तुरियं-तुरिय खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥

८६. तमुक्कायस्स णं भंते ? कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?

१. भ० १।४६ ।

२. नाओ (ता, म) ।

३. विज्जयाए (अ); विज्जुए (क, ता, व, म) ।

४. काउसणिया पुए (ता) ।

५. गभीर (अ, क, ता, व, स, वृ) ।

६. खोभाएज्ज (क, ता, म); खभाएज्जा (स) ।

७. एतत् पद वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

गोयमा ! तेरस नामधेज्जा पणत्ता, त जहा—तमे इ वा, तमुक्काए इ वा, अघकारे इ वा, महघकारे इ वा, लोगघकारे इ वा, लोगतमिसे^१ इ वा, देवघकारे इ वा, देवतमिसे^२ इ वा, देवरण्णे^३ इ वा, देववूहे^४ इ वा, देवफलहे^५ इ वा, देवपडिक्खोभे इ वा, अरुणोदए इ वा समुद्दे^६ ॥

८७. तमुक्काए ण भते ! किं पुढविपरिणामे ? आउपरिणामे ? जीवपरिणामे ? पोग्गलपरिणामे ?

गोयमा ! नो पुढविपरिणामे, आउपरिणामे वि, जीवपरिणामे वि, पोग्गलपरिणामे वि ॥

८८. तमुक्काए ण भते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव^७ तसकाइयत्ताए उववन्नपुब्बा ?
हता गोयमा ! असत्ति^८ अदुवा अणतक्खत्तो, नो चेव ण वादरपुढवीकाइयत्ताए, वादरअणिकाइयत्ताए वा ।

कण्हराइ-पदं

८९. कइ ण भते ! कण्हरातीओ पणत्ताओ^९ ?

गोयमा ! अट्ठ कण्हरातीओ पणत्ताओ ॥

९०. कहि ण भते ! एयाओ अट्ठ कण्हरातीओ^{१०} पणत्ताओ ?

गोयमा ! उप्पि सणकुमार-माहिदाण कप्पाणं, हव्वि^{११} बंभलोए कप्पे 'रिट्ठे विमाणपत्थडे'^{१२}, एत्थ ण अक्खडग-समच्चरस-सठाणसठियाओ अट्ठ कण्हरातीओ पणत्ताओ, त जहा—पुरत्थिमे ण दो, पच्चत्थिमे ण दो, दाहिणे ण दो, उत्तरे ण दो । पुरत्थिमब्भतरा^{१३} कण्हराती दाहिण-बाहिर कण्हराति पुट्ठा, दाहिणम्भतरा कण्हराती पच्चत्थिम-बाहिरं कण्हराति पुट्ठा, पच्चत्थिमम्भतरा कण्हराती उत्तर-बाहिर कण्हराति पुट्ठा, उत्तरम्भतरा^{१४} कण्हराती पुरत्थिम-बाहिर कण्हराति पुट्ठा ।

१. °तिमिसे (क, ता, म) ।

२. देवतिमिसे (अ, क, ता, स) ।

३. देवारण्णे (क, ता, ब) ।

४. देवपूहे (ता) ।

५. °पलिहे (ता) ।

६. समुद्देति वा (अ, स) ।

७. म० १।४३७ ।

८. असइ-असइ (ता) ।

९. द्रष्टव्य—ठा० ८।४३-४७ ।

१०. °रायीतो (ब) ।

११. हेट्ठि (अ, क, ब, म); हिट्ठि (स), स्थानाङ्ग-सूत्रे (८।४३, वृत्तिपत्र ४१०) अभयदेव-भूरिणा 'हेट्ठि ति अघस्ताव' ब्रह्मलोकस्य इति व्याख्यातम् । अत्र च (वृत्तिपत्र २७१) 'हव्वि ति सम' इति व्याख्यातम् ।

१२. रिट्ठविमाण० (ठा० ८।४३) ।

१३. पुरत्थिमम्भतरा (क) ।

१४. उत्तरम्भतरा (ब, स) ।

दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हरातीओ छलंसाओ, दो उत्तर-
दाहिणाओ बाहिराओ कण्हरातीओ तसाओ, दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ
अब्भंतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ अब्भंतराओ
कण्हरातीओ चउरंसाओ ।

संगहणी-गाहा

पुव्वावरा छलसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा ।,

अब्भतर चउरसा, सव्वा वि य कण्हरातीओ ॥१॥

६१. कण्हरातीओ ण भते ! केवतियं आयामेण ? केवतियं विक्खमेण ? केवतियं
परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ आयामेणं, सखेज्जाइं जोयणसहस्साइं
विक्खमेणं, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ॥

६२. कण्हरातीओ ण भते ! केमहालियाओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! अयं णं जबुद्धोवे दीवे^१ • जाव^२ देवे ण महिब्ढोए जाव^३ महाणुभावे
इणामेव-इणामेव त्ति कट्ठु केवलकप्पं जबूदीव दीवं तिहि अच्छरानिवाएहिं
तिसत्तक्खुत्तो अणूपरियट्ठित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से णं देवे ताए उक्किट्ठाए
तुरियाए जाव^४ दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव एकाहं वा,
दुयाह वा, तियाहं वा, उक्कोसेण^५ अद्धमास वीईवएज्जा, अत्थेगइए
कण्हराति वीईवएज्जा । अत्थेगइए कण्हराति णो वीईवएज्जा, एमहालियाओ
ण गोयमा ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

६३. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?

णो इणट्ठे समट्ठे ॥

६४. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गामा इ वा ? जाव^६ सण्णिवेसा इ वा ?

णो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु ओराला वलाहया संसेयंति ? सम्मुच्छंति ?

वासं वासति ?

हता अत्थि ॥

६६. तं भते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?

गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति ॥

१. स० पा०—दीवे जाव अद्धमासं ।

४. भ० ३।३८ ।

२. भ० ६।७५ ।

५. भ० १।४६ ।

३. भ० ३।४ ।

६७. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु बादरे अणियसद्धे ? बादरे विज्जुयारे ?
 '●हता अत्थि ॥
६८. त भते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
 गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति ॥
६९. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु बादरे आउकाए ? बादरे अगणिकाए ? बादरे
 वणप्फइकाए ?
 णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥
१००. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
 णो तिणट्ठे समट्ठे ॥
१०१. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु चदाभा ति वा ? सुराभा ति वा ?
 णो तिणट्ठे समट्ठे ॥
१०२. कण्हरातीओ ण भते ! केरिसियाओ वण्णेण पण्णत्ताओ ?
 गोयमा ! कालाओ ●कालोभासाओ गभीराओ लोमहरिसज्जणाओ भीमाओ
 उत्तासणाओ परमकिण्हाओ वण्णेण पण्णत्ताओ । देवे वि णं अत्थेगतिए जे ण
 तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा, अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा
 सीह-सीह तुरिय-तुरिय ० खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥
१०३. कण्हराती ण भते ! कति नामघेज्जा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! अट्ठ नामघेज्जा पण्णत्ता, त जहा—कण्हराती इ वा, मेहराती इ वा,
 मघा इ वा, माघवई इ वा, वायफलहा इ वा, वायपलिकखोभा इ वा, देव-
 फलिहा इ वा, देवपलिकखोभा इ वा ॥
१०४. कण्हरातीओ ण भते ! किं पुढवीपरिणामाओ ? आउपरिणामाओ ?
 जीवपरिणामाओ ? पोगलपरिणामाओ ?
 गोयमा ! पुढविपरिणामाओ, नो आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ वि,
 पोगलपरिणामाओ वि ॥
१०५. कण्हरातीसु ण भते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव'
 तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?
 हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतक्खुत्तो; नो चेव णं बादरआउकाइयत्ताए,
 बादरअगणिकाइयत्ताए, बादरवणप्फइकाइयत्ताए वा ॥

१. स० पा०—अहा ओराला तहा ।

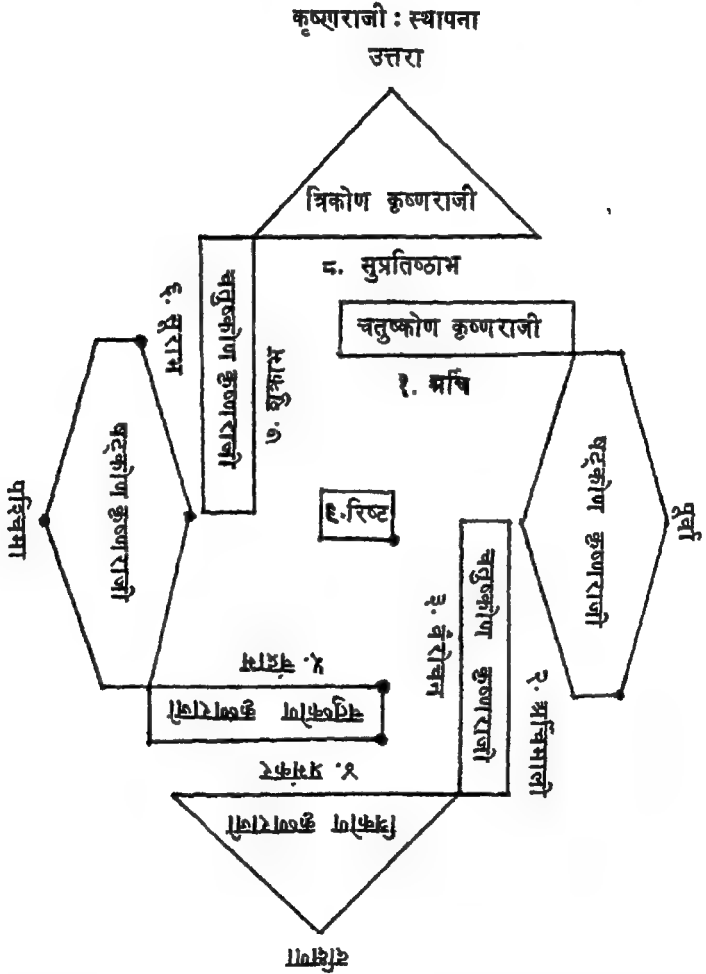
३. केवइया (ता) ।

२. स० पा०—कालाओ जाव खिप्पामेव ।

४. स० १।४३७ ।

लोगंतिथदेव-पदं

१०६. एएसि णं अट्ठहं कण्हराईण अट्ठसु ओवासतरेसु अट्ठ लोगतिगविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अच्ची २. अच्चिमाली ३. वइरोयणे ४ पभकरे ५. चंदाभे ६. सूराभे ७. सुक्काभे ८ सुपइट्ठाभे, 'मज्जे रिट्ठाभे' ॥



१. वभंकरे (ता) ।
२. सुकाभे (ता) ।
३. इह चावकाशान्तरवर्तिषु अष्टासु अचि.प्रभू-

तिषु विमानेषु वाच्येषु यत् कृष्णराजीनां मध्यमभागवर्ति रिष्टं विमान नवम उक्तं तद्विमानप्रस्तावाद् अवसेयम् (वृ) ।

- १०७ कहि णं भते ! अच्चि-विमाणे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! उत्तर-पुरत्थिमे णं ॥
१०८. कहि ण भते ! अच्चिमाली विमाणे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! पुरत्थिमे ण । एव परिव्वाडीए नेयव्वं जाव—
१०९. कहि ण भते ! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! बहुमज्झदेसभाए ॥
११०. एएसु ण अट्ठसु लोगतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगतिया देवा परिवसत्ति,
 तं जहा—

संगहणी-गाहा

- सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्धतोया य ।
 तुसिया अन्वावाहा, अग्गिच्चा नेव रिट्ठा य ॥१॥
१११. कहि ण भते ! सारस्सया देवा परिवसत्ति ?
 गोयमा ! अच्चिम्मि विमाणे परिवसत्ति ॥
- ११२ कहि णं भते ! आइच्चा देवा परिवसत्ति ?
 गोयमा ! अच्चिमालिम्मि विमाणे । एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव—
- ११३ कहि ण भते ! रिट्ठा देवा परिवसत्ति ?
 गोयमा ! रिट्ठिम्मि विमाणे ॥
- ११४ सारस्सयमाइच्चाण भते । देवाण कति देवा, कति देवसया पण्णत्ता ?
 गोयमा ! सत्त देवा, सत्त देवसया परिवारो^१ पण्णत्तो ।
 वण्ही—वरुणाण देवाण चउद्दस देवा, चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
 गद्धतोय—तुसियाण देवाण सत्त देवा, सत्त देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
 अवसेसाण नव देवा, नव देवसया परिवारो पण्णत्तो ।

संगहणी-गाहा

- पढम-जुगलम्मि सत्तओ, सयाणि बीयम्मि चउद्दसहस्सा ।
 तइए सत्तसहस्सा, नव नेव सयाणि सेसेसु ॥१॥
११५. लोगतिगविमाणा ण भते ! किपइट्ठिया पण्णत्ता ?
 गोयमा ! वाउपइट्ठिया पण्णत्ता । एव नेयव्वं विमाणाण पइट्ठाणं, बाहुल्लु-
 च्चत्तमेव सठाण, बभलोयवत्तव्वया नेयव्वा^२ जाव—

१. × (अ, क, ता, व, म) ।

३. जी० ३ ।

२. नेयव्वा जहा जीवाभिगमे देवुद्देशए (अ, स)

११६. लोयंतियविमाणेषु णं भते । सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए,
आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणप्फइकाइयत्ताए, देवत्ताए,
देवित्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइ अदुवा अणतक्खुत्तो, नो चेव ण देवित्ताए^१ ॥
११७. 'लोगंतिय देवाण'^२ भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥
११८. लोगतियविमाणेहितो ण भते ! केवतिय अबाहाए^३ लोगते पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ अबाहाए लोगते पण्णत्ते ॥
११९. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति^४ ॥

छट्ठो उद्देशो

नेरइयादीणं आवास-पद

१२०. कति ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव^५ अहेसत्तमा^६ ।
रयणप्पभाईण आवासा भाणियव्वा जाव^७ अहेसत्तमाए । एव जत्तिया^८ आवासा
ते भाणियव्वा जाव^९—
१२१. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच्च अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, त जहा—विजए^{१०}, *वेजयते, जयते,
अपराजिए^{१०} सव्वट्ठसिद्धे ॥

मारणंतियसमुग्घाय-पदं

- १२२ जीवे ण भंते ! मारणतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि निरयावाससि

१. देवत्ताए (म, स) ।

६. तमत्तमा (अ, स) ।

२. लोगतियविमाणेषु ण (अ, क, ता, ब, म) ।

७. म० ११२१२ ।

३. आबाहाए (ता) ।

८. जे जत्तिया (अ, क, ब, म, स) ।

४. म० ११५१ ।

९. म० ११२१३-२१५ ।

५. म० ११२११ ।

१०. स० पा०—विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे ।

नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीर वा बधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तित्ति^१, ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहणइ, समोहणित्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि निरयावाससि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा । एव जाव^२ अहेसत्तमा पुढवी ॥

१२३. जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए, जहा नेरइया तहा भाणियन्वा जाव^३ थणियकुमारा ॥

१२४ जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण केवइय गच्छेज्जा ? केवइय पाउणेज्जा ?

गोयमा ! लोयत गच्छेज्जा, लोयत पाउणेज्जा ॥

१२५. से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ^४, दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहणइ, समोहणित्ता मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्त वा, सखेज्जइभागमेत्त वा, वालग्ग वा, वालग्ग-पुहत्त^५ वा; एव लिक्ख-जूय-ज्व-अगुल जाव^६ जोयणकोडि वा, जोयणकोडाकोडि वा सखेज्जेसु वा असखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु, लोगते वा एगपएसिय सेढि मोत्तूण असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइया-वाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा ।

जहा पुरत्थिमे ण मदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ, एव दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण, उड्ढे, अहे ।

१. नियत्तेति (अ, स) ।

२. भ० १।२११ ।

३. पू० प० २ ।

४. इह हव्वमा = (स) ।

५. °पुहत्त (य) ।

६. वृ; अ० सू० ४०० ।

जहा पुढविकाइया तहा एगिदियाणं सव्वेसि एक्केक्कस्स छ आलावगा भाणियव्वा ।

१२६. जीवे णं भते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता जे भविए असं-
खेज्जेसु वेइदियावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि वेइदियावासंसि वेइदियत्ताए
उववज्जित्तए, से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ?
सरीरं वा बंधेज्जा ?

जहा नेरइया^१, एवं जाव^२ अणुत्तरोववाइया ॥

१२७. जीवे णं भते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए पचसु
अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अण्णयरंसि अणुत्तरविमाणंसि
अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज
वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?

तं चेव जाव^३ आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा ।

१२८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति* ॥

सत्तमो उद्देशो

धन्नाणं जोणि-ठिइ-पवं

१२९. अह भते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाणं, जवाणं, जवजवाणं—एएसि णं धन्नाणं
कोट्टाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं^४ लिताणं
पिहियाणं मुहियाणं लब्धियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिणिणं सवच्छराइं । तेण परं जोणी
पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ^५, तेण परं वीए अबीए भवत्ति, तेण परं
जोणीबोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो !

१३०. अह भते ! कल^६-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्पाव^७-कुलत्थ-आलिसंदग-सत्तीणं^८-
पल्लिमंथगमाईणं^९—एएसि णं धन्नाणं कोट्टाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं

१. भ० ६।१२२ ।

२. भ० १।२१४, २।५ ।

३. भ० ६।१२२ ।

४. भ० १।५१ ।

५. उल्लित्ताणं (स) ।

६. विद्धसेइ (अ, क, स) ।

७. कलाव (अ); कलाय (व, स); कालाव (म)

८. निप्पाव (ता, स) ।

९. सत्तीणं (अ, व, स) ।

१०. तिलिमिथग० (ता) ।

मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लिताणं पिहियाणं मुहियाणं लंछियाणं केवत्तियं कालं
जोणी सच्चिट्ठइ ?

‘गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पच्च सवच्छराइं । तेण परं जोणी
पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धसइ, तेण परं बीए अवीए भवति, तेण परं
जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो ।’

१३१. अहं भते ! अयसि-कुसुभग-कोह्व-कंगु-वरग^१-रालग-कोदुसग^२-सण-सरिसव-
मूलावीयमाईणं—एएसि ण धन्नाणं कोट्टाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं
मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लिताणं पिहियाणं मुहियाणं लंछियाणं केवत्तियं कालं
जोणी सच्चिट्ठइ ?

‘गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तं संवच्छराइ । तेण परं जोणी
पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धसइ, तेण परं बीए अवीए भवति, तेण परं
जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो ।’

गरुणा-काल-पदं

१३२ एगमेगस्स ण भते ! मुहुत्तस्स केवत्तिया ऊसासद्धा वियाहिया ?

गोयमा ! असखेज्जाणं समयाणं समुदय-समिति-समागमेण सा एगा ‘आवलिया
त्ति’^३ पवुच्चइ, सखेज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आवलिया निस्सासो—

गाथा—

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुक्किट्ठस्स^४ जंतुणो ।
एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणु त्ति वुच्चइ ॥१॥
सत्त पाणूइ^५ से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे ।
लवाण सत्तहत्तरिए^६, एस मुहुत्ते वियाहिए ॥२॥
तिणिण सहस्सा सत्त य, सयाइ तेवत्तरि च ऊसासा ।
एस मुहुत्तो दिट्ठो, सव्वेहि अणंतनाणीहि ॥३॥

१ सं० पा०—जहा सालीणं तथा एयाणि वि ६ तुलना—ठा० ३।१२५, ५।२०६, ७।६० ।
नवरं पच्च सवच्छराइं सेसं त चेव । ७. आवलिया त्ति (क, ता, ब) ।

२ वरट्ठ (ठा० ७।६०) ।

८. निरुक्किट्ठस्स (ता) ।

३. कोदुसग (व) ।

९. पाणूणि (अ, स) ।

४ मूलगं (अ, क, स) ।

१० सत्तसं (क, ब) ।

५ सं० पा०—एयाणि वि तद्देव नवरं सत्तं
सवच्छराइ ।

एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उडू^१, तिण्णि उडू अयणे, दो^२ अयणा संवच्छरे, 'पंच सवच्छराइ'^३ जुगे, वीस जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साण वाससयसहस्सं, चउरासीइं वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वगे, चउरासीइ पुव्वंगा सयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं तुडियगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववगे, अववे^४, हूहूयगे^५, हूहूए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नल्लिणंगे, नल्लिणे, अत्थनिउरगे, अत्थनिउरे^६, अउयंगे, अउए^७, 'नउयगे, नउए, पउयंगे, पउए^८ चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे, सीसपहेलिया । एताव ताव गणिए, एताव ताव गणियस्स विसए, तेण पर ओवमिए^९ ॥

ओवमिय-काल-पदं

१३३. से कि तं ओवमिए ?

ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे य, सागरोवमे य ॥

१३४. 'से कि तं पलिओवमे ? से कि तं सागरोवमे ?'^{१०}

गाहा—

सत्थेण सुत्तिक्खेण वि, छेत्तु भेत्तुं व^{११} जं किर न सक्का ।

तं परमाणु सिद्धा, वदन्ति आदि पमाणानं ॥१॥

अणताण परमाणुपोग्गलाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिया इ वा, सण्हसण्हिया इ वा, उड्डरेणू^{१२} इ वा, तसरेणू इ वा, रहरेणू इ वा, वालगो^{१३} इ वा, लिक्खा इ वा, जूया इ वा, जवमज्जे इ वा, अगुले इ वा । अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्डरेणू, अट्ठ उड्डरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाण मणुस्साणं वालगो; 'एवं हरिवास-रम्मग-हेमवय-एरन्नवयाण, पुव्वविदेहाण मणुस्साण अट्ठ वालग्गा सा एगा

१. उडू (ता, व) ।

(क), पज्जुए य नज्जुए य (व) ।

२. वे (ता, व) ।

६. उवमिए (अ, क, व, म, स) । तुलना—अ०

३. पंचसवच्छरिए (अ, क, ता, व, म, स) ।

सू० ४१७ ।

४. अपपे (व, स) ।

१०. से किं त पलिओवमे सागरोवमे २ (अ, स),

से किं त पलितोवमे २ (क, ता) ।

५. हूहूय (अ, क, स) ।

११. च (अ, क, व, म, स, वृ) ।

६. ० निपूरे (क, ता, व) ।

७. अउए (अ, स); अउए (क); अज्जुए (व) । १२. उड्ड० (अ, क, ता, व, म) ।

८. पउए २, नउए २ (अ, ता, स); पज्जुए य० १३. वालग्गा (स) ।

लिक्खा', अट्ट लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ट जूयाओ से एगे जवमज्जे, अट्ट जवमज्जा से एगे अंगुले ।

एएण अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाणि पादो, वारस अंगुलाइं विहत्थी^२, चउवीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीस अंगुलाइ कुच्छी, छन्नउत्ति^३ अंगुलाणि से एगे दडे इ वा, धणू इ वा, जूए इ वा, नालिया इ वा, अक्खे इ वा, मुसले इ वा ।

एएण धणुप्पमाणेण दो धणुसहस्साइ गाउय, चत्तारि गाउयाइ जोयण ।

एएण जोयणप्पमाणेण जे पल्ले जोयणं आयाम-विक्खभेणं, जोयण उड्डं उच्चत्तेण, त तिउणं, सविसेसं परिरएणं—से णं एगाहिय-वेहिय-तेहिय^४, उक्कोस सत्तरत्तप्परूढाण समट्ठे^५ सनिच्चिए भरिए^६ वालग्गकोडीण ।

ते ण वालग्गे नो अग्गे दहेज्जा, नो वातो हरेज्जा, नो कुच्छेज्जा^७, नो परि-विद्धसेज्जा, नो पूतित्ताए हव्वभागच्छेज्जा ।

तओ^८ णं वाससए-वाससए गते^९ एगमेगं वालग्गं अवहाय^{१०} जावतिएणं कालेणं से पल्ले खीणे निरए निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवइ । से तं पलिओवमे ।

गाहा—

२. एसि पल्लानं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।

तं सागरोवमस्स उ, एकस्स भवे परिमाण ॥

१. प्रस्तुतपाठे भरतैरवतयोर्मनुष्याणामुल्लेखो नास्ति, अनुयोगद्वारसूत्रे विद्यते । तस्य पूर्ण-पाठः इत्यमस्ति—

अट्ट देवकुव-उत्तरकुवगाण मणुस्साण वालग्गा हरिवास-रम्मगवासाण मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।

अट्ट हरिवास-रम्मगवासाणम णुस्साण वालग्गा हेमवय-हेरणवयाण मणुस्साण से एगे वालग्गे ।

अट्ट हेमवय-हेरणवयाण मणुस्साण वालग्गा पुव्वविदेह-अवर विदेहाण मणुस्साण से एगे वालग्गे ।

अट्ट पुव्वविदेह-अवरविदेहाण मणुस्साण वालग्गा भरहेरवयाणं मणुस्साण से एगे वालग्गे ।

अट्ट भरहेरवयाणं मणुस्साण वालग्गा सा एगा लिक्खा (अ० सू० ३६६) ।

२. वितत्थी (अ) ।

३. छप्पुउइ (ता) ।

४. तिओण (अ) ।

५. षष्ठीबहुवचनलोपाद् एकाहिकद्वयाहिकत्रयाहि-काणाम् (वृ) ।

६. ससट्ठे (अ, म) ।

७. हरिए (ता) ।

८. कुत्थेज्जा (अ, व, म) ।

९. ताए (अ, क) ।

१०. × (अ, ता, म, स) ।

११. अवहाय २ (ता) ।

एएण सागरोवमपमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा
१. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २ दो^१ सागरोवमकोडा-
कोडीओ कालो सुसम-दूसमा^२ ३. एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए
वाससहस्सेहि ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ४. एक्कवीस वाससहस्साइ कालो
दूसमा ५. एक्कवीस वाससहस्साइ कालो दूसम-दूसमा ६ ।

पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइ कालो दूसम-दूसमा १. एक्कवीस
वाससहस्साइ कालो दूसमा^३ २. •एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए
वाससहस्सेहि ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ३ दो सागरोवमकोडाकोडीओ
कालो सुसम-दूसमा ४. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा^४ ५.
चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा ६ ।

दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दस सागरोवमकोडाकोडीओ
कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्स-
प्पिणी य ॥

सुसम-सुसमाए भरहवास-पदं

१३५. जबुद्दीवे ण भते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए उत्तिमदु-
पत्ताए^५, भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे^६ होत्था ?

गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहानामए—आलिगपुक्खरे
ति वा, एव उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव^७ तत्थ ण बह्वे भारया मणुस्सा
मणुस्सीओ य आसयति सयति चिट्ठति निसीयति तुयट्ठति हसति रमति
ललति । तीसे ण समाए भारहे वासे तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहि-तहि बह्वे उद्दाला
कोद्दाला जाव^८ कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव^९ छव्विहा मणुस्सा अणुस-
ज्जित्था, त जहा—पम्हगंधा, मियगंधा, अममा, तेतली^{१०}, सहा, सणिचारी ॥

१३६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^{११} ॥

१. दुण्णि (क) ।

२. दूसमा (ता, स) ।

३. स० पा०—दूसमा जाव चत्तारि ।

४. उत्तमदु० (स) ।

५. पडोगारे (ता, ब, म) ।

६. जी० ३; ज० २ ।

७. जी० ३; ज० २ ।

८. जी० ३; ज० २ ।

९. तेयतली (ब) ।

१०. अ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देशो

पुढवी-आदिसु गेहादिपुच्छा-पद

१३७. कति णं भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव^१ ईसीपठभारा ॥
१३८. अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
१३९. अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए अहे गामा इ वा ? जाव^१ सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
१४०. अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे ओराला बलाहया ससेयति ?
समुच्छति ? वास वासति ?
हता अत्थि । तिण्णि वि पकरेति—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो वि पकरेति^१ ॥
१४१. अत्थि णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसहे ?
हता अत्थि । तिण्णि वि पकरेति^१ ॥
१४२. अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे बादरे अगणिकाए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएण ॥
१४३. अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चदिम^१—सूरिय-गहगण-
नक्खत्त^० तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
१४४. अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चदाभा ति वा ? सूरामा
ति वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।
एव दोच्चाए पुढवीए भाणियव्वं, एव तच्चाए वि भाणियव्वं, नवरं—देवो वि
पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नागो पकरेति । चउत्थीए वि एवं, नवरं—
देवो एक्को पकरेति, नो असुरो, नो नागो । एव हेट्ठिल्लासु सव्वासु देवो^१
पकरेति ।

१. ठा० पा० ११०८ ।

२. म० ११४६ ।

३. द्रष्टव्यम्—म० ६१७६ ।

४. द्रष्टव्यम्—म० ६१८१ ।

५. स० पा०—चदिम जाव तारारूवा ।

६. देवो एक्को (अ, क, व, म, स) ।

१४५. अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
१४६. अत्थि णं भंते ! ओराला वलाहया^१ ?
हंता अत्थि ।
देवो पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नाओ ।
एवं थणियसट्ठे वि ॥
१४७. अत्थि णं भंते ! वादरे पुढ्वीकाए ? वादरे अगणिकाए ?
णो इणट्ठे समट्ठे, नन्तत्थ विग्गहगतिसमावन्तएणं ॥
१४८. अत्थि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-ताराव्वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
१४९. अत्थि णं भंते ! गामा इ वा ? जाव^२ सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
१५०. अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा ? सूरामा ति वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं सणकुमार-माहिदेसु, नवरं—देवो एगो पकरेति । एवं वंभलोए वि । एवं
वभलोगस्स^३ उवरि सव्वेहि देवो पकरेति । पुच्छियव्वो य वादरे आउकाए,
वादरे अगणिकाए, वादरे वणस्सइकाए । अण्णं त चेव ।

संगहणी-गाहा

तमुकाए कप्पपणए, अगणी पुढ्वी य अगणि-पुढ्वीसु ।
आऊ तेऊ वणस्सई, कप्पुवरिमकण्हराईसु ॥१॥

आउयबंध-पदं

१५१. कतिविहे णं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, त जहा—जातिनामनिहत्ताउए, गतिनाम-
निहत्ताउए, ठितिनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसनामनिह-
त्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए । दंडओ जाव^४ वेमाणियाणं ॥
१५२. जीवा णं भंते ! कि जातिनामनिहत्ता ? गतिनामनिहत्ता^५ ? *ठितिनामनिहत्ता ?
ओगाहणानामनिहत्ता ? पएसनामनिहत्ता ? * अणुभागनामनिहत्ता ?
गोयमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि । दंडओ जाव^६
वेमाणियाणं ॥

१. पू०—भ० ६।७८ ।

२. भ० १।४९ ।

३. वम्ह० (क, व) ।

४. पू० प० २ ।

५. सं० पा०—गतिनामनिहत्ता जाव अणुभाग०

६. पू० प० २ ।

१५३. जीवा णं भते ! किं जातिनामनिहत्ताउया ? जाव' अणुभागनामनिहत्ताउया ? गोयसा । जातिनामनिहत्ताउया वि जाव अणुभागनामनिहत्ताउया वि । दडओ जाव' वेमाणियाण ॥

१५४. एव एए दुवालस दडगा भाणियव्वा—

जीवा णं भते ! किं १. जातिनामनिहत्ता ? २. जातिनामनिहत्ताउया ?
 जीवा णं भते ! किं ३. जातिनामनिउत्ता ? ४. जातिनामनिउत्ताउया ?
 जीवा णं भते ! किं ५. जातिगोयनिहत्ता ? ६. जातिगोयनिहत्ताउया ?
 जीवा णं भते ! किं ७. जातिगोयनिउत्ता ? ८. जातिगोयनिउत्ताउया ?
 जीवा णं भते ! किं ९. जातिनामगोयनिहत्ता ? १०. जातिनामगोयनिहत्ताउया ?
 जीवा णं भते ! किं ११. जातिनामगोयनिउत्ता ?
 १२. जातिनामगोयनिउत्ताउया ?
 जाव' ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

१. भ० ६।१५१ । २. पू० प० २ ।

३. एतत् पद त्रयोदशभगात् द्वासप्ततितमपर्यन्तानां भगानां सग्राहकमस्ति—

जीवा ए भते ! किं १३. गतिनामनिहत्ता ?	१४. गतिनामनिहत्ताउया ?
जीवा ए भते ! किं १५. गतिनामनिउत्ता ?	१६. गतिनामनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं १७. गतिगोयनिहत्ता ?	१८. गतिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ए भते ! किं १९. गतिगोयनिउत्ता ?	२०. गतिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २१. गतिनामगोयनिहत्ता ?	२२. गतिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २३. गतिनामगोयनिउत्ता ?	२४. गतिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ए भते ! किं २५. ठितिनामनिहत्ता ?	२६. ठितिनामनिहत्ताउया ?
जीवा ए भते ! किं २७. ठितिनामनिउत्ता ?	२८. ठितिनामनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २९. ठितिगोयनिहत्ता ?	३०. ठितिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३१. ठितिगोयनिउत्ता ?	३२. ठितिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३३. ठितिनामगोयनिहत्ता ?	३४. ठितिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३५. ठितिनामगोयनिउत्ता ?	३६. ठितिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३७. ओगाह्णानामनिहत्ता ?	३८. ओगाह्णानामनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३९. ओगाह्णानामनिउत्ता ?	४०. ओगाह्णानामनिउत्ताउया ?
जीवा ए भते ! किं ४१. ओगाह्णगोयनिहत्ता ?	४२. ओगाह्णगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ए भते ! किं ४३. ओगाह्णगोयनिउत्ता ?	४४. ओगाह्णगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ४५. ओगाह्णानामगोयनिहत्ता ?	४६. ओगाह्णानामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ४७. ओगाह्णानामगोयनिउत्ता ?	४८. ओगाह्णानामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ए भते ! किं ४९. पएसनामनिहत्ता ?	५०. पएसनामनिहत्ताउया ?

गोयमा ! जातिनामगोयनिउत्ताउया वि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया वि । दडओ जाव^१ वेमाणियाण ॥

लवणादिसमुद्द-पदं

१५५. लवणे णं भते ! समुद्दे कि उस्सिओदए^१ ? पत्थडोदए ? खुभियजले ? अखुभियजले ?

गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए, खुभियजले, नो अखुभियजले ॥

१५६. *जहा ण भते ! लवणसमुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए; खुभियजले, नो अखुभियजले; तथा ण बाहिरगा समुद्दा कि उस्सिओदगा ? पत्थडोदगा ? खुभियजला ? अखुभियजला ?

गोयमा ! बाहिरगा समुद्दा नो उस्सिओदगा, पत्थडोदगा; नो खुभियजला, अखुभियजला पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति ॥

१५७. अत्थि ण भते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया ससेयति ? समुच्छति ? वास वासंति ? हता अत्थि ॥

१५८. जहा ण भते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया ससेयति, समुच्छति, वास वासति, तथा ण बाहिरगेसु वि समुद्देसु बहवे ओराला बलाहया ससेयति ? समुच्छति ? वास वासति ?

जीवा ण भते ! कि ५१. पएसनामनिउत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ५३. पएसगोयनिहत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ५५. पएसगोयनिउत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ५७. पएसनामगोयनिहत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ५९. पएसनामगोयनिउत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ६१. अणुभागनामनिहत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ६३. अणुभागनामनिउत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ६५. अणुभागगोयनिहत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ६७. अणुभागगोयनिउत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ६९. अणुभागनामगोयनिहत्ता ?

जीवा ण भते ! कि ७१. अणुभागनामगोयनिउत्ता ?

५२. पएसनामनिउत्ताउया ?

५४. पएसगोयनिहत्ताउया ?

५६. पएसगोयनिउत्ताउया ?

५८. पएसनामगोयनिहत्ताउया ?

६०. पएसनामगोयनिउत्ताउया ?

६२. अणुभागनामनिहत्ताउया ?

६४. अणुभागनामनिउत्ताउया ?

६६. अणुभागगोयनिहत्ताउया ?

६८. अणुभागगोयनिउत्ताउया ?

७०. अणुभागनामगोयनिहत्ताउया ?

७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

१. पृ० प० २ ।

२. उस्सिओदए (क, म, स) ।

३. स० पा०—एत्तो आढत्त जहा जीवाभिगमे जाव से ।

नो इणद्वे समद्वे ॥

१५६. से केणद्वेण भते ! एव वुच्चइ—बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा जाव' समभरघडत्ताए चिट्ठति ?

गोयमा ! बाहिरगेसु ण समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा य पोगला य उदग-
त्ताए वक्कमति, विउक्कमति, चयति, उवचयति° । से तेणद्वेणं गोयमा ! एवं
वुच्चइ—बाहिरया णं समुद्दा पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोसट्टमाणा वोसट्टमाणा
समभरघडत्ताए चिट्ठति, सठाणओ एगविहिंविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिंवि-
हाणा, दुगुणा, दुगुणप्पमाणा जाव' अस्सि तिरियलोए असखेज्जा दीव-समुद्दा
सयभूरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो !

१६०. दीव-समुद्दा ण भंते ! केवतिया नामधेज्जेहि पण्णत्ता ।

गोयमा ! जावतिया लोए सुभा नामा, सुभा रुवा, सुभा गंधा, सुभा रसा,
सुभा फासा, एवतिया ण दीव-समुद्दा नामधेज्जेहि पण्णत्ता । एव नेयव्वा सुभा
नामा, उद्धारो, परिणामो, सब्वजीवाणं (उप्पाओ' ?) ॥

१६१. सेव भंते ! सेव भते' ति' ॥

नवमो उद्देशो

कम्मप्पगडिबबंध-पदं

१६२. जीवे ण भते ! नाणावरणिज्ज कम्मं बधमाणे कत्ति कम्मप्पगडीओ बधति ?
गोयमा । सत्तविह्वधए वा, अट्टविह्वधए वा, छव्विह्वधए वा । बधुद्देसो
पण्णवणाए नेयव्वो' ॥

१. भ० ६।१५६ ।

२. दीव-समुद्दा (अ, क, ता, ब, म, स);
जीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तो 'समुद्दा इत्येवपद-
मस्ति, तदेवाऽत्र प्रासंगिकम् ।

३. °माणाओ (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४. अस्य पूरकपाठः जीवाभिगमस्य तृतीयप्रति-
पत्तो लभ्यते । स चैवमस्ति—

'पडुप्पाएमाणा-पडुप्पाएमाणा पवित्थर-
माणा-पवित्थरमाणा ओमासमाणवीइया
वहुउप्पलपउमकुमुयणलिणमुसगसोगघियपोड-

रीयमहापोडरीयसयपत्तसहस्सपत्तफुल्लकेसरो-
वचिया पत्तेय-पत्तेय पउमवरवेइयापरि-
क्खित्ता पत्तेय-पत्तेय वणसंडपरिक्खित्ता ।

५. सब्वजीवाणं ति—सर्वं जीवानां द्वीप-समुद्रेषू-
त्पादो नेतव्य—इति सूचितं वृत्तिकृता ।
तदनुसृत्यात्र 'सब्वजीवाणं उप्पाओ' इतिपाठो
युज्यते ।

६ भ० १।५१ ।

७. प० २४ ।

महिड्डीयदेव-विकुव्वणा-पदं

१६३. देवे णं भंते ! महिड्डीए जाव^१ महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता^२ पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
१६४. देवे णं भंते । बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
हंता पभू ॥
१६५. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ।
एवं एएणं गमेणं जाव^३ १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो ॥
१६६. देवे णं भंते ! महिड्डीए जाव^४ महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं^५ पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए^६ परिणामेत्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ॥
१६७. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले^७ *परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ।
एवं एएणं गमेणं जाव^८ १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो^९ ।
एवं कालगपोग्गल लोहियपोग्गलत्ताए । एवं कालएण जाव सुक्किलं । एवं नीलएणं जाव सुक्किल । एवं 'लोहिणं जाव सुक्किलं'^{१०} । एवं हालिइएणं जाव सुक्किलं । एवं^{११} एयाए परिवाडीए गव-रस फासा^{१२} ।

१. भ० ३।४ ।

२. अपरियाइत्ता (अ, ता, व, म) ।

३. भ० ६।१६३, १६४ ।

४. भ० ३।४ ।

५. कालत (क) ।

६. गीलपोग्ग० (अ, क, ता) ।

७. सं० पा०—तं चैव नवरं परिणामेति त्ति भाणियव्व ।

८. भ० ६।१६३, १६४ ।

९. लोहियपोग्गल जाव सुक्किलत्ताए (अ, स); लोहियपोग्गलं जाव सुक्किलं (म) ।

१०. तं एव (अ, क, ता, व, म) ।

११. कवखडफासपोग्गल मउय-फासपोग्गलत्ताए, एव दो दो गरुयलहुय-सोयउसिण-णिद्धलुव्वल-वण्णाईसव्वत्थ परिणामेइ । आलावगा दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता, परियाइत्ता(अ,व,म,स) ।

अविसुद्धलेसादि देवाणं जाणणा-पासणा-पदं

१६८. १. अविसुद्धलेसे ण भंते ! देवे असमोहएण^१ अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं, देवि, अण्णयर^२ जाणइ-पासइ ?

णो तिण्ठे समट्ठे^३ ।

एव—२. अविसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेसं देवं ३. अविसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं ४. अविसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ५. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देव ६. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेसं देवं ७. विसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेणं अविसुद्धलेस देव ८ विसुद्धलेसे देवे असमोहएण अप्पाणेण विसुद्धलेस देवं ॥

१६९. ९. विसुद्धलेसे ण भते ! देवे समोहएण अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं जाणइ-पासइ ?

हंता जाणइ-पासइ ।

एव—१०. विसुद्धलेसे देवे समोहएण अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ११. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेण अविसुद्धलेस देवं १२. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस देव ॥

१७०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^४ ॥

१. असंमो० (अ, ता, म, स) ।

२. अणगारं (क, व) ।

३. समट्ठे एव हेट्ठिल्लएहि अट्ठहि न जाणइ न पासइ उवरिल्लएहि चउहि जाणइ-पासइ (क, ता, वृ); स्वीकृतपाठस्य वृत्तिकृता वाचनान्तरत्वेन उल्लेख. कृतोस्ति—

वाचनान्तरे तु सर्वमेवेद साक्षाद्दृश्यते (वृ) ।

‘अ, व, म, स’ सकेतितादशेषु द्वयोर्वाचनयोर्मिश्रणं दृश्यते । तत्र द्वादशमगानान्तरं ‘एव हेट्ठिल्लएहि’ इत्यादि पाठोस्ति ।

४. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देशो

सुह-दुह-उवदंसरण-पदं

१७१. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव^१ परूवेति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा, एवइयाणं जीवाण नो चक्किया केइ सुह वा दुह वा जाव कोलट्टिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि^२, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता^३ उवदसेत्तए ॥

१७२. से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव^४ मिच्छ ते एवमाहसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव^५ परूवेमि सव्वलोए वि य ण सव्व-जीवाण नो चक्किया केइ सुह वा^६ *दुह वा जाव कोलट्टिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता^७ उवदसेत्तए ॥

१७३. से केणट्टण ? गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे जाव^८ विसेसाहिए परिकखेवण पण्णत्ते । देवे णं महिड्डीए जाव^९ महाणुभागे एग मह सविलेवण गघसमुग्गग गहाय त अवहालेति, अवहालेत्ता जाव इणासेव कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छरा निवाएहि तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा । से नूण गोयमा ! से केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहि फुडे ? हत्ता फुडे ।

चक्किया णं गोयमा ! केइ^{१०} तेसि घाणपोग्गलाण कोलट्टिमायमवि^{११}, *निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता^{१२} उवदसेत्तए ?

नो तिणट्टे समट्टे । से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नो चक्किया केइ सुहं वा जाव उवदसेत्तए ।

जीव-चेयणा-पदं

१७४. जीवे ण भते ! जीवे ? जीवे जीवे ?

गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे ॥

१. भ० १।४२० ।

२. जूय० (क, व), ऊया० (तां) ।

३. ° तेत्ता (ता) ।

४. भ० १।४२१ ।

५. भ० १।४२१ ।

६. सं० पा०—त चेव जाव उवदसेत्तए ।

७. भ० ६।७५ ।

८. भ० ३।४ ।

९. तिहिं (अ, स) ।

१०. केयति (स) ।

११. सं० पा०—कोलट्टिमायमवि जाव उवदसेत्तए

१७५. जीवे ण भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवे ?

गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१७६. जीवे ण भते ! असुरकुमारे ? असुरकुमारे जीवे ?

गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारे, सिय नोअसुरकुमारे ॥

१७७. एवं दडओ भाणियव्वो^१ जाव^२ वेमाणियाण ॥

१७८. जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ?

गोयमा ! जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति, सिय नो जीवति ॥

१७९. जीवति भते ! नेरइए ? नेरइए जीवति ?

गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवति, जीवति पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१८०. एवं दडओ नेयव्वो जाव^३ वेमाणियाणं ॥

१८१. भवसिद्धि ए ण भते ! नेरइए ? नेरइए भवसिद्धि ए ?

गोयमा ! भवसिद्धि ए सिय नेरइए, सिय अनेरइए । नेरइए वि य सिय भवसिद्धि ए, सिय अभवसिद्धि ए ॥

१८२. एवं दडओ जाव^४ वेमाणियाणं ॥

वेदणा-पदं

१८३. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव^५ परूवेति—एव खलु सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्ख वेदण वेदेति ॥

१८४. से कहमेयं भते ! एव ?

गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया जाव^६ मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव^७ परूवेमि—अत्येगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्ख वेदण वेदेति, आहच्च साय । अत्येगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगत्तसायं वेदणं वेदेति, आहच्च अस्साय^८ । अत्येगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसायं ॥

१८५. से केणट्ठेण ?

गोयमा ! नेरइया एगंतदुक्ख वेदणं वेदेति, आहच्च साय । भवणवइ-वाणमत-र-जोइस-वेमाणिया एगत्तसायं वेदणं वेदेति, आहच्च अस्साय । पुढविक्काइया जाव^९ मणुस्सा वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसायं । से तेणट्ठेण ॥

१. नेतव्वो (क, ता, व) ।

२. पू० प० २ ।

३. पू० प० २ ।

४. पू० प० २ ।

५. म० १४२० ।

६. म० १४२१ ।

७. म० १४२१ ।

८. असाय वेदणं वेदेति (अ, ता, म, स) ।

९. पू० प० २ ।

नेरइयादीणं आहार-पदं

१८६. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति तं कि आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ? अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ? परपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ?
 गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति, नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति, नो परपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ।

जहा नेरइया तहा जाव' वेमाणियाण दंडओ ॥

केवलस्सनाण-पदं

१८७. केवली णं भंते ! आयाणेहि जाणइ-पासइ ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८८. से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे ण मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ जाव' निव्वुडे दंसणे केवलस्स । से तेणट्ठेणं ।

संगहणी-गाहा

जीवाण य सुहं दुक्खं, जीवे जीवति तहेव भविया य ।

एगंतदुक्ख वेयण-अत्तमायाय केवली ॥१॥

१८९. सेव भंते ! सेवं भंते ! ति' ॥

सत्तमं सतं

पढमो उद्देशो

संगहणी-गाहा

१. आहार २. विरति ३. थावर, ४. जीवा ५. पक्खी य ६. आउ ७. अणगारे ।
८. छउमत्थ ९. असंवुड, १०. अण्णउत्थि दस सत्तममि सए ॥ १ ॥

अणाहारग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव^१ एवं वदासी—जीवे णं भंते ! कं^२ समयमणा-
हारए भवइ ?
गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए, वितिए समए सिय
आहारए सिय अणाहारए, ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, चउत्थे
समए नियमा आहारए । एवं दंडओ—जीवा य एगिदिया य चउत्थे समए^३,
सेसा ततिए समए^४ ॥

सव्वप्पाहारग-पदं

२ जीवे णं भंते ! कं समयं सव्वप्पाहारए भवति ?
गोयमा ! पढमसमयोववन्ने वा चरिमसमयभवत्थे^५ वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पा-
हारए भवति । दंडओ भाणियव्वो जाव^६ वेमाणियाणं ॥

१. भ० १।४-१० ।

२. किं (अ) ।

३. 'नियमा आहारए' इति शेषम् ।

४. 'नियमा आहारए' इति शेषम् ।

५. °समए° (स) ।

६. पू० प० २ ।

लोगसंठाण-पदं

३. किसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?

गोयमा ! सुपइद्वगसंठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे^१, *मज्जे सखित्ते, उप्पि विसाले ; अहे पलियकसंठिए, मज्जे वरवइरविग्गाहिए^२, उप्पि उद्धमुइंगा-कारसंठिए ।

तसि^३ च ण सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उद्धमुइंगाकार-संठियंसि उप्पण्णत्ताण-दंसणघरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ^४ *बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं^५ अंतं करेइ ॥

समणोवासगस्स किरिया-पदं

४. समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए^१ अच्छमाणस्स^२ तस्स णं भंते ! किं रियावहिया^३ किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

५. से केणट्ठेणं^४ *भंते ! एवं वुच्चइ—नो रियावहिया किरिया कज्जइ ?^५ संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! समणोवासयस्स ण सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाहिगरणवत्तियं च ण तस्स नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ । से तेणट्ठेणं ॥

समणोवासगस्स अणाउट्ठिहिसा-पदं

६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारभे पच्चक्खाए भवइ, पुढवि-समारभे अपच्चक्खाए भवइ । से य पुढवि खणमाणे अण्णयर तसं पाण विहि-सेज्जा, से णं भंते ! तं वय अतिचरति ?

नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्ठति ॥

७. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणप्फइसमारभे पच्चक्खाए । से य पुढवि खणमाणे अण्णयरस्स रुक्खस्स मूलं छिडेज्जा, से णं भंते ! तं वय अतिचरति ?

नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्ठति ॥

१. सं० पा०—विच्छिण्णे जाव उप्पि ।

२. तसि (अ); तसि तेसि (ता), तस्सि (म) ।

३. सं० पा०—सिज्झइ जाव अत ।

४. समणोवासए (क, स) ।

५. अत्थ^० (अ, व, म, स) ।

६. इरिया^० (क, ता) ।

७. सं० पा०—केणट्ठेण जाव संपराइया ।

समणपडिलाभेण लाभ-पदं

८. समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-‘खाइम-साइमेणं’ पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ?
 गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा^१ •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं^२ पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए ण तामेव^३ समाहिं पडिलभइ ॥
९. समणोवासए ण भंते ! तहारूवं समणं वा^४ •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं^५ पडिलाभेमाणे किं चयति ?
 गोयमा ! जीविय चयति, दुच्चय^६ चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ, तन्नो पच्छा सिज्झति जाव^७ अतं करेति ॥

अकम्मस्स गति-पदं

१०. अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
 हता अत्थि ॥
११. कहण्णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
 गोयमा ! निस्सगयाए, निरगणयाए, गतिपरिणामेणं, बंधणच्छेदणयाए^१, निर्निघ-णयाए, पुव्वप्पओगेण अकम्मस्स गती पण्णायति ॥
१२. कहण्णं भंते ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?
 से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरूवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मे-माणे-परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता अट्ठहिं मट्ठियालेवेहिं लिपइ, लिपित्ता उण्हे दलयति, भूति-भूति सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरि-सियसि^२ उदगसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुवे तेसि अट्ठण्हं मट्ठियाले-वाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसभारियत्ताए सलिलतलमतिवडत्ता अहे धरणि-तलपइट्ठाणे भवइ ?
 हंता भवइ ।
 अहे णं से तुवे तेसि अट्ठण्हं मट्ठियालेवाणं पक्खिएणं धरणितलमतिवडत्ता उप्पि सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ?

१. खातिम-सातिमेणं (अ, व, स) ।

२. स० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे० ।

३. तमेव (क्व०) ।

४. सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे० ।

५. दुच्चय (स) ।

६. भ० ७।३ ।

७. वंधवोच्छेदणताए (ता) ।

८. इह मकारी प्राकृतप्रभवौ (वृ) ।

हंता भवइ ।

एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१३. कहण्णं भंते ! वंघणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति^१ ?

गोयमा ! से जहानामए कलसिबलिया इ वा, मुग्गसिबलिया इ वा, माससिबलिया इ वा, सिबलिसिबलिया^२ इ वा, एरंडमिजिया इ वा उण्हे दिन्ना^३ सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगंतमतं गच्छइ । एवं खलु गोयमा ! वंघणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१४. कहण्णं भंते ! निरिघणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा से जहानामए धूमस्स इधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गती पवत्तति । एव खलु गोयमा ! निरिघणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१५. कहण्णं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा ! से जहानामए कडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ । एवं खलु गोयमा ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति । एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए^४, निरंगणयाए^५, *गतिपरिणामेण, वंघणछेदणयाए, निरिघणयाए^६, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

दुक्खिस्स दुक्खफासादि-पदं

१६. दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ॥

१७. दुक्खी भंते ! नेरइए दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ॥

१८. एवं दंडओ जाव^१ वेमाणियाण ॥

१९. एवं पच्च दडगा नेयव्वा—१. दुक्खी दुक्खेणं फुडे २. दुक्खी दुक्खं परियायइ

३. दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ४. दुक्खी दुक्खं वेदेति ५. दुक्खी दुक्खं निज्जरेति ॥

इरियावहिय-संपराइय-किरिया-पदं

२०. अणगारस्स ण भते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स^२ वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्ठमाणस्स वा, अणाउत्तं बत्थ पडिग्गहं कंबलं पायपुच्छं गेण्ह-

१ पण्णत्ता (अ, क, ता, व, म, स) ।

२ सेवलसेवलिया (ता) ।

३ दित्ता (स) ।

४. तीसंगयाए (अ, क, व, म, स) ।

५. सं० पा०—निरंगणयाए जाव पुव्व^० ।

६. पू० प० २ ।

७. सर्वेष्वपि पदेषु 'अणाउत्त' इति पदं गम्यम् ।

मरणं वा, निमित्तमरणस्य वा मरणं वा भवे ! किं न्यायक्षिया किरिया
मरणम् ? मरणस्या किरिया मरणम् ?

नोयत्ता ! नो ग्नितायत्ता । ग्निता कज्ज, नवगत्ता किन्तिता कज्ज ॥

[illegible]

मोक्षसाधनम् । अथ च श्रोत्र-मातृ-माया-संभवा श्रोत्रोत्पत्त्या भवेति तस्य च त्रिधा-
 त्रिधा त्रिभिधा प्रपञ्चः । अथ च श्रोत्र-मातृ-माया-संभवा श्रोत्रोत्पत्त्या भवेति
 तस्य च सप्तधाया त्रिभिधा प्रपञ्चः । अत्रागुप्तं सौमनासस्य त्रिधाया त्रिधा
 त्रिभिधा प्रपञ्चः । अत्रागुप्तं सौमनासस्य सप्तधाया त्रिभिधा प्रपञ्चः । मे ष उगु-
 नमेव सौमनासः । मे त्रिभिधा ॥

महंगाणादिदोगदुद्ध-पाणनीयण-परं

[illegible]

गोमया ' ३ ७ निगंधो वा निगंधो वा वागु-एगनिज्ज अमण-वाण-माउम-
माउम गोमया-वा गोमया निगं गोमि, मगन्तोत्तरो वागु-मागुरे, एम ण
गोमया ' मगुरे वागु-मागुरे ।

[illegible]

‘नृपतिमये वा’ • निजभावा वा वासुधैव कुटुम्बकम् अमृत-पात्र-नाट्य-नाट्यं •
पश्चिमादिना मुनिपात्रमये • अमृत-पात्र-नाट्य-नाट्यं अमृत-पात्र-नाट्य-नाट्यं, एव
नृपतिमये • नृपतिमये वा • वासुधैव कुटुम्बकम् अमृत-पात्र-नाट्य-नाट्यं •

मम त्वं भोगिनी ! मम भोग्यम्, मम भग्नम्, मम भोग्यभोग्यदुःखम् पाप-भोग्यम्
 अहो भगवन् ॥

२३. **अः भवे !** योनिनामस्य, योनिमस्य, योनिनामोनिनिमस्यस्य योनि-भो-
यस्य ये अः योनिः ?

संयमा ! ॐ न निम्बरे रा • निम्बंशी वा फानु-पुनणिज्ज श्रमण-पाण त्याज्ज-

१. × (क, ग, घ) ।
 २. विच्छिन्ना (घ) ।
 ३. कञ्जद नो नंपयदया किरिया कञ्जद (म) ।
 ४. कञ्जद नो दग्गिययहिया किरिया कञ्जद (म, म) ।
 ५. त्थिया (अ, क, न, य, म) ।
 ६. म० पा०—निगथे वा जाय पज्जिमाहेत्ता ।
 ७. गुग्गुप्पयाण^२ (अ, म); गुग्गुप्पयाणा^० (ता)
 ८. म० पा०—निगथे वा जाय पज्जिमाहेत्ता ।

साइमं° पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिए° •अगिद्धे अगहिए अणज्भोववन्ने आहारमा°-
हारेइ, एस णं गोयमा ! वीतिगाले पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा° •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण पाण खाइम साइमं°
पडिग्गाहेत्ता णो मह्याअप्पत्तियं° •कोहकिलाम करेमाणे आहारमा° हारेइ,
एस णं गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा° •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं°
पडिग्गाहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोस-
विप्पमुक्के पाण-भोयणे ।

एस णं गोयमा ! वीतिगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-
भोयणस्स अट्टे पण्णत्ते ॥

२४. अह भंते ! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कतस्स, पमाणातिक्कं-
तस्स पाण-भोयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे णं निग्गथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-
साइमं अणुगए सूरिए पडिग्गाहेत्ता उग्गए सूरिए आहारमाहारेइ, एस णं
गोयमा ! खेत्तातिक्कते° पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा° •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असणं-पाण-खाइम°-साइमं
पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसि उवाइणावेत्ता° आहारमाहारेइ
एस णं गोयमा ! कालातिक्कते पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा° •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम°-साइमं
पडिग्गाहेत्ता पर अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावेत्ता° आहारमाहारेइ, एस णं
गोयमा ! मग्गातिक्कते पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे° वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं° •असण-पाण-खाइम°-साइमं
पडिग्गाहेत्ता पर बत्तीसाए कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ताणं कवलानं आहारमाहारेइ,
एस णं गोयमा ! पमाणातिक्कते पाण-भोयणे ।

अट्ट कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे°, दुवालस
कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिए°, सोलस

१. स० पा०—अमुच्छिए जाव आहारेइ ।

७. उवायणा° (अ, म) ।

२. सं० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।

८. स० पा०—निग्गथे वा जाव साइम ।

३. स० पा०—मह्याअप्पत्तिय जाव आहारेइ ।

९. वीइक्कमावेत्ता (स) ।

४. स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।

१०. निग्गथो (क, ता, स) ।

५. क्षेत्रं—सूर्यसवन्धितापक्षेत्र दिनमित्यर्थः । तद-

११. स० पा०—एसणिज्ज जाव साइम ।

तिक्रान्तं यत् तत् क्षेत्रातिक्रान्तम् (वृ) ।

१२. सावुर्भवतीति गम्यम् ।

६. सं० पा०—निग्गथे वा जाव साइमं ।

१३. अवड्ढोमोयरिया (अ, ता) ।

कुक्कुडिअङ्गपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअङ्गपमाणे^१मेत्ते कवले० आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए^२, वत्तीस कुक्कुडिअङ्गपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एक्केण वि धासेणं ऊणगं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गये नो पकामरसभोईति वत्तव्व सिया । एस ण गोयमा ! खेत्तातिक्कतस्स, कालातिक्कतस्स, मग्गातिक्कतस्स, पमाणातिक्कतस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२५. अहं भते ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स^३, एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे णं निग्गये वा निग्गथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे ववगय-चुय-चइय-वत्तदेहं, जीवविप्पजड, अकय, अकारियं, असंकप्पिय, अणाहूय, अकीयकड, अणुहिट्ठ, नवकोडीपरिसुद्ध, दसदोसविप्पमुक्कं, उमामुप्पायणसंणामुपरिसुद्ध, वीतिगाल, वीतधूम, सजोयणादोसविप्पमुक्क, (असुरसुर^४, अचवचव, अदुय, अविलबिय, अपरिसाडि, अक्खोवज्जण-वण्णानुलेव-णभूय, सजमजायामायावत्तिय, सजमभारवहणदुयाए बिलमिव पन्नगभूएणं^५ अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स^३ •एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स० पाण-भोयणस्स अट्ठे^६ पण्णत्ते ॥

२६. सेवं भते ! सेव भते । ति" ॥

बीओ उद्देशो

सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण-पदं

२७. से नूणं भते ! सव्वपाणेहि, सव्वभूएहि, सव्वजीवेहि, सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति ? दुपच्चक्खायं भवति ? गोयमा ! सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति, सिय दुपच्चक्खायं भवति ॥

१. स० पा०—०पमाणे जाव आहार० ।

२. स० पा०—सत्थपरिणामियस्स जाव पाण ।

३. ओमोदरिया(अ, ता, स); ओमोदरियाए (व) ।

६. अयमट्ठे (अ) ।

३. ०परि० (ता) ।

७. अ० १।५१ ।

४. असुरसुर (ता) ।

२८. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वपाणेहि जाव' सव्वसत्तेहि' •पच्चवक्खाय-
मिति वदमाणस्स सिय सुपच्चवक्खायं भवति° ? सिय दुपच्चवक्खायं भवति ?
गोयमा ! जस्स णं सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चवक्खायमिति वदमाणस्स
णो एवं अभिसमन्नागय भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा,
तस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चवक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपच्च-
वक्खायं भवति, दुपच्चवक्खायं भवति ।

एव खलु से दुपच्चवक्खाई सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चवक्खायमिति
वदमाणे नो सच्चं भास भासइ, भोस भास भासइ । एव खलु से मुसावाई
सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि तिविहं तिविहेण असजय-विरय-पडिहय-पच्च-
वक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असंबुडे, एगंतदंडे, एगतवाले यावि भवति ।

जस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चवक्खायमिति वदमाणस्स
एवं अभिसमन्नागयं भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे
थावरा, तस्स ण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चवक्खायमिति वदमाणस्स
सुपच्चवक्खायं भवति, नो दुपच्चवक्खायं भवति ।

एव खलु से सुपच्चवक्खाई सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चवक्खायमिति वद-
माणे सच्चं भासं भासइ, नो भोसं भासं भासइ । एवं खलु से सच्चवादी सव्व-
पाणेहि जाव सव्वसत्तेहि तिविहं तिविहेणं सजय-विरय-पडिहय-पच्चवक्खाय-
पावकम्मे, अकिरिए, सबुडे, एगतपडिए यावि भवति । से तेणट्टेण गोयमा !
एव वुच्चइ'—•सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि पच्चवक्खायमिति वदमाणस्स
सिय सुपच्चवक्खाय भवति°, सिय दुपच्चवक्खाय भवति ॥

पच्चवक्खाण-पदं

२९. कतिविहे णं भते ! पच्चवक्खाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे पच्चवक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मूलगुणपच्चवक्खाणे य, उत्तर-
गुणपच्चवक्खाणे य ॥

३०. मूलगुणपच्चवक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वमूलगुणपच्चवक्खाणे य, देसमूलगुण-
पच्चवक्खाणे य ॥

३१. सव्वमूलगुणपच्चवक्खाणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पच्चविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं,

१. भ० ७।२७ ।

३. स० पा०—वुच्चइ जाव सिय ।

२. सं० पा०—सव्वसत्तेहि जाव सिय ।

४. स० पा०—वेरमणं जाव सव्वाओ ।

- सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥
३२. देसमूलगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?
गोयमा ! पच्चविहे पणत्ते, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं,
●थूलाओ मुसावायाओ वेरमण, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं, थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥
३३. उत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, देसुत्तरगुण-
पच्चक्खाणे य ॥
३४. सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?
गोयमा ! दसविहे पणत्ते, त जहा—

गाहा—

- १, २. अणागयमइक्कतं ३. कोडीसहिय ४. नियटिय चेव ।
५, ६. सागारमणागारं ७. परिमाणकड ८. निरवसेत्तं ।
९. संकेयं चेव १०. अद्धाए, पच्चक्खाणं भवे दसहा ॥१॥
३५. देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पणत्ते, त जहा—१. दिसिच्चयं २. उवभोगपरिभोग-
परिमाणं ३. अणत्थदडवेरमणं ४. सामाइयं ५. देसावगासियं ६. पोसहोव-
वासो ७. अतिहिसविभागो । अपच्छिममारणंतियसलेहणाभूसणाराहणतां ॥

पच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणि-पदं

३६. जीवा ण भते ! कि मूलगुणपच्चक्खाणी ? उत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्च-
क्खाणी वि ॥
३७. नेरइया ण भते ! कि मूलगुणपच्चक्खाणी ? पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्च-
क्खाणी ॥

१. स० पा०—वेरमणं जाव थूलाओ ।

२. साएत (ता, म); साकेय (स, वृ); सकेयग
(ठा० १०।१०।१) केतः चिन्हं सहकेतेन वर्तते
सकेतम्—दीर्घता च प्राकृतत्वात् (वृ) ।

३. दिसुच्चतं (ता) ।

४. अणट्टा० (ता) ।

५. अहासविभाग (म) ।

६. सलेखनामविगणय्य सप्त देशोत्तरगुणा इत्यु-
क्तम्, अस्यावचैतेषु पाठो देशोत्तरगुणवारि-
णाऽपीयमन्ते विघातव्येत्यस्यार्थस्य व्यापनार्थः
(वृ) ।

३८. एवं जाव^१ चउरिदिया ॥
३९. पचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमत-र-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥
४०. एसि णं भते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीण, उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहितो^२ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^३ विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणतगुणा ॥
४१. एसि ण भते ! पचिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।
 गोयमा ! सव्वत्थोवा^४ पचिदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तर-गुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥
४२. एसि ण भते ! मणुस्साण मूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ।
 गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥
४३. जीवा ण भते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
 गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ॥
४४. नेरइयाणं पुच्छा ।
 गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ॥
४५. एव जाव^५ चउरिदिया ॥
४६. पचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।
 गोयमा ! पचिदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुण-पच्चक्खाणी^६, अपच्चक्खाणी वि ॥
४७. *मणुस्साण भते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
 गोयमा ! मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि^७ ॥

१. पू० प० २ ।

२. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३. सव्वत्थोवा जीवा (अ) ।

४. पू० प० २ ।

५. ° पच्चक्खाणी वि (क, ता, म, स) ।

६. सं० पा०—मणुस्सा जहा जीवा ।

४८ वाणमतर-जोइस-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४९. एएसि ण भते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं, देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीणं य कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^२ विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणतगुणा ॥

५०. *एएसि ण भते ! पच्चिदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा पच्चिदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ॥

५१. एएसि ण भते ! मणुस्साणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी सखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा^३ ॥

५२. जीवा ण भते ! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि,^४ *देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि^५ ।

पच्चिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एव चेव । सेसा अपच्चक्खाणी जाव^६ वेमाणिया ॥

५३. एएसि ण भते ! जीवाणं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीणं अप्पावहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमे दडए जाव^७ मणुस्साण ॥

५४. जीवा ण भते ! किं सजया ? असजया ? सजयासजया ?

गोयमा ! जीवा सजया वि,^८ *असजया वि, सजयासजया वि ।^९ एवं जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्व जाव^{१०} वेमाणिया । अप्पावहुगं तहेव तिण्ह वि भाणियव्व^{११} ॥

५५. जीवा ण भते ! किं पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणी ?

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

४. पू० प० २ ।

२. स० पा०—एव अप्पावहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमित्ते दडए, नवरं—सव्वत्थोवा पच्चिदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ।

५. भ० ७।४०-४२ ।

६. स० पा०—तिण्णि वि ।

७. प० ३२ ।

८. भ० ७।४०-४२ ।

३. स० पा०—तिण्णि वि

गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि, *अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणा-
पच्चक्खाणी वि ॥

५६. एवं मणुस्साण वि^१ । पच्चिदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया । सेसा सव्वे
अपच्चक्खाणी जाव^२ वेमाणिया ॥

५७. एएसि ण भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीणं *अपच्चक्खाणीण पच्चक्खाणा-
पच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा^३ ?
विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असखेज्ज-
गुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ।

पच्चिदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी
असखेज्जगुणा । मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी
संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा^४ ॥

सासय-असासय-पदं

५८. जीवा णं भंते ! कि सासया ? असासया ?

गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया ॥

५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सिय सासया ? सिय असासया ?

गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेण गोयमा !

एवं वुच्चइ—*जीवा सिय सासया^५, सिय असासया ॥

६०. नेरइया णं भंते ! कि सासया ? असासया ?

एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि । एव जाव^६ वेमाणिया सिय सासया, सिय
असासया ॥

६१. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति^७ ॥

१. सं० पा०—तिणिण वि ।

२. वि तिणिण वि (अ, स) ।

३. पू० प० २ ।

४. सं० पा०—पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया

५. तुल्ला—म० ६।६४ ।

६. सं० पा०—वुच्चइ जाव सिय ।

७. पू० प० २ ।

८. म० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-आहार-पदं

६२. वणस्सइकाइया ण भंते ! क' काल सव्वप्पाहारगा वा, सव्वमहाहारगा वा भवति ?

गोयमा ! पाउस-वरिसारत्तेसु ण एत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवति, तदाणतर' च ण सरदे', तदाणतर च ण हेमंते, तदाणतर च ण वसते, तदाणतरं च ण गिम्हे । गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवति ॥

६३. जइ ण भते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवति, कम्हा णं भते ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरे-रिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ?

गोयमा ! गिम्हासु णं वहवे उप्पिणजोणिया जीवा य, पोगला य वणस्सइ-काइयत्ताए वक्कमति, चयति', उववज्जति । एव खलु गोयमा ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया', *फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठति ॥

६४. से नूण भते ! मूला मूलजीवफुडा, कदा कदजीवफुडा', *खधा खधजीवफुडा, तया तयाजीवफुडा, साला सालजीवफुडा, पवाला पवालजीवफुडा, पत्ता पत्त-जीवफुडा, पुप्फा पुप्फजीवफुडा, फला फलजीवफुडा°, बीया बीयजीवफुडा ? हंता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा ॥

६५. जइ ण भते ! मूला मूलजीवफुडा जाव' बीया बीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सइकाइया आहारेति ? कम्हा परिणामेति ?

गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिवद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति । कदा कदजीवफुडा मूलजीवपडिवद्धा, तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति । एव जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिवद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति ॥

१. कि (क, म) ।

२. तद° (व) ।

३. सरए (अ) ।

४. विलक्कमंति [(अ, क); विलक्कमति चयति (स) ।

५. स० पा०—पुप्फिया जाव चिट्ठति ।

६. स० पा०—कदजीवफुडा जाव बीया ।

७. भ० ७।६४ ।

अणंतकाय-पदं

६६. अह भते ! आलुए, मूलए, सिंगबेरे, हिरिलि, सिरिलि, सिस्सरिलि^१, किट्टिया^२, छिरिया, छीरविरालिया^३, कण्हकदे, वज्जकदे, सुरणकदे, खलुडे^४ भट्मोत्था^५, पिडहलिदा^६, लोही, णीहू, थोहू, थिभगा^७, अस्सकणी, सीहकणी, सिउडी^८, मुसडी, जेयावण्णं तहप्पगारा सन्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता^९ ?
हता गोयमा ! आलुए, मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ॥

अप्पकम्म-महाकम्म-पदं

६७. सिय भते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए^१ ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय^२ ॥
६८. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे
नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठित्ति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ॥
६९. सिय भते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ॥
७०. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे
नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठित्ति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ॥
७१. एवं असुरकुमारो वि, नवरं—तेउलेसा अब्भहिया । एव जाव^३ वेमाणिया । जस्स
जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ । जोइसियस्स न अण्णइ जाव—
७२. सिय भते ! पम्हलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराए ? सुक्कलेस्से वेमाणिए
महाकम्मतराए ?
हंता सिय ॥
७३. से केणट्ठेणं ?^४ गोयमा ! ठित्ति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महा-
कम्मतराए ॥

१. सिस्सरिलि (ता) ।

२. किट्टिया (अ, ता) ।

३. छीरि^० (अ) ।

४. खलुडे (अ); खल्लुए (ता) ।

५. अट्मोत्था (अ, म, स) ।

६. पिड^० (क) ।

७. विभंगा (अ); थिरुगा (म, स) ।

८. सीहडी (अ); सीदडी (क); सदिडी (ब);

सीदवी (म); सादडी (स) ।

९. विचित्तविहसत्ता (वृषा) ।

१०. सिया (अ, व) ।

११. पृ० प० २ ।

१२. स० पा०—सेस जहा नेरइयस्स ।

वेदणा-निज्जरा-पदं

७४. से नूणं भते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
७५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! कम्मं वेदणा, नोकम्मं निज्जरा । से तेणट्ठेण गोयमा^१ ! •एवं वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा^२ न सा वेदणा ॥
७६. नेरइया ण भते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
७७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! नेरइयाणं कम्मं वेदणा, नोकम्मं निज्जरा । से तेणट्ठेण गोयमा^१ ! •एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा^२ न सा वेदणा ॥
७८. एव जाव वेमाणियाण ॥
७९. से नूणं भते ! जं वेदेसु तं निज्जरेसु ? जं निज्जरेसु तं वेदेसु ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
८०. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—जं वेदेसु नो तं निज्जरेसु ? जं निज्जरेसु नो तं वेदेसु ?
गोयमा ! कम्मं वेदेसु, नोकम्मं निज्जरेसु । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव नो तं वेदेसु ॥
८१. एवं नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ॥
८२. से नूणं भते ! ज वेदेति त निज्जरेति ? ज निज्जरेति त वेदेति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
८३. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव नो तं वेदेति ?
गोयमा ! कम्म वेदेति, नोकम्मं निज्जरेति । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव नो तं वेदेति ॥
८४. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥
८५. से नूणं भते ! ज वेदिस्सति तं निज्जरिस्सति ? ज निज्जरिस्सति त वेदिस्सति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१. कम्म (अ, क, म) ।

२. स० पा०—गोयमा जाव न ।

३. स० पा०—गोयमा जाव न ।

४. पू० प० २ ।

५. नेरइया ण भते ! ज वेदेसु त निज्जरेसु एव (अ, क, ता, व, म, स) ।

८६. से केणट्ठेणं जाव नो तं वेदिस्संति ?
 गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति । से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति ॥
८७. एव नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥
८८. से नुणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
 णो इणट्ठे समट्ठे ॥
८९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
 गोयमा ! जं समयं वेदेति नो तं समयं निज्जरेति, जं समयं निज्जरेति नो तं समयं वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ॥
९०. नेरइया णं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
 गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
९१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—नेरइया णं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
 गोयमा ! नेरइया ण जं समयं वेदेति नो तं समयं निज्जरेति, जं समयं निज्जरेति नो तं समयं वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए ॥
९२. एव जाव वेमाणियाणं ॥

सासय-असासय-पवं

९३. नेरइया णं भंते ! कि सासया ? असासया ?
 गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया ॥
९४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया सिय सासया ? सिय असासया ?
 गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेणं जाव सिय सासया, सिय असासया ॥
९५. एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासया ॥
९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति^१ ॥

चउत्थो उद्देशो

संसारस्थजीव-पदं

६७. रायगिहे नयरे जाव^१ एव वयासि—कतिविहा ण भते ! संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया जाव तसकाइया । एव जहा जीवाभिगमे जाव^२ एगे जीवे एगेण समएण एगं किरिय पकरेइ, त जहा—सम्मत्तकिरिय वा, मिच्छत्तकिरिय वा^३ ॥
६८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^४ ॥

पंचमो उद्देशो

जोणीसगह-पदं

६९. रायगिहे जाव एवं वयासी—खहयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं भते ! कतिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! तिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते, तं जहा—अडया, पोयया, संमुच्छिमा । एवं जहा जीवाभिगमे जाव^५ नो चेव ण ते विमाणे वीतीवएज्जा, एमहोलाया ण गोयमा ! ते विमाणा पण्णत्ता^६ ॥
१००. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^७ ॥

१. म० १।४-१० ।

२. जी० ३ ।

३. अतोप्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—

जीवा छव्विह पुढवी,

जीवाण ठिती भवद्धिती काये ।

निल्लेवण अणगारे,

किरिया सम्मत्त-मिच्छत्ता ॥

(अ, ता, व, म, स, वृपा) ।

४. म० १।५१ ।

५. जी० ३ ।

६. अतोप्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—

जोणीसगह-लेसा,

दिट्ठी नारो य जोग-उवओगे ।

उववाय-ट्ठिति-समुग्घाय-चवण-जाती-कुल-

वीहीओ ॥ (वृपा) ।

७. म० १।५१ ।

छट्ठो उद्देशो

आउयपकरण-वेयणा-पदं

१०१. रायगिहे जाव' एवं वयासी—जीवे णं भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! कि इहगए नेरइयाउयं पकरेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ ?
 गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ । एवं असुरकुमारेसु वि, एव जाव' वेमाणिएसु ॥
१०२. जीवे णं भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! कि इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ?
 गोयमा ! नो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववन्ने वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ । एव जाव वेमाणिएसु ॥
१०३. जीवे णं भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! कि इहगए महावेदणे ? उववज्जमाणे महावेदणे ? उववन्ने महावेदणे ?
 गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतदुक्खं वेदण वेदेति, आहच्च सायं ॥
१०४. जीवे णं भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।
 गोयमा । इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतसात वेदण वेदेति, आहच्च असायं । एव जाव' थणियकुमारेसु ॥
१०५. जीवे णं भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।
 गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, एव उववज्जमाणे वि, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेदण वेदेति । एव जाव' मणुस्सेसु ।
 वाणमतार-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ॥
१०६. जीवा णं भते ! कि आभोगनिव्वत्तियाउया ? अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?
 गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एवं जाव' वेमाणिया ॥

१. भ० ११४-१० ।

२. उववज्जति (व) ।

३. पृ० प० २ ।

४. अस्सायं (अ, स) ।

५. पृ० प० २ ।

६. पृ० प० २ ।

७. पृ० प० २ ।

कक्कस-अक्कसवेयणीय-पदं

१०७. अत्थि णं भते ! जीवाण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥
१०८. कहण्ण भते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव' मिच्छादसणसल्लेणं—एव खलु गोयमा ! जीवाणं
कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ॥
१०९. अत्थि ण भते ! नेरइया ण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
एव चेव । एव जाव' वेमाणियाण ॥
११०. अत्थि ण भते ! जीवाण अक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥
१११. कहण्णं भते ! जीवाण अक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव' परिगहवेरमणेण, कोह्विवेगेण जाव'
मिच्छादसणसल्लविवेगेण—एव खलु गोयमा ! जीवाणं अक्कसवेयणिज्जा
कम्मा कज्जति ॥
११२. अत्थि ण भते ! नेरइयाणं अक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
णो इण्ठे समट्ठे । एव जाव वेमाणियाण, नवर—मणुस्साणं जहा जीवाणं ॥

सायासाय-वेयणीय-पदं

११३. अत्थि ण भते ! जीवाण सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥
११४. कहण्ण भते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाणुकपयाए, भूयाणुकपयाए, जीवाणुकपयाए, सत्ताणुकपयाए,
बहूण पाणाणं • भूयाण जीवाणं • सत्ताण अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरण-
याए अतिप्पणयाए अपिट्ठणयाए अपरियावणयाए—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं
सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति । एव नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ॥
११५. अत्थि ण भते ! जीवाण असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥
११६. कहण्णं भते ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, पर-

पिटृणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं^१ • भूयाणं जीवाणं^० सत्ताण दुक्ख-
णयाए, सोयणयाए^२, • जूरणयाए, तिप्पणयाए, पिटृणयाए^०, परियावणयाए—
एव खलु गोयमा^३ । जीवाणं असतावेयणिज्जा कम्मा कज्जति । एव नेरइयाण
वि, एव जाव वेमाणियाण ॥

दुस्समदुस्समा-पदं

११७ जबुदीवे णं भते । दीवे^४ इमीसे ओसप्पिणीए दुस्सम-दुस्समाए समाए उत्तम-
कटुपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ?

✓ गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, भुंभूभूए^५ कोलाहलभूए^६ । समाणुभावेण^७
य ण खर-फरुस-धूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयकरा वाया सवट्टगां य
वाहिंति । इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समता रउस्सला^८ रेणुकलुस-तमपडल-
निरालोगा । समयलुक्खयाए य ण अहिय चंदा सीय मोच्छति^९ । अहिय^{१०} सूरिया
तवइस्सति । अदुत्तरं च ण अभिक्खणं बहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा
✓ खत्तमेहा^{११} अगिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा—अपिवणिज्जोदगा,^{१२}
वाहिरोगवेदणोदीरणा-परिणामसलिला, अमणुण्णपाणियगा चडानिलपहय-
तिक्खधारा-निवायपउर वास वासिंहिति, जेण भारहे वासे गामागर-नगर-खेड-
कब्बड-मडब-दोणमुह-पट्टणासमगयं^{१३} जणवय, चउप्पयगवेलेए, खहयरे य पक्ख-
सघे, गामारण-पयारनिरए तसे य पाणे, बहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्भ-त्तय-
वल्लि-तण-पव्वग-हरितोसहि-पवालकुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विद्धसेहिंति,
✓ पव्वय-गिरि-डोगल्लय^{१४}—भट्टिमादीए वेयड्डगिरिवज्जे विरावेहिंति, सलिलबिल-
गड्डु-दुग्गविसमनिणुन्नयाइ च गंगा-सिधुवज्जाइ समीकरेहिंति ॥

११८. तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभाव-पडोयारे
भविस्सति ?

✓ गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालभूया मुम्मुरब्भूया छारियभूया तत्तकवेल्लय-
भूया^{१५} तत्तसमजोतिभूया^{१६} धूलिबहुला रेणुबहुला पकवहुला पणगबहुला चलणि-

१. स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।

६. अहित (क, व, म) ।

२. स० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए । १०. खट्टमेहा (म), खत्तमेहा (वृपा) ।

३. दीवे भारहे वासे (अ, क, व, म, स) ।

११. अवणिज्जोदगा (अ, ब, स, वृपा), अपि-

४. भभाभूए (अ, क, म); भभेभूए (व) ।

वणिज्जोदगा (क, म); अवणिज्जोदगा (ता)

५. कोलाहलग^० (क, व, म) ।

१२. ० समा० (ब, स) ।

६. समयाणु^० (स, वृ) ।

१३. डोगरथल (अ, क, ता, वृपा) ।

७. रयोसला (क, ता, ब, म); रयोसला (स) । १४. कवल्लय^० (क); कवल्लग^० (ता) ।

८. मोच्छति (अ, क, ता, ब, म, स) ।

१५. प्रस्तुतागमस्य ३।४८ सूत्रे तथा इयानागस्य

बहुला^१ बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुन्निक्कमा^२ यावि भविस्सति ।

११६. तीसे णं भंते ! समाए भरहे^३ वासे मणुयाणं केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा^४ मणुया भविस्संति दुख्वा दुवण्णा^५ दुगंघा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता^६

•अप्पिया असुभा अमणुण्णा^७ अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा^८ अणिट्ठस्सरा

•अकतस्सरा अप्पियस्सरा असुभस्सरा अमणुण्णस्सरा^९ अमणामस्सरा अणा-

देज्जवयणपच्चायाया, निल्लज्जा, कूड-कवड-कलह-वह-बध-वेरनिरया, मज्जा-

यातिक्कमप्पहाणा, अकज्जनिच्चुज्जता, गुरुनियोग-विणयरहिया य, विकलरूवा,

परूढनह-केस-मसु-रोमा, काला, खर-फरुस-भामवण्णा, फुट्टिसिरा, कविल-

पलियकेसा, बहुण्णारुसंपिणद्ध^{१०}-दुहंसणिज्जरूवा, संकुडितवलीतरगपरिवेढियंग-

मंगा, जरापरिणतव्व थेरगनरा, पविरलपरिसडियदंतसेढी, उब्भडघडामुहा^{११}

विसमणयणा, वंकनासा, वंके-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छु-कसराभिभूया,

खरतिक्खनखंडूइय^{१२}-विकखयतण^{१३}, ददु-किडिभ-सिंभ^{१४}-फुडियफरुसच्छवी,

चित्तलंगा, टोलागति^{१५}-विसमसंधिबंधण-उक्कुडुअट्टिगविभत्त-दुब्बला कुसंधयण-

कुप्पमाण-कुसंठिया, कुरूवा, कुट्टाणासण-कुसेज्ज-कुभोइणो, असुइणो, अणेगबाहि-

परिपीलियगमंगा, खलत-विभलगती^{१६}, निरुच्छाहा, सत्तपरिवज्जिया, विगयचेट्ट-

नट्टेया, अभिक्खण सीय-उण्ह-खर-फरुसवायविज्जभडियमल्लिणपसुरउग्गुडिय-

गमंगा^{१७}, बहुकोह-माण-माया, बहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, उस्सण घम्मसण्ण-

सम्मत्तपरिमट्ठा, उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-वीसतिवासपरमाउसो,

'पुत्तनत्तुपरिवाल-पणयबहुला'^{१८} गंगा-सिंधूओ महानदीओ, वेयड्डं च पव्वयं

(न।१०) सूत्रे 'तत्त' पद पृथग् गृहीत, वृत्ता-

वपि च तथैव व्याख्यातमस्ति । जंबूद्वीप-

प्रज्ञप्ति (२ वक्षस्कार) वृत्तौ अत्र च 'तत्त'

पदं समस्तं गृहीतमस्ति, व्याख्यातमपि च

तथैव ।

१. चलनप्रमाण. कर्हमश्चलनी (वृ) ।

२. दोन्निक्कमा (अ, स) ।

३. भारहे (अ, क, स) ।

४. दुव्वण्णा (ता, व, स) ।

५. सं० पा०—अकता जाव अमणामा ।

६. सं० पा०—अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा

७. •ण्णारुसिं (अ, व, स), •ण्णारुसिं-

णद्ध (ता) ।

८. •घडमुहा (अ, म), •घडोमुहा (क, व);

•चाडामुहा (ता वृपा), घडग=घडा । अत्र

एकपदे सन्धिजति ।

९. बंग (क, ता, व, म, वृपा) ।

१०. •कडूइय (ता, व, स) ।

११. विकखय (अ, क) ।

१२. सिंभ (ता, स) ।

१३. टोलागति (ता, व, म, वृपा) ।

१४. वमल (अ); वेमल (क, ता) ।

१५. •रयणुडियगमंगा (अ) ।

१६. •परियार० (अ); •परियाल० (व, स);

•परिपालखुवहुला (क, वृपा) ।

निस्साए बात्तवरि^१ निओदा^२ वीय वीयमेत्ता^३ विलवासिणो भविस्संति ॥

१२०. ते ण भते ! मणुया क आहार आहारेहि^४ति ?

गोयमा ! तेण कालेण तेण समएणं गगा-सिघूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्त जल वोज्झिहि^५ति, से वि य ण जले बहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव ण आउबहुले भविस्सति । तए ण ते मणुया सूरुगमणमुहुत्तसि य सूरत्थमणमुहुत्तसि य विलेहि^६तो निद्धाहि^७ति, निद्धाइत्ता मच्छ-कच्छमे थलाइ गाहेहि^८ति, गाहेत्ता सीतातवतत्तएहि^९ मच्छ-कच्छएहि^{१०} एक्कवीस वाससहस्साइ वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्सति ॥

१२१. ते णं भते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खणपोसहोववासा, उस्सण्ण^{११} मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे काल किच्चा कहि गच्छिहि^{१२}ति ? कहि उववज्जिहि^{१३}ति ?

गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहि^{१४}ति ॥

१२२. ते ण भते ! सीहा, वग्घा, वगा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा निस्सीला तहेव जाव^{१५} कहि उववज्जिहि^{१६}ति ?

गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहि^{१७}ति ॥

१२३. ते ण भते ! ढक्का, कका, विलका^{१८}, मद्दुगा, सिही निस्सीला तहेव जाव^{१९} कहि उववज्जिहि^{२०}ति ?

गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहि^{२१}ति ॥

१२४. सेव भते ! सेवं भते ! ति^{२२} ॥

सत्तमो उद्देशो

संवुडस्स किरिया-पदं

१२५. संवुडस्स ण भते ! अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स^{२३}, *आउत्त चिट्ठमाणस्स, आउत्त निसीयमाणस्स^{२४}, आउत्त तुयट्ठमाणस्स, आउत्त बत्थ पडिगाह कबल

१. बाहत्तरि (ता, व) ।

६. पिलका (अ) ।

२. नियोया (ता) ।

७. अ० ७।१२१ ।

३. वीयामेत्ता (अ, क, व, म, स) ।

८. अ० १।५१ ।

४. ओस्सण्ण (अ, स) ।

९. स० पा०—गच्छमाणस्स जाव आउत्त ।

५. अ० ७।१२१ ।

पादपुच्छं गेण्हमाणस्स वा निक्खिण्वमाणस्स वा, तस्स णं भते । कि इरिया-
वहिया^१ किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! सवुडस्स णं अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स जाव तस्स णं
इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स
जाव नो संपराइया, किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवति, तस्स णं
इरियावहिया किरिया कज्जइ^१, •जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा
भवति, तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ । अहासुत्त रीयमाणस्स इरिया-
वहिया किरिया कज्जइ^२, उस्सुत्त रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ ।
से ण अहासुत्तमेव रीयइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सवुडस्स ण
अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ^३ ॥

काम-भोग-पदं

१२७. रूवी भते ! कामा ? अरूवी कामा ?

गोयमा ! रूवी कामा, नो अरूवी कामा ॥

१२८. सचित्ता भते ! कामा ? अचित्ता कामा ? — अनाकंते

गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा ॥

१२९. जीवा भते ! कामा ? अजीवा कामा ?

गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा ॥ ✓

१३०. जीवाण भते ! कामा ? अजीवाण कामा ?

गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा ॥

१३१. कतिविहा ण भते ! कामा पणत्ता ?

गोयमा ! दुविहा कामा पणत्ता, त जहा—सहा य, रूवा य ॥

१३२. रूवी^४ भते ! भोगा ? अरूवी भोगा ?

गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा ॥

१३३. सचित्ता भते ! भोगा ? अचित्ता भोगा ?

गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ॥

१३४. जीवा भते ! भोगा^५ ? •अजीवा भोगा ? •

गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ॥

१. रिया० (व) ।

४. रूवि (अ, क, ता, व, भ, स) ।

२. स० पा०—तद्देव जाव उस्सुत्त ।

५. स० पा०—भोगा पुच्छा ।

३. तुलना—भ० ७।२०, २१ ।

१३५. जीवाणं भते ! भोगा ? अजीवाण भोगा ?
 गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाण भोगा ॥
१३६. कतिविहा ण भते ! भोगा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! ति विहा भोगा पण्णत्ता, त जहा—गधा, रसा, फासा ॥
१३७. कतिविहा ण भते ! काम-भोगा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! पचविहा काम-भोगा पण्णत्ता, त जहा—सद्दा, रूवा, गधा, रसा, फासा ॥
१३८. जीवा ण भते ! कि कामी ? भोगी ?
 गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि ॥
१३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा कामी वि ? भोगी वि ?
 गोयमा ! सोइदिय-चक्खिदियाइ पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिण्णिभदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी । से तेणट्ठेण गोयमा ! •एव वुच्चइ-जीवा कामी वि°, भोगी वि ॥
१४०. नेरइया ण भते ! कि कामी ? भोगी ?
 एव चेव जाव^१ थणियकुमारा ॥
१४१. पुढविकाइयाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी ॥
१४२. से केणट्ठेण जाव भोगी ?
 गोयमा ! फासिदिय पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव भोगी । एव जाव वणस्सइ-काइया । वेइदिया एव चेव, नवर—जिण्णिभदियफासिदियाइ पडुच्च । तेइदिया वि एवं चेव, नवर—घाणिदिय-जिण्णिभदिय-फासिदियाइ पडुच्च ॥
१४३. चउरिदियाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! चउरिदिया कामी वि, भोगी वि ॥
१४४. से केणट्ठेण जाव भोगी वि ?
 गोयमा ! चक्खिदिय पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिण्णिभदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी । से तेणट्ठेण जाव भोगी वि । अवसेसा जहा जीवा जाव वेमा-णिया ॥
१४५. एएसि ण भते ! जीवाणं 'कामभोगीण, नोकामीणं, नोभोगीण, भोगीण'^२ य कयरे कयरेहितो^३ •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

१. स० पा०—गोयमा जाव भोगी ।

२. × (अ), एव जाव (क, व, म, स); पू०

प० २ ।

३. कामीण भोगीण नोकामीण नोभोगीण य

(क, वा) ।

४. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सच्चत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा^१ ॥

दुब्बलसरीरस्स भोगपरिच्चाय-पदं

१४६. छउमत्थे ण भंते ! मणूसे जे^२ भविए अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मणेण, बलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठ एव वयह^३ ?

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मणेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४७. आहोहिए^४ ण भंते ! मणूसे जे भविए अण्णयरेसु देवलोएसु^५ •देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेण, कम्मणेण, बलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठ एव वयह ?

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मणेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे^६, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४८. परमाहोहिए ण भंते ! मणूसे जे भविए तेणव^७ भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव^८ अत करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी^९ •नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मणेण, बलेणं वीरिएण पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठ एव वयह ?

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मणेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ^{१०} ॥

१. मणत्त० (ता) ।

२. मणुस्से (ता) ।

३. वदहा (ता, व) ।

४. अहोहिएण (ता, व) ।

५. सं० पा०—एव चैव जहा छउमत्थे जाव महा० ।

६. तेणं चैव (क, ता, व, म) ।

७. भ० ११४४ ।

८. सं० पा०—सेस जहा छउमत्थस्स ।

१४६. केवली णं भते ! मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं^१ •सिञ्जिभत्तए जाव^२ अंतं करेत्तए, से नूणं भते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेण, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएण, पुरिसक्कार-परवकमेणं विउलाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भते ! एयमट्ठं एवं वयह ?
 गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू ण से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि पुरिसक्कार-परवकमेण वि अण्णयराइं विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे^३, महा-पज्जवसाणे भवति ॥

अकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५०. जे इमे भते ! असण्णिणो पाणा, त जहा—पुढविकाइया जाव^१ वणस्सइकाइया, छट्ठा य एगतिया तसा—एए ण अघा, मूढा, तमपविट्ठा, तमपडल-मोहजाल-पडिच्छन्ता अकामनिकरण वेदण वेदेतीति वत्तव्व सिया ?
 हुता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदण वेदेतीति वत्तव्वं सिया ।
 १५१. अत्थि णं भते ! पभू वि अकामनिकरण वेदण वेदेति ?
 हुता ! अत्थि ॥
 १५२. कहण्ण भते ! पभू वि अकामनिकरण वेदण वेदेति ?
 गोयमा ! जे णं नो पभू विणा पदीवेण अंधकारसि ख्वाइ पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ ख्वाइ अणिज्झाइत्ता ण पासित्तए, जे ण नो पभू मग्गओ ख्वाइ अणवयक्खित्ता ण पासित्तए, जे ण नो पभू पासओ ख्वाइ अणवलोएत्ता ण पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढ ख्वाइ अणालोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे ख्वाइ अणालोएत्ता ण पासित्तए, एस ण गोयमा ! पभू वि अकामनिकरण वेदणं वदेति ॥

पकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५३. अत्थि ण भते ! पभू वि पकामनिकरण वेदणं वेदेति ?
 हुता अत्थि ॥
 १५४. कहण्ण भते ! पभू वि पकामनिकरण वेदणं वेदेति ?
 गोयमा ! जे ण नो पभू समुद्दस्स पार गमित्तए, जे ण नो पभू समुद्दस्स पार-गयाइ ख्वाइ पासित्तए, जे ण नो पभू देवलोग गमित्तए, जे ण नो पभू देव-

१. सं० पा०—एव चेव जहा परमाहोहिए जाव
 महा^० ।

२. भ० १।४४ ।
 ३. भ० १।४३७ ।

लोगगयाइ रुवाइं पासित्तए, एस ण गोयमा ! पभू वि पकामनिकरण वेदण
वेदेति ॥

१५५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

अट्ठमो उद्देशो

मोक्ख-पदं

१५६. छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणत्तं सासयं समय केवलेण सजमेणं, *केवलेण
सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ?
बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाण अत करिसु ?
गोयमा ! नो इण्ठे समट्ठे जाव'—

१५७. से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणघरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं
सिया ?
हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणघरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति
वत्तव्व सिया*० ॥

हत्थि-कुथु-जीव-समाणत्त-पद

१५८. से नूण भते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?
हता गोयमा ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ।
*से नूण भते ! हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव
अप्पासवतराए चेव एव अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सास-
तराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव
अप्पज्जुइतराए चेव ?
कुथूओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव
महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसास-
तराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?

१. भ० १।५१ ।

२. स० पा०—एव जहा पढमसए चउत्थे उद्देशेण
तहा भाणियव्व जाव अलमत्थु ।

३. भ० १।२०१-२०८ ।

४. तुलना—भ० १।२००-२०६; ५।११५ ।

५. स० पा०—एव जहा रायपसेणइज्जे जाव
खुड्डिय ।

हंता गोयमा हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकम्म-
तराए चेव,

हत्थीओ कुथू अप्पकिरियतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव,

हत्थीओ कुथू अप्पासवतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव,

एव आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इडिढ-महज्जुइएहि हत्थीओ कुथू अप्पतराए
चेव कुथूओ वा हत्थी महातराए चेव ॥

१५६. से केणट्ठेण भते ! एत्र वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?

गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—इहओ लिता गुत्ता गुत्तदुवारा
निवाया निवायगभीरा । अह ण केइ पुरिसे जोइ व दीव व गहाय त कूडा-
गारसालं अंतो-अतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समता घण-
निचिय-निरतर-निच्छिहाइ दुवार-वयणाइ पिहेति, तीसे कूडागारसालाए
बहुमज्जवेसभाए त पईव पलीवेज्जा ।

तए ण से पईवे त कूडागारसालं अतो-अतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभा-
सेइ, नो चेव णं बाहि ।

अह ण से पुरिसे त पईव इडुरएणं पिहेज्जा, तए ण से पईवे तं इडुरय अतो
अतो ओभासेइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं इडुरगस्स बाहि, नो चेव
णं कूडागारसाल, नो चेव ण कूडागारसालाए बाहि ।

एव—गोकिलिजेण पच्छियापिडएण गडमाणियाए आढएण अद्दाढएण पत्थएणं
अद्धपत्थएण कुलवेण अद्धकुलवेण चाउम्भाइयाए अट्टभाइयाए सोलसियाए
वत्तीसियाए चउसट्ठियाए ।

अह ण पुरिसे त पईव दीवचपएण पिहेज्जा । तए ण से पदीवे दीवचपगस्स
अंतो-अतो ओभासति उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण दीवचपगस्स बाहि,
नो चेव ण चउसट्ठियाए बाहि, नो चेव ण कूडागारसाल, नो चेव णं कूडागार-
सालाए बाहि ।

एवामेव गोयमा ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्ध बोदि निव्वत्तेइ त
असंखेज्जेहि जीवपदेसेहि सचितीकरेइ—खुड्डिय वम महालिय वा । ° से तेणट्ठेण
गोयमा ! ° एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य ° समे चेव जीवे । ॥

सुह-दुक्ख-पदं

१६०. नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे
से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से सुहे ?

१. स० पा०—गोयमा जाव समे ।

२. एतच्च सर्वमपि वाचनान्तरे साक्षात्लिखितमेव
दृश्यते (वृ) ।

हंता गोयमा ! नेरइयाण पावे कम्मे^१ •जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जि-
स्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से^२ सुहे । एवं जाव^३ वेमाणियाणं ॥

दसविहसण्णा-पदं

१६१. कति ण भंते ! सण्णाओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! दस सण्णाओ पणत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुण-
सण्णा, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा, मायासण्णा, लोभसण्णा, लोग-
सण्णा, ओहसण्णा । एव जाव वेमाणियाण ॥

नेरइयाणं दसविहवेदणा-पदं

१६२. नेरइया दसविह वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—सीयं, उंसिणं, खुहु, दं
पिवास, कंडु, परज्झ, जर, दाह, भय, सोण ॥

हत्थि-कुथूणं अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

१६३. से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हंता गोयमा ! हत्थिस्स य कथुस्स य^४ •समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया^५
कज्जइ ॥

१६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ^६—•हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खा-
णकिरिया^७ कज्जइ ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेणं^८ •गोयमा ! एव वुच्चइ—हत्थिस्स य
कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया^९ कज्जइ ।

अहाकम्मादि-पदं

१६५. अहाकम्म ण भंते ! भुजमाणे किं बंधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि
उवचिणाइ ?

•गोयमा ! अहाकम्मं ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिदिल-
बधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ^{१०} जाव सासए पडिए, पडियत्त
असासय ।

१६६. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति^{११} ॥

१. स० पा०—कम्मे जाव सुहे ।

२. पू० प० २ ।

३. स० पा०—कुथुस्स य जाव कज्जइ ।

४. स० पा०—वुच्चइ जाव कज्जइ ।

५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जइ ।

६. स० पा—एव जहा पढमे सए नवमे उद्देसए

तहा भाणियन्व ।

७. म० १।४३६-४४० ।

८. म० १।५१ ।

नवमो उद्देशो

असंबुड-अणगारस्स विउव्वणा-पदं

१६७. असंबुडे णं भते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्ण एगरूवं विउव्वित्ताए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
१६८. असंबुडे णं भते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्ण एगरूवं^१ •विउव्वित्ताए ? •
हंता पभू ॥
१६९. से णं भते ! कि इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? अणत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अणत्थगए पोग्गले^२ •परियाइत्ता • विकुव्वइ ।
एवं २. एगवण्णं अणेगरूवं^३ ३ •अणेगवण्ण एगरूवं ४. अणेगवण्ण अणेगरूवं—
चउभंगो ॥
१७०. असंबुडे णं भते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालग पोग्गल नीलगपोग्गलत्ताए परिणामेत्ताए ? नीलग पोग्गल वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्ताए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू जाव—
१७१. असंबुडे णं भते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू निद्धपोग्गल लुक्खपोग्गलत्ताए परिणामेत्ताए ? लुक्खपोग्गल वा निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्ताए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ॥
१७२. से णं भते कि इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अणत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अणत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति • ॥

१. सं० पा०—एगरूवं जाव हता ।

२. सं० पा०—पोग्गले जाव विकुव्वइ ।

३. सं० पा०—चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देशेए तहा इह वि भाणियव्व, नवर अणगारे इहगय च इहगते चेव पोग्गले परियाइत्ता

विकुव्वइ, सेस त चेव जाव लुक्खपोग्गल निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्ताए । हता पभू ।
से भते ! कि इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नो अणत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ।

४. भ० ६।१६३-१६७ ।

महासिलाकंटयसंगम-पदं

- १७३ नायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, विष्णायमेयं अरहया—महासिलाकंटए सगामे । महासिलाकंटए ण भते । सगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ? गोयमा । वज्जी, विदेहपुत्ते जइत्था^१, नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्टारस वि गणरायाणो पराजइत्था ॥
- १७४ तए ण से कोणिए राया महासिलाकटग सगाम उवट्ठिय जाणित्ता कोडुबिय-पुरिमे सद्दावेड, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । उदाइ^२ हत्थिराय पडिक्कप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलिय चाउरगिणि सेण सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तिय खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥
- १७५ तए ण ते कोडुवियपुरिसा कोणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठित्तमाणदिया जाव^३ मत्थए अजलि कट्टु एव सामी । तहत्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहि सुनिउणेहि^४ उज्जलणेवत्थ-हव्व-परिवच्छियं सुसज्ज जाव^५ भीम सगामिय अओज्झ^६ उदाइ^७ हत्थिराय पडिक्कप्पेति, हय-गय-^८रह-पवरजोहकलिय चाउरगिणि सेण^९ सण्णाहेति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल^{१०} परिगहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु^{११} कूणियस्स रण्णो तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ॥
१७६. तए ण से कूणिए राया जेणेव मज्जणघर तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए^{१२} पिणद्धगेवेज्ज^{१३}-विमलवरवद्धचिधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेटमल्ल-दामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण चउचामरवालवीजियगे^{१४} मगलजयसद्दकयालोए^{१५} जाव^{१६} जेणेव उदाइ^{१७} हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदाइ हत्थिराय दुरुद्धे ॥

१ पराजित्था (ता) ।

८ स० पा०—गय जाव सण्णाहेति ।

२ जइत्था (क, ता) ।

९ स० पा०—करयल जाव कूणियस्स ।

३ उदायि (क, ता, व, म); उदाति (स) ।

१०. ० पट्टीए (अ, क, व, म, स) ।

४. भ० ३।११० ।

११ पिणद्ध० (ता, म, स) ।

५ सुणिउणेहि एव जहा ओववाइए जाव (अ, १२. ० वीतियगे (अ, स); ० वीतित्तगे (क, व) ।
क, ता, व, म, स) । वाचनान्तरे त्विद- १३ जत० (व); ० कयलोए एव जहा उववाइए
साक्षाल्लिखितमेव द्ध्यते (वृ) । (अ, क, ता, व, म, स) ।

६. ओ० सू० ५७ ।

१४. ओ० सू० ६३ ।

७. अउज्झ (व, स) ।

१७७. तए णं से कूणिए राया^१ हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे^२ जाव^३ सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहि-उद्धुव्वमाणीहि हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महुयाभडचडगरविदपरिक्खत्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासिलाकंटंग संगामं ओयाए । पुरओ य से सक्के देविदे देवराया एग मह अमेज्जकवय वइरपडिरूवग विउव्वित्ता ण चिट्ठइ । एवं खलु दो इदा संगाम सगामेति, तं जहा—देविदे य, मणुइदे य । 'एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए'^४, एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए ॥
१७८. तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटंग संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्टारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिध-द्वयपडागे किच्छपाणगए^५ दिसोदिसि पडिसेहित्था ॥
१७९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे ? गोयमा ! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा अभिहम्मति, सब्बे से जाणेइ महासिलाए अह^६ अभिहए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे ॥
१८०. महासिलाकंटए णं भते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ? गोयमा ! चउरासीइ जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ॥
१८१. ते णं भते ! मणुया निस्सीला^७ *निग्गुणा निम्मेरा^८ निप्पच्चक्खणपोस-होववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे काल किच्चा कहि गया ? कहि उववण्णा ? गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिवल्लजोणिएसु उववण्णा ॥

रहमुसलसंगाम-पदं

१८२. नायमेयं अरहया, सुवमेयं अरहया, विण्णायमेय अरहया—रहमुसले संगामे^९ । रहमुसले णं भते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ? गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिदे असुरकुमारराया जइत्था ; नव मल्लई, नव लेच्छई पराजइत्था ॥

१. णरिदे (क, ता, व, म)।

५. किच्छोवगयपाणे (ना० १।८।१६६) ।

३. ०वच्छे एवं जहा उववाइए (अ, क, ता, व, म, स) ।

६. ह (क, व, म) ।

३. ओ० सू० ६५ ।

७. स० पा०—निस्सीला जाव निप्पच्चक्खण ।

८. संगामे रह २ (ता) ।

४. × (अ, व, म, स) ।

१८३. तए ण से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठियं^४ *जाणिता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! भूयाणंदं हत्थिराय पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरगिणि सेण सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तिय खिप्पामेव पच्चप्पिणह ॥
- १८४ तए ण ते कोडुबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठुत्तुचित्तमाणं-दिया जाव^५ मत्थए अजलि कट्ठु एव सामी ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणत्ति, पडिसुणत्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मत्ति-कप्पणा-विकप्पेहि सुत्तिउणेहि उज्जलणेवत्थ-हव्वपरिवच्छियं सुसज्ज जाव^६ भीमं सगामिय अओज्झ भूयाणद हत्थिराय पडिकप्पेत्ति, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरगिणि सेण सण्णाहेत्ति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छत्ति, उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय दसनहं सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु कूणिथस्स रण्णो तमाणत्तिय पच्चप्पिणत्ति ॥
- १८५ तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छत्ति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पोलियसरासण-पट्टिए पिणद्धगेवेज्ज-विमलवरवद्धचिघपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेटमल्लदामेण छत्तण धरिज्जमाणेण चउचामरबालवीजियगे, मगलजयसहकयालोए जाव^७ जेणेव भूयाणदे हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भूयाणद हत्थिराय दुरुढे ॥
- १८६ तए ण से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे जाव^८ सेयवरचामराहि उद्धव्वमाणीहि-उद्धव्वमाणीहि हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभडचडगरविदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसल संगाम ओयाए । पुरओ य से सक्के देविदे देवराया एग मह अमेज्जकवय वइरपडिरूवग विउव्वित्ता ण चिट्ठइ^९ । मगओ य से चमरे असुरिदे असुरकुमारराया^{१०} एगं मह आयास किडिणपडिरूपग^{११} विउव्वित्ता ण चिट्ठइ । एवं खलु तओ इदा संगाम संगामेत्ति, त जहा—देविदे य, मणुइदे य, असुरिदे य । एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए^{१२},

१. स० पा०—सेस जहा महासिलाकटए नवर भूयाणदे हत्थिराया जाव रहमुसल संगामं ओयाए । पुरओ य से सक्के देविदे देवराया एव तहेव जाव चिट्ठइ ।

२. ३।११० ।

३ ओ० सू० ५७ ।

४. ओ० सू० ६३ ।

५. ओ० सू० ६५ ।

६. असुरराया (अ, स) ।

७. कडिण^० (अ), किडिण^० (क, स) ।

८. स० पा०—तहेव जाव दित्तिदित्ति ।

• एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए ॥

१८७ तए णं से कूणिए राया रहमुसल सगामे सगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—
कासी-कोसलगा अट्टारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-
विवडियच्चिध-द्धयपडागे किच्छपाणगए० दिसोदिसि पडिसेहित्था ॥

१८८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—रहमुसले सगामे ?

गोयमा ! रहमुसले ण सगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए, असारहिए,
अणारोहए, समुसले महया जणक्खय, जणवहं, जणप्पमद्, जणसवट्टकप्पं
रुहिरकद्दमं करेमाणे सब्बओ समता परिआवित्था । से तेणट्ठेण^१ • गोयमा !
एव वुच्चइ०—रहमुसले सगामे ॥

१८९ रहमुसले णं भते ! सगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?

गोयमा ! छण्ण उतिं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ॥

१९० ते ण भते ! मणुया निस्सोला^२ • निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा
रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे काल किच्चा कहि गया ?
कहि० उववन्ना ?

गोयमा ! तत्थ णं दससाहस्सीओ एगाए मच्छियाए^३ कुच्छिसि उववन्नाओ ।
एगे देवलोगेसु उववन्ने । एगे सुकुले पच्चायाए । अवसेसा उस्सण्ण नरग-तिरि-
क्खजोणिएसु उववन्ना ॥

१९१ कम्हा ण भते ! सक्के देविदे देवराया, चमरे य असुरिदे असुरकुमारराया
कूणियस्स रण्णो साहेज्ज^४ दलइत्था ?

गोयमा ! सक्के देविदे देवराया पुव्वसगतिए, चमरे असुरिदे असुरकुमारराया
परियायसगतिए । एव खलु गोयमा ! सक्के देविदे देवराया, चमरे य असुरिदे
असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्ज दलइत्था ॥

वरुण-नागनत्तय-पदं

१९२. वहुजणे ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव^५ परूवेइ—एवं खलु वहवे
मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु सगामेसु 'अभिमुहा चेव पहया'^६ समाणा काल-
मासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवताए उववत्तारो भवति ॥

१९३ से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! जणं से वहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ^७ • जाव^८ परूवेइ—एव

१. स० पा०—तेणट्ठेण जाव रह० ।

५. भ० १४२० ।

२. स० पा०—निस्सोला जाव उववन्ना ।

६. अभिहता चेव पहता (क, स), अभिहया (ता)

३. मच्छीए (म) ।

७. स० पा०—एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो ।

४. साहिज्ज (क); साहज्ज (ता, म) ।

८. भ० १४२० ।

- खलु बह्वे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किञ्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए^० उववत्तारो भवन्ति, जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहंसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव^१ पख्वेमि—एवं खलु गोयमा । तेण कालेणं तेण समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था—वण्णओ^२ । तत्थ णं वेसालीए नगरीए वरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ—अइहे जाव^३ अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे जाव^४ समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छेणं पीढ-फल-सेज्जा-सथारएण 'ओसह-भेसज्जेण'^५ पडिलाभेमाणे छट्ठछट्ठेण अणि-खित्तेणं तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥
- १६४ तए ण से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइ रायामिओगेणं^६, गणाभिओगेणं, बलाभिओगेण रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवट्ठेति, अणुवट्ठेत्ता कोटुवियपुरिसे^७ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेह^८, हय-गय-रह-पवर^९—
●जोहकलियं चाउरगिणि सेण सण्णाहेह^{१०}, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥
- १६५ तए ण ते कोटुवियपुरिसा जाव^{११} पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झय जाव^{१२} चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेति, हय-गय-रह^{१३}—●पवरजोहकलियं चाउर-गिणि सेण^{१४} सण्णाहेति, सण्णाहेत्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए तेषेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जाव^{१५} तमाणत्तियं पच्चप्पिणति ॥
- १६६ तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति,^{१६} उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालकारविभूसिए सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवए^{१७} सकोरेटमल्ल^{१८}—

१. भ० १।४२१ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. भ० २।६४ ।

४. भ० २।६४ ।

५. वृत्तौ उद्धृते पाठे एतन्नास्ति । भ० २।६४
सुत्रादसौ पाठः पूरितस्तत्रापि 'क' प्रती एतत्
नास्ति ।

६. रायाहियोगेण (अ, स); रायनियोगेण (ता)

७. कोटुविय० (ता); कोटुविय० (स) ।

८. युक्तमेव रयसामग्र्या इति गम्यम् (वृ) ।

९. उवट्ठावेह (अ) ।

१०. स० पा०—पवर जाव सण्णाहेत्ता ।

११. भ० ७।१७५ ।

१२. राय० सू० ६८१; वाचनान्तरे तु साक्षादेव

क्ष्यते (वृ) ।

१३. स० पा०—रह जाव सण्णाहेति ।

१४. भ० ७।१७५ ।

१५. स० पा०—जहा कुणिओ जाव पायच्छित्ते ।

१६. पू० भ० ७।१७६ ।

१७. स० पा०—सकोरेटमल्ल जाव धरिज्ज० ।

•दामेण छत्तेणं० धरिज्जमाणेणं, अणेगमणनायगं-•दडनायग-राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इवम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह०-दूय-सधिपालसद्धिं सपरिवुडे मज्जणधराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता चाउग्घट आसरह दुसुइ, दुसुहिता ह्य-गय-रहं-•पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडे, मह्याभडचडगरविदपरिक्खित्तं जेणेव रहमुसले सगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता रहमुसलं सगाम ओयाए ॥

१६७. तए णं से वरुणे नागनत्तुए रहमुसल संगाम ओयाए समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ—कप्पति मे रहमुसल सगाम सगामेमाणस्स जे पुव्वि पहणइ से पडि-हणित्तए^१, अवसेसे नो कप्पतीति; अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ अभिगेण्हत्ता रहमुसल सगाम सगामेति ॥
१६८. तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसल सगाम सगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए 'सरित्तए सरिव्वए'^२ सरिसभडमत्तोवगरणे रहेण पडिरहं हव्वमाणए ॥
१६९. तए णं से पुरिसे वरुण नागनत्तुय एव वदासी—पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया ! पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया !
२००. तए ण से वरुणे नागनत्तुए तं पुरिसं एव वदासी—नो खलु मे कप्पइ देवाणु-प्पिया ! पुव्वि अहयस्स पहणित्तए, तुम चेव णं पुव्वि पहणाहि ॥
२०१. तए ण से पुरिसे वरुणे नागनत्तुए एवं वुत्ते समाणे आसुस्ते^३ •रुद्धे कुविए चडिक्किए^४ मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाण ठाति, ठिच्चा आययकण्णायय उसु करेइ, करेत्ता वरुण नागनत्तुय गाढप्पहारीकरेइ ॥
२०२. तए ण से वरुणे नागनत्तुए तेण पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुस्ते^५ •रुद्धे कुविए चडिक्किए^६ मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता आययकण्णायय उसु करेइ, करेत्ता त पुरिस एगाहच्च कूडाहच्च जीवियाओ ववरोवेइ ॥
२०३. तए ण से वरुणे नागनत्तुए तेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अघारणिज्जमिति कट्ठ तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह परावत्तेइ, परावत्तेत्ता रहमुसलाओ सगामाओ पडिनिक्खमति,

१. स० पा०—अणेगमणनायग जाव दूय ।

२. सधिवाल० (अ, क, व, म); सधिवालग० (ता) ।

३. दूहेति (क); दूहति (ता, व) ।

४. स० पा०—रह जाव सपरिवुडे ।

५. ०गर जाव परिक्खित्तं (अ, क, ता, व, म, स)

६. पडिपह० (ता) ।

७. सरिसत्तए सरिसव्वए (क) ।

८. स० पा०—आसुस्ते जाव मिसि० ।

९. स० पा०—आसुस्ते जाव मिसि० ।

पडिनिक्खमिप्ता एगतमंतं^१ अवक्कमइ, अवक्कमिप्ता तुरए निगिण्हइ, निगि-
ण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रद्दाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तुरए मोएइ, मोएत्ता
तुरए विसज्जेइ, विसज्जेत्ता दब्भसथारगं सथरइ, सथरित्ता दब्भसथारगं
दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसण्णे करयलं^२ परिग्गहिय दसनहं^३
सिरसावत्तं मत्थए अज्जलिं^४ कट्ठु एवं वयासी—नमोत्थु ण अरहताणं भगवं-
ताण जाव^५ सिद्धिगतिनामधेयं ठाण सपत्ताण, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ
महावीरस्स आदिगरस्स जाव^६ सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं सपाविउकामस्स मम
धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वदामि ण भगवत तत्थगयं इहगए, पासउं^७
मे से भगव तत्थगए^८ इहगय ति कट्ठु^९ वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं
वयासी—पुंवि पि ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणा-
इवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, एव जाव^{१०} थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जाव-
ज्जीवाए, इयाणि पि ण अह तस्सेव भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वं पाणा-
इवाय पच्चक्खामि जावज्जीवाए^{११} जाव^{१२} मिच्छादसणसत्तल पच्चक्खामि
जावज्जीवाए । सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउज्जिहं पि आहारं पच्च-
क्खामि जावज्जीवाए । ज पि य इमं सरीर इट्ठु कत पिंयं जाव^{१३} मा णं वाइय-
पित्तिय-सेभिय-सण्णिवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति
कट्ठु^{१४} एयं पि ण चरिमेहि ऊसास-नीसासेहि वोसिरिस्सामि त्ति कट्ठु
सण्णाहपट्ठु मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरण करेइ, करेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहि-
पत्ते आणपुच्चीए^{१५} कालगए ॥

वरुणनागनत्तुय-मित्त-पदं

२०४. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसल संगाम
सगामेमाणे एगेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे^१ अत्रले अवीरिए
अपुरिसक्कारपरक्कमे^२ अघारणिज्जमिति कट्ठु वरुण नागनत्तुयं रहमुसलाओ
सगामाओ पडिनिक्खममाण पासइ, पासित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता जहा
वरुणे जाव^३ तुरए विसज्जेति, पडसथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे^४

१. एगत (क) ।

२. स० पा०—करयल जाव कट्ठु ।

३. ओ० सू० २१ ।

४. ओ० सू० २१ ।

५. पासइ (ता) ।

६. स० पा०—तत्थगए जाव वंदइ ।

७. म० ७।३२ ।

८. स० पा०—एव जहा खदओ जाव एवं ।

९. म० १।३६४ ।

१०. म० २।५२ ।

११. पुंवि (ता) ।

१२. स० पा०—अत्थामे जाव अघारणिज्जमिति

१३. म० ७।२०३ ।

१४. स० पा०—पुरत्थाभिमुहे जाव अज्जलि ।

•संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्त मत्थए° अजलि कट्ठु एवं वयासी—जाइ णं भते ! मम पियवालवयसस्स वरुणस्स नाग-नत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाण-पोसहोववासाइ, ताइ णं 'ममं पि' भवतु त्ति कट्ठु सण्णाहपट्टं मुयइ', मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आणुपुब्बीए कालगए ॥

२०५. तए ण त वरुण नागनत्तुय कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहि वाणमतरेहि देवेहि दिव्वे सुरभिगघोदगवासे वुट्ठे, दसद्ववण्णे कुसुमे निवातिए', दिव्वे य गीय-गंधव्वनिनादे कए या वि होत्था ॥

२०६. तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्व देविड्ढ दिव्व देवज्जुति दिव्व देवाणुभाग सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव' पख्वेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बह्वे मणुस्सा' •अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवति ॥

२०७. वरुणे ण भते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ ण अत्थेग-तियाणं देवाण चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

२०८. से णं भते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, भवक्खएण, ठिइक्ख-एण' •अण्णंतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति ॥

२०९. वरुणस्स ण भते ! नागनत्तुयस्स पियवालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ? गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ॥

२१०. से णं भते ! तओहितो अण्णंतर उव्वट्ठित्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जि-हिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव' अंतं काहिति ॥

२११. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

१. मम वि (व) ।

२. ओमुयति (अ, क, ता, व) ।

३. निवाडिते (अ, क, ता) ।

४. भ० १।४२० ।

५. स० पा०—मणुस्सा जाव उववत्तारो ।

६. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंत ।

७. भ० ७।२०८ ।

८. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देशो

कालोदाह-पञ्चितीणं पञ्चत्थिकाए संदेह-पदं

२१२ तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नामं नगरे होत्था—वण्णओ^१ । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव^२ पुढविसिलापट्टओ । तस्स ण गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामते बहवे अण्णउत्थिया परिवसति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई, सेवालोदाई^३, उदए, नामुदए^४, नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए^५, संखवालए, सुहत्थी गाहावई ॥

२१३. तए ण तेसि अण्णउत्थियाण अण्णया कयाइ^६ एगयओ सहियाण^७ समुवागयाण सण्णिवट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे^८ मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोगलत्थिकाय^९ ।

तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, पोगलत्थिकाय^{१०} । एग च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकाय अरुविकाय जीवकायं पण्णवेति ।

तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरुविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकायं । एग च ण समणे नायपुत्ते पोगलत्थिकाय रूविकायं अजीवकाय पण्णवेति । से कहमेयं मण्णे एव ?

२१४. तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे जाव^{११} गुणसिलए चेइए समोसढे जाव^{१२} परिसा पडिगया ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. ओ० सू० २-१३ ।

३. सेवलो^० (ता) ।

४. णामुए (ता); णोमुदए (व) ।

५. × (अ, ता, म) ।

६. कयाई (क), कदायी (ता, व, म), कयाइ (स) ।

७. × (क, ता, व, म, स) ।

८. अतमेतारूवे (ता) ।

९. आगासत्थिकाय (अ, क, ता, व, म, स);

भ० ७।२१।८ सूत्रे कालोदायिना प्रतिपादि-
तस्य भगवत सिद्धान्तस्य भगवता स्ववचनेन
स्वीकृतिः क्रियते । तत्र 'त सच्चे ण एसमट्ठे
कालोदाई ! अहं पचत्थिकायं पण्णवेमि, त
जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोगलत्थिकाय'
एतदनुसारेण एष पाठो युक्तोस्ति, तेन एतद-
नुसारेणासौ स्वीकृतः ।

१०. पोगलत्थिकाय आगासत्थिकायं (ता) ।

११. भ० १।७ ।

१२. भ० १।८ ।

२१५. तेण कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे 'गोयमे गोत्तेण' जाव^१ भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जतं भत्त-पाणं पडिग्गाहिता रायगिहाओ^२ *नगराओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमच-वलमसंभत^३ जुगतत्तपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ^४ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे तेसि अण्णउत्थियाण अदूरसामतेण वीईवयति ॥

२१६. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामतेण वीईवयमाण पासंति, पासित्ता अण्णमण्ण सहावेति, सहावेत्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह इमा कहा अविप्पकडा^५, अय च णं गोयमे अम्हं अदूरसामतेण वीईवयइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयम एयमट्ठ पुच्छित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठ पडिसुणति, पडिसुणित्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगवं गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा—धमत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय^६ । त चेव जाव^७ रूविकाय अजीवकाय पण्णवेति । से कहमेयं गोयमा ! एव ?

कालोदाइस्स समाहाणपुच्चं पच्चज्जा-पद

२१७. तए णं से भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु वय देवाणुप्पिया ! अत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो, नत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो । अम्हे ण देवाणु-प्पिया ! सव्व अत्थिभाव अत्थि त्ति वदामो, सव्वं नत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो । त चेयसा^८ खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्ठु ते अण्णउत्थिए एव वदासी^९, वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव^{१०} भत्त-पाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समण भगवं महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासण्णे जाव^{११} पज्जुवासति ॥

२१८. तेण कालेणं तेण समएण समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवण्णे या वि होत्था । कालोदाई य तं देस हव्वमागए । कालोदाईति ! समणे भगव महावीरे कालोदाइ

१. गोयमगोत्ते ण (अ, ता) ।

६. आगासत्थिकाय (अ, क, व, म, स) ।

२. एवं जहा वित्तियसत्ते णियंठुहेसए जाव (अ, क, ता, व, म, स); भ० २।१०६-१०६ ।

७. भ० ७।२१३ ।

८. वेदसा (अ, ता, म, वृपा) ।

३. सं० पा०—रायगिहाओ जाव अतुरियमच-वलमसंभत जाव रिय ।

९. वदति (ता, व, म) ।

४. भ० २।११० सूत्रे '०मसंभते' इति पाठः स्वीकृतोस्ति ।

१०. एवं जहा नियंठुहेसए जाव (अ, क, ता, व, म, स), भ० २।११० ।

११. भ० ३।१३ ।

५. अविउप्पकडा (अ, क, व, म, वृपा) ।

एवं वयासी—से नूण भे कालोदाई ! अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवा-
गयाणं सण्णिविट्ठणं सण्णिसण्णाणं अयमेयाख्वे मिहोकहासमुल्लावे समुप्प-
ज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति तहेव जाव^१ से कह-
मेय मण्णे एव ? से नूण कालोदाई ! अत्थे समत्थे ?

हता अत्थि । त सच्चे ण एसमट्ठे कालोदाई ! अह पचत्थिकायं पण्णवेमि, त
जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए^२ पण्णवेमि, ^३त जहा—धम्मत्थि-
कायं, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय । एय च णं अह जीव-
त्थिकाय अरूविकाय जीवकाय पण्णवेमि ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिए अरूविकाए पण्णवेमि, तं जहा—धम्मत्थिकायं,
अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय ।^४ एगं च ण अह पोग्गलत्थि-
काय रूविकाय पण्णवेमि ॥

२१९ तए ण से कालोदाई समण भगव महावीरं एव वदासी—एयंसि णं भत्ते !
धम्मत्थिकायसि, अधम्मत्थिकायसि, आगासत्थिकायसि अरूविकायसि अजीव-
कायसि चविकया केइ आसइत्तए वा ? सइत्तए वा ? चिट्ठइत्तए^५ वा ? निसीइ-
त्तए वा ? तुयट्ठित्तए वा ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एयंसि ण पोग्गलत्थिकायसि रूविकायसि
अजीवकायसि चविकया केइ आसइत्तए वा, सइत्तए वा^६, ^७चिट्ठइत्तए वा,
निसीइत्तए वा^८, तुयट्ठित्तए वा ॥

२२०. एयंसि ण भत्ते ! पोग्गलत्थिकायसि रूविकायसि अजीवकायसि जीवाणं पावा
कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जंति ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एयंसि ण जीवत्थिकायसि अरूविकायसि
जीवाण पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जंति ।^९ एत्थ णं से कालोदाई
सबुद्धे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
इच्छामि ण भत्ते ! तुव्व अतिय धम्मं निसामेत्तए । एव जहा खदए तहेव
पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ जाव^१ विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं
भावेमाणे विहरइ ॥

२२१. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ, गुणसिलाओ
चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. म० ७।२१३ ।

२ अजीवताए (क), अजीवत्थिकाए (स) ।

३. स० पा०—तहेव जाव एय ।

४. चिट्ठित्तए (अ, व, ता) ।

५. सं० पा०—सइत्तए वा जाव तुयट्ठित्तए ।

६. म० २।५०-६३ ।

कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पदं

२२२. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे, गुणसिलए चेइए । तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ जाव^१ समोसढे, परिंसा जाव^२ पडिगया ॥

२२३. तए णं से कालोदाई अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नम-
सित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग-
सजुत्ता कज्जति ?

हता अत्थि ॥

२२४. कहणं भते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति ?
कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्ण थालीपागसुद्ध अट्टारसवजणा-
कुल विससमिस्सं भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए भइए भवइ, तओ
पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे दुरुवत्ताए, दुवण्णत्ताए, दुगधत्ताए जाव^३
दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एवामेव कालोदाई !
जीवाणं पाणाइवाए जाव^४ मिच्छादसणसल्ले, तस्स^५ ण आवाए भइए भवइ,
तओ पच्छा 'विपरिणममाणे-विपरिणममाणे' दुरुवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगधत्ताए
जाव दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एव खलु कालोदाई !
जीवाण पावा कम्मा 'पावफलविवागसजुत्ता कज्जति' ।

२२५. अत्थि णं भते ! जीवाण कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसजुत्ता कज्जति ?
हता अत्थि ॥

२२६. कहणं भते ! जीवाण कल्लाणा कम्मा^६ कल्लाणफलविवागसजुत्ता^७ कज्जति ?
कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्ध अट्टारसवजणाकुल
ओसहमिस्स भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए नो भइए भवइ, तओ
पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुखत्ताए सुवण्णत्ताए जाव^८ सुहत्ताए—नो
दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एवामेव कालोदाई ! जीवाण पाणाइवाय-
वेरमणे जाव^९ परिणगहवेरमणे कोहविवेगे जाव^{१०} मिच्छादसणसल्लविवेगे, तस्स

१. भ० १।७ ।

२. भ० १।८ ।

३. जहा महस्सवए जाव (अ, क, ता, व, म,
स); भ० ६।२० ।

४. भ० १।३८४ ।

५. तस्य प्राणातिपातादेः (वृ) ।

६. परिणममाणे-परिणममाणे (अ, क, ता, म) ।

७. फलविवाग जाव कज्जति (अ); फल जाव
कज्जति (क, ता) ।

८. स० पा०—कम्मा जाव कज्जति ।

९. भ० ६।२२ ।

१०. भ० १।३८५ ।

११. डा० १।११५-१२५ ।

ण आवाए नो भद्दए भवइ, तअओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुखवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमइ । एवं खलु कालोदाई ! जीवाण कल्लाणा कम्मा^१ •कल्लाणफलविवाणसजुता^० कज्जंति ॥

२२७. दो भते ! पुरिसा सरिसया^१ •सरित्तया सरिब्बया^० सरिसभडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धि अगणिकाय समारंभति । तत्थ ण एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, एगे पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ । एएसि णं भते ! दोण्हं पुरिसाण कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव ? महाकिरियतराए चेव ? महासवतराए चेव ? महावेयणतराए चेव ? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव^१ ? •अप्पकिरियतराए चेव ? अप्पासवतराए चेव^० अप्पवेयणतराए चेव ? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ ?

कालोदाई ! तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्म-तराए चेव^१, •महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव^०, महावेयणतराए चेव । तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से ण पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव^१, •अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव^०, अप्पवेयणतराए चेव ॥

२२८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तत्थ ण जे से पुरिसे^१ •अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव ? महाकिरियतराए चेव ? महासवतराए चेव ? महावेयणतराए चेव ? तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव ? अप्पकिरियतराए चेव ? अप्पासवतराए चेव^० ? अप्पवेयणतराए चेव ?

कालोदाई ! तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे बहुतराणं पुढविक्काय समारभति, बहुतराणं आउक्कायं समारभति, अप्पतराणं तेउक्कायं समारभति, बहुतराणं वाउक्कायं समारभति, बहुतराणं वणस्सइक्काय समारभति, बहुतराणं तसक्काय समारभति ।

तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पतराणं पुढविक्काय समारभति, अप्पतराणं आउक्कायं समारभति, बहुतराणं तेउक्काय समारभति, अप्पतराणं वाउक्कायं समारभति, अप्पतराणं वणस्सइक्कायं समारभति, अप्पत-राणं तसक्कायं समारभति । से तेणट्ठेणं कालोदायी !^० •एव वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकाय उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महा-

१. सं० पा०—कम्मा जाव कज्जंति ।

५. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण^० ।

२. सं० पा०—सरिसया जाव सरिसभंड^० ।

६. सं० पा०—पुरिसे जाव अप्पवेयण^० ।

३. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण^० ।

७. सं० पा०—कालोदायी जाव अप्पवेयण^० ।

४. सं० पा०—चेव जाव महावेयण^० ।

किरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव । तत्थ ण जे से पुरिसे अगणिकाय निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव ॥

२२६. अत्थि ण भंते ! अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासति ? उज्जोवेति ? तवेति ? पभासेति ?

हंता अत्थि ॥

२३०. कयरे णं भंते ! ते अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासति¹ ? °उज्जोवेति ? तवेति ? ° पभासेति ?

कालोदाई ! कुद्धस्स¹ अणगारस्स तेय-लेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता दूरं निपतति, देसं गता देसं निपतति, जहि-जहि च ण सा निपतति तहि-तहि च ण ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासति¹, °उज्जोवेति, तवेति°, पभासेति । एतेण कालोदाई ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासति¹, °उज्जोवेति, तवेति°, पभासेति ॥

२३१. तए ण से कालोदाई अणगारे समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठम¹-°दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि° अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२३२. °तए ण से कालोदाई ! अणगारे जाव² चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२३३. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१. सं० पा०—ओभासति जाव पभासेति ।

२. विभक्तिपरिणामात्कुद्धेन (वृ) ।

३. सं० पा०—ओभासति जाव पभासेति ।

४. सं० पा०—ओभासति जाव पभासेति ।

५. सं० पा०—छट्ठम जाव अप्पाणं ।

६. सं० पा०—जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख° ।

७. भ० १।४३३ ।

८. भ० १।५१ ।

अट्ठमं सत्तं

पढमो उद्देशो

संगहणी-गाहा

१. पोगल २ आसीविस ३. खख ४. किरिय ५. आजीव ६, ७. फागुकमदने ।
८ पडिणीय ९. वध १०. आराहणा य दस अट्ठममि सत्ते ॥१॥

पोगलपरिणति-पद

१. रायगिहे जाव' एव वदासी—कतिविहा ण भंते ! पोगला पणत्ता ?
गोयमा ! तिबिहा पोगला पणत्ता, त जहा—पयोगपरिणया, मीसापरिणया,
वीससापरिणया ॥

(१) पयोगपरिणति-पद

२. पयोगपरिणया ण भंते ! पोगला कतिविहा पणत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पणत्ता, त जहा—एगिदियपयोगपरिणया', *वेडदियपयोग-
परिणया, तेडदियपयोगपरिणया, चउरिदियपयोगपरिणया*, पच्चिदियपयोग-
परिणया ॥
३. एगिदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोगला कतिविहा पणत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पणत्ता, त जहा—पुडविकनटयगिदियपयोगपरिणया',
*आडकाडयगिदियपयोगपरिणया, तेडकाडयगिदियपयोगपरिणया, चाड-
काडयगिदियपयोगपरिणया*, वणत्सडयगिदियपयोगपरिणया ॥

१. भ० १।४-१० ।

८ ग० पा०—पुडविकनटयगिदियपयोगपरिणया

२. मोगना० (अ, म); मीम० (क, द, म) ।

जाव वगम्यत्त० ।

३. ग० पा०—एगिदियपयोगपरिणया उ०य
परिणित्ता ।

४. पुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया,
 बादरपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया य । आउकाइयएगिदियपयोगपरिणया
 एव चेव । एवं दुयओ^१ भेदो जाव वणस्सइकाइया य ॥
५. बेइदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
 गोयमा ! अणेगविहा पण्णत्ता । एवं तेइदिय-चउरिदियपयोगपरिणया वि ॥
६. पचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
 गोयमा ! चउज्विहा पण्णत्ता, त जहा—नेरइयपचिदियपयोगपरिणया,
 तिरिक्ख-मणुस्स-देवपचिदियपयोगपरिणया ॥
७. नेरइयपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
 गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा—रयणप्पभपुढविनेरइयपचिदियपयोग-
 परिणया^२ वि जाव^३ अहेसत्तमपुढविनेरइयपचिदियपयोगपरिणया वि ॥
८. तिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
 गोयमा ! ति विहा पण्णत्ता, त जहा—जलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोग-
 परिणया, थलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया, खहचरतिरिक्ख-
 जोणियपचिदियपयोगपरिणया ॥
९. जलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
 गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—समुच्छिमजलचरतिरिक्खजोणियपचिदिय-
 पयोगपरिणया, गब्भवक्कतियजलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया ॥
१०. थलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
 गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपचिदिय-
 पयोगपरिणया, परिसप्पथलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया ॥
११. चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
 गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिमचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणिय-
 पचिदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कतियचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपचिदिय-
 पयोगपरिणया ॥
१२. एव एएण अभिलावेण परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उरपरिसप्पा य
 भुयपरिसप्पा य । उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिमा य गब्भ-
 वक्कतिया य । एव भुयपरिसप्पा वि । एव खहयरा वि ॥
१३. मणुस्सपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।

१. दुपओ (क, ब, स, वृषा) ।

२. रयणप्पभा^० (अ, स) ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—संमुच्छिममणुस्सपच्चिदियपयोगपरिणया,
गळभवक्कतियमणुस्सपच्चिदियपयोगपरिणया ॥

१४. देवपच्चिदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा ।

गोयमा ! चच्चिव्विहा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासिदेवपच्चिदियपयोगपरिणया,
एव जाव^१ वेमाणिया ॥

१५. भवणवासिदेवपच्चिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।

गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारदेवपच्चिदियपयोगपरिणया
जाव^१ थणियकुमारदेवपच्चिदियपयोगपरिणया ॥

१६. एव एएण अभिलवेण अट्ठविहा वाणमतरा—पिसाया जाव^१ गधव्वा । जोति-
सिया पच्चिविहा पण्णत्ता, त जहा—चदविमाणजोतिसिया जाव^१ ताराविमाण-
जोतिसियदेवपच्चिदियपयोगपरिणया । वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—
कप्पोवगवेमाणिया कप्पातीतगवेमाणिया । कप्पोवगवेमाणिया दुवालसविहा
पण्णत्ता, त जहा—सोहम्मकप्पोवगवेमाणिया जाव^१ अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया ।
कप्पातीतगवेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया,
अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणिया । गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया नवविहा
पण्णत्ता, त जहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया जाव^१ उवरिम-
उवरिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया ॥

१७. अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपच्चिदियपयोगपरिणया ण भते ।
पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पच्चिविहा पण्णत्ता, त जहा—विजयअणुत्तरोववातिय^२ कप्पातीतग-
वेमाणियदेवपच्चिदियपयोगपरिणया जाव^१ सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पा-
तीतगवेमाणियदेवपच्चिदियपयोगपरिणया^३ ॥

(२) पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

१८. सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा^४—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय^५ एगिंदियपयोग^६

१. भ० २।११६ ।

२. सू० प० २ ।

३. ठा० ५।११६ ।

४. ठा० ५।५२ ।

५. अ० सू० २८७ ।

६. ठा० ६।३८ ।

७. स० पा०—विजयअणुत्तरोववातिय जाव परिणया

८. भ० ६।१२१ ।

९. जाव परिणया (अ, क, ता, व, स, स) ।

१०. अतोत्रे 'केति अपज्जत्तग पदम भणति पच्छा
पज्जत्तग' इति पाठोऽस्ति । वृत्तो नास्ती
व्याख्यातोऽस्ति । असौ मतभेदसूचकः पाठो
वृत्त्युत्तरकाल मूले प्रक्षिप्तोऽस्ति सभाव्यते ।

११. स० पा०—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव
परिणया; एगपदे सन्धिरत्र, तेन 'पज्जत्तग'
इति परिपदस्य 'पज्जत्ता' इति रूप जातम् ।

परिणया य, अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय^१ एगिदियपयोग^० परिणया य ।

वादरपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया एव चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया ।
एक्केका दुविहा सुहुमा य, वादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा ॥

१९. वेइदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगवेइदियपयोगपरिणया य, अप-
ज्जत्तग जाव परिणया य । एव तेइदिया वि, एव चउरिदिया वि ॥

२०. रयणप्पमपुढविनेरइयपयोगपरिणयाणं पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगरयणप्पम जाव परिणया य,
अपज्जत्तग जाव परिणया य । एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१. संमुच्छिमजलचरतिरिक्ख—पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तग अपज्जत्तग । एव गम्भवक्कं-
तिया वि । समुच्छिमचउप्पयथलचरा एव चेव । एवं गम्भवक्कतिया वि । एव
जाव संमुच्छिमखहयरगम्भवक्कतिया य । एक्केक्के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य
भाणियव्वा ॥

२२. समुच्छिममणुस्सपचिदिय—पुच्छा ।

गोयमा ! एगविहा पण्णत्ता—अपज्जत्तगा चेव ॥

२३. गम्भवक्कतियमणुस्सपचिदिय पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगगम्भवक्कतिया वि, अपज्जत्तग-
गम्भवक्कतिया वि ॥

२४. असुरकुमारभवणवासिदेवाण पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार, अपज्जत्तगअसुर-
कुमार । एवं जाव^२ थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य ॥

२५. एव एतेण अभिलावेण द्रुयएण भेदेण पिसाया जाव^३ गधव्वा । चदा जाव^४
ताराविमाणा । सोहम्मकप्पोवगा जाव^५ च्चुतो । हेट्ठिमहेट्ठिम-गेवेज्जकप्पातीत
जाव^६ उवरिमउवरिमगेवेज्ज । विजयअणुत्तरोववाइय जाव^७ अपराजिय ।

२६. सव्वट्ठसिद्धकप्पातीत—पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय,
अपज्जत्तासव्वट्ठ जाव परिणया वि ॥

१. स० पा०—^०पुढविकाइय जाव परिणया ।

५. अ० सू० २८७ ।

२. पू० प० ३ ।

६. ठा० १।३८ ।

३. ठा० ८।११६ ।

७. अ० ६।१२१ ।

४. ठा० ५।५२ ।

(३) सरीरं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

२७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया^१ । जे पज्जत्तासुहुम जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया । एव जाव चउरिदिया पज्जत्ता, नवर—जे पज्जत्तावादरवाउकाइयएगिदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया^२ । सेस त चेव ॥
२८. जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपचिदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया । एव पज्जत्तगा वि । एव जाव अहेसत्तमा ॥
२९. जे अपज्जत्तासमुच्छिमजलचर जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर जाव परिणया । एव पज्जत्तगा वि । गढभवक्कतियअपज्जत्ता एव चेव । पज्जत्तगा ण एव चेव, नवर—सरीरगाणि चत्तारि जहा वादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाण । एव जहा जलचरेसु चत्तारि आलावग भाणिया एव चउप्पया^३-उरपरिसप्प-भुयपरिसप्प खह्यरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥
३०. जे समुच्छिममणस्सपचिदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर-प्पयोगपरिणया^४ । एव गढभवक्कतिया वि । अपज्जत्तगा वि, पज्जत्तगा वि एव चेव, नवर—सरीरगाणि पच्च भाणियव्वाणि ॥
३१. जे अपज्जत्ताअणुरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव । एव पज्जत्तगा वि । एव दुयएण भेदेण जाव थणियकुमारा । एवं पिसाया जाव गधव्वा । चदा जाव ताराविमाणा । सोहम्मकप्पो जावच्चुओ । हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग जाव उवरिम-उवरिमगेवेज्जग । विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय । एक्केक्के दुयओ भेदो भाणियव्वो जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय-^५कप्पातीतगवेमाणियदेवपचिदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया ॥

(४) इदिय पडुच्च पयोगपरिणति-पद

३२. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया ते फासिदियपयोगपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एव चेव । जे अपज्जत्तावादरपुढविकाइय एवं चेव । एव पज्जत्तगा वि । एव चउक्कएणं भेदेण जाव वणस्सत्तिकाइया ॥

१. कम्म^० (अ, व, म), कम्मग^० (स), अत्रापि स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि ।

२. ^०जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. चतुष्पद (क, व) ।

४. ^०जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स) ।

५. अपज्जत्ता^० (अ, क, ता, व, म, स);

स० पा०—^०वाइय जाव परिणया ।

३३. जे अपज्जत्तावेइदियपयोगपरिणया ते जिन्मिदिय-फासिदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्तावेइदिय एवं चेव । एवं जाव चउरिदिया, नवर—एक्केक्क इदियं वड्ढेयव्व ॥
३४. जे^१ अपज्जत्तरयणप्पभपुढविनेरइयपिचिदियपयोगपरिणया ते सोइदिय-चक्खि-दिय-घाणिदिय-जिन्मिदिय-फासिदियपयोगपरिणया । एव पज्जत्तगा वि । एवं सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठ-सिद्धअणुत्तरोववाइय^२ *कप्पातीतगवेभाणियदेवपिचिदियपयोग^३ परिणया ते सोइदिय-चक्खिदिय *घाणिदिय-जिन्मिदिय-फासिदियपयोग^४ परिणया ॥

(५) सरीरं इदियं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३५. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरि-णया ते फासिदियपयोगपरिणया । जे पज्जत्तासुहुम^५ एवं चेव । बादरअपज्जत्ता एव चेव । एवं पज्जत्तगा वि ।
- एव एतेण अभिलावेणं जस्स जति इदियाणि सरीराणि य तस्स ताणि भाणि-यव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय^६ *कप्पातीतगवेभाणिय^७ देवपिचिदियवेउन्विद्य-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते सोइदिय-चक्खिदिय जाव फासिदियपयोगपरिणया ॥

(६) वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

- ३६ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरि-णया वि, नील-लोहिय^८ ह्यालिद्-सुक्किलवण्णपरिणया वि; गघओ सुभिगघ-परिणया वि, दुब्भिगघपरिणया वि, रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरस-परिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अबिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि; फासओ कक्खडफासपरिणया वि^९, *मउयफासपरिणया वि, गहयफास-परिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि^{१०}, लुक्खफासपरिणया वि; सठाणओ परिमंडलस-ठाणपरिणया वि, वट्ठ-तस-चउरस-आयत-सठाणपरिणया वि ।
- जे पज्जत्तासुहुमपुढवि^{११} एव चेव । एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्व जाव जे पज्जत्ता-सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

१. जाव (क, ता, व) ।

२. स० पा०—वाइय जाव परिणया ।

३. स० पा०—चक्खिदिय जाव परिणया ।

४. अपज्जत्ता० (अ, क, ब, स); स० पा०—

वाइय जाव देव० ।

५. लोहिग (ता, व, म) ।

६. स० पा०—वि जाव लुक्ख० ।

(७) सरीरं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविव्काइयएगिदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविव्काइय एव चेव । एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं, जस्स जइ सरीराणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेव-पच्चिदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया^१ ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ॥

(८) इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३८. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविव्काइयएगिदियफासिदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविव्काइय एव चेव । एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइय^१-
•कप्पातीतगवेमाणिय^० देवपच्चिदियसोत्तिदिय जाव फासिदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ॥

(९) सरीरं इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३९. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविव्काइयएगिदियओरालिय-तेया-कम्मा-फासिदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविव्काइय एव चेव । एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति सरीराणि इंदियाणि य तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपच्चिदियवेउव्विय-तेया-कम्मा-सोइदिय जाव फासिदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि । 'एते नव दडगा' ॥

मीसपरिणति-पदं

४०. मीसापरिणया^१ णं भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिदियमीसापरिणया जाव पच्चिदिय-मीसापरिणया ॥
४१. एगिदियमीसापरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
एवं जहा पयोगपरिणएहि नव दंडगा भणिया, एव मीसापरिणएहि वि नव

१. ^०जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स) । ३ एवं नव दडगा भणिया (अ, स) ।
२. स० पा०—^०वाइय जाव देव^० । ४. मीस^० (अ) ।

दङ्गा भाणियव्वा, तहेव सव्व निरवसेस, नवरं—अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्वं, सेस त चेव जाव' जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयत्तसठाणपरिणया वि ॥

वीससापरिणति-पदं

४२ वीससापरिणया ण भते ! पोगला कतिविहा पणत्ता ?

गोयमा ! पचविहा पणत्ता, त जहा—वण्णपरिणया, गधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, सठाणपरिणया ।

जे वण्णपरिणया ते पचविहा पणत्ता, त जहा—कालवण्णपरिणया जाव' सुक्कलवण्णपरिणया ।

जे गधपरिणया ते दुविहा पणत्ता, त जहा—सुब्भिगधपरिणया', दुब्भिगधपरिणया' ।

जे रसपरिणया ते पचविहा पणत्ता, त जहा—तित्तरसपरिणया जाव' महुररसपरिणया ।

जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पणत्ता, त जहा—कक्खडफासपरिणया जाव' लुक्खफासपरिणया ।

जे सठाणपरिणया ते पचविहा पणत्ता, त जहा—परिमंडलसठाणपरिणया जाव' आयत्तसठाणपरिणया ।

जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गधओ सुब्भिगधपरिणया वि, दुब्भिगधपरिणया वि ।

एव जहा पणवणाए तहेव निरवसेस जाव' जे सठाणओ आयत्तसठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि ॥

एगं दव्वं पडुच्च पोगलपरिणति-पदं

४३. एगे भते । दव्वे कि पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ?

गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ॥

पयोगपरिणति-पद

४४. जइ पयोगपरिणए कि मणपयोगपरिणए' ? वइपयोगपरिणए' ? कायपयोगपरिणए' ?

१. म० ८।३-३६ ।

७. म० ८।३६ ।

२. म० ८।३६ ।

८. प० १ ।

३. सुगधपरिणया वि(अ, स), सुरभि० (ता, व) ।

९. मणप्प० (ता, म) ।

४. दुगधपरिणया वि(अ, स), दुरभि० (ता, व) ।

१०. वयप० (क), वयप्प० (व, म) ।

५. म० ८।३६ ।

११. कायप्प० (अ, क, ता, व, म, स) ।

६. म० ८।३६ ।

गोयमा ! मणपयोगपरिणए वा, वइपयोगपरिणए वा, कायपयोगपरिणए वा ॥

मणपयोगपरिणति-पदं

४५. जइ मणपयोगपरिणए कि सच्चमणपयोगपरिणए ? मोसमणपयोगपरिणए ? सच्चामोसमणपयोगपरिणए ? असच्चामोसमणपयोगपरिणए ?

गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणए वा, मोसमणपयोगपरिणए वा, सच्चामोसमणपयोगपरिणए वा, असच्चामोसमणपयोगपरिणए वा ॥

४६. जइ सच्चमणपयोगपरिणए कि आरभसच्चमणपयोगपरिणए ? अणारभसच्चमणपयोगपरिणए ? सारभसच्चमणपयोगपरिणए ? असारभसच्चमणपयोगपरिणए ? समारभसच्चमणपयोगपरिणए ? असमारभसच्चमणपयोगपरिणए ? गोयमा ! आरभसच्चमणपयोगपरिणए वा जाव असमारभसच्चमणपयोगपरिणए वा ॥

४७. जइ मोसमणपयोगपरिणए कि आरभमोसमणपयोगपरिणए ? एव जहा सच्चेण तहा मोसेण वि । एवं सच्चामोसमणपयोगेण वि । एवं असच्चामोसमणपयोगेण वि ॥

वइपयोगपरिणति-पद

४८. जइ वइपयोगपरिणए कि सच्चवइपयोगपरिणए ? मोसवइपयोगपरिणए ? एव जहा मणपयोगपरिणए तहा वइपयोगपरिणए वि जाव असमारभवइपयोगपरिणए वा ॥

कायपयोगपरिणति-पद

४९. जइ कायपयोगपरिणए कि ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? वेउब्बियसरीरकायपयोगपरिणए ? वेउब्बियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगसरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? कम्मासरीरकायपयोगपरिणए ? गोयमा ! ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव कम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५०. जइ ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए कि एगिदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? जाव^१ पंचिदियओरालिय^२ सरीरकायपयोग^३ परिणए ?

१. एव जाव (अ, स) ।

२. स० पा०—पंचिदियओरालिय जाव परिणए ।

५०. गोयमा ! एगिदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव' पंचिदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा ॥
५१. जइ एगिदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए कि पुढविकाइयएगिदिय'ओरालियसरीरकायपयोग'परिणए ? जाव वणस्सइकाइयएगिदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ?
- गोयमा ! पुढविकाइयएगिदिय'ओरालियसरीरकायपयोग'परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिदिय'ओरालियसरीरकायपयोग'परिणए वा ॥
५२. जइ पुढविकाइयएगिदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए' कि सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए ? बादरपुढविकाइय जाव परिणए ?
- गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविकाइय जाव परिणए वा ॥
५३. जइ सुहुमपुढविकाइय जाव परिणए कि पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणए ? अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणए ?
- गोयमा ! पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणए वा । एव वादरा वि । एव जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो । वेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण दुयओ भेदो—पज्जत्तागा य अपज्जत्तागा य ॥
५४. जइ पंचिदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए कि तिरिक्खजोणियपंचिदिय-ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? मणुस्सपंचिदिय जाव परिणए ?
- गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिदिय जाव परिणए वा ॥
५५. जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए कि जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए ? थलचर-खहचर जाव परिणए ?
- एव चउक्कओ भेदो जाव खहचराण ॥
५६. जइ मणुस्सपंचिदिय जाव परिणए कि समुच्छिममणुस्सपंचिदिय जाव परिणए ? गन्भवक्कतियमणुस्स जाव परिणए ?
- गोयमा ! दोसु वि ॥
५७. जइ गन्भवक्कतियमणुस्स जाव परिणए कि पज्जत्तागन्भवक्कतिय जाव परिणए ? अपज्जत्तागन्भवक्कतिय जाव परिणए ?

१. वेइदिय जाव परिणए वा (अ, क, व, म, ३. स० पा०—°एगिदिय जाव परिणए ।

स); वेइदिय जाव (ता) ।

४. स० पा०—°एगिदिय जाव परिणए ।

२. स० पा०—°एगिदिय जाव परिणए ।

५. °सरीर जाव परिणए (अ, क, ता, व, म, स) ।

गोयमा ! पज्जत्तागम्भवक्कंतिय जाव परिणए वा, अपज्जत्तागम्भवक्कंतिय जाव परिणए वा ॥

५८. जइ ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए कि एगिदियओरालियमीसासरीर-
कायपयोगपरिणए ? वेइदिय जाव परिणए ? जाव पचिदियओरालिय
जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिदियओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए एव जहा ओरालिय-
सरीरकायपयोगपरिणएण आलावगो भणियओ तहा ओरालियमीसासरीरकाय-
पयोगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो, नवर—वादरवाउक्काइय-गम्भव-
क्कतियपचिदियतिरिक्खजोणीय-गम्भवक्कतियमणुस्साण^१—एएसिण पज्जत्ता-
पज्जत्तागण, सेसाण अपज्जत्तागण ॥

५९. जइ वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए कि एगिदियवेउव्वियसरीरकायपयोग-
परिणए ? पचिदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिदिय जाव परिणए वा, पचिदिय जाव परिणए वा ॥

६०. जइ एगिदिय जाव परिणए कि वाउक्काइयएगिदिय जाव परिणए ? अवा-
उक्काइयएगिदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! वाउक्काइयएगिदिय जाव परिणए, नो अवाउक्काइयएगिदिय
जाव परिणए । एव एएण अभिलावेण जहा ओगाहणसठाणे^२ वेउव्वियसरीरं
भाणिय तहा इह वि भाणियव्व जाव पज्जत्तासव्वट्टुसिद्धअणुत्तरोववाइयक्कप्पा-
तीतावेमाणियदेवपचिदियवेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्ता-
सव्वट्टुसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ॥

६१. जइ वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए कि एगिदियमीसासरीरकायपयोग-
परिणए ? जाव पचिदियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ?

एव जहा वेउव्विय तहा वेउव्वियमीसगं पि, नवर—देव-नेरइयाण^३ अपज्जत्ता-
गण, सेसाण पज्जत्तागण^४ जाव नो पज्जत्तासव्वट्टुसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव
परिणए, अपज्जत्तासव्वट्टुसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपचिदियवेउव्वियमीसासरीर-
कायपयोगपरिणए ॥

६२. जइ आहारगसरीरकायपयोगपरिणए कि मणुस्साहारगसरीरकायपयोगपरिणए ?
अमणुस्साहारग जाव परिणए ?

एव जहा ओगाहणसठाणे जाव इडिपत्तपमत्तसजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तागसखेज्ज-
वासाउय जाव परिणए, नो अणिडिपत्तपमत्तसजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तागसखेज्ज-
वासाउय जाव परिणए ॥

१. मणुस्साण य (अ, क, ता, व) ।

२. एतन्नामे प्रज्ञापनाया एकविगित्तमे पदे ।

३. पज्जत्तागण तहेव(अ, स), अत्र द्वयोर्मिषणम्;
तहेव (क, ता, म) ।

६३. जइ आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगमीसासरीरकाय-
पयोगपरिणए ?

एव जहा आहारगं तहेव मीसग पि निरवसेस भाणियव्व ॥

६४. जइ कम्मासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
जाव पंचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?

गोयमा ! एगिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए, एव जहा ओगाहणसठाणे
कम्मगस्स भेदो तहेव इह वि जाव पज्जत्तासव्वट्टुसिद्धअणुत्तरोववाइय^१ कम्पा-
तीतगवेमाणिय^२ देवपचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्टु-
सिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ॥

मीसपरिणति-पद

६५. जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए ? वइमीसापरिणए^३ ? कायमीसा-
परिणए ?

गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वइमीसापरिणए वा, कायमीसापरिणए वा ॥

६६. जइ मणमीसापरिणए किं सच्चमणमीसापरिणए ? मोसमणमीसापरिणए ?
जहा पयोगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्व निरवसेस जाव पज्जत्ता-
सव्वट्टुसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपचिदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा,
अपज्जत्तासव्वट्टुसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा ॥

वीससापरिणति-पदं

६७. जइ वीससापरिणए किं वण्णपरिणए ? गधपरिणए ? रसपरिणए ? फास-
परिणए ? सठाणपरिणए ?

गोयमा ! वण्णपरिणए वा, गधपरिणए वा रसपरिणए वा, फासपरिणए वा,
सठाणपरिणए वा ॥

६८. जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए जाव^४ सुक्किलवण्णपरिणए ?

गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किलवण्णपरिणए वा ॥

६९. जइ गधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए ? दुब्भिगंधपरिणए ?

गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणए वा, दुब्भिगंधपरिणए वा ॥

७०. जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ? पुच्छा ।

गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा ॥

७१. जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?

गोयमा ! कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ॥

१. स० पा०—०वाइय जाव देव० ।

३. नील जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

२. वय० (अ, स); वति० (क) ।

७२ जइ सठाणपरिणए—पुच्छा ।

गोयमा ! परिमडलसठाणपरिणए वा जाव आयतसठाणपरिणए वा ॥

दोणिण दब्बाइं पडुच्च पोगलपरिणति-पद

७३. दो अते दब्बा ! कि पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?

गोयमा ! १ पयोगपरिणया वा २ मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए ५. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे वीससापरिणए ६ अहवेगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

७४. जइ पयोगपरिणया कि मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोगपरिणया ?

गोयमा ! १ मणपयोगपरिणया वा २. वइपयोगपरिणया वा ३ कायपयोगपरिणया वा ४ अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे वइपयोगपरिणए ५. अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ६. अहवेगे वइपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ॥

७५ जइ मणपयोगपरिणया कि सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया ? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?

गोयमा ! १ सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चमोसमणपयोगपरिणया वा ५. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे मोसमणपयोगपरिणए ६. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ७ अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ८ अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ९. अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए १० अहवेगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ॥

७६ जइ सच्चमणपयोगपरिणया कि आरभसच्चमणपयोगपरिणया ? जाव' असमारभसच्चमणपयोगपरिणया ?

गोयमा ! आरभसच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असमारभसच्चमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे आरभसच्चमणपयोगपरिणए, एगे अणारभसच्चमणपयोगपरिणए । एव एएण गमेण दुयासजोएण^१ नेयव्व, सव्वे सजोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धगत्ति ॥

७७. जइ मीसापरिणया कि मणमीसापरिणया ?

एव मीसापरिणया वि ॥

७८. जइ बीससापरिणया कि वण्णपरिणया ? गंधपरिणया ?
एवं बीससापरिणया वि जाव अह्वेगे चउरंसंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाण-
परिणए ॥

तिणिण दव्वाइ पडुच्च पोगलपरिणति-पदं

७९. तिणिण भते ! दव्वा कि पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? बीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. बीससापरिणया वा
४. अह्वेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया ५. अह्वेगे पयोगपरिणए, दो
बीससापरिणया ६. अह्वा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए^१ ७. अह्वा दो
पयोगपरिणया, एगे बीससापरिणए ८. अह्वेगे मीसापरिणए, दो बीससापरि-
णया ९. अह्वा दो मीसापरिणया, एगे बीससापरिणए १०. अह्वेगे पयोगपरि-
णए, एगे मीसापरिणए, एगे बीससापरिणए ॥
८०. जइ पयोगपरिणया कि मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-
परिणया ?
गोयमा ! मणपयोगपरिणया वा, एव एक्कासयोगो^२, दुयासयोगो^३, तियासयोगो^४
य भाणियव्वो ॥
८१. जइ मणपयोगपरिणया कि सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया ?
सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चासमणपयोगपरिणया वा,
अह्वेगे सच्चमणपयोगपरिणए, दो मोसमणपयोगपरिणया । एव दुयासयोगो,
तियासयोगो भाणियव्वो एत्थ वि तहेव जाव अह्वेगे तंसंठाणपरिणए, एगे
चउरंसंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाणपरिणए ॥

चत्तारि दव्वाइ पडुच्च पोगलपरिणति-पदं

८२. चत्तारि भंते ! दव्वा कि पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? बीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. बीससापरिणया वा
४. अह्वेगे पयोगपरिणए, तिणिण^५ मीसापरिणया ५. अह्वेगे पयोगपरिणए,
तिणिण बीससापरिणया ६. अह्वा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ७. अह्वा
दो पयोगपरिणया, दो बीससापरिणया ८. अह्वा तिणिण पयोगपरिणया, एगे
मीसापरिणए ९. अह्वा तिणिण पयोगपरिणया, एगे बीससापरिणए १०. अह्वेगे
मीसापरिणए, तिणिण बीससापरिणया ११. अह्वा दो मीसापरिणया, दो

१. मीससा^० (स) ।

४. तिय^० (व) ।

२. एक्क^० (व) ।

५. तिणिणव्वो (ता) ।

३. दुय^० (व) ।

वीससापरिणया १२. अहवा तिणिण मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १३. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया १४. अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १५. अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८३. जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोगपरिणया ?

एव एएणं कमेणं पच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणता य दव्वा भाणियव्वा—दुयासजोएणं तियासजोएण जाव दससजोएणं बारससंजोएण उवजुज्जिऊणं जत्थ जत्तिया संजोगा उद्देति ते सव्वे भाणियव्वा; एए पुण जहा नवमसए^१ पवेसणए भणिहामो तहा उवजुज्जिऊण भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अणता एव चेव, नवर—एवकं पदं अब्भहियं जाव अहवा अणता परिमडलसठाणपरिणया जाव अणता आयत्तसठाणपरिणया ॥

८४. एएसि ण भते ! पोग्गलाण पयोगपरिणयाण, मीसापरिणयाणं, वीससापरिणयाणं य कयरे कयरेहितो^२ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणतगुणा, वीससापरिणया अणतगुणा ॥

८५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^३ ॥

बीओ उद्देसो

आसीविस-पद

८६. कतिविहा णं भते ! आसीविसा पण्णत्ता ?

गोयमा ! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता, त जहा—जातिआसीविसा य, कम्म-आसीविसा य ॥

८७. जातिआसीविसा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

१. उवजुज्जित्तण (क); उववज्जिऊण (ता); ३. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
उवजुत्तिऊण (व), उवजुज्जिऊण (स) । ४. भ० १।५१ ।

२. भ० १।८६-१३२ ।

गोयमा ! चउव्विहा पणत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे, मडुक्कजाति-
आसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे' ॥

८८. विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भते ! केवतिए विसए पणत्ते ?

गोयमा ! पभू ण विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोदि विसेण
विसपरिगयं^६ विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव णं सपत्तीए
करेसु^७ वा, करेति वा, करिस्सति वा ॥

८९. मडुक्कजातिआसीविसस्स *०णं भते ! केवतिए विसए पणत्ते ? *

गोयमा ! पभू णं मडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोदि विसेण विसप-
रिगयं *०विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव ण सपत्तीए करेसु
वा, करेति वा^०, करिस्सति वा ॥

९०. *०उरगजातिआसीविसस्स ण भते ! केवतिए विसए पणत्ते ?

गोयमा ! पभू ण उरगजातिआसीविसे जडुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोदि विसेण विस-
परिगय विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव ण सपत्तीए करेसु
वा, करेति वा^०, करिस्सति वा ॥

९१. मणुस्सजातिआसीविसस्स *०ण भते ! केवतिए विसए पणत्ते ?

गोयमा ! पभू ण मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोदि विसेणं
विसपरिगय विसट्टमाण पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव णं सपत्तीए
करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा ॥

९२. जइ कम्मआसीविसे कि नेरइयकम्मआसीविसे ? तिरिक्खजोणियकम्मआसी-
विसे ? मणुस्सकम्मआसीविसे ? देवकम्मआसीविसे ?

गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्स-
कम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि ॥

९३. जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे कि एगिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव
पच्चिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो एगिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चउरिदियतिरि-
क्खजोणियकम्मासीविसे, पच्चिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ।

जइ पच्चिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे कि समुच्छिमपच्चिदियतिरिक्खजो-

१. मणुय० (ता) ।

२. विसपरिगय (ठा० ४।५।१४) ।

३. इह चैकवचनप्रक्रमेणि बहुवचननिर्देशो वृद्धि-
काशीविषाणां बहुत्वज्ञापनार्थम् (वृ) ।

४. स० पा० पुच्छ ।

५. स० पा०—सेस त चेव जाव करिस्सति ।

६. स० पा०—एव उरगजातिआसीविसस्स वि,
नवर—जडुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोदि विसेण
विसपरिगय, सेस त चेव जाव करिस्सति ।

७. स० पा०—वि एव चेव, नवर—समयखे-
त्तप्पमाणमेत्तं बोदि विसेण विसपरिगय, सेस
त चेव जाव करिस्सति ।

णियकम्मासीविसे ? गवभवकतियपचिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?

एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो जाव' पज्जत्तासखेज्जवासाउयगवभवकतिय-
पचिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासखेज्जवासाउय जाव
कम्मासीविसे ॥

६४. जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं समुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे ? गवभवकतिय-
मणुस्सकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो समुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे, गवभवकतियमणुस्सकम्मासीविसे,
एव जहा वेउव्वियसरीर जाव पज्जत्तासखेज्जवासाउयकम्मभूमागवभवकतिय-
मणुस्सकम्मासीविसे', नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे ॥

६५. जइ देवकम्मासीविसे किं भवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मा-
सीविसे ?

गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मासीविसे, वाणमत्तर-जोतिसिय-वेमाणियदेवकम्मा-
सीविसे वि ।

जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे
जाव थणियकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे वि जाव थणियकुमारभवण-
वासिदेवकम्मासीविसे वि ।

जइ असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे' किं पज्जत्ताअसुरकुमारभवण-
वासिदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ता-
असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे । एव जाव थणियकुमाराण ।

जइ वाणमत्तरदेवकम्मासीविसे किं पिसायवाणमत्तरदेवकम्मासीविसे ? एव
सव्वेसि अपज्जत्तगाण । जोइसियाणं सव्वेसि अपज्जत्तगाणं ।

जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे' ? कप्पा-
तीयावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयावेमाणियदेवकम्मा-
सीविसे ।

जइ कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-
सीविसे जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

१. प० २१ ।

२. °कम्मभूमग° (स) ।

३. अमुरकुमार जाव कम्म° (अ, क, ता, द,
म, न) ।

४. कप्पोवग° (अ, क, ता, म, न) ।

गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि जाव सहस्सारकप्पो-
वावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे
जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

जइ सोहम्मकप्पोवा^१ •वेमाणियदेव^० कम्मासीविसे^१ कि पज्जत्तासोहम्मकप्पो-
वावेमाणियदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-
सीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ता-
सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, एव जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पो-
वावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-
सीविसे ॥

छउमत्थ-केवल-पद

१६. दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, त जहा—१ धम्मत्थि-
काय २. अधम्मत्थिकाय ३. आगासत्थिकायं ४. जीव असरीरपडिबद्ध ५.
परमाणुपोग्गल ६. सहं ७. गघ ८. वात ९. अय जिणे भविस्सइ वा न वा
भविस्सइ १०. अय सव्वदुक्खाणं अत करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।

एयाणि चेव उप्पण्णनाणदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ-
पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकाय^१, •अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, जीव
असरीरपडिबद्ध, परमाणुपोग्गलं, सह, गघ, वात, अय जिणे भविस्सइ वा न
वा भविस्सइ, अय सव्वदुक्खाण अत^० करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ॥

नाण-पवं

✓ १७. कतिविहे णं भते । नाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पचविहे नाणे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे,
ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ॥

✓ १८. से कि त आभिणिबोहियनाणे ?

आभिणिबोहियनाणे चउविहे पण्णत्ते, त जहा—ओग्गहो, ईहा, अवाओ,
धारणा^१ एव जहा 'रायप्पसेणइज्जे' नाणाणं भेदो तहेव इह भाणियव्वो जाव^१
सेत्तं केवलनाणे^१ ॥

१. स० पा०—सोहम्मकप्पोवा जाव कम्मा-
सीविसे ।

२. स० पा०—धम्मत्थिकाय जाव करेस्सइ ।

३. राय० सू० ७४१-७४५ ।

४. यच्च वाचनान्तरे श्रुतज्ञानाधिकारे यथा

नन्द्यामङ्गुरूपरोत्यभिधाय 'जाव भवियअभ-
विया तत्तो सिद्धा असिद्धा य' इत्युक्त तस्या-
यमर्थं—श्रुतज्ञानसूत्रावसाने किल नन्द्या
श्रुतविषय दर्शयते दमभिहितम्—'इच्छेयमि
दुवालसणे गणिपिडए अणता भावा अणता

- ✓ ६६. अण्णाणे णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! ति विहे पणत्ते, तं जहा—मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, विभंगनाणे ॥
- ✓ १००. से किं तं मइअण्णाणे ?
 मइअण्णाणे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा—ओग्गहो^१, ईहा, अवाओ^२, धारणा ॥
- ✓ १०१. से किं तं ओग्गहो ?
 ओग्गहो दुविहे पणत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहो यं वंजणोग्गहो यं^३ एवं जहेव आभि-
 णिवोहियनाणं तहेव, नवर—एगट्ठियवज्जं^४ जाव^५ नोईदियधारणा । सेत्तं
 धारणा, सेत्तं मइअण्णाणे ॥
- ✓ १०२. से किं तं सुयअण्णाणे ?
 सुयअण्णाणे—ज इमं अण्णाणि एहि मिच्छादिट्ठिएहि सच्छदबुद्धि-मइ-विग्गपियं,
 तं जहा—भारहं, रामायणं जहा नंदीए जाव^६ चत्तारि वेदा सगोवगा । सेत्तं
 सुयअण्णाणे ॥
- ✓ १०३. से किं तं विभंगनाणे ?
 विभंगनाणे अणेगविहे पणत्ते, तं जहा—गामसंठिए, नगरसंठिए, जाव^७ सण्णि-
 वेससंठिए, दीवसंठिए, समुद्दसंठिए, वाससंठिए, वासहरसंठिए, पव्वयसंठिए,
 रुक्खसंठिए, थूभसंठिए, ह्यसंठिए, गयसंठिए, नरसंठिए, किन्नरसंठिए, किपु-
 रिससंठिए, महोरगसंठिए, गघव्वसंठिए, उसभसंठिए, पसुसंठिए, पसयसंठिए,
 विहगसंठिए, वानरसंठिए—नाणासठाणसंठिए^८ पणत्ते ॥

जीवाण नाणि-अण्णाणित्त-पदं

- ✓ १०४. जीवा ण भंते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?
 गोयमा ! जीवा नाणी वि, अण्णाणी वि ।
 जे नाणी ते अत्थेगत्तिया दुण्णाणी, अत्थेगत्तिया तिण्णाणी, अत्थेगत्तिया चउ-
 नाणी, अत्थेगत्तिया एगनाणी । जे दुण्णाणी^९ ते आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी

अभावा जाव अणुता भवसिद्धिया अणता २. १ ओगेण्हणया २ उवधारणया ३. सबणया
 अभवसिद्धिया अणुता सिद्धा अणता असिद्धा ४ अवलवणया ५. मेहा (नदी सू० ४३);
 पणत्ते^{१०} ति, अस्य च सूत्रस्य या सग्रहाया— इत्यादीनि पच-पचैकार्थिकान्यवग्रहादीनामधी-
 भावमभावा हेऊमहेउ कारणमकारणा जीवा । तानि, मत्तज्ञाने तु न तान्यध्येयानीति भाव.
 अजीव भविताऽभविता, ततो सिद्धा (वृ) ।

असिद्धा य ॥

इत्येवरूपा, तस्या. खण्डमिदमेतदन्त

श्रुतज्ञानसूत्रमिहाध्येयमिति (वृ) ।

१ स० पा०—ओग्गहो जाव धारणा ।

३. नदी सू० ४०-४८ ।

४. नंदी सू० ६७ ।

५. भ० १।४६ ।

६. नाणासंठिए (ता, व) ।

७. दुयाणाणी (क, ता, व, म, स) ।

य । जे तिष्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, अहवा अभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी । जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी ।

✓ जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी । जे दुअण्णाणी ते मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य । जे तिअण्णाणी ते मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी ॥

✓ १०५. नेरइया णं भंते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि ।

जे नाणी ते नियमा तिष्णाणी, तं तहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी । एवं तिष्णि अण्णाणाणि भयणाए ॥

१०६ असुरकुमारा ण भंते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?

जहेव नेरइया तहेव, तिष्णि नाणाणि नियमा, तिष्णि अण्णाणाणि भयणाए । एवं जाव^१ थणियकुमारा ॥

✓ १०७ पुढविककाइया ण भंते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी-मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य । एवं जाव वणस्सडकाइया ॥

१०८. बेइदियाणं पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि अण्णाणी वि ।

जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, त जहा—आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य । एवं तेइदिय-चउरदिया वि ॥

✓ १०९. पचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि ।

जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिष्णाणी ।

✓ जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी ॥ एवं तिष्णि नाणाणि, तिष्णि अण्णाणाणि भयणाए । मणुस्सा जहा जोवा, तहेव पच नाणाणि, तिष्णि अण्णाणाणि भयणाए । वाणमंतरा जहा नेरइया । (जोइसिय-वेमणियाणं तिष्णि नाणाणि, तिष्णि अण्णाणाणि नियमा ॥)

✓ ११०. सिद्धाणं भंते ! पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी; नियमा एगनाणी—केवलनाणी ॥

अतरालगति पडुच्च—

- ✓१११. 'निरयगतिया'ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिण्णि नाणाइं नियमा, तिण्णि अण्णाणाइं
भयणाए ॥
- ✓११२. तिरियगतिया'ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा ॥
- ✓११३. मणुस्सगतिया'ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तिण्णि नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा । देवगतिया जहा
निरयगतिया ॥
११४. सिद्धगतिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

इदिय पडुच्च—

११५. सइदिया ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥
११६. एगिदिया ण भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा पुढविकाइया । बेइंदिय-तेइदिय-चउरिदिया णं दो नाणा, दो अण्णाणा
नियमा । पंचिदिया जहा सइदिया ॥
११७. अणिदिया णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

काय पडुच्च—

११८. सकाइया ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए । पुढविकाइया जाव
वणस्सइकाइया नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइ-
अण्णाणी य सुयअण्णाणी य । तसकाइया जहा सकाइया ॥
११९. अकाइया ण भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

सुहुम-बादर पडुच्च—

१२०. सुहुमा णं भंते ! जीवा कि नाणी ?
जहा पुढविकाइया ॥

१. निरयगतियाण (वृ) ।

२. नियम (ता) ।

१२१. बादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ॥
१२२. नोसुहुमा-नोबादरा ण भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च—

१२३. पज्जत्ता ण भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ॥
१२४. पज्जत्ता ण भते ! नेरइया किं नाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमा । जहा नेरइया एवं थणियकुमारा ।
पुढविकाइया जहा एगिदिया । एव जाव चउरिदिया ॥
१२५. पज्जत्ता णं भते ! पच्चिदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया । वाणमंतर-
जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥
१२६. अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ।
१२७. अपज्जत्ता ण भंते ! नेरइया किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा नियमा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए । एवं जाव थणियकुमारा ।
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिदिया ॥
१२८. वेइंदियाणं पुच्छा ।
दो नाणा, दो अण्णाणा—नियमा । एव जाव पच्चिदियतिरिक्खजोणियाण ॥
१२९. अपज्जत्तगा णं भते ! मणुस्सा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणां भयणाए, दो अण्णाणां नियमा । वाणमतरा जहा नेरइया ।
अपज्जत्तगाण जोइसिय-वेमाणियाणं तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—नियमा ॥
१३०. नोपज्जत्तगा-नोअपज्जत्तगा ण भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

भवत्थं पडुच्च—

१३१. निरयभवत्था ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा निरयगतिया ॥
१३२. तिरियभवत्था णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ॥
१३३. मणुस्सभवत्था ?
जहा सकाइया ॥

१३४. देवभवत्था णं भते ! -

जहा निरयभवत्था । अभवत्था जहा सिद्धा ॥

भवसिद्धियाभवसिद्धियं पडुच्च—

१३५. भवसिद्धिया णं भते ! जीवा कि नाणी ?

जहा सकाइया ॥

१३६. अभवसिद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी; तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ॥

१३७. नोभवसिद्धिया-नोअभवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ?

जहा सिद्धा ॥

सण्णि-प्रसण्णि पडुच्च—

१३८. सण्णीण पुच्छा ।

जहा सइदिया । असण्णी जहा वेइदिया । नोसण्णी-नोअसण्णी जहा सिद्धा ॥

लद्धि-पदं

✓ १३९. कतिविहा णं भते लद्धी पण्णत्ता ?

गोयमा ! (दसविहा लद्धी पण्णत्ता, त जहा—१. नाणलद्धी २ दसणलद्धी ३. चरित्तलद्धी ४ चरित्ताचरित्तलद्धी ५ दाणलद्धी ६ लाभलद्धी ७. भोग-लद्धी ८ उवभोगलद्धी ९. वीरियलद्धी १०. इदियलद्धी ॥

✓ १४०. (जाणलद्धी) ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियनाणलद्धी जाव' केवल-नाणलद्धी ॥

१४१. अण्णाणलद्धी णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणलद्धी, सुयअण्णाणलद्धी, विभगनाणलद्धी ॥

१४२. दसणलद्धी णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी, सम्मामिच्छादंसणलद्धी ॥

१४३. चरित्तलद्धी णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयचरित्तलद्धी, छेदेवट्ठावणिय-चरित्तलद्धी, परिहारविसुद्धिचरित्तलद्धी, सुहुमसपरायचरित्तलद्धी, अहक्खाय-चरित्तलद्धी ॥

१४४. चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता । एव जाव उवभोगलद्धी एगागारा पण्णत्ता ॥

१४५. वीरियलद्धी ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—बालवीरियलद्धी, पडियवीरियलद्धी, बालपडियवीरियलद्धी ॥

१४६. इदियलद्धी ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—सोइदियलद्धी जाव^१ फासिदियलद्धी ॥

नाणलद्धि पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद

१४७. नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्येगतिया दुण्णाणी, एव पच नाणाइ भयणाए ॥

१४८. तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । अत्येगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणा भयणाए ॥

१४९. आभिणिबोहियनाणलद्धिया ण भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्येगतिया दुण्णाणी, चत्तारि नाणाइ भयणाए ॥

१५०. तस्स अलद्धिया ण भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी जे अण्णाणी ते अत्येगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए । एवं सुयनाणलद्धिया वि । तस्स अलद्धिया वि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धीया^२ ॥

१५१. ओहिनाणलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्येगतिया तिण्णाणी, अत्येगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी ॥

१५२. तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । एव ओहिनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१५३. मणपज्जवनाणलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउ-
नाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी ।
जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी मणपज्जवनाणी ।

१५४. तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं,
तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ।

१५५. केवलनाणलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एसनाणी—केवलनाणी ॥

१५६. तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । केवलनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि
अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१५७. अण्णाणलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥

१५८. तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । पंच नाणाइ भयणाए । जहा अण्णाणस्स य
लद्धिया अलद्धिया य भणिया, एवं मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स य लद्धिया
अलद्धिया य भाणियव्वा । विमगनाणलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा ।
तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा ।

दंसणं पडुच्च—

१५९. दसणलद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । पच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१६०. तस्स अलद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि ।

सम्मदसणलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धियाण तिण्णि अण्णा-
णाइं भयणाए ॥

मिच्छादंसणलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धियाण पंच
नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए ।

सम्मामिच्छादसणलद्धिया, अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया
तहेव भाणियव्वा ॥

चरित्तं-पडुच्च—

१६१. चरित्तलद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! पच नाणाइं भयणाए ॥

तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ-भयणाए ।

१६२. सामाइयचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी—केवलवज्जाइ चत्तारि नाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए । एव जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धीया य भणिया, एव जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियव्वा, नवर—अहक्खायचरित्तलद्धीयाणं पच नाणाइ भयणाए ॥

चरित्ताचरित्तं पडुच्च—

१६३. चरित्ताचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी । जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी ॥

दाणाइ पडुच्च—

१६४. तस्स अलद्धियाणं पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ।

दाणलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१६५. तस्स अलद्धीयाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी । एव जाव वीरियस्स 'लद्धीया अलद्धीया' य भाणियव्वा ।

बालाइवीरिय पडुच्च—

बालवीरियलद्धियाणं तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए । तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए ।

पडियवीरियलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धीयाण मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइ, अण्णाणाणि य भयणाए ।

बालपडियवीरियलद्धियाण तिण्णि नाणाइ भयणाए । तस्स अलद्धीयाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

इदिय पडुच्च—

१६६. इदियलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

गोयमा ! चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१६७. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी ॥

१६८. सोइंदियलद्धिया णं जहा इंदियलद्धिया ॥

१६९ तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्येगतिया दुण्णाणी, अत्येग-
तिया एगनाणी । जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी । जे एगनाणी
ते केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुय-
अण्णाणी य । चविलदिय-घाणिदियाण लद्धीया अलद्धीया य जहेव सोइंदि यस्स ॥

१७० जिदिभदियलद्धियाण चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१७१ तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी ।
जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य ।
फासिदियलद्धीया अलद्धीया य जहा इदियलद्धिया अलद्धिया य ॥

उवउत्ताण नाणि-अण्णाणित्त-पद

१७२. सागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१७३. आभिणिबोहियनाणसागारोवउत्ता ण भते ?

चत्तारि नाणाइ भयणाए । एव सुयनाणसागारोवउत्ता वि । ओहिनाणसागारो-
वउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जव-
नाणलद्धीया । केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया ।
मइअण्णाणसागारोवउत्ताण तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए । एव सुयअण्णाणसागा-
रोवउत्ता वि । विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइ नियमा ॥

१७४. अणागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए । एव चक्खुदसण-अचक्खुदंसणअणा-
गारोवउत्ता वि, नवर—चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

१७५. ओहिदसणअणागारोवउत्ताण पुच्छा ।

गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्येगतिया तिण्णाणी, अत्ये-
गतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी ।
जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी । जे अण्णाणी ते
नियमा तिअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभगनाणी । केवल-
दसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया ॥

जोगं पटुच्च—

१७६ सजोगी ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?

जहा' सकाइया । एव मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी वि । अजोगी जहा सिद्धा ॥

लेस्सं पडुच्च—

१७७. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

जहा सकाइया ॥

१७८. कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

जहा^१ सइदिया । एवं जाव पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ॥

कसायं पडुच्च—

१७९. सकसाई णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

जहा सइदिया । एवं जाव लोभकसाई ॥

१८०. अकसाई णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

पच नाणाईं भयणाए ॥

वेदं पडुच्च—

१८१. सवेदगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

जहा सइदिया । एव इत्थिवेदगा वि, एवं पुरिसवेदगा वि, एवं नपुसग वेदगा वि । अवेदगा जहा अकसाई ॥

आहारगं पडुच्च—

१८२. आहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

जहा सकसाई, नवर—केवलनाण पि ॥

१८३. अणाहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?

मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाईं, अण्णाणाईं तिण्णि—भयणाए ॥

नाणाण विसय-पदं

✓ १८४. आभिणिबोहियनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।

खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ-पासइ ।

कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ-पासइ ।

भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ-पासइ^{१०} ॥

१. भ० ८।११५ ।

२. स० पा०—एवं कालओ वि, एवं भावओ वि ।

३. नन्दीसूत्रे अस्मिन् विषये विवक्षामेदोस्ति—
दव्वओ ए आभिणिबोहियनाणी आएसेण

सव्वदव्वाइं जाणइ, न पासइ ।

खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेण

सव्वं खेत्तं जाणइ, न पासइ ।

१८५ / सुयनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ,
भावओ ।

दव्वओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।

१•खेत्तओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वखेत्त जाणइ-पासइ ।

कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वकालं जाणइ-पासइ । ०

भावओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ-पासइ ॥)

१८६ / ओहिनाणस्स ण भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ,
भावओ ।

दव्वओ ण ओहिनाणी १ •जहण्णेण अणताइ रुविदव्वाइं जाणइ-पासइ । उक्को-
सेण सव्वाइ रुविदव्वाइ जाणइ-पासइ ।

खेत्तओ ण ओहिनाणी जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं जाणइ-पासइ ।

उक्कोसेण असखेज्जाइं अलोगे लोयमेत्ताइ खंडाइ जाणइ-पासइ ।

कालओ ण ओहिनाणी जहण्णेण आवलियाए असखेज्जइभाग जाणइ-पासइ ।

उक्कोसेण असखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उत्सप्पिणीओ अईयमणागय च काल
जाणइ-पासइ ।

भावओ ण ओहिनाणी जहण्णेण अणंते भावे जाणइ-पासइ । उक्कोसेण वि
अणते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणमणत्तभागं जाणइ-पासइ ० ॥)

१८७ / मणपज्जवनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ,
भावओ ।

दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणत्तपदेसिए १ •खवे जाणइ-पासइ । ते
चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विमुद्धतराए वितिमिरतराए
जाणइ-पासइ ।

खेत्तओ ण उज्जुमई अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्टिल्ले
खुड्डागपयरे, उडढ जाव जोइसस्स उवरिमत्तले, तिरिय जाव अंतोमणुस्सखेत्ते
अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु

कालओ ए आभिरिबोहियनाणी आएसेण
सव्व कालं जाणइ, न पासइ ।

भावओ ण आभिरिबोहियनाणी आएसेण
सव्वे भावे जाणइ, न पासइ (सु० ५४) ।

१. स० पा०—एव खेत्तओ वि, कालओ वि ।

२. स० पा०—ओहिनाणी रुविदव्वाइ जाणइ-
पासइ जहा नदीए जाव भावओ ।

३. स० पा०—जहा नदीए जाव भावओ ।

छप्पण्णए अतरदीवगेसु सण्णीण पच्चिदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ-
पासइ ।

त चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमंगुलेहि अम्भहियतर विउलतर विसुद्धतरं
वित्तिमिरतर खेत्त जाणइ-पासइ ।

कालओ ण उज्जुमई जहण्णेण पलिओवमस्स, असखिज्जयभागं, उवकोसेण वि
पलिओवमस्स असखिज्जयभाग अतीयमणागय वा काल जाणइ-पासइ ।

त चेव विउलमई अम्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतरागं वित्तिमिरतरागं
जाणइ पासइ ।

भावओ णं उज्जुमई अणते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाण अणंतभागं जाणइ-
पासइ ।

त चेव विउलमई अम्भहियतराग विउलतराग विसुद्धतरागं वित्तिमिरतरागं
जाणइ-पासइ ० ॥)

१८८. केवलनाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ,
भावओ ।

दव्वओ ण केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।

•खेत्तओ ण केवलनाणी सव्व खेत्त जाणइ-पासइ ।

कालओ ण केवलनाणी सव्व काल जाणइ-पासइ ।

भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ-पासइ ० ॥)

१८९. मइअण्णाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ,
भावओ ।

दव्वओ ण मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ ।

•खेत्तओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगय खेत्तं जाणइ-पासइ ।

कालओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं काल जाणइ-पासइ । ०

भावओ ण मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ॥

१९०. सुयअण्णाणस्स णं भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?

गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ,
भावओ ।

दव्वओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं आचवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ ।

१. स० पा०—एव जाव भावओ ।

२. स० पा०—पासइ जाव भावओ ।

३. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकमबलोक्यते 'दसेति
निदसेति उवदसेति' (वृ) ।

‘खेत्तओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयं खेत्त आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ ।
कालओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगय काल आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ° ।
भावओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगए भावे आघवेइ’, °पण्णवेइ,
परूवेइ° ॥

१६१. विभंगनाणस्स णं भते । केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ,
भावओ ।

दव्वओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ ।

‘खेत्तओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगय खेत्त जाणइ-पासइ ।

कालओ ण विभंगनाणी विभंगनाणपरिगय काल जाणइ-पासइ ।°

भावओ ण विभंगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ॥

नाणीणं सठिइ-पद

१६२. नाणी ण भंते ! नाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! नाणी दुविहे पण्णत्ते, त जहा—१ सादीए वा अपज्जवसिए २
सादीए वा सपज्जवसिए । तत्थ ण जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण
अतोमुहुत्त, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइ ॥

✓ १६३. आभिणिबोहियनाणी ण भते ! आभिणिबोहिय° नाणी ति कालओ केवच्चिरं
होइ ?

गोयमा ! एव चेव° ॥

१६४. एव° सुयनाणी वि ॥

१६५. ओहिनाणी वि एव° चेव, नवर—जहण्णेणं एक्कं समय ॥

✓ १६६. मणपज्जवनाणी ण भते ! मणपज्जवनाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं देसूण पुव्वकोडि ॥

१६७. केवलनाणी ण भते ! केवलनाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

१६८. अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी णं भते ! पुच्छा ।

१. स० पा०—एव खेत्तओ कालओ ।

[अट्ठह वि (अ)] सचिट्ठया जहा काय-

२. स० पा०—त चेव ।

ठितीए अतर सन्व जहा जीवाभिगमे अप्पा-

३. स० पा०—एव जाव भावओ ।

बहुगाणि तिणि जहा बहुवत्तन्वयाए ।

४. स० पा०—एव नाणी आभिणिबोहियनाणी

५. भ० ना१६२ ।

जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुय-

६. भ० ना१६२ ।

अण्णाणी विभंगनाणी एएसि दसण्ह वि

७. भ० ना१६२ ।

गोयमा ! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी य तिविहे पणत्ते, तं जहा—१.
अणादीए वा अपज्जवसिए २. अणादीए वा सपज्जवसिए ३. सादीए वा
सपज्जवसिए । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्त,
उक्कोसेण अणंतं काल—अणंता ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ
अवड्हं पोगलपरियट्ठं देसूणं ॥

१६६. विभंगनाणी णं भते ! पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए
पुव्वकोडीए अवभहियाइं ॥

नाणीणं अंतर-पदं

२००. आभिणिवोहियनाणिस्स णं भते ! अंतर कालओ केवच्चिर होइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव' अवड्हं पोगल-
परियट्ठं देसूणं ॥

२०१. सुयनाणि-ओहिनाणि-मणपज्जवनाणीणं एवं चेव ॥

२०२. केवलनाणिस्स पुच्छा ।

गोयमा ! नत्थि अतर ॥

२०३. मइअण्णाणिस्स सुयअण्णाणिस्स य पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइ साइरेगाइं ॥

२०४. विभंगनाणिस्स पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

नाणीणं अप्पाबहुयत्त-पदं

✓ २०५. एतेसि णं भते ! जीवाणं आभिणिवोहियनाणीणं, सुयनाणीणं, ओहिनाणीणं
मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीणं य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ?
तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा,
आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया, केवलनाणी अणत-
गुणा ॥

२०६. एतेसि णं भते ! जीवाणं मइअण्णाणीणं, सुयअण्णाणीणं, विभगनाणीणं य कयरे
कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभगनाणी, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी दो वि
तुल्ला अणंतगुणा ॥

२०७. एतेसि ण भते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीणं ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीणं मतिअण्णाणीणं सुयअण्णाणीण विभंगनाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य दो वि तुल्ला विसेसाहिया, विभंगनाणी अस-
 खेज्जगुणा, केवलनाणी अणतगुणा, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य दो वि तुल्ला
 अणतगुणा° ॥

नाणपज्जव-पद

- ✓ २०८. केवतिया णं भते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवा पणत्ता ?
 गोयमा ! अणत्ता आभिणिबोहियनाणपज्जवा पणत्ता ॥
- ✓ २०९. केवतिया णं भते ! सुयनाणपज्जवा पणत्ता ?
 एवं चेव ॥
- ✓ २१०. एव जाव केवलनाणस्स । एव मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स ॥
२११. केवतिया ण भते ! विभंगनाणपज्जवा पणत्ता ?
 गोयमा ! अणत्ता विभंगनाणपज्जवा पणत्ता ॥

नाणपज्जवाणं अप्पावहुयत्त-पदं

- ✓ २१२. एतेसि ण भते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाण-
 पज्जवाण, मणपज्जवनाणपज्जवाणं, केवलनाणपज्जवाणं य कयरे कयरेहितो^१
 °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा,
 सुयनाणपज्जवा अणतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाण-
 पज्जवा अणतगुणा ॥
२१३. एसि णं भते ! मइअण्णाणपज्जवाणं, सुयअण्णाणपज्जवाणं, विभंगनाण-
 पज्जवाणं य कयरे कयरेहितो^२ °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसे-
 साहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा,
 मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा ॥
२१४. एसि ण भते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं जाव केवलनाणपज्जवाणं, मइ-
 अण्णाणपज्जवाणं, सुयअण्णाणपज्जवाणं, विभंगनाणपज्जवाणं य कयरे कयरे-
 हितो^३ °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, विभगनाणपज्जवा अणंतगुणा,
ओहिनाणपज्जवा अणतगुणा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा
विसेसाहिया, मइअण्णाणपज्जवा अणतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसे-
साहिया, केवलनाणपज्जवा अणतगुणा ॥

२१५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

तइओ उदेसो

वणस्सइ-पवं

२१६ कतिविहा ण भते ! रुक्खा पणत्ता ?

गोयमा ! तिविहा रुक्खा पणत्ता, तं जहा—सखेज्जजीविया, असखेज्जजीविया,
अणतजीविया ॥

२१७. से कि त सखेज्जजीविया ?

सखेज्जजीविया अणेगविहा पणत्ता, त जहा—

ताले^१ तमाले तक्कलि, तेयलि^२ •साले य सालकल्लाणे ।

सरले जावति केयइ, कदलि तह चम्मरुक्खे य ॥१॥

भुयुरुक्ख हिगुरुक्खे, लवगरुक्खे य होति बोधव्वे ।

पूयफली खज्जूरी, बोधव्वा नालिएरी य^३ ॥२॥

जे यावण्णे तहप्पगारा । सेत्त सखेज्जजीविया ॥

२१८. से कि त असखेज्जजीविया ?

असखेज्जजीविया दुविहा पणत्ता, त जहा—एगट्टिया य बहुवीयगा य ॥

२१९. से कि त एगट्टिया ?

एगट्टिया अणेगविहा पणत्ता, त जहा—

निबब जबु^४ •कोसब, साल अंकोल्ल पीलु सेलू य ।

सल्लइ भोयइ मालुय, बउल पलासे करजे य ॥१॥

पुत्तंजीवयरिट्ठे, बिभेलए हूरडए य भल्लाए ।

उवभरिया^५ खीरिणि, बोधव्वे घायइ पियाले ॥२॥

१. भ० १।५१ ।

२. ताले (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. स० पा०—जहा पणवणाए जाव नालिएरी ।

४. स० पा०—जहा पणवणापदे जाव फला ।

५. प्रज्ञापनावृत्तौ 'उवेभरिका' इति दृश्यते ।

भ० २।२ सूत्रे 'उवभरिका' इतिपदमस्ति ।

पूइयनिबारग सेण्हा, तह सीसवा य असणे य ।

पुण्णाग नागरुक्खे, सीवण्णि तहा असोये य ॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा । एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कंदा वि खघा वि तया वि साला वि पवाला वि । पत्ता पत्तेयजीविया । पुप्फा अणेगजीविया । फला एगट्ठिया । सेत्त एगट्ठिया ॥

२२० से कि तं बहुबीयगा ?

बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अत्थिय तिट्ठु कविट्ठे, अबाडग माउलिग बिल्ले य ।

आमलग फणस दाडिम, आसोत्थे उबर वडे य ॥१॥

नगोह नदिरुक्खे, पिप्परि सयरो पिलुक्खरुक्खे य ।

काउबरी कुत्थुभरि, वोधव्वा देवदाली य ॥२॥

तिलए लउए छत्तोह, सिरीसे सत्तिवण्ण दहिवण्णे ।

लोद्ध घव चंदणज्जुण, नीमे कुडए कयवे य ॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा । एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कंदा वि खंघा वि तया वि साला वि पवाला वि । पत्ता पत्तेयजीविया । पुप्फा अणेगजीविया । फला बहुबीयगा । सेत्त बहुबीयगा । सेत्त असखेज्जजीविया ॥

२२१ से कि त अणतजीविया ?

अणतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—आलुए, मूलए, सिगबेरे—एव जहा— सत्तमसए जाव^१ सिउडी^२, मुसुडी । जेयावण्णे तहप्पगारा । सेत्त अणतजीविया ॥

जीवपएसाणं-अंतर-पद

२२२ अह भते ! कुम्मे, कुम्मावलिया, गोहा, गोहावलिया, गोणा, गोणावलिया, मणुस्से, मणुस्सावलिया, महिसे, महिसावलिया—एएसि ण दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिन्नाण जे अतरा ते वि ण तेहि जीवपएसेहि फुडा ? हता फुडा ॥

२२३ पुरिसे ण भते ! अतरे हत्थेण वा पादेण वा अगुलियाए वा सलागाए^३ वा कट्ठेण वा किलिचेण^४ वा आमुसमाणे वा समुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा अणयरेण वा तिकखेण सत्थजाएण आछिदमाणे वा विछिदमाणे वा,

१. भ० ७।६६ ।

३. सलागए (अ); × (ता) ।

२. सीउण्हे (अ), सीउण्ही (क), सीउण्णी (ता), ४. कलिचेण (अ, ता, व, म, स) ।

सीकण्हे (स) ।

अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसि जीवपएसणं किंचि आबाहं वा विवाहं वा
उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?

णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ^१ ॥

चरिम-अचरिम-पदं

२२४. कइ ण भंते ! पुढवीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पणत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव^२ अहेसत्तमा,
ईसीपब्भारा ॥

२२५. इमा ण भते ! रयणप्पभापुढवी किं चरिमा ? अचरिमा ?

चरिमपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव^३—

२२६. वेमाणिया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा ? अचरिमा ?

गोयमा ! चरिमा वि, अचरिमा वि ॥

२२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति^४ ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

२२८. रायगिहे जाव^५ एवं वयासी—कति णं भंते ! किरियाओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! पंच किरियाओ पणत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिया,
पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया—एवं किरियापदं निरवसेस
भाणियव्वं जाव^६ सव्वत्थोवाओ मिच्छादसणवत्तियाओ किरियाओ, अप्पच्च-
क्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ, पारिग्गहियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ,
आरभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, मायावत्तियाओ किरियाओ विसे-
साहियाओ ॥

२२९. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति^७ ॥

१. सकमइ (म, स) ।

२. भ० २।७५ ।

३. प० १० ।

४. भ० १।५१ ।

५. भ० १।४-८ ।

६. प० २२ ।

७. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देशो

आज्ञीवियसदग्ने समणोवासय-पद

२३०. रायगिहे जाव^१ एव वयासी—आज्ञीविया णं भंते । थेरे भगवते एव वयासी—समणोवासगस्स^२ ण भते । सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ भड अवहरेज्जा, से ण भते । त भड अणुगवेसमाणे कि सभड^३ अणुगवेसइ ? परायग भड अणुगवेसइ ?

गोयमा । सभंड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ॥

२३१ तस्स ण भते । तेहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि से भंडे अभडे भवइ^४ ?

हता भवइ ॥

२३२. से केण खाइ ण अट्टेण भते । एव वुच्चइ—सभंड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ?

गोयमा । तस्स ण एव भवइ—नो मे हिरण्णे, नो मे सुवण्णे, नो मे कसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलघण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-मादीए सतसारसावदेज्जे^५, ममत्तभावे^६ पुण से अपरिण्णाए भवइ । से तेणट्टेण गोयमा । एव वुच्चइ—सभड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ॥

२३३. समणोवासगस्स ण भते । सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ^७ जाय चरेज्जा, से ण भते । कि जाय चरइ ? अजाय चरइ ?

गोयमा । जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ॥

२३४. तस्स ण भते । तेहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि सा जाया अजाया भवइ ?

हता भवइ ॥

२३५. से केण खाइ ण अट्टेण भते एव वुच्चइ—जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ?

गोयमा । तस्स ण एव भवइ—नो मे माता, नो मे पिता, नो मे भाया, नो मे भगिणी, नो मे भज्जा, नो मे पुत्ता, नो मे धूया, नो मे सुण्हा, पेज्जबध्दणे पुण से अव्वोच्छिन्ने^८ भवइ । से तेणट्टेण गोयमा । *एव वुच्चइ—जायं चरइ^९, नो अजाय चरइ ॥

१ भ० १।४-८ ।

२ एव वक्ष्यमाणप्रकारमवादिषु, यच्च ते तान् प्रत्यवादिषुस्तद्गौतम स्वयमेव पृच्छन्नाह (वृ) ।

३. सयभड (अ), स भड (ता, म), सय भड (स) ।

४ हवइ (ता) ।

५. °सापदेज्जे (ता), सावतेज्जे (व) ।

६ मयत्ति° (क, ता, व) ।

७. केवइ (ता) ।

८. अवो° (अ) ।

९. स० पा०—गोयमा जाव नो ।

२३६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुब्बामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए' भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?

गोयमा ! तीयं पडिक्कमति, पडुप्पन्न सवरेति, अणागयं पच्चक्खाति ॥

२३७. तीयं पडिक्कममाणे किं १. तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? २ तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ३. तिविहं एगविहेण पडिक्कमति ? ४. दुविहं तिविहेण पडिक्कमति ? ५. दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ६. दुविहं एगविहेण पडिक्कमति ? ७. एगविहं तिविहेण पडिक्कमति ? ८. एगविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ९. एगविहं एगविहेण पडिक्कमति ?

गोयमा ! तिविहं वा' तिविहेण पडिक्कमति, तिविहं वा दुविहेणं पडिक्कमति, एवं' चेव जाव एगविहं वा एगविहेणं पडिक्कमति ।

१. तिविहं तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।

२. तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा ४ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा कायसा ।

५. तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा ६. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा ७ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ कायसा ।

८. दुविहं तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ९. अहवा न करेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १०. अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।

११. दुविहं दुविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, मणसा वयसा

१२. अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा १३ अहवा न करेइ, न कार-

वेइ वयसा कायसा १४ अहवा न करेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा

१५. अहवा न करेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा १६. अहवा न करेइ,

करेत नाणुजाणइ वयसा कायसा १७. अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ

मणसा वयसा १८. अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा १९.

अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा कायसा ।

२०. दुविहं एगविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा २१. अहवा

न करेइ, न कारवेइ वयसा २२. अहवा न करेइ, न कारवेइ कायसा २३. अहवा

१. वाचनान्तरे तु 'अपच्चक्खाए' इत्यस्य स्थाने २. X (स) ।

'पच्चक्खाए' ति 'पच्चाइक्खमाणे' इत्यस्य च ३. त (अ, क, ता, स) ।

स्थाने 'पच्चक्खावेमाणे' ति दृश्यते (वृ) ।

न करेइ, करेतं नाणुजाणइ मणसा २४. अहवा न करेइ, करेतं नाणुजाणइ वयसा २५. अहवा न करेइ, करेतं नाणुजाणइ कायसा २६. अहवा न कारवेइ, करेतं नाणुजाणइ मणसा २७. अहवा न कारवेइ, करेतं नाणुजाणइ वयसा २८. अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ कायसा ।

२९. एगविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, मणसा वयसा कायसा ३०. अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ३१. अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।

३२. एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा वयसा ३३. अहवा न करेइ मणसा कायसा ३४. अहवा न करेइ वयसा कायसा ३५. अहवा न कारवेइ मणसा वयसा ३६. अहवा न कारवेइ मणसा कायसा ३७. अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३८. अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३९. अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा ४०. अहवा करेतं नाणुजाणइ वयसा कायसा । ४१. एगविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा ४२. अहवा न करेइ वयसा ४३. अहवा न करेइ कायसा ४४. अहवा न कारवेइ मणसा ४५. अहवा न कारवेइ वयसा ४६. अहवा न कारवेइ कायसा ४७. अहवा करेतं नाणुजाणइ मणसा ४८. अहवा करेत नाणुजाणइ वयसा ४९. अहवा करेतं नाणुजाणइ कायसा ॥

२३८. पडुप्पन्नं सवरेमाणे किं तिविहं तिविहेणं संवरेइ ?

एव जहा पडिक्कममाणेण एगूणपन्नं भंगा भणिया एवं सवरमाणेण वि एगूणपन्नं भंगा भणियव्वा ॥

२३९. अणागय पच्चक्खमाणे किं तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ ?

एव एते^१ चेव भगा एगूणपन्नं^२ भाणियव्वा जाव अहवा करेतं नाणुजाणइ कायसा ॥

२४०. समणोवासगस्स ण भते ! पुव्वामेव थूलए मुसावाए अपच्चक्खाए भवइ, से णं भते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?

एवं जहा पाणाइवायस्स सीयाल भगसयं भणियं, तथा मुसावायस्स वि भाणियव्वं । एव अदिन्नादाणस्स वि^३, एव थूलगस्स वि मेहुणस्स, थूलगस्स वि परिग्गहस्स जाव अहवा करेत नाणुजाणइ कायसा ।

एते खलु एरिसगा समणोवासगा भवन्ति, नो खलु एरिसगा आजीविओवासगा भवति ॥

१. × (अ, म); ते (क, व, स) ।

३. वि भाणितव्व (ता) ।

२. × (ता) ।

२४१. आजीवियसमयस्त णं अयमट्ठे—अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुपित्ता, विलुपित्ता, उद्दवइत्ता आहारमाहारेति ॥
२४२. तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवति, तं जहा—१ ताले २ ताल-पलवे ३. उव्विहे ४. सविहे ५. अद्विहे ६. उदए^१ ७. नामुदए^२ ८. णम्मुदए^३ ९. अणुवालए १०. संखवालए ११. अयपुले १२ कायरए^४—इच्चेते दुवालस आजीविओवासगा अरहतदेवतागा^५, अम्मापिउसुस्सुसगा, पंचफलपडिक्कता, [तं जहा—उंबरेहि, वडेरहि, दोरेहि, सतरेहि, पिलक्खूहि]^६ पलङ्गल्लसुणकद-मूलविवज्जगा^७, अणिल्लछिएहि^८ अणक्कभिन्नेहि गोणेहि तसपाणविवज्जिएहि छेत्तेहि^९ वित्ति कप्पेमाणा विहरंति । एए वि ताव एव इच्छति किमग ! पुण जे इमे समणोवासगा भवन्ति, जेसि नो कप्पति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेत्तं वा अन्न समणुजाणेत्तए, त जहा—इगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दत्तवाणिज्जे, लक्ख-वाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जतपीलणकम्मे, निल्ल-छणकम्मे^{१०}, दवग्गिदावणया, सर-दह-तलागपरिसोसणया^{११}, असतीपोसणया । इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवन्ति ॥
२४३. कतिविहा ण भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?, गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवनवासी, वाणमतारा जोइसिया, वेमाणिया ॥
२४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति" ॥

१. उदए (अ) ।

२. णमुदए (स) ।

३. कातरिए (ता, व, म) ।

४. °देवयागा (वव°) ।

५. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांसः प्रतीयते ।

६. पलङ्गल्लसण° (स) ।

७. अणे° (क, ता, स) ।

८. वित्तेहि (अ), छत्तेहि (क, म), जित्तेहि (स)

९. निलछण° (अ); गेल्लछण° (ता) ।

१०. तलाय° (अ, स) ।

११. म° १।५१ ।

छट्ठो उद्देशो

समणोवासगक्यस्स दाणस्स परिणाम-पदं

२४५. समणोवासगस्स ण भते ! तहारूव समणं वा माहणं वा फामु-एसणिज्जेणं असण-
पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ?
गोयमा ! एगतसो से निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जइ ॥
२४६. समणोवासगस्स ण भते ! तहारूव समणं वा माहणं वा अफासुएण अणेस-
णिज्जेण असण-पाणं^१खाइम-साइमेणं^२ पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ?
गोयमा ! बहुतरिया^३ से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ॥
२४७. समणोवासगस्स णं भते ! तहारूव अस्सजय-विरयं^४पडिहय-पच्चक्खायपाव-
कम्म फासुएण वा, अफासुएण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण-
पाणं^५खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स^६ किं कज्जइ ?
गोयमा ! एगतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से काइ^७ निज्जरा कज्जइ ॥

उवनिमंतिपिडादि-परिभोगविहि-पदं

२४८. निग्गथं च ण गाहावइकुलं पिडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ दोहि पिडेहि
उवनिमतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा भुजाहि, एग थेराण दलयाहि । से य
त पडिगाहेज्जा^१, थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे
पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे^२ सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे
पासिज्जा त नो अप्पणा भुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, एगते अणावाए अचित्ते
बहुफासुए थडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयव्वे^३ सिया ॥
२४९. निग्गथं च ण गाहावइकुलं पिडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ तिहि पिडेहि
उवनिमतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा भुजाहि, दो थेराण दलयाहि । से य ते
पडिगाहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा^४ सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे
पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा
ते नो अप्पणा भुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, एगते अणावाए अचित्ते बहुफासुए
थडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता^५ परिट्ठावेयव्वा सिया । एव जाव दसहि पिडेहि

१. स० पा०—पाण जाव पडिलाभेमाणस्स ।

२. बहुतरिता (क, व, म) ।

३. अविरय (अ, क, व, म) ।

४. स० पा०—पाण जाव किं ।

५. कावि (क, व) ।

६. पडिगाहेज्जा (अ, स), पडिगहेज्जा (ब) ।

७. अणुप्पत्ताव्वे (ता) ।

८. परिट्ठवेयव्वे (अ, स) ।

९. स० पा०—सेसं त चेव जाव परिट्ठावेयव्वा ।

उवनिमतेज्जा, नवरं—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि ।
सेस तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

२५०. निग्गथ च ण गाहावइ^१कुल पिडवायपडियाए अणुप्पविट्ठ^२ केइ दोहि
पडिग्गहेहि उवनिमतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा पडिभुजाहि, एग थेराण
दलयाहि । से य त पडिग्गाहेज्जा, ^३थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया ।
जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव ण
अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा त नो अप्पणा परिभुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए,
एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थडिल्ले पडिलेहेत्ता पम्मज्जित्ता^४ परिट्ठा-
वेयव्वे सिया । एव जाव दसहि पडिग्गहेहि ।

एव जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया, एवं गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कवल-
लट्ठि-संथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहि सथारएहि उवनिमतेज्जा जाव
परिट्ठावेयव्वे सिया ॥

आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पदं

२५१. निग्गथेण य गाहावइकुलं पिडवायपडियाए पविट्ठेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे
पडिसेविए, तस्स णं एव भवति—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि,
पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि, विउट्टामि^१, विसोहेमि, अकरणयाए
अब्भुट्ठेमि, अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्म पडिवज्जामि, तन्नो पच्छा थेराणं
अतियं आलोएस्सामि जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि ।

१. से य सपट्ठिए असपत्ते, थेरा य पुव्वामेव^२ अमुहा सिया । से ण भंते ! किं
आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

२. से य सपट्ठिए असपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया । से ण भते ! किं
आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

३. से य सपट्ठिए असपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा । से ण भते ! किं आराहए ?
विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

१. सं० पा०—गाहावइ जाव केइ ।

३. विउट्टेमि (ता) ।

२. सं० पा०—तहेव जाव त नो अप्पणा परि-
भुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, सेस त चेव
जाव परिट्ठवेयव्वे ।

४. अतिए (अ) ।

५. × (अ, ता, ब, म) ।

४. से य संपट्टिए असपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव कालं करेज्जा । से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

५. से य सपट्टिए सपत्ते, थेरा य अमुहा सिया । से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

६. से य सपट्टिए सपत्ते अप्पणा य •अमुहे सिया । से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

७. से य सपट्टिए सपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा । से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।

८. से य सपट्टिए सपत्ते अप्पणा य कालं करेज्जा । से णं भंते किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए° ॥

२५२. निग्गथेण य वहिया वियारभूमि^१ वा विहारभूमि वा निक्खतेण अण्णयरे अकिञ्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एव भवति—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एव एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥

२५३. निग्गथेण य गामाणुगाम दूइज्जमाणेणं अण्णयरे अकिञ्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एवं एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥

२५४. निग्गथीए य गाहावइकुल पिडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अण्णयरे अकिञ्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसे णं एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्म पडिवज्जामि, तओ पच्छा पवत्तिणीए^२ अतिय आलोएस्सामि जाव तवोकम्म पडिवज्जिस्सामि ।

सा य सपट्टिया असपत्ता, पवत्तिणी य अमुहा सिया । सा णं भंते ! किं आराहिया ? विराहिया ?

गोयमा ! आराहिया, नो विराहिया ।

सा य सपट्टिया जहा निग्गथस्स तिण्णि गमा भणिया एवं निग्गंथीए वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया, नो विराहिया ॥

१. स० पा०—एव सपत्तेण वि चत्तारि आला-
वगा भाणियव्वा जहेव असपत्तेण ।

२. विचार° (ता, म), वितार (व)° ।

३. पवित्तिणीए (अ, ता, व, स) ।

२५५. से केणट्टण भंते ! एवं बुच्चइ—आराहए ? नो विराहए ?

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं मह उण्णालोम वा, गयलोमं वा, सण-लोम वा, कप्पासलोम वा, तणसूय वा दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिदिता अगणिकार्यंसि पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! छिज्जमाणे छिण्णे, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, 'दज्जमाणे दड्ढे' ति वत्तव्वं सिया ?

हता भगवं ! छिज्जमाणे छिण्णे, *पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, दज्जमाणे० दड्ढे ति वत्तव्वं सिया ।

से जहा वा केइ पुरिसे वत्थ अहतं वा, धोतं वा, ततुग्गयं वा मज्झिदु^१-दोणीए पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्ते ति वत्तव्वं सिया ?

हता भगव ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, *पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे० रत्ते ति वत्तव्वं सिया । से तेणट्टेण गोयमा ! एवं बुच्चइ—आराहए, नो विराहए ॥

जोति-जलण-पदं

२५६. पदीवस्स ण भते ! भियायमाणस्स कि पदीवे भियाइ ? लट्ठी भियाइ ? वत्ती भियाइ ? तेल्ले भियाइ ? दीवचपए भियाइ ? जोती भियाइ ?

गोयमा ! नो पदीवे भियाइ^१, *नो लट्ठी भियाइ, नो वत्ती भियाइ, नो तेल्ले भियाइ०, नो दीवचपए भियाइ, जोती भियाइ ॥

२५७. अगारस्स^१ णं भते ! भियायमाणस्स कि अगारे भियाइ ? कुड्डा भियाइ ? कडणा भियाइ ? धारणा भियाइ ? बलहरणे भियाइ ? वसा भियाइ ? मल्ला भियाइ ? वागा भियाइ ? छित्तरा भियाइ ? छाणे भियाइ ? जोती भियाइ ?

गोयमा ! नो अगारे भियाइ, नो कुड्डा भियाइ जाव नो छाणे भियाइ, जोती भियाइ ॥

किरिया-पदं

२५८. जीवे ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए, सिय अकिरिए ॥

१. दज्जमाणे दड्ढे (ता, व) ।

२. सं० पा०—छिण्णे जाव दड्ढे ।

३. मज्झिदु (अ, स) ।

४. सं० पा०—उक्खित्ते जाव रत्ते ।

५. सं० पा०—भियाइ जाव नो ।

६. आगारे (अ, म, स) ।

२५६. नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥
२६०. असुरकुमारे ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
एव चेव । एव जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा जीवे ॥
२६१. जीवे ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए ॥
२६२. नेरइए ण भंते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिए ?
एवं एसो वि^१ जहा^२ पढमो दंडओ तहा^३ भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवरं—
मणुस्से जहा^४ जीवे ॥
२६३. जीवा ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया ॥
२६४. नेरइया ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
एवं एसो वि जहा पढमो दंडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, नवरं—
मणुस्सा जहा जीवा ॥
२६५. जीवा ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि, अकिरिया वि ॥
२६६. नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं जाव वेमा-
णिया, नवर—मणुस्सा जहा जीवा ॥
२६७. जीवे ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय अकिरिए ॥
२६८. नेरइए ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए । एवं जाव वेमाणिए, नवरं—
मणुस्से जहा जीवे । एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिया तहा
वेउव्वियसरीरेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, नवरं—पंचमकिरिया न
भण्णइ, सेस तं चेव । एव जहा वेउव्विय तहा आहारगं पि, तेयगं पि कम्मगं
पि भाणियव्व—एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव—
२६९. वेमाणिया णं भते ! कम्मगसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि ॥
२७०. सेव भते ! सेव भंते ! ति^५ ॥

१. × (अ, क, ता, म, स) ।

४. भ० ८।२५८ ।

२. भ० ८।२५९ ।

५. भ० १।५१ ।

३. तहा इमो वि अपरिसेसो (अ, क, ता, व, स)

सत्तमो उद्देशो

अण्णउत्थियसंवाद-पदं

अदत्तं पडुच्च —

२७१. तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे नयरे—वण्णओ^१, गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव^२ पुढविसिलावट्टओ । तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते बहुवे अण्णउत्थिया परिवसति । तेणं कालेणं तेण समएणं समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव^३ समोसढे जाव^४ परिसा पडिगया ॥
२७२. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स बहुवे अतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसपन्ना^५ बलसपन्ना विणयसपन्ना नाणसपन्ना दसण-संपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जासपन्ना लाघवसपन्ना ओयंसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्धा जिइदिया जिय-परीसहा^६ जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते उड्डजाणू अहोसिरा भाणकोटोवगया सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति^७ ॥
२७३. तए ण ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो तिविह तिविहेणं अस्सजय-विरय-पडिहय^८—^९पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असवुडा, अगतदडा^{१०} एगतबाला या वि भवह ॥
२७४. तए णं ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेण अस्सजय-विरय^{११}—^{१२}पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असवुडा, एगतदडा^{१३}, एगतबाला या वि भवामो ?
२७५. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—तुब्भे^{१४} ण अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुजह, अदिन्नं सातिज्जह । तए ण ते तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा, अदिन्नं भुजमाणा, अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. ओ० सू० २-१३ ।

३. भ० १।७ ।

४. भ० १।८ ।

५. स० पा०—जहा वितियसए जाव जीवियास ।

६. जाव विहरति (अ, क, ता, म, स) ।

७. अविरय-अपडिहय (अ, क, ब, म, स) ।

८. स० पा०—जहा सत्तमसए बितिए उद्देशए जाव एगतबाला ।

९. स० पा०—विरय जाव एगतबाला ।

१०. तुम्हे (ब) ।

२७६. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुजामो, अदिन्न सातिज्जामो, जए^१ ण अम्हे अदिन्न गेण्हमाणा^२, *अदिन्नं भुजमाणा^३ अदिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण असजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवामो ?
२७७. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भण^४ अज्जो ! दिज्ज-माणे अदिन्ने, पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सरिज्जमाणे^५ अणिसिट्ठे । तुब्भण अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गाहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा गाहावइस्स ण त, नो खलु त तुब्भ, तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हह^६, *अदिन्न भुजह^७, अदिन्न सातिज्जह । तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा जाव^८ एगतबाला या वि भवह ॥
२७८. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुजामो, अदिन्न सातिज्जामो । अम्हे ण अज्जो ! दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुजामो, दिन्न सातिज्जामो । तए ण अम्हे दिन्न गेण्ह-माणा, दिन्न भुजमाणा, दिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-^९पच्चक्खायपावकम्मा, अकिरिया, सबुडा^{१०} एगतपडिया या वि भवामो ॥
२७९. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! तुम्हे दिन्न गेण्हह^{११}, *दिन्न भुजह^{१२}, दिन्न सातिज्जह, जए^{१३} ण तुब्भे दिन्न गेण्हमाणा जाव^{१४} एगतपडिया या वि भवह ?
२८०. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—अम्हण्ण अज्जो ! दिज्ज-माणे दिन्ने, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गाहिए, निस्सरिज्जमाणे निसिट्ठे । अम्हण्ण अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गाहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हण्ण त, नो खलु त गाहावइस्स, तए ण अम्हे दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुजामो, दिन्नं सातिज्जामो तए ण अम्हे दिन्न गेण्हमाणा^{१५}, *दिन्नं भुजमाणा, ^{१६}दिन्न सातिज्ज-माणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंत-

१. तए (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. स० पा०—गेण्हमाणा जाव अदिन्न ।

३. तुम्हाण (म, स) ।

४. निस्सरिज्ज^० (क) ।

५. स० पा०—गेण्हह जाव अदिन्न ।

६. भ० ८।२७६ ।

७. सं० पा०—जहा सत्तमसए जाव एगतपडिया

८. स० पा०—गेण्हह जाव दिन्नं ।

९. तए (अ, क, ता, व, म, स) ।

१०. भ० ८।२७८ ।

११. सं० पा०—गेण्हमाणा जाव दिन्नं ।

- पंडिया या वि भवामो । तुभे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेण
अस्सजय-विरयपडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह ॥
२८१. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो !
अम्हे तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव
एगतबाला या वि भवामो ?
२८२. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुभे ण अज्जो ! अदिन्नं
गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह, तए ण तुभे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव
एगतबाला या वि भवह ॥
२८३. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो !
अम्हे अदिन्नं गेण्हामो जाव एगतबाला या वि भवामो ?
२८४. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुभण्णं अज्जो ! दिज्ज-
माणे अदिन्ने •'पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे अणिसिद्धे ।
तुभण्णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गाहणं असपत्त एत्थं णं अंतरा केइ अवह-
रेज्जा°, गाहावइस्सं णं त, नो खलु तं तुभं । तए णं तुभे अदिन्नं गेण्हह जाव°
एगतबाला या वि भवह ॥

हिंसं पडुच्च—

२८५. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुभे ण अज्जो ! तिविहं
तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या
वि भवह ॥
२८६. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो !
अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगतबाला यावि भवामो ?
२८७. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एवं वयासी—तुभे णं अज्जो ! रीय
रीयमाणा पुढवि पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह संघाएह सघट्टेह परितावेह
किलामेह उद्देह, तए णं तुभे पुढवि पेच्चेमाणा अभिहणमाणा° •वत्तेमाणा
लेसेमाणा संघाएमाणा संघट्टेमाणा परितावेमाणा किलामेमाणा° उद्देमाणा
तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला
या वि भवह ॥
२८८. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे
रीयं रीयमाणा पुढवि पेच्चामो अभिहणामो जाव उद्देमो । अम्हे ण अज्जो !

१. स० पा०—तं चेव जाव गाहावइस्स ।

३. स० पा०—अभिहणमाणा जाव उद्देमाणा ।

२. तं चेव जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

रीयं रीयमाणा काय वा, जोय वा, रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो, पदेसं पदेसेणं वयामो, तेणं अम्हे देस देसेण वयमाणा, पदेसं पदेसेण वयमाणा नो पुढवि पेच्चेमो अभिहणामो जाव उद्देवमो, तए ण अम्हे पुढवि अपेच्चेमाणा अणभिहणमाणा जाव अणोद्देवमाणा तिविहं तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतपडिया या वि भवामो । तुब्भे ण अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ॥

२८६. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगंतबाला या वि भवामो ?

२८७. तए णं ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो ! रीय रीयमाणा पुढवि पेच्चेह जाव उद्देवह, तए ण तुब्भे पुढवि पेच्चेमाणा जाव उद्देवमाणा तिविह तिविहेण जाव एगंतबाला या वि भवह ॥

गममाणगयं पडुच्च—

२८९. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भणं अज्जो ! गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिह नगरं सपाविउकामे असपत्ते ॥

२९०. तए णं ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हं गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिहं नगरं सपाविउकामे असपत्ते । अम्हण अज्जो ! गम्ममाणे गए, वीतिक्कमिज्जमाणे वीतिक्कते, रायगिहं नगरं सपाविउकामे सपत्ते । तुब्भण अप्पणा चेव गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिहं^१ नगरं सपाविउकामे^२ असपत्ते तए णं ते थेरा भगवतो अण्णउत्थिए एवं पडिभणति,^३ पडिभणित्ता गइप्पवायं नाम अज्जयण पण्णवइसु ॥

२९१. कतिविहे ण भत्ते ! गइप्पवाए पण्णत्ते ? गोयमा ! पच्चविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, तं जहा—पयोगगई, ततगई, बधणल्लेयण-गई, उववायगई, विहायगई^४ । एत्तो आरब्भं^५ पयोगपय निरवसेस भणियव्व जाव^६ सेत्त विहायगई ।

२९२. सेव भत्ते ! सेव भत्ते ! त्ति^७ ॥

१. स० पा०—रायगिह जाव असपत्ते ।

२. पडिहणइ (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. विहागती (ता) ।

४. आरब्भं (क, ता, व, म) ।

५. प० १६ ।

६. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देशो

पडिणीय-पदं

२६५. रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—गुरु णं भंते ! पडुच्च^२ कति पडिणीया^३ पणत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पणत्ता, तं जहा—आयरियपडिणीए, उवज्झाय-
पडिणीए, थेरपडिणीए ॥
२६६. गति^४ ण भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पणत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पणत्ता, तं जहा—इहलोगपडिणीए, परलोग-
पडिणीए, दुहलोगपडिणीए^५ ॥
२६७. समूहणं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पणत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पणत्ता, तं जहा—कुलपडिणीए, गणपडिणीए,
संघपडिणीए ॥
२६८. अणुकंपं पडुच्च^६ •कति पडिणीया पणत्ता? •
गोयमा ! तओ पडिणीया पणत्ता, तं जहा—तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए,
सेहपडिणीए ॥
२६९. सुयणं भंते ! पडुच्च^७ •कति पडिणीया पणत्ता? •
गोयमा ! तओ पडिणीया पणत्ता, तं जहा—सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए,
तदुभयपडिणीए ॥
३००. भावणं भंते ! पडुच्च^८ •कति पडिणीया पणत्ता? •
गोयमा ! तओ पडिणीया पणत्ता, तं जहा—नाणपडिणीए, दंसणपडिणीए,
चरित्तपडिणीए ॥

पंचववहार-पदं

३०१. कतिविहे णं भंते ! ववहारे^९ पणत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे ववहारे पणत्ते, तं जहा—आगमे, सुतं, आणा, धारणा,
जीए ।

१. भ० १।४-१० ।

२. पडुच्चा (क, म) ।

३. पडिणीया (ता, म), तुलना—ठा० ३।४८८-
४९३ ।

४. अत्र णकारयोगे अनुस्वारलोपः ।

५. दुहलोग^० (अ, व, म); उभयपडि^० (क);
दुहलोग^० (ता) ।

६. सं० पा०—पुच्छा ।

७. सं० पा०—पुच्छा ।

८. सं० पा०—पुच्छा ।

९. तुलना—ठा० ५।१२४; व० १० ।

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्टवेज्जा ।

णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहार पट्टवेज्जा ।

णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहार पट्टवेज्जा ।

णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्टवेज्जा ।

णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहार पट्टवेज्जा ।

इच्चेएहि पचहि ववहारं पट्टवेज्जा, तं जहा—आगमेणं, सुएणं आणाए, धारणाए, जीएण ।

जहा-जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा-तहा ववहार पट्टवेज्जा ।

से किमाहु भते ! आगमबलिया समणा निग्गथा ?

इच्चेतं पचविहं ववहार जदा-जदा जहि-जहि 'तदा-तदा' तहि-तहि अणिस्सि-ओवस्सित सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गथे आणाए आराहए भवइ^१ ॥

बंध-पदं

३०२. कतिविहे णं भते ! बधे पणत्ते ?

गोयमा ! दुविहे बधे पणत्ते, त जहा—इरियावहियबधे^१ य, संपराइयबंधे य ॥

इरियावहियबंध-पदं

३०३. इरियावहिय^२ णं भते ! कम्म किं नेरइओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिणी बंधइ ? मणुस्सो बंधइ ? मणुस्सी बंधइ ? देवो बंधइ ? देवी बंधइ ?

गोयमा ! नो नेरइओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिणी बंधइ, नो देवो बंधइ, नो देवी बंधइ । पुव्व पडिबन्नेए पडुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य बधति, पडिबज्जमाणए पडुच्च १. मणुस्सो वा बधइ २ मणुस्सी वा बधइ ३ मणुस्सा वा बधति ४. मणुस्सीओ वा बधति ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ ६ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बधति ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बधति ८. अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधति ॥

१. तहा-तहा (अ, स) ।

निर्ग्रन्थाः ! पञ्चविधव्यवहारस्य फलमिति

२. हन्त ! आहुरेवेति गुरुवचन गम्यमिति, अन्ये

शेष ; अनोत्तरमाह—'इच्चेय' मित्यादि(वृ) ।

तु 'से किमाहु भते' इत्याद्येव व्याख्यान्ति—

३. °वधिय° (म); °वहिया° (स) ।

अथ किमाहुर्भदन्त ! आगमबलिकाः श्रमणा

४. °वहिया (अ, क, स); °वहिय (ता) ।

३०४. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसगो बंधइ ? इत्थीओ ? बंधति ? पुरिसा बंधति ? नपुंसगा बंधति ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसगो बंधइ ?

गोयमा ! नो इत्थी बंधइ, नो पुरिसो बंधइ^१ नो नपुंसगो बंधइ, नो इत्थीओ बंधंति, नो पुरिसा बंधति, नो नपुंसगा बंधंति, नोइत्थी नोपुरिसो^२ नोनपुंसगो बंधइ—पुवपडिबन्ने पडुच्च अवगयवेदा बंधति, पडिबज्जमाणे पडुच्च अवगयवेदो वा बंधइ अवगयवेदा वा बंधंति ॥

३०५. जइ भंते ! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधति त भंते ! किं १. इत्थीपच्छाकडो बंधइ ? २. पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? ३. नपुंसगपच्छाकडो बंधइ ? ४. इत्थीपच्छाकडा बंधंति ? ५. पुरिसपच्छाकडा बंधंति ? ६. नपुंसगपच्छाकडा बंधति ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य । बंधइ ४ ? उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ८ एव एते छवीस भंगा जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधति ?

गोयमा ! १. इत्थीपच्छाकडो वि बंधइ २. पुरिसपच्छाकडो वि बंधइ ३. नपुंसगपच्छाकडो वि बंधइ ४ इत्थीपच्छाकडा वि बंधंति ५. पुरिसपच्छाकडा वि बंधंति ६. नपुंसगपच्छाकडा वि बंधंति ७ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ, एवं एए चेव छवीसं भगा भाणियव्वा जाव^३ २६. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधति ॥

३०६. तं भंते ! किं १. बधी बंधइ बधिस्सइ ? २. बधी बंधइ न बधिस्सइ ? ३. बधी न बंधइ बधिस्सइ ? ४. बंधी न बंधइ न बधिस्सइ ? ५. न बधी बंधइ बधिस्सइ ? ६. न बंधी बंधइ न बधिस्सइ ? ७ न बधी न बंधइ बधिस्सइ ? ८. न बधी न बंधइ न बधिस्सइ ?

गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बधी बंधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी बंधइ न बधिस्सइ, एवं तं चेव सव्व जाव अत्थेगतिए न बधी न बंधइ न बधिस्सइ ।

१. स० पा०—बंधइ जाव नोनपुंसगो ।

२. ८. अहवाइत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य बंधति ९. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ १०. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य बंधति ११. अहवा

इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ

१२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधति १३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १४. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधति

गह्णागरिसं पडुच्च अत्येगतिए बंधी बंधइ बधिससइ, एवं जाव' अत्येगतिए न बधी बधइ बधिससइ, नो चेव णं न बंधी बधइ न बधिससइ, अत्येगतिए न बंधी न बधइ बधिससइ, अत्येगतिए न बधी न बधइ न बधिससइ ॥

३०७. त भते ! कि सादीय सपज्जवसिय बधइ ? सादीयं अपज्जवसिय बंधइ ? अणादीय सपज्जवसिय बधइ ? अणादीय अपज्जवसियं बधइ ?

गोयमा ! सादीयं सपज्जवसियं बधइ, नो सादीय अपज्जवसिय बंधइ, नो अणादीय सपज्जवसिय बधइ, नो अणादीय अपज्जवसिय बधइ ॥

३०८ त भते ! कि देसेण देस बधइ ? देसेण सव्व बधइ ? सव्वेण देसं बधइ ? सव्वेण सव्व बंधइ ?

गोयमा ! नो देसेण देसं बंधइ, नो देसेण सव्वं बंधइ, नो सव्वेण देसं बंधइ, सव्वेण सव्व बधइ ॥

संपराइयबंध-पदं

३०९. संपराइयं णं भते ! कम्मं कि नेरइओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिओ बधइ ? जाव' देवी बधइ ?

गोयमा ! नेरइओ वि बधइ, तिरिक्खजोणिओ वि बधइ, तिरिक्खजोणिणी वि बधइ, मणुस्सो वि बधइ, मणुस्सो वि बधइ, देवो वि बधइ, देवी वि बंधइ ॥

३१० त भते ! कि इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? तहेव जाव' नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसगो बधइ ?

गोयमा ! इत्थी वि बधइ, पुरिसो वि बधइ जाव नपुसगा वि बंधति, 'अहवा एते'* य अवगयवेदो य बधइ, अहवा एते य अवगयवेदा य बधति ॥

१५. अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ १६ अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधति १७ अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ १८ अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधति १९. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ २०. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधति २१. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधति २२. अहवा

इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधति २३. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ २४ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधति २५. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ ।

१. अत्र जाव-पदेन त्रयो भङ्गा गृहीताः ।

२. भ० ६।३०३ ।

३. भ० ६।३०४ ।

४. अहवेए (अ, व, स); अहवेते (ता, म) ।

- ३११ 'जइ भंते ! अवगयवेदो य बंधइ, अवगयवेदा य बंधंति' तं भंते ! कि इत्थीपच्छाकडो बंधइ ? पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? एवं जहेव इरियावहिय-बधगस्स तहेव निरवसेसं जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ॥
३१२. तं भंते ! कि १. बधी बंधइ बधिस्सइ ? २. बधी बंधइ न बधिस्सइ ? ३. बधी न बंधइ बंधिस्सइ ? ४. बंधी न बंधइ न बधिस्सइ ?
 गोयमा ! १. अत्येगतिए बंधी बंधइ बधिस्सइ २. अत्येगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ३. अत्येगतिए बंधी न बंधइ बधिस्सइ ४. अत्येगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥
३१३. तं भंते ! कि सादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? पुच्छा तहेव ।
 गोयमा ! सादीयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणादीयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणादीयं वा अपज्जवसियं बंधइ, नो चेव णं सादीयं अपज्जवसियं बंधइ ॥
३१४. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? एवं जहेव इरियावहियबधगस्स जाव सव्वेण सव्वं बंधइ ॥

कम्मप्पगडीसु परीसहसमवतार-पदं

- ३१५ कइ णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
 गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं वेदणिज्जं मोह्णिज्जं आलगं नाम गोयं अतराइयं ॥
३१६. कइ ण भंते ! परीसहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा—दिगिच्छापरीसहे, पिवासा-परीसहे* सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइ-परीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोस-परीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तण्णफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पण्णापरीसहे नाणपरीसहे° दंसण-परीसहे॥ ॥
- ३१७ एए ण भंते ! बावीसं परीसहा कतिसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति ?
 गोयमा ! चउसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति, तं जहा—नाणावरणिज्जे, वेदणिज्जे, मोह्णिज्जे, अतराइए ॥

१. × (व) ।

२. म० दा३०८ ।

३. गोदं (व) ।

४. सं० पा०—पिवासापरिसहे जाव दसण° ।

५. अन्नाणपरिसहे (उत्त० २।३) ।

६. नाणपरीसहे दंसणपरीसहे पण्णापरीसहे (स० २२।१) ।

३१८. नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
 गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा—पण्णापरीसहे नाणपरीसहे^१ य ॥
३१९. वेदणिज्जे णं भते ! कम्मे कति परीसहा समोयरति ?
 गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरति, तं जहा—
 पचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे य ।
 तणफास—जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जम्मि ॥१॥
३२०. दसणमोहणिज्जे णं भते ! कम्मे कति परिसहा समोयरति ?
 गोयमा ! एगे दसणपरीसहे समोयरइ ॥
३२१. चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
 गोयमा ! सत्त परीसहा समोयरंति, तं जहा—
 अरती अचेल इत्थी, निसीहिया जायणा य अक्कोसे ।
 सक्कार-पुरक्कारे, चरित्तमोहम्मि सत्तेत्ते ॥१॥
३२२. अंतराइए णं भते ! कम्मे कति परीसहा समोयरति ?
 गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ॥
३२३. सत्तविह्वंघगस्स ण भते ! कति परीसहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! बावीस परीसहा पण्णत्ता । वीस पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं
 वेदेइ नो तं समयं उस्सिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उस्सिणपरीसहं वेदेइ नो तं
 समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं निसीहिया-
 परीसहं वेदेइ, जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं
 वेदेइ ॥
३२४. 'एवं अट्टविह्वंघगस्स वि' ॥
३२५. छव्विह्वंघगस्स ण भते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! चोद्दस परिसहा पण्णत्ता । बारस पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं
 वेदेइ नो तं समयं उस्सिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उस्सिणपरीसहं वेदेइ नो तं
 समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जा-
 परीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं
 वेदेइ ॥

१. अण्णाण^० (अ) ।

२. अट्टविह्वंघगस्स ण भते ! कति परिसहा प०
 गो० बावीस परीसहा, तं छुहापरीसहे पिवासा
 परीसहे सीयपरीसहे उस्सिणपरीसहे दस-
 म्मसगपरीसहे जाव अलाभपरीसहे, एव अट्ट-

विह्वंघगस्स वि (क, व, म); अट्टविह्वंघगस्स
 णं भते ! कति परीसहा प० गो० बावीस
 परीसहा प० एव अट्टविह्वंघगस्स (ता, स) ।
 ३. उसुण^० (ता) ।

३२६. एकविहबन्धगस्स णं भंते ! वीयरगच्छउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! एवं चेव—जह्वेव छव्विहबन्धगस्स ॥
३२७. एगविहबन्धगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! एक्कारस्स परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ । सेस जहा
 छव्विहबन्धगस्स ॥
३२८. अब्धगस्स णं भंते ! अयोगिभवत्थकेवलस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! एक्कारस्स परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ—ज समयं सीयपरीसह
 वेदेइ नो त समय उसिणपरीसहं वेदेइ, ज समय उसिणपरीसह वेदेइ नो त
 समय सीयपरीसह वेदेइ, ज समय चरियापरीसह वेदेइ नो त समय
 सेज्जापरीसह वेदेइ, जं समय सेज्जापरीसहं वेदेइ नो त समय चरियापरीसह
 वेदेइ ॥

सूरिय-पदं

३२९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
 मज्झत्तियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति ? अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य
 दीसंति ?
 हुंता गोयमा ! जंबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य^१ मूले य
 दीसंति, मज्झत्तियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति^२, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले
 य दीसंति ॥
३३०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झत्तियमुहुत्तंसि य,
 अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेण ?
 हुंता गोयमा ! जंबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उग्गमण^३मुहुत्तंसि, मज्झत्तियमुहुत्तंसि
 य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा^४ उच्चत्तेण ॥
३३१. जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झत्तियमुहुत्तंसि य,
 अत्थमणमुहुत्तंसि^५ य सव्वत्थ समा^६ उच्चत्तेण, से केण खाइ अट्टेण भंते !
 एव वुच्चइ—जंबुद्दीवे ण दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि^७ दूरे य मूले य दीसंति ?
 जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
 गोयमा ! लेसापडिघाएण उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभितावेण
 मज्झत्तियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेसापडिघाएण^८ अत्थमणमुहुत्तंसि

१. स० पा०—त चेव जाव अत्थमण^० ।

२. स० पा०—उग्गमण जाव उच्चत्तेण ।

३. स० पा०—अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्च-

त्तेण । 'अ, ता, ता, म, स' सकेतितादर्शेषु

^५अत्थमणमुहुत्तंसि मूले जाव उच्चत्तेण^१ इति

^२ पाठोऽस्ति । अत्र 'मूले' इति पद नावश्यक

प्रतिभाति ।

४. ^०मुहुत्तंसि य (अ, क, ता, व, म, स) ।

- दूरे य मूले य दीसति । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे णं दीवे
सूरिया उगमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति जाव अत्थमणं*मुहुत्तसि दूरे य
मूले य० दीसति ॥
३३२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं गच्छंति ? पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छति ?
अणागय खेत्तं गच्छति ?
गोयमा ! नो तीयं खेत्तं गच्छति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, नो अणागयं खेत्तं
गच्छति ॥
३३३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं ओभासंति ? पडुप्पन्नं खेत्तं
ओभासति ? अणागय खेत्तं ओभासति ?
गोयमा ! नो तीयं खेत्तं ओभासति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं
खेत्तं ओभासति ॥
३३४. तं भंते ! किं पुट्टं ओभासति ? अपुट्टं ओभासंति ?
गोयमा ! पुट्टं ओभासति, नो अपुट्टं ओभासंति जाव' नियमा छद्दिंसि ॥
३३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया कि तीयं खेत्तं उज्जोवेति ?
एव चेव जाव नियमा छद्दिंसि ॥
३३६. एव तवेति, एव भासति जाव नियमा छद्दिंसि ॥
३३७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरियाणं कि तीए खेत्ते किरिया कज्जइ ? पडुप्पन्ने
खेत्ते किरिया कज्जइ ? अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, नो
अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ॥
३३८. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव' नियमा छद्दिंसि ॥
३३९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया केवतियं खेत्तं उड्ढं तवति ? केवतियं खेत्तं अहे
तवति ? केवतियं खेत्तं तिरियं तवति ?
गोयमा ! एगं जोयणसयं उड्ढं तवति, अट्ठारसं जोयणसयाइ अहे तवंति,
सीयालीसं जोयणसहस्साइ दोण्णियं तेवट्ठे जोयणसए एकवीसं च सट्ठिभाए
जोयणस्स तिरियं तवति ॥

जोइसियाणं उववत्ति-पदं

३४०. अतो णं भंते ! माणुसुत्तरपक्वयस्स जे चदिम-सूरिय-गहगण-णवखत्त-ताराख्वा
ते णं भंते ! देवा कि उड्ढोववन्नगा ?

१. स० पा०—अत्थमणं जाव दीसति ।

३. म० १।२५६-२६६ ।

२. म० १।२५६-२६६ ।

जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव^१—

३४१. इंदट्टाणे णं भंते ! केवतियं कालं विरहिए उववाएणं ?

गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उवकोसेणं छम्मासा ॥

३४२. बहिया ण भंते ! माणसुत्तरपव्वयस्स जे चदिम-सूरिय-गहगण-णत्त-तारारूवा
ते ण भंते ! देवा कि उड्ढोववन्नगा ?

जहा जीवाभिगमे जाव^१—

३४३. इंदट्टाणे णं भंते ! केवतियं कालं उववाएणं विरहिए पण्णत्ते ?

गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उवकोसेणं छम्मासा ॥

३४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति^२ ॥

नवमो उद्देशो

बध-पदं

३४५. कतिविहे ण भंते ! बंधे पण्णत्ते !

गोयमा ! दुविहे बधे पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

वीससाबंध-पदं

३४६. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

३४७. अणादियवीससाबंधे^३ णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! ति विहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, अघम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे ॥

३४८. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कि देसबंधे ? सव्वबंधे ?

गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एव अघम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एव आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि ॥

१. जी० ३ ।

२. जी० ३ ।

३. भ० १।५१ ।

४. अणातीत^० (ता) ।

३४६. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! सव्वद्धं । एव अघम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एव आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि^१ ॥
३४७. सादीयवीससाबंधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—बंधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परिणाम-पच्चइए ॥
३४८. से किं त बंधणपच्चइए ? बंधणपच्चइए—जण्णं परमाणुपोगलदुप्पदेसिय-तिप्पदेसिय जाव दसपदेसिय-सखेज्जपदेसिय-असखेज्जपदेसिय-अणतपदेसियाण खघाणं वेमायनिद्धयाए, वेमायलुक्खयाए, वेमायनिद्धलुक्खयाए बंधणपच्चएणं^२ बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्ज कालं । सेत्तं बंधणपच्चइए ॥
३४९. से किं त भायणपच्चइए ? भायणपच्चइए—जण्णं जुण्णसुर-जुण्णगुल-जुण्णतदुलाण भायणपच्चएणं^३ बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सखेज्जं कालं । सेत्तं भायण-पच्चइए ॥
३५०. से किं त परिणामपच्चइए ? परिणामपच्चइए—जण्णं अब्भाणं, अब्भरुक्खाणं जहा ततियसए जाव^४ अमो-हाण परिणामपच्चएणं^५ बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा । सेत्तं परिणामपच्चइए । सेत्तं सादीयवीससाबंधे । सेत्तं वीससाबंधे ॥

पयोगबंध-पदं

३५१. से किं तं पयोगबंधे ? पयोगबंधे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जे से अणादीए अपज्जवसिए से णं अट्ठण्हं जीवमज्झपएसाणं, तत्थ वि ण तिण्हं-तिण्हं अणादीए अपज्जवसिए, सेसाणं सादीए । तत्थ णं जे से सादीए अपज्जवसिए से ण सिद्धाण । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से णं

१. अस्य सूत्रस्यानन्तर 'ता' प्रती एतावच्चरति-
रिक्त पाठोऽस्ति—'धम्मत्थिकायअण्णमण्ण-
अणादीयवीससावधस्स ए भते ! केवइय कालं
अतर होइ गो नत्थि अतर एव तिण्हवि सेत्त
अणादीयवीससावधे ।'

२. °पच्चइएण (अ) ।

३. °पच्चइएणं (अ, स) ।

४. भ० ३।२५३ ।

५. °पच्चइएणं (अ, स) ।

चउच्चिहे पणत्ते, तं जहा—आलावणबधे, अल्लियावणबधे, सरीरबधे, सरीर-
पयोगबधे ॥

आलावणं पडुच्च—

३५५. से कि त आलावणबधे ?

आलावणबधे—जणं तणभाराण वा, कट्टभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलाल-
भाराण वा^१, वेत्तलता-वाग-वरत्त-रज्जु-वल्लि-कुस-दब्भमादीएहि आलावण-
बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त आलावण-
बधे ॥

अल्लियावणं पडुच्च—

३५६. से कि तं अल्लियावणबधे ?

अल्लियावणबधे चउच्चिहे पणत्ते, त जहा—लेसणाबधे, उच्चयबधे, समुच्चय-
बधे, साहणणाबधे^२ ॥

३५७. से कि त लेसणाबधे ?

लेसणाबधे—जण कुट्टाण, कोट्टिमाण^३, खंभाण, पासायाण, कट्टाण, चम्माणं,
घडाणं, पडाण, कडाणं छुहा-चिक्खल्ल-सिलेस-सक्ख-महुसित्थमाईएहि लेसण-
एहि बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त
लेसणाबधे ॥

३५८. से कि तं उच्चयबधे ? उच्चयबधे—जण तणरासीण वा, कट्टरासीण
वा, पत्तरासीण वा, तुसरासीण वा, भुसरासीण वा गोमयरासीण वा, अवगर-
रासीण वा, उच्चत्तेण बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सखेज्ज
काल । सेत्त उच्चयबधे ॥

३५९. से कि तं समुच्चयबधे ?

समुच्चयबधे—जण अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुवखरिणी-दीहियाण गुजालि-
याण, सराण, सरपतियाण, सरसरपतियाणं, बिलपतियाण देवकुल-सभ-प्पव-
थूभ-खाइयाणं, फरिहाणं^४, पागारट्टालग-चरिय-दार-भोपुर-त्तोराणां, पासाय-
घर-सरण-लेण-आवणाण, सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह^५-महापह-
पहमादीणं, छुहा-चिक्खल्ल-सिला^६-समुच्चएणं बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण
अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्तं समुच्चयबधे ॥

१. वा वेत्तभाराण वा (अ, स) ।

२. साहणबधे (ता); सहणाण ° (म, स) ।

३. कुट्टिमाण (क) ।

४. परिहाण (क, व, म) ।

५. चउम्मुह (क, ता) ।

६. सिलेस (अ, स); सेला (ता) ।

३६०. से किं तं साहणणाबंधे ?

साहणणाबंधे दुविहे पणत्ते, त जहा— देससाहणणाबंधे य, सव्वसाहणणाबंधे य ॥

३६१. से किं तं देससाहणणाबंधे ?

देससाहणणाबंधे—जण सगड-रह-जाण-जुग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणी-लोही-लोहकडाह-कडच्छुय^१-आसण-सयण-खंभ-भडमत्तोवगरणमादीणं देस-साहणणाबंधे^२ समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमृहुत्तं, उवकोसेणं सखेज्जं कालं । सेत्त देससाहणणाबंधे ॥

३६२. से किं तं सव्वसाहणणाबंधे ?

सव्वसाहणणाबंधे—से ण खीरोदगमाईण । सेत्त सव्वसाहणणाबंधे । सेत्त साहणणाबंधे । सेत्त अल्लियावणबंधे ॥

सरीरं पडुच्च—

३६३. से किं तं सरीरबंधे ?

सरीरबंधे दुविहे पणत्ते, त जहा—पुव्वपयोगपच्चइए^१ य, पडुप्पन्नपयोग-पच्चइए^२ य ॥

३६४. से किं तं पुव्वपयोगपच्चइए ?

पुव्वपयोगपच्चइए—जण नेरइयाणं ससारत्थाण सव्वजीवाण तत्थ-तत्थ तेसु-तेसु कारणेसु समोहणमाणं^३ जीवपदेसाणं^४ वधे समुप्पज्जइ । सेत्त पुव्व-पयोगपच्चइए ॥

३६५. से किं तं पडुप्पन्नपयोगपच्चइए ?

पडुप्पन्नपयोगपच्चइए—जण केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्धाएणं समोहयस्स ताओ समुग्धायाओ पडिनियत्तमाणस्स अतरा मथे वट्टमाणस्स तेया-कम्माण वधे समुप्पज्जइ । किं कारणं ? ताहे से पएसा एगत्तीगया भवंति^५ । सेत्त पडुप्पन्नपयोगपच्चइए । सेत्त सरीरबंधे ॥

१. कडेच्छुय (ता, व, म), कडच्छया (भ० ५।१८६)

२. देससावणणाएवधे (ता) ।

३. पुव्वपयोग ० (ता) ।

४. पच्चुप्पण ० (ता, व, म) ।

५. समोहण ० (स) ।

६. इह जीवप्रदेशानामित्युक्तावपि शरीरबन्धा-धिकारात्तात्स्थानात्तद्व्यपदेश इति न्यायेन

जीवप्रदेशाश्रिततैजसकार्मणशरीरप्रदेशानामि-
ति द्रष्टव्य, शरीरबन्ध इत्यत्र तु पक्षे समुद्-
घातेन विक्षिप्य सङ्कोचितानामुपसर्जनीकृत-
तैजसादिशरीरप्रदेशाना जीवप्रदेशानामेवेति
(वृ) ।

७. शरीरबन्ध इत्यत्र तु पक्षे तेयाकम्माण वधे
समुप्पज्जइ (वृ) ।

सरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६६. से किं तं सरीरप्पयोगबधे ?

सरीरप्पयोगबधे पच्चविहे पणत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरप्पयोगबधे, वेउव्विय-
सरीरप्पयोगबधे, आहारगसरीरप्पयोगबधे, तेयासरीरप्पयोगबधे, कम्मासरीर-
प्पयोगबधे ॥

ओरालियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६७. ओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कतिविहे पणत्ते ?

गोयमा ! पच्चविहे पणत्ते, तं जहा—एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे, बेइदिय-
ओरालियसरीरप्पयोगबधे जाव पच्चिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ॥

३६८. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कतिविहे पणत्ते ?

गोयमा ! पच्चविहे पणत्ते, तं जहा—पुढविव्काइयएगिदियओरालियसरीर-
प्पयोगबधे, एव एएण अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसठाणे ओरालियसरीर-
स्स तहा भाणियव्वो जाव^१ पज्जत्तागवभवक्कतियमणुस्सपच्चिदियओरालिय-
सरीरप्पयोगबधे य, अप्पज्जत्तागवभवक्कतियमणुस्स^२ पच्चिदियओरालियसरीर-
प्पयोग^०-बधे य ॥

३६९. ओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?

गोयमा ! वीरिय-सजोग-सहव्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च
आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएण ओरालियसरीर-
प्पयोगबधे ॥

३७०. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?

एवं चेव । पुढविव्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे एव चेव, एव जाव
वणस्सइकाइया । एव बेइदिया, एवं तेइदिया, एव चउरिदिया ॥

३७१. तिरिव्वज्जोणियपच्चिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स
उदएणं ? एवं चेव ॥

३७२. मणुस्स पच्चिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?

गोयमा ! वीरिय-सजोग-सहव्वयाए पमादपच्चया^१ •कम्मं च जोगं च भवं
च^० आउयं च पडुच्च मणुस्सपच्चिदियओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स
उदएणं मणुस्सपच्चिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ॥

३७३. ओरालियसरीरप्पयोगबधे णं भते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?

१. प० २१ ।

३. स० पा०—पमादपच्चया जाव आउय ।

२. सं० पा०—^०मणुस्स जाव बधे ।

गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ॥

३७४. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कि देसबधे ? सव्वबधे ?
एव चेव । एव पुढविककाइया एव जाव—

३७५. मणुस्सपच्चिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कि देसबधे ? सव्वबधे ?
गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ॥

३७६. ओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण
तिणिण पलिओवमाइ समयूणाइ^१ ॥

३७७. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेणं
वावीस वाससहस्साइं समयूणाइ ॥

३७८. पुढविककाइयएगिदियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेण खुड्ढागं^२ भवग्गहणं तिसमयूणं,
उक्कोसेण वावीस वाससहस्साइं समयूणाइ । एव सव्वेसि सव्वबधो एक्क
समय, देसबधो जेसि नत्थि वेउव्वियसरीर तेसि जहण्णेण खुड्ढाग भवग्गहणं
तिसमयूणं, उक्कोसेणं जा सा ठिती सा समयूणा कायव्वा, जेसि पुण अत्थि
वेउव्वियसरीर तेसि देसबधो जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती
सा समयूणा कायव्वा जाव मणुस्साण देसबधे जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण
तिणिण पलिओवमाइ समयूणाइ ।

३७९. ओरालियसरीरवधंतरं ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधंतरं जहण्णेणं खुड्ढाग भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेण तेत्तीसं
सागरोवमाइं पुव्वकोडिसमयाहियाइ । देसबधंतरं जहण्णेण एक्कं समयं, उक्को-
सेण तेत्तीस सागरोवमाइ तिसमयाहियाइ ॥

३८०. एगिदियओरालियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधंतरं जहण्णेण खुड्ढाग भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं वावीस
वाससहस्साइं समयाहियाइ । देसबधंतरं जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेणं
अतोमुहुत्तं ॥

३८१. पुढविककाइयएगिदियपुच्छा ।
सव्वबधंतरं जहेव एगिदियस्स तहेव भाणियव्व । देसबधंतरं जहण्णेण एक्कं
समय, उक्कोसेण तिणिण समया । जहा पुढविककाइयाण एवं जाव चउरिदियाणं
वाउक्काइयवज्जाण, नवरं—सव्वबधंतरं उक्कोसेण जा जस्स ठिती सा समया-

हिया कायव्वा । वाज्जकाइयाणं सव्ववंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं समयाहियाइं । देसवंधंतरं जहण्णेणं एकं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८२. पंचिदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा ।

सव्ववंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी समयाहिया । देसवंधंतरं जहा एगिदियाणं तहा पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं, एव मणुस्साण वि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८३. जीवस्स णं भते ! एगिदियत्ते, नोएगिदियत्ते, पुणरवि एगिदियत्ते एगिदियओरालियसरीरप्पयोगवंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! सव्ववंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोदमसहस्साइं सखेज्जवासमव्वहियाइं । देसवंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोदमसहस्साइं सखेज्जवासमव्वहियाइं ॥

३८४. जीवस्स णं भते ! पुढविव्काइयत्ते, नोपुढविव्काइयत्ते, पुणरवि पुढविव्काइयत्ते पुढविव्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगवंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! सव्ववंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं अणतं कालं—अणताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, ते ण पोग्गलपरियट्ठा आवलियाए असंखेज्जइभागो । देसवंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं अणतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो । जहा पुढविव्काइयाण एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साण । वणस्सइकाइयाणं दोण्णि खुड्डाइं एव चेव, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा, एवं देसवंधंतरं पि उक्कोसेणं पुढविकालो ॥

३८५. एएसि णं भते ! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसवंधगाणं, सव्ववंधगाणं, अवंधगाणं य कयरे कयरेहितो ? अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्ववंधगा, अवंधगा विसेसाहिया, देसवंधगा असंखेज्जगुणा ॥

१. एवं चेव (अ, क, ता, व, म); तिसमयूणाइं दृश्यम् ।

एवं चेव (स); अत्र द्वयोर्मिश्रणं जातम् । २. तल्कालो वण ° (ता) ।

‘एवं चेव’ ति करणात् ‘तिसमयूणाइं’ ति ३. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

वेउव्वियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३८६. वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—एगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे य पचे-
 दियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे य ॥
३८७. जइ एगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे कि वाउक्काइयएगिदियसरीरप्पयोग-
 वधे ? अवाउक्काइयएगिदियसरीरप्पयोगवधे ?
 एव एएणं अभिलावेण जहा अगोहाहणसठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो
 जाव पज्जत्तासव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपच्चिदियवेउव्विय-
 सरीरप्पयोगवधे य, अपज्जत्तासव्वट्टसिद्धं *अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमा-
 णियदेवपच्चिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे य ॥
३८८. वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
 गोयमा ! वीरिय-सजोग-सहव्वयाए* पमादपच्चया कम्म च जोग च भव च °
 आउयं 'च लद्धि वा' पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण
 वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ॥
३८९. वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगपुच्छा ।
 गोयमा ! वीरिय-सजोग-सहव्वयाए एव चेव जाव लद्धि पडुच्च वाउक्काइय-
 एगिदियवेउव्विय *सरीरप्पयोग° वधे ॥
३९०. रयणप्पभापुढविनेरइयपच्चिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स
 कम्मस्स उदएण ?
 गोयमा ! वीरिय-सजोग-सहव्वयाए जाव आउय वा पडुच्च रयणप्पभा-
 पुढवि*नेरइयपच्चिदियवेउव्वियसरीरप्पयोग° वधे, एव जाव अहेसत्तमाए ॥
३९१. तिरिक्खजोणियपच्चिदियवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
 गोयमा ! वीरिय-सजोग-सहव्वयाए जहा वाउक्काइयाणं । मणुस्सपच्चिदिय-
 वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे एव चेव । असुरकुमारभवणवासिदेवपच्चिदिय-
 वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं । एव जाव थणिय-
 कुमारा । एव वाणमतरा । एव जोइसिया । एवं सोहम्मकप्पोवया° वेमाणिया ।
 एव जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया । अणुत्तरोववाइयकप्पातीया
 वेमाणिया एव चेव ।

१. प० २१ ।

भ, स) ।

२. स० पा०—°सिद्ध जाव पयागवधे ।

५. स० पा०—°वेउव्विय जाव वधे ।

३. स० पा०—सहव्वयाए जाव आउय ।

६ स० पा०—°पुढवि जाव वधे ।

४. वा लद्धि (अ); वा लद्धि वा (क, ता, व,

७. °कप्पोवा (ता) ।

३६२. वेउव्वियसरीरप्पयोगबधे णं भंते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?
 गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ।
 वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबधे वि एव चेव । रयणप्पभापुढवि-
 नेरइया एव चेव । एव जाव अणुत्तरोववाइया ॥
३६३. वेउव्वियसरीरप्पयोगबधे णं भंते । कालओ केवच्चिर होइ ?
 गोयमा ! सव्वबधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया । देसबधे
 जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइ ॥
३६४. वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियपुच्छा ।
 गोयमा ! सव्वबधे एक्कं समयं, देसबधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेण
 अतोमुहुत्त ॥
३६५. रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा ।
 गोयमा ! सव्वबधे एक्कं समयं, देसबधे जहण्णेणं दसवाससहस्साइ
 तिसमयूणाइ, उक्कोसेणं सागरोवमं समयूण । एवं जाव अहे सत्तमा, नवर—
 देसबधे जस्स जा जहण्णिया ठिती सा तिसमयूणा कायव्वा जाव उक्कोसिया
 सा समयूणा । पंचिदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं,
 असुरकुमार-नागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं, नवर—जस्स
 जा ठिती सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाण सव्वबधे एक्कं समयं,
 देसबधे जहण्णेणं एक्कतीस सागरोवमाइं तिसमयूणाइ^१, उक्कोसेणं तेत्तीस
 सागरोवमाइ समयूणाइ ॥
३६६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबधतर णं भंते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
 गोयमा ! सव्वबधंतर जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणत कालं—अणताओ^२
 •ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेतओ अणता लोगा—असखेज्जा
 पोगलपरियट्ठा, ते णं पोगलपरियट्ठा^३ आवलियाए असखेज्जभागो । एवं
 देसबधंतरं पि ॥
३६७. वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
 गोयमा ! सव्वबधंतरं जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स
 असखेज्जभाग । एवं देसबधंतरं पि ॥
३६८. तिरिक्खजोणियपंचिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबधतरं—पुच्छा ।
 गोयमा ! सव्वबधंतरं जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडीपुहत्तं । एव
 देसबधतरं पि । एवं मणूसस्स वि^४ ॥

१. तिसमयूणाइं (क, ता, ब) ।

३. मणुस्स (क, म); मणुस्सा (ता, ब) ।

२. सं० पा०—अणताओ जाव आवलियाए ।

३६६. जीवस्स णं भते । वाउक्काइयत्ते, नोवाउकाइयत्ते, पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतरं जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणत कालं—वणस्सइ-
कालो । एव देसबधतरं पि ॥
४००. जीवस्स णं भते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, नोरयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, पुणरवि रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतरं जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । देसबधतरं जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणतं कालं—वणस्सइकालो । एव जाव अहेसत्तमाए, नवरं—जा जस्स ठिती जहण्णिया सा सव्वबधतरं जहण्णेण अतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव । पच्चिदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्साणं य जहा वाउक्काइयाणं । असुर-
कुमार-नागकुमार जाव सहस्सारदेवाण—एएसिं जहा रयणप्पभापुढविनेर-
इयाण, नवरं—सव्वबधतरं जस्स जा ठिती जहण्णिया सा अतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ॥
४०१. जीवस्स णं भते ! आणयदेवत्ते, नोआणयदेवत्ते, पुणरवि आणयदेवत्ते पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतरं जहण्णेण अट्टारस सागरोवमाइं वासपुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं अणत कालं—वणस्सइकालो । देसबधतरं जहण्णेण वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणत कालं—वणस्सइकालो । एव जाव अच्चुए, नवरं—जस्स जा ठिती सा सव्वबधतरं जहण्णेण वासपुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ॥
४०२. गेवेज्जाकप्पातीतापुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतरं जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ वासपुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं अणत कालं—वणस्सइकालो । देसबधतरं जहण्णेण वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥
४०३. जीवस्स णं भते ! अणुत्तरोववाइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतरं जहण्णेण एकतीसं सागरोवमाइ वासपुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सखेज्जाइ सागरोवमाइ । देसबधतरं जहण्णेण वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं सखेज्जाइ सागरोवमाइ ॥
४०४. एएसिं णं भते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबधगाणं यं कयरे कयरेहिं ? *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?
विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबधगा, देसबधगा अस्सखेज्जगुणा, अबधगा अणतगुणा ।

आहारगसरीरप्पयोगं पडुच्च —

४०५. आहारगसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥
४०६. जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पयोगवंधे ? अमणुस्साहारग-
 सरीरप्पयोगवंधे ?
 गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगवंधे, नो अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगवंधे ।
 एवं एएणं अभिलावेण जहा ओगाहणसठाणे जाव^१ इड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्म-
 दिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमागवभवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोग-
 वंधे, नो अणिड्ढिपत्तपमत्त^२ सजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमा-
 गवभवक्कंतियमणुस्सा^३ हारगसरीरप्पयोगवंधे ॥
४०७. आहारगसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! वीरिय-सजोग-सह्वयाए^४ पमादपच्चया कम्मं च जोग च भवं च
 आउयं च^५ लद्धि वा पडुच्च^६ आहारगसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं
 आहारगसरीरप्पयोगवंधे ॥
४०८. आहारगसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! किं देसवंधे ? सव्ववंधे ?
 गोयमा ! देसवंधे वि, सव्ववंधे वि ॥
४०९. आहारगसरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! सव्ववंधे एकं समयं, देसवंधे जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि
 अंतोमुहुत्तं ॥
४१०. आहारगसरीरप्पयोगवंधंतर^१ णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! सव्ववंधंतरं जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण अणतं काल—अणताओ
 ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेतओ अणंता लोका—अवड्ढपोमल-
 परियट्ठं देसूणं । एवं देसवंधंतरं पि ॥
४११. एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसवंधगाणं, सव्ववंधगाणं, अवंध-
 गाणं यं कयरे कयरोहिती^४ अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?^५ विसेसा-
 हिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्ववंधगा, देसवंधगा संखेज्ज-
 गुणा, अवंधगा अणतगुणा ॥

१. प० २१ ।

२. स० पा०—^०पमत्तं जाव आहारग^० ।

३. स० पा०—सह्वयाए जाव लद्धि ।

४. पडुच्चा (ता, व) ।

५. ^०वधतरे (अ, क, स) ।

६. सं० पा०—कयरोहिती जाव विसेसाहिया ।

तेयासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१२. तेयासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कत्तिविहे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! पच्चविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिदियतेयासरीरप्पयोगबधे, बेइदिय-
 तेयासरीरप्पयोगबधे जाव पच्चिदियतेयासरीरप्पयोगबधे ॥
४१३. एगिदियतेयासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कत्तिविहे पण्णत्ते ?
 एव एएणं अभिलावेण भेदो जहा ओगाहणसठाणे जाव^१ पज्जत्तासव्वट्टसिद्धअणु-
 त्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपच्चिदियतेयासरीरप्पयोगबधे य, अपज्जत्ता-
 सव्वट्टसिद्ध अणुत्तरोववाइय^२ •कप्पातीतवेमाणियदेवपच्चिदियतेयासरीरप्पयोग^३ -
 बधे य ॥
४१४. तेयासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
 गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्ववयाए^४ •पमादपच्चया कम्म च जोगं च भव च^५
 आउय वा^६ पडुच्च तेयासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण तेयासरीरप्प-
 योगबधे ॥
४१५. तेयासरीरप्पयोगबधे णं भंते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?
 गोयमा ! देसबधे, नो सव्वबधे ॥
४१६. तेयासरीरप्पयोगबधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अणादीए^७ वा अपज्जवसिए, अणादीए वा
 सपज्जवसिए ॥
४१७. तेयासरीरप्पयोगबधतर णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! अणादीयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अतरं, अणादीयस्स सपज्जव-
 सियस्स नत्थि अतर ॥
४१८. एएसि ण भंते ! जीवाण तेयासरीरस्स देसबधगाणं, अबधगाण य कयरे कयरे-
 हितो^८ •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^९ विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबधगा, देसबधगा अणतगुणा ॥

कम्मासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१९. कम्मासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कत्तिविहे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! अट्टविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे
 जाव अतराइयकम्मासरीरप्पयोगबधे ॥

१. प० २१ ।

२. स० पा०—^०वाइय जाव वधे ।

३. स० पा०—सद्ववयाए जाव आउयं ।

४. च (ता, व, म) ।

५. अणादिए (ता) ।

६. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

४२०. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवंधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! नाणपडिणीययाए, नाणणिह्वणयाए, नाणंतराएण, नाणप्पदोसेणं,
 नाणच्चासातणयाए^१, नाणविसंवादणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोग-
 नामाए^२ कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवंधे ॥
४२१. दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! दंसणपडिणीययाए, *दंसणणिह्वणयाए, दंसणतराएण, दंसणप्प-
 दोसेणं, दंसणच्चासातणयाए^३, दंसणविसंवादणाजोगेणं दसणावरणिज्जकम्मा-
 सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं *दरिसणावरणिज्जकम्मासरीर^४प्पयोग-
 वंधे ॥
४२२. सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, *जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए,
 बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए
 अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए^५ अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्प-
 योगनामाए कम्मस्स उदएण सायावेयणिज्जकम्मा^६सरीरप्पयोग^७वंधे ॥
४२३. असायावेयणिज्ज*कम्मासरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, *परजूरणयाए, परतिप्पणयाए,
 परपिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खण-
 याए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए^८ परियावणयाए असाया-
 वेयणिज्जकम्मा^९सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण असायावेयणिज्जकम्मा-
 सरीर^{१०}प्पयोगवंधे ॥
४२४. मोहणिज्जकम्मासरीर^{११}प्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! तिब्बकोहयाए, तिब्बमाणयाए, तिब्बमाययाए तिब्बलोभयाए,
 तिब्बदंसणमोहणिज्जयाए, तिब्बचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीर^{१२}-
 *प्पयोगनामाए कम्मस उदएणं मोहणिज्जकम्मासरीर^{१३}प्पयोगवंधे ॥

-
१. °सादणाए (अ); सादणताए (क, ब, म); ६. सं० पा०—°कम्मा जाव वंधे ।
 °सातणाताए (ता) । ७. सं० पा०—पुच्छा ।
२. नाणावरणिज्ज° (अ, स) । ८. सं० पा०—जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए
 जाव परिया° ।
३. सं० पा०—एवं जहा नाणावरणिज्जं, नवरं- ९. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
 दंसणनामं धेतव्वं जाव दंसण° ।
४. सं० पा०—उदएणं जाव पयोग° । १०. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए ११. सं० पा०—°सरीर जाव पयोग° ।
 जाव अपरिया° ।

४२५. नेरइयाउयकम्मासरीर^१•पयोगबन्धे णं भत्ते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! महारभयाए, महापरिग्गहयाए, 'पंचिदियवहेणं, कूणिमाहारेणं'^२ नेर-
 इयाउयकम्मासरीरपयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीर-
 पयोगबन्धे ॥
४२६. तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर^३•पयोगबन्धे णं भत्ते ! कस्स कम्मस्स
 उदएणं ?
 गोयमा ! भाइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुलं-कूडमाणेणं
 तिरिक्खजोणियाउयकम्मा^४•सरीरपयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तिरिक्खजो-
 णियाउयकम्मासरीर^५•पयोगबन्धे ॥
४२७. मणुस्साउयकम्मासरीर^६•पयोगबन्धे णं भत्ते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! पगइभट्ठयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए^७, अमच्छरियाए मणु-
 स्साउयकम्मा^८•सरीरपयोगनामाए कम्मस्स उदएणं मणुस्साउयकम्मासरीर-
 •पयोगबन्धे ॥
४२८. देवाउयकम्मासरीर^९•पयोगबन्धे णं भत्ते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! सरागसज्जेणं, सज्जमासंज्जेणं, बालतवोक्कमेणं^{१०}, अकामनिज्जराए
 देवाउयकम्मा^{११}•सरीरपयोगनामाए कम्मस्स उदएणं देवाउयकम्मासरीर^{१२}-
 पयोगबन्धे ॥
४२९. सुभनामकम्मासरीर^{१३}•पयोगबन्धे णं भत्ते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! काउज्जुययाए^{१४}, 'भावुज्जुययाए, भासुज्जुययाए',^{१५} अविसंवादाणाजोगेणं
 सुभनामकम्मा^{१६}•सरीरपयोगनामाए कम्मस्स उदएणं सुभनामकम्मासरीर-
 पयोगबन्धे ॥
४३०. असुभनामकम्मासरीर^{१७}•पयोगबन्धे णं भत्ते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
 गोयमा ! कायअणुज्जुययाए, भावअणुज्जुययाए, 'भासअणुज्जुययाए विसंवाद-

१. सं० पा०—पुच्छा ।

६. सं० पा०—पुच्छा ।

२. कूणिमाहारेण, पंचिदियवहेण (क, व, म) ।

१०. बालतवेण (व) ।

३. सं० पा०—पुच्छा ।

११. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।

४. °तोल (अ); °तुल्ल (स) ।

१२. सं० पा०—पुच्छा ।

५. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।

१३. कायजुययाए (अ); कायउज्जुययाए (स) ।

६. सं० पा०—पुच्छा ।

१४. भासुज्जुययाए भावुज्जुययाए (ता) ।

७. साणुक्कोसियाए (अ); साणुक्कोसयाए (क)

१५. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।

८. सं० पा०—पुच्छा ।

१६. सं० पा०—पुच्छा ।

णाजोगेणं^१ असुभनामकम्मा^२ सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अनुभनाम-
कम्मासरीर^३ प्पयोगवंधे ॥

४३१. उच्चागोयकम्मासरीर^४ प्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? °

गोयमा ! जातिअमदेणं, कुलअमदेणं, वलअमदेणं, हवअमदेणं, तवअमदेणं,
'सुयअमदेणं, लाभअमदेणं', इस्सरियअमदेणं' उच्चागोयकम्मा^५ सरीरप्पयोग-
नामाए कम्मस्स उदएणं उच्चागोयकम्मासरीर^६ प्पयोगवंधे ॥

४३२. नीयागोयकम्मासरीर^७ प्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? °

गोयमा ! जातिमदेणं, कुलमदेणं, वलमदेणं^८, हवमदेणं, तवमदेणं. मुयमदेणं,
लाभमदेणं^९, इस्सरियमदेणं' नीयागोयकम्मा^{१०} सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स
उदएणं नीयागोयकम्मासरीर^{११} प्पयोगवंधे ॥

४३३. अंतराइयकम्मासरीर^{१२} प्पयोगवंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? °

गोयमा ! दाणंतराएणं, लाभंतराएणं, भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं, वीरियं-
तराएणं, अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मा-
सरीरप्पयोगवंधे ॥

पयोगवंधस्स देसवंध-सव्ववंध-पदं

४३४. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! किं देसवंधे ? सव्ववंधे ?

गोयमा ! देसवंधे, नो सव्ववंधे । एवं जाव अंतराइयं ॥

४३५. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवंधे णं भंते ! कालवो केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जह्वा—अणादीए^{१३} वा अपज्जवसिए, अणादीए वा
सपज्जवसिए^{१४} । एव जाव अंतराइयस्स ॥

४३६. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगवंधंतरं णं भंते ! कालवो केवच्चिरं होइ ?

गोयमा ! अणादीयस्स^{१५} अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्ज-
वसियस्स नत्थि अंतरं^{१६} । एवं जाव अंतराइयस्स ॥

४३७. एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसवंधगाणं, अवंधगाणं

१. वायअणुज्जुययाए भावअणुज्जुययाए (ता) । ६. तिस्सरिय ° (म) ।

२. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग ° । १०. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग ° ।

३. सं० पा०—पुच्छा । ११. सं० पा०—पुच्छा ।

४. लाभअमदेणं, सुयअमदेणं (अ) । १२. सं० पा०—एवं जह्वा तेयगस्स संविट्ठणा
तद्देव ।

५. तिस्सरिय ° (म) । १३. सं० पा०—एवं जह्वा तेयगसरीरन्स अंतर

६. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग ° । तद्देव ।

७. सं० पा०—पुच्छा ।

८. सं० पा०—वलमदेणं जाव इस्सरिय ° ।

य कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स अबंधगा देसबंधगा,
अणंतगुणा^० । एवं आउयवज्जं जाव अंतराइयस्स ॥

४३८. आउयस्स पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा ॥

४३९. जस्स ण भते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भते ! वेउव्वियसरीरस्स
किं बंधए ? अबंधए ?

गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ॥

आहारगसरीरस्स^१ किं बंधए ? अबंधए ?

गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ॥

तेयसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?

गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।

जइ बंधए किं देसबन्धए ? सव्वबंधए ?

गोयमा ! देसबन्धए, नो सव्वबंधए ।

कम्मासरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?

*गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।

जइ बंधए किं देसबन्धए ? सव्वबंधए ?

गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४०. जस्स ण भते ! ओरालियसरीरस्स देसबन्धे, से णं भते ! वेउव्वियसरीरस्स किं
बन्धए ? अबन्धए ?

गोयमा ! नो बन्धए, अबन्धए । एव जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि
भाणियव्व जाव कम्मगस्स ॥

४४१. जस्स णं भते ! वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भते ! ओरालियसरीरस्स
किं बन्धए ? अबन्धए ?

गोयमा ! नो बन्धए, अबन्धए । आहारगसरीरस्स एवं चेव । तेयगस्स कम्मगस्स
य जहेव ओरालिएण सम भणियं तहेव भाणियव्वं जाव देसबंधए, नो
सव्वबंधए ॥

४४२. जस्स ण भते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबन्धे, से णं भते ! ओरालियसरीरस्स
किं बन्धए ? अबन्धए ?

१. सं० पा०—करयरेहितो जाव अप्पाबहुय
जहा तेयगस्स ।

३. सं० पा०—जहेव तेयगस्स जाव देसबन्धए ।

४. भ० ८।४३९ ।

२. आहारगसरीरस्स (ता, व) ।

- गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहेव सव्वबंधेण भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥
४४३. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
- गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं वेजव्वियस्स वि । तेया-कम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं ॥
४४४. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
- गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहा आहारगस्स सव्वबंधेणं भणिय तहा देस-बंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥
४४५. जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
- गोयमा ! बंधए वा, अबंधए वा ।
- जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
- गोयमा ! देसबंधए वा, सव्वबंधए वा ?
- वेजव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
- एवं चेव । एवं आहारगस्स^१ वि ।
- कम्मगसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
- गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
- जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
- गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥
४४६. जस्स णं भंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
- गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा जाव—
- तेयासरीरस्स^२ किं बंधए ? अबंधए ?
- गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
- जइ बंधइ किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
- गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥
४४७. एसि णं भंते ! जीवाणं^३ ओरालिय-वेजव्विय-आहारग-तेयाकम्मासरीरगणं

१. भ० ८।४३३।

२. आहारगसरीरस्स (अ, स) ।

३. स० पा०—तेयासरीरस्स जाव देसबंधए ।

४. सव्वजीवाणं (अ, स) ।

देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाणं यं कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १. सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा २. तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा ३. वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असखेज्जगुणा ४. तस्स चेव देसबंधगा असखेज्जगुणा ५. तेया-कम्मगाणं^१ अबंधगा अणंतगुणा ६. ओरा-लियसरीरस्स सव्वबंधगा अणंतगुणा ७. तस्स चेव अबंधगा विसेसाहिया ८. तस्स चेव देसबंधगा असखेज्जगुणा ९. तेया-कम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया १०. वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ११. आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ॥

४४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^१ ॥

दसमो उद्देशो

सुय-सील-पद

४४९. रायगिहे नगरे जाव^१ एव वयासी—अण्णउत्थिया णं भते ! एवमाइक्खति जाव^१ एवं पख्वेति—एवं खलु १ सीलं सेयं २ सुयं सेयं ३. 'सुयं सीलं सेयं'^१ ॥

४५०. से कहमेयं भते ! एव ?

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव^१ जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव^१ पख्वेमि—

एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—१. सीलसंपन्ने नामं एगे नो सुयसपन्ने २ सुयसपन्ने नाम एगे नो सीलसंपन्ने ३. एगे सीलसंपन्ने वि सुयसपन्ने वि ४. एगे नो सीलसपन्ने नो सुयसपन्ने ।

तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं असुयवं—उवरए, अविण्णा-यधम्मे । एस ण गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ।

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

५. अ० १।४२० ।

२. ० गाणं दोण्हं वि तुल्ला (अ, ता, स) ।

६. सुयं सेयं सीलं सेयं (क, ता, व, स, वृ) ।

३. अ० १।५१ ।

७. अ० ८।४४९ ।

४. अ० १।४-१० ।

८. अ० १।४२१ ।

तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं—अणुवरए,
विण्णायधम्मे । एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते ।
तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं सुयवं—उवरए, विण्णाय-
धम्मे । एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सब्बाराहए पण्णत्ते ।
तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं असुयवं—अणुवरए,
अविण्णायधम्मे । एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सब्बविराहए पण्णत्ते ।

आराहणा-पदं

४५१. कतिविहा णं भंते ! आराहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—नाणाराहणा, दंसणाराहणा,
चरित्ताराहणा ॥
४५२. नाणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥
४५३. दंसणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
१० गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥
४५४. चरित्ताराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता !
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥^{१०}
४५५. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ? जस्स
उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
गोयमा ! 'जस्स उक्कोसिया'^{११} नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा
अजहण्णुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा
उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा ॥
४५६. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ?
जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
१० गोयमा ! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा
अजहण्णुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स नाणाराहणा
उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा^{१०} ॥
४५७. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ?
जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ?

१. सं० पा०—एव चेव तिविहा वि, एव चरि-
त्ताराहणा वि ।

२. जस्सुक्कोसिया (अ, ता, व) ।

३. सं० पा०—जहा उक्कोसिया नाणाराहणा
य दंसणाराहणा य माणिया तथा उक्कोसिया
नाणाराहणा य चरित्ताराहणा य माणियव्वा ।

गोयमा ! जरस उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा^१ वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दसणाराहणा नियमा उक्कोसा ॥

४५८. उक्कोसियण्ण^२ भते ! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव^३ सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्येगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति^४, अत्येगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति ॥

४५९. उक्कोसियण्ण भते ! दसणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि^५ सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्येगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, अत्येगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति^६ ॥

४६०. उक्कोसियण्ण भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता^७ कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्येगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति,^८ अत्येगतिए कप्पातीएसु उववज्जति ॥

४६१. मज्झिमियण्ण भते ! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्येगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, तच्च पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

४६२. मज्झिमियण्ण भते ! दसणाराहण आराहेत्ता^९ कतिहिं भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्येगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अत करेति, तच्च पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥

४६३. मज्झिमियण्ण भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्येगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अत करेति, तच्च पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ^{१०} ॥

१. उक्कोसिया (व, स) ।

५. स० पा०—एव चैव ।

२. उक्कोसिया ण (अ, क, व, स); उक्कोसिय ण (ता) ।

६. स० पा०—एव चैव नवरं अत्येगतिए ।

३. स० १।४४ ।

७. स० पा०—एव चैव एव मज्झिमिय चरित्ता-
राहण पि ।

४. करेति, अत्येगतिए दोच्चे ण भवग्गहणेण
सिज्झति जाव अत करेति (क, व, म, स) ।

४६४. जहणियणं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
 गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ॥
४६५. १०जहणियणं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
 गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ॥
४६६. जहणियणं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
 गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ॥

पोगलपरिणाम-पदं

४६७. कतिविहे णं भंते ! पोगलपरिणामे पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे पोगलपरिणामे पणत्ते, तं जहा—वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे, संठाणपरिणामे ॥
४६८. वण्णपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, तं जहा—कालवण्णपरिणामे जाव^१ सुक्किलवण्णपरिणामे । एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे ॥
४६९. संठाणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव^१ आयत-संठाणपरिणामे ॥

पोगलपएसस्स दब्बादीहि भंग-पदं

४७०. एगे^१ भंते ! पोगलत्थिकायपदेसे कि १. दव्वं ? २. दव्वदेसे ? ३. दव्वाइं ? ४. दव्वदेसा ? ५. उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य ? ६. उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य ? ७. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसे य ? ८. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य ?

१. सं० पा०—एवं दंसणाराहणं पि, एवं चरि- ३. भ० ८।३६ ।

त्ताराहणं पि ।

४. एगे णं (ज) ।

२. भ० ८।३६ ।

गोयमा ! १. सिय दव्वं २ सिय दव्वदेसे ३. नो दव्वाइं ४. नो दव्वदेसा ५. नो दव्व च दव्वदेसे य ६ नो दव्वं च दव्वदेसा य ७. नो दव्वाइं च दव्वदेसे य ८. नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

४७१. दो भते ! पोगलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ? दव्वदेसे ?—पुच्छा^१ ।

गोयमा ! सिय दव्वं, सिय दव्वदेसे, सिय दव्वाइं, सिय दव्वदेसा, सिय दव्वं च दव्वदेसे य^२ । सेसा पडिसेहेयव्वा ॥

४७२. तिण्णि भते पोगलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ? दव्वदेसे ?—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, एव सत्त भंगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसे य, नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

४७३. चत्तारि भते ! पोगलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ?—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, अट्ठ वि भगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य । जहा चत्तारि भणिया एव पच्च, छ, सत्त जाव असखेज्जा ॥

४७४. अणंता भते ! पोगलत्थिकायपदेसा कि दव्वं ?

एवं नेव जाव सिय दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

पएस-परिमाण-पदं

४७५. केवतिया ण भते ! लोयागासपदेसा पणत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा लोयागासपदेसा पणत्ता ॥

४७६. एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स केवइया जीवपदेसा पणत्ता ?

गोयमा ! जावतिया लोयागासपदेसा, एगमेगस्स ण जीवस्स एवतिया जीवपदेसा पणत्ता ॥

कम्माणं अविभागपलिच्छेद-पदं

४७७. कति णं भते ! कम्मपगडीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पणत्ताओ, त जहा—नण्णावरणिज्जं जाव^३ अंतराइयं ॥

४७८. नेरइयाणं भते ! कति कम्मपगडीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ । एवं सब्बजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं ॥

१. पुच्छा तद्देव (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. अ० ६।३३ ।

२. य नो दव्व च दव्वदेसा य (अ, क, ता, व, म, स) ।

४७६. नाणावरणिज्जस्स ण भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ॥
४८०. नेरइयाणं भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ॥
४८१. एव सव्वजीवाण जाव वेमाणियाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीण भाणियव्वा जाव वेमाणियाण अतराइयस्स^१ ॥
४८२. एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केव-
 तिएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
 गोयमा ! सिय आवेढिय-परिवेढिए, सिय नो आवेढिय-परिवेढिए । जइ आवे-
 ढिय-परिवेढिए नियमा अणतेहि ॥
४८३. एगमेगस्स णं भते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स
 केवतिएहि^२ अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
 गोयमा ! नियम अणतेहि । जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवरं—
 मणूसस्स जहा जीवस्स ॥

कम्माणं परोप्परं नियमा-भयणा-पदं

४८४. एगमेगस्स ण भते । जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे दरिस्सणावरणिज्जस्स कम्मस्स
 केवतिएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?-
 गोयमा ! नियम अणतेहि । जहा जीवस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवर—
 मणूसस्स जहा जीवस्स । एव जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दडगो भाणियव्वो
 जाव वेमाणियस्स । एव जाव अतराइयस्स भाणियव्व, नवर—वेयणिज्जस्स,
 आउयस्स, नामस्स, गोयस्स—एएसि चउण्ह वि कम्माण मणूसस्स जहा नेरइय-
 स्स तहा भाणियव्वं । सेसं तं चेव ॥
४८५. जस्स णं भते ! नाणावरणिज्ज तस्स दरिस्सणावरणिज्ज ? जस्स दसणावरणि-
 ज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?
 गोयमा ! जस्स ण नाणावरणिज्ज तस्स दसणावरणिज्ज नियम अत्थि, जस्स
 णं दरिस्सणावरणिज्ज तस्स वि नाणावरणिज्ज नियम अत्थि ॥
४८६. जस्स ण भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्ज ? जस्स वेयणिज्ज तस्स नाणा-
 -वरणिज्जं ?

१. अतरातियस्स (अ, स); अतरादियस्स (ता) २. केवइहि (ता) ।

गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं^१ अत्थि जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ॥

४८७. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?

गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४८८. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स आउयं ? ^२जस्स आउयं तस्स नाणावरणिज्जं ?

गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ।^३ एव नामेण वि, एव गोएण वि समं, अंतराइएण जहा दरिस्सणावरणिज्जेण सम तहेव नियमं परोप्परं भाणियव्वं ॥

४८९. जस्स णं भंते ! दरिस्सणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? जस्स वेयणिज्जं तस्स दरिस्सणावरणिज्जं ?

जहा नाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भाणिय तहा दरिस्सणावरणिज्जं पि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं समं भाणियव्वं जाव अतराइएण ॥

४९०. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४९१. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स आउयं ? जस्स आउयं तस्स वेयणिज्जं ? एवं एयाणि परोप्परं नियमं । जहा आउएण सम एव नामेण वि गोएण वि समं भाणियव्वं ॥

४९२. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं ? ^४जस्स अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं ?

गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि ; जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४९३. जस्स णं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं ? जस्स आउयं तस्स मोहणिज्जं ? गोयमा ! जस्स मोहणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि । एवं नामं गोयं अंतराइयं च भाणियव्वं ॥

१. नितम (व) ।

३. सं० पा०—पुच्छा ।

२. सं० पा०—एव जहा वेयणिज्जेण सम ४. तस्स पुण (ज, क, ता, व, भ, स) ।

भाणिय तहा आउएण वि समं भाणियव्वं ।

४६४. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं ? ^{१०}जस्म नामं तस्स आउयं ? °
 गोयमा ! दो वि परोप्परं नियम । एवं गोत्तेण वि सम भाणियव्वं ॥
४६५. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अतराइय ? ^{१०}जस्स अतराइय तस्स आउय ? °
 गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण
 अंतराइयं तस्स आउयं नियम अत्थि ॥
४६६. जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोय ^{१०}जस्स गोयं तस्स नामं ? °
 गोयमा ! दो वि एए परोप्परं नियमा अत्थि ॥
४६७. जस्स णं भंते ! नामं तस्स अंतराइय ? ^{१०}जस्स अतराइय तस्स नामं ? °
 गोयमा जस्स नामं तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण
 अंतराइय तस्स नामं नियम अत्थि ॥
४६८. जस्स णं भंते ! गोय तस्स अतराइयं ? ^{१०}जस्स अतराइयं तस्स गोय ? °
 गोयमा ! जस्स गोय तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण
 अंतराइय तस्स गोय नियम अत्थि ॥

पोग्गलि-पोग्गल-पदं

४६९. जीवे णं भंते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
 गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥
५००. से केणट्टेणं भंते ! एव वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ?
 गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेण दंडी, घडेणं घडी, पडेण पडी,
 करेणं करी, एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय-
 जिब्भदिय-फासिदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीवं पडुच्च पोग्गले । से तेणट्टेणं
 गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥
५०१. नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली ! पोग्गले ?
 एवं चेव । एव जाव वेभाणिए, नवर—जस्स जइ इदियाइ तस्स तइ
 भाणियव्वाइं ॥
५०२. सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
 गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले ॥

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. सं० पा०—पुच्छा ।

३. सं० पा०—पुच्छा ।

४. सं० पा०—पुच्छा ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

५०३. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ^१—सिद्धे नो पोग्गली^२, पोग्गले ?

गोयमा ! जीवं पडुच्च । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिद्धे नो पोग्गली,
पोग्गले ॥

५०४. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति^३ ॥

—

१. स० पा०—वुच्चइ जाव पोग्गले ।

२. म० १।५१ ।

नवमं सतं

पढमो उद्देशो

१ जंबुद्दीवे २. जोइस, ३०. अतरदीवा ३१. असोच्च ३२. गंगेय ।
३३. कुडग्गामे ३४. पुरिसे, णवमम्मि सतम्मि चोत्तीसा ॥१॥

जंबुद्दीव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नगरी होत्था—वण्णओ^१ । माणिभद्दे^२
चेतिए—वण्णओ^३ । सामी समोसढे, परिसा निग्गता जाव^४ भगवं गोयमे पज्जु-
वासमाणे एवं वदासी—कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ! किसंठिए णं भंते !
जंबुद्दीवे दीवे ?
'एवं जंबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव^५ एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे
चोइस सलिला-सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवन्तीति भक्खाया'^६ ॥
२. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति" ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. माणभद्दे (ता, म) ।

३. ओ० सू०—२-१३ ।

४. भ० १।८-१० ।

५. ज० १-६ ।

६. वाचनान्तरे पुनरिदं कस्यते—जहा जंबुद्दीव- ७. भ० १।५१ ।

पण्णत्तीए तहा नेयत्व जोइसविहरणं जाव—

खडा जोयण वासा,

पव्वय कूडाए तित्थ सेढीओ ।

विजय इह सलिलाओ,

य पिडए होति सगहणी ॥ (वृ) ।

बीओ उद्देशो

जोइस-पदं

३. रायगिहे जाव^१ एव वयासी—जबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवइया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव^२—
एग च सयसहस्स, तेत्तीस खलु भवे सहस्साइं ।
नव य सया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीण^३ ॥१॥
सोभिसु^४, सोभिति, सोभिस्सति ॥
४. लवणे ण भते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव^५ ताराओ । धायइसडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अन्नमतपुक्खरद्धे^६, मणुस्सखेत्ते—एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव^७—
एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ॥
५. पुक्खरोदे ण भते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव सव्वेसु दीव-समुद्देसु जोतिसियाण^८ भाणियव्व जाव^९ सयभूरमणे जाव सोभिसु वा, सोभिति वा, सोभिस्सति वा ॥
६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^{१०} ॥

१. भ० १।४-१० ।

२. जी० ३ ।

३. ० कोडाकोडीण (ता, व, म) ।

४. सोभ सोभिसु (व, म) ।

५. जी० ३ ।

६. अन्नितर^० (स) ।

७. जी० ३ ।

८. जोतिस (क, ता, व, म) ।

९. जी० ३ ।

१०. म० १।५१ ।

३-३० उद्देसा

अंतरदीव-पदं

७. रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—कहि णं भते । दाहिणिल्लाणं एगूस्यमणुस्साणं^२ एगूस्यदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं 'चुल्लहिमवंतस्स वास-
हरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमे ण तिणिण
जोयणसयाइं ओगाहिता एत्थ ण दाहिणिल्लाणं एगूस्यमणुस्साण एगूस्यदीवे
नामं दीवे पण्णत्ते—तिणिण जोयणसयाइं आयाम-विक्खभेण, नव एगुणवन्ने
जोयणसए किंचिविसेसूणे परिकखेवेण । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य
वणसंडेणं सव्वओ समंता सपरिक्खत्ते । दोण्ह वि पमाण वण्णओ य । एवं
एएणं कमेणं^३ 'एवं जहा जीवाभिगमे जाव' सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा
णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !^४

एवं अट्टावीसं पि अंतरदीवा सएणं-सएणं आयाम-विक्खभेणं भाणियव्वा, नवरं
—दीवे-दीवे उद्देसओ, एवं सव्वे वि अट्टावीसं उद्देसगा ॥

८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति^५ ॥

एगतीसइमो उद्देसो

असोच्चा उवलद्धि-पदं

९. रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—असोच्चा णं भंते ! केवलस्स वा, केवलिसावगस्स
वा, केवलिसावियाए वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, तप्प-
क्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवा-
सगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्मं लभेज्जं सवणयाए ?

१. भ० १।४-१० ।

२. एगूस्य^० (अ); एगुस्य^० (ब, म); एगो-
रूप^० (स) ।

३. × (क ता) ।

४. जी० ३ ।

५. वाचनान्तरे त्विदं दृश्यते एवं जहा जीवा-

भिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए नेयव्वो नाएत
अट्टवणुसया उस्सेहो चाउसट्ठिपिट्टकरडया
अणुसज्जणा नत्थि (वृ) ।

६. भ० १।५१ ।

७. भ० १।४-१० ।

८. लभेज्जा (अ, म, स) ।

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ॥

१०. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे 'नो कडे' भवइ से णं असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—'असोच्चा णं' जाव नो लभेज्ज सवणयाए ॥

११. असोच्चा णं भते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्जेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्जेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्जेज्जा ॥

१२. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहिं नो बुज्जेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्जेज्जा, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं नो बुज्जेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहिं नो बुज्जेज्जा ॥

१३. असोच्चा णं भते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ॥

१४. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं धम्मतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, जस्स णं धम्मतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा

केवलं मुंडे भविता^१ अगाराओ अणगारियं^० नो पव्वएज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मुंडे भविता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ॥

१५. असोच्चा ण भते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बभचेर-
वास आवसेज्जा^२ ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्येगतिए केवल बभचेरवासं आवसेज्जा, अत्येगतिए केवल बभचेरवास नो आवसेज्जा ॥

१६. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बभचेरवास नो
आवसेज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बभचेरवास आवसेज्जा, जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बभचेरवास नो आवसेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बभचेरवासं नो आवसेज्जा ॥

१७. असोच्चा णं भते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं
संजमेणं संजमेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्येगतिए केवलेण संजमेणं सजमेज्जा, अत्येगतिए केवलेणं संजमेणं नो सजमेज्जा ॥

१८. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं सजमेणं नो
संजमेज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं सजमेणं सजमेज्जा, जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं नो सजमेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं सजमेणं नो सजमेज्जा ॥

१९. असोच्चा ण भते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं
संवरेणं संवरेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्येगतिए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, अत्येगतिए केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा ॥

१. सं० पा०—भवित्ता जाव नो ।

३. जाव अत्येगतिए (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. आवसेज्जा (ता, व) ।

४. जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

२०. से केणट्टेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संवरेणं नो सवरेज्जा ?

गोयमा ! जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं सवरेण सवरेज्जा, जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं सवरेण नो सवरेज्जा । से तेणट्टेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलेणं सवरेणं नो सवरेज्जा ॥

२१ असोच्चा ण भते केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणि-
बोहियनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२२ से केणट्टेणं भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! जस्स ण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा । से तेणट्टेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२३. असोच्चा ण भते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ?

●गोयमा ! असोच्चा ण केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल सुयनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२४. से केणट्टेणं भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

१. स० पा०—एव जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भाणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा, नवर—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एव चेव केवलं ओहिमाणं भाणियव्वे, नवर—ओहि-

नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एव केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवर—मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । ,

गोयमा ! जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२५. असोच्चा णं भंते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा केवल ओहिनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२६. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२७. असोच्चा णं भंते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा° ॥

२९. असोच्चा णं भंते ! केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?

‘गोयमा ! असोच्चा ण केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थे-
गतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

३०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माणं खए कडे भवइ से णं
असोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा,
जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाण कम्माणं खए नो कडे भवइ से णं असोच्चा
केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण नो उप्पाडेज्जा° ।
से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलनाण नो
उप्पाडेज्जा ॥

३१. असोच्चा’ णं भते । केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा—१. केवलि-
पण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए २. केवलं बोहि वुज्जेज्जा ३. केवलं मुडे भवित्ता
अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ४. केवलं बंभचेरवास आवसेज्जा ५. केव-
लेण सजमेण सजमेज्जा ६. केवलेण सवरेण सवरेज्जा ७. केवलं आभिणि-
बोहियनाणं उप्पाडेज्जा° ८. *केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ९. केवलं ओहिनाणं
उप्पाडेज्जा° १०. केवलं मणपज्जवनानं उप्पाडेज्जा ११. केवलनाणं
उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा ण केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा—१. अत्थे-
गतिए केवलपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलपण्णत्तं धम्मं
नो लभेज्ज सवणयाए २. अत्थेगतिए केवलं बोहि वुज्जेज्जा, अत्थेगतिए केवलं
बोहि नो वुज्जेज्जा ३. अत्थेगतिए केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं
पव्वएज्जा, अत्थेगतिए° *केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° नो पव्व-
एज्जा ४. अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभ-
चेरवास नो आवसेज्जा ५. अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए
केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ६. *अत्थेगतिए केवलेण सवरेण सवरेज्जा,
अत्थेगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा° ७. अत्थेगतिए केवलं आभिणि-
बोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए° *केवलं आभिणीबोहियनाणं° नो उप्पा-

१. सं० पा०—एव चेव, नवर—केवलनाणावरणि-
ज्जाणं कम्माणं खए भाणियव्वे, सेस त चेव ।

२. एकत्रिंशद्-द्वात्रिंशत् सूत्रयो पूर्वपादित एव
विषय. पुनरुक्तोस्ति । वृत्तिकृतात्र एका टिप्प-
णीकृतास्ति पूर्वोक्तानेवार्थान् पुनः समु-
दायेनाह (वृ), किन्तु समग्रविषयस्य पीनरु-

क्त्यदर्शनेन द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणं प्रती-
यते ।

३. सं० पा०—उप्पाडेज्जा जाव केवलं ।

४. सं० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।

५. सं० पा०—एव सवरेण वि ।

६. सं० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।

३९. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
 गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥
४०. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए, उक्कोसेण पच्चघणुसतिए होज्जा ॥
४१. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्टवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥
४२. से णं भंते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
 गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।
 जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-
 नपुसगवेदए होज्जा ? 'नपुसगवेदए होज्जा ?'
 गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुसगवेदए होज्जा',
 पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥
४३. से णं भंते ! कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
 गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।
 जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
 गोयमा ! चउसु—संजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥
४४. तस्स णं भंते ! केवइया अज्भवसाणा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! असंखेज्जा अज्भवसाणा पण्णत्ता ॥
४५. से णं भंते ! कि पसत्था ? अप्पसत्था ?
 गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥
४६. से णं भंते ! तेहि पसत्थेहि अज्भवसाणेहि वड्हमाणेहि अणतेहि नेरइयभवग्ग-
 हणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहितो अप्पाण
 विसजोएइ, अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि
 देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरि-
 क्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासि च णं ओव-
 ग्गहिए^१ अणंताणुबघी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अप्पच्चक्खाणक-
 साए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-
 माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता
 पच्चविह नाणावरणिज्ज, नवविह दरिसणावरणिज्ज, पच्चविह अतराइयं, ताल-

१. × (क, ब, म) ।

२. × (क, ब, म) ।

३. सकसादी (ब, ता) ।

४. उवग्गहिए (क, म, स) ।

मत्थाकड' च ण मोहणिज्ज कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपवि-
ट्टस्स' अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणा-
दसणे समुपज्जति ॥

४७. से ण भते ! केवलपण्णत्त धम्मं आघवेज्ज वा ? पणवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे, नणत्थ' एगनाएण वा, एगवागरणेण वा ॥

४८. से ण भते ! पव्वावेज्ज वा ? मुडावेज्ज वा ?

णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेस पुण करेज्जा ॥

४९. से णं भंते ! सिज्झति जाव' सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेति ॥

५०. से णं भंते ! कि उड्ढं होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरियं होज्जा ?
गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा । उड्ढं होमाणे'
सद्दावइ-वियडावइ-गधावइ-मालवतपरियाएसु वट्टवेयइडपव्वएसु होज्जा,
साहरण पडुच्च सोमणसवणे वा पडगवणे वा होज्जा । अहे होमाणे गड्ढाए वा
दरीए वा होज्जा, साहरणं पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा । तिरियं
होमाणे पणरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरण पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीव-समुद्द'-
तदेककदेसभाए होज्जा ॥

५१. ते ण भते ! एगसमए ण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एवको वा दो वा तिणिण वा, उक्कोसेण दस । से
तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण केवलस्स वा जाव तप्पक्खिय-
उवासियाए वा अत्येगतिए केवलपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्येगतिए
असोच्चा ण केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्त धम्मं नो
लभेज्ज सवणयाए जाव अत्येगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्येगतिए केवल-
नाण नो उप्पाडेज्जा ॥

१. °मत्थ° (अ, क); मत्था—अत्र एकपदे २. पविट्टस्स (अ, क, ता, स) ।

सन्धिजति. । वृत्ती अस्य व्याख्या एवमस्ति ३. अणत्थ (ता) ।

—मस्तक—मस्तकशुची कृत्त—छिन्न यस्यासौ ४. भ० १।४४ ।

मस्तककृत्त., तालश्चासौ मस्तककृत्तश्च ५. होज्जमाणे (व, स) ।

तालमस्तककृत्त, छान्दसत्वाच्चैव निर्देशः, ६. अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे (अ, स) ।

तालमस्तककृत्त. इव यत्ततालमस्तककृत्तम्
(वृ) ।

सोच्चा उवलद्धि-पदं

५२. सोच्चा णं भते । केवलस्स वा,^१ *केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्म लभेज्ज सवणयाए ?

गोयमा ! सोच्चा ण केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्येगतिए केवलपण्णत्तं धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्येगतिए केवलपण्णत्तं धम्म नो लभेज्ज सवणयाए ॥

५३. से केणट्ठेणं भते । एव वुच्चइ—सोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?

गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण सोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्म लभेज्ज सवणयाए, जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं सोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्म नो लभेज्ज सवणयाए । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए^० ॥

५४. एवं 'जा चेव'^१ असोच्चाए वत्तव्वया 'सा चेव'^२ सोच्चाए वि भाणियव्वा, तवर—अभिलावो सोच्चे त्ति, सेस त चेव निरवसेसं जाव जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माणं खए कडे भवइ से ण सोच्चा केवलस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवल बोहि बुज्जेज्जा जाव^३ केवलनाणं उप्पाडेज्जा ॥

५५. तस्स णं अट्ठमअट्ठमेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाणं भावेमाणस्स पगइभइयाए, *पगइउवसंतयाए, पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्वसपन्तयाए, अत्लीणयाए, विणीययाए, अण्णया कयावि सुभेण अज्झवसाणेणं, सुभेण परिणामेण, लेस्साहि विसुज्झमाणीहि-विसुज्झमाणीहि तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणं गवेसणं करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ । से ण तेण ओहिनाणेणं समुप्पन्नेण जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जतिभागं, उवकोसेणं असखेज्जाइ अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइ खडाइ जाणइ-पासइ ॥

-
१. सं० पा०—वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चा णं केवलस्स वा जाव अत्येगतिए केवलपण्णत्तं धम्म ।
२. जच्चेव (क, ता, म); जहेव (स) ।
३. सच्चेव (क, ता, व, म) ।
४. भ० ६।११-३२ ।
५. सं० पा०—तहेव जाव गवेसण ।

५६. से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव' सुक्कलेस्साए ॥
५७. से ण भते ! कतिसु नाणेषु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा । तिसु होमाणे^१ आभिणिबोहियानाण-
सुयनाण-ओहिनाणेषु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिबोहियानाण-सुयनाण-
ओहिनाण-मणपज्जवनाणेषु होज्जा ॥
५८. से ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
^१गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ।
जइ सजोगी होज्जा, कि मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी
होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ॥
५९. से ण भते ! कि सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ॥
६०. से ण भते ! कयरम्मि सघयणे होज्जा ?
गोयमा ! वइरोसभनारायसघयणे होज्जा ॥
६१. से ण भते ! कयरम्मि सठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्ह सठाणाण अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥
६२. से ण भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेण पच्चधणुसतिए होज्जा ॥
६३. से ण भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्टवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा^० ॥
६४. से ण भते ! कि सवेदए^२ होज्जा ? अवेदए होज्जा ?^०
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ।
जइ अवेदए होज्जा कि उवसतवेदए होज्जा ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थीवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? 'पुरिस-
नपुसगवेदए'^३ होज्जा ?
गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस-नपसगवेदए
वा होज्जा ॥

१. भ० १।१०२ ।

२. होज्जमाणे (अ, क) ।

३. सं० पा०—एवं जोगो, उवजोगो, सघयण,

सठाण, उच्चत्त, आउयं च—एयाणि

सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणिय-
व्वाणि ।

४. सं० पा०—पुच्छा ।

५. नपुसगवेदए (अ, म) ।

६५. से णं भंते ! कि सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?

गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा ।

जइ अकसाई होज्जा कि उवसतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?

गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ।

जइ सकसाई होज्जा से ण भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?

गोयमा ! चउसु वा तिमु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा । चउसु होमाणे

चउसु—संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु—संजलण-

माण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे दोसु—संजलणमाया-लोभेसु होज्जा,

एगम्मि होमाणे एगम्मि—संजलणलोभे होज्जा ॥

६६. तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पणत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा ^१अज्झवसाणा पणत्ता ॥

६७. ते ण भंते ! कि पसत्था ? अप्पसत्था ?

गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

६८. से ण भंते ! तेहि पसत्थेहि अज्झवसाणेहि वड्ढमाणेहि अणंतेहि नेरइय-

भवग्गहणेहितो अप्पाणं विसंजोएइ, अणतेहि तिरिक्खज्जोणियभवग्गहणेहितो

अप्पाणं विसंजोएइ, अणतेहि मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ,

अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसंजोएइ । जाओ वि य से इमाओ

नेरइय-तिरिक्खज्जोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासि

च णं ओवग्गहिण्ण अणताणुवधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता

अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे

कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ,

खवेत्ता पच्चविह नाणावरणिज्ज, नवविहं दरिसणावरणिज्ज, पंचविह अतरइय

तालमत्थाकडं च ण मोहणिज्ज कट्ठु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरण

अणुपविट्ठस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे^०

केवलवरणाण-दंसणे समुप्पज्जइ ॥

६९. से णं भंते ! केवलपणत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पणवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?

हुता आघवेज्ज वा, पणवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ॥

७०. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?

हुता पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा^१ ॥

१. सं० पा०—एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल^० ।

२. वा तस्स ण भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा हुता पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा (क, ता, व) ।

७१. से णं भंते ! सिज्झति बुज्झति जाव^१ सव्वदुक्खाणं अतं करेइ ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अतं करेति ॥
७२. तस्स ण भते ! सिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अतं करेति ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥
७३. तस्स ण भते ! पसिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ?
'हता सिज्झति'^२ जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥
७४. से ण भंते ! कि उड्ढ होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव^३ अड्ढाइज्जदीवसमुद्-
तदेवकदेसभाए होज्जा ॥
७५. ते ण भते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अट्ठसयं । से तेणट्ठेणं
गोयमा ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण केवलस्स वा जाव^४ तप्पक्खियउवासियाए^५
वा अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥
७६. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति^६ ॥

बत्तीसइमो उद्देशो

पासावच्चिज्जगंगेय-पसिण-पदं

७७. तेणं कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ^१ । इतिपला-
सए वेइए^२ । सामी समोसढे । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा
पडिगया ॥
७८. तेण कालेणं तेण समएणं पासावच्चिज्जे गगेए नाम अणगारे जेणेव समणे भगवं
महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स
अट्ठरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एव वदासी—

१. भ० १।४४ ।

२. एव चेव (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. भ० ६।५० ।

४. भ० ६।५१ ।

५. केवलउवासियाए (अ, क, ता, स) ।

६. भ० १।५१ ।

७. ओ० सू० १ ।

८. वेइए वण्णओ (ता) ।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

७६. संतरं भते ! नेरइया उववज्जति ? निरंतरं नेरइया उववज्जति ?
गगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जति, निरतर पि नेरइया उववज्जति ॥
८०. सतरं भते ! असुरकुमारा उववज्जति ? निरतर असुरकुमारा उववज्जति ?
गगेया ! सतर पि असुरकुमारा उववज्जति, निरतर पि असुरकुमारा उवव-
ज्जति । एवं जाव थणियकुमारा ॥
८१. सतर भते ! पुढविकाइया उववज्जति ? निरंतर पुढविकाइया उववज्जति ?
गगेया ! नो सतर पुढविकाइया उववज्जति, निरतर पुढविकाइया उवव-
ज्जति । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेइदिया जाव वेमाणिआ एते जहा
नेरइया ॥
८२. संतर-भते ! नेरइया उव्वट्ठति ? निरंतरं नेरइया उव्वट्ठति ?
गगेया ! संतर पि नेरइया उव्वट्ठति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्ठति । एवं जाव
थणियकुमारा ॥
८३. सतरं भते ! पुढविकाइया उव्वट्ठति ?—पुच्छा ।
गगेया ! नो सतर पुढविकाइया उव्वट्ठति, निरतरं पुढविकाइया उव्वट्ठति ।
एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतर, निरतरं उव्वट्ठति ॥
८४. संतरं भते ! बेइदिया उव्वट्ठति ? निरतरं बेइदिया उव्वट्ठति ?
गगेया ! संतरं पि बेइदिया उव्वट्ठति, निरतर पि बेइदिया उव्वट्ठति । एवं
जाव वाणमतारा ॥
८५. सतर भते ! जोइसिया चयति ?—पुच्छा ।
गगेया ! सतरं पि जोइसिया चयति, निरंतरं पि जोइसिया चयति । एवं
वेमाणिआ वि ॥

पवेसण-पदं

८६. कतिविहे ण भते ! पवेसणए पण्णत्ते ?
गगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयपवेसणए, तिरिक्खजो-
णियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ॥
८७. नेरइयपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए जाव
अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥

८८. एगे भते । नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे कि रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया । रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ॥
८९. दो भते । नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे बालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।
अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे बालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे बालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे बालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एव एक्केका पुढवी छड्डेयन्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा^१ ॥
९०. तिण्णि भते । नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए दो बालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे बालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एव जह्वा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तह्वा सव्वपुढवीणं भाणियव्व जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा^१ ॥
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे बालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे बालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे बालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे बालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ॥

६१. चत्तारि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तथा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारेयव्वं, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव एगे रय-

णप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अह्वा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अह्वा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अह्वा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अह्वा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अह्वा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पक्कप्पभाए होज्जा जाव अह्वा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । एवं एएण गमएण जहा तिण्ह तियासंजीमो^१ तहा भाणि-यव्वो जाव अह्वा दो घमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा^१ ।

[illegible]

१. त्रिय० (अ, म, स) ।

२ त्रिसयोगजा भङ्गा १०५ ।

३. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्क-
रप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तभाए
होज्जा ।

होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूम-
प्पभाए होज्जा । एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा
सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए
एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे वालुयप्पभाए
एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए
एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुय-
प्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुय-
प्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पक्-
प्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा^१ ॥

६२. पच भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?
—पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयण-
प्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्कर-
प्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ।
अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्त-
माए होज्जा । अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव
जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्कर-
प्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा । एवं जहा रयणप्पभाए सम उवरिम-
पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि सम चारेयव्वाओ जाव अहवा
चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एवं एकैक्काए सम चारेय-
व्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा^२ ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव
जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा ।
अहवा अगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एव
जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा ।
अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव
अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा
एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव
अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।
अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव

अहेसत्तमाए । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा । एवं एएण कमेण जहा चउण्ह तियासजोगो^१ भणितो तहा पचण्ह वि तियासजोगो भाणियव्वो, नवर—तत्थ एगो संचारिज्जइ, इह^२ दोण्णि, सेसं त चेव जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा^३ ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा, एवं जहा चउण्ह चउक्कसजोगो भणिओ तहा पंचण्ह वि चउक्कसजोगो भाणियव्वो नवर—अव्वहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा^४ ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे

१. तिय^० (क) ।

३. त्रिसयोगजा भज्जा २१० ।

२. इमार्हि (अ, क, व, म, स); इमेहि (ता) । ४. चतु सयोगजा भज्जा १४० ।

अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्प-
भाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे
सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा
एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए
होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे
धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए
एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए
एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा
एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे
सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे
सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा,
अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए
होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे
तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए
जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए
होज्जा' ॥

६३. छवभंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?
—पुच्छा ।

गणेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए
पंच वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहेसत्तमाए
होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा
दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए
तिण्णि सक्करप्पभाए । एवं एएणं कमेणं जहा पचण्ह दुयासंजोगो तहा छण्ह वि
भाणियव्वो, नवरं—एक्को अव्वभहिथो संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए
एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा,
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा, एव
जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा । एव
एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो,

नवर—एक्को अहिओ उच्चारयव्वो, सेस तं चेव' । चउक्कसंजोगो वि तहेव', पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव पच्छिमी भंगो, अहवा दो बालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए 'एगे सक्करप्पभाए' एगे बालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे बालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे बालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ॥

६४. सत्त भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा । एवं एएण कमेणं जहा छण्ह दुयासजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवर—एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ, सेस तं चेव' । तियासंजोगो', चउक्कसंजोगो', पंचसजोगो', छक्कसजोगो' य छण्ह जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ' संचारेयव्वो जाव छक्कगसंजोगो अहवा दो सक्करप्पभाए एगे बालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा' । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा ॥

६५. अट्ट भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा । एवं दुयासजोगो' जाव

१. त्रिसयोगजा भङ्गा. ३५० ।

२. चतुसयोगजा भङ्गा. ३५० ।

३. पञ्चसयोगजा भङ्गा. १०५ ।

४. जाव (अ, क, ता, व, भ, स) ।

५. पट्सयोगजा भङ्गा. ७ ।

६. द्विसयोगजा भङ्गा. १२६ ।

७. त्रिसयोगजा भङ्गा. ५२५ ।

८. चतुसयोगजा भङ्गा. ७०० ।

६. पचा० (क); पञ्चसयोगजा भङ्गा. ३१५ ।

१०. छक्का० (क, व) ।

११. अहिओ (अ); अहितो (क); अधितो (ता) ।

१२. पट्सयोगजा भङ्गा. ४२ ।

१३. द्विसयोगजा भङ्गा. १४७, त्रिसयोगजा

भङ्गा ७३५, चतुसयोगजा भङ्गा. १२२५,

पञ्चसयोगजा भङ्गा. ७३५ ।

छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्ह भणियो तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव जाव छक्कसंजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ।

अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एव संचारेयव्व जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ॥

६६. नव भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा । एव दुयासजोगो^१ जाव सत्तसंजोगो^२ य जहा अट्ठण्हं भणिय तहा नवण्हं पि भाणियव्व, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो आलावगो—अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ॥

६७. दस भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा । एवं दुयासजोगो^१ जाव सत्तसंजोगो य जहा नवण्हं, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो^२ आलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा' ॥

६८. संखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे

१. षट्सयोगजा भङ्गा. १४७ ।

२. सप्तसयोगजा भङ्गा. ७ ।

३. द्विसयोगजा भङ्गा. १६८, त्रिसयोगजा भङ्गा. ६८०, चतुसयोगजा भङ्गा. १६६०, पञ्चसयोगजा भङ्गा. १४७०, षट्सयोगजा भङ्गा. ३६२ ।

४. वट्ठेसजोगो (व) ।

५. सप्तसयोगजा भङ्गा २८ ।

६. द्विसयोगजा भङ्गा. १७६, त्रिसयोगजा भङ्गा. १२६०, चतुसयोगजा भङ्गा. २६४०, पञ्चसयोगजा भङ्गा. २६४६, षट्सयोगजा भङ्गा. ८८२ ।

७. अपच्छिमो (अ, क, ता, म, स) ।

८. सप्तसयोगजा भङ्गा. ८४ ।

रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा । एवं एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा । एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा उवरिम-पुढवीहि सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा, एव एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा जाव अहवा सखेज्जा तमाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा पक्कप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयण-प्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा पक्कप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए सखेज्जा पक्कप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण तियासजोगो, चउक्कसजोगो जाव सत्तगसजोगो य जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो । पच्छिमो आलावगो सत्तसजोगस्स—अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए जाव सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा ॥

६६ असखेज्जा भते । नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तभाए वा होज्जा ।

अहवा एगो रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयासजोगो जाव सत्तगसंजोगो य जहा संखेज्जाणं भणिओ तहा असंखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवरं—असंखेज्जो अम्महिओ भाणियव्वो, सेसं तं चेव जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलावगो अहवा असंखेज्जा रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असंखेज्जा अहेसत्तभाए होज्जा ।

१००. उक्कोसेणं भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एवं जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा, एवं रयणप्पमं अमुयंतं सु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तभाए य होज्जा । अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पमं अमुयंतं सु जहा चउण्हं चउक्कगसंजोगो भणितो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तभाए य होज्जा ! अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एवं रयणप्पमं अमुयंतं सु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तभाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए जाव

- अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ॥
१०१. एयस्स ण भते । रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढविनेरइय-
पवेसणगस्स जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहिंतो*अप्पा
वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए
असखेज्जगुणे, एव पडिलोमग^१ जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए
असखेज्जगुणे ॥
१०२. तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भते ! कत्तिविहे पणत्ते ?
गगेया ! पच्चविहे पणत्ते, तं जहा—एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव
पच्चिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए ॥
१०३. एगे भते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएणं पविसमाणे कि एगि-
दिएसु होज्जा जाव पच्चिदिएसु होज्जा ?
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पच्चिदिएसु वा होज्जा ॥
१०४. दो भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएणं—पुच्छा ।
गगेया ! एगिदिएसु वा होज्जा जाव पच्चिदिएसु वा होज्जा । अहवा एगे एगि-
दिएसु होज्जा एगे वेइदिएसु होज्जा, एव जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्ख-
जोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असखेज्जा ॥
१०५. उक्कोसा भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएणं—पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव एगिदिएसु होज्जा, अहवा एगिदिएसु वा^२ वेइदिएसु
वा होज्जा । एव जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा ।
एगिदिया अमुयतेसु दुयासजोगो, तियासजोगो, चउक्कसजोगो^३, पच्चसजोगो^४
उवज्जुज्जण^५ भाणियव्वो जाव अहवा एगिदिएसु वा, वेइदिएसु वा जाव पच्चि-
दिएसु वा होज्जा ॥
१०६. एयस्स ण भते ! एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पच्चिदियतिरिक्ख-
जोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो*अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला
वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे पच्चिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिदियतिरिक्ख-

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

२. पचा० (क, व) ।

३. उप्पडि० (क, ता, व) ।

६. उववज्जिऊण (अ); उवउज्जित्तण (क),

४. य, (अ, ता); या (क) ।

उवउज्जिऊण (ता, स) ।

५. चउक्का० (अ, क, व) ।

७. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

जोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए,
वेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए
विसेसाहिए ॥

१०७. मणुस्सपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ?

गंगेया ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—समुच्छिममणुस्सपवेसणए, गवभवक्कतिय-
मणुस्सपवेसणए य ॥

१०८. एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएणं पविसमाणे कि समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा?
गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ?

गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गवभवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा ॥

१०९. दो भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।

गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गवभवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।
अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव
एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे जाव
दस ॥

११०. संखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।

गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गवभवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।
अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा,
अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा,
एवं एक्केक्कं उस्सारितेसु जाव अहवा संखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा
संखेज्जा गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ॥

१११. असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।

गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा असंखेज्जा समु-
च्छिममणुस्सेसु एगे गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा समुच्छि-
ममणुस्सेसु दो गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एव जाव असंखेज्जा संमुच्छिम-
मणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गवभवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ॥

११२. उक्कोसा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।

गंगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा समुच्छिममणुस्सेसु
य गवभवक्कतियमणुस्सेसु य होज्जा ॥

११३. एयस्स णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गवभवक्कतियमणुस्सपवेसणगस्स
य कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कतियमणुस्सपवेसणए संमुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

११४. देवपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गंगेया ! चउच्चिवहे पण्णत्ते, त जहा—भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणिय-
देवपवेसणए ॥

११५. एगे भते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा ? वाणमंतर
जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?

गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ॥

११६. दो भते ! देवा देवपवेसणएणं—पुच्छा ।

गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ।
अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणिय-
पवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखेज्ज त्ति ॥

११७. उक्कोसा भते ! —पुच्छा ।

गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य
होज्जा, अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु
य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा
जोइसिएसु य भवणवासीसु ए वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य
वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य
वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ॥

११८. एयस्स ण भते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स,
जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो *अप्पा
वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्ज-
गुणे, वाणमतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ॥

११९. एयस्स ण भते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स मणुस्सपवेसण-
गस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला
वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए
असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया । २. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

संतर-निरंतर-उववज्जनादि-पदं

१२०. संतरं^१ भते । नेरइया उववज्जति निरंतरं नेरइया उववज्जति संतरं असुरकुमारा उववज्जति निरतर असुरकुमारा उववज्जति जाव संतरं वेमाणिया उववज्जति निरतर वेमाणिया उववज्जति ?

संतर नेरइया उव्वट्ठति निरंतर नेरइया उव्वट्ठति जाव संतरं वाणमतरा उव्वट्ठति निरंतरं वाणमतरा उव्वट्ठति ? संतर जोइसिया चयति निरंतरं जोइसिया चयति संतरं वेमाणिया चयति निरंतरं वेमाणिया चयति ?

गगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जति निरंतरं पि नेरइया उववज्जति जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जति, नो संतरं पुढविकाइया उववज्जति निरतरं पुढविकाइया उववज्जति, एव जाव वणस्सइकाइया । सेसा जहा नेरइया जाव संतर पि वेमाणिया उववज्जति निरतरं पि वेमाणिया उववज्जति ।

संतरं पि नेरइया उव्वट्ठति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्ठति, एवं जाव थणियकुमारा । नो संतर पुढविकाइया उव्वट्ठति निरतर पुढविकाइया उव्वट्ठति, एव जाव वणस्सइकाइया । सेसा जहा नेरइया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिया चयति अभिलावो जाव संतर पि वेमाणिया चयति निरंतरं पि वेमाणिया चयति ॥

सतो असतो उववज्जनादि-पदं

१२१. सतो^१ भते ! नेरइया उववज्जति, असतो^१ नेरइया उववज्जति, सतो असुरकुमारा उववज्जति जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, असतो वेमाणिया उववज्जति ? सतो नेरइया उव्वट्ठति, असतो नेरइया उव्वट्ठति, सतो असुरकुमारा उव्वट्ठति जाव सतो वेमाणिया चयति, असतो वेमाणिया चयति ?

१. सातर (क, ता, व, म) ।

२. अस्मिन् प्रकरणे द्वयोर्वचनयोर्मिश्रणं दृश्यते । प्रथमा वाचना किञ्चित् सलिप्तास्ति, द्वितीया च किञ्चिद् विस्तृता । एतन् मिश्रणं वृत्तिरचनात् । उत्तरकालमेव जातं सम्भाव्यते, तेनैव वृत्तिकृता नास्मिन् विषये किञ्चिद् लिखितम् । आदर्शेषु च प्राप्यते । अस्माभिवृत्तिमनुसृत्य एका वाचना स्वीकृता, द्वितीया च पाठान्तरे न्यस्ता, यथा—

‘सतो भते ! नेरइया उववज्जति ? असतो

नेरइया उववज्जति ? गगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति । एव जाव वेमाणिया ।

‘सतो भते ! नेरइया उव्वट्ठति ? असतो नेरइया उव्वट्ठति ? गगेया ! सतो नेरइया उव्वट्ठति, नो असतो नेरइया उव्वट्ठति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयति भाणियव्वं ।’

३. असतो (ता) ।

गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति, सतो असुरकुमारा उववज्जति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जति जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, नो असतो वेमाणिया उववज्जति, सतो नेरइया उव्वट्ठति, नो असतो नेरइया उव्वट्ठति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

१२२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

से नूण भे^१ गंगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएण सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे^२ परिस्से परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्जे सखित्ते, उप्पि विसाले; अहे पलियंकसठिए, मज्जे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकार-सठिए । तस्सि च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्जे संखित्तंसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियंकसठियसि, मज्जे वरवइरविग्गहियसि, उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति ।

से भूए उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहि लोककइ पलोक्कइ^३, जे लोककइ से लोए । से तेणट्ठेण गंगेया ! एव वुच्चइ—जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

सतो परतो वा जाणएण-पदं

१२३. सय^४ भते ! एतेव^५ जाणह, उदाहु असय, असोच्चा एतेव जाणह, उदाहु सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया, चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

गंगेया ! सय एतेव जाणामि, नो असयं, असोच्चा एतेव जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ॥

१२४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—“सयं एतेवं जाणामि, नो असय, असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति^६, नो असतो वेमाणिया चयति ?

१. ते (अ) ।

२. स० पा०—जहा पचमसए जाव जे ।

३. सर्वं (क, ता) ।

४. एव (अ, क); एते एवं (ता); एय एवं (व)

५. स० पा०—त चेव जाव नो ।

गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ । दाहिणे णं,
 *पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ ।

सव्व जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली ।

सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली ।

सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकाल पासइ केवली ।

सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली ।

अणते नाणे केवलिस्स, अणते दंसणे केवलिस्स ।

निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स* । से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं
 वुच्चइ—सयं एतेव जाणामि, नो असयं असोच्चा एतेव जाणामि, नो
 सोच्चा—तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चर्यति ॥

सयं असयं उववज्जणा-पदं

१२५. सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जति ? असयं नेरइया नेरइएसु
 उववज्जति ?

गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असयं नेरइया नेरइएसु
 उववज्जति ॥

१२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ*—सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असयं
 नेरइया नेरइएसु* उववज्जति ?

गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मगुह्यत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए;
 असुभाणं कम्माणं उदएण, असुभाणं कम्माणं विवागेण, असुभाणं कम्माणं
 फलविवागेण सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जति, नो असयं नेरइया नेरइएसु
 उववज्जति । से तेणट्ठेणं गंगेया ! *एव वुच्चइ—सयं नेरइया नेरइएसु
 उववज्जति, नो असयं नेरइया नेरइएसु* उववज्जति ॥

१२७. सयं भंते ! असुरकुमारा—पुच्छा ।

गंगेया ! सयं असुरकुमारा* असुरकुमारेसु* उववज्जति, नो असयं असुर-
 कुमारा* असुरकुमारेसु* उववज्जति ॥

१२८. से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जति ?

गंगेया ! कम्मोदएणं*, कम्मविगतीए*, कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए; सुभाणं
 कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं

१. स० पा०—एवं जह्वा सद्धुद्देसए जाव निव्वुडे
 नाणे केवलिस्स ।

२. स० पा०—वुच्चइ जाव उववज्जति ।

३. स० पा०—गंगेया जाव उववज्जति ।

४. स० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति ।

५. स० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति ।

६. कम्मोदएणं कम्मोवसमेण (अ, क, वृषा) ।

७. कम्मचियत्ताए (ता) ।

असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जति, नो असयं असुरकुमारा^१ असुरकुमार-
त्ताए^२ उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति । एव जाव थणियकुमारा ॥

१२६. सयं भते ! पुढविव्काइया—पुच्छा ।

गंगेया ! सय पुढविव्काइया^३ पुढविव्काइएसु^४ उववज्जति नो असयं
पुढविव्काइया^५ पुढविव्काइएसु^६ उववज्जति ॥

१३०. से केणट्ठेण जाव उववज्जति ?

गंगेया ! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए;
सुभासुभाणं कम्माण उदएण, सुभासुभाण कम्माण विवागेणं, सुभासुभाण
कम्माण फलविवागेण सय पुढविव्काइया^७ पुढविव्काइएसु^८ उववज्जति, नो
असयं पुढविव्काइया^९ पुढविव्काइएसु^{१०} उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव
उववज्जति ॥

१३१. एव जाव मणुस्सा ॥

१३२. वाणमत्तर-जोइसिअ-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं
वुच्चइ—सय वेमाणिया^{११} वेमाणिएसु^{१२} उववज्जति, नो असयं^{१३} वेमाणिया
वेमाणिएसु^{१४} उववज्जति ॥

गंगेयस्स संबोधि-पद

१३३ तप्पभित्ति च ण से गंगेये अणगारे समण भगव महावीर पच्चभिजाणइ सव्वण्णु
सव्वदरिंसि । तए ण से गंगेये अणगारे समणं भगव महावीर तिव्वुत्तो आयहिण-
पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि
णं भते । तुव्वं अतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पच्चमहव्वइय^{१५} सपडिक्कमण
धम्म उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवंध ॥

१३४. तए ण से गंगेये अणगारे समण भगवं महावीर वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता
चाउज्जामाओ धम्माओ पच्चमहव्वइय सपडिक्कमण धम्मं उवसंपज्जित्ता णं
विहरति ॥

१३५. तए णं से गंगेये अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाण पाउणइ, पाउणिता

१. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति ।

२. सं० पा०—पुढविव्काइया जाव उववज्जति ।

३. सं० पा०—पुढविव्काइया जाव उववज्जति ।

४. सं० पा०—पुढविव्काइया जाव उववज्जति ।

५. सं० पा०—पुढविव्काइया जाव उववज्जति ।

६. सं० पा०—वेमाणिया जाव उववज्जति ।

७. सं० पा०—असयं जाव उववज्जति ।

८. सं० पा०—एव जहा कालासवेसिअपुत्तो तहेव

भाणियव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं
भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कटुसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो
लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा वावीसं परिसहोवसगा अहियासिज्जति,
तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के
परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति° ॥

तेत्तीसइमो उद्देसो

उसभदत्त-देवाणंदा-पदं

१३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडंगामे नयरे होत्था—वण्णओ° । बहुसालए
चेइए—वण्णओ° । तत्थ णं माहणकुंडंगामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परि-
वसइ—अड्ढे दित्ते वित्ते जाव° बहुजणस्स अपरिभूए रिक्खेद°-जजुव्वेद°-साम-
वेद-अथव्वणवेद-° इतिहासपंचमाण निघट्ठछट्ठाण—चउण्ह वेदाण सगोवगाण
सरहस्साणं सारए धारए पारए सडंगवी सट्ठिततविसारए, सखाणे सिक्खा-
कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे°, अण्णेसु य बहूसु बभण्णएसु नयेसु
सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे° उवलद्धपुण्णपावे जाव° अहा-
परिगहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ । तस्स णं उसभदत्तस्स
माहणस्स देवाणदा नाम माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव° पियदसणा
सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव° अहापरिग-
हिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणी विहरइ ॥

१३८. तेण कालेणं तेण समएण सामी समोसडे । परिसा पज्जुवासइ ॥

१. भ० १।५१ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

४. भ० २।६४ ।

५. रिउवेद (अ, स); रिउव्वेद (क); रुव्वेद (ग) १०. ओ० सू० १५ ।

६. यजुवेद (अ); यजुव्वेद (ग) ।

७. स० पा०—जहा खदओ जाव अण्णेसु ।

८. अविगत° (ता); अहिगय° (व, म) ।

९. भ० २।६४ ।

१३६. तए ण से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धे समाणे हट्ट^१•तुट्टचित्तमाणदिए णदिए पीइमणा परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण^२ हियए जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छता देवाणद माहणी एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए^३ । समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव^४ सव्वणू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव^५ सुहसुहेण विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडि-रूव^६ •ओग्गह ओग्गिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे^७ विहरइ । त महप्फल खलु देवाणुप्पिए^८ । तहारूवाणं अरहताणं भगवताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासण-याए ? एगस्स वि आरियस्स^९ धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीर वदामो नमसामो^{१०} •सक्कारेमो सम्माणेमो कत्ताणं मगलं देवयं चेइय^{११} • पज्जुवासमो । एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए^{१२} आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥
१४०. तए ण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेण माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ट^१•तुट्ट-चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण^२ हियया करयल^३ •परिमहियं दसनहं सिरसावत्त मत्थए अंजलि^४ • कट्टु उसभद-त्तस्स माहणस्स एयमट्ट विणएणं पडिसुणेइ ॥
१४१. तए ण से उसभदत्ते माहणे कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवाल्लिहाण-समलि-हियसिगेहि^५, जद्वणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहि^६, रययामयघटा-सुत्तरज्जुय-पवरकचणनत्थपग्गहोग्गहियएहि, नीलुप्पलकयामेलएहि, पवरगोणजुवाणएहि नाणामणिरयण-घटियाजालपरिगय, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविर-चियनिमिय, पवरलक्खणोववेय-धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्टवेह, उवट्ट-वेत्ता मम एतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥
१४२. तए ण ते कोडुवियपुरिसा उसभदत्तेण माहणेण एव वुत्ता समाणा हट्ट^१•तुट्टचित्त-माणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण^२ हियया

१ स० पा०—हट्ट जाव हियए ।

(म० २।३०) ।

२ म० १।७ ।

५. स० पा०—हट्ट जाव हियया ।

३ ओ० सू० १६ ।

६. स० पा०—करयल जाव कट्टु ।

४. स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ ।

१०. • संगएहि (ता, म) ।

५. आयरियस्स (अ, स) ।

११. परिसिट्ठेहि (अ, स), पविसिट्ठेहि (क, ता) ।

६ स० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो ।

१२ स० पा०—हट्ट जाव हियया ।

७. X (क, ता, व, म), निस्सेयसाए

करयल^१ परिगृह्य दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्टु^० एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएण वयणं पडिसुणेति^२, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्ता जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्टवेत्ता^३ तमाणत्तिय पच्चप्पिणत्ति ॥

१४३. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव^४ अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साओ गिहाओ पडिणक्खमत्ति, पडिणक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरुढे^५ ॥

१४४. तए णं सा देवाणदा माहणी ण्हाया^६ जाव^७ अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा बह्निहि खुज्जाहि, चिलातियाहि जाव^८ चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरावदपरिक्खित्ता अतेउराओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्टाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय^९ जाणप्पवर दुरुढा ॥

१४५. तए ण से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धि धम्मिय जाणप्पवर दुरुढे समाणे नियगपरियालसपरिवुडे माहणकुडग्गामं नगर मज्झमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए^{१०} तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मिय जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समण भगवं महावीर पच्चिवहेण अभिगमेणं अभिगच्छति, [त जहा—१. सच्चित्ताणं दव्वाणं

१. स० पा०—करयल ।

२. जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. उवट्टवेत्ता जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

४. भ० ३।३३ ।

५. दूढे (ता) ।

६. बावमान्तरे देवान्दान्दवर्णक एव दृश्यते—

अतो अंतेउरसि ण्हाया कयवलिकम्मा कय-
कोउय-मगल-पायच्छित्ता, किंच [किंते (व)]—
वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-हाररचित-उचिय-
कडग-खुट्ठाग-एकावली-कठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-
सोणिसुत्तण-नाणांमणि-रयणभूसणविराड्ययी,
चीणसुयवत्थपवरपरिहिया, दुगुल्लसुकुमाल
उत्तरिज्जा, सब्बोतु-सुरभिकुसुमवरियसिरया,
वरचदणवदिता, वराभरणभूसितंगी, काला-

गरुध्वध्वविया, सिरिसमाणवेसा (वृ) ।

७. भ० ३।३३ ।

८. वामणीहि बडभीहि बब्बरीहि बउसियाहि
जोणियाहि पल्हवियाहि ईसिगिणियाहि चार
(वास) गिणियाहि ल्हासियाहि लउसियाहि
आरवीहि दमिलीहि सिहलीहि पुल्लीहि पक्क-
णीहि (पुक्कलीहि) वहनीहि सुरु डोहि सबरीहि
पारसीहि णाणादेस-विदेसरिपिडियाहि सदे-
सनेवत्थगहियवेसाहि इगित-चनित-पत्थिद-
वियाणियाहि कुसलाहि विणीयाहि (अ, ता,
व, स), इद च सर्वं बावमान्तरे सामादेवा-
स्ति (वृ) ।

९. जाव धम्मिय (अ, क, ता, व, म, स) ।

१०. चुत्तीसाए (म) ।

विश्रोसरण्याए^१ २. अचित्ताणं दब्बाणं अविश्रोसरण्याए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ४ चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेणं^३ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिव्वुत्तो आया-
हिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता^४ तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१४६. तए णं सा देवाणंदा माहणी घम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोख्हति, पच्चो-
हिता बहूहि खुज्जाहि जाव^५ चेडियाचक्कवाल-वरिसघर-थेरकचुइज्ज-महत्तरग-
वदपरिविवत्ता समण भगव महावीरं पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छइ, [तं
जहा—१. सचित्ताणं दब्बाणं विश्रोसरण्याए २. अचित्ताणं दब्बाणं अविमोय-
ण्याए ३. विणयोण्याए गायलट्ठीए ४. चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेणं ५. मणस्स
एगत्तीभावकरणेणं]^६ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता समण भगवं महावीर तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता
वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहण पुरओ कट्ठु ठिया चेव
सपरिवारा सुस्ससमाणी नमसमाणी अभिमुहा विणएण पजलिकडा^७ पज्जु-
वासइ ॥

१४७. तए णं सा देवाणदा माहणी आगयपण्हया पप्पुयलोयणा^८ सवरियवल्लयवाहा
कचुयपरिक्खित्तिआ धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा समणं भगवं
महावीर अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

१४८ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता
एवं वयासी—कि ण भते ! एसा देवाणदा माहणी आगयपण्हया^९ पप्पुयलो-
यणा सवरियवल्लयवाहा कचुयपरिक्खित्तिआ धाराहयकलवगं पिव समूसविय^{१०}
रोमकूवा देवाणुप्पिय अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?
गोयमादि^{११} ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एवं खलु
गोयमा ! देवाणदा माहणी ममं अम्मगा, अहण्ण देवाणंदाए माहणीए अत्ताए ।
'तण्ण एसा'^{१२} देवाणदा माहणी तेण पुव्वपुत्तसिणेहरागेण आगयपण्हया^{१३} पप्पु-
यलोयणा, सवरियवल्लयवाहा कचुयपरिक्खित्तिआ धाराहयकलवग पिव^{१४} समू-
सवियरोमकूवा मम अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

१. स० पा०—एवं जहा त्रितियसए जाव तिवि-
हाए ।

२. कोण्डकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।

३. भ० ६।१४४ ।

४. कोण्डकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।

५. पंजलिउडा (अ) ।

६. पप्पुय० (अ, ता, स); पप्फुल्ल० (क) ।

७. स० पा०—त चेव जाव रोमकूवा ।

८. गोयमादी (क, ता, व, म) ।

९. तए ए सा (अ, म) ।

१०. स० पा०—आगयपण्हया जाव समूसविय० ।

१४६. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए^१ •मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवदाए अणेगसयवदपरियालाए ओह्वले अइवले महव्वले अपरिमियवल-वीरिय-तेय-माहप्प-कति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगभीर-कोंचणिग्घोस-दुदुभिस्सरे उरे वित्थिडाए कठे वट्ठियाए सिरे समाइण्णाए अग्र-लाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेण अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परि-कहेइ^० जाव^२ परिसा पडिगया ॥

१५०. तए ण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय^३ धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगव महावीरं तिकखुतो^४ •आयाहिण पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता^५ नमसित्ता एव वदासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! •अवित्तहमेय भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेयं भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते !^६ —से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्ट उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं अवक्कमत्ति, अवक्कमत्ति सयमेव आभरणमल्लालंकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिकखुतो आयाहिण-पयाहिण करेइ^७, •करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता^८ नमसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भत्ते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भते ! लोए जराए मरणेण य ।

•से जहानामाए केइ गाहावई अगारंसि भियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

एवामेव देवानुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा ण चोरा, मा णं वाला, मा ण दसा, मा णं मसया, मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायका परीस-होवसग्गा फुसतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

१. स० पा०—इसिपरिसाए जाव ।

२. ओ० सू० ७१-७६ ।

३. अत्तिए (ता) ।

४. स० पा०—तिकखुतो जाव नमसित्ता ।

५. स० पा०—जहा खदबो जाव से ।

६. स० पा०—करेइ जाव नमसित्ता ।

७. स० पा०—एव एएणं कमेण जहा खदबो तदेव पव्वइओ ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयारगोयर विणय-वेणइय-चरण-करण जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खिय ॥

१५१. तए ण समणे भगव महावीरे उसभदत्त माहण सयमेव पव्वावेइ, सय मेव मुंडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय चरण-करण जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया गतव्वं, एवं चिट्ठियव्व, एव निसीइयव्व, एवं तुयट्ठियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्वं एव उट्ठा-उट्ठा-पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेणं सजमियव्व अस्सि च ण अट्ठे णो किञ्चि वि पमाइयव्वं ।

तए णं से उसभदत्ते माइणे समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूवं धम्मियं उवएस सम्म सपडिवज्जइ^१ जाव^२ सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता^३ बहूहि चउत्थ-छट्ठम-दसम^४—दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि^५ विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ सामणपरियाग पाउणइ, पाउणिता मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसइ, भूसत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे जाव^६ तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता^७ चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे^८ सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१५२. तए ण सा देवाणदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठा समण भगव महावीर तिव्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण^९ करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता^{१०} नमसित्ता एव वयासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! एव जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खियं ॥

१५३. तए ण समणे भगव महावीरे देवाणद माहणिं सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचदणाए अज्जाए^{११} सीसिणित्ताए दलयइ ॥

१५४. तए ण सा अज्जचदणा अज्जा देवाणद माहणिं सयमेव^{१२} मुंडावेत्ति, सयमेव सेहावेत्ति । एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचदणाए अज्जाए इम एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं सपडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ जाव^{१३} सजमेणं सजमति ॥

१५५. तए ण सा देवाणदा अज्जा अज्जचदणाए अज्जाए अतिय सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, ^{१४}अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठम-दसम-दुवाल-

१. भ० २।५३-५७ ।

२. जाव (अ, क, ता, व, स) ।

३. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहि ।

४. भ० १।४३३ ।

५. सं० पा०—आराहेत्ता जाव सव्व^० ।

६. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमसित्ता ।

७. X (व, म) ।

८. सयमेव पव्वावेत्ति सयमेव (क, व, म) ।

९. भ० २।५४ ।

१०. सं० पा०—सेस त चेव जाव सव्व^० ।

सेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणी बहूइ
वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणिता मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेइ,
भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धा
बुद्धा.मुक्का परिनिव्वुडा^० सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

जमालि-पदं

१५६. तस्स णं माहणकुडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ णं खत्तियकुडग्गामे
नाम नयरे होत्था—वण्णओ^१ । तत्थ ण खत्तियकुडग्गामे नयरे जमाली नाम
खत्तियकुमारो परिवसइ—अड्ढे दित्ते जाव^२ बहुजणस्स अपरिभूते, उप्पि पासा-
यवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि बत्तीसतिवद्धेहि णाडएहि वरतरुणीसपउ-
त्तेहि^३ उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे,
उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद-हेमत-वसत-गिम्ह-
पज्जते छप्पि उरु^४ जहाविभवेण माणेमाणे, काल गालेमाणे, इट्ठे सद्-फरिस-
रस-रुव-गंधे पच्चविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुवभवमाणे विहरइ ॥

१५७. तए ण खत्तियकुण्डग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर^५—●चउम्मुह-महा-
पह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणवोले इ वा जणकलकले इ वा
जणुम्मी इ वा जणुकलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अणमण्णस्स
एवमाइक्खइ एव भासइ^६, एव पणवेइ, एव परूवेइ, एव खलु देवाणुप्पिया !
समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव^७ सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स
नगरस्स वहिया बहुसालए चेइए अहापडिक्ख^८ ●ओग्गह ओगिण्हत्ता सजमेण
तवसा अप्पाण भावेमाणे^९ विहरइ ।

त महप्फलं खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स
वि सवणयाए जहा ओववाइए जाव^{१०} एगाभिमुहे खत्तियकुण्डग्गाम नयर मज्झ-
मज्झेण निग्गच्छति^१, निग्गच्छिता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए
चेइए, तेणेव उवागच्छति एव जहा ओववाइए जाव^{१०} तिविहाए पज्जुवासणयाए
पज्जुवासति ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. भ० २।६४ ।

३. णाणाविहवरतरुणी^० (अ, व, स) ।

४. उट्ठ (अ); उट्ठ (ता, व, स) ।

५. सं० पा०—चच्चर जाव बहुजणसद्दे इ वा १०. ओ० सू० ५२, ६६ ।

जाव एवं ।

६. ओ० सू० १६ ।

७. सं० पा०—अहापडिक्ख जाव विहरइ ।

८. ओ० सू० ५२, वाचनान्तर पृ० १४७ ।

९. निग्गच्छइ (क, ता) ।

१५८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महायजणसदं वा जाव जणसन्नि-
वायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयाख्वे अज्झत्थिए^१ *चित्तिए
पत्थिए मणोगए सकप्ये ° समुप्पज्जित्था—किण्णं अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे
इंदमहे इ वा, खदमहे इ वा, भुगुदमहे इ वा, नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा,
भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा,
पव्वयमहे इ वा, खूखमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जण्णं एते
वह्वे उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया^२, कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता,
भडा, भडपुत्ता,^३ *जोहा पसत्थारो मत्तई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य वह्वे
राईसर—तलवर—माडविय—कोडुविय—इळभ—सेट्ठि—सेणावइ °—सत्थवाहप्पभित्तयो
पहाया कयवलिकम्मा जहा ओववाइए जाव^४ खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झं-
मज्झेण निग्गच्छति ?—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइ^५-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता
एव वदासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा
जाव निग्गच्छति ?

१५९. तए ण से कचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे
समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल^६ *परिगहिय
दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु ° जमालि खत्तियकुमार जएण विजएणं
वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे
नयरे इंदमहे इ वा जाव^७ निग्गच्छति । एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे
भगव महावीरे आदिगरे जाव^८ सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स नयरस्स
वहिया वहुसालए चेइए अहापडिख्व ओग्गह^९ *ओगिण्हत्ता सजमेणं तवसा
अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ, तए ण एते वह्वे उग्गा, भोगा जाव^{१०}
निग्गच्छति ॥

१६०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे कचुइ^{११}-पुरिसस्स अत्तियं एयमट्ठ सोच्चा
निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो
देवाणुप्पिया ! चाउग्घटं आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता मम एयमाण-
त्तिय पच्चप्पिणह ॥

१. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

२. नाता (क, व, म) ।

३. स० पा०—जहा ओववाइए जाव सत्थवाह ° ।

४. ओ० सू० ५२ ।

५. कंचुडज्ज (अ, क, ता, व) ।

६. सं० पा०—करयल ।

७. भ० ६।१५८ ।

८. ओ० सू० १६ ।

९. सं० पा०—ओग्गहं जाव विहरइ ।

१०. ओ० सू० ५२; जाव अप्पेगइया वदणवत्तिय
जाव (अ, क, ता, व, म) ।

११. कचुत्ति (अ, क, व, स) ।

१६१. तए णं ते कोडुंविद्यपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेण एवं वुत्ता समाणा' 'चाउ-
ग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणत्ति ।
१६२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणधरे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता ण्हाए कयवलिकन्मे जाव' चंदणुक्खित्तगायसरीरे' सव्वालंकारविभूसिए
मज्जणधराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला,
जेणेव चाउग्घटं आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता चाउग्घटं आसरहं
दुहइ, दुहहिता सकोरेटमत्तलदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, मयाभमडचडकर-
पृहकरवंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्जमंमज्जेणं निगच्छइ, निग-
च्छिता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छिता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चो-
रुहति, पच्चोरुहिता पुप्फतंवलोलोउहमादियं पाहणाओ' य विसज्जेति, विसज्जेत्ता
एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयत्ते चोक्खे परममुइड्ढूए अंजलिमउ-
लियहत्थे' जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं
भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पायाहिणं करेइ, करेत्ता' 'वंदइ नमंसइ,
वंदिता नमस्सिता° तिक्खिहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥
१६३. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहा-
लियाए इत्ति'° परिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए
अणेगसयवंदए अणेगसयवंदपरियालाए ओहवले अइवले महवले अपरिमियवल-
वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुवरगंभीर-कौचणिग्गोस-दुंदु-
मित्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्ठियाए सिरे समाइण्णाए अयरलाए अमम्मणाए
सुवत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयण-
णीहारिणा सरेणं अट्ठमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ° जाव' परिसा
पडिगया ॥

१. सं० पा०—सनाणा जाव पच्चप्पिणत्ति ।

२. जाव ओवग्गइए परिसावण्णलो तहा साणि-
यव्वं जाव (अ, क, ता, व, म, स); मज्जन-
पृहकरणे परिवारवर्यनस्य सूचना स्वभा-
विकी नास्ति, अतः प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपी-
करणे कश्चिद् विपर्ययो जातः । न च एतद्-
रूपेणास्ती पाठः औपपातिके लभ्यते, अतए-
वास्ती पाठान्तत्वेन स्वीकृतः । द्रष्टव्यम्—
ओ० सु० ६३ ।

३. चंदणोक्किण्ण° (ता, म); चंदणोक्खिण्ण° (व)

४. दूहइ (अ, ता, व); दूहति (क) ।

५. सकोरेट° (म, स) ।

६. वाहणाओ (अ, म); पाणहाओ (क); वाण-
हाओ (स) ।

७. अंजलितमउ° (ता) ।

८. सं० पा०—करेत्ता जाव तिक्खिहाए ।

९. सं० पा०—इत्ति जाव धम्मकहा ।

१०. ओ० सु० ७१-७२ ।

१६४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ^१•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण^२•हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीरं तिक्खुत्तो^३ •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदिता^४ नमसित्ता एव वयासी—सहहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भंते ! निग्गथं पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयणं, अन्नमुट्ठेमि णं भते ! निग्गथं पावयण, एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते^५ ! •इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! °—से जहेय तुव्मे वदह, ज नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगारओ अणगारिय पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवव ॥

१६५. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो^६ •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदिता^७ नमसित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता सकोरेट^८•मल्लदामेण छत्तेण^९ धरिज्जमाणेण मह्याभडच्चड-गर^{१०}•पहकरवद^{११} परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकूडगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकूडगाम नयर मज्झमज्जेण जेणेव सए गेहे जेणेव बाहि-रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगि-ण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अग्निभतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—एव खलु अम्मताओ^{१२} ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१६६. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एवं वयासी—घन्ने सि णं तुमं जाया ! कयत्थे सि ण तुम जाया ! कयपुण्णे सि ण तुमं जाया ! कयलक्खणे सि ण तुम जाया ! जण्ण तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ॥

१. स० पा०—हट्ठ जाव हियए ।

२. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।

३. स० पा०—भते जाव से ।

४. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।

५. स० पा०—सकोरेट जाव धरिज्जमाणेण ।

६. स० पा०—चडगर जाव परिक्खित्ते ।

७. अम्मयाओ (अ, स); अम्माताओ (व) ।

१६७ तए णं से जमाली खत्तियकुमारं अम्मापियरो दोच्च पि एव वयासी—एव खलु मए अम्मताओ । समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं निसते^१,
 *से वि य मे धम्मं इच्छिए, पडिच्छिए^२, अभिरुइए । तए णं अहं अम्मताओ ।
 संसारभउव्विग्गे, भीते जम्मण^३-मरणेण, त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुम्हेहि
 अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता
 अगाराओ अणगरिय पव्वइत्तए ॥

१६८. तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता त अणिट्ठ अकत अप्पिय अमणुण
 अमणाम अस्सुयपुव्व गिर सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलतच्चिलिणगत्ता^४,
 सोगभरपवेवियगसगी नित्तेया दीणविमणवयणा, करयलमलिय व्व कमलमाला,
 तक्खणओलुग्गदुव्वलसरी रलायणसुन्ननिच्छाया^५, गयसिरीया पसिदिलभूसण-
 पडतखुण्णियसच्चुण्णियधवलवलय^६-पव्वट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठचेतगरुई^७,
 सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त^८ व्व चपगलया, निव्वत्तमहे व्व
 इदलट्ठी, विमुक्कसधिवधणा कोट्टिमतलंसि^९ धसत्ति सव्वगेहि^{१०} सनिवडिया^{११} ॥

१६९. तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स भाया ससभमोवत्तियाए^{१२} तुरिय कच्चण-
 भिगारमुहुविणिग्गय - सीयलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी^{१३},
 उक्खेवय-तालियट-वीयणगजणियवाएण, सफुसिएण अतेउरपरिजणेण आसा-
 सिया समाणी रोयमाणी कदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालि खत्तिय-
 कुमारं एवं वयासी—तुम सि णं जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे
 मणामे थेज्जे वेसासिए समए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणव्भूए
 जीविउसविए^{१४} हिययनंदिजणणे उवरपुप्फ पिव^{१५} दुल्लभे सवणयाए^{१६}, किमग !
 पुणपासणयाए ? त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुव्व खणमवि विप्पयोग,
 त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहि कालग-
 एहि समाणेहि परिणयवए वडिडयकुलवसततुक्कज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स

१. स० पा०—निसते जाव अभिरुइए ।

११. ° यत्तियाए (क, ता), चेट्या इति गम्यम्

२. जम्मजरा (क्व०) ।

(वृ) ।

३. ° विलीणगत्ता (अ, ब, स) ।

१२. सीयलविमलजल° (अ); सीतलविमल°

४. ° लावणण° (ना० १।१।१०५) ।

(क); ° सीतलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्व-

५. पसदिल° (अ, क, ता, म) ।

वित° (ता); ° निव्ववित° (ब), सीयल-

६. ° खुम्मिय° (ना० १।१।१०५) ।

विमलजलधारपरिसिच्चमाणनिव्ववित° (स)

७. ° गुरुई (अ, ता, ब, स) ।

१३. जीवियउस्सासिए (वृथा, ना० १।१।१०६) ।

८. ° णित्त (ता); ° णिकत्त (ब) ।

१४. विव (क) ।

९. सव्वगेहि धसत्ति (ना० १।१।१०५) ।

१५. समणयाए (अ) ।

१०. निवडिया (अ, ता, स) ।

भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिंसि ।।

१७०. तए ण से जमालो खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि ण तं अम्मताओ ! जण तुव्मे मम एव वदह—तुमं सि णं जाया । अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते त चेव जाव^१ पव्वइहिंसि, एव खलु अम्मताओ ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-भरण-रोग-सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए सभभरागसरिसे जलवुवुदसमाणे कुसग्गजलविदु-सन्निभे सुविणदसणोवमे^२ विज्जुलयाचचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धसणधम्म, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस^३ णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्वि गमण्याए, के पच्छा गमण्याए ? त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुव्वेहि अवभणुणाए समाणे समणस्स^४ *भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं^५ पव्वइत्तए ।।

१७१. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमं च ते जाया ! सरीरग पविसिट्ठरूव^६ लक्खण-वज्जण-गुणोववेय उत्तमवल-वीरियसत्त-जुत्त विण्णणवियक्खणं ससोहग्गुणसमूसिय^७ अभिजायमहक्खम विविहवाहि-रोगरहिय, निरुवहय-उदत्त^८-लट्ठपच्चिदियपडु^९ पढमजोव्वणत्थ अणेगउत्तमगुणेहि सजुत्त, त अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे अम्हेहि कालगएहि समाणेहि परिणयवए वडिडयकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीर-स्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिंसि ।।

१७२. तए ण से जमालो खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि ण तं अम्मताओ ! जण तुव्वे मम एव वदह—इमं च ण ते जाया ! सरीरग त चेव जाव^१ पव्वइहिंसि, एव खलु अम्मताओ ! माणुस्सग सरीरं दुक्खाययण, विविहवाहिसयसन्निकेतं, अट्टियकट्ठट्टियं, छिराण्हारुजाल-ओणद्धसपिणद्ध, मट्टियभड व दुव्वल, असुइसकिलिट्ठ, अणिट्ठविय-सव्वकालसठप्पय, जराकुणिम-जज्जरघर व सडण-पडण-विद्धसणधम्म, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहि-यव्व भविस्सइ । से केस ण जाणइ अम्मताओ ! के पुव्वि *गमण्याए, के पच्छा गमण्याए ? त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुव्वेहि अवभणुणाए समाणे

१. भ० ६।१६६ ।

६. °समूविय (ता) ।

२. सुविणगसदं° (क, म); सुविणगद° (स) ।

७. उयग (ता) ।

३. के (ता, ना० १।१।१०७) ।

८. लट्ठ° (स) ।

४. स० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए ।

९. भ० ६।१६६ ।

५. पइवि° (ता, व) ।

१०. स० पा०—तं चेव जाव पव्वइत्तए ।

समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइत्तए ॥

१७३. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमाओ य ते जाया । विपुलकुलबालियाओ^१ कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ^२, मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपडिय-वियक्खणाओ, मज्जुलमियमहुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ^३, विसुद्धकुलवससताणततुवद्वण-प्पगब्भुभवपभाविणीओ^४, मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ, निच्च भावाणुरत्तसव्वग-सुदरीओ^५ । त भुजाहि ताव जाया ! एताहि सद्धि विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहि कालगएहि^६ °समाणेहि परिणयवए वडिद्धयकुलवसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइत्तहि ॥

१७४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ! जण तुव्भे मम एय वदह—इमाओ ते जाया ! विपुलकुल-बालियाओ जाव^७ पव्वइत्तहि, एव खलु अम्मताओ ! माणुस्सगा कामभोगा^८ उच्चार-पासवण-खेल-सिघाणग-वत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणु-ण्णदुर्य^९-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा, मयगधुस्सास^{१०}-असुभनित्सासउव्वेयणा, बीभच्छा^{११}, अप्पकालिया, लहसगा^{१२}, 'कलमलाहिवासदुक्खा बहुजणसाहारणा^{१३}', परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्जा, अबुहजणणिसेविद्या, 'सदा साहुगरहणिज्जा^{१४}',

१. °बालियाओ (स), सरिसियाओ, सरित्तयाओ, विरुओ (वृषा) ।
- सरिब्बयाओ, सरिसलावण्णरूव—जोब्बरा- ५. °सदरीओ भारियाओ (ब, म, स) ।
- गुणोववेयाओ, सरिसएहितो कुलेहितो आणि- ६. स० पा०—कालगएहि जाव पव्वइत्तहि ।
- एल्लियाओ (अ, क, व, म, स); असौ पाठ ७. भ० ६।१७३ ।
- 'ता' सकेतित्वे आदर्शे नास्ति तथा वृतावपि ८. कामभोगा वसुई, असासया, वतासवा, पित्ता-
- नास्ति व्याख्यात. । नायाधम्मकहाओ (१।१। सवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा
- १०८) असौ विद्यते । तस्य वाचनान्तरे चैव (अ, व, म, स) ।
- पाठो नास्ति । वाचनान्तरगतश्च पाठ ९. °दुरूव (अ, क, व, स) ।
- प्रस्तुतभगवतीपाठसङ्ग्रहोस्ति । १०. मद° (ता); मत° (व) ।
२. सुहोइयाओ (व) । ११. बीमत्था (व) ।
३. °णियाओ (व) । १२. लहसगा (अ, क, व, म) ।
४. प्पगव्वभपभा ° (अ), पगव्वभयभा ° (क, १३. °दुक्खवहुजण ° (क, ता, व, म) ।
- वृ), पगव्वभवपभा ° (ता); पगव्वभुभवपभा- १४. साधुजणगरहणिज्जा (ता) ।

अणंतसंसारवद्धणा, कहुगफलविवागा चुडल्लिव अमुच्चमाण^१, दुक्खानुवंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा । से केस णं जाणइ अम्मताओ^२ । के पुंवि गमणयाए ? के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि ण अम्मताओ^३ । •तुव्भेहिं अव्वभणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^४ पव्वइत्तए ॥

१७५. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहू हिरण्णे य^१, सुवण्णे य, कसे य, हुंसे य, विउलधण-कणग^२-•रयण-मणि-भोत्तिय-सख-सिल-पपालरत्तरयण^३ - सतसार-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, परिभाएउ, त अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लणे, वड्ढियकुलवस^४ •ततुकज्जम्मि निरवयवखे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^५ पव्वइहिसि ॥

१७६. तए ण से जमालो खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तद्वा वि ण तं अम्मताओ ! जण तुव्भे मम एव वदह—इम च ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए जाव^१ पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ ! हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएज्जे अगिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइय-साहिए, अगिसामण्णे^२, •चोरसामण्णे, रायसामण्णे, मच्चुसामण्णे^३, दाइय-सामण्णे, अधुवे, अणितिए, असासए, पुंवि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस ण जाणइ •अम्मताओ ! के पुंवि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुव्भेहिं अव्वभणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय^४ पव्वइत्तए ॥

१७७ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मताओ जाहे नो सचाएति विसयाणुलो-माहि वहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य, आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे विसयपडि-कूलाहि सजमभयुव्वेयणकरीहि^१ पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी—एवं

१. इह श्रयभावहवचनलोपो दृश्य. (वृ) ।

२. स० पा०—अम्मताओ जाव पव्वइत्तए ।

३. या (क, ता, व, य) सर्वत्र ।

४. स० पा०—कएग जाव सासार^० ।

५. स० पा०—वड्ढियकुलवस जाव पव्वइहिसि ।

६. भ० ६।१७५ ।

७. स० पा०—अगिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे ।

८. स० पा०—त चेव जाव पव्वइत्तए ।

९. •भयुव्वेयक^० (ता); भयुव्वेयणक^० (व) ।

खलु जाया ! निम्नये पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले^१ •पडिपुण्णे नेयाजए ससुद्धे
सत्तलगतत्ते सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहे अविसधि
सब्बदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिवा-
यति ° सव्वदुक्खाण अत करेति ।

अहीव एगतदिट्ठीए, खुरो इव एगतघाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुया-
कवले इव निस्साए, गगा वा महानदी पडिसोयंगमणयाए, महासमुद्धो वा
भुयाहि दुत्तरो, तिवक्खं कमियव्व, गस्स^२ लंबेयव्व, असिघारग वय चरियव्व ।
नो^३ खलु कप्पइ जाया ! समणण निग्गथाणं अहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ
वा, मिससजाए^४ इ वा, अज्झोयरए^५ इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे
इ वा, अण्णजे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कतारमत्ते इ
वा, दुड्ढिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वदलियाभत्ते इ वा, पाहु-
णभत्ते इ वा, सेज्जायरपिडे इ वा, रायपिडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभो-
यणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, मोत्तए वा
पायए वा ।

तुम सि च ण जाया ! मुहसमुच्चिए नो चेव ण दुहसमुच्चिए, नाल सीयं, नाल
उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नाल चोरा, नाल वाला, नाल दसा, नाल
मसगा, नाल बाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, परिस्सहोव-
सग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए । त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्बं खणमवि
विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तम्मो पच्छा
अम्हेहि^६ •कालगएहि समाणेहि परिणयवए, वडिडयकुलवंसततुकज्जम्मि
निरवयवक्खे समणस्स भगवन्नो महावीरस्स अंतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अण-
गारिय ° पव्वइहिसि ॥

१७८. तए णं से जमाली खत्तियकुमारो अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त
अम्मताओ^१ ! जणं तुब्भे मम एव वदह— एवं खलु जाया ! निम्नये पावयणे
सच्चे अणुत्तरे केवले त चेव जाव^२ पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! निम्नये
पावयणे कीवाणं कायरण कापुरिसाण इहलोगपडिबद्धाण परलोगपरमुहाण
विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो
खलु एत्थं किंचि वि दुक्कर करणयाए, तं इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहि

१. स० पा०—जहा आवस्सए जाव सव्व ° ।

२. मुख्य (अ) ।

३. गो य (अ, ता, द) ।

४. मीसजाए (ता); मिसाजाए (ब) ।

५. उज्झो ° (अ, स) ।

६. स० पा०—अम्हेहि जाव पव्वइहिसि ।

७. जम्मयाओ (अ, स) ।

८. अ० ६।१७७ ।

अवभणुणाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स' अंतियं मुंडे भवित्ता
अगाराओ अणगारिय' पव्वइत्तए ॥

१७६ तए ण त जमालि खत्तियकुमारं अम्मापियरो जाहे नो सचाएंति विसयाणुलो-
माहि य, विसयपडिकूलाहि य वहुँह आघवणाहि य पणवणाहि य सणव-
णाहि य विणवणाहि य आघवेत्तए वा' पणवेत्तए वा सणवेत्तए वा' विण-
वेत्तए वा, ताहे अकामाइ चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमण अणु-
मणित्था ॥

१८०. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दा-
वेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुडग्गाम नयरं
सव्विभत्तरवाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जहा ओववाइए जाव' सुगंधवर-
गघगघिय गघवट्ठिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय
पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ॥

१८१. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ,
सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमा-
रस्स महत्थ महत्थं महिरह विपुल निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह । तए णं ते
कोडुवियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेति ॥

१८२. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहं
निसीयावेत्ति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवणियाण कलसाणं, 'अट्ठसएणं रूप-
मयाण कलसाण, अट्ठसएण मणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण सुवणरूपमयाणं
कलसाण, अट्ठसएण सुवणमणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण रूपमणिमयाणं
कलसाण, अट्ठसएण सुवणरूपमणिमयाण कलसाण', अट्ठसएण भोमेज्जाणं
कलसाण सव्विड्डीए' सव्वजुतीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएण सव्वादरेण सव्व-
विभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेण सव्वपुप्फगधमल्लालकारेणं सव्वतुडिय-
सद्द-सणियाएण महया ड्डीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण
महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएण सख-पणव-पडह-भेरि-अल्लरि-खरमुहि-
हुडुवक-मुरय-मुइग-दुडुहि-णिगघोसणाइय' रवेणं महया-महया निक्खमणाभि-
सेगेण अभिसिचित्ति, अभिसिचित्ता करयल' परिग्गहिय दसनहं सिरसावत्त

१. स० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ।

इति पद अत्र नावश्यक प्रतिभाति ।

२. स० पा०—वा जाव विणवेत्तए ।

५ म० पा०—एवं जहा रावप्पमेणउज्जे जाव

३. ओ० सु० ५५ ।

अट्ठसएण ।

४. पच्चप्पिणति (अ, क, ता, व, म, त्त);

६. स० पा०—सविड्डीए जाव रवेण ।

नापाधम्मकहाओ (१११११६, ११७) सूत्रा-

७ स० पा०—करयल जाव जएण ।

नुसारेण एतत्पदं स्वीकृतम् । 'पच्चप्पिणति'

मत्थए अंजलि कट्टु° जएण विजएणं वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! कि देमो? कि पयच्छामो ? 'किणा व' ते अट्ठो ?

१८३. तए ण से जमाली खत्तियकुमारो अम्मापियरो एव वयासी—इच्छामि णं अम्म-ताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिय°, कासवग च सद्दाविय° ॥

१८४. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ गहाय° 'दोहि सयसहस्सेहि'° कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेण कासवग सद्दावेह ॥

१८५. तए ण ते कोडुबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा करयल° •परिग्गहियं दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामी ! तहत्ताणाए विणएण वयण पडिसुणेति°, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ° •गिण्हति, गिण्हत्ता दोहि सयसहस्सेहि कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेति, सयसहस्सेण° कासवग सद्दावेति ॥

१८६. तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुबियपुरिसेहि सद्दा-विए समाणे हट्ठुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे° •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पा-वेसाइ मंगलाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकिय° सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल°-•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° जमालिस्स खत्तियकुमा-रस्स पियर जएण विजएण वद्धावेइ वद्धावेत्ता एव वयासी—सदिसु तु ण देवाणुप्पिया ! ज मए करणिज्ज ?

१८७. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया त कासवग एव वयासी—तुम देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरगुलवज्जे निक्खमणपाओगे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१८८. तए ण से कासवगे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वुत्ते समाणे

१. कि णा वा (व, स); कि णा व (म) ।

२. आणिउ (ता. व) ।

३. सद्दावेउं (ता); सद्दावितु (व) ।

४. गहेत्ता (ता) ।

५. दोहि सयसहस्सेण (अ, क); एगसतसहस्सेणं (ता), सयसहस्सेण (व, म, स); बहुवचनान्तं

पद नायाधम्मकहाओ (१।१।१२२) सूत्रस्था-
घारेण स्वीकृतम् ।

६. स० पा०—करयल जाव पडिसुणेत्ता ।

७. स० पा०—तहेव जाव कासवग ।

८. स० पा०—कयबलिकम्मे जाव सरीरे ।

९. स० पा०—करयल ।

हटुतुदे करयल^१ परिग्गहिय दसनहं सिरसावतं मत्थए अंजलि कट्टु^२ एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गधोदएणं हत्थपादे पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धाए अट्टपडलाए^३ पोत्तीए मुहं बंधइ, बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओमो अग्गकेसे कप्पेइ ॥

१८६. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेणं पडसाइएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गधोदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहि वरेहि गवेहि मल्लेहि अच्चेत्ति, अच्चेत्ता 'सुद्धे वत्थे'^४ वंधइ, वधित्ता रयणकरडगसि पक्खिवत्ति, पक्खिवित्ता हार-वारिघार-सिंदुवार-छिण्णमुत्ता-वल्लिप्पगासाइ सुयवियोगदूसहाइ^५ असूइं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी एवं वयासी—एस ण अम्ह जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु ऊसीसगमूले ठवेति ॥

१९०. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चं पि उत्तरावक्क-मणं सीहासण रयावेत्ति, रयावेत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया^६-पीयएहि कलसेहि ण्हावेत्ति, ण्हावेत्ता पम्हलसुकुमालाए मुरभीए गधकासाईए गायार्इ लूहेत्ति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचदणेण गायार्इ अणुलिपत्ति, अणुलिपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झ चक्खुहर वण्ण-फरिसजुत्त^७ ह्यलालापेलवातिरेण धवलं कणगखचित्तकम्म महरिह हसलक्खणपडसाइग परिहत्ति, परिहित्ता हारं पिणद्धेत्ति^८, पिणद्धेत्ता अद्धहार पिणद्धेत्ति^९, पिणद्धेत्ता *एगावलि पिणद्धेत्ति, पिणद्धेत्ता मुत्तावलि पिणद्धेत्ति, पिणद्धेत्ता रयणावलि पिणद्धेत्ति, पिणद्धेत्ता एव—अगयार्इ केयूराइ कडगार्इ तुडियार्इ कडिसुत्तग दसमुद्धानंतगं विकच्छसुत्तग^{१०} मुरवि कठमुरवि पालव कुडलाइ चूडामणि^{११} चित्तं रयणसकडुक्कड मउड पिणद्धेत्ति, कि बहुणा ? गथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेण चउव्विहेण मल्लेणं कप्परक्खण पिव अलकिय-विभूसिय करेत्ति^{१२} ॥

१. स० पा०—करयल जाव एव ।

२. चउप्पलाए (ता० १।१।२५) ।

३. सुद्धवत्थेण (अ, स) ।

४. °दूसहसहाइ (क, व, म) ।

५. सीया (अ, व, म, स) ।

६. °सजुत्त (अ) ।

७. पिणहेत्ति (ता, व) ।

८. पिणहेत्ति (व) ।

९. स० पा०—एव जहा सूरियाभस्स अलकारो तहेव जाव चित्त ।

१०. वच्छसुत्त (अ० वृ०); वेक्कसुत्त (वृपा) ।

११. वाचनान्तरे त्वयमलकारवर्णक. साक्षालि-खित एव दृश्यते (वृ) ।

१२. वाचनान्तरे पुनरिदमधिक 'दहरमलयसुगधि-गधिएहि गायार्इ मुकुडेत्ति' ति दृश्यते (वृ) ।

१६१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखभसयसण्णिविट्ठ, लील-द्वियसालभजियाग जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ जाव' मणिरयणघटिया-जालपरिक्खित्त' पुरिससहस्सवाहिणि सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाण-त्तिय पच्चप्पिणह । तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ॥
१६२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालकारेणं, वत्थालंकारेण, मल्लालंकारेणं, आभरणालकारेण —चउव्विहेण अलकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठत्ता सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीय दुरुहइ', दुरुहत्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥
१६३. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयबलिकम्मा जाव' अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा हसलक्खण पडसाडणं गहाय सीय अणुप्पदा-हिणीकरेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरसि सण्णिसण्णा ॥
१६४. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयबलिकम्मा जाव' अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा रयहरण पडिग्गह च गहाय सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरसि सण्णिसण्णा ॥
१६५. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागार-चारुवेसा सगय-गय'-●हसिय-भणिय-चेद्विय-विलास-सललिय-सलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण-●-रुव-जोव्वण-विलासकलिया' सरदव्व-हिम-रयय-कुमुद-कुद्वेदुप्पगासं सकोरेटमल्ल-दाम धवल आयवत्त गहाय सलीलं 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी' चिट्ठति ॥

१. राय० सू० १७ ।

२. वाचनान्तरे पुनरय वरुणं साक्षाद्वक्ष्यत एव (वृ) ।

३. द्रुहि (क, ता, व) ।

४. भ० ३।३३ ।

५. भ० ३।३३ ।

६. स० पा०—सगयगय जाव रुव ।

७. विलासकलिया सुदरथण (अ, व, म, स); एषु आदर्शेषु 'विलासकलिया' इति पदस्याग्रे 'सुदरथण' इति संक्षिप्तपाठो विद्यते, किन्तु एष पाठ 'विलासकलिया' इति पदस्यादौ

विद्यमानोस्ति, तेन नात्र युज्यते । वृत्तिकृतापि उक्तपदानन्तरमसौ पाठः स्वीकृतः, किन्तु एतस्मिन् स्वीकारे पाठस्य पुनरुक्तिर्जायते, यथा—'रुवजोव्वणविलासकलिया' सुन्दरथ-णजह्णुवयणकरचरणायणलावणरुवजोव्व-णगुणोववेय' इति सूचितम् (वृ), अस्माकं पाठानुगमनानुप्रयुक्ते प्रतिद्वये एष पाठो नास्ति । एषा वाचना सम्यक् प्रतीयते ।

८. X (अ, व, म, स) ।

९. उवधरेमाणीओ उवधरेमाणीओ (अ); उवारि धरेमाणीओ २ (स) ।

- १६६ तए ण तस्स जमालिस्स (खत्तियकुमारस्स ?) उभओ पासि दुवे वरतरुणीओ सिगारागार^१●चारुवेसाओ सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुतोवयारकुसलाओ सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण-रूव-जोव्वण-विलास^२ कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमलमह-रिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदडाओ, चिल्लियाओ, सखक-कुद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुजसणिकासाओ धवलाओ चामराओ^३ गहाय सलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठति ॥
१६७. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिगारागार^४●चारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुतोवयारकुसला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण-रूव-जोव्वण-विलास^५ कलिया सेत रययामय विमलसलिलपुण्ण भत्तगयंमहामुहा-कितिसमाण भिगार गहाय चिट्ठइ ॥
- १६८ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिगारागार^६●चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुतोवयारकुसला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण-रूव-जोव्वण-विलास^७ कलिया चित्तकणगदंडं तालवेट गहाय चिट्ठइ ॥
१६९. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिस्सं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं सरित्तयं सरिक्खयं सरिसलावण-रूव-जोव्वण-गुणोववेय, एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडु-वियवरतरुणसहस्सं सद्दावेइ ॥
२००. तए ण ते कोडुवियपुरिस्सां जाव^८ पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं^९ ●सरिक्खय सरिसलावण-रूव-जोव्वण-गुणोववेय एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडुवियवरतरुणसहस्सं सद्दावेति ॥
- २०१ तए ण ते कोडुवियवरतरुणपुरिस्सां जमालिस्स खत्तियकुमारस्सं पिउणा कोडु-वियपुरिस्सेहि सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयं-मगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्सं खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलं^{१०} परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त

१. स० पा०—सिगारागार जाव कलिया ।

६. म० १।१८५ ।

२. सेयवरचामराओ (क) ।

७. स० पा०—सरित्तय जाव सद्दावेति ।

३. स० पा०—सिगारागार जाव कलिया ।

८. अस्मिन् पदे 'वरतरुण' इति पाठ नायाधम्म-

४. स० पा०—सिगारागार जाव कलिया ।

कहावो (१।१।१४०) सूत्रानुसारेण स्वीकृतः ।

५. एगारसेभरणं (अ) ।

९. स० पा०—करयल जाव वद्धोवेत्ता ।

मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेत्ति, ° वद्धावेत्ता एव वयासी—संदि-
सतु ण देवाणुप्पिया ! ज अम्हेहि करणज्जं ॥

२०२. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया त कोडुबियवरतरुणसहस्स^१ एवं
वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कय^२ ° बलिकम्मा कयकोउय-मगल-
पायच्छित्ता एगाभरणवसण ° -गहियनिज्जोया जमालिस्स खत्तियकुमारस्स
सीयं परिवहेह ॥

२०३. तए ण ते कोडुबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव
वुत्ता समाणा जाव^३ पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव^४ एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया
जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीय परिवहति ॥

२०४. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणि सीय दुरूढस्स
समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्टुमगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया, त जहा
—सोत्थिय-सिरिवच्छ^५ ° -णदियावत्त-वद्धमाणग-भ्हासण-कलस-मच्छ ° -दप्पणा ।
तदाणतरं च ण पुण्णकलसभिगार^६, ° दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दसण-रइय-
आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धय-विजयवेजयती य ऊसिया ° गगणतलमणुलिहती
पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

° तदाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसत-विमलदड पलबकोरटमल्लदामोवसोभिथ
चंदमडलणिमं समूसियं विमलं आयवत्त, पवर सीहासण वरमणिरयणपाद-पीड
सपाउयाजोयसमाउत्त बहुकिकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्त पुरओ
अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय ।

तदाणतरं च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा
पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीडग्गाहा वीणग्गाहा कूदग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ
अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

तदाणतरं च ण वहवे दडिणो मुडिणो सिहडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकरा
डमरकरा दवकरा चाडुकरा कदप्पिया कोवकुइया किडुकरा य वायता य
गायता य णच्चंता य हसता य भासंता य सासता य सावेता य रक्खता य °
आलोयं च करेमाणा जय-जय सई पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

१. ° सहस्स पि (अ, क, व, म, स) ।

२. स० पा०—कय जाव गहिय ° ।

३. भ० ६।१८५ ।

४. भ० ६।२०१ ।

५. स० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा ।

६. स० पा०—जहा ओववाइए जाव गगण ° ;

अनेन च यदुपात्त तद्वाचनान्तरे साक्षादेवा-
स्ति (वृ) ।

७ स० पा०—एव जहा ओववाइए तहेव भाणि-
यव्व जाव आलोय, एतच्च वाचनान्तरे प्राय-
साक्षाद्वक्ष्यत एव (वृ); वृत्तिकृता वाच-
नान्तरे अधिकपाठस्यापि सूचना कृतस्ति ।

तदाणंतरं च ण वहवे उग्गा भोगा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा जहा ओव-
वाइए जाव' महापुरिसवगुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ
य मग्गतो य पासओ य अहणुपुव्वीए संपट्ठिया ॥

२०५. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयवलिकम्मे' *कयकोउय-
मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार° विभूसिए हत्थिक्खधवरणए सकोरेटमल्लदामेण
छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धव्वमाणीहि-उद्धव्वमाणीहि ह्य-गय-
रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे मह्याभडचडगर-
विदपरिक्खित्ते' 'जमालि खत्तियकुमार' पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥

२०६. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ मह आसा आसवरा', उभओ
पासि नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसगेल्लो ॥

२०७. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुगतभिगारे, परिग्गहियतालियटे', ऊस-
वियसेतछत्ते, पवीइयसेतचामरवालवीयणीए, सव्विड्ढीए जाव' दुदहि-णिग्घोस-
णादितरवेण' खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे,
जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ॥

२०८. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण
निग्गच्छमाणस्स सिधाडग-तिय-चउक्क'-*चच्चर-चउम्मुह-महापह° पहेसु
वहवे अत्थत्थिया *कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोड्डिया
कारवाहिया सखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया
खड्डियग्गणा ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि
हिययगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमगलसएहि अणवरय° अभिनदता य अभि-
त्थुणता य एव वयासी—जय-जय नदा ! धम्मेण, जय-जय नदा ! तवेण, जय-

१. ओ० सू० ५२ ।

२. स० पा०—कयवलिकम्मे जाव विभूसिए ।

३. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, व,
म, स) ।

४. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स (अ, स) ।

५. आसवारा (वृषा) ।

६. °तालयटे (क, ता) ।

७. भ० १।१८२ ।

८. अतोत्रे 'अ, व, म, स' इति सकेतितेषु आदर्शेषु
एतावान् अधिक पाठो लभ्यते—

'तदाणंतरं च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा

जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा, तदाण-
तरं च ण अट्ठसय गयाण, अट्ठसम तुरयाण,
अट्ठमय रहाण, तदाणतरं च ण लउड-असि-
कोतहत्थाण वहूण पायत्ताणीण पुरओ सप-
ट्ठिय, तदाणतरं च ण वहवे राईसर-त्तलवर
जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ सपट्ठिया ।'
असौ पाठ. अत पूर्ववर्ती विद्यते । लिपिदोषेण
प्रमादेन वा अत्र प्रवेश प्राप्त । प० देचर-
दाससम्पादितभगवत्पामपि इत्थमेव अस्ति ।

९. स० पा०—चउक्क जाव पहेसु ।

१०. स० पा०—जहा ओववाइए जाव अभिनदता

जय नन्दा ! भद्रं ते^१ अभग्नेहि^२ नाण-दंसण-चरित्तेहिमुत्तमेहि^३, अजियाइं जिणाहि इंदियाइ, जियं पालेहि समणघम्म, जियविग्घो वि य वसाहि त देव^४। सिद्धिमज्जे, निहणाहि य रागदोसमत्ते तवेण धित्तिघणियवद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ट कम्मसत्तू भाणेण उत्तमेण सुक्केण, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडाग च धीर ! तेलोक्करगमज्जे, पावय वित्तिमिरमणुत्तर केवल च नाण, गच्छ य मोक्ख पर पदं जिणवरोवदिट्ठेण सिद्धिमग्गेण अकुडिलेण हत्ता परीसहचमू अभि-भवियं^५ गामकटकोवसग्गा ण, धम्मे ते अविग्घमत्थु त्ति कट्टु अभिनदति य अभिथुणति य ॥

२०६ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहि पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे *हिययमालासहस्सेहि अभिणदिज्जमाणे-अभिणदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहि विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहि अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कतिसोहग्गुणेहि पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे वहुणं नरनारि-सहस्साण दाहिणहत्थेण अजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे मंजु-मज्जुणा घोसेण आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे भवणपतिसहस्साइ समइच्छमाणे-समइच्छमाणे खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झमज्जेण^६ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे जेणेव वहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

२१०. तए णं त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिव्वुत्तो^७ *आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमसंति, वदिता^८ नमसित्ता एवं वयासी—एव खलु भते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते^९ *पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए समए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविऊसविए हिययनदिजणणे उवरपुप्फ पिब दुल्लभे सवणयाए^{१०}, किमग ! पुण पासणयाए ? से जहानामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा जाव^{११} सहस्सपत्ते इ वा पके जाए जले सवुडे नोवलिप्पति पकरणे, नोवलिप्पति जलरणं, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहि जाए, भोगेहि सवुड्डे

१. भवतादिति गम्यते (वृ) ।

२. अभिग्नेहि (अ) ।

३. चरित्तमुत्तमेहि (अ, क, म, स); चरित्तमु-त्तेहि (ता) ।

४. अभिभविया (अ, क, म); अभिभविता (ता); अभिसमिया (व) ।

५. स० पा०—एव जहा^१ ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ ।

६. स० पा०—तिव्वुत्तो जाव नमसित्ता ।

७. स० पा०—कते जाव किमग ।

८. ओ० सू० १५० ।

- नोवलिप्पत्ति कामरणं, नोवलिप्पत्ति भोगरणं, नोवलिप्पत्ति मित्त-णाइ-
णियग-सयण-सवधि-परिजणेण । एस ण देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे भीए
जम्मण-मरणेण, इच्छइ^१ देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगा-
रियं पव्वइत्तए^२ । तं एय ण देवाणुप्पियाण अम्हे सीसभिकख दलयामो, पडि-
च्छनु ण देवाणुप्पिया ! सीसभिकख ॥
- २११ 'तए णं समणे भगव महावीरे जमालि खत्तियकुमार एव वयासी'—अहासुहं
देवाणुप्पिया ! मा पडिवंध ॥
२१२. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे
हट्ठुत्ते समण भगवं महावीर तिकखुत्तो^३ •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता
वदइ नमसइ, वदित्ता^४ नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमइ,
अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ ॥
- २१३ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाइएण आभरण-
मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारि^५ •धार-सिदुवार-छिन्नुत्तावलि-
प्पगासाइ असूणि^६ विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी जमालि खत्तियकुमारं
एव वयासी—'जइयव्व जाया ! घडियव्व'^७ जाया ! परक्कमियव्वं जाया !
अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएत्तव्व ति कट्ठु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-
पियरो समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस
पाउव्वभूया तामेव दिस पडिगया ॥
२१४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव
समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, •उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं
तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
एव वयासी—आलित्ते ण भते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-
पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।

१. × (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. × (अ, क, व, म) ।

२. पव्वतेति (अ), पव्वयति (क); पव्वइत्तइ
(ता), पव्वतित्ति (व); पव्वत्ति (म);
पव्वतित्ति (स) अत्र 'इच्छइ, पव्वइत्तए'
एते द्वे अपि पदे नायाधम्मकहाजो
(११।१४५) सूत्रस्याधारेण स्वीकृते स्त. ।
सर्वेषु अपि आदर्शेषु लिपिदोषेण पाठपरिवर्तन
जातम् । तन्मध्यवर्तिपाठानां नहि कश्चिदर्थो-
वगम्यते ।

४. स० पा०—तिकखुत्तो जाव नमसित्ता ।

५. स० पा०—वारि जाव विणिम्मयमाणी ।

६. घडियव्व जाया जइयव्व (अ, क, ता, व,
म, स) ।

७. स० पा०—एव जहा उअभदत्तो तहेव पव्व-
इओ नवर पचाहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव
जाव ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारसि भियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ
अप्पभारे मोल्लगरुए, त गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए
समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए
भविस्सइ ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे
थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण
उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण चोरा, मा ण वाला, मा ण दसा,
मा ण मसया, मा ण बाइय-पित्तिथ-सेभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायका
परीसहोवसग्गा फुसतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए
सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुडाविय, सयमेव
सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-
करण-जायामायावत्तिथ धम्ममाइविय ।।

२१५. तए ण समणे भगवं महावीरे जमालि खत्तिथकुमार पचहि पुरिससएहि सद्धि
सयमेव पव्वावेइ ° जाव^१ सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ,
अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठम^२ ° दसम-दुवालसेहि ° मासद्ध-मासखमणेहि
विचित्तेहि तवोक्कम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२१६. तए ण से जमाली अणगारे अणया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुणाए समाणे पचहि अणगार-
सएहि सद्धि बहिया जणवयविहार विहरित्तए ॥

२१७. तए ण समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ नो आढाइ, नो
परिजाणइ, तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥

२१८. तए ण से जमाली अणगारे समणं भगव महावीरं दोच्च पि तच्च पि एवं
वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुणाए समाणे पचहि अणगारसएहि
सद्धि ° बहिया जणवयविहारं ° विहरित्तए ॥

२१९. तए णं समणे भगव महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्च पि एयमट्ठ
नो आढाइ, ° नो परिजाणइ, तुसिणीए सच्चिट्ठइ ।

२२०. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिथाओ बहुसालाओ चेइयाओ

१. म० २।५३.५७ ।

२. स० पा०—छट्ठम जाव मासद्ध ।

३. स० पा०—सद्धि जाव विहरित्तए ।

४. स० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए ।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिप्ता पचहि अणगारसएहि सद्धि बहिया जणवय-
विहार विहरइ ॥

२२१. तेणं कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ^१, कोट्टए
चेइए—वण्णओ जाव^२ वणसडस्स । तेण कालेणं तेणं समएण चंपा नाम नयरी
होत्था—वण्णओ^३ । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ जाव^४ पुढविसिलापट्टओ ॥

२२२. तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडे
पुव्वाणुपुण्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दुइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव
कोट्टए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ,
ओगिण्हिता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुण्वि चरमाणे^५ गामाणु-
ग्गाम दुइज्जमाणे^६ सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे
चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ,
ओगिण्हिता सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२४. तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहि ‘अरसेहि य’^७, विरसेहि य अतेहि य,
पतेहि य, जूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कतेहि य, पमाणाइक्कतेहि य^८ पाण-
भोगेहि अण्णया कयाइ सरीरगसि विउले रोगातके पाउवभूए—उज्जले
विउले^९ पगाढे कक्कसे कडुए चडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे । पित्तज्जरपरि-
गतसरीरे, दाहवक्कतिए^{१०} या वि विहरइ ॥

२२५. तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गथे सद्दावेइ,
सद्दावेत्ता एव वयासी—तुम्हे ण देवाणुप्पिया ! मम सेज्जा-संथारग सथरह ॥

२२६. तए ण ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठ विणएणं पडिसुणेति,
पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-संथारग सथरति ॥

२२७. तए ण से जमाली अणगारे बलियतर वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्च पि समणे
निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—मम^{११} ण देवाणुप्पिया ! सेज्जा-
संथारए कि कडे ? कज्जइ ?

तते ण ते समणा निग्गथा जमालि अणगार एवं वयासी—तो खलु देवाणुप्पियाणं
सेज्जा-संथारए कडे, कज्जइ ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. ओ० सू० २-१३ ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० २-१३ ।

५. स० पा०—चरमाणे जाव सुहसुहेण ।

६. अरसेहि या (क, ता, व) सर्वत्र ।

७. य सीओएहि य (अ), य सीएहि (व); य
सीतेहि य (स) ।

८. विउले (व, म); तिउले (स, वृ); विउले
(वृपा) ।

९. दाहवुक्कतिए (व) ।

१०. मम (अ, स) ।

२२८. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अथमेयारूवे अज्झत्थिए^१ *चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^० समुप्पज्जित्था—जण्णं समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव^२ एवं पख्वेइ—एव खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए^३, *वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे, छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्जमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए^०, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा । इम च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए । जम्हा ण सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असथरिए । तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता समणे निग्गथे सद्दवेइ, सद्दवेत्ता एव वयासी—जण्ण देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव पख्वेइ—एव खलु चलमाणे चलिए *जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा । इम च ण पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असथरिए । जम्हा ण सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए । तम्हा चलमाणे वि अचलिए^० जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे ॥

२२९. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव पख्वेमाणस्स अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ सद्दहति पत्तियति रोयति, अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति । तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ सद्दहति पत्तियति रोयति, ते ण जमालि चैव अणगारं उवसपज्जित्ता णं विहरति । तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति, ते ण जमालिस्स अणगारस्स अतियाओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिन्ता पुट्ठाणुपुट्ठ चरमाणा गामाणुग्गाम दूइज्जमाणा जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता समण भगवं महावीर उवसपज्जित्ता णं विहरति ॥

२३०. तए णं से जमाली अणगारे अणण्या कयाइ^४ ताओ रोगायकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए वलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ

१. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

४. स० पा०—त चैव जाव ।

२. म० १।४२० ।

५. कयाति (अ, व, स), कदायी (ता) ।

३. सं० पा०—उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुब्बाणुपुब्बि चरमाणे, गामाणुग्गामं दूइज्ज-
माणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभट्ठे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उदागच्छइ, उदागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते
ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं वहवे अंते-
वासी समणा निग्गंथा छउमत्थावक्कमणेणं^१ अवक्कंता, नो खलु अहं तहा
छउमत्थावक्कमणेणं^२ अवक्कंते, अहं णं उप्पन्ननाण-दंसणघरे अरहा जिणे
केवली भवित्ता केवलिवक्कमणेणं^३ अवक्कंते ॥

२३१. तए णं भगवं गोयमे जमालि अणगारं एवं वयासी—नो खलु जमाली ! केव-
लिस्स नाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा 'थंभंसि वा' थूभंसि वा आवरिज्जइ वा
निदारिज्जइ वा, जदि णं तुमं जमाली ! उप्पन्ननाण-दंसणघरे अरहा जिणे
केवलि भवित्ता केवलिवक्कमणेणं^४ अवक्कंते, तो णं इमाइं दो वागरणाइं
वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ? सासए जोवे
जमाली ! असासए जीवे जमाली ?

२३२. तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए^५
•वित्तिगिच्छिए भेदसमावण्णे^६ कलुससमावण्णे जाए या वि होत्था, नो
संचाएति भगवओ गोयमस्स किंवि वि पमोक्खमाइकिंखित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

२३३. जमालीति ! समणे भगवं महावीरे जमालि अणगारं एवं वयासी—अत्थि णं
जमालो ! ममं वहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था, जे णं पभू एयं
वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव^७ णं एतप्पगारं भासं भासित्तए, जहा
णं तुमं ।

सासए लोए जमाली^८ ! जं न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न
भविस्सइ—भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य—वुवे, नितिए सासए, अक्खए,
अक्खए, अवट्ठिए निच्चे ।

असासए लोए जमाली ! जं ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी
भवित्ता ओसप्पिणी भवइ ।

सासए जीवे जमाली ! जं न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न
भविस्सइ—भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य—वुवे, नितिए, सासए, अक्खए,
अक्खए, अवट्ठिए^९ निच्चे ।

१. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था^० (अ, क, म, स) ५. ज्वेव (ता) ।

२. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था^० (अ, क, म, स) ६. X (क, ता) ।

३. X (अ, व, म) ।

७. सं० पा०—नासि जाव निच्चे ।

४. सं० पा०—कंखिए जाव कलुस^० ।

असासए जीवे जमाली ! जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ॥

२३४. तए ण से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव^१ एवं पख्वेमाणस्स एतमट्ठु नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठु असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्च पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेइ, भूसेत्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स^२ अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ॥

२३५. तए ण भगव गोयमे जमालि अणगार कालगय जाणित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से ण भते ! जमालो अणगारे कालमासे काल किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ?

गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! मम अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे, से ण तदा मम एवमाइक्खमाणस्स एव भासमाणस्स एव पण्णवेमाणस्स एव पख्वेमाणस्स एतमट्ठु नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठु असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे, दोच्च पि मम अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहि असब्भावुब्भावणाहि^३ *मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेत्ता, तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु^४ देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ॥

२३६. कतिविहा ण भते ! देवकिव्विसिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! ति विहा देवकिव्विसिया पण्णत्ता, त जहा—तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ॥

२३७. कहि ण भते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परि वसति ?

१. भ० १।४२० ।

३. स० पा०—त चेव जाव देव० ।

२. ट्ठाणस्स (ता, म, स) ।

गोयमा ! उप्पि जोइसियाण, हिट्ठि^१ सोहम्मीसाणेषु कप्पेसु, एत्थ णं तपलिओ-
वमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ॥

२३८. कहि ण भते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?

गोयमा ! उप्पि सोहम्मीसाणाणं कप्पाण, हिट्ठि सणकुमार-माहिदेसु कप्पेसु,
एत्थ ण तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ॥

२३९. कहि ण भते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?

गोयमा ! उप्पि वभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठि लतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरो-
वमट्ठिइया देवकिव्विसिया देवा परिवसति ॥

२४०. देवकिव्विसिया ण भते ! केसु कम्मादाणेषु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो
भवति ?

गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया,
गणपडिणीया, सघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाण अयसकारा^२ अवणकारा,
अकित्तिकारा बहूहि असवभावुवभावणाहि, मिच्छताभिनिवेसेहि य अप्पाण पर
च तदुभय च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइ वासाइ सामणपरियाग पाउणति,
पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा अण-
यरेसु देवकिव्विसिएसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—ति-
पलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु
वा ॥

२४१. देवकिव्विसिया ण भते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, 'भवक्खएणं, ठिति-
क्खएण' अणतर चय चइत्ता कहि गच्छति ? कहि उववज्जति ?

गोयमा ! जाव चत्तारि पच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं
ससार अणुपरियट्ठित्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति^३ *मुच्चति परिणिव्वा-
यति सव्वदुक्खाणं अत करेति, अत्येगतिया अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध
चाउरत ससारकतार अणुपरियट्ठति ॥

२४२. जमाली ण भते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अताहारे पंताहारे लूहाहारे
तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी^४ *अतजीवी पतजीवी लूहजीवी^५ तुच्छजीवी
उवसतजीवी पसतजीवी विवित्तजीवी ?

हुता गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी ॥

२४३. जति ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी

१. हिट्ठि (ता) सर्वत्र, हिंवि (म) ।

४. स० पा०—बुज्झति जाव अंत ।

२. °करा (अ, स); सर्वत्र, अयसकारगा (वृ) । ५ स० पा०—विरसजीवी जाव तुच्छजीवी ।

३. ठितिक्खएण भवक्खएण (ता) ।

कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरस-
सागरोवमट्ठितिएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, आयरिय-
उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए^१ •अकित्तिकारए वहुहि असवभावुवभा-
वणाहि, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभय च वुग्गाहेमाणे^२
वुप्पाएमाणे वहुइं वासाइ सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए
तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिकंते कालमासे
कालं किच्चा लंतए कप्पे^३ •तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु
देवकिव्विसियत्ताए^४ उववन्ने ॥

२४४. जमाली णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं^१ •भवक्खएणं ठिइक्खएण
अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति ? •कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं ससारं अणु-
परियट्ठित्ता तओ पच्छा,सिज्झिहिति^२ •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति
सव्वदुक्खाणं^३ अंतं काहिति ॥

२४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति^४ ॥

चोत्तीसइमो उद्देशो

एगस्स वधे अणेगवध-पदं

२४६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—पुरिसे णं भंते ! पुरिस
हणमाणे कि पुरिसं हणइ^२ ? नोपुरिसे हणइ ?

गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ?

१. सं० पा०—अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे । ५. सं० १।५१ ।

२. सं० पा०—कप्पे जाव उववन्ने ।

६. सं० १।४-१० ।

३. सं० पा०—आउक्खएण जाव कहि ।

७. छणइ (वृषा) ।

४. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं ।

गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—एवं खलु अहं एग पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिस हणमाणे 'अणगे जीवे'^१ हणइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव बुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४८. पुरिसे णं भते ! आस हणमाणे किं आस हणइ ? नोआसे^२ हणइ ?

गोयमा ! आस पि हणइ, नोआसे वि हणइ ॥

से केणट्ठेण ?

अट्ठो तहेव । एवं हत्थि, सीह, वग्घ जाव^३ चिल्ललग^४ ॥

इसिस्स वघे अणंतवध-पदं

२४९. पुरिसे ण भते ? इसि हणमाणे किं इसि हणइ ? नोइसि हणइ ?

गोयमा ! इसि पि हणइ, नोइसि पि हणइ ॥

२५०. से केणट्ठेण भते ? एव बुच्चइ^५—●इसि पि हणइ, ° नोइसि पि हणइ ?

गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—एवं खलु अहं एग इसि हणामि, से णं एगं इसि हणमाणे 'अणते जीवे'^६ हणइ । से तेणट्ठेण °●गोयमा ! एवं बुच्चइ—इसि पि हणइ, नोइसि पि हणइ ° ॥

वेर-बंध-पदं

२५१. पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे किं पुरिसवेरेण पुट्ठे ? 'नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ?'^७

गोयमा ! नियम-ताव पुरिसवेरेण पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य

१. अणोणा जीवा (अ, क, ता, म, स) ।

२. नोआस (व), नोआसे वि (म) ।

३. प० १ ।

४. चित्तलग (व), अतोणे 'क, ता, व' एषु—
'एते सव्वे इक्कगमा' इति पाठोस्ति, 'अ, व, म, स'—एतेषु आदर्शेषु 'चिल्ललग' इति पाठानन्तर एव पाठोस्ति—

'पुरिसे ण भते ! अणयर तस पाण हणमाणो किं अणयर तस पाण हणइ, नोअणतरे तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! अणयर पि तस पाण हणइ, नोअणतरे वि तसे पाणे हणइ । से केणट्ठेणं भते ! एव बुच्चइ—

अणयरं पि तस पाण, हणइ नोअणयरे वि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्स ए एव भवइ—एवं खलु अहं एगं अणयर तस पाण हणामि, से ए एव अणयरं तसं पाणं हणमाणे अणगे जीवे हणइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव । एए सव्वे वि एक्कगमा^८ । वृत्तावपि नासी० याख्यात, अतोस्माभिरसौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।

५. स० पा०—बुच्चइ जाव नोइसि ।

६. अणता जीवा (अ, क, ता, व, म) ।

७. स० पा०—निक्खेवो ।

८. × (ता) ।

पुट्टे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्टे । एव आसं जाव चिल्ललगं
जाव अहवा चिल्ललगवेरेण^१ य नोचिल्ललगवेरेहि य पुट्टे ॥

२५२. पुरिसे णं भते ! इसि हणमाणे कि इसिवेरेण पुट्टे ? नोइसिवेरेण पुट्टे ?
गोयमा ! नियम^२ इसिवेरेण य^३ नोइसिवेरेहि य पुट्टे ॥

पुढविकाइयादीणं आण-पाण-पदं

२५३. पुढविकाइए णं भते ! पुढविकाय चेव आणमइ वा ? पाणमइ वा ? ऊससइ वा ? नीससइ वा ?
हंता गोयमा ! पुढविकाइए पुढविकाइय चेव आणमइ वा जाव नीससइ वा ॥
२५४. पुढविकाइए णं भते ! आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! पुढविकाइए ण आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा ।
एवं तेउक्काइयं, वाउक्काइय, एव वणस्सइकाइय ॥ *
२५५. आउक्काइए णं भते ! पुढविकाइय आणमइ वा *जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! आउक्काइए णं पुढविकाइय आणमइ वा जाव नीससइ वा^४ ॥
२५६. आउक्काइए णं भते ! आउक्काइयं चेव आणमइ वा ?
एवं चेव । एव तेउ-वाउ-वणस्सइकाइय ॥
२५७. तेउक्काइए णं भते ! पुढविकाइय आणमइ वा ? एव जाव वणस्सइकाइए
णं भते ! वणस्सइकाइय चेव आणमइ वा ? तहेव ॥

किरिया-पदं

२५८. पुढविकाइए णं भते ! पुढविकाइयं चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा
ऊससमाणे वा, नीससमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥
२५९. पुढविकाइए णं भते ! आउक्काइयं आणममाणे वा ?
एव चेव । एवं जाव वणस्सइकाइय । एव आउक्काएण वि सन्वे^५ भाणियव्वा ।
एवं तेउक्काइएण वि, एव वाउक्काइएण वि जाव—

१. चित्तला^० (व), चिल्लला^० (म) ।

२. नियम ताव (क); नितमं (ब) ।

३. य जाव (ता); एतव सम्यक्नास्ति । ऋषि-
पक्षे तु ऋषिवैरेण नो नोऋषिवैरैश्चेत्येवमेक

एव (वृ) ।

४. स० पा०—एवं चेव ।

५. सन्वे वि (ता, स) ।

२६०. वणस्सइकाइए ण भते ! वणस्सइकाइयं चेव आणममाणे वा—पुच्छा ?
 गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥
२६१. वाउक्काइए ण भते ! रुक्खस्स मूलं 'पचालेमाणे वा' पवाडेमाणे वा कति-
 किरिए ?
 गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए । एव कंदं,
 एव जाव^१—
२६२. बीय पचालेमाणे वा—पुच्छा ?
 गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥
२६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^२ ॥

— — —

१. X (क) ।

२. भ० पा२१६ ।

३. भ० १।५१ ।

दसमं सतं

पढमो उद्देशो

संगहणी-गाहा

१. दिस २ सवुडअणगारे, ३ आइड्डी ४ सामहत्थि ५. देवि ६. सभा ।
७-३४ उत्तरअंतरदीवा, दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा ॥१॥

दिसा-पदं

१. रायगिहे^१ जाव^२ एव वयासी—किमियं भंते ! 'पाईणा ति'^३ पवुच्चइ ?
गोयमा ! जीवा चेव, अजीवा चेव ॥

२. किमियं भंते ! पडीणा ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! एव चेव । एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहो^४ वि ॥

३. कति णं भंते ! दिसाओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! दस दिसाओ पणत्ताओ, तं जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदा-
हिणा ३. दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५. पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा
७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९. उड्ढा १०. अहो^५ ॥

४. एयासि णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पणत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पणत्ता, त जहा—

१. संवुडमणगारे (अ, क, ब, म) ।

२. आयड्डी (अ, स) ।

३. रायगिधे (ता) ।

४. भ० ११४-१० ।

५. पाईणत्ति (क, स); पादीणा ति (ता) ।

६. अहा (अ, क, ब, म); अघो (ता) ।

७. अहा (अ, क, ब, म); अघा (ता) ।

इंदा अगोयो जम्मा^१, य नेरई वारुणी य वायव्वा ।

सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

५. इंदा ण भते ! दिसा कि १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४ अजीवा

५. अजीवदेसा ६ अजीवपदेसा ?

गोयमा ! जीवा वि, ^१जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि^०, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवा ते नियमा एगिदिया बेइदिया^१ •तेइदिया चउरिदिया^० पचिदिया, अणिदिया ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा जाव अणिदियदेसा ।

जे जीवपदेसा ते नियमा^१ एगिदियपदेसा बेइदियपदेसा जाव अणिदियपदेसा ।

जे अजीवा ते दुविहा पणत्ता, त जहा—रुविअजीवा य, अरुविअजीवा य ।

जे रुविअजीवा ते चउन्विहा पणत्ता, त जहा—खधा, खधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोगला ।

जे अरुविअजीवा ते सत्तविहा पणत्ता, त जहा—१. नोघम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४ अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६ आगासत्थिकायस्स पदेसा ७. अद्दासमए ॥

६. अगोयी ण भते ! दिसा कि जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा —पुच्छा ।

गोयमा ! नोजीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा, अहवा एगिदियदेसा य बेइदियस्स य देसे, अहवा एगिदियदेसा य बेइदियस्स य देसा, अहवा एगिदियदेसा य बेइदियाण य देसा । अहवा एगिदियदेसा य तेइदियस्स य देसे । एव चेव तियभगो भाणियव्वो । एव जाव अणिदियाण तियभगो । जे जीवपदेसा ते नियमा एगिदियपदेसा । अहवा एगिदियपदेसा य बेइदियस्स पदेसा, अहवा एगिदियपदेसा य बेइदियाण य पदेसा । एव आइल्लविरहिओ जाव अणिदियाण ।

जे अजीवा ते दुविहा पणत्ता, त जहा—रुविअजीवा^१ य, अरुविअजीवा य ।

जे रुविअजीवा ते चउन्विहा पणत्ता, त जहा—खधा जाव परमाणुपोगला ।

१ जमा (ख) ।

२. सं० पा०—त चेव जाव अजीवपदेसा ।

३. सं० पा०—बेइदिया जाव पचिदिया ।

४. नियम (ता), × (व) ।

५. रुवि अजीवा (ता, व) ।

जे अरुविअजीवा ते सत्तविहा पणत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थि-
कायस्स देसे; धम्मत्थिकायस्स पदेसा, एवं अघम्मत्थिकायस्स वि जाव आगास-
त्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए^१ ॥

७. जम्मा णं भते ! दिसा कि जीवा ?

जहा इंदा 'तहेव निरवसेस'^२ । नेरती^३ य जहा अग्गेयी । वारुणी जहा इदा ।
वायव्वा जहा अग्गेयी । सोमा जहा इंदा । ईसाणी जहा अग्गेयी । विमलाए
जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इदाए । एवं तमाए वि, नवरं—अरुवी
छव्विहा, अद्धासमयो न भण्णत्ति ॥

सरीर-पदं

८. कति ण भते ! सरीरा पणत्ता ?

गोयसा ! पच सरीरा पणत्ता, तं जहा—ओरालिए^४ •वेउव्विए आहारए
तेयए^५ कम्मए ॥

९. ओरालियसरीरे ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?

एवं ओगाहणासठाण निरवसेस भाणियव्वं जाव^६ अप्पाबहुग ति ॥

१०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^७ ॥

बीओ उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

११. रायगिहे जाव^८ एव वयासी—संवुडस्स ण भते ! अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा
पुरओ रुवाइ निज्झायमाणस्स, मग्गओ रुवाइ अवयक्खमाणस्स, पासओ रुवाइ
अवल्लोएमाणस्स, उड्ढ रुवाइ ओलोएमाणस्स, अहे रुवाइ ओलोएमाणस्स
तस्स णं भते ! कि इरियावहिया किरिया कज्जइ ? सपराइया किरिया
कज्जइ ?

१. अद्धासमए । विदिसाणु नत्थि जीवा, देसे

भंगो य होइ सव्वत्थ (अ, व, म, स) ।

२. तहा निरवसेसा (क) ।

३. निस्ती (क) ।

४. स० पा०—ओरालिए जाव कम्मए ।

५. प० २१ ।

६. अ० १।५१ ।

७. अ० १।४-१० ।

गोयमा । सवुडस्स णं अणंगारस्स बीयीपथे ठिच्चा^१ *पुरओ रूवाइं निज्झाय-
माणस्स, मग्गओ रूवाइ अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइ अवलोएमाणस्स,
उड्ढ रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइ ओलोएमाणस्स^० तस्स णं नो इरिया-
वहिया किरिया कज्जइ, सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चंइ—सवुडस्स ण जाव संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा^१ *वोच्छिण्णा भवति तस्स ण
इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा
भवति तस्स ण सपराइया किरिया कज्जइ । अहासुत्त रीयमाणस्स इरियावहिया
किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ^० । से ण
उस्सुत्तमेव रीयति । से तेणट्ठेण जाव सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१३. सवुडस्स ण भते ! अणंगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइ निज्झायमा-
णस्स जाव^१ तस्स ण भते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? —पुच्छा ।
गोयमा ! सवुडस्स ण अणंगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा जाव तस्स णं इरिया-
वहिया किरिया कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ ॥

१४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चंइ—सवुडस्स ण जाव इरियावहिया किरिया
कज्जइ, नो सपराइया किरिया कज्जइ ?

*गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवति तस्स ण इरिया-
वहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति
तस्स ण सपराइया किरिया कज्जइ । अहासुत्त रीयमाणस्स इरियावहिया
किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइ^० । से णं
अहासुत्तमेव रीयति । से तेणट्ठेण जाव नो सपराइया किरिया कज्जइ ॥

जोणी-पदं

१५. कतिविहा णं भते ! जोणी पण्णत्ता ?

गोयमा ! ति विहा जोणी पण्णत्ता, त जहा—सीया, उसिणा, सीतोसिणा । एव
जोणीपद निरवसेसं भाणियव्व^१ ॥

वेदणा-पदं

१६. कतिविहा ण भते ! वेयणा पण्णत्ता ?

१. स० पा०—ठिच्चा जाव तस्स ।

२. स० पा०—एवं जहा सत्तमसए पदमउद्देशए
जाव से ।

३. भ० १०११ ।

४. स० पा०—जहा सत्तमसए सत्तमुद्देशए जाव
से ।

५. प० ६ ।

गोयमा ! तिबिहा वेयणा पणत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीओसिणा ।
एवं वेयणापदं भाणियव्व जाव—

१७. नेरइया णं भंते ! किं दुक्ख वेयणं वेदेति ? सुह वेयणं वेदेति ? अदुक्खमसुह
वेयणं वेदेति ?

गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेदेति, सुहं पि वेयणं वेदेति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं
वेदेति ॥

भिक्षुपडिमा-पदं

१८. मासियणं^१ भिक्षुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स^२, निच्च 'वोसट्ठकाए, चियत्त-
देहे'^३ जे केइ परीसहोवसगा उप्पज्जति, तं जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरि-
क्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्म सहइ खमइ तितिकखइ अहियासेइ । एवं
मासिया भिक्षुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहि जाव^४ आराहिया
भवइ ॥

अकिच्चट्टाणपडिसेवण-पदं

१९. भिक्षू य अणययं अकिच्चट्टाण पडिसेवित्ता^५ से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-
पडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-
पडिक्कते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥

२०. भिक्षू य अणययं अकिच्चट्टाण पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—पच्छा वि ण
अहं चरिमकालसमयसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि^६, 'पडिक्कमिस्सामि,
निदिस्सामि, गरिहिस्सामि, विउट्ठिस्सामि, विसोहिस्सामि, अकरणयाए अब्भु-
ट्ठिस्सामि, अहारिय पायच्छित्तं तवोकम्म^७ पडिवज्जिस्सामि^८, से ण तस्स
ठाणस्स अणालोइय^९ पडिक्कते कालं करेइ^{१०} नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स
ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ॥

२१. भिक्षू य अणययं अकिच्चट्टाण पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—जइ ताव
समणोवासगा वि कालमासे कालं किच्चा अणययेसु देवलोएसु देवत्ताए उवव-
त्तारो भवन्ति, किमंण ! पुणं अहं अणपन्नियदेवत्तणं^{११} नो लभिस्सामि त्ति

१. प० ३५ ।

२. मासियं ण भंते (क, ता, स) ।

३. अयमाचारो भवतीति शेषः ।

४. वोसट्ठे काए चियत्ते देहे (वृ) ।

५. दसा ० ७ ।

६. प्रतिषेविता भवतीति गम्यम् । वाचनान्तरे १०. अणवणिं^० (व) ।

त्वस्य स्थाने पडिसेविज्जं त्ति इत्यते (वृ) ।

७. स० पा०—आलोएस्सामि जाव पडिवज्जि-
स्सामि ।

८. पडिक्कमामि (व) ।

९. स० पा०—अणालोइय जाव नत्थि ।

कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा,
से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

२२. सेवं भंते ! सेवं भते ! त्ति' ॥

तइओ उद्देसो

आइड्डीए परिड्डीए बीइवयण-पदं

२३. रायगिहे जाव' एव वयासी—आइड्डीए' ण भते ! देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ बीतिक्कते, तेण परं परिड्डीए ?
हता गोयमा ! आइड्डीए ण '० देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ बीति-
क्कते, तेण पर परिड्डीए । ० एवं असुरकुमारे वि, नवरं—असुरकुमारावासं-
तराइ, सेस त चेव । एव एएण कमेण जाव थणियकुमारे, एव वाणमंतरे,
जोइसिए वेमाणिए जाव तेण पर परिड्डीए ॥

देवाणं विणयविहि-पदं

२४. अप्पिड्डीए ण भते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
२५. समिड्डीए ण भंते ! देवे समिड्ढीयस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ॥
२६. 'से भंते ! किं विमोहिता पभू ? अविमोहिता पभू ?
गोयमा ! विमोहिता पभू, नो अविमोहिता पभू ॥
२७. से भंते ! किं पुण्वि विमोहिता पच्छा वीइवएज्जा ? पुण्वि वीइवइत्ता पच्छा
विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुण्वि विमोहिता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुण्वि वीइवइत्ता पच्छा
विमोहेज्जा ॥

१. भ० १।५१ ।

२. भ० १।४-१०।

३. आतड्ढिए (अ, स); आतिड्ढीए (क, व,
म), आयड्ढीए (ता)

४. वीइवयइ (वृपा) ।

५. स० पा०—तं चेव ।

६. से ण (व, म, स) ।

२८. महिङ्दीए णं भते ! देवे अप्पिङ्गियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ॥
२९. से भते ! किं विमोहिता पभू ? अविमोहिता पभू ?
गोयमा ! विमोहिता वि पभू, अविमोहिता वि पभू ॥
३०. से भते ! किं पुव्वि विमोहिता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा
विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्वि वा वीइवइत्ता पच्छा
विमोहेज्जा ॥
३१. अप्पिङ्गिए^१ णं भते ! असुरकुमारे महिङ्गियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्झेणं
वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा
ओहिएण देवेण भणिया । एवं जाव थणियकुमारेण । वाणमत्तर-जोइसिय-
वेमाणिएण एवं चेव ॥
३२. अप्पिङ्गिए णं भते ! देवे महिङ्गियाए देवीए मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
३३. समिङ्गिए^२ णं भते ! देवे समिङ्गियाए देवीए मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एव तहेव देवेण य देवीए य दडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए ॥
३४. अप्पिङ्गिया णं भते ! देवी महिङ्गियस्स देवस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
एवं एसो वि तत्तिओ^३ दडओ भाणियव्वो जाव—
३५. महिङ्गिया वेमाणिणी अप्पिङ्गियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥
३६. अप्पिङ्गिया णं भते ! देवी महिङ्गियाए देवीए मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं समिङ्गिया देवी समिङ्गियाए देवीए तहेव । महिङ्गिया
वि देवी अप्पिङ्गियाए देवीए तहेव । एव एक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा
भाणियव्वा जाव—
३७. महिङ्गिया^४ णं भते ! वेमाणिणी अप्पिङ्गियाए वेमाणिणीए मज्झमज्झेणं
वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥
३८. सा भते ! किं विमोहिता पभू ? अविमोहिता पभू ?

१. अप्पिङ्गिए (क्व०) ।

२. समङ्गिए (अ) ।

३. तिओ (अ, स,) ।

४. महिङ्गिया (क्व०) ।

गोयमा ! विमोहिता वि पभू, अविमोहिता वि पभू । तहेव जाव पुर्व्व वा
वीद्वइत्ता पच्छा विमोहेज्जा । एए चत्तारि दडगा ॥

आसस्स 'खु-खु' करण-पदं

३६ आसस्स णं भते ! धावमाणस्स कि 'खु-खु' त्ति करेति ?
गोयमा ! आसस्स ण धावमाणस्स हिययस्स य जगस्स^१ य अतरा एत्थ णं
'कक्कडए नाम'^२ वाए समुच्छइ^३, जेण आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति ॥

पण्णवणी-भासा-पदं

४०. अह भते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्ठि-
स्सामो—पण्णवणी ण एस भासा ? न एस भासा भोसा ?
हता गोयमा ! आसइस्सामो, *सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुय-
ट्ठिस्सामो—पण्णवणी ण एस भासा^०, न एस भासा भोसा ॥
४१ सेव भते ! सेव भंते ! त्ति^४ ॥

१. जगयस्स (अ, क, स,); जातस्स (ता) ।

२. कक्कडनाम (ता); कव्वडए नाम (स) ।

३. समुत्थइ (अ, ता, व, म, स) ।

४. अतोअं गायद्वय लभ्यते—

आमतणी आणवणी,

जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी ।

पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य ॥

अणभिगहिया भासा,

भासा य अभिगहम्मि वोद्ववा ।

ससयकरणि भासा, वोयडमव्वोयडा चैव ॥

(अ, क, ता, व, म, स); अस्मिन् सग्रह-
गाथाद्वये 'असच्चाभोसा' भाषाया द्वादश-
प्रकारा निरूपिता. सन्ति । प्रज्ञापनायाः
भाषापदे एवमेवास्ति । अत्र प्रज्ञापनीभाषा-
प्रकरणे प्रासङ्गिकरूपेण अमु सग्रहगाथे
लिखिते आस्ताम् । केनचित् प्रतिलिपिकर्त्रा
मूले प्रक्षिप्ते । उत्तरकाले तथैव अनुगते,
वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्याते ।

५. स० पा०—त चैव जाव न ।

६. म० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

तावत्तीसगदेव-पदं

४२. तेण कालेण तेण समएणं वाणियग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ^१ । दूतिपलासए चेइए । सोमी समोसढे जाव^२ परिसा पडिगया ॥
४३. तेण कालेण तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जाव^३ उड्ढजाणू^४ •अहोसिरे भ्माणकोट्टोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे^५ विहरइ ॥
४४. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी सामहत्थी नाम अणगारे पगइभइए •“पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्वसपन्ने अत्तलीणे विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते उड्ढ-जाणू अहोसिरे भ्माणकोट्टोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे^६ विहरइ ॥
४५. तए ण से सामहत्थी अणगारे जायसइढे जाव^७ उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता भगव गोयम तिक्खुत्तो जाव^८ पज्जुवासमाणे एव वयासी—
४६. अत्थि ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमारणो तवत्तीसगा^९ देवा-ताव-त्तीसगा देवा ?
हता अत्थि ॥
४७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररणो तव—त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं खलु सामहत्थी ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायदी नाम नयरी होत्था—वण्णओ^१ । तत्थ ण कायदीए नयरीए तायत्तीस^{१०} सहाया^{११} गाहावई समणोवासया परिवसति—अड्ढा जाव^{१२} बहुजणस्स अपरि-भूता अभिगयजीवाजीवा, उवलढपुण्णपावा^{१३} जाव^{१४} अहापरिगहिएहि तवो-कम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति ॥

१. ओ० सू० १।

२. भ० १।७,८।

३. भ० १।६।

४. सं० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ ।

५. सं० पा०—जहा रोहे जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ ।

६. भ० १।१०।

७. भ० १।१०।

८. तायत्तीसगा (क्व०) ।

९. ओ० सू० १।

१०. तवत्तीस (क, ता, व, म) ।

११. साहाया (अ) ।

१२. भ० २।६४।

१३. उवलढपुण्ण वण्णओ(अ, क, ता, व, म, स)।

१४. भ० २।६४।

४८. त ए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुण्वि उग्गा उग्गविहारी, सविग्गा सविग्गविहारी भवित्ता तओ पच्छा पासत्था पासत्थविहारी, ओसन्ना ओसन्नविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाच्छदा अहाच्छदविहारी बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, तीसं भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥
४९. जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
- त ए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा अणगारेण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वित्तिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सामहत्थिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—
- ५० अत्थि ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
- हत्ता अत्थि ॥
- ५१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एवं त चेव सव्व भाणियव्व जाव जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
- नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—ज न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ^१, • भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अव्वट्ठिए^२ निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयत्ति, अण्णे उववज्जति ॥
५२. अत्थि ण भते ! बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
- हत्ता अत्थि ॥

१. स० पा०—भविस्सइ जाव निच्चे ।

५३. से केणट्टेणं भते ! एवं वुच्चइ—बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो^१ ताव-
त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे
बेभेले नाम सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ^२ । तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे तायत्तीस
सहाया गाहावई समणोवासया परिवसति - जहा चमरस्स जाव^३ तावत्तीसग-
देवत्ताए उववण्णा ॥

५४ जप्पभिइ च ण भंते ! ते बेभेलगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा
बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, सेस त चेव
जाव^४ निच्चे, अन्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति ॥

५५. अत्थि ण भते ! धरणस्स नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-
तावत्तीसगा देवा ?

हुता अत्थि ॥

५६. से केणट्टेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाण देवाणं
सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—जं न कयाइ नासी जाव अण्णे चयति, अण्णे उवव-
ज्जति । एव भूयाणंदस्स वि, एवं जाव^५ महाघोसस्स ॥

५७. अत्थि ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो^६ तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा
देवा ?

हुता अत्थि ॥

५८. से केणट्टेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएणं इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे
पालए^७ नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ । तत्थ ण पालए सण्णिवेसे तायत्तीसं
सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव^८ विहरंति ॥

५९. तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुवि पि पच्छा वि उग्गा
उगविहारी, संविग्गा सविग्गविहारी बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउ-
णित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताण भूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता,
आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा^९ सक्कस्स देविदस्स

१. जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. ओ० सू० १, एतद्वर्णन 'नदणवण-सन्निभ-
प्पगासे' एतावदेवआहम् ।

३. म० १०।४७-४८।

४. म० १०।४९-५१।

५. म० ३।२७४।

६. स० पा०—पुच्छा ।

७. वालाए (अ); पालाए (ब); पालासए (स) ।

८. म० १०।४७।

९. स० पा०—किच्चा जाव उववन्ना ।

- देवरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए^० उववन्ना । जप्पभिइं च णं भते ! ते पालगा^१
तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा, सेस जहा चमरस्स जाव अण्णे उवव-
ज्जति ॥
६०. अत्थि ण भते ! ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा
देवा ?
एव जहा सक्कस्स, नवर-चपाए नयरीए जाव^२ उववण्णा जप्पभिइं च ण भते !
ते चपिज्जा तायत्तीस सहाया, सेस त चेव जाव अण्णे उववज्जति ॥
६१. अत्थि णं भंते ! सणकुमारस्स देविदस्स ^३देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्ती-
सगा देवा ?
हत्ता अत्थि ॥
६२. से केणट्टेण ?
जहा धरणस्स तहेव, एव जाव पाणयस्स, एव अच्चुयस्स जाव अण्णे
उववज्जति ॥
६३. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति^४ ॥

पंचमो उद्देशो

देवाणं तुडिण सद्धि दिव्वभोग-पदं

६४. तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे नाम नयरे । गुणसिलए चेइए जाव^५ परिसा
पडिगया । तेणं कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स बहुवे
अतेवासी थेरा भगवतो जाइसपन्ना जहा अट्टमे सए सत्तमुद्देसए जाव^६ सजमेण
तवसा अप्पाणं आवेमाणा विहरति । तए ण ते थेरा भगवतो जायसइडा
जायससया जहा गोयमसामी जाव^७ पज्जुवासमाणा एवं वयासी—
६५. चमरस्स णं भते असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?

१. वालगा (व, म), पालागा (क, व); ४. भ० १।५१।
पालासगा (स) । ५. भ० १।४-८।
२. भ० १०।५७-५९। ६. भ० ८।२७२।
३. स० पा०—पृच्छा । ७. भ० १।१०।

अज्जो ! पच अगमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठु देवीसहस्सं^१ परिवारो पण्णत्तो ॥
६६. पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं अट्ठु देवीसहस्साइ परियार विउव्वित्तए ?

एवामेव सपुव्वावरेण चत्तालीसं देवीसहस्सा । सेत्त तुडिण ॥

६७. पभू ण भते ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि तुडिण सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए जाव^२ विहरित्तए ?

अज्जो ! चमरस्स ण असुरिदस्स असुरकुमाररणो चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहूओ जिणसक-हाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओ ण चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररणो अण्णेसि च बहूण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति^३ । से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिदे असुरकुमारराया^४ •चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सिहासणसि तुडिण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे^५ विहरित्तए ॥

६९. पभू ण अज्जो ! चमरे असुरिदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहि, तायत्तीसाए^६ •तावत्तीसगेहि, चउहि लोगपालेहि, पचहि अगमहिंसीहि सपरिवाराहि चउसट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीहि^७, अण्णेहि^८ य बहूहि असुर-कुमारेहि देवेहि य, देवीहि य सद्धि सपरिवुडे महयाहय^९ •नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-वणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ^{१०} भुजमाणे विहरित्तए ?

केवल परियारिड्डीए, नो चेव णं मेहुणवत्तिय ॥

१. ० सहस्सा (ता, स) ।

५. स० पा०—तायत्तीसाए जाव अण्णेहि ।

२. भ० १०।६७।

६. अण्णेसि (अ, स) ।

३. भवति तेसि पणिहाए णो पभू (अ, स) ।

७. स० पा०—महयाहय जाव भुजमाणे ।

४. स० पा०—असुरकुमारराय जाव विहरि-

त्तए ।

७०. चमरस्स णं भते ! असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुधरा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं^१ देवीसहस्सं परिवारो^२ पण्णत्ते ॥
७१. पभू ण ताओ 'एगमेगा देवी'^३ अण्ण एगमेगं देवीसहस्सं परियारं विज्ज्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेण चत्तारि देवीसहस्सा । सेत्त तुडिण ॥
७२. पभू ण भते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, सोमसि सीहासणसि तुडिण सद्धि दिव्वाइं भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा^४ सूरियामस्स । मेस त चेव जाव^५ नो चेव ण मेहुणवत्तिअ ॥
७३. चमरस्स ण भते^६ ! *असुरिदस्स असुरकुमार^७ रण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिंसीओ ?
एव चेव^८, नवरं—जमाए रायहाणीए, सेस जहा सोमस्स । एव वरुणस्स वि, नवर—वरुणाए रायहाणीए । एव वेसमणस्स वि, नवर—वेसमणाए रायहाणीए । सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिअ^९ ॥
७४. बलिस्स णं भते ! वइरोयणिदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! पच्च अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुभा^{१०}, निसुभा, रंभा, निरभा, मद्दणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठ देवीसहस्स परिवारो, सेसं जहा चमरस्स, नवरं—बलिचच्चाए रायहाणीए, परियारो जहा^{११} मोउइंसए । सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिअ ॥
७५. बलिस्स ण भते ! वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मीणगा, सुभहा, विज्जुया^{१२}, असणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, सेस जहा चमरसोमस्स एव जाव वरुणस्स^{१३} ॥

१. एगमेगसि (स) ।

७. भ० १०।७०-७२ ।

२. परियारो (ता) ।

८. °पत्तिअ (व) ।

३. एगमेगाओ देवीओ (अ) एगमेगाए देवीए (स) ।

९. सुभा (अ, व, स) ।

४. राय० सू० ७।

१०. भ० ३।१२।

५. भ० १०।६७-६९।

११. विजया (स) ।

६. स० पा०—भते जाव रण्णो ।

१२. वेसमणस्स (अ, स) ।

७६. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो कति अगमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! छ अगमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अला^१, सक्का^२, सतेरा^३, सोदामिणी, इदा, धणविज्जुया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्स^४ परिवारो पण्णत्तो ॥
७७. पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं छ-छ देविसहस्साइ परिवार विज्जित्ताए ?
एवामेव सपुब्बावरेण छत्तीसाइ देविसहस्साइं । सेत्त तुडिण ॥
७८. पभू णं भंते ! धरणे ? सेसं तं चेव^५, नवरं—धरणाए रायहाणीए, धरणसि सीहासणसि, सओ परिवारो^६ । सेसं तं चेव ॥
७९. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स^७ महारण्णो कति अगमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो चत्तारि अगमहिंसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, अवसेस जहा^८ चमरलोगपालाणं । एवं सेसाण तिण्ह वि ॥
८०. भूयाणदस्स भंते !—पुच्छा ।
अज्जो ! छ अगमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रूपा, रूपसा, सुक्या, रूपगावतो, रूपकता, रूपयमा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए ऐगमेगं देवीसहस्स परिवारे, अवसेसं जहा धरणस्स ॥
८१. भूयाणदस्स णं भंते ! नागकुमारिदस्स नागकुमाररण्णो नागचित्तस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अगमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभदा, सुजाया, सुमणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, अवसेस जहा चमरलोगपालाणं । एव सेसाण तिण्ह वि लोगपालाण ।
जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाण । उत्तरिल्लाणं इदाणं^९ जहा भूयाणदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणदस्स लोगपालाण, नवर—इदाणं सव्वेसि रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिस्सणामणाणि, परिवारो जहा^{१०} मोउद्देसए । लोगपालाणं सव्वेसि रायहा-

१. आला (ब); इला (क्व०) ।

६. भ० ३।१४।

२. मक्का (ता, व, म); सुक्का (स), कमा (ना० २।३।६) ।

७. काललोगपालस्स (अ); लोगपालस्स काललोगपालस्स (स) ।

३. सतारा (अ, स) ।

८. भ० १०।७०-७२।

४. ०सहस्सा (अ, ता, व, म, स) ।

९. × (ता, व) ।

५. भ० १०।६७-६९ ।

१०. भ० ३।१४, १५ ।

णीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा^१ चमरस्स लोग-
पालाणं ॥

८२. कालस्स ण भते । पिसायिदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कमला, कमलप्पभा,
उप्पला, सुदसणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो,
सेसं जहा^२ चमरलोगपालाण । परिवारो तद्देव, नवरं—कालाए रायहाणीए,
कालसि सीहासणसि, सेस त चेव । एव महाकालस्स वि ॥

८३. सुरूवस्स ण भते । भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रूववई, बहुरूवा,
सुरूवा, सुभगा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं
जहा कालस्स । एव पडिरूवस्स वि ॥

८४. पुण्णभहस्स ण भते । जक्खिदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुण्णा, बहुपुत्तिया,
उत्तमा, तारया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं
जहा कालस्स । एव माणिभहस्स वि ॥

८५. भीमस्स ण भते । रक्खसिदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, वसुमती^३,
कणगा, रयणप्पभा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे,
सेस जहा कालस्स । एवं महाभीमस्स वि ॥

८६. किन्नरस्स ण—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—बडेसा, केतुमती,
रत्तिसेणा, रइप्पिया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे,
सेस त चेव । एव किपुरिसस्स वि ॥

८७. सप्पुरिसस्स ण—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, नवमिया,
हिरी, पुप्फवती । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं
त चेव । एवं महापुरिसस्स वि ॥

८८. अत्तिकायस्स ण—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भुयगा^४, भुयगवती,

१. म० १०।७०-७३ ।

२. म० १०।७१, ७२ ।

३. पउमवती (अ, स), पउमावती (क, म) ।

४. भुयगा (स) ।

महाकच्छा, फुडा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं त चेव । एवं महाकायस्स वि ॥

८९. गीयरइस्स णं—पुच्छा ।

अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पणत्ताओ, तं जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेसं त चेव । एवं गीयजसस्स वि । सव्वेसि एएसि जहा कालस्स, नवर—सरिसना-मियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव ॥

९०. चंदस्स णं भते ! जोइसिदस्स जोइसरणो - पुच्छा ।

अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पणत्ताओ, तं जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा । एव जहा जीवाभिगमे जोइसियउदेसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा । सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्ति ॥

९१. इंगालस्स णं भते ! महग्गहस्स कति अग्गमहिंसीओ—पुच्छा ।

अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिंसीओ पणत्ताओ, तं जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा चदस्स, नवर—इंगालवडेसए विमाणे, इंगालगसि सीहासणसि, सेस त चेव । एवं वियालगस्स वि । एवं अट्टासीति ए वि महग्गहाण भाणियव्वं जाव भावकेउस्स, नवरं—वडेसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेस त चेव ॥

९२. सक्कस्स णं भते ! देविदस्स देवरणो—पुच्छा ।

अज्जो ! अट्ट अग्गमहिंसीओ पणत्ताओ, तं जहा—पउमा, सिंवा, सची, अजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पणत्तो ॥

९३. पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइ परिवारं विउच्चित्तए ?

एवामेव सपुव्वावरेण अट्टावीसुत्तर देवीसयसहस्स । सेत्तं तुडि ए ॥

९४. पभू णं भते ! सक्के देविदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, सक्कसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ

१. ओसिणाभा (ता, स) ।

२. जी० ३ ।

३. आयच्चा (अ, स) ।

४. भ० १०।६७-६६ ।

५. सेस त चेव (अ, स) ।

६. महाग्गहाण (अ, क, ब, स) ।

७. ठा० २।३२५ ।

८. सेया (अ, स); सुयी (क, ता, म) ।

- भुजमाणे विहरित्ताए । सेस जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा^१ भोज्जेसए ॥
६५. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अगमहिंसीओ—
पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अगमहिंसीओ पणत्ताओ, त जहा—रोहिणी, मदणा,
चित्ता, सोमा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस
जहा^१ चमरलोगपालाण, नवर—सयपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमसि
सोहासणसि, सेसं त चेव । एव जाव वेसमणस्स, नवर—विमाणाइं जहा^१
तत्तियसए ॥
६६. ईसाणस्स ण भते !—पुच्छा ।
अज्जो ! अट्ठ अगमहिंसीओ पणत्ताओ, त जहा—कण्हा, कण्हराई, रामा,
रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमिन्ता, वसुधरा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए
एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा^१ सक्कस्स ॥
६७. ईसाणस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अगमहिंसीओ
—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अगमहिंसीओ पणत्ताओ, तं जहा—पुहवी, राई, रयणी,
विज्जू । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा^१
सक्कस्स लोगपालाण, एव जाव वरुणस्स, नवर—विमाणा जहा^१ चउत्थसए,
सेस त चेव जाव^१ नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥
६८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^१ ॥

छठो उद्देशो

सुहम्मा सभा-पदं

६९. कहिं णि भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पणत्ता ?
गोयमा । जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढ-

१ भ० ३।१६ ।

५. भ० ४।२-४ ।

२ भ० १०।७०-७२ ।

६ भ० १०।६७-६९ ।

३ भ० ३।२५०, २५१, २५६, २६१, २६६ ।

७ भ० १।५१ ।

४. भ० १०।६२-६४ ।

वीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव'
पंच वडेसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेसए^१, •सत्तवण्णवडेसए, चपगवडेसए,
चूयवडेसए^२ मज्झे, सोहम्मवडेसए । से ण सोहम्मवडेसए महाविमाणे अद्धतेरस-
जोयणसयसहस्साइं आयामविकखभेण,

एव जह सूरियाभे, तहेव माण^३ तहेव उववाओ ।

सक्कस्स य अभिसेओ, तहेव जह सूरियाभस्स ।

अलंकारअच्चणिया, तहेव जाव^४ आयरक्ख त्ति ॥१॥

दो सागरोवमाइ ठिती ॥

सक्क-पदं

१००. सक्के णं भते ! देविदे देवराया केमहिड्ढिए जाव^५ केमहासोक्खे^६ ।
गोयमा ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे । से ण तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससय-
सहस्साण जाव^७ दिव्वाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ । एमहिड्ढिए जाव
एमहासोक्खे सक्के देविदे देवराया ॥
१०१. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^८ ॥

७-३४ उद्देसा

अंतरबीव-पदं

१०२. कहि ण भंते ! उत्तरिल्लाण एगुल्लयमणुस्साण^९ एगुल्लयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?
एव जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेस जाव^{१०} सुद्धदंतदीवो त्ति । एए अट्टावीस
उद्देसगा भाणियव्वा ॥
१०३. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति जाव^{११} अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१. राय० सू० १२४, १२५ ।

२. स० पा०—असोगवडेसए जाव मज्झे ।

३. पमाणं (अ, क, ता, म, स) ।

४. राय० सू० १२६-६६६ ।

५. भ० ३।४ ।

६. केमहेसक्खे (ब, स) ।

७. भ० ३।१६ ।

८. भ० १।५१ ।

९. एगुल्लय० (अ, म, स) ।

१०. जी० ३ ।

११. भ० १।५१ ।

एककारसं सतं

पढमो उद्देशो

१. उप्पल २. सालु ३. पलासे ४. कुमी ५. नाली य ६. पउम ७. कण्णी य^१ ।
 ८. नलिण ९. सिव १०. लोग ११, १२. कालालभिय दस दो य एक्कारे^२ ॥१॥

उप्पलजीवाण उववायादि-पदं

१. तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव^१ पज्जुवासमाणे एव वयासी—उप्पले णं भते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
 गोयमा ! एगजीवे, नो अणेगजीवे । तेण पर जे अण्णे जीवा उववज्जति ते णं नो एगजीवा अणेगजीवा ॥
२. ते णं भते ! जीवा कतोहितो उववज्जति—किं नेरइएहितो उववज्जति ?
 'तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ? मणुस्सेहितो उववज्जति'^२ ? देवेहितो उववज्जति ?

१. या (ब) ।

२. अतोले प्रमोद्देशकद्वारसग्रहणाया लभ्यन्ते,
 ताश्च इमा—

उववाओ परिमाणं,

अवहारुच्चत्त वध वेदे य ।

उदए उदीरणाए,

लेसा दिट्ठी य नारे य ॥

जोगुवधोगे वण्णं,

रसमाई ऊसासगे य आहारे ।

विरई किरिया वधे,

सन्न कसायिस्थि वधे य ॥

सन्निदिय अणुवधे,

सवेहाहार ठिइ समुग्घाए ।

चयण मूलादीसु य,

उववाओ सज्वजीवाण ॥ (वृषा) ॥

३. भ० १।४-१० ।

४. तिरि मय्यु (अ, क, ता, व, य, स) ।

गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, मणु-
स्सेहितो उववज्जति देवेहितो वि उववज्जंति । एवं उववाओ भाणियव्वो जहा
वक्कतीए वणस्सइकाइयाण जाव' ईसाणेति ॥

३. ते णं भंते ! जीवा एगसमए ण केवइया उववज्जति ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा
असखेज्जा वा उववज्जति ॥

४. ते णं भंते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिकालेण
अवहीरति ?

गोयमा ! ते णं असखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा' असखे-
ज्जाहि ओसप्पिणी-उत्सप्पिणीहि अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया ॥

५. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सातिरेग जोयण-
सहस्स ॥

६. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि बधगा ? अबधगा ?

गोयमा ! नो अबधगा, बंधए वा, बधगा वा ॥

७. एव जाव अतराइयस्स, नवर—आउयस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! १ बधए वा २. अबधए वा ३ बंधगा वा ४. अबधगा वा ५. अहवा
बधए य अबधए य ६. अहवा बधए य अबधगा य ७ अहवा बधगा य अबधए
य ८. अहवा बधगा य अबधगा य—एते अट्ठ भगा ॥

८. ते ण भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि वेदगा ? अवेदगा ?

गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा । एव जाव अतराइयस्स ॥

९. ते णं भंते ! जीवा कि सायावेदगा ? असायावेदगा ?

गोयमा ! सायावेदए वा, असायावेदए वा—अट्ठ भगा ॥

१०. ते ण भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदई ? अणुदई ?

गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा । एव जाव अंतराइयस्स ॥

११. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदीरगा ? अणुदीरगा ?

गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा । एव जाव अतराइयस्स,
नवरं—वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भगा ॥

१२. ते णं भंते ! जीवा कि कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

- गोयमा ! कण्हलेसे वा^१ नीललेसे वा काउलेसे वा^० तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य । एवं एए दुयासंजोग-तियासंजोग-वउक्कसजोगेण^२ असीती भगा^३ भवति ॥
१३. ते ण भते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा ॥
१४. ते ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ? गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणो वा ॥
१५. ते ण भते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ? गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ॥
१६. ते ण भते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा—अट्ठ भगा ॥
१७. तेसि ण भते ! जीवाणं सरीरगा कतिवण्णा, कतिगधा, कतिरसा, कतिफासा, पण्णत्ता ? गोयमा ! पचवण्णा, पंचरसा, दुग्ंधा, अट्ठफासा पण्णत्ता । ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता ॥
१८. ते ण भते ! जीवा किं 'उस्सासगा ? निस्सासगा ? नोउस्सासनिस्सासगा ?' गोयमा ! १ उस्सासए वा २ निस्सासए वा ३. नोउस्सासनिस्सासए वा ४. उस्सासगा वा ५ निस्सासगा वा ६ नोउस्सासनिस्सासगा वा १-४ अहवा उस्सासए य निस्सासए य १-४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य १-४ अहवा निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य १-८ अहवा उस्सासए य निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य—अट्ठ भगा । एते^४ छब्बीस भगा भवति ॥
१९. ते ण भते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ? गोयमा ! आहारए वा, अणाहारए वा—अट्ठ भगा ॥
२०. ते ण भते ! जीवा किं विरया ? अविरया ? विरयाविरया ? गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा ॥
२१. ते ण भते ! जीवा किं सकिरिया ? अकिरिया ? गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा ॥

१. स० पा०—वा जाव तेउलेसे ।

४ उस्सासा निस्सासा नोउस्सासानिस्सासा

२ चउक्कसजोगेण य (अ, क, ता, म, स); चदु-
क्कासजोगेण य (व) ।

(क, ता, म) ।

५. एव (ता) ।

३. द्रष्टव्यम्—म० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

२२. ते णं भते ! जीवा किं सत्तविहवंधगा ? अट्ठविहवधगा ?
 गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा—अट्ठ भगा ॥
२३. ते ण भते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता ? भयसण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोव-
 उत्ता ? परिग्गहसण्णोवउत्ता ?
 गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता—असीती भगा^१ ॥
२४. ते ण भते ! जीवा किं कोहकसाई ? माणकसाई ? मायाकसाई ? लोभक-
 साई ? असीती भगा^२ ॥
२५. ते ण भते ! जीवा किं इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ?
 गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदए वा, नपुसगवेदगा
 वा ॥
२६. ते ण भते ! जीवा किं इत्थिवेदवंधगा ? पुरिसवेदवधगा ? नपुसगवेदवधगा ?
 गोयमा ! इत्थिवेदवंधए वा, पुरिसवेदवधए वा, नपुसगवेदवधए वा—छव्वीस
 भंगा^३ ॥
२७. ते णं भते ! जीवा किं सण्णी ? असण्णी ?
 गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा ।
२८. ते ण भते ! जीवा किं सइदिया ? अण्णदिया ?
 गोयमा ! नो अण्णदिया, सइदिए वा, सइदिया वा ॥
२९. से ण भते ! उप्पलजीवेत्ति^४ कालओ केवच्चिर होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥
३०. से ण भते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवत्तिय काल
 सेवेज्जा ? केवत्तियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
 गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण असखेज्जाइं भव-
 ग्गहणाइं । कालादेसेण जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल,
 एवत्तियं कालं सेवेज्जा, एवत्तिय काल गतिरागतिं करेज्जा ॥
३१. से ण भते ! उप्पलजीवे, आउजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवत्तिय काल
 सेवेज्जा ? केवत्तियं काल गतिरागतिं करेज्जा !
 एवं चेव । एव जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे ॥
३२. से ण भते ! उप्पलजीवे सेसवणरसइजीवे^५, से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवत्तिय
 'कालं सेवेज्जा ? केवत्तियं काल गतिरागतिं करेज्जा ?

१, २. द्रष्टव्यम्—भ० १।२।१८ सूत्रस्य पाद-

टिप्पणम् ।

३. भ० १।१।१८

४. ०जीवे (ब) ।

५. से वरण० (अ, क, ब, म, स) ।

- गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणताइं भवग्ग-
हणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंत काल तस्सकालं,
एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा” ॥
३३. से ण भते ! उप्पलजीवे वेइदियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय कालं
सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण सखेज्जाइं भवग्ग-
हणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्जं काल, एवतिय
काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा । एव तेइदियजीवे, एवं
चउरिदियजीवे वि ॥
३४. से ण भते ! उप्पलजीवे पच्चिदियतिरिक्खजोणियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति
—पुच्छा ।
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइं,
कालादेसेण जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहत्त, एवतियं काल
सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा । एव मणुस्सेण वि समं जाव
एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ॥
३५. ते ण भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?
गोयमा ! दव्वओ अणतपदेसियाइ दव्वाइ, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगाढाइं,
कालओ अण्णयरकालट्ठिइयाइ, भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइ
फासमंताइ एव जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाण आहारो तहेव जाव^१
सव्वप्पणयाए आहारमाहारेति, नवरं—नियमा छद्दिसि, सेस तं चेव ॥
३६. तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ॥
३७. तेसि ण भते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए,
मारणतियसमुग्घाए ॥
३८. ते ण भते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहता मरति ? असमोहता
मरति ?
गोयमा ! समोहता वि मरति, असमोहता वि मरति ॥
३९. ते ण भते ! जीवा अणंतर उव्वट्ठित्ता कहिं गच्छति ? कहिं उव्वज्जति—किं

१. × (क, ता, म) ।

वि (व) ।

२. एव चेव नवरमणुत्त काल जाव कालाएसेण ३. प० २८१।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए उव्वट्ठाणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्व^१ ॥

४०. अह भते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकणियत्ताए, उप्पलत्थिभगत्ताए^२ उववन्नपुव्वा ?

हता गोयमा ! असति अदुवा अणत्तखुत्तो ॥

४१. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति^३ ॥

वीओ उहेसो

सालुयादिजीवाणं उववायादि पदं

४२. सालुए णं भंते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ? गोयमा ! एगजीवे । एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव^४ अणत्तखुत्तो, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं धणुपुहत्त, सेसं त चेव ॥

४३. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति^५ ॥

१. प० ६ ।

२. °विभंगत्ताए (अ) ।

३. अ० १।५१।

४. अ० ११।१-४०।

५. अ० १।५१।

तइओ उद्देसो

४४. पलासे णं भते ? एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
 एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवर—सरीरोगाहणा जह-
 ण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण गाउयपुहत्ता^१ । देवेहितो^२ न उवव-
 ज्जति ॥
४५. लेसासु—ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
 गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से^३ वा—छव्वीसं भंगा^४, सेसं तं
 चेव ॥
४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^५ ॥

चउत्थो उद्देसो

४७. कुमिए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
 एव जहा पलासुद्देसए तहां भाणियव्वे, नवर—ठिती जहण्णेणं अतोमुहुत्तं
 उक्कोसेण वासपुहत्त, सेसं त चेव ॥^१
४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^२ ॥

१. °पुहुत्त (अ, व) ।

३. भ० ११।१८।

२. देवा एएसु (अ, व), देवेसु (ता, म); देवा

४. भ० १।५१।

एएसु चेव (स); वृत्तिकृतापि ११।२ सूत्रस्य

५. भ० १।५१।

सन्दर्भे एव व्याख्या कृतास्ति । अस्माभिरपि

तस्य सन्दर्भे एव पाठः स्वीकृतः ।

पंचमो उद्देशो

४९. नालिए णं भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
 एवं कुभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसं भाणियव्वा ॥
५०. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^१ ॥
-

छट्ठो उद्देशो

५१. पउमे णं भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
 एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा ॥
५२. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^१ ॥
-

सत्तमो उद्देशो

५३. कणिए णं भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
 एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं ॥
५४. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^१ ॥
-

अट्ठमो उद्देशो

५५. नलिणे णं भते । एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
 एवं चेव निरवसेसं जाव^१ अणंतखुत्तो ॥
 ५६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^२ ॥

नवमो उद्देशो

सिक्खरायरिसि-पदं

५७. तेणं कालेणं तेण समएण हत्थिणापुरे^३ नामं नगरे होत्था—वण्णओ^४ । तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंववणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय^५-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे^६ सुहसीतलच्छाए भणोरमे साट्ठप्फले अकटए, पासादीए^७ *दरिसणिज्जे अभिरूवे ० पडिरूवे ॥
 ५८. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महंत-मलय-मदर-महिदसारे—वण्णओ^४ । तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देदी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ^४ । तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए, जहा सूरियकते जाव^१ रज्जं च रट्ठं च वलं च बाहणं च कोसं च कोट्टारं च पुरं च अतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

१. भ० ११।१-४०।

२. भ० १।५१।

३. हत्थिणापुरे (अ, म); हत्थिणापुरे (क);
 हत्थिणाउरे (जा) ।

४. ओ० सू० १।

५. सव्वोउय (क, म) ।

६. ०सन्निगासे (अ, क, ब, स) ।

७. स० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे ।

८. ओ० सू० १४।

९. ओ० सू० १५।

१०. राय० सू० ६७३, ६७४।

५६. तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि रज्जघुर चित्तेमाणस्स अयमेयाख्वे अज्झत्थिंए' •चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समु-
प्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं •सुचिण्णाणं सुपरक्कताणं सुभाण
कल्लाणाणं कडाण कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाह हिरण्णेणं वड्ढामि
सुवण्णेण वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, घण्णेणं वड्ढामि°, पुत्तेहि वड्ढामि,
पसूहि वड्ढामि, रज्जेण वड्ढामि, एवं रट्ठेणं वलेणं वाहणेण कोसेण कोट्ठागा-
रेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलघण-कणम-रयण' •मणि-मोत्तिय-सखसिल-
प्पवाल-रत्तरयण° संतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं ण
अहं पुरा पोराणाणं •सुचिण्णाणं सुपरक्कताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाण
कम्माणं° 'एगंतसो खयं' उवेहमाणे विहरामि ? तं जावताव अहं हिरण्णेण
वड्ढामि जाव' अतीव-अतीव अभिवड्ढामि जाव मे सामंतरायाणो वि वसे
वट्ठति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-
रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं' तविय ताव-
सभंडग घडावेत्ता सिवभट्टं कुमारं रज्जे ठावेत्ता त सुवहु लोही-लोहकडाह-कड-
च्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकुले वाणपत्था तावसा भवति, [त
जहा-होत्तिया पोत्तिया" कोत्तिया जहा ओववाइए जाव'° आयावणाहि पंचगि-

१. सं० पा०—अज्झत्थिंए जाव समुप्पज्जित्था
२. सं० पा०—जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहि ।
३. सं० पा०—रयण जाव संत० ।
४. °सावदेज्जेणं (क, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—पोराणाण जाव एगंतसोक्खय ।
६. एगंतसोक्खय (अ) ।
७. उवेहं (स) ।
८. तं चेव जाव (अ, क, ब, म, स) ।
९. भ० २।६६।
१०. कडच्छुय (क, ता, व, म) ।
११. सोत्तिया (क, ब, वृपा) ।
१२. केपुचिदादर्शेषु विस्तृतः पाठोस्ति । तदनन्तरं
'जहा ओववाइए' इति सक्षिप्तपाठस्य
सूचनमप्यस्ति । एतद् द्वयोर्वाचनयो-
रस्मिंश्रणेन जातम् । केवलं 'व' सकैतितादर्शे
एकैव विस्तृतवाचना लभ्यते । सा च इत्थ-

मस्ति—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई
सड्ढई थालई हुंवउट्ठा [हुंवउट्ठा (अ) हुंवउट्ठा
(क, व), उट्ठिया (ता)] दतुक्कलिया
उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा सपक्खाला
'उट्ठकडुयगा अहोक्कडुयगा' ['X' (क,
ब, म)] दाहिराकूलगा उत्तरकूलगा
सखधमगा कूलधमगा मियलुट्ठगा हत्थि-
तावसा जलाभिसेयकडिरागता अबुवा-
सिणो वाउवासिणो सेवालवासिणो
[वेलनासिणो (स)] अबुभक्खिणो
वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा
कदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा
फलाहारा वीयाहारा परिसड्ढिय-पंडु-पत्तपुप्फ-
फलाहारा उट्ठगा स्खल्लमूलिया मडलिया
विलवासिणो [वत्तिवासिणो (क); पल-
वासिणो (व); वणवासिणो (म)]
दिसापोक्खिया, आतावणेहि पचगितावेहि

तावेहि इंगलसोल्लियं कंदुसोल्लियं कटुसोल्लियं पिव अप्पाण करेमाणा विहरंति।^१
तत्थ ण जे ते दिसापोकखो तावसा तेसि अतिय मुडे भवित्ता दिसापोकखयता-
वसत्ताए पव्वइत्ताए, पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयाख्व अभिग्गह अभिगिण्हि-
स्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्टेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेण तवो-
क्कमेण उद्ध बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय' •सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए
आयावेमाणस्स • विहरित्तए, त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए
रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सुवहु लोही-
लोह' •कडाह-कडच्छुय तविय तावसभङ्गं • घडावेत्ता कोडुबियपुरिसे सदावेइ,
सदावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुर नगर
सन्धितरवाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जाव' सुग्गधवरगधगधिय गधव-
ट्ठिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।
ते वि तमाणत्तिय पच्चप्पिणत्ति ॥

६०. तए ण से सिवे राया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी
—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सिवभट्टस्स कुमारस्स महत्थ महग्ग महरिह
विउल रायाभिसेय उवट्टवेह । तए ण ते कोडुबियपुरिसा तहेव उवट्टवेति ॥

६१ तए ण से सिवे राया अणेगगणनायग-दडनायग' •राईसर-तलवर-माडबिय-
कोडुबिय-इवभ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय- • सधिपाल-सट्ठि सपरिवुडे सिवभट्टं
कुमार सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह, निसियावेइ, निसियावेत्ता अट्टसएणं सोव-
णियाण कलसाण जाव' अट्टसएण भोमेज्जाण कलसाणं सन्विड्ढीए जाव'
दुडुहि-णिग्घोसणाइयरवेण महया-महया रायाभिसेयेण अभिसिच्चइ, अभिसि-

इगानसोल्लिय कटु (डु)सोल्लियं कटुसोल्लियं
पिव अप्पाण करेमाणा विहरति ।

'ओववाइय' सूत्रस्य (१४) पूर्णपाठः एव-
मस्ति—'होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई
सड्ढई थालई इवउट्ठा दतुक्खलिया उम्म-
ज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा सपक्खाला
दक्खिण्णकूलगा उत्तरकूलगा सखधमगा कूल-
धमगा भिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्धगा
दिसापोकखिणो वाकवासिणो चेलवासिणो
जलवासिणो रुक्खमूलिया अबुभक्खिणो वाउ-
भक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कदाहारा
तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा

वीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-
फलाहारा जलाभिसेय-कडिण-गाया आया-
वणाहि पंचमितावेहि इंगलसोल्लिय कटु-
सोल्लिय कटुसोल्लिय पिव अप्पाणं करेमाणा ।'

१ असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यातः, प्रतीयते ।

२. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरित्तए ।

३. भ० २।६६ ।

४. स० पा०—लोह जाव घडावेत्ता ।

५. ओ० सू० ५५ ।

६ स० पा०—दडनायग जाव सधिपाल ।

७. भ० ६।१८२ ।

८. भ० ६।१८२ ।

चित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायार्इ लूहेति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचदणेण गायार्इ अणुलिपति एवं जहेव जमालिस्स अलकारो तहेव जाव^१ कप्पख्खणं पिव अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता करयल^२ *परिग्राहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि^३ कट्टु सिवभट्टं कुमारं जएणं विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहि इट्ठाहि कंताहि पियाहि *मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हिययगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमगलसएहि अणवरय अभिणदतो य अभि-
त्थुणंतो य एवं वयासी—जय-जय नदा ! जय-जय भट्टा ! भट्ट ते, अजिय जिणाहि जियं पालयाहि, जियमज्जे वसाहि । इदो इव देवाण, चमरो इव असुराणं, घरणो इव नागाण, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाण बहूइ वासाइ बहूइ वाससयाइ बहूइ वाससहस्साइ बहूइ वाससयसहस्साइ अणहस-
मग्गो हट्टुट्टो^४ परमाउं पालयाहि, इट्टजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स, अण्णेसि च बहूणं गामागर-नगर-^५ *खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-
निगम-सवाह-सणिवेसाण आहेवच्च पोरेवच्चं सामित्त भट्टित्त महत्तरगत आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-
ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेण विउलाइं भोगभोगाइं भुजमाणे^६ विहराहि ति कट्टु जयजयसइ पउजति ॥

६२. तए णं से सिवभट्टं कुमारे राया जाते—महया हिमवत्त-महंत-मलय-मंदर-महि-
दसारे, वण्णओ जाव^१ रज्ज पसासेमाणे विहरइ ॥

६३. तए णं से सिवे राया अणण्या कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नख-
त्तसि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-
नाइ-नियग-^१ *सयण-संबधि^२ -परिजण 'रायाणो य खत्तिए य'^३ आमतैति, आम-
तेत्ता तओ पच्छा ण्हाए *कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ
मंगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणाअंकिय^४ सरीरे भोयणवेलाए^५
भोयणमडवसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबधि^६ -परिजणेणं
राएहि य खत्तिएहि सद्धि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम *आसादेमाणे
वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ ।

१. भ० २।१६० ।

२. स० पा०—करयल जाव कट्टु ।

३. स० पा०—जहा ओववाइए कूणियस्स जाव
परमाउ ।

४. स० पा०—नगर जाव विहराहि ।

५. ओ० सू० १४ ।

६. सं० पा०—नियग जाव परिजणं ।

७. रायाणो य खत्तिया (अ, क, म, स), रायाणो
रायखत्तिए य (ता, व) ।

८. स० पा०—ण्हाए जाव सरीरे ।

९. × (ता, व) ।

१०. जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

११. सं० पा०—एव जहा तामली जाव सक्कारेइ

जिमियभुत्तुराणं वि य ण समाण आयंते चोक्खे परमसुइभूए तं मित्त-नाइ-
नियग-सयण-संवधि-परिजणं विउलेणं असण-पाण-खाइभ-साइमेणं वत्थ-गध-
मल्लालकारेण य० सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता त मित्त-नाइ-
●नियग-सयण-संवधि-० परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभइं च रायाणं
आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय० ●तंवि य तावस० भंडगं
गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवति, तं चेव जाव० तेसि अंतिय
मुडे भवित्ता दिसापोकखयतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वि य ण समाणे अय-
मेयारूव अभिग्गहं अभिगिण्हति—‘कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं’ ●छट्ठेणं अणि-
क्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मणेणं उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय
विहरितए—अयमेयारूव० अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उव-
संपज्जित्ताण विहरइ ॥

६४. तए ण से सिवे रायरिसी पढमच्छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ,
पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता किट्ठिण-संकाइयग गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिम दिसं पोक्खेइ, पुर-
त्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खउ सिव० रायरिसि-
अभिरक्खउ सिव रायरिसि, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य
पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ
त्ति कट्ठु पुरत्थिम दिस पसरइ, पसरित्ता जाणि य तत्थ कदाणि य जाव
हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किट्ठिण-संकाइयग भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे
य समिहाओ य पत्तामोड च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता किट्ठिण-संकाइयग ठवेइ, ठवेत्ता वेदि वड्ढेइ, वड्ढेत्ता
उवलेवण संमज्जण करेइ, करेत्ता दब्भकलसाहत्थगए० जेणेव गंगा महानदी
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ‘गंग महानदि’० ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जल-
मज्जण करेइ, करेत्ता जलकीड करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयते
चोक्खे परमसुइभूए देवय-पित्ति-कयकज्जे दब्भकलसाहत्थगए० गंगाओ महा-

१. स० पा—नाइ जाव परिजण ।

२. स० पा०—कडच्छुय जाव भडग ।

३. भ० ११।५६ ।

४. स० पा०—त चेव जाव अभिग्गह ।

५. अभिग्गह अभिगिण्हइ (अ, क, ता, व, म,
स); द्रष्टव्यम्—भ० ३।३३ सूत्रस्य पाद-
टिप्पणम् ।

६. कटिण (अ) ।

७. सिवे (व, स) ।

८. सरइ (ता, म) ।

९. दब्भकलस० (अ), दब्भसगव्भकलसा (सग)

हत्थगए (ता, वृषा) ।

१०. गंगामहानदी (क, व, म) ।

११. दब्भसगव्भकलसा (अ, क, ता, व, म, स) ।

नदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता दब्बेहिं य कुसेहिं य बालुयाएहिं य वेदि^१ रएति^२, रएत्ता सरएणं अरणिं
महेइ, महेत्ता अग्निं पाडेइ, पाडेत्ता अग्निं सधुक्केइ, संधुक्केत्ता समिहाकट्ठाइ
पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्निं उज्जालेइ, उज्जालेत्ता "अग्निस्स दाहिणे पासे,
सत्तगाइ समादहे," [त जहा—

सकह वक्कल ठाणं, सिज्जाभंड कर्मंडलु ।

दंडदारुं तहप्पाण, अहे ताइं समादहे ॥१॥]^३

महुणा य घएण य तदुलेहिं य अग्निं हुणइ, हुणित्ता चरं साहेइ, साहेत्ता बलि-
वइस्सदेव^४ करेइ, करेत्ता अतिहिं पूय करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहार-
माहारित्ति ॥

६५. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६६. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगसि आयावणभूमीओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता "वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता^५ दाहिणग दिस
पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिव
रायरिसि, सेसं तं चेव जाव^६ तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६७. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६८. तए णं से सिवे रायरिसि^७ तच्चे छट्ठक्खमणपारणगसि आयावणभूमीओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पच्चत्थिम दिस पोक्खेइ^८,
पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिव
रायरिसि, सेस तं चेव जाव^६ तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६९. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमणं उवसपज्जित्ताणं विहरइ ॥

७०. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमणं^९ पारणगसि आयावणभूमीओ
पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता^५ उत्तरदिसं पोक्खेइ,

१. वेति (अ, क, म, स) ।

२. रयावेइ (ता) ।

३. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

४. बलिविस्सदेव (अ, क, ता); बलि विस्सदेव

(ब); बलिविस्सादेव (म); बलिविइस्सदेव

(स) ।

५. स० पा०—एव जहा पढमपारणगं नवर ।

६. भ० ११।६४ ।

७. सं० पा०—सेस तं चेव नवर ।

८. भ० ११।६४ ।

९. स० पा०—एव तं चेव नवर ।

उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्याणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं,
सेसं तं चेव जाव^१ तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

७१. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठच्छेणं अणिविखत्तेणं दिसाचक्कवालेणं^२
●तवोक्कम्मेणं उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभू-
मीए^३ आयावेमाणस्स पगइभइयाए^४ ●पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाण-
मायालोभयाए मिउमहवसपन्नयाए अत्लीणयाए^५ विणीययाए अण्णया कयाइ
तयावरणज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमगणगवेसणं करेमाणस्स
विवभगे नामं नाणे^६ समुप्पन्ने । से ण तेण विवभगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति
अस्सि लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण पर न जाणइ, न पासइ ॥

७२. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^७ ●चित्तिए पत्थिए
मणोगए सकप्पे^८ समुप्पज्जित्था—अत्थि ण मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने,
एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ता दीवा य
समुद्दा य—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता
वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उड्ढे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवहुं
लोही-लोहकडाह-कडच्छुय^९ ●तविय तावसं^{१०} भंडग किट्ठिण-सकाइयगं च गेण्हइ,
गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिगं^{११}-
●चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^{१२}—पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव^{१३} एव
परूवेइ-अत्थि णं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एव
खलु अस्सि लोए^{१४} ●सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ता^{१५} दीवा य
समुद्दा य ॥

७३. तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे
नगरे सिंघाडग-तिगं^{१६}—●चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^{१७}—पहेसु बहुजणो
अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव^{१८} परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे
रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे

१. भ० ११।६४ ।

स० पा० —कडच्छुय जाव भंडग ।

२. स० पा०—दिसाचक्कवालेण जाव आया-
वेमारास्स ।

७ स० पा०—तिग जाव पहेसु ।

८ भ० १।४२० ।

३. स० पा०—पगइभइयाए जाव विणीययाए ।

९ स० पा०—लोए जाव दीवा ।

४. अण्णाणे (अ, क, ता, व, म) ।

१०. सं० पा०—तिग जाव पहेसु ।

५. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था । ११. भ० १।४२० ।

६. कडच्छुय (अ, स); कडच्छुय (क, व);

नाणदसणे^१ *समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा^०, तेण पर वोच्छिन्ता दीवा य समुद्दा य । से कहमेयं मन्ने एवं ?

७४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा^२ *निग्गया । धम्मो कहिओ परिसा^३ पडिगया ॥

७५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इदभूई नामं अणगारे जहा वितियसए नियंठुहेसए जाव^४ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद् निसामेइ, बहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया । सिवे रायरिसि एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया । *ममं अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर^० वोच्छिन्ता दीवा य समुद्दा य । से कहमेय मन्ने एव ?

७६. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जायसड्ढे *जाव^५ समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—एव खलु भंते ! अहं तुब्भेहि अम्भणुणाए समाणे हत्थिणापुरे नयरे उच्चनीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद् निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया । सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा^०, तेण पर वोच्छिन्ता दीवा य समुद्दा य ॥

७७. से कहमेय भंते ! एव ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयम एव वयासी—जणं गोयसा ! 'एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण अणिकित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोक्कमेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूरभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभट्ठयाए पगइउवसत्तयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्वसपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अणण्या कयाइ तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विम्भंणे नाम नाणे

१. स० पा०—नाणदसणे जाव तेण ।

२. सं० पा०—परिसा जाव पडिगया ।

३. अ० २।१०६-१०९ ।

४. स० पा०—त चेव जाव वोच्छिन्ता ।

५. स० पा०—जहा नियंठुहेसए जाव तेण ।

६. अ० २।११० ।

समुप्पन्ने । 'त चेव सव्व भाणियव्वं जाव' भंडनिकखेव करेइ, करेत्ता हत्थिणा-
पुरे नगरे सिघाडग-^०तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स
एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदं-
सणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं
वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।

तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म ^०हत्थिणापुरे
नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अणम-
णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी
एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदसणे
समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा^०, तेण परं वोच्छिन्ना
दीवा य समुद्दा य, तण्ण मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव
परूवेमि—एव खलु जंबुद्दीवादीया दीवा, लवणादीया समुद्दा सठाणओ
एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एव जहा जीवाभिगमे जाव^०
सयभूरमणपज्जवसाणा अस्सि तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पणत्ता
समणाउसो !

७८ 'अत्थि ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइ—सवण्णाइं पि, अवण्णाइं पि संगंघाइं
पि अगघाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि, अणमण-
वद्धाइं अणमणपुट्ठाइं^० *अणमणवद्धपुट्ठाइं अणमण^० घडत्ताए चिट्ठति ?
हता अत्थि^० ॥

७९ 'अत्थि ण भते ! लवणसमुद्दे दव्वाइ—सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, संगंघाइं पि
अगघाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अणमण-
वद्धाइं अणमणपुट्ठाइं^० *अणमणवद्धपुट्ठाइं अणमण^० घडत्ताए चिट्ठति ?
हता अत्थि^० ॥

१. अस्य पाठस्य स्थाने सर्वेषु आदर्शेषु निम्न-
निर्देष्ट. पाठोस्ति—'सि बहुजणे अणमणस्स
एवमाइक्खइ', किन्तु पौर्वापर्यसमालोचनया
नास्य सङ्गतित्वात् ।

'सि बहुजणे' इत्यादिपाठः 'भंडनिकखेव करेइ'
(७२) अतः उत्तरवर्ती (७३) वर्तते । अस्य
पूर्वविन्यासो नैव युक्तः स्यात् । सभाव्यते
सलोपीकरणे क्वचिद् विपर्ययो जातः ।

आत्माभिरस्य पाठस्य सङ्गतित्तरवर्तिना ८३

सूत्रेण संपादितास्ति ।

२. भ० ११।६३-७२ ।

३. स० पा०—तं चेव जाव वोच्छिन्ना ।

४. स० पा०—तं चेव जाव तेण ।

५. भ० ६।१५६।

६. स० पा०—अणमणपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

७. × (अ, क, व, म) ।

८. स० पा०—अणमणपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

९. × (ता) ।

८०. अत्थि णं भंते ! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि १० अवण्णाइं पि, सगंधां पि अगंधां पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अणमण-वद्धाइं अणमणपुट्ठाइं अणमणवद्धपुट्ठाइं अणमणघडत्ताए चिट्ठति ?
हंता अत्थि ० । एव जाव—
८१. १० अत्थि णं भंते ! सयंभूरमणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइ पि, सगंधां पि, अगंधां पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अणमणवद्धाइ अणमणपुट्ठाइं अणमणवद्धपुट्ठाइं अणमणघडत्ताए चिट्ठति ?
हंता अत्थि ० ॥
८२. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए ११ एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥
८३. तए ण हत्थिणापुरे नगरे सिघाडगं १२—१० तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह ०-पहेसु बहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ जाव १३ परूवेइ जण देवाणुप्पिया । सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया । मम अत्तिसेसे नाणं १४ दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ता दीवा य ० समुद्दा य । तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव १५ भडनिकखेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिघाडगं १६—१० तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! मम अत्तिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ता दीवा य ० समुद्दा य । तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव १७ तेण पर वोच्छिन्ता दीवा य समुद्दा य तण्ण मिच्छा, समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ—एवं खलु जबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तं चेव जाव १८ असखेज्जा दीवसमुद्दा पणत्ता समणाउसो !
८४. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अतिय एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सकिए कंखिए वित्तिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए ण

१. सं ५०—एव चेव ।

२. सं ५०—सयंभूरमणसमुद्दे जाव हंता ।

३. अतिय (अ, क, स) ।

४. सं ५०—सिघाडग जाव पहेसु ।

५. भ ११४२० ।

६. सं ५०—नाण जाव समुद्दा ।

७. भ ११७७ ।

८. सं ५०—सिघाडग जाव समुद्दा ।

९. भ ११७३ ।

१०. भ ११७७ ।

तस्स सिवस्स रायरिसिस्स सकियस्स कंखियस्सं^१ •वित्तिगिच्छियस्स भेदसमा-
वन्नस्स^२ • कलुससमावन्नस्स से विभगे नाणे^३ खिप्पामेव परिवड्ढिए ॥

८५. तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयाखूवे अज्झस्थिए^४ •चित्तिए पत्थिए
मणोगए सकप्पे^५ समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे तित्थगरे
आदिगरे जाव^६ सव्वणू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव^७ सहसंबवणे
उज्जाणे अहापडिखूव^८ •ओग्गह ओगिण्हित्ता सज्जेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे^९
विहरइ, त महप्फलं खलु तहाखूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स^{१०} •वि
सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासाणयाए ?
एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स
अट्ठस्स^{११} गहणयाए ? त गच्छामि ण समणं भगव महावीर वदामि जाव^{१२}
पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य^{१३} •हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए
आणुगामियत्ताए^{१४} • भविस्सइ त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तावसावसह अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता सुबहु
लोही-लोहकडाह^{१५} • •कडच्छुय तवियं तावसभडग^{१६} • किडिण-सकाइयग च गेण्हइ
गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवड्ढियविठ्ठभगे
हत्थिणापुर नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे
उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं
भगव महावीरं तिक्खुत्तो^{१७} वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने
नातिदूरे^{१८} • सुस्सुसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएण^{१९} • पजलिकडे^{२०} पज्जुवासइ ॥

८६. तए ण समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महत्तिसहालियाए
परिसाए^{२१} धम्म परिकहेइ जाव^{२२} आणाए आराहए भवइ ॥

८७. तए ण से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अत्तिय धम्म सोच्चा
निसम्म जहा खदओ जाव^{२३} उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता
सुबहु लोही-लोहकडाह^{२४} • •कडच्छुय तवियं तावसभडग^{२५} • किडिण-सकाइयग च

१. सं० पा०—कखियस्स जाव कलुस^२ ।

२. अण्णाणे (क, स) ।

३. सं० पा०—अज्झस्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

४. भ० १।७।

५. ओ० सू० १६।

६. सं० पा०—अहापडिखूव जाव विहरइ ।

७. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव गहणयाए ।

८. भ० २।३०।

९. सं० पा०—य जाव भविस्सइ ।

१०. सं० पा०—लोहकडाह जाव किडिए ।

११. तिक्खुत्तो आयाहिए-पयाहिण (स) ।

१२. सं० पा०—नातिदूरे जाव पजलिकडे ।

१३. पजलियडे (ता) ।

१४. पू०—ओ० सू० ७१।

१५. ओ० सू० ७१-७७।

१६. भ० २।५२।

१७. सं० पा०—लोहकडाह जाव किडिए ।

एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुद्वियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता
एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव
सव्व जाव^१ सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

८८. भंतेति ! भगव गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता
एव वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झति, एव जहेव ओववाइए तहेव ।

‘संघयण सठाण, उच्चत आउय च परिवसणा ।’^२

एवं सिद्धिगड्डिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव^३—

अव्वावाह सोक्ख, अणुहोति सासय सिद्धा ॥

८९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति^४ ॥

दसमो उद्देशो

खेत्तलोय-पदं

९०. रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए,
भावलोए ॥
९१. खेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अहेलोयखेत्तलोए^२, तिरियलोयखेत्तलोए,
उड्ढलोयखेत्तलोए ॥
९२. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए^३ जाव^४
अहेसत्तभापुढविअहेलोयखेत्तलोए ॥

१. भ० ६।१५०, १५१।

२. एतत् सग्रहाथार्थं औपपातिके नोपलभ्यते ।
इदं च कुतश्चिद् अन्यस्थानाद् उद्धृतमस्ति ।

३. ओ० सू० १६५।

४. भ० १।५१।

५. भ० १।४-१०।

६. अहो० (अ, क, म, स); अघे० (ता) ।

७. रयणप्पभ० (ता) ।

८. भ० २।७५।

६३. तिरियलोयखेतलोए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, त जहा—जबुद्धोवे दीवे तिरियलोयखेतलोए
जाव सयभूरमणसमुद्धे तिरियलोयखेतलोए ॥
६४. उड्ढलोयखेतलोए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते, त जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेतलोए^१
•ईसाण-सणकुमार-माहिद-बंभलोय-लतय - महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-
आरण-अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेतलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेतलोए, अणु-
त्तरविमाणउड्ढलोयखेतलोए, ईसिपम्मारपुढविउड्ढलोयखेतलोए ॥
६५. अहेलोयखेतलोए ण भंते ! किसिठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तप्पागारसिठिए पण्णत्ते ॥
६६. तिरियलोयखेतलोए ण भंते ! किसिठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! भल्लरिसिठिए पण्णत्ते ॥
६७. उड्ढलोयखेतलोए ण भंते ! किसिठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! उड्ढमुइगाकारसिठिए पण्णत्ते ॥

लोयसंठाण-पद

६८. लोए ण भंते ! किसिठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसिठिए पण्णत्ते^२, त जहा—हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्तं,
•उप्पि विसाले; अहे पलियकसिठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उड्ढमुइ-
गाकारसिठिए ।
तसि च ण सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उड्ढमुइगाकारसिठि-
यसि उप्पण्णनाण-दसणघरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे
वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिब्बाइ सब्बदु-
क्खाण^३ अत करेइ ॥

अलोयसंठाण-पद

६९. अलोए ण भंते ! किसिठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! भुसिरगोलसिठिए^४ पण्णत्ते ॥

१. स० पा०—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेतलोए जाव अच्चुय० ।
२. लोए पण्णत्ते (अ, क, ब, म, स) ।
३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अत ।
४. सुसिरगोलसिठिए (ब) ।

लोयालोए जीवाजीव-मग्गणा-पदं

१००. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कि १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?

“गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवा ते नियमा एगिदिया वेइइया तेइदिया चउरिदिया पचिदिया, अणिदिया ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा जाव अणिदियदेसा ।

जे जीवपदेसा ते नियमा एगिदियपदेसा वेइदियपदेसा जाव अणिदियपदेसा ।

जे अजीवा ते दुविहा पणत्ता, तं जहा—रुविअजीवा य, अरुविअजीवा य ।

जे रुविअजीवा ते चउविहा पणत्ता, तं जहा—खघा, खंघदेसा, खघपदेसा, परमाणुपोगला ।

जे अरुविअजीवा ते सत्तविहा पणत्ता, तं जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६. आगासत्थिकायस्स पदेसा^० ७ अद्दासमए ॥

१०१. तिरियलोयखेत्तलोए ण भंते ! कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एव चेव । एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवर—अरुवी छविहा, अद्दासमयो नत्थि ॥

१०२. लोए ण भंते ! कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

जहा वितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे^१, नवर—अरुवि अजीवा सत्तविहा^१

●पणत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए नोअधम्मत्थिकायस्स देसे^०, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्दासमए, सेसं तं चेव ॥

१०३. अलोए णं भंते ! कि जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव निरवसेस जाव^२ सन्वागासे अणंतभागुणे ॥

१. सं० पा०—एवं जहा इदा दिसा तहेव ३. सं० पा०—सत्तविहा जाव अधम्मत्थि^० ।

निरवसेस भाणियन्वं जाव अद्दासमए ।

४. भ० २।१४० ।

२. भ० २।१३६, १०।५।

१०४. अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भते ! एगम्मि आगासपदेसे किं १ जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?

गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवदेसा ते नियम १. एगिदियदेसा २ अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स देसे ३. अहवा एगिदियदेसा य वेइदियाण य देसा । एवं मज्झिम्भल्लविरहिओ^१ जाव^२ अहवा एगिदियदेसा य अणिदियाण य देसा । जे जीवपदेसा ते नियम १. एगिदियपदेसा २ अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियस्स पदेसा ३. अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियाण य पदेसा, एव आइल्लविरहिओ^३ जाव पंचिदिएसु, अणिदिएसु तियमगो ।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य । रूवी तहेव । जे अरूवी अजीवा ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—नोअधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसे, *नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसे^४, अट्ठासमए ॥

१०५. तिरियलोगखेत्तलोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ?

एव जहा^५ अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एव उड्डलोगखेत्तलोगस्स वि, नवर—अट्ठासमयो नत्थि । अरूवी चउव्विहा ॥

१०६. *लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा^६ ?

जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे ॥

१०७. अलोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा ।

गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, *नो जीवप्पदेसा, नो अजीवा नो अजीव देसा, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदेसे अगख्यलहुए^७ अणतेहि अगख्यल-हुयगुणेहि सजुते सव्वागासस्स अणतभागूणे ॥

१०८. दव्वओ ण अहेलोगखेत्तलोए 'अणता जीवदव्वा, अणता अजीवदव्वा'^८, अणता

१. 'अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स य देसा' इत्येव रूपो यो मध्यमभङ्गः. तद्विरहितोऽसौ त्रिकभङ्गः । मध्यमभङ्गकस्य असम्भवात् तथाहि द्वीन्द्रियस्स एकत्राकाशप्रदेशे बहवो देशा न सन्ति, देशस्यैवभावात् (वृ) ।

२. जाव अणिदिएसु जाव (अ, क, ता, व, म) ।

३. 'अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियस्स य पदेसे' इत्येव रूपाद्यभङ्गकविरहितः त्रिकभङ्गः, तथाहि नास्त्येव एकत्राकाशप्रदेशे केवल-

समुद्घात विना एकस्य जीवस्य एकप्रदेशः सम्भवोऽसङ्ख्यातानामेव भावात् (वृ) ।

४. सं० पा०—एव अधम्मत्थिकायस्स वि ।

५. भ० ११।१०४।

६. सं० पा०—लोगस्स ।

७. सं० पा०—त चेव जाव अणतेहि ।

८. अणताइ जीवदव्वाइ अणताइ अजीवदव्वाइ (क, व, म) ।

जीवाजीवदव्वा । एवं तिरियल्लोयखेत्तलोए वि, 'एवं उड्डल्लोयखेत्तलोए वि (एवं लोए वि ?)' । दव्वओ णं अल्लोए नेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीव-दव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे^१ •अगस्यल्लहुए अणत्तेहिं अगस्यल्लहुयगुणेहिं संजुत्ते^२ • सव्वागासस्स अणत्तभागूणे ।

कालओ ण अहेल्लोयखेत्तलोए न कयाइ नासि^३, •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविस्सु य, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अक्खए अवट्ठिए^४ • निच्चे, एवं •तिरियल्लोयखेत्तलोए, एवं उड्डल्लोयखेत्तलोए, एवं लोए एवं^५ • अल्लोए ।

भावओ ण अहेल्लोयखेत्तलोए अणता वण्णपज्जवा, •अणत्ता गंधपज्जवा, अणत्ता रसपज्जवा, अणत्ता फासपज्जवा, अणत्ता संठाणपज्जवा, अणत्ता गस्यल्लहुयप-ज्जवा, • अणत्ता अगस्यल्लहुयपज्जवा, एवं •तिरियल्लोयखेत्तलोए, एवं उड्ड-ल्लोयखेत्तलोए, एवं^६ लोए । भावओ ण अल्लोए नेवत्थि वण्णपज्जवा,^७ •नेवत्थि गंधपज्जवा, नेवत्थि रसपज्जवा, नेवत्थि फासपज्जवा, नेवत्थि संठाणपज्जवा^८, नेवत्थि गस्यल्लहुयपज्जवा^९, एगे अजीवदव्वदेसे^{१०} •अगस्यल्लहुए अणत्तेहिं अगस्य-ल्लहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स^{११} • अणत्तभागूणे ॥

ल्लोयस्स परिमाण-पद

१०६. लोए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! अयण्णं जज्जुद्दीवे दीवे सव्वदीव^{१२}—•समुद्धानं सव्वभंतं राए जाव^{१३} एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खंभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ

१. पूर्वक्रमानुसारेणात्रलोकसूत्रमपेक्षितमस्ति, किन्तु कस्मिन्नपि आदर्शे नैव लभ्यते । कारणमत्र न ज्ञायते । अपेक्षितसूत्रस्य पाठस्य क्रम एव स्यात्—'एवं उड्डल्लोयखेत्तलोए वि, एवं लोए वि' ।

२. सं० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स

३. सं० पा०—नासि जाव निच्चे ।

४. सं० पा०—एवं जाव अल्लोए ।

५. सं० पा०—जहा खदए जाव अणता ।

६. सं० पा०—एवं जाव लोए ।

७. सं० पा०—वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि ।

८. अगस्यल्लहुयं (अ, क, ब, म, स, वृ); ११. ठा० १।२४८।

अल्लोके अगुल्लघुपर्यवाणा भावात् अत्र

नेवत्थि गस्यल्लहुयपज्जवा' एतत्पर्यन्त एव पाठो गुज्यते 'ता' प्रतौ एवमेवास्ति । वृत्तिकृता 'जाव नेवत्थि अगस्यल्लहुयपज्जवा' इति पाठो लब्धस्तेन अर्थसङ्गतिकरणाय एव व्याख्या कृता—अगुल्लघुपर्यवाणेतद्ब्रव्याणां पुद्गलानां तत्राभावात् (वृ) । यदि वृत्तिकृता शुद्ध. पाठो लब्धो भविष्यत् तदा अस्या व्याख्याया नावश्यकता भविष्यत् ।

९. सं० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव अणत्त-भागूणे ।

१०. सं० पा०—सव्वदीव जाव परिकखेवेण ।

दोष्णि य सत्तावीसे ज्योणसए तिष्णि य कोसे अट्ठावीसं च घणुसयं तेरस
अंगुलाइ अद्दगुलगं च किचिविसेसाहिए^० परिकखेवेण ।
तेण कालेण तेणं समएण छ देवा महिड्ढीया जाव^१ महासोक्खा^२ जवुदीवे दीवे
मंदरे पव्वए मदरचलिय सव्वओ समंता सपरिक्खत्ताण चिट्ठेज्जा । अहे णं
चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि वलिपिडे गहाय जवुदीवस्स
दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि वलिपिडे
जमगसमग बहियाभिमुहे^३ पक्खिजेज्जा । पभू ण गोयमा ! तओ एगमेगे
देवे ते चत्तारि वलिपिडे घरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए ।
ते ण गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए^४ *तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए
छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए^५ देवगईए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते
'एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तरा-
भिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते'^६ एगे देवे अहोभिमुहे पयाते ।
तेण कालेण तेण समएण वाससहस्साउए दारए पयाते । तए ण तस्स दारगस्स
अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगंतं सपाउणति । तए णं
तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं^७ *ते देवा लोगतं सपा-
उणति । तए ण तस्स दारगस्स अट्ठिमिज्जा पहीणा भवति, नो चेव णं ते देवा
लोगंतं संपाउणति । तए ण तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति,
नो चेव णं ते देवा लोगत संपाउणति । तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि
पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगंतं संपाउणति ।
तेसि ण भते ! देवाण कि गए बहुए ? अगए बहुए ? गोयमा ! गए बहुए, नो
अगए बहुए, गयाओ से अगए असंखेज्जइभागे, अगयाओ से गए असंखेज्जगुणे ।
लोए ण गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते ॥

अस्योयस्स परिमाण-पदं

११०. अलोए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! अयण्णं समयखेत्ते पणयालीसं ज्योणसयसहस्साइं आयाम-ज्विक्खं-
भेणं, *एगा ज्योणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोष्णि
य अउणापन्नज्योणसए किचि विसेसाहिए^० परिकखेवेणं ।

१. भ० ३।४ ।

२. महोसक्खा (अ, ता, व, स); महासुक्खा (क) ।

३. बहिभिमुहे (क, ता) ।

४. स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए ।

५. एव दाहिणाभिमुहे एव पच्चत्थाभिमुहे एवं
उत्तराभिमुहे एव उड्ढाभिमुहे (अ, क, ता,
व, म, स) ।

६. स० पा०—ण जाव संपाउणति ।

७. सं० पा०—जहा खंदए जाव परिकखेवेणं ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिडिड्या *जाव* महासोक्खा जवुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता० संपरिक्खित्ताणं संचिद्धंज्जा, अहेणं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिडे जसगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा । पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिडे धरणिगतलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए । ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए* *तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए० देवगईए लोगते ठिच्चा असव्भा-वपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाते, *एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थउत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तरा-भिमुहे पयाते एगे देवे० उत्तरपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साजए दारए पयाते । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणति । *तए ण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणति । तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिजा पहीणा भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणति । तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणति । तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणति ।^१ तेसि णं भते ! देवाणं किं गए बहुए ? अगए बहुए ? गोयमा ! नो गए बहुए, अगए बहुए, गयाओ से अगए अणंतगुणे, अगयाओ से गए अणंतभागे । अलोए णं गोयमा ! एमहालए पणत्ते ॥

लोगागासे जीवपदेस-पदं

१११. लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे जे एगिदियपदेसा जाव पचिदियपदेसा अणिदियपदेसा अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुट्ठा* *अण्णमण्णबद्धपुट्ठा० अण्णमण्ण-

१. स० पा०—तहेव जाव संपरिक्खित्ताण ।

२. भ० ३।४।

३. बाहियाभिमुहीओ (अ, क, ता, व, म, स);

अस्य पूर्ववर्तिलोकसूत्रे 'बहियाभुहे' इति पाठोस्ति । अत्र सख्ये एव प्रकरणे केनचिद् लिपिदोषादिकारणेन परिवर्तनं दृश्यते ।

अस्माभिः पूर्वसूत्रानुसारी पाठः स्वीकृतः ।

४. स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए ।

५. स० पा०—एवं जाव उत्तर० ।

६. स० पा०—तं चेव जाव तेसि ।

७. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण०

घडत्ताए चिट्ठति ? अत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आवाहं वा वावाह वा उप्पायति ? छविच्छेद वा करेति ?

नो इण्ठे समट्ठे ॥

११२. से केणट्ठेण भते । एव वुच्चइ—लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिदिय-पदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, नत्थि णं भंते । अण्णमण्णस्स किंचि आवाह वा' •वावाहं वा उप्पायति ? छविच्छेद वा° करेति ?

गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया—सिगारागारचाखेसा' •संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्टिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुमला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण-रुव-जोव्वण-विलास ° कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलसि (जणसहस्साउलसि ?) जणसयसहस्साउलसि वत्तीमडविहस्स नट्टस्स अण्णयर नट्टविहि उवदसेज्जा, से नूण गोयमा ! ते पेच्छमा त नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोएति ?

हता समभिलोएति ।

ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियसि सव्वओ समता सन्निपडियाओ ? हता सन्निपडियाओ' । अत्थि ण गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आवाहं वा वावाहं वा उप्पायति ? छविच्छेद वा करेति ?

नो इण्ठे समट्ठे ।

'सा वा' नट्टिया तासि दिट्ठीणं किंचि आवाहं वा वावाह वा उप्पाएति ? छविच्छेद वा करेइ ?

नो इण्ठे समट्ठे ।

ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आवाह वा वावाहं वा उप्पाएति ? छविच्छेद वा करेति ?

नो इण्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—'लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिदियपदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, नत्थि णं अण्णमण्णस्स आवाह वा वावाह वा उप्पायति°, छविच्छेद वा करेति ॥

११३ लोगस्स ण भते एगम्मि आगासपदेसे जहणपए जीवपदेसाणं, उवकोसपए जीवपदेसाणं सव्वजीवाण य कयरे कयरेहत्तो' •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

१. स० पा०—आवाह वा जाव करेति ।

४. अहवा ना (अ, स) ।

२. स० पा०—मिगारागारचाखेगा जाव कलिया ।

५. नं० पा०—त चेव जाव छविच्छेदं ।

३. सन्निवडियाओ (अ) ।

६. न० पा०—कयरेहिनो जाव चिमेमाहिया ।

- गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसा,
सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपदेसा विसेसाहिया ॥
११४ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति' ॥

एक्कारसमो उद्देसो

सुदंसणसेट्ठि-पदं

११५. तेणं कालेण तेणं समएणं वाणियग्गामे नाम नगरे होत्था—वण्णओ^१। दूति-
पलासे चेइए—वण्णओ जाव^२ पुढविसिलापट्टओ। तत्थ णं वाणियग्गामे नगरे
सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे जाव^३ बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए
अभिगयजीवाजीवे जाव^४ अहापरिग्गहिएहि तवोक्कम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे
विहरइ। सामी समोसडे जाव^५ परिसा पज्जुवासइ ॥
११६. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धे समाणे हट्टुट्टे ण्हाए कय^६ बलि-
कम्मे कयकोउय-संगल^७ पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साम्मो गिहाओ पडि-
निक्खमइ, पडिनिक्खमिता सकोरेटमत्तदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेण पाय-
विहारचारेणं महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गाम नगर मज्झमज्जेण
निगगच्छइ, निगगच्छिता जेणेव दूतिपलासे^८ चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणं भगवं महावीर पच्चविहेण अभिगमेण
अभिगच्छइ, [त जहा—सच्चित्ताणं दब्बाण विओसरण्याए]^९ जहा उसभदत्तो
जाव^{१०} तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥
११७. तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महत्तिमहालियाए^{११}
परिसाए^{१२} धम्मं परिकहेइ जाव^{१३} आणाए आराहए भवइ ॥

१. भ० १।५१।

२. ओ० सू० १।

३. ओ० सू० २-१३।

४. भ० २।६४।

५. भ० २।६४।

६. ओ० सू० १६-५२।

७. सं० पा०—कय जाव पायच्छित्ते ।

८. दूतिपलासए (अ) ।

९. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यातः प्रतीयते ।

१०. अ० ६।१४३।

११. ० महालयाए (स) ।

१२. पू०—ओ० सू० ७१।

१३. ओ० सू० ७१-७७।

११८. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं धम्मं सोन्वा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं तिव्वुत्तो^१ *आया-
हिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमंसइ, वदित्ता^२ नमंसित्ता एवं वयासी—
११९. कत्तिविहे ण भते ! काले पण्णत्ते ?
सुदंसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, त जहा—पमाणकाले, अहाउनिव्वत्तिकाले,
मरणकाले, अद्धाकाले ॥
१२०. से किं त पमाणकाले ?
पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाणकाले, राइप्पमाणकाले^३ य ।
चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राई भवइ । उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता
दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहणिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए
वा पोरिसी भवइ ॥
१२१. जदा णं भते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी
भवइ, तदा ण कत्तिभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहणिया
तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? जदा णं जहणिया तिमुहुत्ता
दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कत्तिभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढ-
माणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा
पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी
भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जह-
णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । जदा वा जहणिया
तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्त-
भागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स
वा राईए वा पोरिसी भवइ ॥
१२२. कदा णं भते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी
भवइ ? कदा वा जहणिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालस-
मुहुत्ता राई भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी
भवइ, जहणिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ । जदा णं उक्कोसिया अट्टा-
रसमुहुत्तिया राई भवइ, जहणिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा ण उक्को-
सिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहणिया तिमुहुत्ता दिवसस्स
पोरिसी भवइ ॥

१. स० पा०—तिव्वुत्तो जाव नमसित्ता ।

२. रत्ति० (अ, क, व, म) ।

१२३ कदा णं भंते ! उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई ? कदा वा उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ?

सुदसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्टारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहणिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । पोसपुण्णिमाए^१ णं उक्कोसिया अट्टारसमुहुत्ता राई भवइ, जहणए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥

१२४ अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?

हंता अत्थि ॥

१२५ कदा णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवति ?

सुदसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु^२, एत्थ^३ ण दिवसा य राईओ य समा चेव भवति—पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ । चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता^४ दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । सेत्तं पमाणकाले ॥

१२६. से किं त अहाउनिव्वत्तिकाले ?

अहाउनिव्वत्तिकाले—जण्ण जेण नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउय निव्वत्तिय । 'सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले'^५ ॥

१२७. से किं त मरणकाले ?

मरणकाले—जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ^६ । सेत्तं मरणकाले ॥

१२८ से किं त अद्दाकाले ?

'अद्दाकाले—से ण'^७ समयद्वयाए^८ आवलियद्वयाए जाव^९ उस्सप्पिणीद्वयाए । एस णं सुदसणा ! अद्दा दोहाराछेदेण^{१०} छिज्जमाणी जाहे विभाग नो हव्वमागच्छइ, सेत्तं समए समयद्वयाए । असखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिद्दमागमेण सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ । सखेज्जाओ आवलियाओ उस्सासो जहा सालिउद्देसए जाव^{११}—

एएसि ण पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।

त सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परिमाणं ॥१॥

१. पोसस्स पुण्णिमाए (म) ।

२. °मासु ण (क, ता, स) ।

३. तत्थ (अ, स) ।

४. चउभागमुहुत्ता (अ) ।

५. सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले (अ, म, स); सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले । १०. दोहाराछेदेण (क, व); दोहाराछेयेण (वृ)

सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले (ता) ।

६. वियुज्यते इति शेष. (वृ) ।

७. अद्दाकाले अणेगविहे पण्णत्ते (अ, स) ।

८. समयद्वयाए (अ) सर्वत्र ।

९. अ० सू० ४१५।

१०. दोहाराछेदेण (क, व); दोहाराछेयेण (वृ)

११. अ० ६।१३२-१३४।

१२६. एएहि ण भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहि किं पयोयण ?
सुदंसणा ! एएहि पलिओवम-सागरोवमेहि नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-
देवाण आउयाइ भविज्जति ॥
१३०. नेरइयाण भते ! केवइयं काल ठिई पणत्ता ?
एव ठिइपद निरवसेस भाणियव्वं जाव' अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोव-
माइ ठिई पणत्ता ॥
१३१. अत्थि ण भते ! एएसि पलिओवम-सागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ?
हता अत्थि ॥
१३२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थि णं एएसि पलिओवमसागरोवमाण
'खएति वा' अवचएति वा ?
एवं खलु सुदंसणा ! तेण कालेणं तेणं समएण हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—
वण्णओ' । सहस्रववणे उज्जाणे—वण्णओ' । तत्थ ण हत्थिणापुरे नगरे बले
नाम राया होत्था—वण्णओ' । तस्स ण बलस्स रण्णे पभावई नामं देवी
होत्था—सुकुमालपाणिपाया वण्णओ जाव' पच्चविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणु-
भवमाणी विहरइ ॥
१३३. तए ण सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगसि वासवरसि अग्निभ-
रओ सच्चित्तकम्मे, बाहिरओ दूमिय-घट्ट-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले'
मणिरयणपणासियघयारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-
पुप्फपुजोवयारकलिए कालागर-पवरकुदुक्क-तुरुक्क-धूव'-मघमघेत'-गधुद्ध-
याभिरामे सुगधवरगघिए गधवट्ठिभूए,
तसि तारिसगसि सयणिज्जंसि—सालिगणवट्ठिए उभओ विव्वोयणे दुहुओ
उण्णए 'मज्जे णय-गभीरे'^{१०} गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय'^{११}-खोमि-
यदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे'^{१२} सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसवुए सुरम्मे आइणग-रुय-
वूर-नवणीय-तूलकासे'^{१३} सुगंधवरकुसुम-चुण्ण-सयणोदयारकलिए अद्धरत्तकाल-

१. प० ४।

२. जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

३. ओ० सू० १।

४. भ० ११।५३।

५. ओ० सू० १४।

६. ओ० सू० १५।

७. चिलग (अ) ।

८. धूम (ता) ।

९. ०मघत (स) ।

१०. मज्जेण गभीरे (ता), मज्जेण य गंभीरे
(वृषा); पणत्ताणडविव्वोयणे त्ति क्वचित्
दृश्यते (वृ) ।

११. उयचिय (म, स), उवविय (क्व०) ।

१२. पलिच्छण (ता) ।

१३. तुल्ल० (म) ।

मयसि^१ सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी अयमेयारूव ओराल कल्लाण
सिव धण्ण मंगल्लं सस्सिरीय महासुविणं^२ पासित्ता णं पडिबुद्धा ।
हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पडरतरोरुमणिज्ज^३-
पेच्छणिज्ज थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ठ-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडविय-
मुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभतलट्ठओट्ठ^४ 'रत्तुप्पलपत्तमउय-
सुकुमालतालुजीह'^५ मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायत-वट्ठ-तडिबिमलसरि-
सनयणं विसालपीवरोरं पडिपुण्णविपुलखधं मिउविसयसुहुमलक्खण-पसत्थ-
विच्छिन्न^६-केसरसडोवसोभियं ऊसिय^७-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडियलगूलं सोम
सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं^८, नहयलाओ ओवयमाणं, नियगवयणमतवयत^९
सीहं सुविणे पासित्ता ण 'पडिबुद्धा समाणी'^{१०} हट्ठतुट्ठ^{११} चित्तमाणदिया णदिया
पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण^{१२} हियया धाराहयकलवण पिव
समूसवियरोमकूवा^{१३} त सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हत्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ,
अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभताए अविलबियाए रायहससरिसे गईए जेणेव
वलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वलं रायं ताहि इट्ठाहि
कंताहि पियाहि मणुण्णाहि मणामाहि ओरालाहि कल्लाणाहि सिवाहि धन्नाहि
मंगल्लाहि सस्सिरीयाहि मिय-महुर-मजुलाहि गिराहि संलवमाणी-सलवमाणी
पडिवोहेइ, पडिवोहेत्ता वलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभ-
त्तिचित्तसि^{१४} भद्दासणसि निसीयति, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवर-
गया वलं रायं ताहि इट्ठाहि कंताहि जाव मिय-महुर-मजुलाहि गिराहि सलव-
माणी-सलवमाणी एवं वयासी-एवं खलु अह देवाणुप्पिया । अज्ज तसि
तारिसगंसि सयणिज्जसि सालिगणवट्ठिए त चेव जाव नियगवयणमइवयत
सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्ण देवाणुप्पिया । एयस्स ओरालस्स जाव
महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

१. अइह^० (ता, म) ।

२. महासुविणं सुविणे (क, ता, व, म, स, वृ) ।

३. पंडुर^० (अ, व, स) ।

४. ^०उट्ठ (अ, क, व, स) ।

५. वाचनान्तरे—रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-
निल्लालियग्गजीहं महुगुलियाभिसतपिगलच्छ
(वृ) ।

६. विक्किण्ण (ता, वृषा) ।

७. ऊससिय (ता) ।

८. अप्फोडियलनगोल (ख) ।

९. × (अ, ख, ता, म) ।

१०. नियगवयणकमलसरमइवत (ता, म) ।

११. पडिबुद्धा तए ण सा पभावती देवी अयमेया-
रूव ओराल जाव सस्सिरीय महासुमिण
सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्ध समाणी (क,
ख, ता, व, स) ।

१२. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।

१३. समूससित^० (व) ।

१४. रयणवित्तिंसि (ता) ।

१३४ तए ण से बले राया पभावईए देवीए अतियं एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टुट्ट^१
 •चित्तमाणदिण णदिण पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण^० हियए
 धाराहयनीवसुरभिकुसुम^१-चचुमालईयतणुए^१ ऊसवियरोमकूवे त सुविणं ओगि-
 ण्हइ, ओगिणिहत्ता ईह पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविणं मइपुव्वएण
 बुद्धिणिष्णाणेण तस्स सुविणस्स अत्योगहण करेइ, करेत्ता पभावइ देवि ताहि
 इट्ठाहि कताहि जाव^१ मगल्लाहि मिय-महुर^१-सस्सिरियाहि वग्गूहि सलवमाणे-
 सलवमाणे एव वयासी—ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे ण तुमे
 देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव^१ सस्सिरिए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, 'आरोग-तुट्ठि-
 दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे', अत्यलाभो देवाणु-
 प्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! 'रज्जलाभो देवा-
 णुप्पिए !' एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अट्ठ-
 माण य राइदियाण वीइक्कताण अम्ह कुलकेउ कुलदीव कुलपव्वय कुलवडेसय
 कुलतिलग कुलकित्तिकर कुलनदिकर कुलजसकर कुलाधार कुलपायव कुलवि-
 वद्धणकर सुकुमालपाणिपाय अहीणपडिपुण्णपच्चिदियसरीर^१ •लक्खण-वज्जण-
 गुणोववेय माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरग^० ससिसोमाकार
 कत पियदसण सुख देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिसि ।
 से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय-^१परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते
 सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ । त
 ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग-तुट्ठि^१—•दीहाउ-कल्लाण^०-
 मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्ठ पभावति देवि ताहि इट्ठाहि
 जाव वग्गूहि दोच्च पि तच्चं पि अणुब्रूहति ॥

१३५ तए ण सा पभावती देवी वलस्स रण्णो अंतिय एयमट्ट सोच्चा निसम्म हट्टुट्टा^१
 करयल^१•परिगहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठ^० एव वयासी—
 एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया !
 असदिट्ठमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणु-

१. स० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए ।

८. × (म) ।

२. ०नीम^० (ता, व) ।

९ स० पा०—०पच्चिदियसरीरं जाव ससि० ।

३. ०तणुय (अ, क, ख, ता, म, स) ।

१० विण्णाय (अ, ता, स) ।

४. भ० ११।१३३।

११. सं० पा०—तुट्ठि जाव मगल्लकारए ।

५. महुररिमियगभीर (ना० ११।२०) ।

१२. हट्टुट्टु (अ, ता, स) ।

६. भ० ११।१३३।

१३ स० पा०—करयल जाव एव ।

७. × (अ) ।

पिप्या ! इच्छिय-पडिच्छियमेय देवाणुपिप्या ! से जहेय तुभे वदह त्ति कट्ठु
त सुविण सम्म पडिच्छइ^१, पडिच्छित्ता बलेण रण्णा अन्भणुण्णाया समाणी
नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अन्भुट्ठेइ, अन्भुट्ठेत्ता अतुरियमचव-
लं^२ मसभताए अविलवियाए रायहससरिसीए^३ गईए जेणेव सए सयणिज्जे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जसि निसीयति, निसीयित्ता एव
वयासी—मा मे से उत्तमे पहाणे मगलने सुविणे अण्णेहि पावसुमिणेहि पडिह-
म्मिस्सइ त्ति कट्ठु देवगुरुजणसबद्धाहि^४ पसत्थाहि मगल्लाहि धम्मियाहि^५
कहाहि सुविणजागरिय पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१३६. तए ण से बले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी खिप्पा-
मेव भो देवाणुपिप्या ! अज्ज सविसेस बाहिरिय उवट्ठाणसाल गधोदयसित्त-
सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोवयारकलिय कालागरु-पवरकुदु-
रुक्क^६—तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिरामं सुगधवरगधिय^७ गधवट्ठिभूय
करेह य कारवेह^८ य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएह, रएत्ता ममेतमा-
णत्तिय^९ पच्चप्पिणह ॥

१३७. तए ण ते कोडु वियपुरिसा जाव^{१०} पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेस बाहिरिय
उवट्ठाणसाल^{११} गधोदयसित्त-सुइय-समज्जिओवलित्त सुगधवरपचवण्णपुप्फोव-
यारकलिय कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धयाभिराम सुग-
धवरगधिय गधवट्ठिभूय करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासण रएत्ता तमाणत्तिय^{१२}
पच्चप्पिणत्ति ॥

१३८. तए ण से बले राया पच्चूसकालसमयसि सयणिज्जाओ अन्भुट्ठेइ, अन्भुट्ठेत्ता पाय-
पीढाओ^{१३} पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता जेणेव अट्ठणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्ठणसाल
अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव अट्ठणसाला तहेव मज्जणघरे जाव^{१४} ससिब्ब
पियदसणे नरवई^{१५} जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

१. संपडिच्छइ (ख, स) ।

२. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।

३. देवतगुरु^० (ता) ।

४. × (अ) ।

५. गधोदय (ब) ।

६. सं० पा०—पवरकुदुरुक्क जाव गध^० ।

७. करावेह (ख, स) ।

८. ममेत जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

९. भ० १।१४२।

१०. सं० पा०—उवट्ठाणसाल जाव पच्चप्पिणत्ति ।

११. पायपीढाओ (ख, ब, म) ।

१२. ओ० सू० ६३ ।

१३. नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २

(अ, क, ख, ता, ब, म, स); ओपपात्तिकागु-

सारेण स्वीकृतपाठ. एव समीचीन ।

आदर्शेषु परिवर्तनं संक्षेपीकरणेन जातम् ।

पाठसंक्षेपे प्राय एव भवत्येव ।

एककारस सत (एककारसमो उद्देशो)

च्छित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुर-
त्थिमे दीसीभाए अट्ट भद्दासणाइ सेयवत्थपच्चत्थुयाइ^१ सिद्धत्थगकयमगलोवयाराइ
रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामते नाणामणि-रयणमडिय अहियपेच्छणिज्ज
महग्घ-वरपट्टणुगय सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताण^२ ईहामिय-उसभ^३-तुरग-नर-
मगर-विहग-वालग-किण्णर-रु-सरभ-चमर-कुजर-वणलय-पउमलय^४-भत्ति-
चित्त अविभंतरीयं जवणिय अछावेइ, अछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्त
अत्थरय-मउयमसूरगत्यय सेयवत्थपच्चत्थुय^५ अगसुहफासय^६ सुमउय पभावतीए
देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडु बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं
वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । अट्टगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविह-
सत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह ॥

१३६ तए ण ते कोडु बियपुरिसा जाव^७ पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अतियाओ पडिनि-
क्खमत्ति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घ तुरिय चवल चड वेइय हत्थिणपुरं नगरं
मज्झमज्जेण जेणेव तेसि सुविणलक्खणपाढगाण गिहाइ तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेति ॥

१४० तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडु बियपुरिसेहि सद्दाविया समाणा
हट्टुट्टा ण्हाया कय^८ बलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं
मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकिय^९ सरीरा सिद्धत्थग-
हिरयालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहि-सएहि गेहेहितो निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता
हत्थिणपुर नगर मज्झमज्जेण जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेसए तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेसगपडिदुवारसि एगओ मिलति,
मित्ति जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छति,
उवागच्छित्ता करयल^{१०} परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्ठु^{११}
बलराय जएण विजएण वद्धावेत्ति । तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा
वदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेय-पत्तेय पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु
निसीयति ॥

१४१ तए णं से बले राया पभावति देवि जवणियतरिय ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल
पडिपुण्हत्थे परेणं विणएण ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

१. °पच्चत्थुयाइ (म) ।

२. सण्हवहुमत्ति° (व, म) ।

३. स० पा०—उसभ जाव भत्तिचित्तं ।

४. °पच्चत्थुय (व, म, स) ।

५. °फासुय (ख, व) ।

६. अ० ६१४२।

७. स० पा०—कय जाव सरीरा ।

८. स० पा०—करयल ।

देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तसि तारिसगसि वासघरसि जाव^१ सीह सुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव^२ महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

१४२. तए ण ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठा तं सुविण ओगिण्हति, ओगिण्हत्ता ईह अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेति, करेत्ता अणमण्णेण सद्धि सचालेति^३, सचालेत्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहिण्हट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तारि सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्ठिमायरो वा तित्थगरसि वा चक्कवट्ठिसि वा गव्वं वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झंति, त जहा—गय उसह^४ सीह अभिसेय दाम ससि दिणयर भय कुभ ।

पउमसरं सागर विमाणभवणं रयणुच्चय सिहि च^५ ॥१॥

वासुदेवमायरो वासुदेवसि गव्वं वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अणयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । बलदेवमायरो बलदेवसि गव्वं वक्कममाणसि एएसि चोद्दसण्ह महासुविणाण अणयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । मंडलियमायरो मंडलियसि गव्वं वक्कममाणसि एएसि णं चोद्दसण्ह महासुविणाण अणयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति । इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव^६ आरोग्ग-तुट्ठि^७—
•दीहाउ कल्लाण•-मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं^८ •अद्धमाण य राइदियाणं^९ वीइक्कंताणं तुम्ह कुलकेउं जाव^{१०} देवकुमारसमप्पमं दारगं पयाहिंति ।

१. भ० ११।१३३।

२. भ० ११।१३३।

३. सलवति (ता) ।

४. वसह (क, ता, म) ।

५. पट्टमसर (ता) ।

६. 'विमाणभवण' ति एकमेव, तत्र विमाना-कारं भवन विमानभवन, अथवा देवलोका-द्योऽवतरति तन्माता विमानं पश्यति यस्तु

नरकात् तन्माता भवनमिति (वृ) ।

७. इह च गाथायां केपुचित्पदेष्वास्तुस्वारस्याश्रवण गाथाञ्जुलोम्याद् दृश्यम् (वृ) ।

८. भ० ११।१३४।

९. स० पा०—तुट्ठि जाव मंगल्लकारए ।

१०. स० पा०—बहुपडिपुण्णाण जाव वीइक्कंताण ।

११. भ० ११।१३४।

से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे* •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते
सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे° रज्जवई राया भविस्सइ, अण-
गारे वा भावियप्पा । त ओराले ण देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे
दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण°-•मगल्लकारए पभावतीए देवीए
सुविणे° दिट्ठे ॥

१४३. तए ण से बले राया सुविणलक्खणपाढगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
हट्ठतुट्ठे करयल°•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अर्जाल° कट्ठु ते सुविण-
लक्खणपाढगे एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया* ! •तहमेय देवाणुप्पिया !
अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणु-
प्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! °
से जहेय तुग्गे वदह त्ति कट्ठु त सुविण सम्म पडिच्छइ°, पडिच्छित्ता सुविण-
लक्खणपाढए विउलेण असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालंकारेणं
सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउल जीवियारिह पीड्ढाणं
दलयइ, दलयित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ,
अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावति देवि
ताहि इट्ठाहि जाव° मिय-महुर-सस्सिरीयाहि वग्गूहि संलवमाणे-सलवमाणे एव
वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! सुविणसत्थसि वायालीस सुविणा, तीस
महासुविणा—बावत्तारि सव्वसुविणा दिट्ठा । तत्थ णं देवाणुप्पिए ! तित्थगर-
मायरो वा चक्कवट्ठिमायरो वा तित्थगरसि वा चक्कवट्ठिसि वा गब्भं वक्कम-
माणंसि एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोहस महासुविणे पासित्ता ण पडिबु-
ज्झति त चेव जाव° मडलियमायरो मडलियसि गब्भ वक्कममाणंसि एएसि णं
चोहसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविणं पासित्ता ण पडिबुज्झति । इमे
य ण तुमे देवाणुप्पिए ! एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे
दिट्ठे जाव° रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, त ओराले णं तुमे
देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव° आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे
देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्ठु पभावति देवि ताहि इट्ठाहि जाव मिय-महुर-
सस्सिरीयाहि वग्गूहि दोच्च पि तच्च पि अणुबूहइ ॥

- | | |
|--|---------------|
| १. स० पा०—उम्मुक्कवालभावे जाव रज्जवई । | ६. अ० ११।१३४। |
| २. स० पा०—कल्लाण जाव दिट्ठे । | ७. अ० ११।१४२। |
| ३. स० पा०—करयल जाव कट्ठु । | ८. अ० ११।१४२। |
| ४. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव से । | ९. अ० ११।१३४। |
| ५. सपडिच्छइ (क, ता, म, स) । | |

१४४. तए णं सा पभावतो देवो बलस्स रण्णो अतियं एयमट्ठु सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु करयल^१•परिग्गहियं दसनह सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्ठु^२ एव वयासो—
एयमेय देवानुप्पिया ! जाव^३ त सुविणं सम्म पडिच्छइ, पडिच्छिता बलेण
रण्णा अब्भणुण्णाया समाणो नाणामणिरयणभत्ति^४•चित्ताओ भद्दासणाओ^५
अव्भुट्ठेइ, अतुरियमचवल^६•मसभताए अविलवियाए रायहससरिसीए^७ गईए
जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सय भवणमणुपविट्ठा ॥
१४५. तए णं सा पभावतो देवो ण्हाया कयवलिकम्मा जाव^८ सव्वालकारविभूसिया त
गव्भं नातिसोतेहि नातिउण्हेहि नातितित्तेहि नातिकडुएहि नातिकसाएहि नातिअ-
विलेहि नातिमहुरेहि उउभयमाणसुहेहि^९ भोयण-च्छायण-गध-मल्लेहि ज तस्स
गव्भस्स हियं मित पत्थ गव्भपोसणं त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्त-
मउएहि^{१०} सयणासणेहि पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला
संपुण्णदोहला^{११} सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिण्णदोहला विणीय-
दोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा तं गव्भ 'सुहसुहेण परिवहति' ॥
१४६. तए णं सा पभावतो देवो नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अट्ठुमाण य राइदियाण
वीइक्कताण सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपचिदियसीर लक्खण-वज्जण-
गुणोववेयं^{१२} •माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरग^{१३} •ससिसोमाकार
कतं पियदंसणं सुखं दारय पयाया ॥
१४७. तए ण तीसे पभावतीए देवोए अगपडियारियाओ पभावति देवि पसूय जाणेत्ता
जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता करयल^{१४}•परिग्गहिय दसनह
सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्ठु^{१५} वलं राय जएण विजएण वद्धावेत्ति, वद्धावेत्ता
एवं वयासो—एवं खलु देवानुप्पिया ! पभावती देवी नवण्ह मासाण बहुपडि-
पुण्णाण जाव^{१६} सुखं दारग पयाया । त एयण्ण^{१७} देवानुप्पियाण पियट्ठयाए पिय
निवेदेमो । पियं भे भवतु ॥
१४८. तए ण से बले राया अगपडियारियाणं अतियं एयमट्ठु सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठु^{१८}-
•चित्तमाणंदिए णदिए पोइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए

१. सं० पा०—करयल जाव एव ।

८. सपन्न^८ (अ);^९ डोहला (ता) ।

२. भ० ११।१३५।

९. वाचनान्तरे—सुहसुहेण आसयइ सुयइ

३. स पा०—•भत्ति जाव अब्भुट्ठइ ।

चिट्ठइ निसीयइ तुयट्ठइ त्ति दूक्यते (वृ) ।

४. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।

१०. सं० पा०—गुणोववेय जाव ससि^{१०} ।

५. भ० ७।१७६।

११. सं० पा०—करयल ।

६. तट्ठु^६ (ख); उटु^६ (ता, म); उटु^६ (व) ।

१२. भ० ११।१३४ ।

१३. एतणं (अ, स); एत (ता) ।

७. विचित्त^७ (अ, ख, ता, व, स) ।

१४. सं० पा०—हट्ठुट्ठु जाव धाराहयनीव जाव कूवे ।

धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चचुमालइयतणुए ऊसवियरोम °कूवे तासि अगपडिया-
रियाण मउडवज्ज जहामालिय' ओमोय दलयइ', दलयित्ता सेत २ययामय
विमलसलिलपुण्ण भिगार पणिण्हइ, पणिण्हित्ता मत्थए धोवइ, धोवित्ता विउल
जीवियारिह पोइदाण दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्मा-
णेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१४६ तए ण से वले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव
भो देवाणुप्पिया । हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह, करेत्ता माणुम्माण-
वड्ढण' करेह, करेत्ता हत्थिणापुर नगर सम्भितरबाहिरियं आसिय-समज्जिओ-
वलित्तं जाव' गधवट्ठिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्स
वा चक्कसहस्स वा पूयामहामहिमसजुत्त' उस्सवेह, उस्सवेत्ता ममेतमाणत्तिय
पच्चप्पिणह ॥

१५०. तए ण ते कोडुवियपुरिसा वलेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव' तमाण-
त्तिय पच्चप्पिणत्ति ॥

१५१ तए ण से वले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव
जाव' मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ
अदेज्ज अमेज्ज अभडप्पवेस' अदडकोदाडिम अधरिम गणियावरत्ताडइज्जकलिय
अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्धुयमुइग' अमिलायमल्लदाम' पमुइयपक्कीलिय
सपुरजणजाणवय दसदिवसे ठिइवडिय करेत्ति ॥

१५२. तए ण से वले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य
सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सइए य सय-
साहस्सिए य लमे" पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एव यावि विहरइ ॥

१५३. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडिय करेइ, तइए दिवसे
चदसूरदसावणिय' करेइ, छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ, एकारसमे दिवसे वीह-

१. जहाजमालित (ता) ।

२. वलति (ता) ।

३. °वड्ढ (ता) ।

४. ओ० सू० ५५ ।

५. °महिमसक्कारं वा (अ, म, स); आयाम-
जावदिसक्कार वा (क), °सजुत्तं वा आया-
मेजाहससक्का (ख); पूता° (ता), पूया-
महिमसक्कारं वा (व) ।

६. भ० ११।१४६ ।

७. ओ० सू० ६३ ।

८. °पावेस (ख), अहड° (ता) ।

९. अणुद्धत° (क); अणुद्धत्त° (व) ।

१०. अमिलाण° (ता) ।

११. लामे (क, व). लभो (ता) ।

१२. °दसणिय (क); औपपात्तिकाद्यागमेषु 'दस-
णिय' इति पाठ प्रायेण स्वीकृतोस्ति । तत्र
स्वीकृतपाठो नोपलब्धः । अर्थदृष्ट्यासौ समी-
चीनोस्ति ।

वकंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते 'वारसमे दिवसे' विउलं असणं पाण खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ति, उवक्खडावेत्ता *मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणं रायाणो य* खत्ति ए य आमंतेत्ति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया त चेव जाव' सक्कारेत्ति सम्माणेत्ति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-
 नियग-सयण-सवधि-परिजणस्स राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय पिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढ कुलाणुरूवं कुलसरिस्स कुलसताणतनुवद्ध-
 णकरं अयमेयाख्वं गोण्ण गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेत्ति—जम्हाणं अम्हं इमे दारए वलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, त होउ णं अम्हं इमस्स दार-
 गस्स नामधेज्ज 'महव्वले-महव्वले' । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नाम-
 धेज्ज करेत्ति महव्वले त्ति ॥

१५४. तए णं से महव्वले दारए पंचघाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरधाईए],^१ एवं जहा दढपइण्णस्स जाव' निव्वाय'-निव्वाघायसि सुहंसुहेणं परिवड्ढत्ति ॥
१५५. तए णं तस्स महव्वलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवड्ढिय वा चंद-सूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परगामणं वा पचं कामणं^२ वा पजेमामणं^३ वा पिंडवद्धणं वा पजं पावणं^४ वा कण्णवेहण वा सवच्छरपडिलेहणं^५ वा चोलोयणं^६ वा उवणयणं वा, अण्णाणि य वहूणि गव्भाधानं^७—जम्मणमादि-याइं कोउयाइं करेत्ति ॥
१५६. तए णं तं महव्वलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्टवासणं जाणित्ता सोभणंसि

१. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, म, स); वारसा-दिवसे (ता); वारहदिवसे (व); 'रायपसेण-इय' सूत्रस्य ८०२ सूत्रानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतः । विशेषपाववोवाय द्रष्टव्य 'ओव-वाइय' सूत्रस्य १४४ सूत्रस्य प्रथम पाद-टिप्पणम् ।

२. सं० पा०—जहा सिवो जाव खत्ति ए ।

३. भ० ११।६३ ।

४. सं० पा०—नाइ जाव राईण ।

५. महव्वले (अ, क, ख, व, म, स) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यातः प्रतीयते ।

७. ओ० वाचनान्तर पृष्ठ १५१, १५२; राय० सू० ८०४ ।

८. निवात (अ, ता, व, म); नियात (ख) ।

९. पयचं कामण (अ); पचं कामावणं (ख, व); पचकामवण (ता); पयचकामण (म) । पयचकमण (स) ।

१०. जेमावण (क, व, म, स) ।

११. पजपमाण (क, ख); पजपामण (व) ।

१२. *पलेहणं (ख), *वलेहणं (ता) ।

१३. चोलायण (अ); चोलोपण (क, ख); चोलगाणि (ता); चोलोयणं (व) ।

१४. गव्भदाण (अ, ख); गव्भायाण (ता); गव्भादाण (व, वृ); 'गव्भाहाण' पदस्य हकारदकारयोर्लिपिसाद्व्यात् 'गव्भादाण' रूपे परिवर्तनं जातमिति सभाव्यते ।

तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेति, एवं जहा दढप्पइण्णे जाव' अलभोगसमत्ये जाए यावि होत्था ॥

१५७. तए ण त महव्वलं कुमार उम्मुक्कवालभावं जाव' अलंभोगसमत्ये विजाणिता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेसए कारेति^१—अव्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव' पडिरूवे । तेसि ण पासायवडेसगाण बहुमज्झदेस-भागे, एत्थ ण महेग भवण कारेति—अणेगखभसयसनिविट्ठ वण्णओ जहा राय-प्पसेणइज्जे पेच्छाधरमडवसि जाव' पडिरूवे ॥

१५८ तए णं त महव्वलं कुमार अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तसि ण्हाय कयवलिकम्मं कयकोउय-मगल-पायच्छित्त सव्वा-लकारविभूसिय पमवखणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-अट्ठगतिलग-ककण-अवि-ह्ववहुउवणीय' मगलसुजपिएहि य वरकोउयमंगलोवयार-कयसतिकम्म सरि-सियाण सरित्तयाण सरिव्वयाण सरिसलावण-रूव-जोव्वणगुणोव्वेयाणं 'विणीयाण कयकोउय-मगलपायच्छित्तान' सरिसएहि रायकुलेहिंतो आणिल्लि-याण' अट्ठण्ण रायवरकन्नाण एगदिवसेण पाणि गिण्हाविसु ॥

१५९ तए ण तस्स महावलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूव पीइदाण दलयति, तं जहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ 'कुडलजोए कुडलजोयप्पवरे' अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलप्पवराओ, एव मुत्तावलीओ, एव कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एव तुडियजोए, अट्ठ खोमजुय-लाइ खोमजुयलप्पवराइ, एव वडगजुयलाइ,^२ एव पट्टजुयलाइ, एव दुगुल्ल-जुयलाइ, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एव धिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ नंदाइ, अट्ठ भद्दाइ, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ अट्ठ भाए भयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएण वएणं, अट्ठ नाडगाइ नाडगप्पवराइ वत्तीसइवद्धेण नाडएण, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिधरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिधरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइ जाणप्पवराइ, अट्ठ जुगाइ जुगप्पवराइ, एव सिवियाओ^३, एव सद-

१. ओ० सू० १४६-१४८, राय० सू० ८०५-

८०६ ।

२. राय० सू० ८१० ।

३. करेति (अ, म, स) ।

४. राय० सू० १३७ ।

५. राय० सू० ३२ ।

६. अविधववधुओवरीति (ता) ।

७. × (व) ।

८. आणिते (ति) ल्लियाण (क, ख, ता, व, म) ।

९. कुडलजुए कुडलजुय० (अ, स) ।

१०. पडलगजुवलाइ (अ) ।

११. सिविया (अ), सिताओ (ता) ।

माणीओ^१, एव गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ट वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइ, अट्ट रहे पारिजाणिए, अट्ट रहे सगामिए, अट्ट आसे आसप्पवरे, अट्ट हत्थो हत्थि-प्पवरे, अट्ट गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण, अट्ट दासे दासप्पवरे, एव दासीओ, एव किकरे, एव कचुइज्जे, एव वरिसधरे, एव महत्तरए, अट्ट सोवणिए ओलवणदीवे, अट्ट रुप्पामए ओलवणदीवे, अट्ट सुवणरुप्पामए ओलवणदीवे, अट्ट सोवणिए उक्कंवणदीवे^२, एवं चेव तिण्णि वि, अट्ट सोवणिए पजरदीवे, एवं चेव तिण्णि वि, अट्ट सोवणिए थाले, अट्ट रुप्पामए थाले, अट्ट सुवणरुप्पामए थाले, अट्ट सोवणियाओ पत्तीओ^३, अट्ट सोवणियाइं थास-गाइ^३, अट्ट सोवणियाइ मल्लगाइ^३, अट्ट सोवणियाओ तलियाओ^३, अट्ट सोवणियाओ कविच्चियाओ^३, अट्ट सोवणिए अत्तएण्डए^३, अट्ट सोवणियाओ अवयक्काओ^३, अट्ट सोवणिए पायपीढए^३, अट्ट सोवणियाओ भिसियाओ^३, अट्ट सोवणियाओ करोडियाओ^३, अट्ट सोवणिए पल्लके^३, अट्ट सोवणियाओ पडिसेज्जाओ^३, अट्ट हसासणाइ, अट्ट कोचासणाइ, एव गरुलासणाइ, उन्-यासणाइ, पणयासणाइ, दीहासणाइ, भद्दासणाइ, पक्खासणाइ, मगरासणाइ, अट्ट पउमासणाइ, अट्ट दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ट तेल्ल-समुग्गे, *अट्ट कोट्ट-समुग्गे, एवं पत्त-चोयग-त्तर-एल-हरियाल-हिगुल-मणोसिल-अजण-समुग्गे^४, अट्ट सरिसव-समुग्गे, अट्ट खुज्जाओ जहा ओववाइए जाव^५ अट्ट पारिसीओ, अट्ट छत्ते, अट्ट छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ट चामराओ, अट्ट चामरधारीओ चेडीओ अट्ट तालियटे, अट्ट तालियटधारीओ चेडीओ, 'अट्ट करोडियाओ',^६ अट्ट करो-डियाधारीओ चेडीओ, अट्ट खीरघाईओ^७, *अट्ट मज्जणघाईओ, अट्ट मडणघाईओ अट्ट खेत्तावणघाईओ^८, अट्ट अकघाईओ, अट्ट अंगमहियाओ, अट्ट उम्महियाओ अट्ट ण्हावियाओ, अट्ट पसाहियाओ, अट्ट वण्णगपेसीओ, अट्ट चुण्णगपेसीओ^९, अट्ट कीडागारीओ^{१०}, अट्ट दवकारीओ^{११}, अट्ट उवत्थाणियाओ, अट्ट नाडइज्जाओ,

१. सदमाणी (अ), सदमारियाओ (क, ता, व, म) ।
 २. उक्कंपणादीवे (क, ख, ता, व, स) ।
 ३. 'एव तिण्णि वि' इति पाठस्य सूचकमङ्क-मिदं सर्वत्र ।
 ४. चवलियाओ (ख), चवलियाओ अट्टसो-वण्णियाओ तिलियाओ (ता) ।
 ५. कविच्चियाओ (अ, ख, ता, व, म); कति-वियाओ (क) ।
 ६. अवयडए (अ, स), अवयडए (ता) ।
 ७. अवक्काओ (अ, क, ख, ता, म) ।
 ८. स० पा०—जहा रायपसेणइज्जे जाव अट्ट ।
 ९. ओ० सू० ७०, म० ६।१४४।
 १०. × (अ, क, ख, ता, व, म) ।
 ११. स० पा०—खीरघाईओ जाव अट्ट ।
 १२. × (ख) ।
 १३. कीलाकरीओ (ता) ।
 १४. उवकारीओ (क, ता) ।

अट्ट कोडुविणीओ, अट्ट महाणसिणीओ^१, अट्ट भडागारिणीओ, अट्ट अन्धाधारिणीओ, अट्ट पुण्णघरणीओ, अट्ट पाणिघरणीओ, अट्ट वाहिरियाओ, अट्ट सेज्जाकारीओ, अट्ट अन्धतरियाओ पडिहारीओ, अट्ट वाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ट मालाकारीओ, अट्ट पेसणकारीओ, अण्ण वा सुवहु हिरण्ण वा सुवण्ण वा कस वा दूस वा विउलघण-कण^२-^३रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-^४सतसारसावएज्ज, अलाहि जाव आसत्तामाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु^५, पकाम परिभाएउ^६ ॥

१६० तए ण से महव्वले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडि दलयइ, एगमेग सुवण्णकोडि दलयइ, एगमेग मउडं मउडप्पर दलयइ, एव त चेव सव्व जाव एगमेग पेसणकारि दलयइ, अण्ण वा सुवहु हिरण्ण वा^१ ^२सुवण्ण वा कस वा दूस वा विउलघण-कण-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्ज, अलाहि जाव आसत्तामाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, पकाम ^३परिभाएउ ॥

१६१. तए ण से महव्वले कुमारे उप्पि पासायवरगए जहा जमाली जाव^४ पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुवभवमाणे विहरइ ॥

१६२. तेण कालेण तेण समएण विमलस्स अरह्ओ पओप्पए^१ धम्मघोसे नाम अणगारे जाइसपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव^२ पचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे, जेणेव सहस्रववणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हिता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१६३. तए ण हत्थिणापुरे नगरे सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महुया जणसइ इ वा जाव^३ परिसा पज्जुवासइ ॥

१६४. तए ण तस्स महव्वलस्स कुमारस्स त महुयाजणसइ वा जणवूह वा जाव जण-सन्निवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एव जहा^४ जमाली तहेव चिंता,

१. महाणसीओ (क, ता, व) ।

२. स० पा०—कणग जाव सतसार ।

३. परिभोत्तु (क, व, म, स) ।

४. परिभाइउ (ख), परियाभाएउ (ता) ।

५. स० पा०—हिरण्ण वा जाव परिभाएउ ।

६. भ० ६।१५६ ।

७. पदोप्पए (ख), पतोप्पए (व, म) ।

८. राय० सू० ६८६ ।

९. राय० सू० ६८७; ओ सू० ५२; भ०

६।१५७ ।

१०. भ० ६।१५८ ।

तहेव कंचुइज्ज-पुरिस सहावेति, ^{१०}सहावेत्ता एव वयासी—किणं देवाणु-
प्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नगरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ॥

१६५. तए णं से कंचुइ-पुरिसे महव्वलेण कुमारेण एव वुत्ते समाणे हव्वुत्तुं धम्मघो-
सस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयलपरिगहिय दसनह सिरसावत्त
मत्थए अंजलि कट्ठु महव्वल कुमार जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं
वयासी—तो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नगरे इंदमहे इ वा जाव
निग्गच्छति । एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज विमलस्स अरहओ पओप्पए
धम्मघोसे नामं अणगारे हत्थिणापुरस्स नगरस्स वहिया सहसववणे उज्जाणे
अहापडिख्वं ओगह ओगिण्हत्ता सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ,
तए णं एते वहवे उग्गा, भोगा जाव^१ निग्गच्छति ॥

१६६. तए णं से महव्वले कुमारे^० तहेव^१ रहवरेण निग्गच्छति । धम्मकहा जहा^१
केसिसामिस्स । सो वि तहेव अम्मापियर आपुच्छइ, नवर—धम्मघोसस्स अण-
गारस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए । तहेव वुत्तपडि-
वुत्तिया^१, नवर—इमाओ य ते जाया । विउलरायकुलवालियाओ कलाकुसल-
सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ सेस त चेव जाव^१ ताहे अकामाइ चेव महव्वल-
कुमारं एव वयासी—तं इच्छामो ते जाया । एगदिवसमवि रज्जसिंरि
पासितए ॥

१६७. तए णं से महव्वले कुमारे अम्मापिउ-वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए सविट्ठइ ॥

१६८. तए णं से वले राया कोडुवियपुरिसे सहावेइ, एव जहा सिवभट्टस्स तहेव सया-
भित्तेओ भाणियव्वो जाव^१ अभिसिचति, करयलपरिगहिय^१ ^{१०}दसनह सिरसावत्त
मत्थए अंजलि कट्ठु महव्वल कुमारं जएण विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव
वयासी—भण जाया ! कि देमो ? कि पयच्छामो ? सेस जहा जमालिस्स तहेव
जाव^{१०}—

१६९. तए णं से महव्वले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अतिय सामाइयमाइयाइ
चोइस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहुहि चउत्थ^{१०}—^{१०}छट्ठम-दसम-दुवाल-

१. सं० पा०—कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव ४. अ० ११६०-१६२ ।

अक्खाति, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स ५. राय० सू० ६६३ ।

आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव ६. वुत्तपडिवत्तया (क्व) ।

निग्गच्छइ । एव खलु देवाणुप्पिया ! ७. अ० ११६४-१७६ ।

विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नाम ८. अ० ११५९-६२ ।

अणगारे, सेस तं चेव जाव सो वि तहेव । ९. सं० पा०—करयलपरिगहिय ।

२. अ० ११५८ । १०. अ० ११८०-२१५ ।

३. अ० ११५८ । ११. सं० पा०—चउत्थ जाव विचित्तेहि ।

सेहि मासद्ध-मासखमणेहिं ° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढ चदिम-सुरिय- ° गृहगण-नक्खत्त-ताराख्वाण बहूइ जोयणाइ, बहूइ जोयणसयाइ, बहूइ जोयणसहस्साइ, बहूइ जोयणसयसहस्साइ, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढ दूर उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिदे कप्पे वीईवइत्ता ° बभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ ण अत्थेगितियाण देवाणं दस सागरोवमाइ ठिठी पण्णत्ता । तत्थ ण महव्वलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइ ठिठी पण्णत्ता । से ण तुम सुदसणा ! बभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्ता तओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलसि पुत्तत्ताए पच्चायाए ॥

१७०. तए ण तुमे सुदसणा ! उम्मुक्कवालभावेण विण्णय-परिणयमेत्तेणं जोव्वणगम-णुप्पत्तेण तहाख्वाण थेराण अतिय केवलिपण्णत्ते घम्मे निसते, सेवि य घम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए । त सुट्ठु ण तुम सुदसणा ! 'इदाणि पि' करेसि । से तेणट्ठेण सुदसणा ! एव वुच्चइ—अत्थि ण एतेसि पलिओवम-सागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ॥

१७१. तए ण तस्स सुदसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सुभेण अज्झवसाणेण सुभेण परिणामेण लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-भगण-गवेसण करमाणस्स 'सण्णीपुव्वे जातीसरणे' समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्म अभिसमेति ॥

१७२. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेण भगवया महावीरेण सभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसद्धसवेगे आणदसुपुण्णनयणे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—एवमेयं भते ! ° तहमेयं भते ! अवितहमेयं भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छियमेयं भते ! पडिच्छियमेयं भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भते ! °—से जहेयं तुब्भे वदह ति कट्ठु उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, सेस जहा उसभदत्तस्स

१. स० पा०—जहा अम्मडो जाव बभलोए ।
ओपपातिकादसैषु तद् वृत्तौ च नैष पाठो
सम्पद्यते, तेन चिन्त्यमिदम् ।
२. तओ चेव (अ); ताओ (ता, व, म); ताओ
चेव (स) ।

३. इदाणि वि (अ, क, ख, ता, व) ।
४. सोमणेण (ता) ।
५. सण्णीपुव्वजाती ° (अ, क, ता, व, वृ) ।
६. ° सद् ° (म) ।
७. स० पा०—भते जाव से ।

जाव' सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—चोद्दस पुच्चाइं अहिज्जइ, वहुपडिपुण्णाइं
दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, सेस तं चेव ॥
१७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति" ॥

वारसमो उद्देसो

इसिभट्टपुत्त-पदं

१७४. तेणं कालेणं तेण समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ' । संखवणे
चेइए—वण्णओ' । तत्थ णं आलभियाए नगरीए वहवे इसिभट्टपुत्तपामोक्खा
समणोवासया परिवसंति—अइडा जाव' बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवा-
जीवा जाव' अहापरिग्गहिएहि तवोक्कमेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरति ॥
१७५. तए णं तेसि समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं सहियाण
सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोक्कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—
देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
१७६. तए णं से इसिभट्टपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे ते समणोवासए एवं
वयासी—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेण दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता,
तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया, सखे-
ज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उवकोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती
पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥
१७७. तए णं ते समणोवासया इसिभट्टपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स
जाव एवं पळ्वेमाणस्स एयमट्ठ नो सइहति नो पत्तियति नो रोयति, एयमट्ठ
असइहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिस पाउव्वभूया तामेव दिस
पडिगया ॥

१. भ० १।१५१।

२. भ० १।५१।

३. खो० सू० १।

४. खो० सू० २-१३।

५. भ० २।६४।

६. भ० २।६४।

७. समुवविट्ठाण (अ), समुविट्ठाण (ख, व, म,
वृ) समुवेट्ठाणं (ता); द्रष्टव्यम्—भ०
७।२१२।

८. मिहोक्कहासमुल्लावे अज्झत्थिए (अ, ख, म);
अज्झत्थिए (व) ।

१७८ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव^१ समोसढे जाव^२ परिसा पज्जुवासइ । तए ण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धुत्ता समाणा, हट्ठुत्ता
 *अणमण सदावेत्ति, सदावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव महावीरे जाव^३ आलभियाए नगरीए अहापडिख्व ओगह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।

त महप्फल खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिया । समण भगवं महावीर वदामो नमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण भगल देवयं चेइय पज्जु-वासामो ।

एय णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्ठु अणमणस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेत्ति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो पडिनिक्खमत्ति, पडिनि-क्खमत्ता एगयओ मेलायति, मेलायित्ता पायविहारचारेण आलभियाए नगरीए मज्झमज्जेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सखवणे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर जाव^४ तिविहाए पज्जुवासणाए^५ पज्जुवासति । तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महत्तिमहालियाए परिसाए 'धम्म परिकहेइ'^६ जाव^७ आणाए आराहए भवइ ॥

१७९ तए ण ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठुत्ता उट्ठाए उट्ठेत्ति, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—एव खलु भते । इसिमहपुत्ते समणोवासए अम्मह एवमाइक्खइ जाव^८ परूवेइ—देवलोएसु ण अज्जो । देवाण जहण्णेण दस

१. भ० १।७।

२. ओ० सू० २२-५२।

३. स० पा०—एव जहा तुगियउद्देसए जाव पज्जुवापति ।

४. ओ० सू० ५२।

५. भ० २।९७।

६. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, द, म, स) ।

७. ओ० सू० ७१-७७।

८. भ० १।४२०।

वाससहस्साइं ठिती पणत्ता, तेण परं समयाहिया जाव' तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।

१८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?

अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—जणं अज्जो । इसिभद्दुत्ते समणोवासए तुवमं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइं ठिती पणत्ता, तेण पर समयाहिया जाव तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे ण एसमट्ठे, अहं 'पि ण'^५ अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव' परूवेमि—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइं *० ठिती पणत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमियाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उवकोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पणत्ता^० । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—'सच्चे णं एसमट्ठे'^६ ॥

१८१. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठु सोच्चा निसम्म समण भगव महावीरं वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता^१ जेणेव इसिभद्दुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता इसिभद्दुत्तं समणोवासग वदति नमंसति, वदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठुं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति । तए णं ते समणोवासया पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियंति, परियादियित्ता समण भगवं महावीर वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

१८२. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते । इसिभद्दुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ? तो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दुत्ते समणोवासए वहूहि सीलव्वय-गुण^७—वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहि^१हि तवोकम्मोहि अप्पाण भावेमाणे वहूइं वासाइ समणोवासगपरियागं पाउणिहित्ति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसेहित्ति, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेहित्ति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे

१. भ० १११७६।

२. पुण (अ, स) ।

३. भ० ११४२१।

४. स० पा०—त चेव जाव तेण ।

५. सच्चमेसे अट्ठे (क, ख, ता, व, म) ।

६. नमसित्ता उट्ठाते उट्ठेति २ (ता) ।

७. गुणव्वय (ख, व, म) ।

विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ ण अत्येगतियाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पणत्ता । तत्थ ण इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिती भविस्सति ॥

१८३. से ण भते । इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण^१ *अणत्तर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? ° कहि उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति^२ *बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिग्वा-हिति सव्वदुक्खाण ° अत काहिति ॥

१८४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे जाव^३ अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१८५. तए ण समणे भगव महावीरे अणया कयाइ आलभियाओ नगरीओ सखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिन्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

पोगल-परिव्वायग-पदं

१८६. तेण कालेण तेण समएण आलभिया नाम नगरी होत्था—वण्णओ^४ । तत्थ ण सखवणे नाम चेइए होत्था—वण्णओ^५ । तस्स ण सखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोगले नामं परिव्वायए^६—रिउव्वेद-जजुव्वेद जाव^७ बभणएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठछट्ठेण अणिकित्तेण तवोकम्मेणं उड्डं बाहाओ^८ *पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए ° आयावेमाणे विहरइ ॥

१८७. तए ण तस्स पोगलस्स परिव्वायगस्स छट्ठछट्ठेण^९ *अणिकित्तेणं तवोकम्मेणं उड्डं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए ° आयावेमाणस्स पगइभइयाए^{१०} *पगइउवसतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभाए मिउम-इवसपन्नयाए अत्तलीययाए विणीययाए अणया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेण ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स ° विठभगे नाम नाणे^{११} समुप्पन्ने । से ण तेण विठभगेण नाणेण समुप्पन्नेण बभलोए कप्पे देवाण ठिति जाणइ-पासइ ॥

१८८. तए ण तस्स पोगलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^{१२} *चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ° समुप्पज्जित्था—अत्थि ण मम अतिसेसे नाणदसणे

१. स० पा०—ठिइक्खएण जाव कहि ।

२. स० पा०—सिज्झिहिति जाव अतं ।

३. भ० १।५।

४. ओ० सू० १ ।

५. ओ० सू० २-१३ ।

६. परिव्वायए परिवसति (अ, स) ।

७. भ० २।२४ ।

८. स० पा०—बाहाओ जाव आयावेमाणे ।

९. स० पा०—छट्ठछट्ठेण जाव आयावेमाणस्स

१०. स० पा०—जहा सिवस्स जाव विठभगे ।

११. अण्णाणे (अ) ।

१२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइ ठिती पणत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरो-वमाइ ठिती पणत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता 'तिदड च कुडिय च' जाव' घाउरत्ताओ य नेण्हइ, नेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगा-वसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिकखेव करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए सिघाडग' •तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह' -पहेसु अणमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया । मम अत्तिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ •'ठिती पणत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरो-वमाइ ठिती पणत्ता । तेण पर • वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१८६. तए णं •'पोगलस्स परिव्वायगस्स अत्थियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आलभियाए नगरीए सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसुवहुजणे अणम-ण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया । पोगले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया । मम अत्तिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पणत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पणत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । • से कहमेय मन्ने एव ?

१८७. सामी समोसढे', •परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ, •परिसा पडिगया । भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद् निसामेइ, निसामेत्ता तहेव सव्व भाणियव्व जाव" अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एव भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पणत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पणत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१८८. अत्थि ण भते ! सोहम्मे कप्पे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अदवण्णाइ पि, •सगधाइ पि अगंधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ

१. तिदडकुडिय (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

अभिलावेण जहा सिवस्स त चेव जाव से ।

२. म० २।३१ ।

६. स० पा०—समोसढे जाव परिसा ।

३. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

७. म० ११।७५-७७ ।

४. सं० पा०—तहेव जाव वोच्छिण्णा ।

८. स० पा०—तहेव जाव हत्ता ।

५. सं० पा०—आलभियाए नगरीए एव एएणं

पि अण्णमण्णवद्धाई अण्णमण्णपुट्टाई अण्णमण्णवट्टपुट्टाई अण्णमण्णघट्ताए चिट्ठति ? ०

हंता अत्थि ।

एव ईसाणे वि, एव जाव^१ अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपट्टभाराए वि जाव ?

हंता अत्थि ॥

१६२. तए ण सा महत्तिमहालिया परिसा जाव^१ जामेव दिसि पाउवभूया तामेव दिस पडिगया ॥

१६३. तए ण आलभियाए नगरीए सिघाडग-तिग-^१●चउक्क-वच्चर-चउम्मूह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ जण्णं देवाणुप्पिया ! पोगले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया । मम अत्तिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पणत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइ ठिती पणत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । त नो इणट्ठे समट्ठे । समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव^१ देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पणत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्को-सेणं तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पणत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१६४ तए ण से पोगले परिव्वायए बहुजणस्स अत्थि एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सकिए कंखिए वित्तिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए ण तस्स पोगलस्स परिव्वायगस्स सकियस्स कखियस्स वित्तिगिच्छियस्स भेदसमावन्नेस्स कलुससमावन्नेस्स से विभगे नाणे खिप्पामेव पडिवडिए ॥

१६५. तए णं तस्स पोगलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगव महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव^१ सव्वणू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव^१ संखवणे चेइए

१. भ० ११।६४ ।

२. भ० ११।८२ ।

३. स० पा०—अवसेस जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—तिदडकुडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविग्गमे आल-भिय नगरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ जाव

उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ २ तिदडकुडिय च जहा खदयो जाव पव्वइयो सेस जहा सिवस्स जाव ।

४. भ० ११।८३, १६० ।

५. भ० १।७ ।

६. ओ० सू० १६।

अहापडिखुं ओगहं ओगिहत्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाण अरहताण भगवताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण वित्तलस्स अट्टस्स गहणयाए ? त गच्छामि ण समणं भगव महावीर वदामि जाव' पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तिदड च कुडिय च जाव' घाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायगावसहाओ पडि-निक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविम्भगे आलभिय नगरि मज्झमज्जेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिकखुत्तो वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण पंजलिकडे पज्जुवासइ ॥

१६६. तए णं समणे भगवं महावीरे पोग्गलस्स परिव्वायगस्स तीसे य महतिमहा-लियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव' आणाए आराहए भवइ ॥

१६७. तए णं से पोग्गले परिव्वायए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्म सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव' उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमइ, अव-क्कमित्ता तिदंडं च कुडियं च जाव' घाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समण भगवं महावीर तिकखुत्तो आयाहिण-पया-हिण करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव जहेव उसभदत्तो तहेव' पव्वइओ, तहेव' एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, तहेव सव्व जाव' सव्व-दुक्खप्पहीणे ॥

१६८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणस्स कयरम्मि सघयणे सिज्झंति ?

गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।

१. भ० २।३० ।

२. भ० २।३१ ।

३. ओ० सू० ७१-७७ ।

४. भ० २।५२ ।

५. भ० २।३१ ।

६. भ० ६।१५०, १५१ ।

७. भ० ६।१५१ ।

८. भ० ६।१५१ ।

सधयण सठाण, उच्चत्त आउयं च परिवसणा ।
एव सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा^० जाव'—
अव्वावाह सोक्ख, अणुभवति सासय सिद्धा ॥

१६६. सेव भते ! सेव भते । त्ति^१ ॥

—————

बारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. सखे २. जयति ३. पुढवि ४. पोगल ५. अइवाय ६. राहु ७. लोगे य ।
 ८. नागे य ९. देव १०. आया, बारसमसए दसुद्देसा ॥१॥

संख-पोक्खली-पदं

१. तेणं कालेण तेण समएण सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ^१ । कोट्टए चेइए—वण्णओ^२ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बह्वे सखप्पामोक्खा समणोवासया परिवसति—अड्ढा जाव^३ बहुजणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा जाव^४ अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणा विहरति । तस्स ण संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव^५ सुहुवा, समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणी विहरइ । तत्थ ण सावत्थीए नगरीए पोक्खली नाम समणो-वासए परिवसइ—अड्ढे, अभिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२. तेणं कालेण तेणं समएण सामी समोसढे । परिसा जाव^६ पज्जुवासइ । तए ण ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जहा आलभियाए जाव^७ पज्जु-वासंति । तए णं समणे भगव महावीरे तेसिं समणोवासगाना तीसे य महति-महालियाए परिसाए ‘धम्मं परिकहेइ’ जाव^८ परिसा पडिगया ॥
३. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठा समण भगवं महावीरं वदंति नमंसंति, वंदित्ता नमसित्ता पसि-

१. ओ० सू० १ ।

२. ओ० सू० २-१३ ।

३. भ० २।६४ ।

४. भ० २।६४ ।

५. ओ० सू० १५ ।

६. ओ० सू० ५२ ।

७. भ० ११।१७८ ।

८. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

९. ओ० सू० ७१-७६ ।

णाइ पुच्छति, पुच्छिता अट्टाइ परियादियति^१, परियादियिता उट्टाए उट्टेति, उट्टेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडि-
निक्खमति, पडिनिक्खमिता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४. तए ण से सखे समणोवासए ते समणोवासए एव वयासी—तुभे णं देवाणु-
प्पिया । विपुल 'असण पाण खाइम साइम'^२ उवक्खडावेह । तए ण अम्हे त
विपुल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणा^३ विस्साएमाणा 'परिभाएमाणा
परिभुजेमाणा'^४ पक्खिय पोसह^५ पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ॥

५. तए ण ते समणोवासगा सखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेति ॥

६. तए ण तस्स सखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^६ *चित्थिए पत्थिए
मणोगए सकप्पे^७ समुप्पज्जित्था—नो खलु मे सेय त विपुल असण पाण खाइम'
साइम अस्साएमाणस्स विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुजेमाणस्स
पक्खिय पोसह^८ पडिजागरमाणस्स विहरित्थए, सेय खलु मे पोसहसालाए पोस-
हियस्स वभचारिस्स ओमुक्कमणि^९ सुवण्णस्स ववगयमाला^{१०}—वण्णग-विलेवणस्स
निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसथारोवगयस्स पक्खिय पोसह
पडिजागरमाणस्स विहरित्थए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव सावत्थी
नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, उवा-
गच्छित्ता उप्पल समणोवासिय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसाल अणुपविस्सइ, अणुपवित्तिता पोसहसालं
पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमि पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसथारागं
सथरइ, सथरित्ता दब्भसथाराग दुस्सइ, दुस्सित्ता पोसहसालाए पोसहिए वभ-
चारी^{११} *ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले
एगे अबिइए दब्भसथारोवगए^{१२} पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे विहरइ ॥

७. तए ण ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइ-साइ गिहाइ, तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुल असण पाण खाइमं साइमं उवक्खडावेति,
उवक्खडावेत्ता अणमण सदावेति, सदावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणु-

१. पडियाइयति (ता) ।

२. असणपाणखाइमसाइम (क, ख, ता, व, म) ।

३. आसाएमाणा (स) ।

४. परिभुजेमाणा परिभाएमाणा (अ, क, ख, स); परिभुजमाणा परियाभाएमाणा (ता) ।

५. पोसहिय (त) (ख, ता, म) ।

६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

८. पोसहिय (ख, ता, म) ।

९. उम्मुक्क^० (व, म) ।

१०. *मल्लग (ता) ।

११. सं० पा०—वभचारी जाव पक्खियं ।

प्पिया ! अम्हेहि से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सख समणो-वासगं सद्दावेत्तए ॥

८. तए ण से पोक्खली समणोवासए 'ते समणोवासए' एवं वयासी—अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय^१-वीसत्था, अहण्णं संखं समणोवासगं सद्दावेमि त्ति कट्ठु तेसि समणोवासगणं अतिथाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता सावत्थीए नगरीए मज्झमज्जेण जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता संखस्स समणोवासगस्स गिह अणुपविट्ठे ॥

९. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलि समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठु पयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलि समणोवासगं वंदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता आस-णेण उवनिमतेइ^२, उवनिमतेत्ता एवं वयासी—सदिसत्तु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोगण ?

१०. तए ण से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासयं एव वयासी—कहिण्णं देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए ?

११. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलि समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए वञ्चारी^३ •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विल्लवणे निक्खत्तसत्थ-मुसले एगे अविइए दढभसथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे^४ विहरइ ॥

१२. तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव सखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता सख समणोवासगं वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहि से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, त गच्छामो णं^५ देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं •पाणं खाइमं^६ साइमं अस्ताए-माणा^७ •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खियं पोसहं^८ पडिजा-गरमाणा विहरामो ॥

१३. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलि समणोवासगं एवं वयासी—नो खलु

१. × (ख, ता, व, म) ।

२. सुनिव्वुया (अ, स) ।

३. निमतेइ (ता) ।

४. कहिण्ण (अ, क, ख, ता, व, म) ।

५. सं० पा०—दंभचारी जाव विहरइ ।

६. × (क, ख, ता, व, म) ।

७. सं० पा०—असण जाव साइमं ।

८. सं० पा०—अस्ताएमाणा जाव पडिजागर-माणा ।

कप्पइ देवाणुप्पिया । त विउल असणं पाण खाइम साइम अस्साएमाणस्स^१ ।
 •विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुजेमाणस्स पक्खिय पोसहं^० पडिजा-
 गरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स^२ •बभचारिस्स
 ओमुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खत्तसत्थ-मुसलस्स
 एगस्स अविइयस्स दब्भसथारोवगयस्स पक्खिय पोसह पडिजागरमाणस्स^०
 विहरित्तए, 'त छदेण'^३ देवाणुप्पिया । तुब्भे त विउल असणं पाण खाइम
 साइम अस्साएमाणा^४ •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खिय
 पोसह पडिजागरमाणा^० विहरह ॥

१४. तए ण से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अतियाओ पोसहसा-
 लाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिक्का सावत्थि नगरि मज्झमज्झेण जेणेव ते
 समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते समणोवासए एव वयासी—
 एव खलु देवाणुप्पिया ! सखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव^५
 विहरइ, त छदेण देवाणुप्पिया ! तुब्भे विउल असणं^६ •पाण खाइम साइम
 अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खिय पोसहं
 पडिजागरमाणा^० विहरह, सखे ण समणोवासए नो हव्वमागच्छइ । तए णं
 ते समणोवासगा त विउल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणा जाव
 विहरति ॥

१५. तए ण तस्स सखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरिय
 जागरमाणस्स अयमेयारूवे^७ •अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^८
 समुप्पज्जित्था—सेय खलु मे कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव^९ उट्ठियम्मि सूरे
 सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता
 जाव^{१०} पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खिय पोसह पारित्तए त्ति कट्ठु
 एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सर-
 स्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिक्का
 सुद्धप्पावेसाइ भगल्लाइ वत्थाइ पवर^{११} परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ,
 पडिनिक्खमिक्का पायविहारचारेण सावत्थि नगरि मज्झमज्झेण^{१२} •निरगच्छइ,

१ स० पा०—अस्साएमाणस्स जाव पडिजा-
 गरमाणस्स ।

७. स० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

८. भ० २।६६ ।

२ स० पा०—पोसहियस्स जाव विहरित्तए ।

९. भ० २।३१ ।

३ तत्थ ण (अ), त ण छदेण (ख) ।

१०. × (ब) ।

४. स० पा०—अस्साएमाणा जाव विहरह ।

११. स० पा०—मज्झमज्झेण जाव पज्जुवासित्ति

५. भ० १२।६ ।

अभिगमो नत्थि ।

६. स० पा०—असण ४ जाव विहरह ।

निग्गच्छिता जेणेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छिता तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ,
वदित्ता नमसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासति ॥

१६. तए ण ते समणोवासगा कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव' उट्ठियम्मि सूरे
सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ष्हाया कयबलिकम्मा जाव' अप्पमहग्घा-
भरणालं कियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता एग-
यओ मेलायति', मेलायित्ता °पायविहारचारेण सावत्थीए नगरीए मज्झमज्झेण
निग्गच्छति, निग्गच्छिता जेणेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे,
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता समणं भगव महावीर जाव' तिविहाए पज्जु-
वासणाए° पज्जुवासति ॥

१७. तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महतिमहालियाए
परिसाए 'धम्मं परिकहेइ' जाव' आणाए आराहए भवइ ॥

१८. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा
निसम्म हट्ठुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीर वदति नमसति,
वदित्ता नमसित्ता जेणेव सखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता
सखं समणोवासयं एवं वयासी—तुमं ण देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा
चेव एव वयासी—तुम्हे ण देवाणुप्पिया ! विउलं असणं °पाण खाइम साइम
उवक्खडावेह । तए णं अम्हे त विपुल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणा
विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खियं पोसह पडिजागरमाणा°
विहरिस्सामो । तए णं तुमं पोसहसालाए' °पोसहिए बभचारी ओमुक्कमणि-
सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खत्तसत्थ-मुसले एगे अविइए दब्भसथा-
रोवगए पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे° विहरिए, त सुदट्ठु ण तुम देवाणु-
प्पिया ! अम्हे हीलसि" ॥

१९. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एव वयासी— मा ण अज्जो !
तुम्हे सख समणोवासग हीलह निदह खिसह गरहह अवमण्णह । सखे ण सम-
णोवासए पियधम्मे चेव, दब्धम्मे चेव, सुदक्खुजागरिय जागरिए ॥

१. भ० २।६६ ।

२. भ० २।६७ ।

३. मिलायति (अ, ख, व, स) ।

४. स० पा०—सेसं जहा पढम जाव पज्जुवा-
सति ।

५. भ० २।६७ ।

६. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

७. ओ० सू० ७१-७७ ।

८. स० पा०—असण जाव विहरिस्सामो ।

९. स० पा०—पोसहसालाए जाव विहरिए ।
१०. हीलसि (अ, स) ।

२०. भतेति । भगव गोयमे समण भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—कतिविहा णं भते । जागरिया पणत्ता ? गोयमा ! तिविहा जागरिया पणत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ॥
२१. के केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया पणत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ? गोयमा ! जे इमे अरहता भगवतो उप्पण्णनाणदसणधरा 'अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयविद्याणए° सव्वणू सव्वदरिसी एए ण बुद्धा' बुद्धजागरिय जागरति । जे इमे अणगारा भगवतो रियासमिया' भासासमिया' एसणासमिया आयाण-भंडमत्तनिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-परिट्ठावणिया-समिया मणसमिया वइसमिया कायसमिया मणगुत्ता वइगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिदिया° गुत्तबभचारी—एए ण अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरति । जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव' अहापरिग्गहिण्हि तवोक्कम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति—एए ण सुदक्खुजागरियं जागरति । से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ—तिविहा जागरिया° पणत्ता, तं जहा बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया°, सुदक्खुजागरिया ॥
२२. तएणं से संखे समणोवासए समण भगव महावीर वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—कोहवसट्ठे ण भते । जीवे किं बघइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? सखा ! कोहवसट्ठे ण जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिट्ठिलवघण-बद्धाओ° धणियबघणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, भदाणुभावाओ तिब्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पएसग्गाओ बहुप्प-एसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्मं सिय बघइ, सिय नो बघइ, अस्सायावियणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च णं अणव-दग्ग दोहमद्ध चाउरत ससारकतारं° अणुपरियट्ठइ ॥
२३. माणवसट्ठे ण भते । जीवे 'किं बघइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं

१. स० पा०—जहा खदए जाव सव्वणू ।

२. × (अ) ।

३. इरिया ° (व म) ।

४. स० पा०—भासासमिया जाव गुत्तबभचारी ।

५. ° चारिणो (अ) ।

६. म० २।१४ ।

७. स० पा०—जागरिया जाव सुदक्खु° ।

८. स० पा०—एव जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्ठइ ।

९. स० पा०—एव चैव, एव मायवसट्ठे वि एव लोभवसट्ठे वि जाव अणुपरियट्ठइ ।

- उवचिणाइ ? एवं चेव जाव^१ अणुपरियट्टइ ॥
२४. मायवसट्टे^१ णं भंते ! जीवे कि वधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवचि-
णाइ ? एवं चेव जाव^१ अणुपरियट्टइ ॥
२५. लोभवसट्टे^१ णं भंते ! जीवे कि वधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवचि-
णाइ ? एवं चेव जाव^१ अणुपरियट्टइ ॥
२६. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा
निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभजव्विग्गा समण भगव महावीर वदइ
नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-
च्छित्ता संखे समणोवासग वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म
विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेंति । तए ण ते समणोवासगा *पसिणाइ पुच्छति,
पुच्छित्ता अट्ठाई परियादियति, परियादियित्ता समण भगवं महावीर वदति
नमसति, वंदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउव्वभूया तामेव दिस पडिगया ॥
२७. भंतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
एवं वयासी—पभू ण भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अतिय *मुडे
भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! सखे समणोवासए वट्ठहिं सोलव्वय-गुण-वेरमण-
पच्चवक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिं तवोक्कम्मोहि अप्पाण भावेमाणे
वट्ठइ वासाइं समणोवासगपरियाग पाउणिहिं, पाउणित्ता मासियाए संलेह-
णाए अत्ताण भूसेहिं, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेहिं, छेदेत्ता
आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे
विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिं । तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाणं चत्तारि
पलिओवमाइ ठिती पणत्ता । तत्थ ण सखस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ
ठिती भविस्सति ॥
२८. से ण भंते ! संखे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं
अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिं ? कहि उववज्जिहिं ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिं बुज्झिहिं मुच्चिहिं परिणव्वाहिं
सव्वदुक्खाणं^१ अतं काहिंति ॥
२९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव^१ विहरइ ॥

१. भ० १२।२२ ।
२. मायावयट्टे (ब, म) ।
३. भ० १२।२२ ।
४. भ० १२।२२ ।

५. स० पा०—सेसं जहा आलभियाए जाव
पडिगया ।
६. सं० पा०—सेसं जहा इसिभट्टपुत्तस्स जाव अत ।
७. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

उदयणादीणं धम्मसवरण-पदं

३०. तेणं कालेण तेणं समएण कोसवी नामं नगरी होत्था—वण्णओ^१ । चंदोतरणे^२ चेइए—वण्णओ^३ । तत्थ ण कोसवीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवोए अत्तए, जयतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे^४ नाम राया होत्था—वण्णओ^५ । तत्थ ण कोसवीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नाम देवी होत्था^६—सुकुमालपाणिपाया जाव^७ सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव^८ अहापरिगहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणो विहरइ । तत्थ ण कोसवीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पिउच्छा, मिगावतीए देवोए नणदा, वेसालियसावयाणं^९ अरहंताणं पुव्वसेज्जातरी^{१०} जयंती नामं समणोवासिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव सुरूवा अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिगहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणो विहरइ ॥
३१. तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे जाव^{११} परिसा पज्जुवासइ ॥
३२. तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धे समाणे हट्ठुट्ठे^{१२} कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवानुप्पिया । कोसवि नगरि सन्भितर-बाहिरिय आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं^{१३} करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । एवं जहा कूणिओ तहेव सव्व जाव^{१४} पज्जुवासइ ॥
३३. तए ण सा जयती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धा समाणी हट्ठुट्ठा जेणेव मिगावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिगावति देवि एव वयासी—^{१५}

१ ओ० सू० १ ।

९. वेसालीसावयाण (अ, क, ख, व, म, स) ।

२. चंदोत्तराए (अ), चंदोवरणे (ख), चंदो-
वतरणे (स) ।

१०. * सिज्जायरी (अ, स) ।

११. ओ० सू० २२-५२ ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

१२. हट्ठुट्ठ (ता) ।

४. उदायणे (अ), उदायणे (स) ।

१३. पू०—ओ० सू० ५५ ।

५. ओ० सू० १४ ।

१४. ओ० सू० ५६-६६ ।

६. होत्था वण्णओ (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

१५. स० पा०—एव जहा नवमसए उसभदत्तो

७. ओ० सू० १५ ।

जाव भविस्सइ ।

८. म० २।६४ ।

●एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव^१ सव्वण्णू सव्व-
दरिसी आगासगएणं चक्केण जाव^२ सुहसुहेणं विहरमाणे चंदोतरणे चेइए
अहापडिख्वं ओगहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।
तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण नामगोयस्स
वि सव्वणयाए जाव^३ एय णे इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्से-
साए आणुगामियत्ताए^४ भविस्सइ ॥

३४. तए णं सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए^५ ●एव वुत्ता समाणी
हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पोइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्प-
माणहियया करयलपरिग्गहिय दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्ठु जयतीए
समणोवासियाए एयमट्ठ विणएणं^६ पडिसुणेइ ॥

३५. तए णं सा मिगावती देवी कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावेत्ता एव वयासी—
खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय जाव^७ धम्मियं जाणप्पवरं
जुत्तामेव उवट्ठवेह^८ ●उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

३६. तए णं ते कोडुवियपुरिसा मिगावतीए देवीए एव वुत्ता समाणा धम्मियं जाण-
प्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं^९ पच्चप्पिणति ॥

३७. तए ण सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि ण्हाया कयवलिकम्मा
जाव^{१०} अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा वूर्हहि खुज्जाहि जाव^{११} चेडियाचक्कवाल-
वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खत्ता अतेउराओ निगच्छइ, निग-
च्छत्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छत्ता^{१२} ●धम्मिए जाणप्पवरं^{१३} दुरूढा^{१४} ॥

३८. तए णं सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि धम्मियं जाणप्पवर
दुरूढा^{१५} समाणी नियगपरियालसंपरिवुडा जहा उसभदत्तो जाव^{१६} धम्मियाओ
जाणप्पवराओ पच्चोउहइ ॥

३९. तए ण सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि बूर्हहि जहा देवाणदा

१. भ० १।७ ।

२. ओ० सू० १६ ।

३. भ० ६।१३६ ।

४. सं० पा०—जहा देवाणदा जाव पडिसुणेइ । १०. दूढा (अ, क, ख, ता, व, म) ।

५. भ० ६।१४१ ।

११. दूढा (अ, क, ख, ता, व, म) ।

६. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति जाव १२. भ० ६।१४५ ।

पच्चप्पिणति ।

७. भ० २।६७ ।

८. भ० ६।१४४ ।

९. सं० पा०—उवागच्छत्ता जाव दुरूढा ।

जाव^१ वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया^२ चैव^३
 •सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएण पजलिकडा^४
 पज्जुवासइ ॥

४०. तए ण समणे भगव महावीरे उदयणस्स रण्णो मिगावतीए देवीए जयंतीए
 समणोवासियाए तीसे य महतिमहलियाए परिसाए जाव^५ धम्म परिकहेइ जाव^६
 परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मिगावती वि पडिगया ॥

जयंती-पसिण-पहं

४१ तए णं सा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं धम्म
 सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठा समण भगव महावीर वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता
 एव वयासी—कहण^१ भते । जीवा गइयत्त हव्वमागच्छति ?
 जयती । पाणाइवाएण^२ •मुसावाएण अदिण्णादाणेण मेहुणेणं परिगहेण कोह-
 माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-
 मायामोस-मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु जयती । जीवा गइयत्त हव्वमा-
 गच्छति ॥

४२ कहण भते । जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छंति ?
 जयती । पाणाइवायवेरमणेण मुसावायवेरमणेण अदिण्णादाणवेरमणेणं
 मेहुणवेरमणेण परिगहवेरमणेण कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-
 अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादसणसल्लवेरमणेणं
 —एव खलु जयती । जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ॥

४३ कहणं भते ! जीवा ससार आउलीकरेति ?
 जयती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादसणसल्लेण—एवं खलु जयती । जीवा
 ससार आउलीकरेति ॥

४४ कहण भते ! जीवा ससार परित्तीकरेति ?
 जयती ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एवं खलु
 जयती । जीवा संसार परित्तीकरेति ॥

४५ कहणं भते ! जीवा ससार दीहीकरेति ?

१. भ० ६।१४६ ।

२ ठितिया (अ, क, ख, स) ।

३ स० पा०—चैव जाव पज्जुवासइ ।

४. भ० ६।१४६ ।

५. ओ० सू० ७१-७६ ।

६. कह णं (क, ता, व); कह ण (ख, म);

कहिण (स) ।

७. स० पा०—पाणातिवाएण जाव मिच्छाद-
 सणसल्लेण एव खलु जीवा गइयत्त हव्वमा-
 गच्छति एवं जहा पढमसए जाव वीति-
 वयति ।

जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं दीहीकरेति ॥

४६. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेति ?

जयंती पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेति ॥

४७. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं अणुपरियट्ठति ?

जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं अणुपरियट्ठति ॥

४८. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं वीतिवयंति ?

जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं वीतिवयंति ॥

४९. भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाणं किं सभावओ ? परिणामओ ?

जयंती ! सभावओ, नो परिणामओ ॥

५०. सव्वेवि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिभस्संति ?

हंता जयंती ! सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिभस्संति ॥

५१. जइ णं भंते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिभस्संति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केणं खाइणं^१ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिभस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?

जयंति ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया—अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोगलमेत्तेहिं खंडोहिं समए—समए अवहीरमाणी-अवहीरमाणी अणंताहिं ओसप्पिणी-उत्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहीरमाणी सिया । से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिभस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ॥

५३. सुत्तत्तं भंते ! साहू ? जागरियत्तं साहू ?

जयंती ! अत्येगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्येगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥

५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्येगतियाणं^२ जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्येगति-याणं जीवाणं जागरियत्तं^३ साहू ?

जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिद्धा अहम्मक्खाई अहम्म-पलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विह-

रति, एसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू । एए ण जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए^१ जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्ठणयाए^२ परियावणयाए वट्ठति । एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहि अहम्मियाहि सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति एसि ण जीवाणं सुत्तत्तं साहू ।

जयती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया^३ धम्मिटा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा^४ धम्मेण चैव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एसि ण जीवाणं जागरियत्तं साहू । एए णं जीवा 'जागरा समाणा' बहूणं पाणाणं^५ भूयाणं जीवाणं^६ सत्ताणं अदुक्खणयाए^७ असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्ठणयाए^८ अपरियावणयाए वट्ठति । एए ण जीवा जागरा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहि धम्मियाहि सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति । एए ण जीवा जागरा समाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवति । एसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू । से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ—अत्येगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्येगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ॥

५५. बलियत्तं भते ! साहू ? दुब्बलियत्तं साहू ?

जयती ! अत्येगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्येगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ॥

५६. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—अत्येगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्येगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं^९ साहू ?

जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव^{१०} अहम्मेणं चैव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एसि ण जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू । एए णं जीवा 'दुब्बलिया समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्ठति । एए ण जीवा दुब्बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहि अहम्मियाहि सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति । एसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ।

१. सं० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए ।

२. सं० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेणं ।

३. जागरमाणा (अ, क, ख) ।

४. सं० पा०—पाणाणं जाव सत्ताणं ।

५. सं० पा०—अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए ।

६. ते (अ) ।

७. सं० पा०—वुच्चइ जाव साहू ।

८. सं० १२।५४ ।

९. सं० पा०—एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियवत्तन्वया भाणियन्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियन्वा जाव सजोएत्तारो ।

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाणं बलियत्तं साहू । एए णं जीवा वलिया समाणा बहूण पाणाण भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा वलिया समाणा अप्पाण वा परं वा तदुभयं वा बहूहि धम्मियाहि सजो-यणाहि° संजोएत्तारो भवन्ति । एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू । से तेणट्टेण जयंती ! एवं वुच्चइ—°अत्येगतियाणं जीवाणं वलियत्तं साहू, अत्येगतियाण जीवाणं दुव्वलियत्तं° साहू ॥

५७. दक्खत्तं भंते ! साहू ? आलसियत्तं साहू ?

जयंती ! अत्येगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्येगतियाणं जीवाणं आल-सियत्तं साहू ॥

५८. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—°अत्येगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्ये-गतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू ?

जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव अहम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विह-रन्ति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू । एए ण जीवा आलसा^१ समाणा नो बहूणं °पाणाणं भूयाण जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टति । एए णं जीवा आलसा समाणा अप्पाण वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहि अहम्मियाहि संजोयणाहि संजोएत्तारो भवन्ति । एएसि ण जीवाणं आलसियत्तं साहू ।

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरन्ति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू । एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टति । एए णं जीवा दक्खा समाणा अप्पाण वा परं वा तदुभयं वा बहूहि धम्मियाहि सजो-यणाहि° संजोएत्तारो भवन्ति । एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहि आयरिय-वेयावच्चेहि^२ उवज्झायवेयावच्चेहि थेरवेयावच्चेहि तवस्सिवेयावच्चेहि गिलाण-वेयावच्चेहि सेहवेयावच्चेहि कुलवेयावच्चेहि गणवेयावच्चेहि सघवेयावच्चेहि साहम्मियवेयावच्चेहि अत्ताणं संजोएत्तारो भवन्ति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू । से तेणट्टेण °जयंती ! एवं वुच्चइ—अत्येगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्येगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू ॥

१. स० पा०—तं चेव जाव साहू ।

२. सं० पा०—तं चेव जाव साहू ।

३. अलसा (अ, ब) ।

४. स० पा०—जहा सुत्ता तहा आलसा

भागियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा

भागियव्वा जाव सजोएत्तारो ।

५. °वेदावच्चेहि (अ, ब) ।

६. सं० पा०—तं चेव जाव साहू ।

५९. सोइदियवसट्टे णं भते । जीवे किं बधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
जयंती ! सोइदियवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबध-
णबद्धाओ धणियबंघणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ
पकरेइ, मदाणुभावाओ तिब्बाणुभावाओ पकरेइ, अप्पएसग्गाओ बहुप्पए-
सग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्मं सिय बंघइ, सिय नो बधइ, अस्सायावेय-
णिज्ज च णं कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च णं अणवदग्गं
दीहमद्ध चाउरत ससारकतारं^० अणुपरियट्टइ ॥
६०. ^१चक्खिदियवसट्टे णं भते ! जीवे किं बधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ?
किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥
६१. घाणिदियवसट्टे णं भते । जीवे किं बधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ?
किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥
६२. रसिदियवसट्टे णं भते । जीवे किं बधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ?
किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥
६३. फासिदियवसट्टे णं भते । जीवे किं बधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ?
किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव^० अणुपरियट्टइ ॥
६४. तए ण सा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं
सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेस जहा देवाणदा तहेव पव्वइया जाव^१ सव्वदुक्ख-
प्पहीणा ॥
६५. सेव भते । सेव भते । तित्ति^२ ॥

तइओ उद्देसो

पुढवी-पदं

६६. रायगिहे जाव^३ एवं बयासी—कति णं भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पढमा, दोच्चा जाव सत्तमा ॥

१. सं० पा०—एव जहा कोह्वसट्टे तहेव जाव डुइ ।
अणुपरियट्टइ । ३. सं० ६।१५२-१५५ ।
२. सं० पा०—एवं चक्खिदियवसट्टे वि एवं ४. सं० १।५१ ।
जाव फासिदियवसट्टे वि जाव अणुपरिय- ५. सं० १।४-१० ।

६७. पढमा णं भंते ! पुढवी किगोत्ता पण्णत्ता ?
 गोयमा ! घम्मा नामेण, रयणप्पभा गोत्तेण, एव जहा जीवाभिगमे पढमो नेर-
 इयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव^१ अप्पाबहुग ति ॥
६८. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति^२ ॥

चउत्थो उद्देसो

परमाणुपोग्गलाणं संघात-भेद-पदं

६९. रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—दो भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णत्ति, साहण्णित्ता कि भवइ ?
 गोयमा ! दुप्पएसिए खंघे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ—एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ॥
७०. तिण्णि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णत्ति, साहण्णित्ता कि भवइ ?
 गोयमा ! तिपएसिए खंघे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ—
 दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंघे भवइ । तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवति ॥
७१. चत्तारि भते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णत्ति,^{*} साहण्णित्ता कि भवइ ?^०
 गोयमा ! चउपएसिए खंघे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंघे भवइ ; अहवा दो दुपएसिया खंघा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंघे भवइ । चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवति ॥
७२. पंच भते ! परमाणुपोग्गला^{*} एगयओ साहण्णत्ति, साहण्णित्ता कि भवइ ?^०
 गोयमा ! पंचपएसिए खंघे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि पंचहा वि^१ कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपएस-

१. जी० ३ ।

२. भ० १।५१ ।

३. भ० १।४-१० ।

४. स० पा०—साहण्णत्ति जाव पुच्छा ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

सिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ । पचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोगला भवति ॥

७३ छब्भते । परमाणुपोगला *१०एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ ? ०
गोयमा छप्पएसिए खधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खंधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु-पोगला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा तिणिण दुपएसिया खधा भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु-पोगला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ । छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोगला भवति ॥

७४ सत्त भते । परमाणुपोगला *१०एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ ? ०
गोयमा ! सत्तपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिणिण दुपएसिया खंधा भवति । पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएस-

सिया खंधा भवति । छहा कज्जमाणे एगयओ पच्च परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ । सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोगला भवति ॥

७५. अट्ठ भत्ते ! परमाणुपोगला ^१•एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ ? • गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ^१ । • से भिज्जमाणे दुहा वि जाव अट्ठहा वि कज्जइ^०—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पच्चपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला भवति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पच्चपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोगला, एगयओ पच्चपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवति । पच्चहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवति । छहा कज्जमाणे एगयओ पच्च परमाणुपोगला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवति । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ । अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोगला भवति ॥

७६. नव भत्ते ! परमाणुपोगला ^१•एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ ? • गोयमा ! • नवपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि जाव नवहा^१ वि कज्जइ^०—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. सं० पा०—भवइ जाव दुहा ।

३. सं० पा०—पुच्छा ।

४. सं० पा०—गोयमा जाव नवहा ।

५. नवविहा (ता, स) ।

भवइ, ^१अहवा एगयओ दुपएसिए खवे, एगयओ सत्तपएसिए खवे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खवे, एगयओ छप्पएसिए खवे भवइ, ^२ अहवा एगयओ चउप्पएसिए खवे, एगयओ पंचपएसिए खवे भवइ । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ सत्तपएसिए खवे भवइ ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खवे, एगयओ छप्पएसिए खवे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिपएसिए खवे, एगयओ पंचपएसिए खवे भवइ ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो चउप्पएसिया खधा भवति ; अहवा एगयओ दुपएसिए खवे, एगयओ तिपएसिए खवे, एगयओ चउप्पएसिए खवे भवइ, अहवा तिणिण तिपएसिया खधा भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ छप्पएसिए खवे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खवे, एगयओ पंचपएसिए खवे भवइ ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ तिपएसिए खवे, एगयओ चउप्पएसिए खवे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खवे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खवे, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ तिणिण दुप्पएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खवे भवइ । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ पंचपएसिए खवे भवइ, अहवा एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खवे, एगयओ चउप्पएसिए खवे भवइ ; अहवा एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खवे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोगला, एगयओ चउप्पएसिए खवे भवइ ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ दुप्पएसिए खवे, एगयओ तिपएसिए खवे भवइ ; अहवा एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ तिणिण दुप्पएसिया खधा भवति । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोगला, एगयओ तिप्पएसिए खवे भवइ ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति । अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खवे भवइ । नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोगला भवति ॥

७७. दस भते । परमाणुपोगला ^३ एगयओ साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ ?

१. स० पा०—एव एक्केक्क सचारित्तेहि जाव २ स० पा०—पोगला जाव दुहा ।
अहवा ।

गोयमा ! दसपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ ,
 °अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ° ; अहवा दो पंचपएसिया खंधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवति ; अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिणि परमाणुपोगला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवति ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिणि तिपएसिया खंधा भवति ; अहवा एगयओ तिणि दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु-पोगला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ तिणि परमाणु-पोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिणि परमाणुपोगला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवति ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिणि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ ; अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच

परमाणुपोगला, एगयओ पंचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवति । सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोगला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोगला, एगयओ तिणिण दुपएसिया खधा भवति । अट्टहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोगला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ छ परमाणुपोगला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति । नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ट परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ । दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोगला भवति ॥

७८. सखेज्जा ण भते ! परमाणुपोगला एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता कि भवइ ? गोयमा ! सखेज्जपएसिए खधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि सखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा दो सखेज्जपएसिया खधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ; एव जाव अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खंधा भवति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति; एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति; अहवा तिणिण सखेज्जपएसिया खधा भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ तिप्पएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ; एव जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दसपएसिए

खंधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खधा भवति जाव अहवा एगयओ परमाणुपोगले एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खंधा भवति जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ तिण्णि सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा चत्तारि सखेज्जपएसिया खधा भवति, एवं एएणं कमेणं पन्नगसजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसजोगो । दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोगला, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोगला, एगयओ दुपएसिए, एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे भवइ । एएणं कमेण एक्केवको पूरेयव्वो जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा दस संखेज्जपएसिया खधा भवति । सखेज्जहा कज्जमाणे सखेज्जा परमाणुपोगला भवति ॥

७६. असंखेज्जा भते ! परमाणुपोगला एगयओ साहण्णति^१, साहणित्ता किं भवइ ? गोयमा ! असखेज्जपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि, सखेज्जहा वि, असखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो असखेज्जपएसिया खधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खधा भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवति; एव जाव अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवति; अहवा तिण्णि असखेज्जपएसिया खधा भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोगला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एव चउक्कगसजोगो जाव दसगसजोगो । एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं—असखेज्जगं एग अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस

असखेज्जपएसिया खंधा भवति । सखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ सखेज्जा परमाणुपोगला, एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ सखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा सखेज्जा असखेज्जपएसिया खंधा भवति । असखेज्जहा कज्जमाणे असखेज्जा परमाणुपोगला भवति ॥

८०. अणता ण भते ! परमाणुपोगला^१ •एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता^२ कि भवइ ?

गोयमा ! अणतपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव दसहा वि 'सखेज्जहा वि असखेज्जहा वि'^३ अणतहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोगले एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा दो अणतपएसिया खंधा भवति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोगला, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोगले, एगयओ दो अणतपएसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो अणतपएसिया खंधा भवति, एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो अणतपएसिया खंधा भवति; अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणतपएसिया खंधा भवति, अहवा एगयओ असखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणतपएसिया खंधा भवति, अहवा तिणिण अणतपएसिया खंधा भवति । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिणिण परमाणुपोगला, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ, एव चउक्कसजोगो जाव असखेज्जगसजोगो । एते सव्वे जहेव असखेज्जाणं भणिया तहेव अणताण वि भाणियव्व, नवर—एक अणतग अब्भहिय भाणियव्व जाव अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा असखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ; अहवा सखेज्जा अणतपएसिया खंधा भवति । असखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असखेज्जा परमाणुपोगला, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ अणतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा

१. स० पा०—परमाणुपोगला जाव कि ।

असखेज्जा (ख, म) सखेज्जाऽसखेज्जा

२ सखेज्जाअसखेज्ज (अ, क, ब, स), सखेज्जा-

(ता) ।

एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवन्ति । अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोगला भवति ॥

पोगलपरियट्ट-पदं

८१. एसि णं भते ! परमाणुपोगलाणं साहणणा-भेदानुवाएण अणताणता पोगलपरियट्टा समणुगतत्वा भवतीति मक्खाया ?
हंता गोयमा ! एसि ण परमाणुपोगलाण साहणणा 'भेदानुवाएण अणताणता पोगलपरियट्टा समणुगतत्वा भवतीति० मक्खाया ॥
८२. कइविहे ण भंते ! पोगलपरियट्टे पणत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पोगलपरियट्टे पणत्ते, त जहा—ओरालियपोगलपरियट्टे, वेउव्वियपोगलपरियट्टे, तेयापोगलपरियट्टे, कम्मापोगलपरियट्टे, मणपोगलपरियट्टे, वइपोगलपरियट्टे, आणापाणुपोगलपरियट्टे' ॥
८३. नेरइयाण भते ! कतिविहे पोगलपरियट्टे पणत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पोगलपरियट्टे पणत्ते, तं जहा—ओरालियपोगलपरियट्टे, वेउव्वियपोगलपरियट्टे जाव' आणापाणुपोगलपरियट्टे । एवं जाव' वेमाणियाणं ॥
८४. एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोगलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवइया पुरेक्खडा^१ ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थी । जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा ॥
८५. एगमेगस्स ण भंते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोगलपरियट्टा 'अतीता ?
अणता ।
केवइया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि । जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा ।^० एव जाव वेमाणियस्स ॥

१. सं० पा०—साहणणा जाव मक्खाया ।

२. आणपाणु^० (ख) ।

३. भ० १२।८२ ।

४. पू० प० २ ।

५. पुरेक्खडा (अ); पुरक्खडा (क, ता) ।

६. सं० पा०—एव चेव जाव एवं ।

८६. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोगलपरियट्ठा अतीता ?
अणंता । एव जहेव ओरालियपोगलपरियट्ठा तहेव वेउव्वियपोगलपरियट्ठावि
भाणियव्वा । एव जाव^१ वेमाणियस्स । एव जाव^२ आणापाणुपोगलपरियट्ठा ।
एते एगत्तिया सत्त दंडगा भवन्ति ॥
८७. नेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियपोगलपरियट्ठा अतीता ?
अणता ।
केवइया पुरेक्खडा ?
अणंता । एव जाव वेमाणियाणं । एवं वेउव्वियपोगलपरियट्ठावि । एव जाव
आणापाणुपोगलपरियट्ठा वेमाणियाणं । एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसत्ति-
दडगा ॥
८८. एगमेगस्स ण भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोगलपरियट्ठा
अतीता ?
नत्थि एक्को वि ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्को वि ॥
८९. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोगल-
परियट्ठा अतीता ?
एवं चेव । एव जाव थणियकुमारत्ते^३ ॥
९०. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविककाइयत्ते केवतिया ओरालियपोगल-
परियट्ठा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि । जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा,
उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा । एव जाव मणुस्सत्ते । बाण-
मत-र-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥
९१. एगमेगस्स ण भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोगल-
परियट्ठा^४ ?
एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा
जाव वेमाणियत्ते । एवं जाव थणियकुमारस्स । एव पुढविककाइयस्स वि । एवं
जाव वेमाणियस्स । सव्वेसि^५ एक्को गमो^६ ॥

१. पू० प० २ ।

२. भ० १२।८२ ।

३. °कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते (अ, स) ।

४. सव्वेसि च (ता) ।

५. गमवो (क, ता, व, म, स) ।

६२. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउव्वियपोगलपरियट्ठा
अतीता ?

अणंता ।

केवतिया पुरेक्खडा ?

एकुत्तरिया^१ जाव अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

६३. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।

नत्थि एक्कोवि ।

केवतिया पुरेक्खडा ?

नत्थि एक्कोवि^२ । एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं^३ तत्थ एकुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ
जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।

तेयापोगलपरियट्ठा, कम्मापोगलपरियट्ठा य सव्वत्थ एकुत्तरिया भाणियव्वा,
मणपोगलपरियट्ठा सव्वेसु पंचिदिएसु एगुत्तरिया, विगलिदिएसु नत्थि । वइ-
पोगलपरियट्ठा एवं चेव, नवरं—एगिदिएसु नत्थि भाणियव्वा । आणापाणु-
पोगलपरियट्ठा सव्वत्थ एकुत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥

६४. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोगलपरियट्ठा अतीता ?

‘नत्थि एक्कोवि’^४ ।

केवतिया पुरेक्खडा ?

नत्थि एक्कोवि । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

६५. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।

अणंता ।

केवतिया पुरेक्खडा ?

अणंता । एवं जाव मणुस्सत्ते । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते ।

एवं जाव वेमाणियाणं^५ वेमाणियत्ते । एवं सत्त वि पोगलपरियट्ठा भाणियव्वा

—जत्थ^६ अत्थि तत्थ^७ अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा, जत्थ^८
नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा जाव—

६६. वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोगलपरियट्ठा अतीता ?

अणंता ।

केवतिया पुरेक्खडा ?

१. एगुत्तरिया (अ); एक्कुत्तरिया (क, ता) ।

२. तेक्कोवि (ब, म) ।

३. °सरीरं अत्थि (अ, स) ।

४. नत्थेक्कोवि (क, ख, म) ।

५. वेमाणियस्स (क, ता, ब) ।

६. जस्स (क, ता, ब, म) ।

७. तस्स (क, ता, ब, म) ।

८. जस्स (क, ख, ता, ब, म) ।

अणंता ॥

६७. से केणट्टेणं भते ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोगलपरियट्टे—ओरालियपोगल-परियट्टे ?

गोयमा ! जण्ण जीवेण ओरालियसरीरे वट्टमाणेण ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्टाइ कडाइ पट्टवियाइं निविट्टाइं अभिनिविट्टाइं अभिसमण्णागयाइं परियादियाइं परिणामियाइं निज्जिण्णाइं निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवन्ति । से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोगलपरियट्टे—ओरालियपोगलपरियट्टे ।

एवं वेउव्वियपोगलपरियट्टेवि, नवरं—वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गहियाइ, सेसं तं चेव सव्वं, एव जाव आणापाणुपोगलपरियट्टे, नवर—आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए गहियाइ, सेस त चेव ॥

६८. ओरालियपोगलपरियट्टे ण भते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?

गोयमा ! अणत्ताहि 'ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं' एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ । एव वेउव्वियपोगलपरियट्टे वि । एव जाव आणापाणुपोगलपरियट्टेवि ॥

६९. एयस्स ण भंते ! ओरालियपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो ? *अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकाले, तेयापोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, आणापाणुपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वइपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्वियपोगलपरियट्टेनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥

१००. एसि णं भते ! ओरालियपोगलपरियट्टाण जाव आणापाणुपोगलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो ? *अप्पा वा ? वहुया या ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोगलपरियट्टा, वइपोगलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोगलपरियट्टा अणंतगुणा, आणापाणुपोगलपरियट्टा अणंतगुणा, ओरालिय-

१. ओसप्पिणि-उस्स ° (अ, ख, व, म); २. स ° पा °—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
उस्सप्पिणीहिं ओस ° (क); उस्सप्पिणि- ३. स ° पा °—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
ओस ° (स) ।

पोगलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोगलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मगपोगल-
परियट्टा अणंतगुणा ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जावं विहरइ ॥

पंचमो उद्देशो

वण्णादिं अवण्णादिं च पडुच्च दव्ववीमंसा-पदं

१०२. रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिगहे—एस णं कतिवण्णे, कतिगंवे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते ॥

१०३. अह भंते ! कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, संजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवादे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचवण्णे, 'दुगंधे, पंचरसे', चउफासे पण्णत्ते ॥

१०४. अह भंते ! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे^२, परपरिवाए, उक्कोसे^३, अवक्कोसे^४, उण्णते, उण्णामे, दुण्णामे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचवण्णे, "दुगंधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते" ॥

१०५. अह भंते ! माया, उवही, नियडी, वलए^५, गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए^६, जिम्हे^७, किव्विसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया, पलिउंचणया, सात्तिजोगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचवण्णे "दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते" ॥

१०६. अह भंते ! लोमे, इच्छा, मुच्छा, कखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मर-

१. म० १।५१ ।

२. म० १।४-१० ।

३. पंचरसे दुगंधे (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

४. अत्तुक्कोसे (क, ख); अत्तुक्करिसे (ता) ।

५. उक्कोसे (ख, वृषा) ।

६. अवक्कोसे (ख, वृषा) ।

७. स० पा०—जहा कोहे तहेव ।

८. वलये (अ, क, ख, व, म, स) ।

९. कुरुए (म) ।

१०. फिमे (अ, व, स); जिम्मे (क); फिम्मे

(ख); पिम्हे (ता) ।

११. स० पा०—जहेव कोहे ।

- णासा^१, नदीरागे^२—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
- ^१●गोयमा ! पंचवण्णे दुग्घे पचरसे चउफासे पण्णत्ते ° ॥
१०७. अह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे^३, ●अव्वक्खाणे, पेसुत्ते, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे, ° मिच्छादसणसल्ले—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
- ^१●गोयमा ! पचवण्णे दुग्घे पचरसे चउफासे पण्णत्ते ° ॥
१०८. अह भंते ! पाणाइवायवेरमणे, जाव^४ परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव^५ मिच्छा-दसणसल्लविवेगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
- गोयमा ! अवण्णे, अगघे, अरसे, अफासे पण्णत्ते ॥
१०९. अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मया^६, पारिणामिया—एस णं कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
- ^१●गोयमा ! अवण्णा, अगघा, अरसा, अफासा पण्णत्ता ° ॥
११०. अह भंते ! अगोह्णे, ईहा, अवाए^७, धारणा—एस ण कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
- ^१●गोयमा ! अवण्णा, अगघा, अरसा °, अफासा पण्णत्ता ॥
१११. अह भंते ! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कार-परक्कमे—एस ण कति-वण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
- ^१●गोयमा ! अवण्णे, अगघे, अरसे °, अफासे पण्णत्ते ॥
११२. सत्तमे णं भंते ! ओवासतरे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
- ^१●गोयमा ! अवण्णे, अगघे, अरसे °, अफासे पण्णत्ते ॥
११३. सत्तमे ण भंते ! तणुवाए कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
- ^१●गोयमा ! पचवण्णे, दुग्घे, पचरसे ° अट्ठफासे पण्णत्ते ।
- एव जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदधी, पुढवी । छट्ठे ओवा-सतरे अवण्णे । तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी—एयाइं अट्ठफासाइं । एव जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्व । जबुद्धीवे दीवे जाव सयभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपव्वभारा पुढवी,

१. इव व क्वचित् ल्यते (वृ) ।

२. नदीरागे (क, व, म) ।

३. सं० पा०—जहेव कोहे ।

४. सं० पा०—कलहे जाव मिच्छा ° ।

५. सं० पा०—जहेव कोहे तहेव चउफासे ।

६. भ० १।३८५ ।

७. ठा० १।११५-१२५ ।

८. कम्मिया (अ, क, ख, ता, म) ।

९. सं० पा०—त चेव जाव अफासा ।

१०. अपोहे (क), अपाए (व, म) ।

११. सं० पा०—एव चेव जाव अफासा ।

१२. सं० पा०—त चेव जाव अफासे ।

१३. सं० पा०—एव चेव जाव अफासे ।

१४. सं० पा०—जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठफासे ।

नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा—एयाणि सव्वाणि अट्टफासाणि ॥

११४. नेरइयाणं भंते ! कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?

गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइं पडुच्चं पंचवण्णा, 'दुग्घा, पंचरसा', अट्टफासा पण्णत्ता । कम्मगं पडुच्चं पंचवण्णा, दुग्घा, पंचरसा, चउफासा पण्णत्ता । जीव पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता । एवं जाव थणियकुमारा ॥

११५. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइं पडुच्चं पंचवण्णा जाव अट्टफासा पण्णत्ता । कम्मगं पडुच्चं जहा नेरइयाण । जीवं पडुच्चं तहेव । एवं जाव चउरदिया, नवरं—वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइं पडुच्चं पंचवण्णा जाव अट्टफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं । पच्चिदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया ॥

११६. मणुस्साणं—पुच्छा ।

ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्चं पंचवण्णा जाव अट्टफासा पण्णत्ता । कम्मगं जीवं च पडुच्चं जहा नेरइयाण वाणमतर-जोइसिय-वेसाणिया जहा नेरइया ।

धम्मत्थिकाए जाव^१ पोगलत्थिकाए—एए सव्वे अवण्णा, नवरं—पोगलत्थिकाए पंचवण्णे, दुग्घे, पंचरसे, अट्टफासे पण्णत्ते ।

नाणावरणिज्जे जाव^२ अंतराइए—एयाणि चउफासाणि ॥

११७. कण्हलेसा णं भंते ! कतिवण्णा ^१जाव कतिफासा पण्णत्ता ? °

दव्वलेसं पडुच्चं पंचवण्णा जाव अट्टफासा पण्णत्ता । भावलेसं पडुच्चं अवण्णा, अगघा, अरसा, अफासा पण्णत्ता । एवं जाव^१ सुक्कलेस्सा ।

सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे, अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव^२ विवभंगनाणे, आहारसण्णा जाव परिगहसण्णा—एयाणि अवण्णाणि, अगघाणि, अरसाणि, अफासाणि ।

ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे—एयाणि अट्टफासाणि । कम्मगसरीरे चउफासे । मणजोगे, वइजोगे य चउफासे, कायजोगे अट्टफासे ।

सागारोवओगे अणागारोवओगे य अवण्णे ॥

११८. सव्वदव्वा णं भंते ! कतिवण्णा ^१जाव कतिफासा पण्णत्ता ? °

१. पडुच्चा (ता, व, म) ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

२. पंचरसा दुग्घा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

६. भ० १।१०२ ।

७. भ० २।१३७ ।

३. भ० २।१२४ ।

८. कम्मसरीरे (व, म) ।

४. भ० ६।३३ ।

९. सं० पा०—पुच्छा ।

गोयमा ! अत्येगतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्टफासा पणत्ता । अत्ये-
गतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा पणत्ता । अत्येगतिया सव्वदव्वा
एगवण्णा, एगगधा, एगरसा, दुफासा पणत्ता । अत्येगतिया सव्वदव्वा अवण्णा
जाव अफासा पणत्ता । एवं सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि । तीयद्धा अवण्णा
जाव अफासा । एव अणागयद्धा वि, सव्वद्धा वि ॥

११६. जीवे णं भते ! गढं वक्कममाणे कतिवण्णं, कतिगधं, कतिरसं, कतिफासं
परिणामं^१ परिणमइ ?

गोयमा ! पंचवण्णं, दुगधं, पंचरसं, अट्टफास परिणामं^२ परिणमइ ॥

कम्मओ विभत्ति-पदं

१२०. कम्मओ णं भते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ? कम्मओ णं
जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?

हत्ता गोयमा ! कम्मओ णं ^१जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ,
कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव ^० परिणमइ ॥

१२१. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^३ ॥

छट्ठो उद्देशो

चंद-सूर-गहण पदं

१२२. रायगिहे जाव^४ एवं वयासी—बहुजण ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ
जाव^५ एवं परूवेइ—एवं खलु राहू चंद गेण्हति, एव खलु राहू चंद गेण्हति ॥

१२३. से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! जण्ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव जे ते एवमाहंसु
मिच्छ ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव^६ एवं परूवेमि—
एव खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव^७ महिसक्खे^८ वरवत्थघरे वरमल्लघरे वरगंधघरे
वराभरणघारी ।

१. × (ता) ।

६. अ० १।४२० ।

२. × (ता) ।

७. अ० १।४२१ ।

३. सं० पा०—तं चेव जाव परिणमइ ।

८. अ० ३।४ ।

४. अ० १।५१ ।

९. महिसक्खे (व); महसोक्खे (अ) ।

५. अ० १।४-१० ।

राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—सिघाडए^१ जडिलए खतए^२ खरए ददहुरे मगरे मच्छे कच्छभे^३ कण्हसण्ये ।

राहुस्स णं देवस्स विमाणा पचवण्णा, पण्णत्ता, त जहा—किण्हा, नीला, लोहिया, हालिदा, सुविकला । अत्थि कालए राहुविमाणे खजणवण्णामे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णामे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्टवण्णामे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्वण्णामे पण्णत्ते, अत्थि सुविकलए राहुविमाणे भासरासिवण्णामे पण्णत्ते ।

जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स पुरत्थिमेण आवरेत्ता णं पच्चत्थिमेण वीतीवयइ तदा ण पुरत्थिमेण चदे उवदसेत्ति, पच्चत्थिमेण राहू । जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्स पच्चत्थिमेण आवरेत्ता ण पुरत्थिमेण वीतीवयइ तदा णं पच्चत्थिमेण चदे उवदसेत्ति, पुरत्थिमेण राहू । एव जहा पुरत्थिमेण पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया एव दाहिणेण उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एवं उत्तरपुरत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एवं उत्तरपुरत्थिमेण उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एव चेव जाव तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेण चदे उवदसेत्ति, दाहिण-पुरत्थिमेण राहू । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्स आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु राहू चंदं गेण्हति, एव खलु राहू चंदं गेण्हति । जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स आवरेत्ता णं पासेण वीतीवयइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एवं खलु चंदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं खलु चदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स आवरेत्ता णं पच्चोसक्कइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एवं खलु राहुणा चदे वत्ते, एवं खलु राहुणा चदे वत्ते । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स अहे सपक्खि सपडि-दिसि आवरेत्ता णं चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु राहुणा चदे घत्थे, एव खलु राहुणा चदे घत्थे ॥

१२४. कतिविहे णं भंते ! राहू पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, तं जहा—धुवराहू य, पव्वराहू य । तत्थ ण जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिबए पन्नरसत्तिभागेण पन्नरसत्तिभाग

१. सघाडए (ब) ।

२. खत्तए (अ); खतए (ख); खमए (स) ।

३. अच्छभे (ब) ।

४. चदस्स लेसं (क, ब, म) ।

चदलेस्सं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बित्ति-
याए वित्तिं भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भागं । चरिमसमये चदे रत्ते
भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा' भवइ । तमेव सुक्कपक्खस्सं
उवदसेमाणे-उवदसेमाणे चिट्ठइ, पढमाए पढम भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं
भाग । चरिमसमये चदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'
भवइ । तत्थ ण जे से पव्वराहू से जहण्णेण 'छण्ह मासाण' उक्कोसेण बाया-
लीसाए मासाण चदस्स', अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स' ॥

ससि-आइच्च-पद

१२५. से केणट्ठेणं भते ! एव बुच्चइ—चंदे ससी, चदे ससी ?
गोयमा ! चदस्स णं जोइसिदस्स जोइसरण्णो मियके विमाणे कता देवा, कताओ
देवीओ, कताइं आसण-सयण-खभ-भडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य ण चदे
जोइसिदे जोइसराया (सोमे कते सुभए पियदसणे सुख्खे) से तेणट्ठेणं *गोयमा !
एवं बुच्चइ—चंदे ससी, चदे° ससी ॥
१२६. से केणट्ठेणं भते ! एवं बुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे आदिच्चे ?
गोयमा ! सूरादिया ण समया इ वा आकलिया इ वा जाव° ओसप्पिणी इ वा
उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेणं *गोयमा ! एव बुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे°
आदिच्चे ॥

चंद-सुराणं कामभोग-पदं

१२७. चदस्स णं भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो कति अग्गमहिंसीओ पणत्ताओ ?
जहा दसमसए जाव° नो चेव ण मेहुणवत्तिं । सूरस्स वि तहेव ॥
१२८. चदिम-सूरिया णं भते ! जोइसिदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणु-
वभवमाणा विहरति ?
गोयमा ! से जहानासए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाण-
बलत्थाए भारियाए सद्धि अचिरवत्तविवाहकज्जे° अत्थगवेसणयाए सोलसवास-

- | | |
|---|--|
| १. 'आवरेता एं चिट्ठइ' ति वाक्यशेषः (वृ) । | ७. लेख्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ) । |
| २. रत्ते य विरत्ते य (क) । | ८. लेख्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ) । |
| ३. तमेव (क, ख, ता, व, म) । | ९. स० पा०—तेणट्ठेण जाव ससी । |
| ४. प्रतिपदादिष्विति गम्यते (वृ) । | १०. ठा० २।३८७-३८९ । |
| ५. रत्ते य विरत्ते य (अ, ख, ता); रत्ते य
विरत्ते वा (क, व, म, स) । | ११. स० पा०—तेणट्ठेण जाव आदिच्चे । |
| ६. छम्मासाण (ता) । | १२. म० १०।६० । |
| | १३. अचिरवत्तावाहुज्जे (ता) । |

विप्पवासिए, से णं तओ लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियं गिहं हव्वमागए, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालकार-विभूसिए मणुणं थालिपागसुद्धं^१ अट्टारसवंजणाकुलं भोयण भुत्ते समाणे तसि तारिसगंसि वासघरंसि^२ *अन्धितरओ सच्चित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-वट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले मणिरयणपणासियघयारे, बहुसम-सुविभत्तदेसभाए पंचवण-सरससुरभि-मुक्कपुप्फपुजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुटुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मधमघेत-गंधूद्धयाभिरामे सुगघवरगघिए गघवट्ठिभूए ।

तसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि—सालिगणवट्ठिए उभओ विव्वोयेणे दुहओ उण्णए मज्जे णय-गभीरे गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिए ओयविय-खोमिय-दुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगंधवरकुसुम-चुण्ण^३-सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिगारागारचारुवेसाए^४ *सगय-गय-हसिय-अणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाए सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण-रूव-जोव्वण-विलास^५ कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाण-कूलाए सद्धि इट्ठे सहे फरिसे^६ *रसे रूवे गंधे^७ पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे विउसमणकालसमयसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?

ओरालं समणाउसो !

तस्स णं गोयमा ! पुरिस्स कामभोगेहितो वाणमताराणं देवाणं एत्तो अणत-गुणविसिट्ठतरा चैव कामभोगा । वाणमताराणं देवाणं कामभोगेहितो असुरिदव-ज्जियाण भवणवासीण देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चैव कामभोगा । असुरि-दवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहितो असुरकुमाराण देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चैव कामभोगा । असुरकुमाराणं देवाण कामभोगेहितो गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चैव कामभोगा । गहगण-नक्खत्त^८-तारारूवाणं जोतिसियाणं कामभोगेहितो चंदिम-सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चैव कामभोगा । चंदिम-सूरिया णं गोयमा ! जोतिसिदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति ॥

१. थालिपागसिद्धं (ब) ।

२. सं० पा०—वण्णओ महब्बले कुमारे जाव सयणो^० ।

३. सं० पा०—सिगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए ।

४. सं० पा०—फरिसे जाव पंचविहे ।

५. पा० सं०—नक्खत्त जाव काम^० ।

१२६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ,
वदित्ता नमंसित्ता' •संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

सत्तमो उद्देशो

जीवाणं सव्वत्थ जम्म-मच्चु-पदं

१३०. तेणं कालेणं तेण समएण जाव' एव वयासी—केमहालए णं भते ! लोए पणत्ते ?

गोयमा ! महत्तिमहालए लोए पणत्ते—पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडा-
कोडीओ, दाहिणेण असंखेज्जाओ '•जोयणकोडाकोडीओ°, एवं पच्चत्थिमेण
वि, एव उत्तरेण वि, एव उड्ढ पि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ
आयाम-विक्खमेण ॥

१३१. एयंसि' ण भते ! एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोगलमेत्ते वि पएसे,
जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३२. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—एयसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ पर-
माणुपोगलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे अया-सयस्स एगं महं अया-वयं करेज्जा.
से णं तत्थ जहण्णेण एक वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अया-सहस्सं
पक्खिजेज्जा, ताओ ण तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहण्णेण एगाहं वा
दुयाह वा तियाहं वा, उक्कोसेण छम्मासे परिवसेज्जा । अत्थि णं गोयमा !
तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोगलमेत्ते वि पएसे, जे ण तांसि अयाणं उच्चा-
रेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिघाणेण वा वतेण वा पित्तेण वा पूएण वा
सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहि वा रोमेहि वा सिगेहि वा खुरेहि वा नहेहि
वा अणोक्कतपुव्वे' भवइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोगलमेत्ते वि पएसे,

१. सं० पा०—नमसित्ता जाव विहरइ ।

४. एयस्सि (सा) ।

२. अ० १।४-१० ।

५. अणक्कतपुव्वे (क, स) ।

३. सं० पा०—एवं चेव ।

जे णं तासि अयाणं उच्चारणे वा जाव नहेहि वा अणोवकंतपुव्वे, नो चेव णं
 एयंसि एमहालगंसि लोगसि लोगस्स य सासय भाव, संसारस्स य अणादिभाव,
 जीवस्स य णिच्चभाव, कम्मवहुत्त, जम्मण-मरणवाहुल्ल च पडुच्च अत्थि' केइ
 परमाणुपोगलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि । से
 तेणट्ठेण^१ गोयमा ! एव वुच्चइ—एयंसि ण एमहालगंसि लोगसि नत्थि केइ
 परमाणुपोगलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अयं जीवे न जाए वा^२, न मए वा
 वि ॥

असइं अदुवा अणंतखुत्तो उववज्जण-पदं

१३३. कति णं भंते ! पुढवीओ पणत्ताओ ?
 गोयमा ! सत्त पुढवीओ पणत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव
 आवासा ठावेयव्वा जाव^३ अणुत्तरविमाणेत्ति जाव^४ अपराजिए सब्बट्ठसिद्धे ॥
१३४. अयण^५ भते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु
 एगमेगंसि निरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए,
 नेरइयत्ताए उववज्जणपुव्वे ?
 हुंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ॥
१३५. सब्बजीवा वि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससय-
 सहस्सेसु^६ एगमेगंसि निरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए,
 नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववज्जणपुव्वे ?
 हुंता गोयमा ! असइं, अदुवा^७ अणंतखुत्तो ॥
१३६. अयणं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणुवीसाए निरयावाससयसहस्सेसु
 एगमेगंसि निरयावाससि^८ ? एव जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणि-
 यव्वा । एवं जाव धूमप्पभाए ॥
१३७. अयणं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि
 निरयावाससि^९ ? सेस त चेव^{१०} ॥
१३८. अयणं भंते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु
 महानिरएसु एगमेगंसि निरयावाससि^{११} ? सेस जहा रयणप्पभाए ॥

१. 'नत्थि' इति पद लभ्यते, किन्तु प्रस्तुतवाक्या-
 रम्भे 'नो चेव णं' इति पाठोस्ति, तेनैतत्
 न सङ्गच्छते । वृत्तौ सम्यक्पाठोस्ति । स
 एवास्माभिः स्वीकृतः ।

२. सं० पा०—त चेव जाव न ।

३. भ० १।२११-२५५ ।

४. भ० ५।२२२ ।

५. अयं खं (अ, क, ता, म); अयं ण (ख, व) ।

६. सं० पा०—तं चेव जाव अणंतखुत्तो ।

७. भ० १२।१३४ ।

- १३६ अयण्णं भंते । जीवे चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुर-कुमारावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण-सयण-भडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा^१ ! *असइ, अदुवा^२ अणंतखुत्तो । सव्वजीवा वि णं भंते ! एवं चेव । एवं जाव यणियकुमारेसु । नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया ॥
- १४० अयण्णं भंते । जीवे असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा^१ ! *असइ, अदुवा^२ अणंतखुत्तो । एवं सव्वजीवा वि । एवं जाव वणस्सइकाइएसु ॥
- १४१ अयण्णं भंते ! जीवे असखेज्जेसु वेइदियावाससयसहस्सेसु^३ एगमेगंसि वेइदिया-वाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, वेइदियत्ताए उववन्न-पुव्वे ?
हता गोयमा^१ ! *असइ, अदुवा^२ अणंतखुत्तो । सव्वजीवा वि णं एवं चेव । एव जाव मणुस्सेसु, नवरं—तेइदिएसु^४ जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइदियत्ताए, चउरिदिएसु चउरिदियत्ताए, पचिदियतिरिक्खजोणिएसु पचिदियतिरिक्खजोणि-यत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा वेइदियाणं, वाणमंतर-जोइसिय-सोह-म्मीसाणेसु^५ य जहा असुरकुमाराण ॥
- १४२ अयण्णं भंते । जीवे सणकुमारे कप्पे वारससु^६ विमाणावाससयसहस्सेसु एगमे-गंसि वेमाणिवावाससि पुढविकाइयत्ताए *जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए-आसण-सयण-भडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा ! असइ, अदुवा अणंतखुत्तो । * एवं सव्वजीवा वि । एवं जाव आणयपाणएसु, एव आरणच्चुएसु वि ॥
- १४३ अयण्णं भंते । जीवे तिसु वि अट्टारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु एव चेव ॥
- १४४ अयण्णं भंते । जीवे पचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणसि पुढविकाइयत्ताए ?
तह्वं जाव असइ, अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव ण देवत्ताए वा देवीत्ताए वा । एवं सव्वजीवा वि ॥

१. स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।

२. स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।

३. वेइदिया (अ, क, ख, व, य, स) ।

४. स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।

५. तेइदिएसु (अ, स) ।

६. सोहम्मीसाणे (अ, क, ख, ता, ब, म) ।

७. वारसेसु (ख), वारस (ता) ।

८. स० पा०—सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो नो चेव ण देवित्ताए ।

१४५. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पित्तिताए^१, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ॥
१४६. सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए,^२ *पित्तिताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१४७. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, चातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा^३ ! *असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१४८. सव्वजीवा वि णं भंते ! *इमस्स जीवस्स अरित्ताए, वेरियत्ताए, चातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१४९. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए,^४ *तलवरत्ताए, माडं-
बियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए,^५ सत्थवाहत्ताए
उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा^६ ! *असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१५०. *सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स रायत्ताए, जुवरायत्ताए, तलवरत्ताए
माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए, सत्थवाहत्ताए
उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो° ॥
१५१. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए^७, भाइल्लत्ताए^८
भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा^९ ! *असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१५२. *सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए,

१. X (ख, म); पित्तिताए (व, स) ।

६. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।

२. सं० पा०—माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वे
हंता गो जाव अणंतखुत्तो ।

७. सं० पा०—सव्वजीवाण एव चेव ।

३. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।

८. भियगत्ताए (ख) ।

४. सं० पा०—एवं चेव ।

९. भाइल्लत्ताए (ता); भाइल्लगत्ताए (क्व०) ।

५. सं० पा०—जुवरायत्ताए जाव सत्थवाह-
त्ताए ।

१०. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो ।

११. सं० पा०—एवं सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो ।

- भाइल्लत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
 हुता गोयमा ! असइं, अट्टुवा° अणंतखुत्तो ॥
 १५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव° विहरइ ॥

अट्टमो उद्देशो

देवाणं बिसरीरेसु उववाय-पदं

१५४. तेणं कालेण तेणं समएणं जाव° एवं वयासी—देवे णं भंते ! महिड्डीए जाव°
 महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?
 हुंता उववज्जेज्जा ॥
 १५५. से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चवे सच्चोवाए
 सन्नियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?
 हुंता भवेज्जा ॥
 १५६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्ठित्ता सिज्जेज्जा जाव° सव्वदुक्खाणं अंतं
 करेज्जा ?
 हुंता सिज्जेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥
 १५७. देवे णं भंते ! महिड्डीए °जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु
 मणीसु उववज्जेज्जा ?
 हुंता उववज्जेज्जा । एवं चेव जहा नागाणं ॥
 १५८. देवे णं भंते ! महिड्डीए °जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु
 सक्खेसु उववज्जेज्जा ?
 हुता उववज्जेज्जा । एवं चेव, नवर—इमं नाणत्तं जाव सन्नियपाडिहेरे
 लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ?
 हुता भवेज्जा । सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥

पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाय-पदं

१५९. अह भंते ! गोमंगूलवसभे°, कुक्कुडवसभे, मंडुकवसभे—एए णं निस्सीला

१. म० १।५१ ।

२. म० १।४-१० ।

३. म० १।३३६ ।

४. म० १।४४ ।

५. सं० पा०—एवं चेव जाव बिसरीरेसु ।

६. सं० पा०—महिड्डीए जाव बिसरीरेसु ।

७. गोलंगूल° (क, व); गोरंगल° (ख, त) ।

निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं^१ सागरोवमट्ठित्तीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१६०. अह भंते ! सीहे वग्घे, ^१●वगे, दीविए अच्छे, तरच्छे^०, परस्सरे—एए ण निस्सीला ^१●निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठित्तीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति^० वत्तव्वं सिया ॥

१६१. अह भंते ! ढके कंके विलए^१ मद्दुए सिखी—एए ण निस्सीला ^१●निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे काल किच्चा इमीसे रयण-प्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठित्तीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?

समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति^० वत्तव्वं सिया ॥

१६२. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति जाव^१ विहरइ ॥

नवमो उद्देशो

पंचविह-देव-पदं

१६३. कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा^१, भावदेवा ॥

१६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ? गोयमा ! जे भविए^१ पचिदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए^१ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ॥

१. उक्कोसेण (क) ।

२. सं० पा०—जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे ।

३. सं० पा०—एव चेव जाव वत्तव्व ।

४. पिलए (अ, ख, ता, स) ।

५. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव वत्तव्व ।

६. भ० १।५१ ।

७. देवाधिदेवा (अ, क, ब, म, स); 'देवाहिदेव' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।

८. इह जातौ एकवचनमतौ बहुवचनार्थे व्याख्ये-यम् (वृ) ।

९. ते यस्माद्भावविदेवभावा इति गम्यम् (वृ) ।

- १६५ से केणट्टेण भंते ! एवं वुच्चइ—नरदेवा-नरदेवा ?
 गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरतचक्कवट्ठी^१ उप्पण्णसमत्तचक्ककरयणप्पहाणा
 'नवनिहिपइणो समिद्धकोसा वत्तीसरायवरसहस्साणुयातमग्गा'^२ सागरवरमेह-
 लाहिवइणो मणुस्सिदा । से तेणट्टेण^३ *गोयमा ! एवं वुच्चइ^४—नरदेवा-
 नरदेवा ॥
- १६६ से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—धम्मदेवा-धम्मदेवा ?
 गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवतो^५ रियासमिया^६ जाव^७ गुत्तवंभयारी । से
 तेणट्टेण^८ *गोयमा ! एव वुच्चइ^९—धम्मदेवा-धम्मदेवा ॥
- १६७ से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—देवातिदेवा-देवातिदेवा ?
 गोयमा ! जे इमे अरहता भगवतो^{१०} उप्पण्णनाण-दसणघरा^{११} *अरहा जिणा
 केवली तीयपच्चुप्पन्नसणागयवियाणया सव्वण्णू^{१२} सव्वदरिसी । से तेणट्टेण^{१३}
 *गोयमा ! एव वुच्चइ^{१४}—देवातिदेवा-देवातिदेवा ॥
- १६८ से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—भावदेवा-भावदेवा ?
 गोयमा ! जे इमे भवणवइ-वाणमत-जोइस-वेमाणिया देवा^{१५} देवगतिनाम-
 गोयाइ कम्माइ वेदेति । से तेणट्टेण^{१६} *गोयमा ! एव वुच्चइ^{१७}—भावदेवा-
 भावदेवा ॥

पच्चिह-देवाणं उववाय-पदं

- १६९ भवियदव्वदेवा ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उवव-
 ज्जति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जति ?
 गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो वि उववज्जति ।
 भेदो जहा वक्कतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव^{१८} अणुत्तरोववाइय त्ति, नवरं—
 असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्ज जाव अपराजियदेवे-
 हिंतो वि उववज्जति^{१९} ॥

- | | |
|---|--|
| १. ते यस्माद् इति वाक्यशेष (वृ) । | १०. स० पा०—उप्पन्ननाणदसणघरा जाव |
| २. चिन्हाङ्कित पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यात । | सव्व० । |
| ३. स० पा०—तेणट्टेण जाव नरदेवा । | ११. स० पा०—तेणट्टेण जाव देवाति० । |
| ४. ते यस्माद् इति वाक्यशेष (वृ) । | १२. ते यस्माद् (वृ) । |
| ५. इरिया० (क) । | १३. स० पा०—तेणट्टेण जाव भाव० |
| ६. भ० २।५५ । | १४. प० ६ । |
| ७. स० पा०—तेणट्टेण जाव धम्म० । | १५. उववज्जति नो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जति |
| ८. देवाधिदेवा (अ, क, व, म, स) । | (क, ख, ता, च, भ) । |
| ९. भगवता (ख, ब, म); ते यस्माद् (वृ) । | |

१७०. नरदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जंति—किं नेरइएहितो—पुच्छा ।
 गोयमा ! नेरइएहितो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहितो, नो मणुस्सेहितो,
 देवेहितो वि उववज्जंति ॥
१७१. जइ नेरइएहितो उववज्जति—किं रयणप्पभापुढविनेरइएहितो उववज्जति जाव
 अहेसत्तमापुढविनेरइएहितो उववज्जति ?
 गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहितो उववज्जति, नो सक्करप्पभापुढविनेर-
 इएहितो जाव नो अहेसत्तमापुढविनेरइएहितो उववज्जति ॥
१७२. जइ देवेहितो उववज्जति किं भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमतर-
 जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?
 गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति, वाणमतरदेवेहितो, एवं सव्वदेवसु
 उववाएयव्वा, वक्कतीए भेदेण जाव' सव्वट्टुसिद्धत्ति ॥ —
१७३. धम्मदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जति—किं नेरइएहितो उववज्जति—
 पुच्छा ।
 एवं वक्कतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्टुसिद्धत्ति, नवरं—तम-
 अहेसत्तम-तेउ-वाउ-असखेज्जवासाउयअकम्मभूमग-अतरदीवगवज्जेसु ॥
१७४. देवातिदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जति—किं नेरइएहितो उववज्जति—
 पुच्छा ।
 गोयमा ! नेरइएहितो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहितो, नो मणुस्सेहितो,
 देवेहितो वि उववज्जति ॥
१७५. जइ नेरइएहितो ? एव तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ ॥
१७६. जइ देवेहितो ? वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जति जाव सव्वट्टुसिद्धत्ति, सेसा
 खोडेयव्वा ॥
१७७. भावदेवा णं भंते ! कओहितो उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए भवणवासीणं
 उववाओ तहा भाणियव्वो ॥

पंचविह-देवाणं ठिइ-पद

१७८. भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिणिण पलिओवसाइं ॥
१७९. नरदेवाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं सत्त वाससयाइ, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइ ॥
१८०. धम्मदेवाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

१८१. देवातिदेवाणं^१—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेणं बावत्तरि वासाइं, उक्कोसेण चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं ॥

१८२ भावदेवाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

पंचविह-देवाण विउव्वणा-पदं

१८३. भवियदव्वदेवा णं भते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए । एगत्तं विउव्वमाणे एगिदियरूव वा जाव पच्चिदियरूव वा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिदियरूवाणि वा जाव पच्चिदियरूवाणि वा, ताइ सखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा, सबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वन्ति, विउव्वित्ता तओ पच्छा^२ जहिच्छियाइ कज्जाइ करेति । एव नरदेवा वि, एव धम्मदेवा वि ॥

१८४. देवातिदेवाणं^१—पुच्छा ।

गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं सपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वत्ति^४ वा, विउव्विस्सति वा ।

भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ॥

पंचविह-देवाण उव्वट्ठण-पदं

१८५ भवियदव्वदेवा ण भते ! अणत्तर उव्वट्ठित्ता कहि गच्छति ? कहि उव्वज्जति —किं नेरइएसु उव्वज्जति जाव देवेसु उव्वज्जति ?

गोयमा ! नो नेरइएसु उव्वज्जति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उव्वज्जति ।

‘जइ देवेसु उव्वज्जति ° ?’^५ सव्वदेवेसु उव्वज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥

१८६ नेरदेवा ण भते ! अणत्तर उव्वट्ठित्ता—पुच्छा ।

गोयमा ! नेरइएसु उव्वज्जति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, नो देवेसु उव्वज्जति ।

जइ नेरइएसु उव्वज्जति ° ? सत्तसु वि पुढवीसु उव्वज्जति ॥

१८७. धम्मदेवा ण भते ! अणत्तर उव्वट्ठित्ता—पुच्छा ।

गोयमा ! नो नेरइएसु उव्वज्जति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उव्वज्जति ॥

१. देवाधि ° (अ, क, व, म, स) ।

४. विउव्वित्ति (व, म, स) ।

२. पच्छा अप्पणो (अ, म, स) ।

५. × (व, म) ।

३. देवाधि ° (अ, क, ख, व, म, स) ।

१८८. जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, नो वाणमंतरदेवेसु उववज्जंति, नो जोइसियदेवेसु उववज्जंति, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति । सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय^१ वेमाणियदेवेसु^० उववज्जति, अत्थेगतिया सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥
१८९. देवातिदेवा अणंतरं उव्वट्ठित्ता कहि गच्छति ? कहि उववज्जति ?
 गोयमा ! सिज्झति जाव^० सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥
१९०. भावदेवा णं भंते ! अणतर उव्वट्ठित्ता—पुच्छा ।
 जहा^१ वक्कंतीए असुरकुमाराण उव्वट्ठणा तथा भाणियव्वा ॥

पंचविह-देवाणं संचिट्ठणा-पद

१९१. भवियदव्वदेवे णं भंते ! भवियदव्वदेवे त्ति कालओ केवच्चिर^४ होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एव जच्चेव^५ ठिई सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स, नवरं—धम्मदेवस्स जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

पंचविह-देवाणं अंतर-पद

१९२. भवियदव्वदेवस्स णं भंते ! केवत्तिय काल अतरं होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अतोमुहुत्तमब्बहियाइ, उक्कोसेणं अणत कालं—वणस्सइकालो ॥
१९३. नरदेवाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेण सातिरेग सागरोवमं, उक्कोसेणं अणतं काल—अवड्ढ पोगलपरियट्ठं देसूण ॥
१९४. धम्मदेवस्स णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमपुहुत्त, उक्कोसेणं अणतं काल जाव अवड्ढ पोगलपरियट्ठं देसूणं ॥
१९५. देवातिदेवाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥
१९६. भावदेवस्स णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणतं कालं—वणस्सइकालो ॥

१. सं० पा०—^०अणुत्तरोववाइय जाव उव^० ४ केवच्चिर (अ, क, ख, म) ।

२. भ० १।४४ ।

५. जहेव (व, स) ।

३. प० ६ ।

पञ्चविह-देवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

१९७. एएसि ण भते ! भवियदव्वदेवाण, नरदेवाण^१, *घम्मदेवाणं, देवातिदेवाणं^२, भावदेवाण य कयरे कयरेहितो^३ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^४ विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवातिदेवा सखेज्जगुणा, घम्मदेवा सखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असखेज्जगुणा, भावदेवा असखेज्जगुणा ॥

१९८. एएसि णं भते ! भावदेवाण भवणवासीण, वाणमंतराण, जोइसियाणं, वेमाणियाण^१—सोहम्मगणं जाव अच्चुयगाण, गेवेज्जगणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहितो^२ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^३ विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा सखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा सखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा सखेज्जगुणा,^४ *सहस्सारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देवा असखेज्जगुणा, लतए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, वंभलोए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, माहिदे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सोहम्मे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असखेज्जगुणा, वाणमतारा देवा असखेज्जगुणा^५, जोतिसिया भावदेवा असखेज्जगुणा ॥

१९९. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति^१ ॥

दसमो उद्देशो

अट्ठविह-आय-पदं

२०० कतिविहा ण भते ! आया^१ पणत्ता ?

गोयमा ! अट्ठविहा आया पणत्ता, तं जहा—दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवओगाया, माणाया, दसणाया, चरित्ताया, वीरियाया ॥

२०१. जस्स ण भते ! दवियाया तस्स कसायाया ? जस्स कसायाया तस्स दवियाया ?

१. सं० पा०—नरदेवाण जाव भावदेवाणं ।

२. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३. × (क, म); देवाणं (व) ।

४. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

५. सं० पा०—एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया ।

६. भ० १।५१ ।

७. आता (अ, ख, ता, व, म, स) ।

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ॥

२०२. जस्स ण भते ! दवियाया तस्स जोगाया ? *जस्स जोगाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स जोगाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ° ॥

२०३. जस्स ण भते ! दवियाया तस्स उवओगाया ? जस्स उवओगाया तस्स दवियाया ?—एव सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा ।

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियम अत्थि । जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स दसणाया नियम अत्थि । जस्स वि दसणाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियम अत्थि । *जस्स दवियाया तस्स वीरियाया भयणाए, जस्स पुण वीरियाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ° ॥

२०४. जस्स ण भते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुच्छा ।

गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियम अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि । एव उवओगायाए वि सम कसायाया नेयव्वा । कसायाया य नाणाया य परोप्पर दो वि भइयव्वाओ । जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दसणाया य, कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ । जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ^१ । एव जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहि समं भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहि समं भाणियव्वा^२ । जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियम अत्थि, जस्स पुण दसणाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियम अत्थि । नाणाया वीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए । जस्स दसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स पुण चरित्ताया तस्स वीरियाया नियम अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ॥

१. स० पा०—एवं जहा दवियाया कसायाया ३. भणितव्वाओ (ख, ता) ।

भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा । ४. नेयव्वा (ब) ।

२. सं० पा०—एव वीरियायाए वि सम ।

अद्विविह-आयाणं अप्पाबहुत्त-पदं

२०५. एयासि ण भते । दवियायाण, कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहितो^१
 *अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
 गोयमा । सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणतगुणाओ, कसायायाओ
 अणतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उव-
 ओगदविय-दसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥

नाणदंसणाणं अत्तणा भेदाभेद-पदं

२०६. आया भते ! नाणे ? 'अण्णे नाणे'^२ ?
 गोयमा आया सिय नाणे सिय अण्णाणे, नाणे पुण नियम आया ॥
 २०७. आया भते ! नेरइयाण नाणे ? अण्णे नेरइयाण नाणे ?
 गोयमा । आया नेरइयाण सिय नाणे, सिय अण्णाणे । नाणे पुण से नियम
 आया । एव जाव अणियकुमाराण ॥
 २०८. आया भते ! पुढविकाइयाण अण्णाणे ? अण्णे पुढविकाइयाण अण्णाणे ?
 गोयमा । आया पुढविकाइयाण नियम अण्णाणे, अण्णाणे वि नियम आया ।
 एव जाव वणस्सइकाइयाण । वेइदिय-तेइदियाण जाव वेमाणियाणं जहा
 नेरइयाण ॥
 २०९. आया भते ! दसणे ? अण्णे दसणे ?
 गोयमा ! आया नियम दसणे, दसणे वि नियम आया ॥
 २१०. आया भते ! नेरइयाण दसणे ? अण्णे नेरइयाण दसणे ?
 गोयमा ! आया नेरइयाण नियम दसणे, दसणे वि से नियम आया । एव जाव
 वेमाणियाण निरतर दंडओ ॥

सियवाद-पदं

२११. आया भते ! रयणप्पभा पुढवी ? अण्णा रयणप्पभा पुढवी ?
 गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—
 आयाति य नोआयाति य ॥
 २१२. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया,
 सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ?
 गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे नोआया, तदुभयस्स आदिट्ठे^३
 अवत्तव्व—रयणप्पभा पुढवी आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं *गोयमा !

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३. आदिट्ठा (ता, व, म) ।

२. अण्णाणे (म, स) ।

४. सं० पा०—तं चैव जाव नोआयाति ।

एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—
आयाति य० नोआयाति य ॥

२१३. आया भते ! सक्करप्पभा पुढवी ?

जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि । एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१४. आया भते । सोहम्मे कप्पे—पुच्छा ।

गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नोआया', •सिय अवत्तव्व—आयाति
य० नोआयाति य ॥

२१५. से केणट्ठेणं भते ! जाव आयाति य नोआयाति य ?

गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नोआया, तदुभयस्स आइट्ठे
अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण त चेव जाव आयाति य
नोआयाति य । एवं जाव अच्चुए कप्पे ॥

२१६. आया भंते ! गेवेज्जविमाणे ? अण्णे गेवेज्जविमाणे ?

एवं जहा रयणप्पभा तहेव । एवं अणुत्तरविमाणा वि । एवं ईसिपव्वभारा वि ॥

२१७. आया भते ! परमाणुपोग्गले ? अण्णे परमाणुपोग्गले ?

एवं जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ॥

२१८. आया भंते ! दुपएसिए खंवे ? अण्णे दुपएसिए खंवे ?

गोयमा ! दुपएसिए खंवे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्व—
आयाति य नोआयाति य ४. सिय आया य नोआया य ५. सिय आया य
अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६. सिय नोआया य अवत्तव्व—आयाति
य नोआयाति य ॥

२१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं त चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य
नोआयाति य ?

गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स
आदिट्ठे अवत्तव्वं दुपएसिए खंवे—आयाति य नोआयाति य ४. देसे आदिट्ठे
सवभावपज्जवे देसे आदिट्ठे असवभावपज्जवे दुपएसिए खंवे आया य नोआया
य ५. देसे आदिट्ठे सवभावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंवे
आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६. देसे आदिट्ठे असवभावपज्जवे
देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंवे नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य
नोआयाति य । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य
नोआयाति य ॥

२२०. आया भंते ! तिपएसिए खंवे ? अण्णे तिपएसिए खंवे ?

गोयमा ! तिपसिए खंघे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्व—
आयाति य नोआयाति य ४ सिय आया य नोआया य ५ सिय आया य
नोआयाओ य ६. सिय आयाओ य नोआया य ७ सिय आया य अवत्तव्व—
आयाति य नोआयाति य ८. सिय आया य अवत्तव्वाइ—आयाओ^१ य
नोआयाओ य ९. सिय आयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १०.
सिय नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ११. सिय नोआया य
अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १२ सिय नोआयाओ य अवत्तव्व—
आयाति य नोआयाति य १३ सिय आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति
य नोआयाति य ॥

२२१. से केणट्टेणं भते । एव वुच्चइ—तिपएसिए खंघे सिय आया—एव चेव उच्चा-
रेयव्व जाव सिय आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा । १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स
आदिट्ठे अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४ देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे
देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे तिपएसिए खंघे आया य नोआया य ५ देसे
आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असव्भावपज्जवा तिपएसिए खंघे आया य
नोआयाओ य ६. देसा आदिट्ठा सव्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे
तिपएसिए खंघे आयाओ य नोआया य ७ देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसे
आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंघे आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति
य ८. देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंघे
आया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य ९. देसा आदिट्ठा सव्भाव-
पज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंघे आयाओ य अवत्तव्व—आयाति
य नोआयाति य^२ १० देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे
तिपएसिए खंघे नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ११. देसे
आदिट्ठे असव्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंघे नोआया
य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १२ देसा आदिट्ठा असव्भावपज्जवा
देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंघे नोआयाओ य अवत्तव्व—आयाति य
नोआयाति य १३ देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे देसे
आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंघे आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति
य नोआयाति य । से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चइ—तिपएसिए खंघे सिय
आया त चेव जाव नोआयाति य ॥

१. आयाइ (ता); प्राय. एकवचनम् ।

२. य एए तिणिण भगा (अ, क, ख, ता, व,
म, स) ।

२२२. आया भते ! चउप्पएसिए खंघे ? अण्णे 'चउप्पएसिए खंघे ? ०

गोयमा ! चउप्पएसिए खंघे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७ सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्व १२-१५. सिय नोआया य अवत्तव्व १६. सिय आया य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १९. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥

२२३. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—चउप्पएसिए खंघे सिय आया य नोआया य अवत्तव्व—तं चेव अट्ठे पडिउच्चारियव्व ?

गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४-७. देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे चउभंगो ८-११. सव्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १२-१५. असव्भावेण तदुभयेण य चउभंगो १६. देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंघे आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १७. देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंघे आया य नोआया य अवत्तव्वाइ—आयाओ य नोआयाओ य १८. देसे आदिट्ठे सव्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असव्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंघे आया य नोआयाओ य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य १९. देसा आदिट्ठा सव्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असव्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंघे आयाओ य नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंघे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तव्व—निक्खेवे ते चेव भगा उच्चारियव्वा जाव आयाति य नोआयाति य ॥

२२४. आया भते ! पंचपएसिए खंघे ? अण्णे पंचपएसिए खंघे ?

गोयमा ! पंचपएसिए खंघे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४-७. सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५. नोआया य अवत्तव्वेण य १६. *सिय आया य नोआया

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः ।

३. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो

भङ्गाः ।

४. सं० पा०—तियगसंजोगे एक्को न पडइ;

तेरसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पुढवी २. देव ३. मणंतर, ४. पुढवी ५. आहारमेव ६. उववाए ।
७. भासा ८, ९. कम्मणगारे, केयाघडिया^१ १०. समुग्घाए ॥ १ ॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव^२ एवं वयासी—कति ण भते ! पुढवीओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पणत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥
२. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पणत्ता ?
गोयमा ! तीस निरयावाससयसहस्सा पणत्ता ।
ते ण भते ! कि संखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ॥
३. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-
वित्थडेसु नरएसु १. एगसमएण केवतिया नेरइया उववज्जति ? २. केवतिया
काउलेस्सा उववज्जति ? ३. केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? ४. केवतिया
सुक्कपक्खिया उववज्जति ? ५. केवतिया सण्णी उववज्जति ? ६. केवतिया
असण्णी उववज्जति ? ७. केवतिया भवसिद्धिया^३ उववज्जति ? ८. केवतिया
अभवसिद्धिया उववज्जति ? ९. केवतिया आभिणिबोहियनाणी उववज्जति ?
१०. केवतिया सुयनाणी उववज्जति ? ११. केवतिया ओहिनाणी उववज्जति ?
१२. केवतिया मइअण्णाणी उववज्जति ? १३. केवतिया सुयअण्णाणी उवव-
ज्जति ? १४. केवतिया विवभगनाणी उववज्जति ? १५. केवतिया चक्खुदसणी

१. केयाहडिया (अ, क, ख, ब, म) ।

३. भवसिद्धीया (अ, ब, म, स) ।

२. भ० १४-१० ।

उववज्जति ? १६. केवतिया अचक्खुदसणी उववज्जति ? १७. केवतिया ओहिदंसणी उववज्जति ? १८. केवतिया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जति ? १९. केवतिया भयसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २०. केवतिया मेहुणसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २१. केवतिया परिग्गहसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २२. केवतिया उट्थिवेदगा उववज्जति ? २३. केवतिया पुरिसवेदगा उववज्जति ? २४. केव-
निया नपुंसगवेदगा उववज्जति ? २५-२८. केवतिया कोहकसाई उववज्जति
जाव केवतिया लोभकसाई उववज्जति ? २९-३३. केवतिया सोडदियोवउत्ता
उववज्जति जाव केवतिया फान्मिदियोवउत्ता उववज्जति ? ३४. केवतिया
नोडदियोवउत्ता उववज्जति ? ३५. केवतिया मणजोगी उववज्जति ? ३६.
केवतिया वडजोगी उववज्जति ? ३७. केवतिया कायजोगी उववज्जति ? ३८.
केवतिया मागारोवउत्ता उववज्जति ? ३९. केवतिया अणागारोवउत्ता
उववज्जति ?

नोयमा ! उमीने रयणएवभाए पुट्ठाए सीमाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-
विट्थेमु नग्गामु जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि वा, उवकोसेण सखेज्जा
नेरइया उववज्जति । जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि वा, उवकोसेण सखेज्जा
काउलेग्गा उववज्जति । जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि वा, उवकोसेण
सखेज्जा कण्हएक्खिया उववज्जति । एवं मुक्कपक्खिया वि, 'एव सण्णी, एव
अमण्णी', एव भवमिद्धिया, अभवमिद्धिया, आभिण्णोवोहियनाणी, सुयनाणी,
ओहिताणी, मइअण्णाणी, मुयअण्णाणी, विभंगनाणी । चक्खुदसणी न उवव-
ज्जति । जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि वा, उवकोसेण सखेज्जा अचक्खु-
दसणी उववज्जति एवं ओहिदसणी वि । आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गह-
सण्णोवउत्ता वि । उरुवेयगा न उववज्जति, पुरिसवेयगा न उववज्जति ।
जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि वा, उवकोसेण सखेज्जा नपुंसगवेयगा
उववज्जति । एव कोहकसाई जाव लोभकसाई । सोडदियोवउत्ता न उववज्जति,
एव जाव फान्मिदोवउत्ता न उववज्जति । जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि
वा, उवकोसेण सखेज्जा नोडदियोवउत्ता उववज्जति । मणजोगी न उवव-
ज्जति, एव वडजोगी वि । जहण्णेण एवको वा दो वा तिण्णि वा, उवकोसेण
सखेज्जा कायजोगी उववज्जति । एव सागारोवउत्ता वि, एव अणागारोव-
उत्ता वि ॥

-
१. एव सण्णी वि असण्णी वि (अ), एव सण्णी असण्णी (क, ता); एवं सण्णी एव असण्णी वि (म) । २. नपुंसगवेदा (क, व, म); नपुंसगा (ख, ता) । ३. अणागारोवउत्ता (अ, क, ख, ता, म) ।

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उव्वट्ठण-पदं

४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवतिया नेरइया उव्वट्ठति ? केवतिया काउलेस्सा उव्वट्ठति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्ठति ?
- गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्ठति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्ठति । एवं जाव सण्णी । असण्णी न उव्वट्ठति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्ठति । एवं जाव सुयअण्णाणी । विरगणाणी न उव्वट्ठति, चक्खुदसणी न उव्वट्ठति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदसणी उव्वट्ठति । एवं जाव लोभक्साई । सोइंदियोवउत्ता न उव्वट्ठति, एव जाव फासिदियोवउत्ता न उव्वट्ठति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्ठति । मणजोगी न उव्वट्ठति, एव वइजोगी वि । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्ठति । एवं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु सत्ता-पदं

५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु केवतिया नेरइया पण्णत्ता ? केवतिया काउलेस्सा जाव केव-तिया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोववण्णगा पण्णत्ता ? केव-तिया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतराहारा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरा-हारा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया परंपरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया चरिमा पण्णत्ता ? केवतिया अचरिमा पण्णत्ता ?
- गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सण्णी पण्णत्ता । असण्णी सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता । संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता । एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता । इत्थि-वेदगा नत्थि, पुरिसवेदगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेदगा पण्णत्ता । एवं कोह-

कमाई वि, माणवसाई जहा असण्णी, एव जाव लोभकसाई । संखेज्जा सोईदियो-
वउत्ता पणत्ता, एव जाव फासिदियोवउत्ता । नोडदियोवउत्ता जहा असण्णी ।
नखेज्जा मणजोगी पणन्ता । एव जाव अणागारोवउत्ता । अणनरोववणगा सिय
अत्थि, निय नन्थि । जउ अन्थि जहा असण्णी । सखेज्जा परपरोववणगा
पणन्ता । एव जहा अणनरोववणगा तथा अणंतरोवगाढगा, अणतराहारगा,
अणतरपज्जत्ता । परपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परपरोववणगा ॥

६. उमीने ण भने । रयणप्पभाण पुटवीण तीसाण निरयावामसयसहस्सेसु असखेज्ज-
वित्थडेसु नगणमु गगममण केवनिया नेग्इया उववज्जति जाव केवतिया
अणागारोवउत्ता उववज्जति ?

गोयमा ! उमीने रयणप्पभाण पुटवीण तीसाण निरयावामसयसहस्सेसु अस-
खेज्जवित्थडेसु नगणमु गगममण जहण्णेण गक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-
मेण अनखेज्जा नेग्इया उववज्जति । एव जहेव सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा^१
तहा अनखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—असखेज्जा
भाणियव्वा, नेम न नेव जाव अनखेज्जा अचरिमा पणन्ता, नवर—सखेज्ज-
वित्थडेसु अनखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदसणी य सखेज्जा उववट्टा-
वेयव्वा, नेम न नेव ॥

७. नवरप्पभाण ण भने ! पुटवीण केवतिया निरयावाम^२ सयसहस्सा पणन्ता ० ?
गोयमा ! पणुवीन निरयावामसयसहस्सा पणन्ता ।

ते ण भने ! कि नखेज्जवित्थडा ? अमखेज्जवित्थडा ?

एव जहा रयणप्पभाण तथा सवकरप्पभाण वि, नवर—असण्णी तिसु वि गमएसु
न भणन्ति, मेस त नेव ॥

८. बालुयप्पभाण ण—पुच्छा ।

गोयमा ! पन्नरस निरयावामसयसहस्सा पणन्ता, मेस जहा सवकरप्पभाण,
नाणत्त लेनामु, लेसाओ जहा^३ पढसण ॥

९. पक्कप्पभाण ण—पुच्छा ।

गोयमा ! दस निरयावामसयसहस्सा पणन्ता, एव जहा सवकरप्पभाण, नवर
—ओहिनाणी ओहिदसणी य न उववट्टति, सेस त नेव ॥

१०. धूमप्पभाण ण—पुच्छा ।

१. गमा (ता) ।

नासी पाठ सगच्छने ।

२. पणन्ता नाणत्त लेसासु लेसाओ जहा

३. स० पा०—पुच्छा ।

पढमण (अ, क, ग, ब, म, स); रत्त-

४. भ० १।२४४ ।

प्रसार्या एक्कैव कापोतीलेदया भवति, तेन

गोयमा ! तिणि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए ॥

११. तमाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास^१सयसहस्सा पणत्ता ० ?

गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पणत्ते । सेसं जहा पंकप्पभाए ॥

१२. अहेसत्तमाए ण भंते ! पुढवीए कति अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पणत्ता ?

गोयमा ! पंच अणुत्तरा^२ • महतिमहालया महानिरया पणत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए^०, अपइद्वाणे ।

ते णं भंते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?

गोयमा ! सखेज्जवित्थडे य असखेज्जवित्थडा य ॥

१३. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पच्चसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु^३ महानिरएसु सखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जति ?

एवं जहा पंकप्पभाए, नवर—तिसु नाणेषु न उववज्जति, न उव्वट्ठति, पणत्तएसु^४ तहेव अत्थि । एवं असखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं—असखेज्जा भाणियव्वा ।

१४. इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उववज्जति ? मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति ? सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति ?

गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उववज्जति, मिच्छदिट्ठी वि नेरइया उववज्जति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति ॥

१५. इमीसे ण भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्ठति ?

एवं चेव ॥

१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मदिट्ठीहि नेरइएहि अविरहिया ? मिच्छदिट्ठीहि नेरइएहि अविरहिया ? सम्मामिच्छदिट्ठीहि नेरइएहि अविरहिया ?

गोयमा ! सम्मदिट्ठीहि नेरइएहि अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहि वि नेरइएहि अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहि नेरइएहि अविरहिया विरहिया वा । एव असखेज्जवित्थडेसु वि तिणि गमगा भाणियव्वा । एवं सक्करप्पभाए वि, एव जाव तमाए वि ॥

१७. अहेसत्तमाए ण भंते ! पुढवीए पच्चसु अणुत्तरेसु जाव^५ सखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी नेरइया—पुच्छा ।

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. सं० पा०—अणुत्तरा जाव अपइद्वाणे ।

३. महतिमहा जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

४. पणत्ताएसु (अ, ता, म, स); पणत्तेसु

(क, ब) ।

५. भ० १३।१२ ।

- गोयमा । सम्महिट्टो नेरइया न उववज्जति, मिच्छदिट्टो नेरइया उववज्जति, सम्मामिच्छदिट्टो नेरइया न उववज्जति । एव उव्वट्ठति वि, अविरोहणं जहेव रयणप्पभाण । एव असस्सेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा ॥
१८. से नूण भते । कण्हलेस्से जाव सुवकलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ?
इंता गोयमा । कण्हलेस्से जाव उववज्जति ॥
१९. ने केणट्ठेणं भते । एव वृत्तउ—कण्हलेस्से जाव उववज्जति ?
गोयमा । लेम्मट्ठाणेषु सकलिरसमाणेषु-सकलिस्समाणेषु कण्हलेसं परिणमइ, परिणमिन्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ॥
२०. ने नूण भते । कण्हलेस्से जाव सुवकलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ?
इंता गोयमा । जाव उववज्जति ॥
२१. ने केणट्ठेण जाव उववज्जति ?
गोयमा । लेम्मट्ठाणेषु नकिनिस्समाणेषु वा विमुज्जमाणेषु वा नीललेस्स परिणमइ, परिणमिन्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति । से तेणट्ठेण गोयमा । जाव उववज्जति ॥
२२. ने नूण भते । कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुवकलेस्से भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ?
एव जहा नीललेस्समाणं तहा काउलेस्साणं वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जति ॥
२३. सेव भते । मेव भते । त्ति' ॥

वीओ उद्देसो

२४. कतिविहा ण भते । देवा पण्णत्ता ?
गोयमा । चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतारा, जोइ-सिया, वेमाणिया ॥
२५. भवणवासी णं भते । देवा कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारा—एव भेओ^१ जहा वितिय-
सए देवुदेसए जाव^२ अपराजिया, सब्बट्टसिद्धगा ॥

२६. केवतिया णं भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चोयट्ठि^३ असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

ते णं भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?

गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ॥

२७. चोयट्ठीए^४ ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमा-
रावासेसु एगसमएणं केवतिया असुरकुमारा उववज्जति जाव केवतिया तेउले-
स्सा उववज्जति ? केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? एव जहा रयणप्पभाए
तहेव पुच्छा, तहेव^५ वागरण, नवर—दोहि वेदेहि उववज्जति, नपुसगवेयगा न
उववज्जति, सेसं तं चेव । उव्वट्ठतगा वि तहेव, नवरं—असणी उव्वट्ठति ।
ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्ठति, सेसं तं चेव । पण्णत्तएसु^६ तहेव, नवर-
सखेज्जगा इत्थिवेदगा पण्णत्ता, एव पुरिसवेदगा वि, नपुसगवेदगा नत्थि ।
कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एवको वा दो वा
तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा पण्णत्ता । एव माणकसाई मायकसाई । सखेज्जा
लोभकसाई पण्णत्ता, सेसं तं चेव । तिसु वि गमएसु^७ चत्तारि लेस्साओ भाणि-
यव्वाओ । एवं असखेज्जवित्थडेसु वि, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा
भाणियव्वा जाव^८ असखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ॥

२८. केवतिया णं भते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? एव जाव थणिय-
कुमारा, नवरं—जत्थ जत्तिया भवणा^९ ॥

२९. केवतिया णं भते ! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

ते णं भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?

गोयमा ! सखेज्जवित्थडा, नो असखेज्जवित्थडा ॥

३०. सखेज्जेसु णं भते ! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवतिया वाणमतरा
उववज्जति ?

एवं जहा असुरकुमाराणं सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा^{१०} तहेव भाणियव्वा
वाणमंतराणं वि तिण्णि गमगा ॥

१. × (ता, ब) ।

२. भ० २।११७; प० २ ।

३. चोसट्ठि (स) ।

४. चोसट्ठीए (स) ।

५. भ० १३।३ ।

६. पण्णत्ताएसु (अ, क, व, म, स) ।

७. गमएसु सखेज्जेसु (अ, स) ।

८. भ० १३।५ ।

९. भ० १।२१३ ।

१०. गमा (क, ख, ता, व, म) ।

३१. केवतिया ण भते । जोइसियविमाणावाससयसहस्सा^१ पण्णत्ता ।
 गोयमा । असखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
 ते ण भते । कि सखेज्जवित्थडा ° ?
 एव जहा वाणमताराण तहा जोइसियाण वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—
 एगा तेउलेस्सा । उववज्जतेसु पण्णत्तेसु य असण्णी नत्थि, सेस त चेव ॥
३२. सोहम्मे ण भते । कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
 गोयमा । बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
 ते ण भते । कि सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
 गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ॥
३३. सोहम्मे ण भते । कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु
 विमाणेसु एगसमएण केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जति ? केवतिया तेउलेस्सा
 उववज्जति ?
 एव जहा जोइसियाण तिण्णि गमगा तहेव तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—
 तिसु वि सखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी ओहिदसणी य चयावेयव्वा, सेसं तं
 चेव । असखेज्जवित्थडेसु एव चेव तिण्णि गमगा, नवर—तिसु वि गमएसु
 असखेज्जा भाणियव्वा । ओहिनाणी ओहिदसणी य सखेज्जा चयति, सेस तं
 चेव । एव जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणि-
 यव्वा । सणकुमारे एव चेव, नवर—इत्थीवेयगा उववज्जतेसु^२ पण्णत्तेसु य न
 भण्णति, असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेस त चेव । एव जाव सहस्सारे,
 नाणत्त विमाणेसु लेस्सासु य, सेस त चेव ॥
३४. आणय-पाणएसु ण भते । कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पण्णत्ता ?
 गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता ।
 तेण भते । कि सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
 गोयमा । सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि । एवं सखेज्जवित्थडेसु
 तिण्णि गमगा जहा सहस्सारे, असखेज्जवित्थडेसु उववज्जतेसु चयतेसु य एव
 चेव सखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असखेज्जा, नवर—तोइदियोवउत्ता अणतरो-
 ववण्णगा अणतरोवगाढगा अणतराहारगा अणतरपज्जत्तगा य एएसि जह्णणेणं
 एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असखेज्जा
 भाणियव्वा । 'आरण-अच्चुएसु'^३ एव चेव जहा आणय-पाणएसु, नाणत्त विमा-
 णेसु । एव गेवेज्जगा वि ॥

१. जोतिसियावाससहस्सा (अ, क, ख, ता, २. न उववज्जति (स) ।

त्र, म) ।

३. आरणच्चुएसु (अ, क, ख, ज, म, स) ।

३५. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणे पण्णत्ता ?
 गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणे पण्णत्ता ।
 'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
 गोयमा' ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ॥
३६. पंचसु णं भते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएण केवतिया अणुत्तरोववाइया उववज्जति ? केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जति—पुच्छा तहेव ।
 गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएण जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु, नवरं—किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अण्णाणेसु एए न उववज्जति, न चयति, न वि पण्णतएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जति जाव संखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता, सेस त चेव । असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न अण्णति, नवरं—अचरिमा अत्थि, सेस जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ॥
३७. चोयट्ठीए णं भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्महिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ? मिच्छादिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ?
 एवं जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया^१ तहा भाणियव्वा । एव असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा, एव जाव गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं—तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न अण्णति, सेसं तं चेव ॥
३८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जति ?
 हंता गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए^२ तहेव भाणियव्व । नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाणं, जहा नीललेस्साए एव जाव पण्हलेस्सेसु, सुक्कलेस्सेसु एव चेव, नवरं—लेस्सट्ठाणेसु विसुज्जमाणेसु-विसुज्जमाणेसु सुक्कलेस्सा परिणमति, परिणमिता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ॥
३९. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति^३ ॥

१. × (अ, क, ख, ता, ब, म) ।

२. म० १३।१४ ।

३. म० १३।१५-२२ ।

४. म० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

४०. नेरइया ण भते । अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, एव परियारणापद^१ निरव-
सेस भाणियव्व ॥
४१. सेव भते । सेव भते । त्ति^२ ॥

चउत्थो उद्देसो

नरय-नेरइयाणं अप्पमहंत-पद

४२. कति^३ ण भते । पुढवीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! सत्त पुढवीओ पणत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

४३. अहेसत्तमाए ण भते । पुढवीए पंच अणुत्तरा महत्तिमहालया^४ *महानिरया
पणत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए,^५ अपइट्ठाणे । ते णं
नरगा छट्ठीए^६ तमाए पुढवीए नरएहितो महत्तरा^७ चेव, महावित्थिणत्तरा^८ चेव,
महोवासतरा^९ चेव, महापडरिक्कतरा चेव, नो^{१०} तहा महप्पवेसणत्तरा^{११} चेव,
आइण्णत्तरा चेव, आउलत्तरा चेव, अणोमाणत्तरा^{१२} चेव । तेसु ण नरएसु नेरइया
छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहितो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव,

१. प० ३४ ।

२. भ० १।५१ ।

३. इह च द्वारगामि क्वचिद् दृश्यते, तद्यथा—

१. नेरइय २. फास ३. पणिहि,

४. निरयते चेव ५. लोयमज्जेय ।

६. दिसिंविदिमाण य पवहा,

७. पवत्तणं अत्थिकाएहि ॥१॥

८. अत्थी पएसफुसणा,

९. ओगाहणया य जीवमोगाढा ।

१०. अत्थि पएसनिसीयण,

११. बहुसमे लोयसंठाणे ॥२॥ (वृ) ।

४. स० पा०—महत्तिमहालया जाव अपइट्ठाणे ।

५. छटाए (अ, क, ख, ता, म) ।

६. महत्तरा (क, व, म) ।

७. महाविच्छिण्णत्तरा (अ, स) ।

८. महावासतरा (अ, क); महोवासतरा (ख, ता), महावासतरा (य, स) ।

९. 'नो' शब्द. उत्तरपदद्वयेपि सम्बन्धनीयः (वृ) ।

१०. महापवेसणत्तरा (म, स) ।

११. अणोयणत्तरा (अ, ख, ता, म, स, वृपा) ।

महासवतरा^१ चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा^२ चेव, अप्पजुत्तियतरा^३ चेव, नो तहा महिड्ढियतरा चेव, महज्जुत्तियतरा चेव ।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए एगे पच्चूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते । ते ण नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहितो नो तहा महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव । तेसु ण नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहितो अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, महिड्ढियतरा चेव, महज्जुइयतरा चेव; नो 'तहा अप्पिड्ढियतरा'^४ चेव, अप्पजुत्तियतरा चेव ।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए नरगा पच्चमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहितो महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो तहा महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव । तेसु ण नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहितो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव; अप्पिड्ढियतरा चेव, अप्पजुत्तियतरा चेव, नो तहा महिड्ढियतरा चेव, महज्जुत्तियतरा चेव ।

पच्चमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता । एव जहा छट्ठीए भणिया एव सत्त वि पुढवीओ परोप्पर भण्णति जाव रयणप्पभति जाव नो तहा महिड्ढियतरा चेव, अप्पजुत्तियतरा चेव ॥

नेरइयाणं फासाणुभव-पदं

४४. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भते ! केरिसयं पुढविफास पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?

गोयमा ! अणिट्ठ जाव^५ अमणाम । एव जाव अहेसत्तमपुढविनेरइया । एव आउफासं, एव जाव वणस्सइफास ॥

१. महस्सवतरा (क, ता, म) ।

२. अप्पिड्ढितरा (ता, व) ।

३. अप्पजुत्तितरा (अ, ता, व) ।

४. तहपिड्ढियतरा (अ, क, ख, स); तहिप्पिड्ढियतरा (ता) ।

५. भ० १।३५७ ।

नरयाणं बाहल्ल-खुडुत्त-पद

४५. इमा ण भते । रयणप्पभापुढवी दोच्च सक्करप्पभ पुढवि पणिहाय सव्वमह-
तिया बाहल्लेण, सव्वखुड्डिया सव्वतेसु ?
१० हता गोयमा ! इमा णं रयणप्पभापुढवी दोच्चं पुढवि पणिहाय जाव सव्व-
खुड्डिया सव्वतेसु ।
दोच्चा ण भते । पुढवी तच्च पुढवि पणिहाय सव्वमहतिया बाहल्लेणं—पुच्छा ।
हता गोयमा । दोच्चा ण पुढवी जाव सव्वखुड्डिया सव्वतेसु । एव एएणं
अभिलावेण जाव छट्ठिया पुढवी अहेसत्तम पुढवि पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया
सव्वतेसु ० ॥

निरयपरिसामत-पदं

४६. इमीसे ण भते । रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु^१ जे पुढविवकाइया
१० जाव वणस्सइकाइया तेण जीवा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव,
महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव ?
हता गोयमा । इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु त चेव जाव
महावेदणतरा चेव । एव ० जाव अहेसत्तमा ॥

लोगमज्झ-पदं

४७. कहि ण भते । लोगस्स आयाममज्झे पणत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स असखेज्जइभाग ओगाहेत्ता,
एत्थ ण लोगस्स आयाममज्झे पणत्ते ॥
४८. कहि ण भते । अहेलोगस्स आयाममज्झे पणत्ते ?
गोयमा । चउत्थीए पक्कप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स सातिरेग अद्ध ओगाहेत्ता,
एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पणत्ते ॥
४९. कहि ण भते । उड्डलोगस्स आयाममज्झे पणत्ते ?
गोयमा । उप्पि सणकुमार-माहिंदाण कप्पाण हेड्डि^२ बभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे
पत्थवे, एत्थ ण उड्डलोगस्स आयाममज्झे पणत्ते ॥
५०. कहि ण भते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पणत्ते ?
गोयमा । जबुद्धीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए

१. सं० पा०—एव जहा जीवाभिगमे वितिए
नेरइयउहेसए ।

२. निरयापरिसामतेसु (ता) ।

३. सं० पा०—एव जहा नेरइयउहेसए जाव ।

४. हत्थि (क); हत्थि (ख, ता); हिड्डि (घ);

हत्थि (ग) ।

पुढवीए उवरिमहेद्विल्लेसु खुड्डगपयरेसु', एत्थ णं तिरियलोगमज्जे अट्ठपएसिए
 रयए पणत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहत्ति, त जहा—१. पुरत्थिमा
 २. पुरत्थिमदाहिणा ३. *दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५. पच्चत्थिमा
 ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९ उड्डा १० अहो ॥

५१. एयासि ण भते ! दसहं दिसाण कति नामधेज्जा पणत्ता ?

गोयमा ! दस नामधेज्जा पणत्ता, तं जहा—

इदा अग्गेयी जमा, य नेरई वारुणी य वायव्वा ।

सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा° ॥१॥

५२. इदा णं भते ! दिसा किमादीया, किपवहा, कतिपदेसादीया, कतिपदेसुत्तरा,
 कतिपदेसिया, किपज्जवसिया, किसिठिया पणत्ता ?

गोयमा ! इदा ण दिसा रयगादीया, रयगप्पवहा, दुपएसदीया, दुपएसुत्तरा,
 लोगं पडुच्च' असंखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च अणत्तपएसिया, लोग पडुच्च
 सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, लोग पडुच्च
 मुरवसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसिठिया पणत्ता ॥

५३. अग्गेयी णं भते ! दिसा किमादीया, किपवहा, कतिपएसदीया, कतिपएस-
 वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किपज्जवसिया, किसिठिया पणत्ता ?

गोयमा ! अग्गेयी ण दिसा रयगादीया, रयगप्पवहा, एगपएसदीया, एगपएस-
 वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोग पडुच्च असंखेज्जपएसिया अलोग, पडुच्च अणत्तपएस-
 सिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया,
 छिण्णमुत्तावलिसंठिया पणत्ता । जमा जहा इदा, नेरई जहा अग्गेयी । एव
 जहा इदा तहा दिसाओ चत्तारि', जहा अग्गेई तहा चत्तारि विदिसाओ ॥

५४. विमला णं भते ! दिसा किमादीया, *किपवहा, कतिपएसदीया, कतिपएस-
 वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किपज्जवसिया, किसिठिया पणत्ता° ?

गोयमा ! विमला ण दिसा रयगादीया, रयगप्पवहा, चउप्पएसदीया, दुपएस-
 वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोग पडुच्च *असंखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च
 अणत्तपएसिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया
 अपज्जवसिया°, रयगसंठिया पणत्ता । एवं तमा वि ॥

१. खुड्डाग° (ता, व) ।

२. सं० पा०—एव जहा दसमसए जाव नाम-
 धेज्जे ति ।

३. पडुच्चा (ता) सर्वत्र ।

४. चत्तारि वि (क, ख, ता, व, म) ।

५. सं० पा०—पुच्छा जहा अग्गेयीए ।

६. सं० पा०—सेस जहा अग्गेयीए नवर रयग-
 सिठिया ।

लोय-पदं

५५. किमिय भते ! लोएत्ति पवुच्चइ ?

गोयमा ! पचत्थिकाया, एस ण एवतिए लोएत्ति पवुच्चइ, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए^१ •आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए^०, पोम्मलत्थिकाए ॥

५६. धम्मत्थिकाएणं भते ! जीवाणं किं पवत्तति ?

गोयमा ! धम्मत्थिकाएण जीवाणं आगमण-गमण-भासुम्मसे^१-मणजोग-वइजोग-कायजोगा, जे यावण्णे तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति । गइलक्खणे ण धम्मत्थिकाए ॥

५७. अधम्मत्थिकाएणं भते ! जीवाणं किं पवत्तति ?

गोयमा ! अधम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाण-निसीयण-तुयट्ठण^१, मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावण्णे तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अधम्मत्थिकाए पवत्तंति । ठाणलक्खणे णं अधम्मत्थिकाए ॥

५८. आगासत्थिकाएणं भते ! जीवाणं 'अजीवाण य'^१ किं पवत्तति ?

गोयमा ! आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाण 'य अजीवदव्वाण य'^१ भायणभूए—

एगेण वि से पुण्णे, दोहि वि पुण्णे सयं पि माएज्जा ।

कोडिसएण वि पुण्णे, कोडिसहस्स पि माएज्जा ॥१॥

अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए ॥

५९. जीवत्थिकाए ण भते ! जीवाणं किं पवत्तति ?

गोयमा ! जीवत्थिकाएण जीवे अणताण आभिणिदोहियनाणपज्जवाणं, अणताण सुयनाणपज्जवाणं •अणताण ओहिनाणपज्जवाण, अणताण मणपज्जवनाणपज्जवाण, अणताण केवलनाणपज्जवाण, अणताण मइअण्णाणपज्जवाण, अणताणं सुयअण्णाणपज्जवाणं, अणताण विभंगनाणपज्जवाणं, अणताणं चक्खुदसणपज्जवाणं, अणताण अचक्खुदसणपज्जवाण, अणताणं ओहिदसणपज्जवाण, अणताण केवलदसणपज्जवाण^० उवयोगं गच्छति । उवयोगलक्खणे^० ण जीवे ॥

६०. पोम्मलत्थिकाए णं •भते ! जीवाणं किं पवत्तति^० ?

१. अहम्म^० (अ, क, म, स); स० पा०— ५ × (ख) ।

अधम्मत्थिकाए जाव पोम्मलत्थिकाए ।

६. स० पा०—एव जहा वित्तियसए अत्थिकाय=

२. भासुमोस (अ, स), मासुमेस (ख) ।

उद्देसए जाव उवयोग ।

३. प्रथमावहुवचनलोपदर्शनात् (वृ) ।

७. उवओग^० (क, ता); उवजोग^० (व) ।

४. × (ख, व, म) ।

८. सं० पा०—पुच्छा ।

गोयमा । पोगलत्थिकाएण जीवाणं ओरालिय-वेजव्विय-‘आहारा-तेया कम्मा’-
सोइदिय-चक्खिदिय-धाणिदिय - जिम्भिदिय - फासिदिय-मणजोग-वइजोग-काय-
जोग-आणापाणूण च गहणं पवत्ति । गहणलक्खणे ण पोगलत्थिकाए ॥

धम्मत्थिकायादीणं परोप्परं फास-पदं

६१. एगे भते ! धम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्टे ?
गोयमा ! जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि । केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदे-
सेहि पुट्टे ? जहण्णपदे^१ चउहि, उक्कोसपदे सत्तिहि । केवतिएहि आगासत्थि-
कायपदेसेहि पुट्टे ? सत्तिहि । केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्टे ? अणतेहि ।
केवतिएहि पोगलत्थिकायपदेसेहि पुट्टे ? अणतेहि । केवतिएहि अद्दासमएहि
पुट्टे ? सिय पुट्टे सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे नियम अणतेहि ॥
६२. एगे भते ! अधम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्टे ?
गोयमा ! जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तिहि । केवतिएहि अधम्मत्थिकाय-
पदेसेहि पुट्टे ? जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥
६३. एगे भते ! आगासत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्टे ?
गोयमा ! सिय पुट्टे सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे जहण्णपदे एक्केण वा दोहि वा तीहि
वा, उक्कोसपदे सत्तिहि । एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि । केवतिएहि आगास-
त्थिकायपदेसेहि पुट्टे ? छहि । केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्टे ? सिय पुट्टे
सिय नो पुट्टे, जइ पुट्टे नियम अणतेहि । एव पोगलत्थिकायपदेसेहि वि,
अद्दासमएहि वि ॥
६४. एगे भते ! जीवत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकाय^२पदेसेहि पुट्टे ?
जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तिहि । एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि । केव-
तिएहि आगासत्थिकाय^३पदेसेहि पुट्टे ? सत्तिहि । केवतिएहि जीवत्थिकाय-
पदेसेहि पुट्टे ? अणतेहि । सेस जहा^४ धम्मत्थिकायस्स ॥
६५. एगे भते ! पोगलत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्टे ? एव
जहेव^५ जीवत्थिकायस्स ॥
६६. दो भते ! पोगलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्टा ?
गोयमा ! जहण्णपदे छहि, उक्कोसपदे बारसहि । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहि
वि । केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्टा ? बारसहि । सेस जहा^६ धम्म-
त्थिकायस्स ॥

१. आहारए तेयकम्मए (ख) ।

२. गोयमा ! जहण्णपदे (स) सर्वत्र ।

३. स० पा०—पुच्छा ।

४. स० पा०—पुच्छा ।

५. भ० १३।६१ ।

६. भ० १३।६४ ।

७. भ० १३।६१ ।

- ६७ तिणिण भते । पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे अट्ठहि, उक्कोसपदे सत्तरसहि । एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि । केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? सत्तरसहि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स । एव एएण गमेण भाणियव्वा^१ जाव दस, नवर—जहण्णपदे दोणिण पक्खिवियव्वा, उक्कोसपदे पच । चत्तारि पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे दसहि, उक्कोसपदे बावीसाए । पच पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे वारसहि उक्कोसपदे सत्तावीसाए । छ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे चोद्दसहि, उक्कोसपदे वत्तीसाए । सत्त पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे सोलसहि, उक्कोसपदे सत्ततीसाए । अट्ठ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे अट्ठारसहि, उक्कोसपदे बायालीसाए । नव पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बीसाए, उक्कोसपदे सीयालीसाए । दस पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बावीसाए, उक्कोसपदे बावन्नाए । आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसग भाणियव्व ॥
६८. सखेज्जा भते । पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव सखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव सखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण । केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? एव चेव । केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि ? तेणेव सखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण । केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि ? अणतेहि । केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि ? अणतेहि । केवतिएहि अद्वासमएहि ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे^२, *जइ पुट्ठे नियम^३ अणतेहि ॥
- ६९ असखेज्जा भते । पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव असखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव असखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण । सेस जहा सखेज्जाण जाव नियम अणतेहि ॥
७०. अणता भते । पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? एव जहा असखेज्जा तहा अणता वि निरवसेस ॥
७१. एगे भते । अद्वासमए केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? सत्तहि । केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? एव चेव, एव आगासत्थिकाएहि वि । केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? अणतेहि, एव जाव अद्वासमएहि ॥
- ७२ धम्मत्थिकाए ण भते । केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? 'नत्थि एककेण'^४ वि । केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? असखेज्जेहि । केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि ? असखेज्जेहि । केवतिएहि जीवत्थिकाय-

१. भाणियव्व (म, स) ।

२ स० पा०—पुट्ठे जाव अणतेहि ।

३. नत्थिवकेण (अ, ख, ता); नत्थि इक्केण (क) ।

पदेसेहि ? अणतेहि । 'केवतिएहि पोगलत्थिकायपदेसेहि ? अणतेहि । केवतिएहि अद्दासमएहि ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणतेहि' ॥

७३. अधम्मत्थिकाए णं भते ! केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? असखेज्जेहि । केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? नत्थि एक्केण वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स । एव एएणं गमएण सव्वे^३ वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा; परट्ठाणए आदित्तएहि तिहि असखेज्जेहि भाणियव्व, पच्छिल्लएषु तिसु^४ अणंता भाणियव्वा जाव अद्दासमयो त्ति जाव केवतिएहि अद्दासमएहि पुट्ठे ? नत्थि एक्केण वि ॥

धम्मत्थिकायादीराणं ओगाढ-पदं

७४. जत्थ णं भते ! एगे धम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेशा ओगाढा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ओगाढा ? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ओगाढा ? अणता । केवतिया पोगलत्थिकायपदेसा ओगाढा ? अणंता । केवतिया अद्दा-समया ओगाढा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणता ॥
७५. जत्थ णं भते ! एगे अधम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? 'नत्थि एक्को' वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥
७६. जत्थ णं भते ! एगे आगासत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को । एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणता । एवं जाव अद्दासमया ॥
७७. जत्थ णं भते ! एगे जीवत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
एक्को, एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि, एवं आगासत्थिकायपदेसा वि । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणंता । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥
७८. जत्थ णं भते ! एगे पोगलत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?

१. एवं पोगलत्थि अद्दासमएहि य (स, ता) । ३. × (ता) ।

२. सव्वेसिण (क); सव्वेण (ता, व, म) । ४. नत्थेक्को (ता); नत्थेक्के (व, स) ।

एवं जहा जीवत्थिकायपदेसे तहेव निरवसेस ॥

७९. जत्थ ण भते ! दो पोगलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-
पदेसा ओगाढा ?

सिय एक्को सिय दोण्णि, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स
वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

८०. जत्थ णं भते ! तिण्णि पोगलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्म-
त्थिकायपदेसा ओगाढा ?

सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि, एव अधम्मत्थिकायस्स वि, एव आगा-
सत्थिकायस्स वि । सेस जहेव दोण्ह, एव एक्केक्को वड्ढियव्वो पदेसो आइल्ल-
एहिं तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसेहिं जहेव दोण्ह जाव दसण्ह सिय एक्को, सिय
दोण्णि, सिय तिण्णि जाव सिय दस । सखेज्जाण सिय एक्को, सिय दोण्णि
जाव सिय दस, सिय सखेज्जा । असखेज्जाण सिय एक्को जाव सिय सखेज्जा,
सिय असखेज्जा । जहा असखेज्जा एव अणता वि ॥

८१. जत्थ णं भते ! एगे अद्दासमए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकाय-
पदेसा ? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणता । एव जाव अद्दासमया ॥

८२. जत्थ ण भते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया
आगासत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणता ।
एव जाव अद्दासमया ॥

८३. जत्थ ण भते ! अधम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा
ओगाढा ?

असखेज्जा । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । सेसं जहा
धम्मत्थिकायस्स । एव सव्वे—सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वो, परट्ठाणे
आदिल्लगा तिण्णि असखेज्जा भाणियव्वो, पच्छिल्लगा तिण्णि अणता
भाणियव्वो जाव अद्दासमयो त्ति जाव केवतिया अद्दासमया ओगाढा ? नत्थि
एक्को वि ॥

८४. जत्थ ण भते ! एगे पुढविककाइए ओगाढे तत्थ ण केवतिया पुढविककाइया
ओगाढा ?

असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया
तेउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया वाउकाइया ओगाढा ?
असखेज्जा । केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता ।

८५. जत्थ ण भते ! एगे आउक्काइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढविककाइया ओगाढा ?
असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा । एव जहेव

पुढविवकाइयाण वत्तव्वया तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्व जाव वणस्सइकाइयाणं जाव केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता ॥

८६. एयंसि^१ णं भते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकायसि चक्किया केई आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्ठित्तए वा ?

नो इणट्ठे समट्ठे, अणता पुणत्थ^२ जीवा ओगाढा ॥

८७. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ-एयसि ण धम्मत्थि^३•काय-अधम्मत्थिकाय^०-आगा-सत्थिकायसि नो चक्किया केई आसइत्तए वा^४ •सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसी-यत्तए वा तुयट्ठित्तए वा अणता पुणत्थ जीवा^० ओगाढा ?

गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा^५ •णिवाया णिवायगंभीरा । अह ण केई पुरिसे पदीवसहस्स गहाय कूडागार-सालाए अतो-अंतो अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समता घण-निचिय-निरतर-णिच्छिडाइ^० दुवारवयणाइ पिहेइ, पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहण्णेण एवको वा दो वा तिणिं वा, उक्कोसेण पदीवसहस्स^६ पलीवेज्जा । से नूण गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अणमणसंबद्धाओ अणमणपुट्ठाओ अणमणसबद्धपुट्ठाओ^७ अणमणघट्ठाए चिट्ठिति ?

‘हंता चिट्ठित्ति’^८ ।

चक्किया ण गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्ठित्तए वा ?

भगवं ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणता पुणत्थ^१ जीवा ओगाढा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अणता पुणत्थ जीवा ओगाढा ॥

लोय-पदं

८८. कहि ण भते ! लोए बहुसमे, कहि णं भते ! लोए सव्वविग्गहिए पणत्ते ?

गोयमा ! इमोसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठित्तेसु खुड्डगपयरेसु^९, एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ ण लोए सव्वविग्गहिए पणत्ते ॥

१. एतेसि (क, ख, ता, ब, म, स) ।

दुवारवयणाइं ।

२. पुण तत्थ (अ, ख, म, स); पुणेत्थ (क) ।

६. दीव^० (अ) ।

३. स० पा०—धम्मत्थि जाव आगासत्थि-कायसि ।

७. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

८. × (ब, म) ।

४. स० पा०—वा जाव ओगाढा ।

९. पुण तत्थ (अ, ख, ब, म, स) ।

५. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव १०. खुड्डग^० (ब) ।

८९. कहि ण भते ! विग्गहविग्गहि^१ लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! विग्गहकडए, एत्थ ण विग्गहविग्गहि^१ लोए पण्णत्ते ॥
९०. किसिठिए ण भते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठियसिठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे^२, मज्झे 'सखित्ते, उप्पि विसाले, अहे पलियकसिठिए, मज्झे वरवइरविग्गहि^१, उप्पि उद्धमुङ्गा-कारसिठिए । तसि च ण सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उद्धमु-इगाकारसिठियसि उप्पण्णनाण-दसणघरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनि-ब्बाइ सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥
९१. एयस्स ण भते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहिं^३ ?
अप्पा वा ? बह्भुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए ॥
९२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^४ ॥

पंचमो उद्देशो

आहार-पव

९३. नेरइया ण भते ! कि सचित्ताहारा ? अचित्ताहारा ? मीसाहारा ?
गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा । एव असुरकुमारा,
पढमो नेरइयउद्देशओ निरवसेसो भाणियव्वो^५ ॥
९४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^६ ॥

१. विग्गहि^१ (अ) ।

२. वित्थिण्णे (अ, व, म) ।

३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देशे जाव अत ।

४. स० पा०—कयरेहिंजो जाव विसेसाहिया ।

५. भ० १।५१ ।

६. प० २८।१ ।

७. भ० १।५१ ।

छट्ठो उद्देशो

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

६५. रायगिहे जाव' एवं वयासी—सतर भते ! नेरइया उववज्जति ? निरतर नेर-इया उववज्जति ?

गोयमा ! सतर पि नेरइया उववज्जति, निरंतर पि नेरइया उववज्जति । एव असुरकुमारा वि । एव जहा गगेये तहेव दो दडगा जाव' संतर पि वेमाणिया चयंति, निरतर पि वेमाणिया चयंति ॥

चमरचंच-आवास-पद

६६. कहि ण भंते ! चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररणो' चमरचंचे' नाम आवासे पणत्ते ?

गोयमा ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण तिरियमसखेज्जे दीवस-मुद्दे—एव जहा बित्तियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सच्चवे अपरिसेसा नेयव्वा' । तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमे ण छक्कोडिसए पणपन्न च कोडीओ 'पणत्तीसं च सयसहस्साइ'^१ पन्नास च सहस्साइ अरुणोदगसमुद् तिरियं वीइवइत्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिदस्स असुरकुमाररणो चमरचंचे नाम आवासे पणत्ते—चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खमेण, दो जोयणसय-सहस्सा पन्नट्ठि च सहस्साइ छच्च बत्तीसे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परि-क्खेवेण । से ण एगेण पागारेण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । से ण पागारे दिवड्डं जोयणसयं उड्ड उच्चत्तेण, एव चमरचंचाए रायहाणीए वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविवूणा जाव' चत्तारि पासायपंतीओ ।

१. भ० १।४-१० ।

२. भ० ६.८०-८५ ।

३. असुररणो (अ, ता, म, स) ।

४. चमरचंचा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

५. भ० २।११८-१२१; नेयव्वा, नवर—इम नाणत्तं जाव तिगिच्छकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपव्वयस्स, अण्णेसि च बहूण सेस त चेव जाव तेरस य अगुलाइं अद्धगुल च किंचि विसेसाहिआ परिक्खेवेण (अ, क, ख, ता,

व, म स); अस्मिन् द्वितीयशतकस्य सभाख्योद्देशकस्य समर्पणमस्ति । एतत्समर्प-णानुसारेण द्वितीयशतकस्य, 'जवुद्दीवप्प-माणा' एतावत्पर्यन्त पाठोत्र समायोजनार्हं, किन्तु 'नवर इम नाएत्त' अस्याभिप्रायो नावगम्यते । 'नेयव्वा' अतः परवर्तिपाठो नावश्यकः प्रतिभाति, तेनासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।

६. त चेव जाव (अ, क, ख, ता, व) ।

७. भ० २।१२१ ।

- ६७ चमरे णं भते । असुरिदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहि उवेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
- ६८ से केण खाइ अट्ठेणं भते । एव वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमरचंचे आवासे ?
गोयमा । से जहानामए—इह मणुस्सलोगसि उवगारियलेणाइ वा, उज्जाणिय-
लेणाइ वा, णिज्जाणियलेणाइ वा, धारावारियलेणाइ वा, तत्थ ण बहुवे
मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयति सयति *चिट्ठति निसीयति तुयट्ठति हंसति
रमति ललति कीलति कित्तति मोहेति पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरक्कताणं
सुभाण कडाण कम्माणं कल्लाणाण° कल्लाणफलवित्तिविसेस पच्चणुब्भवमाणा
विहरति, अण्णत्थ पुण वसहि उवेति । एवामेव गोयमा । चमरस्स असुरिदस्स
असुरकुमाररणो चमरचंचे आवासे केवल किट्ठा-रतिपत्तिय, अण्णत्थ पुण
वसहि उवेति । से तेणट्ठेण° गोयमा । एव वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमर-
चंचे° आवासे ॥
६९. सेव भते । सेव भते । त्ति जाव विहरइ ॥
१००. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुण-
सिलाओ° चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमिता बहिया जणवयविहार°
विहरइ ॥

उद्दायणकहा-पदं

१०१. तेण कालेण तेणं समएण चपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ° । पुण्णभद्दे चेइए—
वण्णओ° । तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदाइ पुब्बाणुपुब्ब चरमाणे°
*गामाणुगाम द्दइज्जमाणे सुहसुहेण° विहरमाणे जेणेव चपा नगरी जेणेव
पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता° *अहापडिख्व ओग्गहं ओगिण्हइ
ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥
१०२. तेण कालेण तेण समएण सिधूसोवीरेसु° जणवएसु वीतीभए° नामं नगरे होत्था
—वण्णओ° । तस्स ण वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए,

- | | |
|-----------------------------------|--|
| १. बारधारिय° (अ, क, म), धारवारिय° | ६. ओ० सू० १ । |
| (ख, व), धारिवारिय° (स) । | ७. ओ० सू० २-१३ । |
| २. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव | ८. सं० पा०—चरमाणे जाव विहरमाणे । |
| कल्लाण° । | ९. सं० पा०—उवागच्छिता जाव विहरइ । |
| ३. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव आवासे । | १०. सिधु° (स) । |
| ४. सं० १।५। | ११. वीमवे (ता), 'विदमं' ति केचित् (वृ) । |
| ५. सं० पा०—गुणसिलाओ जाव विहरइ । | १२. ओ० सू० १ । |

एतथ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे—वण्णओ^१ । तत्थ णं वीतीभए नगरे उद्दायणे^२ नाम राया होत्था—महयाहिमवत-महत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ^३ । तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पउमावती नाम देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ^४ । तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था—वण्णओ जाव^५ विहरइ । तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीयी^६ नाम कुमारे होत्था—सुकुमाल^७ पाणिपाए अहीण-पडिपुण-पचिदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-पमाण-पडिपुण-सुजायसव्वग-सुदरंगे ससिसोमाकारे कत्ते पियदंसणे सुखे पडिखे ।

से णं अभीयीं कुमारे जुवराया वि होत्था—उद्दायणस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च बलं च बाहणं च कोसं च कोट्टारं च पुरं च अतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे^८ पच्चुवेक्खमाणे विहरइ । तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो नियए भाइजेजे^९ केसी नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए जाव सुखे । से णं उद्दायणे राया सिंघसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाण, वीतीभयप्पामोक्खाण तिण्ह तेसट्ठीणं नगरागरसयाण^{१०}, महसेणप्पामोक्खाण दसण्ह राईसरं बद्धमउडाण विदि-न्नछत्त-चामर-बालवीयणाण, अण्णेसि च बहूण राईसर-तलवर^{११}—^{१२}माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ^{१३}—सत्थवाहप्पभिईण आहेवच्चं पोरेवच्चं^{१४}—^{१५}सामित्तं भट्ठित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं^{१६} कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजी-वाजोवे जाव^{१७} अह्मापरिगहिएहि तवोक्कम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१०३. तए णं से उद्दायणे राया अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, जहा संखे जाव^{१८} पोसहिए वंभचारी ओमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दग्गसंथारोवगए पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे विहरइ ॥

१०४. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^{१९}—^{२०}चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^{२१} ॥

१. भ० ११।५७ ।

२. ओदायणे (अ); उदायणे (स) सर्वत्र ।

३. ओ० सू० १४ ।

४. ओ० सू० १५ ।

५. ओ० सू० १५ ।

६. अभीति (अ, स,) ।

७. सं० पा०—जहा सिवसदे जाव पच्चुवेक्ख-माणे ।

८. भायरोज्जे (अ, ख, म) ।

९. नगरसयाण (अ, व, म, वृपा) ।

१०. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह^{१०} ।

११. सं० पा०—पोरेवच्च जाव कारेमाणे ।

१२. भ० ३।६४ ।

१३. भ० १२।६ ।

१४. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समुप्पज्जित्था—घन्ना ण ते गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-
सम-सबाहसणिवेसा जत्थ ण समणे भगवं महावीरे विहरइ, घन्ना ण ते राई-
सर-तलवर^१—●माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्टि-सेणावइ^२—सत्थवाहप्पभित्तयो^३ जे ण
समण भगव महावीर वंदति नमसति जाव^४ पज्जुवासति । जइ ण समणे भगवं
महावीरे पुब्बाणुपुर्व्व चरमाणे गामाणुगाम^५ ●दूइज्जमाणे सुहसुहेण^६ विहरमाणे
इहमागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे
उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेणं तवसा^७ ●अप्पाणं भावेमाणे^८
विहरेज्जा, तो ण अह समणं भगव महावीर वदेज्जा नमसेज्जा जाव पज्जुवा-
सेज्जा ॥

१०५. तए ण समणे भगव महावीरे उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थिय^९
●चित्थिय पत्थिय मणोगयं सकप्प^{१०} समुप्पन्न वियाणित्ता चपाओ नगरीओ
पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुब्बाणुपुर्व्व चरमाणे
गामाणु^{११} ●गाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण^{१२} विहरमाणे जेणेव सिधूसोवीरे जणवए
जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
जाव^{१३} सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१०६. तए ण वीतीभये नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु
जाव^{१४} परिसा पज्जुवासइ ॥

१०७. तए ण से उद्दायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्टुट्ठे कोडुबियपुरिसे
सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया^{१५} । वीयीभय नगरं
सन्भितरवाहिरिय जहा कूणिओ ओववाइए जाव^{१६} पज्जुवासइ । पउमावती-
पामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव^{१७} पज्जुवासति । धम्मकहा ॥

१०८. तए ण से उद्दायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिथं धम्म सोच्चा
निसम्म हट्टुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव^{१८}
नमसित्ता एव वयासी—एवमेय भते ! तहमेय भते^{१९} ! ●अवितहमेय भते !
असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेयं भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छिय-

१. स० पा०—तलवर जाव सत्थवाह^० ।

८ भ० १।७ ।

२. ०प्पमिइओ (अ, स) ।

९ ओ० सू० ५२ ।

३. भ० २।३० ।

१०. ओ० सू० ५५-६९ ।

४. स० पा०—गामाणुगाम जाव विहरमाणे ।

११. ओ० सू० ७० ।

५. स० पा०—तवसा जाव विहरेज्जा ।

१२. भ० १।१० ।

६. स० पा०—अज्झत्थिय जाव समुप्पन्न ।

१३. स० पा०—भते जाव से ।

७. स० पा०—गामाणु जाव विहरमाणे ।

मेयं भंते ! °—से जहेयं तुभे वदह त्ति कट्टु जं नवरं—देवाणुप्पिया । अभी-
यिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता°
•अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं ॥

१०६. तए ण से उद्दायणे राया समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्टुत्तु
समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तमेव आभिसेक्क हत्थि
दुहइ°, द्रुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ मियवणाओ उज्जा-
णाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव प्हारेत्थ
गमणाए ॥

११०. तए ण तस्स उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवे अज्झत्थिए° •चित्ति ए पत्थिए मणो-
गए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु अभीयीकुमारे मम एगे पुत्ते इट्ठे कते°
•पिए मणुण्णे मणामे येज्जे वेसासिए समए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे
रयणे रयणभूए जीविअसविए हिययनदिजणणे उबरपुप्फ पिव दुल्लभे सबण-
याए°, किमग पुण पासणयाए ? त जदि ण अह अभीयीकुमार रज्जे ठावेत्ता
समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता° •अगाराओ अणगारियं°
पव्वयामि, तो ण अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य° •बले य वाहणे य कोसे य
कोट्टागारे य पुरे य अतेउरे य° जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए
गिद्धे गडिए अज्झोववन्ने अणादीय अणवदग दोहमइ चाउरतससारकतार
अणुपरियट्ठिस्सइ, त नो खलु मे सेय अभीयीकुमार रज्जे ठावेत्ता समणस्स
भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता° •अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए,
सेयं खलु मे नियगं भाइणेज्ज केसि कुमार रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ°
•महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए—एव
सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव वीयीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वीयी-
भय नगरं मज्झमज्जेण जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्क हत्थि ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ
हत्थीओ पच्चोरुमइ, पच्चोरुमित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुबियपुरिसे
सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव मो देवाणुप्पिया । वीयीभय नगर

१. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि ।

२. दुहइ (ता) ।

३. अज्झत्थिए (अ, ता, स); स० पा०—
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

४. स० पा०—कते जाव किमग ।

५. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि ।

६. स० पा०—रट्ठे य जाव जणवए ।

७. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।

८. स० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए ।

सन्निभतरवाहिरियं* आसिय-समज्जिओवलितं जाव* सुगंधवरगंधगधिय गध-
वट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ।
ते वि तमाणत्तिय ° पच्चप्पिणत्ति ॥

१११. तए ण से उद्दायणे राया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी
—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । केसिस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिहं
विउलं एव रायाभिसेओ जहा सिवभहस्स कुमारस्स तहेव भाणियव्वो जाव*
परमाउ पालयाहि, इट्ठजणसपरिवुडे सिधूसोवोरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणव-
याण वीयीभयपामोक्खाण तिण्णि तेसट्ठीण नगरागरसयाण महसेणपामोक्खाण
दसण्ह राईण, अण्णेसि च वहुण राईसर*—तलवर-माडविय-कोडुबिय-इब्भ-
सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईण आहेवच्च पोरेवच्च सामितं भट्टित्त आणा-ईसर
सेणावच्च ° कारेमाणे, पालेमाणे विहराहि त्ति कट्ठु जयजयसह पउंजति ॥

११२. तए ण से केसी कुमारे राया जाए—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिदसारे
जाव* रज्ज पसासेमाणे विहरइ ॥

११३. तए ण से उद्दायणे राया केसि रायाणं आपुच्छइ ॥

११४. तए ण से केसी राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ—एव जहा जमालिस्स तहेव
सन्निभतरवाहिरिय तहेव जाव* निक्खमणाभिसेय उवट्ठवेति ॥

११५. तए ण से केसी राया अणेगणनायग*—दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-
कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-सविपाल-सिद्धि °-सपरिवुडे उद्दायणं
राय सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे निसीयावेति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोव-
णियाणं कलसाण एव जहा जमालिस्स जाव* महया-महया निक्खमणाभिसेणेणं
अभिसिचति, अभिसिचित्ता करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्तं मत्थए अंजलि
कट्ठु जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—भण सामी ! किं
देमो ? किं पयच्छामो ? किणा वा ते अट्ठो ?

११६. तए ण से उद्दायणे राया केसि राय एवं वयासी—इच्छामि ण देवाणुप्पिया !
कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गह च आणिय, कासवगं च सद्दावियं—एवं
जहा जमालिस्स, नवर—पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगूसहा ॥

११७. तए ण से केसी राया दोच्च पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, रयावेत्ता
उद्दायण राय सेया-पीतएहि कलसेहि ण्हावेति, ण्हावेत्ता सेसं जहा जमालिस्स

१. स० पा०—°वाहिरियं जाव पच्चप्पिणत्ति । ६. भ० ११८०, १८१ ।

२. वो० सू० ५५ ।

७. सं० पा०—अणेगणनायग जाव संपरिवुडे ।

३. भ० ११६१ ।

८. भ० ११८२ ।

४. सं० पा०—राईसर जाव कारेमाणे ।

९. भ० ११८४-१८६ ।

५. ओ० सू० १४ ।

जाव^१ चउव्विहेणं अलंकारेण अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ
अव्वभुट्ठेइ, अव्वभुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुख्हइ, दुख्हित्ता
सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तहेव^२ अम्मघाती, नवर पउमावती
हंसलक्खणं पडसाडग गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीय दुख्हइ, दुख्हित्ता
उद्दायणस्स रण्णे दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा सेसं त चेव जाव^३
छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणी सीय ठवेइ,
पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव समणे भगव
महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीर तिक्खुतो वंदइ
नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता
सयमेव आभरणमल्लालंकार ओमुयइ ॥

११८. *तए णं सा पउमावती देवी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकार
पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिन्न-मुत्तावल-प्पगासाइं असूणि
विणिम्मयमाणी-विणिम्मयमाणी उद्दायणं रायं एवं वयासी—जइयव्वं सामी !
घडियव्व सामी ! परक्कमियव्व सामी ! अस्सि च णं अट्ठे^४ नो पमादेयव्वं
त्ति कट्ठु केसी राया पउमावती य समणं भगवं महावीर वंदति नमसति,
वंदित्ता नमसित्ता^५ *जामेव दिसं पाउळभुया तामेव दिसं^६ पडिगया ॥

११९. तए णं से उद्दायणे राया सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सेस जहा उअभदत्तस्स
जाव^७ सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१२०. तए णं तस्स अमीयिस्स कुमारस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि
कुडुंबजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^८ *चित्तिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए
णं से उद्दायणे राया ममं अवहाय नियगं भाइणेज्जं केसि कुमारं रज्जे ठावेत्ता
समणस्स भगवजो^९ *महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं^{१०}
पव्वइए—इमेणं एयारूवेणं महया अप्पत्तिएण मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूए
समाणे अतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ
निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव
चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणियं राय

१. भ० ६।१९०-१९२ ।

२. भ० ६।१९३, १९४ ।

३. भ० ६।१९५-२०६ ।

४. सं० पा०—तं चेव पउमावती पडिच्छइ

जाव घडियव्वं सामी ! जाव नो ।

५. सं० पा०—नमसित्ता जाव पडिगया ।

६. भ० ६।१५०, १५१ ।

७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

८. सं० पा०—अयमेयारूवेणं

९. सं० पा०—भगवजो जाव पव्वइए ।

उवसपज्जित्ताण विहरइ । तत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नाए यावि होत्था । तए ण से अभीयीकुमारे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवा-जीवे जाव' अहापरिगहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ, उदाय-णम्मि रायरिसिम्मि समणुवद्धवेरे यावि होत्था ॥

१२१. इमीसे' रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठि' असुरकुमारावाससयस-हस्सा पणत्ता । तए ण से अभीयीकुमारे बहूइ वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रय-णप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठोए आयावाअसुरकुमारावाससयस-हस्सेसु' अणययरसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आयावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववण्णो । तत्थ ण अत्थेगतियाण आयावगाण असुरकुमाराणं देवाणं एग पलि-ओवम ठिई पणत्ता, तत्थ ण अभीयिस्स वि देवस्स एग पलिओवमं ठिई पणत्ता ॥

१२२. से ण भते ! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर उव्वट्ठित्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव' सव्वदुक्खाण अतं काहिति ॥

१२३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

सत्तमो उद्देशो

भासा-पदं

१२४. रायगिहे जाव' एव वयासी—आया भंते ! भासा ? अण्णा भासा ?

गोयमा ! नो आया भासा, अण्णा भासा ।

रूवि भते ! भासा ? अरूवि भासा ?

१. भ० २।६४ ।

तेनात्र पाठान्तरत्वेनात्माभि स्वीकृतः ।

२. तेणं कालेण तेण समएण इमीसे (व, क, ख, ता, ब, म, स); अयं पाठ. अग्रासज्झि-कोस्ति । शादवतपदार्थानां निरूपणे काल-निर्देशो नावश्यकोस्ति । केनापि कारणेन प्रवाहपाती लेख. सजात इति प्रतीयते,

३. चोसट्ठि (स) ।

४. °सहस्सेसु असुरकुमारावानेसु (ता) ।

५. भ० २।७३ ।

६. भ० १।५१ ।

७. भ० १।४-१०।

गोयमा ! रूवि भासा, नो अरूवि भासा ।
 सच्चित्ता भते ! भासा ? अच्चित्ता भासा ?
 गोयमा ! नो सच्चित्ता भासा, अच्चित्ता भासा ।
 जीवा भते ! भासा ? अजीवा भासा ?
 गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा ।
 जीवाणं भते ! भासा ? अजीवाणं भासा ?
 गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा ।
 पुर्वि भते ! भासा ? भासिज्जमाणी भासा ? भासासमयवीतिककता भासा ?
 गोयमा ! नो पुर्वि भासा, भासिज्जमाणी भासा, नो भासासमयवीतिककता भासा ।
 पुर्वि भते ! भासा भिज्जति ? भासिज्जमाणी भासा भिज्जति ? भासासमय-
 वीतिककता भासा भिज्जति ?
 गोयमा ! नो पुर्वि भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जति, नो
 भासासमयवीतिककता भासा भिज्जति ॥
 १२५. कतिविहा णं भते ! भासा पणत्ता ?
 गोयमा ! चउव्विहा भासा पणत्ता, त जहा—सच्चा, मोसा, सच्चा मोसा
 असच्चा मोसा ॥

मण-पदं

१२६. आया भते ! मणे ? अण्णे मणे ?
 गोयमा ! नो आया मणे, अण्णे मणे ।
 १० रूवि भते ! मणे ? अरूवि मणे ?
 गोयमा ! रूवि मणे, नो अरूवि मणे ।
 सच्चित्ते भते ! मणे ? अच्चित्ते मणे ?
 गोयमा ! नो सच्चित्ते मणे, अच्चित्ते मणे ।
 जीवे भते ! मणे ? अजीवे मणे ?
 गोयमा ! नो जीवे मणे, अजीवे मणे ॥
 जीवाणं भते ! मणे ? अजीवाणं मणे ?
 गोयमा ! जीवाणं मणे °, नो अजीवाणं मणे ।
 पुर्वि भते ! मणे ? मणिज्जमाणे मणे ? १० मणसमयवीतिककते मणे ?

१. सच्चित्ता (क, ता, म) ।

२. अच्चित्ता (क, ता, म) ।

३. सं० पा०—जहा भासा तहा मणे वि जाव
नो ।

४. सं० पा०—एवं जहेव भासा ।

गोयमा ! नो पुव्वि मणे, मणिज्जमाणे मणे, नो मणसमयवीतिक्कते मणे ° ।
पुव्वि भते । मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिक्कते
मणे भिज्जति ? °

गोयमा ! नो पुव्वि मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, नो मणसमय-
वीतिक्कते मणे भिज्जति ° ॥

१२७. कतिविहे ण भते ! मणे पणत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे मणे पणत्ते, तं जहा—सच्चे, °भोसे, सच्चामोसे °,
असच्चामोसे ॥

काय-पद

१२८ आया भते ! काये ? अण्णे काये ?

गोयमा ! आया वि काये, अण्णे वि काये ।

रूवि भते ! काये ? अरूवि काये ?

गोयमा ! रूवि पि काये, अरूवि पि काये ।

°सचित्ते भते ! काये ? अचित्ते काये ?

गोयमा ! सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये ।

जीवे भते ! काये ? अजीवे काये ?

गोयमा ! जीवे वि काये, अजीवे वि काये ।

जीवाण भते ! काये ? अजीवाण काये ?

गोयमा ! जीवाण वि काये, अजीवाण वि काये ° ।

पुव्वि भते ! काये ? °कायिज्जमाणे काये ? कायसमयवीतिक्कते काये ° ?

गोयमा ! पुव्वि पि काये, कायिज्जमाणे वि काये, कायसमयवीतिक्कते वि काये ।

पुव्वि भते ! काये भिज्जति ? °कायिज्जमाणे काये भिज्जति ? कायसमय-
वीतिक्कते काये भिज्जति ? °

गोयमा ! पुव्वि पि काये भिज्जति, °कायिज्जमाणे वि काये भिज्जति,
कायसमयवीतिक्कते वि ° काये भिज्जति ॥

१२९. कतिविहे ण भते ! काये पणत्ते ?

गोयमा ! सत्तविहे काये पणत्ते, तं जहा—ओरालिए, ओरालियमीसए,
वेउव्विए, वेउव्वियमीसए, आहारए, आहारगमीसए, कम्मए ॥

१. स० पा०—एव जहेव भासा ।

वि काये ।

२. स० पा०—सच्चे जाव असच्चामोसे ।

५. स० पा०—पुच्छा ।

३. काये पुच्छा (स) ।

६. स० पा०—पुच्छा ।

४. स० पा०—एव एक्केक्के पुच्छा । सचित्ते
वि काये, अचित्ते वि काये । जीवे वि काए,
अजीवे वि काए, जीवाण वि काए, अजीवाण

७. स० पा०—भिज्जति जाव काये ।

८. ओराले (स) ।

मरण-पदं

१३०. कतिविहे ण भते ! मरणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पच्चविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—आवीचियमरणे^१, ओहिमरणे^२, आतियतियमरणे^३, बालमरणे, पडियमरणे ॥

१३१. आवीचियमरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचियमरणे, भावावीचियमरणे ॥

१३२. दव्वावीचियमरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वावीचियमरणे, तिरिक्ख-जोणियदव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे ॥

१३३. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे—नेरइयदव्वावीचियमरणे ?

गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइए दव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ बद्धाइ पुट्ठाइ कडाइ पट्टवियाइ 'निविट्ठाइ अभिनिविट्ठाइ'^४ अभिसम-ण्णागयाइ भवति ताइं दव्वाइ आवीचिमणुसमय^५ निरतर मरंति त्ति कट्ठु । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे, एवं जाव देवदव्वा-वीचियमरणे ॥

१३४. खेत्तावीचियमरणे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयखेत्तावीचियमरणे जाव देवखेत्ता-वीचियमरणे ॥

१३५. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइयखेत्तावीचियमरणे—नेरइयखेत्तावीचियमरणे ?

गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि । एव जाव भावावीचियमरणे ॥

१३६. ओहिमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पच्चविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वोहिमरणे, खेतोहिमरणे,^६ *कालोहि-मरणे, भवोहिमरणे^७, भावोहिमरणे ॥

१. आवीयिय^० (ब) ।

२. अवहि^० (ब, म) ।

३. आदितिय^० (अ, स); आदितिय; (क,

ख, ब) ।

४. × (ब) ।

५. आवीचियम^० (क, स) ।

६. स० पा०—खेतोहिमरणे जाव भवो^० ।

१३७. दव्वोहिमरणे ण भते कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहि-
मरणे ॥
१३८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वोहिमरणे—नेरइयदव्वोहिमरणे ?
गोयमा ! 'जे ण' नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ सपय मरंति,
'ते ण' नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेणं
गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वोहिमरणे'
वि । एव एएण गेसेण खेतोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि, भवोहिमरणे वि,
भावोहिमरणे वि ॥
१३९. आतियतियमरणे ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वातियतियमरणे, खेत्तातियतियमरणे
जाव भावातियतियमरणे ॥
१४०. दव्वातियतियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयदव्वातियतियमरणे जाव देवदव्वा-
तियतियमरणे ॥
१४१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वातियतियमरणे—नेरइयदव्वातियतिय-
मरणे ?
गोयमा ! 'जे ण' नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ सपयं मरति,
'ते ण' नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले नो पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेणं
जाव नेरइयदव्वातियतियमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वातिय-
तियमरणे । एव खेत्तातियतियमरणे वि, एवं जाव भावातियतियमरणे वि ॥
१४२. बालमरणेण भते ! कतिविहे पण्णत्ते !
गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. वलयमरणे २. वसट्टमरणे
३. अतोसत्तलमरणे ४. तम्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. जलप्पवेसे
८. जलणप्पवेसे ९. विसमक्खणे १०. सत्थोवाडणे ११. वेहाणसे १२. गद्धपट्टे ॥
१४३. पडियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे य, भत्तपच्चक्खाणे य ॥
१४४. पाओवगमणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

१. ज ए (अ, क, ख, ता, व); जण्णं (म) ।

४. ज एणं (अ, क, ता, स); जण्णं (म) ।

२. जं ण (अ, ता, व, स); जे एण (ख), 'त'
इति गम्यम् (वृ) ।

५. जे ण (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

३. देवोहिमरणे (अ, क, ख, ता, व, म) ।

६. स० पा०—जहा खंदए जाव गद्धपट्टे ।

७. ० गमणमरणेणं (ता); पाओवगमरणेणं (व) ।

गोयमा ! दुविहे पणत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमं अप-
डिकम्मे ॥

१४५. भत्तपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पणत्ते ?

१० गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । १० नियम
सपडिकम्मे ॥

१४६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देशो

कम्मपगडि-पदं

१४७. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पणत्ताओ । एव बंधट्ठिह-उद्देशो भाणियव्वो
निरवसेसो जहा* पणवणाए* ॥

१४८. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

नवमो उद्देशो

भावियप्प-विउव्वणा-पदं

१४९. रायगिहे जाव* एव वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय
गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएण अप्पा-
णेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

१. स० पा०—एव ता चेव नवर नियमं सप-
डिकम्मे ।

२. भ० १।५१ ।

३. उद्देशो (क, ता, ब, म) ।

४. प० २४ ।

५. इह च वाचनान्तरे संग्रहणीगाथास्ति, सा

चेयं—

पयडीण भेयठिई, बधोवि य इदियाणुवाएण ।

केरिसय जहन्नठिइ, बधइ उक्कोसिय वावि ॥

(वृ) ।

६. भ० १।५१ ।

७. भ० १।४-१० ।

यं नतं (नवमो उद्देशो)

१०. अणगारे णं भते । भाविअप्पा केवत्तियाऽं पभू केयापिअकिच्चवत्तययाऽं रुवाड विउच्चित्तण ?

गोयमा ! मे जहानामए जुवनि जुवाणे हत्थेण हत्थे ॥ गच्छेज्जा, नवत्तण वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउच्चियगमुग्घाण समोहणउ जाव' पभू ण गोयमा । अणगारे ण भाविअप्पा केवत्तयय जुवुद्धीवं दीवं वहुहि इत्थिरुवेहि आडण विनिकिण उवत्थउ मयउ फुड अवगाटावगाड करेत्ता । एम ण गोयमा । अणगारस्म भाविअप्पा अयमेवत्तये विमए, विमयमेत्ते वुडण^०, तो चेव णं मयत्ताण विउच्चियमु वा विउच्चियि वा विउच्चिय-स्सति वा ॥

१११. मे जहानामए केड पुरिसे हिरणपेलं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा हिरणपेलहत्थकिच्चगएण' अण्णाणेण उड्ड वेहान उप्पएज्जा ?

मेस त चेव एव मुवणपेल, एव रयणपेलं, वडरणं, वत्थपेलं, आभरणपेल, एवं वियलकड', सुवकड', चम्मकड', कवलकड', एव अयभार, तयभार, तउय-भारं, सोरागभार, हिरणभार, सुवणभार, वडरभार ॥

११२. मे जहानामए वग्गुलो सिया, दो वि पाण उरलविया-उल्लविया उड्डपादा अहोसिरा चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वग्गुलीकिच्चगएण अण्णाणेण उड्ड वेहान उप्पएज्जा ?

एव जण्णोवत्थवत्तव्वया भाणियव्वा जाव' विउच्चियस्सति वा ॥

११३. मे जहानामए जलोया सिया, उदगमि काय उच्चिहिया-उच्चिहिया गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, मेम जहा वग्गुलीए ॥

११४. मे जहानामए वीयवीयममउणे' सिया, दो वि पाण समतुरगेमाणे-मसतुरगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, मेम त चेव ॥

११५. मे जहानामए पत्तिविरालण मिरा, गववाओ गवव उवेमाने-उवेमाने गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, मेम त चेव ॥

१ मेव पत्तिवारत्त (२१) विउच्चियाऽं (र, ग, ३ मृउत्त (३); मृउत्त (ग, व); मृउत्त (ग, व, म, न) । (ग); मृउत्त (र), ० विउत्त (म) ।

२ म० पा० गव गहा नत्तमए पवमृदेव ३ ० विउत्त (१, ग, २), ० विउत्त (१, २, ३, ४) । विउत्त (म) ।

३ म० ३१८ । ८ ० विउत्त (ग, र, व); ० विउत्त (ग

८ विउत्त (ग), विउत्त (ग, र, ३) । ० विउत्त (म) ।

५ ८ (ग, व, म) । १०. १०० ३०००, ३०३ ।

६ विउत्त (ग, र, व, न); विउत्त (ग, र, ३) । ११. ० विउत्त (ग, र, ३) ।

(३) ।

१५६. से जहानामए जीवंगीवगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेस त चेव ॥
१५७. से जहानामए हसे सिया, तीराओ तीरं अभिरममाणे-अभिरममाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा हसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ॥
१५८. से जहानामए समुद्वायसए सिया, वीईओ वीइ डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, तहेव ॥
१५९. से जहानामए केइ पुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा चक्कहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेण, सेसं जहा^१ केयाघडियाए । एवं छत्त, एवं चम्म^२ ॥
१६०. से जहानामए केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेज्जा, एव चेव । एवं वइरं, वेसलियं जाव^३ रिट्ठ । एव उप्पलहत्थगं, एवं पउमहत्थगं, कुमुदहत्थगं, *नलिनहत्थगं, सुभगहत्थगं, सुगधियहत्थगं, पोंडरीयहत्थगं, महापोडरीयहत्थगं, सयपत्तहत्थगं^४, से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तग गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव ॥
१६१. से जहानामए केइ पुरिसे भिस अवहालिय-अवहालिय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ॥
१६२. से जहानामए मुणालिया सिया, उदगसि काय उम्मज्जिया-उम्मज्जिया चिट्ठेज्जा, एवामेव, सेसं जहा^५ वग्गुलीए ॥
१६३. से जहानामए वणसडे सिया—किण्हे किण्होभासे जाव^६ महामेहनिकुरबभूए^७, पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वणसडकिच्चगएणं अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ? सेस त चेव ॥
१६४. से जहानामए पुक्खरणी सिया—चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीरसीयलजला जाव^८ सद्धुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा पोक्खरणीकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ? हंता उप्पएज्जा ॥
१६५. अणगारे णं भते ! भाविअप्पा केवतियाइ पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइं रूवाइ विउव्वित्तए ? सेसं त चेव जाव विउव्विस्सति वा ॥

१. भ० १३।१४९, १५० ।

२. चमरं (म) ।

३. भ० ३।४ ।

४. सं० पा०—एव जाव से ।

५. भ० १३।१५२ ।

६. ओ० सू० ४ ।

७. °निकुव्वभूए (ख); °निकुव्वभूए (ता, व) ।

८. ओ० सू० ६, भ० वृत्ति ।

१६६. मे भन्ते । किं मायी विउव्वनि ? अमायी विउव्वनि ?

१६६. सोयमा ! मायी विडुव्वनि, नो अमायी विडुव्वनि । मायी ण नम्म ठाणम्म
अणानोडय^१ पडिक्कते कालं करेड, नत्थि नम्म आराहणा । अमायी ण नम्म
ठाणम्म अणानोडय-पडिक्कते कालं करेड^२, अन्थि नम्म आराहणा ॥

१६७. गेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

ਦਸਮੀ ਉਦੇਸੀ

छाउमत्तियससुग्घाय-पदं

१६८. कति ण भते ! छाडमस्सियनमुग्धाया पण्णत्ता ?

गोयमा । छ छाउमत्थिया समुग्धाया पण्णत्ता, त जहा—वैयणाममुग्धाया, एव
छाउमत्थियसमुग्धाया नेयन्वा, जहा पणवण्णा, जाव' आहारगममुग्धायेनि ॥

१६६. मेवं भते ! मेवं भते ! त्ति जाव^३ विहरड ॥

१ म० तले - २५ यत्न उत्पन्न नवतुल्यता ३ म० २६ ।

॥ १ ॥

✓ 75 1182 1

2. 50 1123

चोद्दसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. चर २. उम्माद ३. सरीरे, ४. पोगल ५. अगणी तहा ६. किमाहारे ।
७, ८. ससिट्टमंतरे^१ खलु, ९. अणगारे १०. केवली चैव ॥ १ ॥

लेस्साणुसारि-उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव^२ एवं वयासी—अणगारे ण भंते । भावियप्पा चरम देवावासं वीतिक्कते, परमं देवावासमसंपत्ते, एत्थ ण अंतरा कालं करेज्जा, तस्स ण भंते !
कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ^३ तल्लेसा देवावासा, तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते । से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव^४ पडिपडति^५, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्स उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥
२. अणगारे ण भंते । भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीतिक्कते, परमं असुर-
कुमारावासमसंपत्ते, एत्थ ण अंतरा कालं करेज्जा, तस्स ण भंते ! कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ तल्लेसा असुरकुमारावासा, तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते । से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडि-
पडति, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्स उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।^६
एवं जाव थणियकुमारावासं, जोइसियावासं, एव वेमाणियावासं जाव विहरइ ॥

१. ससिट्ट^० (अ, क, ख, व, म, स) ।

२. म० १४-१० ।

३. पलियस्सओ (ख); परियस्सतो (व, म) ।

४. ०मेवा (क, व) ।

५. परिपडइ (ता) ।

६. सं० पा०—एवं चैव ।

नेरइयादीणं गतिविसय-पदं

३. नेरइयाण भते ! कह सीहा गती ? कहं सीहे गतिविसए पणत्ते ?
 गोयमा ! से जहानामए—केइपुरिसे तरुणे बलवं जुगवं* •जुवाणे अप्पातंके
 थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिटुत्तरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-
 बाहू चम्मेटुग-दुहण-मुट्ठिय-समाहृत-निचित-गत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए
 लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे °
 निउणसिप्पोवगए आउटिय° वाह पसारेज्जा, पसारियं वा बाहं आउटेज्जा°,
 विक्खिण्ण वा मुट्ठि साहरेज्जा, साहरिय वा मुट्ठि विक्खिरेज्जा, उम्मिसिय° वा
 अच्छि निम्मिसेज्जा, निम्मिसिय वा अच्छि उम्मिसेज्जा, 'भवे एयारूवे'° ? नो
 इणट्ठे समट्ठे । नेरइया ण एगसमइएण° वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्ग-
 हेण उववज्जति । नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए
 पणत्ते । एव जाव वेमाणियाणं, नवर—एगिदियाण चउसमइए विग्गहे भाणि-
 यव्वे । सेसं त चेव ॥

नेरइयादीणं अणंतरोववन्नगादि-पदं

४. नेरइया ण भते ! कि अणतरोववन्नगा ? परपरोववन्नगा ? अणंतर-परंपर-
 अणुववन्नगा ?
 गोयमा ! नेरइया अणतरोववन्नगा वि, परपरोववन्नगा वि, अणंतर-परंपर-
 अणुववन्नगा वि ॥
५. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ°—नेरइया अणतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा
 वि °, अणतर-परपर-अणुववन्नगा वि ?
 गोयमा ! जे ण नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते ण नेरइया अणंतरोववन्नगा,
 जे ण नेरइया अपढमसमयोववन्नगा ते ण नेरइया परपरोववन्नगा, जे ण
 नेरइया विग्गहगइसमावन्नगा ते ण नेरइया अणतर-परपर-अणुववन्नगा । से
 तेणट्ठेण जाव अणतर-परपर-अणुववन्नगा वि । एव निरतर जाव वेमाणिया ॥
६. अणतरोववन्नगा णं भते ! नेरइया किं नेरइयाउय पकरेति ? तिरिक्ख-मणुस्स-
 देवाउय पकरेति ?
 गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति जाव नो देवाउय पकरेति ॥

१. स० पा०—जुगवं जाव निउण° । उणिसियं (ख) ।
 २. आउटिय (अ, ख, स), आउटिय (क); ५. भवे एयारूवे सिया (अ), भवेयारूवे (क,
 आउटिय (ता) । ख, ता, व, म) ।
 ३. आउटिज्जा (ता) । ६. °समएण (अ) ।
 ४. अणिसिय (अ, क, ता, व, म, स); ७. स० पा०—वुच्चइ जाव अणतर ।

७. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउयं पकरेति ?
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, नो देवाउयं पकरेति ॥
८. अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेति—
 पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति जाव नो देवाउयं पकरेति । एवं जाव वेमा-
 णिया, नवरं—पच्चिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि
 वि आउयाइं पकरेति । सेसं तं चेव ॥
९. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरनिग्गया ? परंपरनिग्गया ? अणतर-परंपर-
 अणिग्गया ?
 गोयमा ! नेरइया अणंतरनिग्गया वि, 'परंपरनिग्गया वि', अणतर-परंपर-
 अणिग्गया वि ॥
१०. से केणट्ठेणं जाव अणंतर-परंपर-अणिग्गया वि ?
 गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे
 णं नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया परंपरनिग्गया, जे णं नेरइया
 विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतर-परंपर-अणिग्गया । से तेणट्ठेण
 गोयमा ! जाव अणंतर-परंपर-अणिग्गया वि । एवं जाव वेमाणिया ॥
११. अणंतरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउयं
 पकरेति ?
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति जाव नो देवाउयं पकरेति ॥
१२. परंपरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेति—पुच्छा ।
 गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेति जाव देवाउयं पि पकरेति ॥
१३. अणंतर-परंपर-अणिग्गया णं भंते ! नेरइया—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति जाव नो देवाउयं पकरेति । निरवसेस जाव
 वेमाणिया ॥
१४. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरखेदोववन्नगा^१ ? परंपरखेदोववन्नगा ? अणंतर-
 परंपर-खेदाणुववन्नगा ?
 गोयमा ! नेरइया अणंतरखेदोववन्नगा वि, परंपरखेदोववन्नगा वि, अणतर-

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, भ, स) ।

२. ^०खेतोववन्नगा (क, व); खेतोववन्नगा
 (ता) ।

परंपर-खेदानुवन्तगा वि । एवं एएणं अभिलावेण ते^१ चेव चत्तारि दडगा भाणियन्वा ॥

१५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव^५ विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

उम्माद-पवं

१६. कतिविहे ण भते ! उम्मादे पणत्ते ?

गोयमा ! दुविहे उम्मादे पणत्ते, त जहा—जक्खाएसे^५ य, मोहणिज्जस्स य^६ कम्मस्स उदएण । तत्थ ण जे से जक्खाएसे से ण सुहवेयणतराए चेव सुहविमोयणतराए चेव । तत्थ ण जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से ण दुहवेयणतराए चेव दुहविमोयणतराए चेव ॥

१७. नेरइयाणं भते ! कतिविहे उम्मादे पणत्ते ?

गोयमा ! दुविहे उम्मादे पणत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएण ॥

१८. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पणत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स 'य कम्मस्स'^७ उदएणं ?

गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से ण तेसि असुभाण पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्माद पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्ज उम्माय पाउणेज्जा । से तेणट्ठेणं^८ गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पणत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स^९ उदएणं ॥

१९. असुरकुमाराणं भते ! कतिविहे उम्मादे पणत्ते ?

गोयमा ! दुविहे उम्मादे पणत्ते, त जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स कम्मस्स य उदएण ॥

२०. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं दुविहे उम्मादे पणत्ते, त जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएण ?

१ त (व) ।

२. भ० १।५१ ।

३ जक्खादेसे (ता), जक्खायेसे (व), जक्खावेसे (व^०) ।

४. व (ता); वा (स) ।

५. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

६ स० पा०—तेणट्ठेणं जाव उदएण ।

७. उम्मादे (अ) ।

८, स० पा०—एवं जहेव नेरइयाणं नवरं देवे ।

गोयमा ! ° देवे वा से महिद्धितराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से ण तेसि असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा °कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणिज्जा ° । से तेणट्ठेण जाव उदएणं । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविव्काइयाणं जाव मणुस्साण—एएसि जहा नेरइयाणं, वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराण ॥

बुद्धिकायकरण-पदं

२१. अत्थि णं भंते ! पज्जण्णे^१ कालवासी बुद्धिकायं पकरेति^२ ?

हंता अत्थि ॥

२२. जाहे णं भंते ! सक्के देविदे देवराया बुद्धिकायं काउकामे भवइ से कहमियाणि पकरेति ?

गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविदे देवराया अग्निभतरपरिसए देवे सद्दावेइ । तए णं ते अग्निभतरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति । तए णं ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेति । तए णं ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरवाहिरगे देवे सद्दावेति । तए णं ते बाहिरवाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेति । तए णं ते °आभिओगिया देवा° सद्दाविया समाणा बुद्धिकाइए देवे सद्दावेति । तए णं ते बुद्धिकाइया देवा सद्दाविया समाणा बुद्धिकायं पकरेति । एवं खलु गोयमा ! सक्के देविदे देवराया बुद्धिकायं पकरेति ॥

२३. अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा बुद्धिकायं पकरेति ?

हंता अत्थि ॥

२४. किपत्तिं णं भंते ! असुरकुमारा देवा बुद्धिकायं पकरेति ?

गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो—एएसि णं जम्मणमहिमासु वा निक्खमण-महिमासु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिब्बाणमहिमासु वा, एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा बुद्धिकायं पकरेति । एवं नागकुमारा वि, एव जाव थणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एव चेव ॥

तमुक्कायकरण-पदं

२५. जाहे णं भंते ! ईसाणे देविदे देवराया तमुक्कायं काउकामे भवति से कह-मियाणि पकरेति ?

१. सं० पा०—सेसं तं चेव ।

२. पज्जुणे (क, ता, म) ।

३. इह स्थाने शक्नोति तं प्रकरोतीति दृश्यम् (वृ)।

४. °परिसोववण्णगा (अ, ख, व) ।

५. सं० पा०—ते जाव सद्दाविया ।

गोयमा ! ताहू चैव ण से ईसाणे देविदे देवराया अन्धितरपरिसए देवे सद्दावेति । तए ण ते अन्धितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा *मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति । तए ण ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेति । तए ण ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेति । तए ण ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेति । तए ण ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्काइए देवे सद्दावेति । तए ण ते तमुक्काइया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्काय पकरेति । एव खलु गोयमा ! ईसाणे देविदे देवराया तमुक्काय पकरेति ॥

२६ अत्थि ण भते ! असुरकुमारा वि देवा तमुक्काय पकरेति ?
हुता अत्थि ॥

२७. कपित्ति ण भते ! असुरकुमारा देवा तमुक्काय पकरेति ?
गोयमा ! किड्ढा-रतिपित्तियं वा पडिणीयविमोहणद्वयाए वा गुत्तीसारक्खणहेउ वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणद्वयाए, एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा वि देवा तमुक्काय पकरेति । एवं जाव' वेमाणिया ॥

२८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

विणयविहि-पदं

२६ *देवे ण भते ! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेण^१
वीइवएज्जा ?

गोयमा ! अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ॥

३० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो
वीइवएज्जा ?

गोयमा ! दुविहा देवा पणत्ता, त जहा—मायीमिच्छादिद्वीउववन्तगा य,

१. स० पा०—एव जहेव सक्कस्स जाव तए ।

२. म० १४।२३ ।

३. म० १।५१ ।

४ उद्देशकस्य प्रारम्भे क्वचिदिय द्वास्वगाथा
दृश्यते—

महक्काए सक्कारे,

सत्येण वीइवयति देवा उ ।

वास चैव य ठाणा,

नेरइयाण तु परिणामे ॥

५. मज्झेण मज्झेणं (अ, क, ख, ता, व) ।

- अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य । तत्थ णं जे से मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नए^१ देवे
 से णं अणगार भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता नो वदइ, नो नमसइ, नो सक्कारेइ,
 नो सम्माणेइ, नो कल्लाण भगल देवय चेइयं^२ पज्जुवासइ । से ण अणगारस्स
 भावियप्पणो मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा । तत्थ णं जे से अमायीसम्मदिट्ठी-
 उववन्नए देवे से ण अणगार भावियप्पाण पासइ, पासित्ता वदइ नमसइ^३
 •सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण भगल देवय चेइयं^४ पज्जुवासइ । से ण
 अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेणं नो वीइवएज्जा । से तेणट्ठेण गोयमा !
 एव वुच्चइ^५—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए^६ नो वीइवएज्जा ॥
३१. असुरकुमारे णं भते ! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झ-
 मज्झेणं वीइवएज्जा ? एव चेव । एव देवदडओ भाणियव्वो जाव^७ वेमाणिए ॥
३२. अत्थि णं भते ! नेरइयाण सक्कारे इ वा ? सम्माणे इ वा ? किइकमे इ
 वा ? अब्भुट्ठाणे इ वा ? अजलिपग्गहे इ वा ? आसणाभिग्गहे इ वा ? आस-
 णाणुप्पदाणे इ वा ? एतस्स^८ पच्चुग्गच्छणया ? ठियस्स पज्जुवासणया ?
 गच्छतस्स पडिससाहणया ?
 नो इणट्ठे समट्ठे ॥
३३. अत्थि णं भते ! असुरकुमारणं सक्कारे इ वा ? सम्माणे इ वा जाव गच्छतस्स
 पडिससाहणया वा ?
 हुता अत्थि । एव जाव थणियकुमारान । पुढविकाइयाण जाव चर्जरीदियाण—
 एसि^९ जहा नेरइयाणं ॥
३४. अत्थि णं भते ! पच्चिदियतिरिक्खजोणियाणं सक्कारे इ वा जाव गच्छतस्स
 पडिससाहणया वा ?
 हुता अत्थि । नो चेव णं आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा ॥
३५. •अत्थि णं भते ! मणुस्साणं सक्कारे इ वा ? सम्माणे इ वा ? किइकमे इ
 वा ? अब्भुट्ठाणे इ वा ? अजलिपग्गहे इ वा ? आसणाभिग्गहे इ वा ? आस-
 णाणुप्पदाणे इ वा ? एतस्स पच्चुग्गच्छणया ? ठियस्स पज्जुवासणया ? गच्छ-
 तस्स पडिससाहणया ?
 हुता अत्थि । वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमारणं ॥

१. °मिच्छदिट्ठी ° (अ, क, ख, ब, म, स) ।

२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

३. स० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासइ ।

४. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो ।

५. भ० १४।२३ ।

६. इतस्स (अ) ।

७. पच्चप्पत्थणया (अ) ।

८. एसि (क, ख, ता, ब, म) ।

९. स० पा०—मणुस्साण जाव वेमाणियाण ।

३६. अप्पिड्ढिए^१ ण भते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्जेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
३७. समिड्ढिए^२ ण भते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्जेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्त पुण वीइवएज्जा ॥
३८. से ण भते ! कि सत्थेण अक्कमित्ता पभू ? अणक्कमित्ता पभू ?
गोयमा ! अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू ॥
३९. से ण भते ! कि पुंवि सत्थेण अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुंवि वीइव-
इत्ता पच्छा सत्थेण अक्कमेज्जा ?
गोयमा ! पुंवि सत्थेण अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुंवि वीइवइत्ता
पच्छा सत्थेण अक्कमिज्जा । एव एएण अभिलावेण जहा दसमसए आइड्डी-
उद्दसए^३ तहेव निरवसेस चत्तारि दडगा भाणियव्वा जाव^४ महिड्ढिया वेमाणिणी
अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए ॥
४०. रयणप्पभपुढविनेरइया ण भते ! केरिसयं पोग्गलपरिणाम पच्चणुब्भवमाणा
विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठं^५ अकत अप्पियं असुभं अमणुण्णं^६ अमणाम । एव जाव
अहेसत्तमापुढविनेरइया ॥
४१. रयणप्पभपुढविनेरइया ण भते ! केरिसयं वेदनापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा
विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ।^७ एवं जहा जीवाभिगमे वित्तिए नेरइयउ-
द्दसए जाव^८—
४२. अहेसत्तमापुढविनेरइया ण भते ! केरिसयं परिग्गहसण्णापरिणाम पच्चणुब्भ-
वमाणा विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणाम ॥
४३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^९ ॥

१. अप्पिड्ढीए (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. समिड्ढीए (अ, क, व, म); समड्ढीए (ता, स) ।

३. आतिड्ढीयउद्दसए (ता, व, म) ।

४. म० १०।२८-३८ ।

५. सं० पा०—अणिट्ठं जाव अमणामं ।

६. सं० पा०—एव वेदनापरिणामं ।

७. जी० ३ ।

८. म० १।५१ ।

चउत्थो उद्देसो

पोग्गल-जीव-परिणाम-पदं

४४. 'एस ण भंते ! पोग्गले तीतमणंत सासय समयं लुक्खी ? समय अलुक्खी ? समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुब्बि च णं करणेणं अणेगवण्णं अणेगरूढ परिणाम परिणमइ ? अहे से परिणामे निज्जिण्णे भवइ, तन्नो पच्छा एगवण्णे एगरूढे सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतमणंत सासय समयं तं चेव जाव एगरूढे सिया ॥
४५. एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्न सासय समयं लुक्खी ? एव चेव ॥
४६. 'एस णं भंते ! पोग्गले अणागयमणंत सासय समय लुक्खी ? एव चेव ० ॥
४७. एस णं भंते ! खंघे तीतमणंत सासयं समयं लुक्खी ? एव चेव खंघे वि जहा पोग्गले ॥
४८. एस णं भंते ! जीवे तीतमणंत सासयं समयं दुक्खी ? समय अदुक्खी ? समय दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुब्बि च णं करणेणं अणेगभावं अणेगभूय परिणाम परिणमइ ? अहे से वेयणिज्जे निज्जिण्णे भवइ, तन्नो पच्छा एगभावे एगभूए सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं जीवे तीतमणंत सासय समयं जाव एगभूए सिया । एव पडुप्पन्न सासयं समयं, एव अणागयमणंतं सासय समय ॥
४९. परमाणुपोग्गले ण भंते ! किं सासए ? असासए ?
गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए ॥
५०. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासए, सिय असासए ?
गोयमा ! दव्वट्टयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं *गघपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं* फासपज्जवेहिं असासए । से तेणट्टेणं *गोयसा ! एव वुच्चइ ०—सिय सासए, सिय असासए ॥
५१. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! दव्वादेसेण नो चरिमे, अचरिमे । खेत्तादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे । कालादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे । आवादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे ॥

१. इह पुनरुद्देशकार्यसंग्रहगांध्या क्वचिद् दृश्यते,
सा चय—

१. पोग्गल २. खंघे ३. जीवे,

४. परमाणू ५. सासए य चरमे य ।

६. दुविहे खलु परिणामे,

अज्जीवाण च जीवाण ॥

२. सं० पा०—एव अणागयमणंतं पि ।

३. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव फास ० ।

४. सं० पा०—तेणट्टेण जाव सिय ।

५२ कतिविहे णं भते ! परिणामे पणत्ते ?

गोयमा ! दुविहे परिणामे पणत्ते, त जहा—जीवपरिणामे य, अजीवपरिणामे य । एव परिणामपय^१ निरवसेस भाणियव्व ॥

५३. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव^२ विहरइ ॥

पंचमो उद्देशो

अगणिकायस्स अतिक्कमण-पदं

५४. 'नेरइए ण भते ! अगणिकायस्स मज्झमज्झेण^३ वीइवएज्जा ?

गोयमा ! अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ॥

५५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पणत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य । तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ।

से ण तत्थ भियाएज्जा ?

नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ । तत्थ ण जे से अविग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झमज्झेण नो वीइवएज्जा । से तेणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ॥

५६. असुरकुमारे ण भते ! अगणिकायस्स *मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? *

गोयमा ! अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ॥

५७. से केणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ?

गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पणत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य । तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए असुरकुमारे से ण—एव जहेव नेरइए जाव कमइ । तत्थ ण जे से अविग्गहगतिसमावन्नए

१. प० १३ ।

२. म० १।५१ ।

३. इह च क्वचिदुद्देशकार्यसंग्रहगथा दृश्यते,

सा ज्ञेय—

नेरइय अगणिमज्जे,

दस ठाणा तिरिय पोग्गले देवे ।

पव्वयमिन्ती उल्लघणा,

य पल्लघणा चेव ॥

४. मज्झेणं मज्जेण (अ, क, ख, ता, द) ।

५. स० पा०—पुच्छा ।

असुरकुमारे से णं अत्येगतिए अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ।

जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ भियाएज्जा ?

नो इण्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । से तेणट्ठेण । एवं जाव थणियकुमारा । एगिदिया जहा नेरइया ॥

५८. वेइंदिया ण भते ! अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?

जहा असुरकुमारे तहा वेइंदिएवि, नवरं—

जे णं वीइवएज्जा से णं तत्थ भियाएज्जा ?

हंता भियाएज्जा । सेसं तं चेव । एवं जाव चउरिदिए ॥

५९. पंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! अगणिकायस्स ^{१०}मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ० ?

गोयमा ! अत्येगतिए वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ॥

६०. से केणट्ठेणं ?

गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगति-समावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य । विग्गहगतिसमावन्नए जहेव नेरइए जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । अविग्गहगतिसमावन्नगा पंचिदियतिरिक्खजो-णिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इड्ढिप्पत्ता य, अणिड्ढिप्पत्ता य । तत्थ ण जे से इड्ढिप्पत्ते पंचिदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्येगतिए अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ।

जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ भियाएज्जा ?

नो इण्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । तत्थ णं जे से अणिड्ढिप्पत्ते पंचिदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्येगतिए अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्येगतिए नो वीइवएज्जा ।

जे णं वीइवएज्जा से ण तत्थ भियाएज्जा ?

हंता भियाएज्जा । से तेणट्ठेणं जाव नो वीइवएज्जा । एवं मणुस्से वि । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा असुरकुमारे ॥

पच्चणुब्भव-पदं

६१. नेरइया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—अणिट्ठा सहा, अणिट्ठा ख्वा, अणिट्ठा गंवा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा, अणिट्ठा गती, अणिट्ठा ठिती, अणिट्ठे लावण्णे, अणिट्ठे जसे किती, अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म^१-वल-वीरिय-पुरिस-क्कार-परक्कमे ॥

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. लायण्णे (ता) ।

३. कम्मए (ता) ।

६२. असुरकुमारा दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तं जहा—इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा जाव इट्ठे उट्ठाण-कम्म-वल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे । एव जाव थणियकुमारा ॥
६३. पुढविक्काइया छट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा फासा, इट्ठाणिट्ठा गती, एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे । एव जाव वणस्सइकाइया ॥
६४. वेइदिया' सत्तट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा रसा, सेस जहा एगिदियाण ॥
६५. तेइदिया अट्ठट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा गघा, सेसं जहा वेइदियाणं ॥
६६. चउरिदिया नवट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा रूवा, सेस जहा तेइदियाण ॥
६७. पच्चिदियतिरिक्खजोगिया दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा सद्दा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे । [एव मणुस्सा वि, वाणमंतर-जोइ-सिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

देवस्स उल्लघण-पल्लघण-पदं

६८. देवे णं भते ! महिइढीए जाव' महेसक्खे' वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तिरियपव्वय वा तिरियभित्ति वा उल्लघेत्तए वा पल्लघेत्तए वा ?
'नो इणट्ठे समट्ठे ॥
६९. देवे ण भते ! महिइढीए जाव महेसक्खे वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरिय'पव्वय वा तिरियभित्ति वा उल्लघेत्तए वा ° पल्लघेत्तए वा ?
हता पभू ॥
७०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

१. वेदिया (व) ।

२. भ० १।३३६ ।

३. महेसक्के (व) ।

४. गो नो (अ, ख) ।

५. सं० पा०—तिरिय जाव पल्लघेत्तए ।

६. भ० १।५१ ।

छटो उद्देशो

नेरइयादीणं किमाहारादि-पदं

७१. रायगिहे जाव^१ एवं वयासि—नेरइया ण भते ! किमाहारा, किपरिणामा, किजोणिया^२, किठितीया पण्णत्ता ?
 गोयमा ! नेरइया ण पोमगलाहारा, पोमगलपरिणामा, पोमगलजोणिया, पोमगल-
 द्वितीया, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मद्वितीया, कम्मुणामेव^३ विप्परिया-
 समेंति । एवं जाव वेमाणिया ॥
७२. नेरइया ण भते ! कि वीचीदव्वाइ^४ आहारेति ? अवीचीदव्वाइ^५ आहारेति ?
 गोयमा ! नेरइया वीचीदव्वाइ^६ पि आहारेति, अवीचीदव्वाइ^७ पि आहारेति ॥
७३. से केणट्टेणं भते ! एवं वुच्चइ^८—नेरइया वीची^९•दव्वाइ^{१०} पि आहारेति, अवीची-
 दव्वाइ^{११} पि^{१२} आहारेति ?
 गोयमा ! जे णं नेरइया एगपएसूणाइं पि दव्वाइ आहारेति, ते ण नेरइया
 वीचीदव्वाइ आहारेति, जे ण नेरइया पडिपुण्णाइ दव्वाइ आहारेति, ते ण
 नेरइया अवीचीदव्वाइ आहारेति । से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चइ^{१३}—
 •नेरइया वीचीदव्वाइं पि आहारेति, अवीचीदव्वाइं पि^{१४} आहारेति । एव
 जाव वेमाणिया^{१५} ॥

देविदाणं भोग-पदं

७४. जाहे णं भते ! सक्के देविदे देवराया दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजिउकामे^१ भवइ
 से कहूमियाणिं पकरेति ?
 गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविदे देवराया एग मह नेमिपडिरुवग
 विउव्वइ—एग जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ
 जाव^२ अद्धंगुलं च किच्चिविसेसाहियं परिक्खेवेण । तस्स ण नेमिपडिरुवगस्स^३
 उवरि^४ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव^५ मणीणं फासो । तस्स ण
 नेमिपडिरुवगस्स बहुमज्जदेसभागे, एत्थ^६ णं मह एगं पासायवडेसगं विउव्वइ—

१. भ० १।४-१० ।

२. किजोणीया (अ, व, म) ।

३. कम्मणामेव (व) ।

४. वीचि^० (अ, क, ख, व, म, स) ।

५. सं० पा०—तं चेव जाव आहारेति ।

६. सं० पा०—वुच्चइ जाव आहारेति ।

७. ०णिया आहारेति (स) ।

८. भोजिउकामे (ख); भुजउकामे (स) ।

९. भ० ६।७५ ।

१०. नेमिरुवस्स (ख, ता, व) ।

११. अवरि (ख, ता, म); अवरि (व) ।

१२. राय० सू० २४-३१ ।

१३. तत्थ (अ, क, ता, व, म, स) ।

पंच जोयणसयाइं उड्डं उच्चत्तेणं, अड्डाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, अन्भुगय-मूसिय-पहूसियमिव वण्णओ जाव' पडिख्वे । तस्स णं पासायवडेसगस्स उल्लोए पउमलयामत्तिचित्ते जाव' पडिख्वे । तस्स णं पासायवडेसगस्स अतो वहूसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव मणीणं फासो, मणिपेढिया अट्टजोयणिया जहा' वेमाणियाण । तीसे ण मणिपेढियाए उवरिं महं 'एगे देवसयणिज्जे' विउव्वइ, सयणिज्जवण्णओ जाव' पडिख्वे । तत्थ ण से सक्के देविदे देवराया अट्टहिं अग्गमहिंसीहिं सपरिवाराहिं, दोहि य अणिएहिं—नट्टाणिण य गंधव्वाणिण य सद्धिं महयाह्यनट्ट—*गीय-वाइय-तत्ती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइय-रवेण° दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ ॥

७५. जाहे ईसाणे देविदे देवराया दिव्वाइ भोगभोगाइं भुजिउकामे भवइ से कहमि-याणि पकरेति ?

जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेस । एव सणकुमारे वि, नवरं—पासायवडें-सओ छ जोयणसयाइ उड्डं उच्चत्तेण, तिणिण जोयणसयाइं विक्खंभेण, मणि-पेढिया तहेव अट्टजोयणिया । तीसे ण मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महंगं सीहासण विउव्वइ, सपरिवार भाणियव्व° । तत्थ ण सणकुमारे देविदे देवराया वावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव' चउहिं य वावत्तरीहिं आयरक्खदेव-साहस्सीहिं य वट्टहिं सणकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं य देवीहिं य सद्धिं सपरिवुडे महयाह्यनट्ट जाव' विहरइ । एवं जहा सणकुमारे तहा जाव पाणओ अच्चुओ, नवरं—जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो° । पासायउच्चत्त—ज सएसु-सएसु कप्पेसु विमाणाण उच्चत्तं, अद्धद्धं वित्थारो जाव'° अच्चुयस्स नवजोयणसयाइं उड्डं उच्चत्तेण, अद्धपचमाइं जोयणसयाइं विक्खंभेण । 'तत्थ ण'° अच्चुए देविदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरइ, सेस त चेव ॥

७६. सेव भते । सेव भते । त्ति° ॥

१. राय० सू० १३७ ।

२. राय० सू० ३४ ।

३. राय० सू० ३६ ।

४. विभक्तिव्यत्ययेन 'एग देवसयणिज्जं' ।

५. राय० सू० २४५ ।

६. अणिएहिं त (अ) ।

७. स० पा०—महयाह्यनट्ट जाव दिव्वाइं ।

८. राय० सू० ३७-४४ ।

९. प० २ ।

१०. म० १४।७४ ।

११. प० २ ।

१२. म० ११।६४ ।

१३. एत्थ णं गो (अ) ।

१४. म० १।५१ ।

सत्तमो उद्देशो

गोयमस्स आसासण-पदं

७७. रायगिहे जाव^१ परिसा पडिगया । गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयम आमतेत्ता एवं वयासी - चिर ससिद्धोसि मे गोयमा ! चिरसंशुओसि मे गोयमा ! चिरपरिचिओसि मे गोयमा ! चिरजुसिओसि^३ मे गोयमा ! चिराणुगओसि मे गोयमा ! चिराणुवत्तीसि मे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणतरं माणुस्सए भवे, किं परं मरणा कायस्स भेदा इओ चुता दो वि तुल्ला एगद्धा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो ॥
७८. जहा ण भते ! वय एयमट्ठ जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासति ?
हंता गोयमा ! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ॥
७९. से केणट्ठेण^२ भंते ! एवं वुच्चइ—वयं एयमट्ठ जाणामो-पासामो, तहा ण अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति^०-पासति ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणताओ मणोदव्वमणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमणागयाओ भवंति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ^४—वयं एयमट्ठ जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति^०-पासंति ॥

तुल्लय-पदं

८०. कतिविहे णं भते ! तुल्लए पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वतुल्लए, खेत्तुल्लए, काल-तुल्लए, भवतुल्लए, भावतुल्लए, सठाणतुल्लए ॥
८१. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए ?
गोयमा ! परमाणुपोगले परमाणुपोगलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोगले परमाणुपोगलवइरित्तस्स दव्वओ नो तुल्ले । दुपएसिए खधे दुपएसियस्स खधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खधे दुपएसियवइरित्तस्स खधस्स दव्वओ नो तुल्ले । एव जाव दसपएसिए । तुल्लसखेज्जपएसिए खधे तुल्लसखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसखेज्जपएसिय-वइरित्तस्स खधस्स दव्वओ नो तुल्ले, एव तुल्लअसखेज्जपएसिए वि, एव तुल्ल-

१. भ० १।४-८ ।

२. चिरजुसिओसि (ता, म) ।

३. स० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति ।

४. सं० पा०—वुच्चइ जाव पासति ।

अणंतपएसिए वि । से तेणट्टेणं गोयमा । एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए । से केणट्टेण भंते । एव वुच्चइ—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए ?

गोयमा । एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले, एवं जाव दसपएसोगाढे । तुल्लसखेज्जपएसोगाढे* पोग्गले तुल्लसखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, तुल्लसखेज्जपएसोगाढे पोग्गले तुल्लसखेज्जपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले*, एवं तुल्लअसखेज्जपएसोगाढे वि । से तेणट्टेणं* गोयमा । एवं वुच्चइ*—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए । से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—कालतुल्लए-कालतुल्लए ?

गोयमा । एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयस्स पोग्गलस्स कालओ तुल्ले, एकसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयवइरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ नो तुल्ले, एव जाव दससमयठितीए, तुल्लसखेज्जसमयठितीए एवं चेव, एव तुल्लअसखेज्जसमयठितीए वि । से तेणट्टेणं* गोयमा । एव वुच्चइ*—कालतुल्लए-कालतुल्लए ।

से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—भवतुल्लए-भवतुल्लए ?

गोयमा । नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइयवइरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एव चेव, एव मणुस्से, एव देवे वि । से तेणट्टेणं* गोयमा । एव वुच्चइ*—भवतुल्लए-भवतुल्लए ।

से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए ?

गोयमा । एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स* पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालावइरित्तस्स* पोग्गलस्स भावओ नो तुल्ले, एव जाव दसगुणकालए, एव तुल्लसखेज्जगुणकालए पोग्गले, एव तुल्लअसखेज्जगुणकालए वि, एव तुल्लअणतगुणकालए वि । जहा कालए, एव नीलए, लोहियए, हालिहए, सुक्किलए । एव सुव्विभगघे, एव दुव्विभगघे । एव तित्ते जाव* महुरे । एव कवखडे जाव* लुक्खे । ओदइए भावे ओदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, ओदइए भावे ओदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले, एव ओवसमिए, खइए, खओवसमिए, पारिणामिए । सन्निवाइए भावे सन्निवाइयस्स

१. स० पा०—तुल्लसखेज्ज ।

२. स० पा०—तेणट्टेण जाव खेत्ततुल्लए ।

३. स० पा०—तेणट्टेण जाव कालतुल्लए ।

४. स० पा०—तेणट्टेण जाव भवतुल्लए ।

५. ° कालस्स (अ, क, व, स) ।

६. ° काल ° (अ, ख, स), स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि ।

७. म० ८।३६ ।

८. म० ८।३६ ;

भावस्स भावओ तुल्ले, सन्निवाइए भावे सन्निवाइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले । से तेणट्ठेण गोयमा । एव वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए । से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—सठाणतुल्लए-सठाणतुल्लए ? गोयमा ! परिमंडले सठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स सठाणओ तुल्ले परिमंडले सठाणे परिमंडलसठाणवइरित्तस्स सठाणस्स सठाणओ नो तुल्ले, एव वट्ठे, तसे, चउरसे, आयए । समचउरससठाणे समचउरसस्स सठाणस्स सठाणओ तुल्ले समचउरसे सठाणे समचउरससठाणवइरित्तस्स सठाणस्स संठाणओ नो तुल्ले, 'एव परिमंडले वि', एव^१ *साई खुज्जे वामणे^२ हुडे । से तेणट्ठेण^३ गोयमा । एव वुच्चइ^४ °—सठाणतुल्लए-सठाणतुल्लए ॥

भत्तपच्चक्खायस्स आहार-पदं

८२. भत्तपच्चक्खायए ण भते ! अणगारे मुच्छिए^५ *गिद्धे गडिए^६ अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगडिए^७ अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति ? हुता गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए ण अणगारे *मुच्छिए गिद्धे गडिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगडिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति^८ ॥
८३. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—भत्तपच्चक्खायए ण *अणगारे मुच्छिए गिद्धे गडिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगडिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति ? ° गोयमा ! भत्तपच्चक्खायए ण अणगारे मुच्छिए^९ *गिद्धे गडिए^{१०} अज्झोववन्ने आहारे^{११} भवइ, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए^{१२} *अगिद्धे अगडिए अणज्झोववन्ने ° आहारे भवइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव आहारमाहारेति ॥

लवसत्तम देव-पदं

८४. अत्थि ण भंते ! लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ? हुता अत्थि ॥

१. × (अ, ख); एव जाव परिमंडले वि (क, ता, व, म) ।
 २. सं० पा०—एव जाव हुडे ।
 ३. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव संठाणतुल्लए ।
 ४. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने ।
 ५. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
 ६. सं० पा०—त चेव ।
 ७. सं० पा०—त चेव ।
 ८. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने ।
 ९. अवकपदे सन्विस्तेन 'आहारए' इति स्थाने 'आहारे' इति प्रयोगो दृश्यते ।
 १०. सं० पा०—अमुच्छिए जाव आहारे ।

८५. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ?
 गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव^१ निउणसिप्पोवगए सालीण वा,
 वीहीण वा, गोधूमाण वा, जवाण वा, जवजवाण वा पक्काण^२, परियाताणं,
 हरियाणं, हरियकडाण तिवखेण नवपज्जणएण^३ असिअएण पडिसाहरिया-पडि-
 साहरिया पडिसखिविया-पडिसखिविया जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्ठु सत्त
 लवे^४ लुएज्जा, जदि^५ ण गोयमा ! तेसि देवाण एवतिय काल आउए पहुप्पते^६
 तो ण ते देवा तेण चेव भवग्गहणेणं सिज्झता^७ *बुज्झता भुच्चता परिनिव्वा-
 यंता सव्वदुक्खाणं अंतं करेता । से तेणट्ठेणं *गोयमा ! एवं वुच्चइ °—
 लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ॥

अणुत्तरोववाइयदेव-पदं

८६. अत्थि ण भते ! अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
 हुंता अत्थि ॥
८७. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
 गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाण देवाणं अणुत्तरा सद्दा^१, *अणुत्तरा रूवा, अणुत्तरा
 गधा, अणुत्तरा रसा, अणुत्तरा^२ फासा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—
 अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ॥
८८. अणुत्तरोववाइया ण भते ! देवा केवतिएण कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइय-
 देवत्ताए उववन्ता ?
 गोयमा ! जावतिय छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिएणं
 कम्मावसेसेण अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ता ॥
८९. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति^३ ॥

१. भ० १४।३ ।

२. पिककाण (म, स) ।

३. नवपज्जणएण (क, ता, स), नवपज्जवएण (म) ।

४. लए (अ, क ख, ता, व), लवए (म, स) ।

५. जति (अ, ख, म, स) ।

६. वहुप्पते (अ, क); वहुप्पते (ख, व, म, स),

पहुप्पते (ता) ।

७. सिज्झेज्जा (ता); स० पा०—सिज्झता जाव अते ।

८. स० पा०—तेणट्ठेण जाव लवसत्तमा ।

९. स० पा०—सद्दा जाव फासा ।

१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देशो

अवाहाए अंतर-पदं

६०. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य' पुढवीए केवतिए' अवाहाए' अंतरे पणत्ते ?
 गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे पणत्ते ॥
६१. सक्करप्पभाए णं भते ! पुढवीए बालुयप्पभाए य पुढवीए केवतिए अवाहाए अंतरे पणत्ते ? एव चेव । एवं जाव तमाए अहेसत्तमाए य ॥
६२. अहेसत्तमाए णं भते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अवाहाए अनरे पणत्ते ? गोयमा ! असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ अवाहाए अंतरे पणत्ते ॥
६३. इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोतिसस्स य केवतिए "अवाहाए अंतरे पणत्ते ? °
 गोयमा ! सत्तनउए जोयणसए अवाहाए अंतरे पणत्ते ॥
६४. जोतिसस्स ण भते ! सोहम्मीसाणाण य कप्पाणं केवतिए "अवाहाए अंतरे पणत्ते ? °
 गोयमा ! असखेज्जाइं जोयण"सहस्साइं अवाहाए° अंतरे पणत्ते ॥
६५. सोहम्मीसाणाणं भते ! सणकुमार-माहिदाण य केवतिए अवाहाए अंतरे पणत्ते ? एवं चेव ॥
६६. सणकुमार-माहिदाणं भते ! वंभलोगस्स कप्पस्स य केवतिए अवाहाए अंतरे पणत्ते ? एवं चेव ॥
६७. वंभलोगस्स णं भते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवतिए अवाहाए अंतरे पणत्ते ? एवं चेव ॥
६८. लंतयस्स ण भते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवतिए अवाहाए अंतरे पणत्ते ? एवं चेव । एवं महासुक्कस्स कप्पस्स सहस्सारस्स य, एव सहस्सारस्स आणय-पाणयाण य कप्पाण", एवं आणय-पाणयाण" आरणच्चुयाण य कप्पाण, एव आरणच्चुयाण गेवेज्जविमाणाण य, एवं गेवेज्जविमाणाण अणुत्तरविमाणाण य ॥

१. × (अ, क, व, म) ।

२. केवतिर्यं (अ, क, ख, ता, व, म, स) प्रायः ।

३. अवाहाए (अ, क, ता, स) सर्वत्र, अवाहे (ख); अवाहए (व, म) ।

४. सं० पा०—पुच्छा ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

६. सं० पा०—जोयण जाव अंतरे ।

७. पाणयकप्पाण (क, स) ।

८. पाणयाण कप्पाण (अ, क, म) ।

६६. अणुत्तरविमाणाणं भते ! ईसिपव्वभाराए^१ य पुढवीए केवतिए^२ अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ? °

गोयमा ! दुवालस जोयणे अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

१००. ईसिपव्वभाराए णं भते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अवाहाए^३ अंतरे पण्णत्ते ? °

गोयमा ! देसूण जोयण अवाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

रुक्खाणं पुणव्वभव-पद

१०१. एस ण भते ! सालरुक्खे उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए कालमासे काल किच्चा कहि गमिहिति^४ ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! इहेव रायगिहे नगरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिती^५ । से ण तत्थ^६ अच्चिय-वदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिण दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहिय-पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिण यावि भविस्सइ ॥

१०२. से ण भते ! तओहितो अणतर उव्वट्ठित्ता कहि गमिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव^७ सब्बदुक्खाण अत काहिति ॥

१०३. एस ण भते ! साललट्ठिया^८ उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे काल किच्चा^९ कहि गमिहिति ? ° कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! इहेव जवुदीवे दीवे भारहे वासे विभगिरिपायमूले^{१०} महेशरिए नगरीए साललरुक्खत्ताए पच्चायाहिती । से^{११} ण तत्थ अच्चिय-वदिय^{१२} पूइय-सक्कारिय-सम्माणिण दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे^{१३} लाउल्लोइयमहिण यावि भविस्सइ ॥

१०४. से ण भते ! तओहितो अणतर उव्वट्ठित्ता^{१४} कहि गमिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सब्बदुक्खाण^{१५} अत काहिति ॥

१. ईसि ° (अ, क, ख, ता, व, म) ।

२. स० पा०—पुच्छा ।

३. स० पा०—पुच्छा ।

४. गच्छिहिति (अ, क, ख, स)

५. पच्चाहिती (ता, व, म) ।

६. तत्था (क, ता, व) ।

७. म० २।७३ ।

८. साललट्ठिल्लिया (ख); साललट्ठिल्लिया (ता)

९. स० पा०—किच्चा जाव कहि ।

१०. विभग्ग (क, ख, ता, व) ।

११. ता (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

१२. स० पा०—वदिय जाव लाउल्लोइय ° ।

१३. स० पा०—सेस जहा सालरुक्खस्स जाव अंतरे ।

१०५. एस णं भते ! उंवरलट्ठिया' उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा' *कहिं गमिहिति ? * कहिं उववज्जिहिति ?
 गोयमा ! इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नगरे पाडलिखत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ अच्चिय-वदिय'-*पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि° भविस्सइ ॥
१०६. से ण भते ! तअोहितो अणतर उव्वट्ठित्ता *कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
 गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाण° अत काहिति ॥

अम्मड-अंतेवासि-पहं

१०७. तेणं कालेण तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्ह-कालसमयंसि *जेट्ठामूलमासंमि गगाए महानदीए उभअओकूलेणं कपिल्लपुराओ नगराओ पूरिमत्ताल नयरं संपट्टिया विहाराए ॥
१०८. तए णं तेसिं परिव्वायगणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कच्चिं देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुजमाणे भोणे ॥
१०९. तए णं ते परिव्वाया भोणेदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इसीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कच्चिं देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुजमाणे भोणे । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इसीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समता भग्गण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए छिण्णा-वायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समता भग्गण-गवेसणं करेति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्च पि अण्णमण्णं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो नत्थि त नो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं निण्हित्तए, अदिण्णं साइज्जित्तए, त मा ण अम्हे इयाणि आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा ण अम्हं तवलोवे भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदडए य कुडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य घाउरत्ताओ य एगते एडित्ता गण

१. उंवरि° (अ, स) ।

२. सं० पा०—किच्चा जाव कहिं ।

३. सं० पा०—वदिय जाव भविस्सइ ।

४. सं० पा०—सेसं त चेव जाव अतं ।

५. सं० पा०—एव जहा ओववाइए जाव आराहणा ।

महानदं ओगाहिता वालुयासथारए सथरित्ता सलेहणा-भूसियाणं भत्तपाण-
पडियाइक्खियाण पाओवगयाण काल अणवकखमाणेण विहरित्ते त्ति कट्टु
अणमणस्स अतिए एयमट्टु पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता निदडए य कुडियाओ य
कचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अकुसए य केसरि-
याओ य पवित्तेए य गणेत्तियाओ य छत्तेए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य
एगते एडेति, एडेत्ता गग महानदं ओगाहेति, ओगाहेत्ता वालुयासथारए सथरित्ति,
सथरित्ता वालुयासथारयं दुरुहति, दुरुहत्ता पुस्त्याभिमुहा सपलियकनिसण्णा
करयलपरिगहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—

नमोत्थु ण अरहताण जाव' सिद्धिगइनामधेय ठाणं सपत्ताण ।

नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव' सपाविउकामस्स ।

नमोत्थु ण अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्ह धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स ।

पुण्वि ण अम्हेहि अम्मडस्स परिव्वायगस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए
जावज्जीवाए, मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे
पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिगहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयारिणि
अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामो
जावज्जीवाए सव्व मुसावाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व अदिण्णादाण
पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व मेहुण पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व परिगह
पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व कोह माण माय लोह पेज्ज दोस कलह अब्भ-
क्खाणं पेसुण्ण परपरिवाय अरइरइ मायामोसं मिच्छादसणसत्तल अकरणिज्जं
जोग पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व असण पाण खाइमं साइम—वउव्विहं
पि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए ।

ज पि य इमं सरीर इट्ठ क्त पिय मणुण्णं मणामं पेज्जं वेसासियं समय बहुमय
अणुमय भड-करडग-समाण मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण
पिवासा, मा ण वाला, मा ण चोरा, मा ण दसा, मा ण मसगा, मा ण वाइय-
पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय' विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति
कट्टु एयपि णं चरिमेहि ऊसासनीसासेहि वोसिरामि त्ति कट्टु सलेहणा-भूसिया
भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगया काल अणवकखमाणेण विहरति ।

तए ण ते परिव्वाया बहुइ भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदिता आलोइय-पडि-
क्कता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा वभलोए कप्पे देवत्ताए उव्वण्णा ।

तहि तेसि गई, तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पणत्ते ।

तेसि णं भंते ! देवाण केवतियं काल ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! दससागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।

अत्थि ण भंते ! तेसि देवाण इड्ढी इ वा जुई इ वा जसे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ?

हंता अत्थि ।

ते ण भंते ! देवा परलोगस्स आराहणा ?

हता अत्थि ॥ ०

अम्मड-जरिया-पदं

११०. बहुजणे ण भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए ^१आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ।

से कहमेय भंते ?

एवं खलु गोयमा ! ज ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एव परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ, सच्चे णं एसमट्ठे अहपि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि एव भासामि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

१११. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ?

गोयमा ! अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स पगइभइयाए पगइउवसतयाए पगइपतणु-कोहमाणमायालोहयाए मिउमद्वसंपण्णयाए अल्लीणयाए विणीययाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खत्तेण तवोक्कमेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूरामिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहि अज्झवसाणेहि लेसाहि विसुज्झमाणीहि अण्णया कयाइ तदावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-मग्गण-नवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउज्जियलद्धीए ओहिनाण-लद्धी समुप्पणां ।

तए ण से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउज्जियलद्धीए ओहिनाणल-द्धीए समुप्पणाए जणविम्हावणहेउ कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

✓११२ पडू ण भते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतिय मुडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्ताए ?
नो इणद्धे समट्ठे । गोयमा ! अम्मडे ण परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवा-
जीवे उवलद्धपुण्णपावे आसव-सवर-निज्जर-किरियाहिगरण-वध-मोक्खकुसले
असहेज्ज^१ देवासुरनाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किपुरिस-गरुल-गघव्व-
महोरगाइएहि निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, इणसो निग्गये पावयणे
निस्सकिए निक्कखिए निव्वित्तिगिच्छे लद्धे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणि-
च्छियट्ठे अट्ठिमिज्जेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गये पावयणे अट्ठे, अयं पर-
मट्ठे, सेसे अणट्ठे, चउद्दसअदुमुद्धिपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह अणुपालेमाणे,
समणे निग्गये फासुएसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-
कवल-पायपुच्छणेण ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण पीढफलगसेज्जा-सथारएण
पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहि-
एहि तवोक्कम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ ° जाव^२ दढप्पइण्णो अतं काहिंति ॥

अव्वाबाह्वेव-सत्ति-पद

२१३. अत्थि ण भते ! अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?

हता अत्थि ॥

११४ से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?

गोयमा ! पभू ण एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगसि अच्छि-
पत्तसि दिव्व देविड्ढि, दिव्वं देवज्जुति, दिव्वं देवाणुभाग, दिव्वं बत्तीसत्तिविहं
नट्ठविहि उवदसेत्ताए, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा बाबाह^३ वा
उप्पाएइ, छविच्छेय वा करेइ, एसुहुमं^४ च ण उवदसेज्जा । से तेणट्ठेण^५ गोयमा !
एव वुच्चइ °—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ॥

सक्कस्स सत्ति-पदं

११५ पभू ण भते ! सक्के देविदे देवराया पुरिसस्स सीसं सपाणिणा^६ असिणा
छिदित्ता कमडलुसि^७ पक्खिवित्ताए ?

हंता पभू ॥

११६. से कहमिदाणि पकरेति ?

गोयमा ! छिदिया-छिदिया च णं पक्खिवेज्जा, भिदिया-भिदिया च णं

१. विभक्तिरहित पदम् ।

२. ओ० सू० १२१-१५४ ।

३. पवाह (क, वृ); बाबाह (वृषा) ।

४. एसुमुहं (ता, व, म) ।

५. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा ।

६. सापाणिणा (ख, ता, व) ।

७. कमडलुसि (ख, क, म); कमडलुपि (ख, व, स) ।

पक्खिवेज्जा, कोट्टिया-कोट्टिया च णं पक्खिवेज्जा, चृण्णिया-चृण्णिया च ण
पक्खिवेज्जा, तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, नो चैव णं तस्स पुरिसस्स
किचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेयं पुण करेइ, एसुहुम च णं
पक्खिवेज्जा ॥

जंभगादेव-पद

११७. अत्थि ण भंते ! जंभगा देवा, जंभगा देवा ?
हंता अत्थि ॥
११८. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—जंभगा देवा, जंभगा देवा ?
गोयमा ! जंभगा णं देवा निच्च पभुदित-पक्कीलिया कदप्परतिमोहणसीला ।
जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा, से णं पुरिसे महत्त अयसं पाउणेज्जा । जे णं ते देवे
तुट्ठे पासेज्जा, से ण महंत जस पाउणेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—
जंभगा देवा, जंभगा देवा ॥
११९. कतिविहा ण भते ! जंभगा देवा पणत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पणत्ता, त जहा—अन्नजंभगा, पाणजंभगा, वत्थजंभगा,
लेणजंभगा, सयणजंभगा, पुप्फजंभगा, फलजंभगा, 'पुप्फ-फल-जंभगा', विज्जा-
जंभगा अवियत्तिजंभगा ॥
१२०. जंभगा ण भते ! देवा कहि वसहि उवेति ?
गोयमा ! सव्वेसु चैव दीहवेयइडेसु, चित्त-विचित्त-जसगपव्वएसु, कचणपव्वएसु
य, एत्थ ण जंभगा देवा वसहि उवेति ॥
१२१. जंभगाण भते ! देवाण केवतिय काल ठिती पणत्ता ?
गोयमा ! एग पलिओवम ठिती पणत्ता ॥
१२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव^१ विहरइ ॥

नवमो उद्देशो

सरूवि-सकम्मलेस्स-पदं

१२३. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, तं पुण
जीवं सरूवि^२ सकम्मलेस्सं जाणइ-पासइ ?

१. मतजंभगा (वृषा) ।
२. अहिवइजंभगा (वृषा)

३. भ० १।५१ ।
४. सरूव (अ) ।

- हंता गोयमा । अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो^१ •कम्मलेस्स न जाणइ, न पासइ, त पुण जीव सख्खी सकम्मलेस्स जाणइ °-पासइ ॥
१२४. अत्थि ण भते ! सख्खी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति^२ उज्जोएति तवेति पभासेति ?
- हता अत्थि ॥
१२५. कयरे ण भते ! सख्खी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति जाव पभासेति ? गोयमा ! जाओ इमाओ चदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहितो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडाओ^३ पभावेति^४, एए ण गोयमा ! ते सख्खी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति उज्जोएति तवेति पभासेति ॥

अत्ताएत्त-पोग्गल-पद

१२६. नेरइयाण भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ? गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ॥
१२७. असुरकुमाराण भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ? गोयमा ! अत्ता पोग्गला, नो अणत्ता पोग्गला । एवं जाव^५ अणियकुमाराणं ॥
१२८. पुढविकाइयाण^६ भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ? गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एव जाव^७ मणुस्साणं । वाणमत-जोइसिय-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराणं ॥

इट्ठाणिट्ठादि-पोग्गल-पदं

१२९. नेरइयाणं भते ! कि इट्ठा पोग्गला ? अणिट्ठा पोग्गला ? गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला । जहा अत्ता भणिया एवं इट्ठा वि, कता वि, पिया वि, मणुणा वि भाणियव्वा । एए^८ पच दंडगा ॥

देवाणं भासासहस्स-पदं

१३०. देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव^९ महेसक्खे ख्वसहस्स विउव्वित्ता पभू भासास-हस्सं भासितए ? हता पभू ॥
१३१. सा ण भते ! कि एगा भासा ? भासासहस्सं ? गोयमा ! एगा णं सा भासा, नो खलु तं भासासहस्सं ॥

१. स० पा०—अप्पणो जाव पासइ ।

६. स० पा०—पुच्छा ।

२. तोभासति (क, म) ।

७. पू० प० २ ।

३. अभिनिस्सडाओ (क); अभिनिस्सदाओ (ता)

८. एव (अ, क, व, म, स) ।

४. पयावेति (ता), पभावेति एव (म, स) ।

९. अ० १।३३६ ।

५. पू० प० २ ।

सूरिय-पदं

१३२. तेण कालेण तेणं समएण भगव गोयमे अचिरुगयं बालसूरिय जासुमणाकुसुम-
पुजप्पकास लोहितग पासइ, पासित्ता जायसइडे जाव^१ समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव
समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ^२, •उवागच्छित्ता समण भगव महावीर
तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता
णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे
पज्जुवासमाणे^३ एवं वयासो—किमिदं भंते ! सूरिए ? किमिदं भंते !
सूरियस्स अट्टे ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्टे ॥

१३३ किमिद भंते ! सूरिए ? किमिद भंते ! सूरियस्स पभा ?

^१•गोयमा । सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स पभा ॥

१३४. किमिद भंते सूरिए ? किमिद भंते ! सूरियस्स छाया ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स छाया ॥

१३५. किमिदं भंते । सूरिए ? किमिद भंते ! सूरियस्स लेस्सा ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स लेस्सा^४ ॥

समणाणं तेयलेस्सा-पद

१३६. जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा निग्गथा विहरति, ते^५ णं कस्स तेयलेस्स
वीईवयति ?

गोयमा ! मासपरियाए समणे निग्गथे वाणमततराण देवाण तेयलेस्सं वीईवयइ ।
दुमासपरियाए समणे निग्गथे असुरिदवज्जियाणं भवणवासीण देवाण तेयलेस्स
वीईवयइ ।

एवं एएण^६ अभिलावेण—तिमासपरियाए समणे निग्गथे असुरकुमाराण देवाणं
तेयलेस्सं वीईवयइ ।

चउम्मासपरियाए समणे निग्गथे गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जोतिसियाण
देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।

पंचमासपरियाए समणे निग्गथे चदिम-सूरियाणं जोतिसिदाण जोतिसराईण
तेयलेस्सं वीईवयइ ।

छम्मासपरियाए^६ समणे निग्गथे सोहम्मीसाणाणं देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।

१. भ० १।१० ।

२. सं० पा०—उवागच्छइ जाव नमसित्ता
जाव एव ।

३. सं० पा०—एवं चेव एवं छाया एव लेस्सा ।

४. एते (क, ता, व, य, स), तए (ख) ।

५. तेतेण (व) ।

६. छमास^० (स) ।

सत्तमासपरियाए समणे निग्गये सणकुमार-माहिदाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
अट्टमासपरियाए समणे निग्गये बभलोग-लंतगाण देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
नवमासपरियाए समणे निग्गये महासुक्क-सहस्साराण देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

दसमासपरियाए समणे निग्गये आणय-पाणय-आरणच्चुयाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

एक्कारसमासपरियाए समणे निग्गये गेवेज्जगाण देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

बारसमासपरियाए समणे निग्गये अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

तेण परं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता तन्नो पच्छा सिज्झति* • बुज्झति मुच्चति
परिनिव्वायति सम्बहुक्खाणं ° अत करेति ॥

१३७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव^१ विहरइ ॥

दसमो उद्देशो

केवलि-पदं

१३८. केवली ण भते ! छउमत्थ^१ जाणइ-पासइ ?

हता जाणइ-पासइ ॥

१३९. जहा ण भते ! केवली छउमत्थं जाणइ-पासइ, तथा ण सिद्धे वि छउमत्थं
जाणइ-पासइ ?

हता जाणइ-पासइ ॥

१४०. केवली ण भते ! आहोहियं^२ जाणइ-पासइ ? एवं चेव । एवं परमाहोहियं^३, एवं
केवलि, एव सिद्धं जाव—

१४१. जहा ण भते ! केवली सिद्धं जाणइ-पासइ, तथा ण सिद्धे वि सिद्धं जाणइ-
पासइ ?

हता जाणइ-पासइ ॥

१. स० पा०—सिज्झति जाव अत ।

२. भ० १।५१ ।

३. छउमत्थ (ता); छतुमत्थ (ब) ।

४. आधोविय (अ, स), आवोवीयं (क);
आहोविय (ख); अधोविय (ता); आधोविय

(ब), आधोहिय (म) ।

५. परमावधिय (अ), परमावोहियं (क);
परमोविय (ख); परमहोहियं (ता);
परमाधोविय (ब); परमाधोहियं (म, स) ।

१४२. केवली ण भंते ! भासेज्ज वा ? वागरेज्जा वा ?
हता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा ॥
१४३. जहा ण भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा, तहा ण सिद्धे वि भासेज्ज वा वागोज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
१४४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ?
गोयमा ! केवली ण सउट्ठाणे सक्कमे सबले सवीरिए सपुरिसक्कारपरक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठाणे^१ •अक्कमे अबले अवीरिए^२ • अपुरिसक्कारपरक्कमे । से तेणट्ठेण^३ •गोयमा ! एव वुच्चइ—जहा ण केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा^४ वागरेज्ज वा ॥
१४५. केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा ? निम्मिसेज्ज वा ?
हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा ॥
१४६. जहा ण भंते ! केवली उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि उम्मिसेज्ज वा निम्मिसेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चेव^५ । एव आउट्टेज्ज^६ वा पसारेज्ज वा, एव ठाण वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा ॥
१४७. केवली णं भंते ! इम रयणप्पभं पुढवि रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥
१४८. जहा ण भंते ! केवली इम रयणप्पभं पुढवि रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि इमं रयणप्पभं पुढवि रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ॥
१४९. केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढवि सक्करप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ? एव चेव । एव जाव अहेसत्तम ॥
१५०. केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्प सोहम्मकप्पे त्ति जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ । एव चेव । एवं ईसाण, एव जाव अञ्चुय ॥
१५१. केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणं गेवेज्जविमाणे त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव ।
एव अणुत्तरविमाणे वि ॥
१५२. केवली णं भंते ईसिपब्भारं पुढवि ईसिपब्भारपुढवीति जाणइ-पासइ ? एव चेव ॥

१. स० पा०—अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार^० । ४. आउट्टेज्ज (अ, स); आउट्टावेज्ज (क

२. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव वागरेज्ज ।

म); आउट्टावेज्ज (ख, ता); आउट्टावेज्ज (ब) ।

३. अ० १४।१४४ ।

१५३. केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गल परमाणुपोग्गले त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव ।
एवं दुपएसिय खव, एवं जाव —
१५४. जहा ण भंते ! केवली अणंतपएसिय खवं अणंतपएसिए खवे त्ति जाणइ-पासइ,
तहा ण सिद्धे वि अणतपएसिय^० खवं अणंतपएसिए खवे त्ति जाणइ^०-पासइ ?
हुता जाणइ-पासइ ॥
१५५. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति^० ॥

— — —

^० पास — अणतपणमित्ति जाव पासइ ।

^० १।५.१ ।



पन्नरसमं सतं नमो सुयदेवयाए भगवईए'

गोसालग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ^१ । तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे^२ दिसीभाए, तत्थ णं कोट्टए नामं चेइए होत्था—वण्णओ^३ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए हालाहला^४ नामं कुभकारी आजी-विओवासिया परिवसति—अड्ढा जाव^५ बहुजणस्स अपरिभूया, आजीविय-समयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो^६ । आजीवियसमये अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥
२. तेणं कालेणं तेणं समएण गोसाले मंखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि आजीवियसवसंपरिवुडे आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
३. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा^७ अतिथं पाउब्भवित्था, तं जहा—साणे, कलंदे^८, कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवे-सायणे, अज्जुणे गोमायुपुत्ते^९ ॥
४. तए ण ते छ दिसाचरा अट्ठविह^{१०} पुव्वगय मग्गदसमं 'सएहि-सएहि'^{११} मतिदसणेहि निज्जूहति^{१२}, निज्जूहिता गोसालं मंखलिपुत्त उवट्ठाइसु ॥

- | | |
|--|---|
| १. एतद् वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति । | टीकाकार 'पासावन्विज्ज' ति चूरिणकार |
| २. ओ० सू० १ । | (वृ) । |
| ३. ० पुरच्छिमे (स) । | ८. कण्णदे (क, ता, म) । |
| ४. ओ० सू० २-१३ । | ९. गोतमपुत्ते (क, ब, म) । |
| ५. हालाहला (ता, स) । | १०. निमित्तमिति शेष (वृ) । |
| ६. भ० २।६४ । | ११. सतेहि २ (अ, क, ब, म, स) । |
| ७. दिक्चरा भगवच्छिण्याः पावर्वस्थीभूता इति | १२. निज्जूहति (ता, स); निज्जु ति (ब, म) । |

५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेण अट्टगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसि पाणाणं, सव्वेसि भूयाणं, सव्वेसि जीवाणं, मव्वेसि सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइ वागरणाइ वागरेति, त जहा—

लाभ अलाभ भुहं दुक्खं, जीविअं मरणं तथा ॥

६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेण अट्टगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलप्पलावी, असव्वणू सव्वणुप्पलावी, अजिणे जिणसहं पगामेमाणे विहरइ ॥

७. तए णं सावत्थीए नगरीए सिधाडगं •तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहं-पहेसु वहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ, •एव भासइ, एव पणवेइ, एवं पणवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया । गोसाले मसलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी, •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलप्पलावी, सव्वणू सव्वणुप्पलावी, जिणे जिणसहं पगामेमाणे विहरइ । से कहमेय मन्ने एव ?

८. तेण कालेण तेण समएणं सामी समोसढे जावं परिसा पटिगया ॥

९. तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूती नाम अणगारे गोयमे गोत्तेणं •सत्तुस्सेहे समचउरंससठाणसटिणं वज्जरिसभ-नारायसघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्तवे तत्तवे महातवे ओराले घोरे धोरगुणे धोरतवस्सी धोरवभचेरवासी उच्छूहसरीरे सत्ति-विउलतेयलेत्से •छट्ठछट्ठेणं •अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१०. तए णं भगव गोयमे छट्ठक्खमणपारणमसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, वीयाए पोरिसीए भाण भियाइ, तड्याए पोरिसीए अतुरियमचवलमसभत्ते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइ पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइ पमज्जइ, पमज्जिता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भत्ते ! तुव्भेहि अट्ठभणुण्णाणं समाणे छट्ठक्खमणपारणमसि सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ बुलाइ घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

१. पगामेमाणे (ग, ना) ।

२. ग० पा०—सिधाडगं जाव पहेसु ।

३. ग० पा०—एवमाउवरइ जाव एव ।

४. ग० पा०—अणप्पलावी जाव पगामेमाणे ।

५. ग० ११३, ८ ।

६. ग० पा०—गोत्तेणं जाव छट्ठछट्ठेण ।

७. ग० पा०—एव ज.ग. विनियम. नियट्ठेण ।

जाव छट्ठामे ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंघं ॥

११. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्ख-
मिता अतुरियमचवलमसभते जुगतएपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणे-
सोहेमाणे जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता सावत्थीए
नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अइइ ॥
१२. तए णं भगवं गोयमे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइं घरसमु-
दाणस्स भिक्खायरियाए० अइमाणे बहुजणसइं निसामेइ, बहुजणो अणमणस्स
एवमाइक्खइ एव भासइ एवं पणवेइ एव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया !
गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव' जिणे जिणसइ पगासेमाणे
विहरइ । से कहमेय मन्ने एवं ?
१३. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसइहे'
•जाव' समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाण गेण्हइ, गेण्हिता सावत्थीओ
नगरीओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसभते जुगतएपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ
रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते
गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमिता एसणमणेसण आलोएइ, आलोएत्ता
भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता
नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलि-
यडे० पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एव खलु अहं भते । '•छट्ठक्खमणपारगणसि
तुग्गेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि
घरसमुदाणस्स भिक्खयरियाए अइमाणे बहुजणसइं निसामेमि, बहुजणो अण-
मणस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पणवेइ एव परूवेइ—एव खलु देवाणु-
प्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे० जिणसइ पगासे-
माणे विहरइ । से कहमेय भते ! एव ? त इच्छामि ण भते ! गोसालस्स
मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपरियाणिय' परिकहिय ॥
१४. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयम एव वयासी—जण्ण गोयमा !
से बहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एवं पणवेइ एव परूवेइ—
एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसइ पगासेमाणे
विहरइ । तण्णं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—

१. भ० १५।६ ।

३. भ० १।१० ।

२. स० पा०—जायसइहे जाव भत्तपाण पडि-
दसेइ जाव पज्जुवासमाणे ।

४. स० पा०—छट्ठ त चेव जाव जिणसइ ।

५. ० परियाणिण (अ,व,स); ० पारियाण (ता) ।

- एव खलु एयस्स गोसालस्स मंखलीपुत्तस्स मंखली नाम मखे पिता होत्था । तस्स ण मंखलिस्स मंखस्स भद्दा नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव^१ पडिह्वा । तए णं सा भद्दा भारिया अण्णदा कदायि गुन्विणी यावि होत्था ॥
१५. तेण कालेण तेणं समएणं सरवणे नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे जाव^१ नदणवण-सन्निभप्पगासे, पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिह्वा । तत्थ णं सरवणे सण्णिवेसे गोवहुले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव^१ बहुजणस्स अपरिभूए, रिज्जवेद जाव^१ वंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तस्स ण गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था ॥
- १६ तए णं से मंखली मंखे अण्णया कदायि भद्दाए भारियाए गुन्विणीए सद्धि चित्त-फलगत्यगए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणुपुव्व चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि भडनि-क्खेव करेइ, करेत्ता सरवणे सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अड्डमाणे वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेमाणे अण्णत्थ वसहि अलभमाणे तस्सेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि वासावास उवागए ॥
१७. तए ण सा भद्दा भारिया नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णण अट्ठमाण य राइदियाण वीतिकताण सुकुमालपाणिपायं जाव^१ पडिह्वग दारग पयाया ॥
१८. तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिकते^१ •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते^२ •‘वारसमे दिवसे’^३ अयमेयारूवं गोण्ण गुणनिप्फन्तं नामधेज्ज करेति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज गोसाले-गोसाले त्ति । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो नामधेज्ज करेति गोसाले त्ति ॥
- १९ तए ण से गोसाले दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णय^४-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणु प्पत्ते सयमेव पाडिक्क^५ चित्तफलग करेइ, करेत्ता चित्तफलगत्यगए मखत्तणेणं अप्पाण भावेमाणं विहरइ ॥

१. ओ० सू० १५ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. भ० २।६४ ।

४. भ० २।२४ ।

५. भ० १।१३४ ।

६. स० पा०—वीतिकते जाव वारसमे ।

७. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, व); वारसहे दिवसे (म); वारसाहे दिवसे (स); द्रष्टव्यम्—भ० १।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

८. विण्णाय (अ, स) ।

९. पडिक्कं (क, ता, व) ।

भगवओ विहार-पदं

२०. तेण कलेण तेण समएणं अह गोयमा ! तोस वासाइ अगारवासमज्झावसित्ता^१ अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं^२ समत्तपइण्णे एव जहा भावणाए जाव^३ एण देवदूसमादाय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए^४ ॥
२१. तए ण अह गोयमा ! पढम वास अद्धमास अद्धमासेण खममाणे अट्ठियगाम निस्साए पढम अतरवास^५ वासावास उवागए^६ । दोच्च वास मास मासेण खममाणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव ततुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हामि, ओगिण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेससि^७ वासावास उवागए ॥

पढम-मासखमण-पद

२२. तए ण अह गोयमा ! पढम मासखमण उवसपज्जित्ताणं विहरामि ॥
२३. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम^८ दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव ततुवायसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ततुवायसालाए एगदेससि भडनिकखेव करेइ, करेत्ता रायगिहे नगरे उच्चनीय^९-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणे^{१०} अणत्थ कत्थ वि वसहि अलभमाणे तीसेय ततुवायसालाए एगदेससि वासावासं उवागए, जत्थेव ण अह गोयमा !
२४. तए ण अह गोयमा ! पढम-मासखमणपारणसि ततुवायसालाओ पडिनिकख-मामि, पडिनिकखमित्ता नालद^{११} बाहिरिय मज्झमज्झेण^{१२} निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे

१. अगारवासमज्झे वसित्ता (अ, ख, व, म, स), अगारवासमज्झे वसित्ता (क), अगार-वासे वसित्ता (ता); अगारवास—गृहवास-मध्युष्य इति वृत्तिगतव्याख्यानुसारेण प्रस्तुत-पाठः स्वीकृतः ।
२. देवत्तिगएहिं (क, ख, ता म); देवत्तेगतेहिं (व, स) ।
३. आयासवूला १५।२६-२६ ।
४. पव्वइत्तए (ता, स) ।
५. अतरावास (क, म, वृपा) ।
६. उवागए (ता) ।
७. एगदेससि (व) ।
८. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
९. स० पा०—नीय जाव अणत्थ ।
१०. नालदा (अ) ।
११. मज्झेण २ (क, ख, ता, व, म) ।

उच्च-नीय^१-मज्झिमाईं कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए^० अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिह् अणुपविट्ठे ॥

२५. तए ण से विजए गाहावईं मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठु^२ चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए^० खिप्पामेव आस-णाओ अम्भुट्ठेइ, अम्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता .पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासंग करेइ, करेत्ता अजलमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभित्ते वि तुट्ठे ॥

२६ तए ण तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निवद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति वुट्ठे ॥

२७. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग^३-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^०-पहेसु बहुजणो अण्णमणस्स एवमाइक्खइ^४ एव भासइ एवं पण्णवेइ^० एव पख्वेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावईं, कयत्ये ण देवाणुप्पिया ! विजये गाहावईं, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! विजये गाहावईं, कयलक्खणे णं देवाणु-प्पिया ! विजये गाहावईं, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाईं पंच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति वुट्ठे, तं धन्ने कयत्ये कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीविय-फले विजयस्स गाहावइस्स, विजयस्स गाहावइस्स ॥

२८. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्न-ससए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहसि वसुधारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुम निवडियं, मम च णं विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठे जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं

१. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे ।

२. सं० पा०—हट्ठुट्ठु ।

३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

४. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं ।

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमं-
सित्ता मम एवं वयासी—तुब्बे णं भते ! मम धम्मयारिया, अहण्ण तुब्ब
धम्मतेवासी ॥

२९. तए ण अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठ नो आढामि, नो परि-
जाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥

दोच्च-मासखमण-पदं

३०. तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता
नालद वाहिरिय मज्झमज्जेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला^१,
तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्च मासखमण^२ उवसपज्जित्ताण
विहरामि ॥

३१. तए णं अहं गोयमा ! दोच्च^३-मासखमणपारणगसि^४ तंतुवायसालाओ पडिनि-
क्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालद वाहिरिय मज्झमज्जेण निग्गच्छामि, निग्ग-
च्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे^५ तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे
नगरे उच्च-नीय-मज्झमाइ कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायारियाए^६ अडमाणे
आणदस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

३२. तए ण से आणंदे गाहावई मम एज्जमाण पासइ, ^७पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए
णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आस-
णाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ
ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासगं करेइ, करेत्ता अजलमउलियहत्थे
ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण
करेइ, करेत्ता मम वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता ममं विउलाए खज्जगविहीए
पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

३३. तए णं तस्स आणंदस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण
तिविहेणं तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निवड्ढे, ससारे
परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउवभूयाइं, त जहा—वसुधारा
वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुमुमे निवातिए, चेलुक्खेव कए, आहयाओ देवदुडुमीओ,
अंतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

३४. तए ण रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

१. तंतुवाय ° (ता) सर्वत्र ।

२. मासखमणं (ता) ।

३. दोच्चं (अ, क, व, म, स) ।

४. मासखमणसि (ता, व, म, स) ।

५. सं० पा०—नगरे जाव अडमाणे ।

६. सं० पा०—एवं जहेव विजयस्स नवर मम
विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति
तुट्ठे सेसं तं चेव जाव तच्चं ।

बहुजणो अण्णमणस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं पख्खेइ—घन्ने ण देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! आणदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले आणदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पच दिव्वाइं पाउ-
ब्भूयाइ, त जहा वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं घन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले आणदस्स गाहावइस्स, आणदस्स गाहावइस्स ॥

३५ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्त-
ससए समुप्पन्तकोउह्ले जेणेव आणदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ आणदस्स गाहावइस्स गिहसि वसुधार वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडिय, मम च ण आणदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिकखममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता मम एव वयासी—तुव्वे ण भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुव्वं धम्मतेवासी ॥

३६ तए ण अहं गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परि-
जाणामि, तुसिणीए सच्चिद्धामि ॥

तच्च-मासखमण-पदं

३७. तए ण अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिकखमामि, पडिनिकखमित्ता
नालद वाहिरिय मज्झमज्जेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला,
तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता° तच्च मासखमण उवसपज्जित्ताण
विहरामि ॥

३८. तए ण अहं गोयमा ! तच्च¹-मासखमणपारणगसि तंतुवायसालाओ पडिनिकख-
मामि, पडिनिकखमित्ता °नालद वाहिरिय मज्झमज्जेणं निग्गच्छामि, निग्ग-
च्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे
उच्च-नोय-मज्झिमाइ कुलाइ धरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे
सुणदस्स गाहावइस्स गिह अणुपविट्ठे ॥

३९ तए ण से सुणदे गाहावई °मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठचित्तमाणंदिए

१. तच्च (क, ख, व) ।

२. स० पा०—तहेव जाव अडमाणे ।

३. स० पा०—एव जहेव विजयगाहावई नवर

सव्वकामगुणिएण ओयरोणं पडिलाभेइ

सेस त चेव जाव चउत्थ ।

णंदिए पीडमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आस-
णाओ अम्भुट्ठेइ अम्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहत्ता पाउयाओ
ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंग करेइ, करेत्ता अंजलिमजलियहत्थे मम
सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ,
करेत्ता ममं वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलेण सव्वकामगुणिएण
भोयणेण पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४०. तए णं तस्स सुणंदस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण
तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेण मए पडिलाभिए समाने देवाउए निवद्धे, ससारे
परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउव्भूयाइ, तं जहा—वसुधारा
वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ,
अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

४१. तए णं रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-
पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पण्णवेइ एव
परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया !
सुणदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कयलक्खणे ण
देवाणुप्पिया ! सुणदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! सुणंदस्स गाहाव-
इस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणदस्स गाहावइस्स,
जस्स ण गिहसि तहारूवे साघू साधुरूवे पडिलाभिए समाने इमाइ पच दिव्वाइ
पाउव्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, त
धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्म-
जीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, सुणदस्स गाहावइस्स ॥

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव सुणदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ सुणदस्स गाहावइस्स गिहसि वसुहार वुट्ठ,
दसद्धवण्ण कुसुम निवडिय, मम च ण सुणदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनि-
क्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता मम तिकखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वदइ
नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता मम एव वयासी—तुब्भे ण भते ! मम धम्मायरिया,
अहण्ण तुब्भ धम्मतेवासी ॥

४३. तए णं अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो
परिजाणामि, तुसिणीए सच्चिट्ठामि ॥

चउत्थ-मासखमण-पद

४४. तए णं अह गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता

नालदं वाहिरियं मज्झमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता ° चउत्थ मासखमण उवसपज्जित्तानं विहरामि ॥

४५. तीसे णं नालदाए वाहिरियाए अदूरसामते, एत्थ णं कोल्लाए नाम सण्णिवेसे होत्था—सण्णिवेसवण्णओ¹ । तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे बहुले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव² बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेय जाव³ वंभणएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था ॥

४६ तए णं से बहुले माहणे कत्तिचउम्मासियपाडिबगसि विउलेणं महुघयसजुत्तेणं परमण्णेण माहणे आयामेत्था ॥

४७ तए णं अहं गोयमा । चउत्थ-मासखमणपारणगसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खि-मामि, पडिनिक्खमित्ता नालदं वाहिरियं मज्झमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे उच्च-नीय⁴-°मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए ° अडमाणे बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

४८ तए णं से बहुले माहणे मम एज्जमाणं °पासइ, पासित्ता हट्ठुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आस-णाओ अवभुट्ठेइ, अवभुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहिता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करेत्ता अजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलेणं महुघयसजुत्तेणं परमण्णेण पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४९ तए णं तस्स बहुलस्स माहणस्स तेणं दव्वमुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेणं तिव्विहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे ति घुट्ठे ॥

५०. तए णं रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-वउवक-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

१. म० १५।१५ ।

२. म० २।९४ ।

३. म० २।२४ ।

४. स० पा०—नीय जाव अडमाणे ।

५. स० पा०—तहेव जाव मम विउलेणं महुघय-सजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेस जहा विजयस्स जाव बहुले माहणे २ ।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं पख्वेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलामिए समाणे इमाइं पच दिव्वाइं पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा बृद्धा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स ° ॥

५१. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम ततुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सन्धितरबाहिरियाए मम सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेइ, मम कत्थवि^१ सुत्ति वा खुत्ति वा पवत्ति वा अलभमाणे जेणेव ततुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ^२ य कुडियाओ य वाहणाओ^३ य चित्तफलं च माहणे आयामेइ, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठ भड^४ करेइ, करेत्ता ततुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता नालदं बाहिरिय मज्झमज्जेण निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ ॥

५२. तए णं तस्स कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बहिया बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव पख्वेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, °कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म^५ जीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स ॥

गोसालस्स सिस्सरूवेण अंगीकरण-पदं

५३. तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अतिय एयमदु सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए^६ °चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे ° समुप्पज्जित्था—जारिसिया ण मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुती^७ जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णाए, नो खलु अत्थि तारिसिया अण्णस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती^८ °जसे बले वीरिए पुरिसक्कार °-परक्कमे लद्धे पत्ते

१. कत्थति (अ, क, ख, ब, म), कत्थइ (ता) । ५. स० पा०—त चेव जाव जीवियफले ।

२. × (ता); भंडियाओ (वृषा) । ६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

३. पाहणाओ (क, ख, ता, व, म) । ७. जुत्ती (क, ब, म) ।

४. मुंड (अ, ता) । ८. स० पा०—जती जाव परक्कमे ।

अभिसमण्णागए, तं निस्सदिद्धं^१ ण एत्थं^२ मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगव महावीरे भविस्सतीति कट्ठु कोल्लाए सण्णिवेसे सन्निभतरवाहिरिए^३ ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, मम सव्वओ^४ *समंता मग्गण-गवेसणं^५ करेमाणे 'कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स'^६ वहिया पणियभूमीए मए सद्धि अभिसम-ण्णागए ॥

५४. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते हट्ठुत्ते ममं तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं^७ *करेइ, करेत्ता मम वदइ नमंसइ, वदित्ता^८ ° नमसित्ता एवं वयासी—तुभं णं भते ! मम धम्मायरिया, अहण्ण तुभं अतेवासी ॥

५५. तए ण अहं गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेमि ॥

५६. तए ण अहं गोयमा ! गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धि पणियभूमीए छव्वासाइं लाभ अलाभ सुहं दुक्खं सक्कारमसक्कार पच्चणुववमाणे अणिच्चजागरियं^९ विहरित्था ॥

तिलयभय-पद

५७. तए ण अहं गोयमा ! अण्णया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धि सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगर संपट्टिए विहराए । तस्स ण सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतरा, एत्थ ण महं एगे तिलयभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभमाणे-उवसोभमाणे चिट्ठइ ॥

५८. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते त तिलयभग पासइ, पासित्ता ममं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एस णं भते ! तिलयभए कि निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ ? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता कहिं गच्छि-हिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

तए ण अहं गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—गोसाला ! एस णं तिलयभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ । एते य सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलयभगस्स एगाए तिलसंगलियाए^{१०} सत्त तिला पच्चायाइस्सति ॥

५९. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एव आइक्खमाणस्स एयमट्ठ नो सहहइ, नो पत्तिइ, नो रोएइ, एयमट्ठ असहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मम पणिहाए^{११}

१. निस्सदिद्ध (ख, म), निस्सदिद्धे (स) ।

२. एत्थ (अ, ता, व, म) ।

३. सव्वभतरं (अ, ख) ।

४. सं० पा० —सव्वओ जाव करेमाणे ।

५. कोल्लागसण्णिवेसस्स (अ, स) ।

६. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमसित्ता ।

७. कुर्वन्ति वाक्यशेष. (वृ) ।

८. °सुगं (ता) ।

९. पणिहाय (ता) ।

‘अयं णं मिच्छावादी भवउ’ त्ति कट्टु मम अतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त तिलथंभगं सलेट्ठुयाय चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेता एगंते एडेइ । तक्खणमेत्त च णं गोयमा ! दिव्वे अब्भवद्दए पाउब्भूए । तए ण से दिव्वे अब्भवद्दए खिप्पामेव पतण-तणाति^१, खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमट्ठियं पविरलप-फुसियं^२ रयरएणुविणासण दिव्व सलिलोदगं वास वासति, जेण से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धभूले, तत्थेव पतिट्ठिए । ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाता ॥

वेसियायण-बालतवस्सि-पदं

६०. तए ण अहं गोयमा ! गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धि जेणेव कुम्मगामे नगरे तेणेव उवागच्छामि । तए ण तस्स कुम्मगामस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नाम बालतवस्सी छट्ठुत्तेण अणिक्खित्तेण तवोक्कमेण उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूरभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ । आइच्चतेयतवि-याओ य से छप्पदीओ सव्वओ समता अभिनिस्सवति, पाण-भूय-जीव-सत्त-दयदुयाए च ण पडियाओ-पडियाओ ‘तत्थेव-तत्थेव’^३ भुज्जो-भुज्जो पच्चोरुभेइ ॥
६१. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते वेसियायण बालतवस्सि पासइ, पासित्ता मम अतियाओ सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता वेसियायण बालतवस्सि एव वयासी—किं भव मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ?
६२. तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ नो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए सच्चिट्ठइ ॥
६३. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते वेसियायण बालतवस्सि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—किं भव मुणी ? मुणिए ? ‘उदाहु जूयासेज्जायरए ?’^४
६४. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेण मखलिपुत्तेण दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाने आसुरुत्ते^५ • रुट्ठे कुविए चडिक्किए^६ • मिसिमिसेमाणे आयावण-भूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएण समोहणइ, समोहणित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगसि तेय निसिरइ ॥

१. °तणाए (अ, ख), °तणाएति (स) ।

२. °पप्फुसिय (अ, ब) ।

३. तत्थेवा २ (क, ता, ब, म) ।

४. जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)

५. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि ° ।

६५. तए णं अहं गोयमा । गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अणुकंपणट्टयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्टयाए^१ एत्थ ण अंतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि, जाए सा मम सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा^२ तेयलेस्सा पडिहया ॥
६६. तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिण^३ तेयलेस्स पडिहय जाणित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगस्स किचि आवाह वा वावाह वा छविच्छेदं वा अकीरमाण पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसा-हरइ, पडिसाहरित्ता मम एवं वयासी—से गतमेय भगव । गत-गतमेय भगव !
६७. तए ण गोसाले मखलिपुत्ते मम एवं वयासी—कि ण भते ! एस^४ जूयासेज्जायरए तुव्भे एव वयासी—से गतमेय भगव । गत-गतमेय भगव ?
६८. तए ण अहं गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—तुम णं गोसाला ! वेसियायण बालतवस्सि पाससि, पासित्ता मम अतियाओ सणिय-सणियं पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता वेसियायण बालतवस्सि एव वयासी—कि भव मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए सच्चिट्ठइ । तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बाल-तवस्सि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—कि भवं मुणी ? मुणिए ? 'उदाहु जूयासेज्जायरए ?'^५ तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तुम दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता तव दहाए सरीरगसि तेयलेस्स निसिरइ । तए ण अहं गोसाला ! तव अणुकंपणट्टयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्टयाए^६ एत्थ णं अतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि^७, *जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसि-यायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा तेयलेस्सा पडिहया । तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिण तेयलेस्सं^८ पडिहय जाणित्ता तव य सरीरगस्स किचि आवाह वा वावाह वा छविच्छेद वा अकीरमाण

१. तेयपडि° (क, म), सा तेय° (ख, व, स), साउसिणतेय° (ता), अत्र अनेके पाठभेदा दृश्यन्ते । शीतलतेजोलेश्यासन्दर्भे 'उसिण' पदमावश्यकमस्ति । ६८ सूत्रे अस्थैव प्रस-ङ्गस्य पुनश्चतौ 'ता' प्रती 'उसिणतेय' इति पाठो दृश्यते । तेनापि 'उसिण' पदस्य पु ङिजयिते ।
२. उमुणा (क, ख, ता, व), साउसिणा (स) ।
३. त उसिण (अ, ता), सीओसिण (स) ।
४. एसे (ख, ता, व) ।
५. जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, व, स) ।
६. सायतेय° (अ, ख, व), तेय° (क, म), सीओसिणतेय° (स) ।
७. स० पा०—निसिरामि जाव पडिहय ।

पासित्ता साउसिणं तेयलेस्स पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेयं भगव ।

६९. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम अतियाओ एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीए^१ •तथे तसिए उव्विग्गे^२ संजायभए ममं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—कहण्ण भते ! सखित्तविउलतेयलेस्से भवति ?

७०. तए णं अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठछट्ठेण अणिक्वित्तेण तवोक्कमेण उड्ड वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय^३ •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे^४ विहरइ । से ण अतो छण्ह मासाण सखित्तविउलतेयलेस्से भवइ ॥

७१. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते मम एयमट्ठ सम्म विणएण पडिसुणेति ॥

तिलथंभय-निप्फतीए गोसालस्स अवक्कमण-पदं

७२. तए ण अह गोयमा ! अण्णदा कदायि गोसालेणं मखलिपुत्तेण सद्धि कुम्मगामाओ नगराओ सिद्धत्थगामा नगर सपट्टिए^१ विहाराए । जाहे य मो तं देस हव्वमागया जत्थ ण से तिलथभए । तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते ममं एव वयासी—तुम्हे णं भते । तदा मम एवमाइक्खह जाव परूवेह—गोसाला ! एस णं तिलथभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ । •एते य सत्त तिल-पुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला^२ पच्चायाइस्सति, तण्णं मिच्छा । इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ—एस णं से तिलथभए नो निप्फन्ने, अन्निप्फन्नमेव । ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता नो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥

७३. तए ण अह गोयमा ! गोसालं मखलिपुत्तं एवं वयासी—तुम ण गोसाला । तदा ममं एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सदहसि, नो पत्तियसि, नो रोएसि, एयमट्ठ असदहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मम पणिहाए 'अयण्ण मिच्छावादी भवउ' ति कट्ठु मम अतियाओ सणिय-सणिय पच्चो-सक्कसि, पच्चोसक्किता जेणेव से तिलथभए तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता^३ •त तिलथभगं सलेट्ठुयाय चेव उप्पाडेसि, उप्पाडेत्ता •एगतमते एडेसि । तक्ख-णमेत्त गोसाला ! दिव्वे अबभवह्लए पाउब्भूए । तए ण से दिव्वे अबभवह्लए

१. स० पा०—भीए जाव संजायभए ।

४. स० पा—तं चेव जाव पच्चायाइस्सति ।

२. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ ।

५. स० पा०—उवागच्छित्ता जाव एगतमते ।

३. संपत्थिए (अ, क, ख, व, म); पत्थिए (ता) ।

खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पामेव *पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदग गाति-
मट्टिय पविरलपफुसिय रयरेणुविणासण दिव्व सलिलोदग वास वासति, जेण
से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते वद्धमूले, तत्थेव पत्तिट्ठिए । ते य सत्त तिलपुप्फ-
जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त
तिला पच्चायाया । तं एस ण गोसाला ! से तिलथंभए निप्फन्ने, नो अनिप्फन्न-
मेव । ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभयस्स
एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया । एव खलु गोसाला ! वणस्सइ-
काइया पउट्टपरिहार परिहरति ॥

७४. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं
नो सद्दहइ, नो पत्तिथइ, नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तिथमाणे अरोए-
माणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताओ तिलथंभयाओ
त तिलसंगलिय खुड्डइ, खुड्डित्ता करयलसि सत्त तिले पफोडेइ ॥

७५. तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे
अज्झत्थिए* चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे० समुप्पज्जित्था—एव खलु
सव्वजीवा वि पउट्टपरिहार परिहरति—‘एस ण गोयमा ! गोसालस्स मखलि-
पुत्तस्स पउट्टे’, एस ण गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स मम अंतियाओ
आयाए अव्वकमणे पणत्ते ॥

गोसालस्स तेयलेस्सुपत्ति-पद

७६. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिड्डियाए एगेण य विय-
डासएण छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-
पगिज्झिय* सूरामिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे० विहरइ । तए ण से
गोसाले मखलिपुत्ते अतो छण्ह मासाण सखित्तविउलतेयलेसे जाए ॥

गोसालस्स पुव्वकहा-उव्वसहार-पदं

७७. तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा अतियं
पाउव्ववित्था, त जहा—साणे*, *कलंदे, कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे,
अज्जुणे, गोमायुपुत्ते । तए ण त छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगय मग्गदसम
सएहि-सएहि मतिदसणेहि निज्जूहति, निज्जूहित्ता गोसालं मखलिपुत्त उव्वट्ठाइसु ।

१ स० पा०—त चेव जाव तस्स ।

२ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

३ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

४. × (ता) ।

५. स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ ।

६. साले (व) ।

७ स० पा०—त चेव सव्व जाव अज्जिणे ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोय-
मेत्तेणं सव्वेसि पाणाण, सव्वेसि भूयाण, सव्वेसि जीवाणं, सव्वेसि सत्ताण इमाइं
छ अणइक्कमणिज्जाइ वागरणाइ वागरेति, तं जहा—

लामं अलाभ सुह दुक्ख, जीवियं मरण तथा ।

तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते तेण अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं
सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केव-
लिप्पलावी, असव्वणू सव्वणुप्पलावी °, अजिणे जिणसद् पगासेमाणे विहरइ,
तं नो खलु गोयमा ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी', *अरहा अरह-
प्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वणू सव्वणुप्पलावी, जिणे ° जिणसद्
पगासेमाणे विहरइ, गोसाले ण मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी', *अणरहा
अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वणू सव्वणुप्पलावी, अजिणे
जिणसद् ° पगासेमाणे विहरइ ॥

७८. तए ण सा महतिमहालया महच्चपरिसा 'समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए
एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदिता
नमसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं ° पडिगया ॥

गोसालस्स अमरिस-पदं

७९. तए ण सावत्थीए नगरीए सिंघाडग'-*तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-
पहेसु ° बहुजणो अण्णमणस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जण देवाणुप्पिया !
गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद् पगासेमाणे विहरइ
त मिच्छा । समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु तस्स
गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नाम मखे पिता होत्था । तए ण तस्स मखस्स
एव चेव त सव्व भाणियव्व जाव' अजिणे जिणसद् पगासेमाणे विहरइ, त नो
खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, गोसाले मंखलिपुत्ते
अजिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी
जाव जिणसद् पगासेमाणे विहरइ ॥

८०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरत्ते'
*रुट्ठे कुविए चंडिकिए ° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चो-
रुहिता सावत्थि नगरि मज्झमज्झेण' जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुभकारा-

१. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद् ।

५. अ० १५।१४-७६ ।

२. स० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे ।

६. स० पा०—आसुरत्ते जाव मिसि ° ।

३. स० पा०—अहा सिवे जाव पडिगया ।

७ लेखसत्तेपकरणेन 'निगच्छइ, निगच्छिता'

४. स० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।

इति पाठो न दृश्यते । द्रष्टव्यम्—१५।२४ ।

वणे' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणनि' आजीवियसघसपरिवुडे' महया अमरिसं वहमाणे एवं चावि विहरइ ॥

गोसालस्त आणंदेथेरसमकखे अक्कोसपदसण-पद

८२. तेण कालेण तेणं समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी आणदे नाम थेरे पगइभट्टए जाव' वणिणए छट्ठंछट्ठेण अणिविखत्तेणं तवोक्कम्मणं संजमेण तवमा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥
८२. तए ण से आणदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए एव जहा गोंयम-सामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव' उच्च-नीय-मज्झिमाड' *कुलाड घरसमुदा-णस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामते वीइवयइ ॥
८३. तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेर हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारा-वणस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एव वयासी—एहि नाव आणदा ! इओ एणं मह उवमिय निसामेहि ॥
८४. तए ण से आणदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेण एवं वुत्ते ममाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ ॥
८५. तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेर एव वयासी—एव खलु आणदा ! इत्तो चिरातीयाए अट्टाए केड उच्चावया' वणिया अत्थत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकखिया अत्थपिवासा अत्थगवेसणयाए नाणाविहविडलपणियभडमायाए सगडीसागडेण सुवहु भत्तपाण पत्थयण' गहाय एग महं अगामिय' अणोहिय छिन्तावाय दीहमद अडवि अणुप्पविट्ठा ॥
८६. तए ण तेसि वणियाण तीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्तावायाए दीहमद्व्याए अडवीए किचि देस अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदाए अणुपुव्वेण परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे भोणे" ॥
८७. तए ण ते वणिया भोणोदगा" समाणा तण्हाए परव्वभाणा" अण्णमण्णे सहावेत्ति,

१. कुंभकारावदणे (ता) ।

२. कुंभकारावदणमि (ता) ।

३. °सघपरिवुटे (ता, व, म) ।

४. म० १।२८८ ।

५. म० २।१०७-१०६ ।

६. म० पा०—मज्झिमाड जाव अट्टमाणे ।

७. उच्चावया (न, ता, व, स) ।

८. पत्थायणं (ता) ।

९. अगामिय (म, म, म), धकामिय (क, ख, ता) ।

१०. नीणे (न, क, म, न) ।

११. भोणोदगा (म, स) ।

१२. परिभवमाणा (म, न), पन्निममाना (ता); परव्वभाणा (म) ।

सद्वावेत्ता एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह इमीसे अगामियाए^१ *अणोहियाए छिन्तावायाए दीहमद्धाए^२ ° अडवीए किञ्चि देस अणुप्पत्ताण समाणाण से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे भीणे, त सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेत्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तीसे ण अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेत्ति, उदगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणा एगं मह वणसड आसादेति—किण्ह किण्होभासं जाव^३ महामेहनिकुरबभूय^४ पासादीय^५ ° दरिसणिज्ज अभिरूव^६ ° पडिरूव^७ ।

तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्जदेसभाए, एत्थ ण महेग वम्मीय^८ आसादेति । तस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ^९ अब्भुग्गयाओ, अभिनिसडाओ, तिरिय सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसठियाओ, पासादियाओ ° दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ ° पडिरूवाओ ॥

८८ तए ण ते वणिग्या हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्वावेत्ति, सद्वावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अगामियाए^१ *अणोहियाए छिन्तावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगस्स ° सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणेहि इमे वणसंडे आसादिए—किण्हे किण्होभासे । इमस्स ण वणसडस्स बहुमज्जदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए । इमस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ^२, *अभिनिसडाओ, तिरिय सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसठियाओ, पासादियाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ ° पडिरूवाओ तं सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह इमस्स वम्मीयस्स पढम वप्पु^३ भिदत्तए, अवियाइ ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो ॥

८९. तए ण ते वणिग्या अण्णमण्णस्स अतिय एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पु भिदंति । ते णं तत्थ अच्छ पत्थं जच्च तणुयं फालियवण्णाभ ओरालं उदगरयण आसादेति । तए णं ते वणिग्या हट्ठतुट्ठा पाणियं पिबंति, पिबित्ता वाहणाइ पज्जेति, पज्जेत्ता भायणाइं भरेति, भरेत्ता दोच्चं पि अण्णमण्ण एव वदासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहि इमस्स वम्मीयस्स

१. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।

२. ओ० सू० ४ ।

३. ° निकुरबभूयं (क, ख, ता, ब, म) ।

४. सं० पा०—पासादीयं जाव पडिरूव ।

५. वम्मियं (अ, क) ।

६. वप्पु (अ, क): वपूओ (ख, म) ।

७. सं० पा०—पासादियाओ जाव पडिरूवाओ ।

८. सं० पा०—अगामियाए जाव सव्वओ ।

९. सं० पा०—अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ ।

१०. वप्पि (अ, स); वपुं (क, ब, म) ।

पढमाए वप्पूए^१ भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, तं मेयं खलु देवाणु-
प्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स दोच्च पि वप्पु भिदिन्नाए, अविद्याडं एत्थ
ओराल सुवण्णरयण अस्सादेस्सामो ॥

६० तए ण ते वणिग्या अण्णमण्णस्स अतियं एयमट्ठं पडिमुणेति, पडिमुणेत्ता तस्स
वम्मीयस्स दोच्च पि वप्पु भिदति । ते णं तत्थ अच्च जच्च तावणिज्जं^२ महत्थं
महग्घं महरिहं ओरालं सुवण्णरयण अस्सादेति । तए ण ते वणिग्या हट्ठतुट्ठा
भायणाइ भरेति, भरेत्ता पवहणाइ भरेति, भरेत्ता तच्चं पि अण्णमण्ण एव
वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए
भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले
सुवण्णरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया । अम्हे इमस्स वम्मीयस्स
तच्चं पि वप्पु भिदित्तए, अविद्याडं एत्थ ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो ॥

६१ तए ण ते वणिग्या अण्णमण्णस्स अतियं एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिमुणेत्ता तस्स
वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पु भिदति । ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तज्जं निक्कलं
महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयण अस्सादेति । तए ण ते वणिग्या हट्ठतुट्ठा
भायणाइ भरेति, भरेत्ता पवहणाइ भरेति, भरेत्ता चउत्थं पि अण्णमण्ण एव
वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए
भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले
सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए,
त सेयं खलु देवाणुप्पिया । अम्हे इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पु^३
भिदित्तए, अविद्याडं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वडरयण अस्सादेस्सामो ॥

६२ तए णं तेसिं वणिग्याणं एगे वणिग्ये हियकामए मुहकामए पत्यकामए आणुकपिय
निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए ते वणिग्ये एवं वयासी—एव खलु देवाणु-
प्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे^४
•अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए
वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, त होउ अलाहि पज्जतं णे, एग्गा
चउत्थी वप्पू^५ मा भिज्जउ, चउत्थी ण वप्पु सउवमग्गा यावि होत्था ॥

६३. तए ण ते वणिग्या तस्स वणिग्यस्स हियकामगस्स मुहकामगस्स^६ •पत्यकामगस्स
आणुकपियस्स निस्सेसियस्स^७ हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाउक्खमाणस्स

१. वप्पाए (अ, न, स) ।

२. तवणिज्जं (अ, क, व, म, स) ।

३. आत्तादिए (म, स) ।

४. वप्प (अ, न, स) ।

५. मं० पा०—उदगरयणे जाय तत्ताए ।

६. वप्पा (ता) ।

७. मं० पा०—मुहकामगस्स जाय त्ति ।

जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सहहंति, 'नो पत्तियंति' नो रोयंति, एयमट्ठं असहहमाणा अपत्तियमाणा^१ अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थ पि वप्पु भिंदंति । ते णं तत्थ उग्गविस चंडविस घोरविसं महाविसं 'अतिकायं महाकायं'^२ मसिमूसाकालयं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुज-निगरप्पगास रत्तच्छं जमलजुयल-^३ चंचलचलतजीहं घरणितलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-विकड-फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमघमेंतघोसं अणागलियच्चड्ढतिव्वरोसं 'समुहं तुरिय चवल'^४ धमंत दिट्ठीविसं सप्पं संघट्ठेति ॥

१४. तए ण से दिट्ठीविसे सप्पे तेहि वणिएहि संघट्ठिए समाणे आसुरत्ते^५ * रुद्धे कुविए चंडविकए^६ मिसिमिसेमाणे सणियं-सणियं उट्ठेद, उट्ठेता सरसरसरस्स वम्मी-यस्स सिहरतलं द्रुहति^७, द्रुहिता आदिच्चं निज्झाति, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति ॥
१५. तए ण ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेण सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्च कूडाहच्चं भासरासी कया यावि^८ होत्था । तत्थ ण जे से वणिए तेसि वणियाणं हिय-कामए^९ * सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए^{१०} हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं आणुकंपियाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियग नगर साहिए ॥
१६. एवामेव आणंदा ! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सह-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वति, गुव्वति^{११}, शुव्वंति^{१२}—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे । तं जदि मे से अज्ज किचि वि वदति तो णं तवेण तेएणं एगाहच्च कूडाहच्चं भासरासिं करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया । तुमं च ण आणंदा ! सारक्खामि संगोवामि जहा वा से वणिए तेसि वणियाणं हियकामए जाव^{१३} निस्सेसकामए आणुकंपियाए देवयाए सभंडं^{१४} मत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं^{१५} साहिए । त गच्छ^{१६} ण तुम आणंदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवए-सगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ॥

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

३. अतिकायमहाकाय (क, ख, ता, म) ।

४. * जवुल (अ, ख, व, स) ।

५. समुहं तुरियचवलं (अ, क, ख, ता, व); समुदियतुरियचवल (वृ) ।

६. स० पा०—आसुरत्ते जाव मिसि० ।

७. द्रुहेति (क, ता, म); द्रुहति (स) ।

८. वि (क, ता, व) ।

९. स० पा० हियकामए जाव हिय ।

१०. × (अ, क, ख, ता); गुव्वति (व, म) ।

११. तुव्वति (क, ख), × (व, म), 'शुव्वंति' ति क्वचित्, क्वचित् 'परिभ्रमती' ति दृश्यते (वृ) ।

१२. म० १५।६२ ।

१३. स० पा०—सभंड जाव साहिए ।

१४. गच्छाहि (व, म) ।

आणंदथेरस्स भगवओ निवेदण-पदं

६७. त ए णं से आणंदे थेरे गोसालेण मखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए जाव^१ सजाय-
भए गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाह्लाए कुभकारीए कुभकाराव-
णाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घ तुरिय सावत्थि नगरी मज्झमंज्झेणं
निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण
करेइ, करेत्ता वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु अहं
भते । छट्ठक्खमणपारणगसि तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए
उच्च-नीय^२—*मज्झिमाइं कुलाइ वरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए *अडमाणे हाला-
ह्लाए कुभकारीए *कुभकारावणस्स अदूरसामते *वीइवयामि, त ए ण गोसाले
मखलिपुत्ते मम हालाह्लाए *कुभकारीए कुभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइ-
वयमाण *पासित्ता एव वयासी—एहि ताव आणंदा । इओ एग महं उवमियं
निसामेहि ।

त ए ण अहं गोसालेण मखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाह्लाए कुभ-
कारीए कुभकारावणे, जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि ।

त ए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एव वयासी—एवं खलु आणंदा ! इओ
चिरातीयाए अद्वाए केइ उच्चावया वणिया एव त चेव सव्व निरवसेसं भाणि-
यव्व जाव^३ नियम नगर साहि ए । त गच्छ ण तुमं आणंदा ! तव धम्मायरियस्स
धम्मोवएसगस्स *समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ॥

६८. त पभू ण भते ! गोसाले मखलिपुत्ते तवेणं तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि
करेत्तए ? विसए ण भंते ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स *तवेणं तेएण एगाहच्च
कूडाहच्च भासरासि^४ करेत्तए ? समत्थे ण भते ! गोसाले *मखलिपुत्ते तवेणं
तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि^५ करेत्तए ?

पभू ण आणंदा ! गोसाले मखलिपुत्ते तवेणं *तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भास-
रासि^६ करेत्तए । विसए णं आणंदा ! गोसालस्स *मखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं
एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि^७ करेत्तए । समत्थे ण आणंदा ! गोसाले^८

१. भ० १५।६६ ।

२. स० पा०—नीय जाव अडमारो ।

३. स० पा०—कुभकारीए जाव वीइवयामि ।

४. स० पा०—हालाह्लाए जाव पासित्ता ।

५. भ० १५।८५-८५ ।

६. स० पा०—धम्मोवएसगस्स जाव परिकहेहि ।

७. स० पा०—मखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए ।

८. स० पा०—गोसाले जाव करेत्तए ।

९. स० पा०—तवेणं जाव करेत्तए ।

१०. स० पा०—गोसालस्स जाव करेत्तए ।

११. स० पा०—गोसाले जाव करेत्तए ।

•मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेतए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा । जावतिए णं आणदा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स 'तवे तेए'^१, एत्तो अणंतगुणविसिद्धतराए चेव तवे तेए अणगाराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो । जावइए णं आणदा ! अणगाराणं भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिद्धतराए चेव तवे तेए थेराणं भगवताणं, खंतिखमा पुण थेरा भगवंतो । जावतिए णं आणदा ! थेराणं भगवताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिद्धतराए चेव तवे तेए अरहंताणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो । तं पभू णं आणदा ! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं^२ •एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेतए, विसए णं आणदा^३ ! •गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेतए, समत्थे ण आणदा^४ ! •गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासि° करेतए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा ॥

आणंदथेरेण गोयमाईणं अणुणवण-पदं

६६. तं गच्छ णं तुमंआणदा ! गोयमाईणं समणाणं निगंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि—मा णं अज्जो ! तुव्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिच्चोयणाए पडिच्चोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहि निगंथेहि मिच्छं विप्पडिवन्ते ॥

१००. तए णं से आणदे थेरे समणेण भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादी समणा निगंथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोयमादी समणे निगंथे आमंतेति, आमतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! छट्ठक्खमणपारणगसि समणेण भगवया महावीरेणं अब्भणुणाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं तं चेव सव्वं जाव^५ 'गोयमाईणं समणाणं निगंथाणं'^६ एयमट्ठं परिकहेहि, त मा णं

१. परियावणिय (अ, स) ।

२. तवेतेए (स) सर्वत्र ।

३. सं० पा०—तेएणं जाव करेतए ।

४. सं० पा०—आणदा जाव करेतए ।

५. सं० पा०—आणदा जाव करेतए ।

६. भ० १५।८२-८६ ।

७. नायपुत्तस्स (अ, क, ख, ता, व, म, स); सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि' इति पाठोस्ति, किन्तु प्रसङ्गपर्यालोचनया नैव संगच्छते । 'नायपुत्तस्स

एयमट्ठं परिकहेहि' इति गोशालकस्य उक्तिरस्ति—द्वष्टव्यं १५।८६ । यदि एतदन्तः पाठोत्र विवक्षितः स्यात्तदा आनन्दस्य भगवतो निवेदनम्, भगवतश्च आनन्दस्य गौतमादिश्रमणोभ्यः तदर्थज्ञापनस्य निर्देशन—एतत् सर्वं तस्मिन् पाठे नैव प्राप्तं भवेत् । कथं च आनन्दः भगवतः निर्देश-मश्रावयित्वा गौतमादिभ्यः 'त माणं अज्जो' इत्यादि निर्देशं कुर्यात् ? एतत् न स्वाभाविकम् । तेन प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे

अज्जो ! तुभं केई गोसाल मंखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ',
 •धम्मियाए पडिसारणयाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले
 ण मखलिपुत्ते समणेहि निग्गथेहि ° मिच्छ विप्पडिवन्ने ॥

गोसालस्स भगवंत पइ अक्कोसणुव्वं ससिद्धंत निरुवरण-पदं

१०१. जाव च ण आणंदे थेरे गोयमाईण समणाण निग्गथाण एयमदुं परिकहेइ, ताव
 च ण से गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणाओ पडिनि-
 क्खमइ, पडिनिक्खमित्ता आजीवियसघसंपरिवुडे महया अमरिस वह्माणे
 सिग्घ तुरिय^१ सावत्थि नगरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्टए
 चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स
 भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एवं वदासी—
 सुट्ठु णं आउसो कासवा ! मम एवं वयासी, साहू ण आउसो कासवा ! मम
 एव वयासी—गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी, गोसाले मखलिपुत्ते मम
 धम्मतेवासी ।

जे ण से गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मतेवासी से ण सुक्के सुक्काभिजाइए
 भवित्ता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु^२ देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने,
 अहण्णं उदाई नाम कूडियायणीए^३ अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पज-
 हामि, विप्पजहिता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्प-
 विसित्ता इम सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि ।

जे वि आइ आउसो कासवा । अम्ह समयंसि केइ सिज्झिस्सु वा सिज्झति वा
 सिज्झिस्सति वा सव्वे ते चउरासीति महाकप्पसयसहस्साइ, सत्त दिव्वे, सत्त
 सजूहे, सत्त सण्णिगव्वे, सत्त पउट्टपरिहारे, पच कम्मणि^४ सयसहस्साइ सद्धि
 च सहस्साइ छच्च सए तिणिण य कम्मसे अणुपुव्वेण खवइत्ता तओ पच्छा
 सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति^५ सव्वदुक्खाणमंत करेसु वा करेति
 वा करिस्सति वा ।

से जहा वा गगा महानदी जओ पवूढा, जहि वा पज्जुवत्थिया^६, एस णं अद्धा
 पचजोयणस्याइ आयामेण, अद्धजोयण विक्खमेण, पच धणुसयाइ उव्वेहेण ।

लिपिकरणे वा कच्चिद् विपर्ययो जातः ।

प्रसङ्गानुसारेण 'जाव' पदस्यानन्तर गोय-
 माईण समणाण निग्गथाण एयमदु परिकहेहि'
 इति पाठ. उपयुज्यते ।

१. स० गा०—पडिचोएउ जाव मिच्छ ।

२. तुरिय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स);
 दण्टव्यसू—अ० १५।६७ ।

३. अण्णतरेसु चेव (ता) ।

४. कडियायणि (क, म); कु डियणि (ता) ।

५. कम्मणि (अ, ख, ता); कम्माणि (क);
 कर्मणामित्यर्थः (वृ) ।

६. परिनिव्वाइति (अ, ख, स) ।

७. पज्जवत्थिया (अ, क, स); पज्जुपत्थिया
 (ता) ।

एएणं गगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा । सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा । सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मद्गंगा^१ । सत्त मद्गंगाओ सा एगा लोहियगंगा । सत्त लोहियगंगाओ सा एगा आवतीगंगा^२ । सत्त आवतीगंगाओ सा एगा परमावती । एवामेव सपुब्बावरेण एग गगासयसहस्स सत्तर सहस्सा छच्च अगुणपन्न^३ गगासया भवतीति मक्खाया ।

तासि दुविहे उद्धारे पणत्ते, तं जहा—सुहुमबोदिकलेवरे चेव, बायरबोदिकलेवरे चेव । तत्थ ण जे से सुहुमबोदिकलेवरे से ठप्पे । तत्थ ण जे से बायरबोदिकलेवरे तओ ण वाससए गए, वाससए गए एगमेग गंगाबालुयं अवहाय जावतिएण कलेण से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे । एएणं सरप्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीति महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे ।

१. अणताओ सजूहाओ जीवे चय चइत्ता उवरिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जति । से ण तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतर चयं चइत्ता पढमे सण्णिगम्भे जीवे पच्चायाति ।

२. से ण तओहितो अणतरं उव्वट्ठित्ता मज्झिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं •भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतरं चयं • चइत्ता दोच्चे सण्णिगम्भे जीवे पच्चायाति ।

३. से णं तओहितो अणतरं उव्वट्ठित्ता हेट्ठिल्ले माणसे सजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता तच्चे सण्णिगम्भे जीवे पच्चायाति ।

४. से ण तओहितो जाव उव्वट्ठित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता चउत्थे सण्णिगम्भे जीवे पच्चायाति ।

५. से ण तओहितो अणतर उव्वट्ठित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता पचमे सण्णिगम्भे जीवे पच्चायाति ।

६. से णं तओहितो अणतरं उव्वट्ठित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे सजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता छट्ठे सण्णिगम्भे जीवे पच्चायाति ।

१. मद्गंगा(व); मद्गुगंगा(म); मच्चुगंगा(वव०) । ४. तत्था (ता) ।

२. अवतीगंगा (क, ख, व, म) ।

५. स० पा०—आउक्खएण जाव चइत्ता ।

३. गुणपणं (अ. स); अगुणपण्णा (ता) ।

७. से णं तथोहितो अणंतरं उव्वट्ठित्ता—वंभलोगे नाम से कप्पे पणत्ते—
पाईणपडोणायते उदीणदाहिणविच्छिण्णे, जहा ठाणपदे जाव पच वडेसगा
पणत्ता, तं जहा—असोगवडेसए जाव^१ पडिह्वा—से ण तत्थ देवे उववज्जइ ।
से ण तत्थ दस सागरोवमाई दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता सत्तमे सण्णि-
गम्भे जीवे पच्चायाति ।

से ण तत्थ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइदियाण वीतिवकताणं
सुकुमालगभद्लए मिउ-कुडलकुचिय^२—केसए मट्ठगंडतल-कण्णपीढए देवकुमार-
सप्पभए दारए पयाति । से ण अह कासवा ! तए णं अहं आउसो कासवा !
कोमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बभचेरवासेणं अविद्धकण्णए चेव संखाणं
पडिलभामि, पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, त जहा—
१ एणेज्जस्स २ मल्लरामस्स ३. मंडियस्स^३ ४. रोहस्स ५. भारद्वाइस्स
६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स ७ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ।

तत्थ ण जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया
मडिकुच्छिसि चेइयसि उदाइस्स कुडियायणस्स सरीर विप्पजहामि, विप्पज-
हिता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता वावीसं वासाइ
पढम पउट्टपरिहार परिहरामि ।

तत्थ ण जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उहंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयर-
णसि चेइयसि एणेज्जगस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहिता मल्लरामस्स
सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकवीस वासाइ दोच्च पउट्टपरिहारं
परिहरामि ।

तत्थ ण जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से ण चंपाए नगरीए बहिया अगमंदिरसि
चेइयसि मल्लरामस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहिता मडियस्स सरीरगं
अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता वीस वासाइ तच्च पउट्टपरिहार परिहरामि ।

तत्थ ण जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नगरीए बहिया काममहा-
वणसि चेइयसि मडियस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहिता रोहस्स सरीरगं
अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकूणवीस वासाइ चउत्थ पउट्टपरिहारं
परिहरामि ।

तत्थ णं जे से पचमे पउट्टपरिहारे से णं आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकाल-
गसि^४ चेइयसि रोहस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहिता भारद्वाइस्स सरीरगं

१. प० २ ।

२. कु तल ° (ता) ।

३. मंडिसस्स (क, ता, व) ।

४. कालगयंसि (स) ।

अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता अट्टारस वासाइ पचम पउट्टपरिहारं परिहरामि ।

तत्थ ण जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नगरीए बहिया कोडियायणसि^१ चेइयसि भारद्वाइस्स^२ सरीर विप्पजहामि, विप्पजहिता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सत्तरस वासाइ छट्ठ पउट्टपरिहार परिहरामि ।

तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहिता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग अल थिर धुव धारणिज्ज सीय-सह जण्हसहं खुहासह विविहदंसमसगपरीसहोवसगसह थिरसवयण ति कट्ठु तं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सोलस वासाइ इम सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा ! एगेण तेत्तीसेण वाससएण सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवतीति मक्खाया, त सुट्ठु ण आउसो कासवा ! मम एवं वयासी—साहू णं आउसो कासवा ! मम एव वयासी—गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी, गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी ॥

भगवया गोसालगवयणस्स पडियार-पद

१०२. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—गोसाला ! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहि परब्भमाणे^१-परब्भमाणे कत्थ य गड्ढ वा दरि वा दुग्गं वा णिण्णं^२ वा पव्वय वा विसम वा अणस्सादेमाणे^३ एगेण मह उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण^४ वा तणसूएण वा अत्ताण आवरेत्ताण च्छिट्ठेज्जा, से ण अणावरिए आवरियमिति अप्पाण मण्णइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मण्णइ, अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाण मण्णइ, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मण्णइ, एवामेव तुम पि गोसाला ! अणण्णे सते अण्णमिति अप्पाण उपलभसि, त मा एव गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ॥

गोसालस्स पुणरवकोस-पदं

१०३. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समणे आसु-रुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिविकए मिसिमिसेमाणे समण भगवं महावीर उच्चावयाहि

१. कडिययणसि (स) ।

२. भारद्वाइयस्स (अ, ता, स) ।

३. परिब्भमाणो (ता); पारब्भमाणो (म); परब्भमाणे (स) ।

४. णिण (क, ता); णिल्ल (म) ।

५. अणासा ° (ता) ।

६. °पोम्हेण (क, ख); °पोमेण (ता) ।

आओसणाहि आओसइ, उच्चावयाहि उद्धसणाहि उद्धसेति, उच्चावयाहि
‘निबभछणाहि निबभछेति’, उच्चावयाहि निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेता
एव वयासी—नट्टे सि कदाइ, विणट्टे सि कदाइ, भट्टे सि कदाइ, नट्ट-विणट्ट-भट्टे
सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो सुहमत्थि ॥

गोसालेण सव्वाणुभूतिस्स भासरासीकरण-पदं

१०४. तेण कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी पाईणजाण-
वए^१ सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभइए^२ •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाण-
मायालोभे भिउमह्वसपन्ने अल्लोणे^३ विणीए धम्मयारियाणुरागेण एयमट्ठ
असइहमाणे उट्टाए उट्टेइ, उट्टेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छिता गोसाल मखलिपुत्ते एव वयासी—जे वि ताव गोसाला ! तहा-
रुवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिय एगमवि आरिय^४ धम्मिय सुवयणं
निसामेति, से वि ताव वदति नमसति^५ •सक्कारेति सम्माणेति^६ कल्लाणं
मगल देवय चेइय पज्जुवासति, किमग पुण तुम गोसाला ! भगवया चेव पव्वा-
विए, भगवया चेव मुडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए,
भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ^७ चेव सिच्छ विप्पडिवन्ते ? त मा एव
गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ॥

१०५. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं एव वुत्ते समणे आसु-
हत्ते रुट्टे कुविए चडिकिकए मिसिभिसेमाणे सव्वाणुभूति अणगार तवेणं तेएणं
एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि करेति ॥

१०६. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सव्वाणुभूति अणगार तवेणं तेएणं एगाहच्च कूडा-
हच्च भासरासि करेत्ता दोच्च पि समण भगव महावीरं उच्चावयाहि आओस-
णाहि आओसइ^१, •उच्चावयाहि उद्धसणाहि उद्धसेति, उच्चावयाहि निबभछणाहि
निबभछेति, उच्चावयाहि निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी—नट्टे
सि कदाइ, विणट्टे सि कदाइ, भट्टे सि कदाइ, नट्ट-विणट्ट-भट्टे सि कदाइ, अज्ज न
भवसि, नाहि ते ममाहितो^२ सुहमत्थि ॥

गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पदं

१०७. तेणं कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी कोसलजाण-

१. णिबभच्छणाहि णिबभच्छेइ (ता) ।

२. सुहनत्थि (अ, स) ।

३. पदीणं (क, म); पडीणं (ता, व) ।

४. सं० पा०—पगइभइए जाव विणीए ।

५. यारिय (अ, ता, व, म) ।

६. सं० पा०—नमंसति जाव कल्लाण ।

७. भगवया (क, ख, ता, व) ।

८. सं० पा०—आओसइ जाव सुहमत्थि ।

वए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभट्टए जाव' विणीए धम्मयारियाणुरागेणं
 '●एयमट्ठ असद्दहमाणे उठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मखलिपुत्त एवं वयासी—जे वि ताव गोसाला !
 तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिथं एगमवि आरिय धम्मियं सुवयण
 निसामेति, से वि ताव वदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाण मंगलं
 देवय चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए,
 भगवया चेव मुडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भग-
 वया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ चेव मिच्छ विप्पडिवन्ते ? त मा एवं गोसाला !
 नारिहसि गोसाला ! ° सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ॥

१०८. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्तेण अणगारेण एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते
 रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुनक्खत्तं अणगारं तवेण तेएणं परिता-
 वेइ ॥

१०९. तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मखलिपुत्तेणं तवेण तेएण परिताविए
 समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण
 भगव महावीर तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता सयमेव पव महव्वयाइं
 आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कते
 समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥

गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पद

११०. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगार तवेण तेएणं परितावेत्ता तच्चं
 पि समण भगवं महावीरं उच्चावयाहि आओसणहि आओसइ, '●उच्चावयाहि
 उद्धसणहि उद्धसेति, उच्चावयाहि निव्वभळणाहि निव्वभळेति, उच्चावयाहि
 निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एव वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि
 कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते
 ममाहितो ° सुहमत्थि ॥

१११. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—जे वि ताव
 गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा '●अतिथं एगमवि आरियं धम्मियं
 सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाणं
 मंगलं देवय चेइयं ° पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला ! तुम मए चेव पव्वाविए',

१. भ० १५।१०४ ।

२. सं० पा०—जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव
 सच्चेव ।

३. सं० पा०—सव्व तं चेव जाव सुहमत्थि ।

४. सं० पा०—तं चेव जाव पज्जुवासति ।

५. सं० पा०—पव्वाविए जाव मए ।

- मए चेव मुंडाविए, मए चेव सेहाविए, मए चेव सिक्खाविए°, मए चेव बहुस्सुतीकए, ममं चेव मिच्छ विप्पडिवन्ने ? त मा एवं गोसाला¹ । ●नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया° नो अण्णा ॥
११२. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेण एवं वुत्ते समाणे आसुस्ते रुद्धे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तेयासमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्किता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगसि तेयं निसिरति—से जहानामए वाउक्कलिया¹ इ वा वायमडलिया इ वा सेलसि¹ वा कुडुसि वा थभसि वा थूभसि वा आवारिज्जमाणी¹ वा निवारिज्जमाणी वा सा णं तत्थ नो कमति नो पक्कमति एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से ण तत्थ नो कमति नो पक्कमति अचियच्चि करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता उड्ढं वेहास उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्तमाणे¹ तमेव गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे-अणुडहमाणे अतो-अतो अणुप्पविट्ठे ॥
११३. तए ण से गोसाले मंखलिपुत्ते सएण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीर एव वयासी—तुम ण आउसो कासवा¹ । मम तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ॥
११४. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—नो खलु अह गोसाला ! तव तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह¹ ●मासाण पित्तज्जर-परिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव° काल करेस्सामि, अहण्णं अण्णाइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि । तुम ण गोसाला ! अप्पणा चेव सएणं तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए¹ छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ॥

सावत्थीए जणपवाद-पवं

११५. तए ण सावत्थीए नगरीए सिंघाडग-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मह-महापह°-पहेसु बहुजणो अणमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एव खलु

१. स० पा०—गोसाला जाव नो ।
 २. वाओ° (ता); वातु° (म) ।
 ३. तृतीयार्ये सप्तमी (वृ) ।
 ४. आवरि° (अ, क, ख, ब, म, स) ।

५. पडिणियत्तेमाणे (स) ।
 ६. स० पा०—छण्ह जाव कालं ।
 ७. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
 ८. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

देवानुप्पिया ! सावत्थीए नगरीए वहिया कोट्टए चेइए दुवे जिणा संलवंति—
एगे वदंति तुम पुंन्व काल करेस्ससि, एगे वदंति तुम पुंन्व काल करेस्ससि ।
तत्थ ण के पुण सम्मावादी ? के मिच्छावादी ?
तत्थ ण जे से अहप्पहाणे जणे से वदति—समणे भगव महावीरे सम्मावादी,
गोसाले मखलिपुत्ते मिच्छावादी ॥

गोसालेण समणाण पसिणवागरण-पदं

११६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमत्तेत्ता एव वयासी—
अज्जो ! से जहानामए तणरासी इ वा कट्टरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी
इ वा तुसरासी इ वा भुसरासी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा
अगणिआमिए^१ अगणिआसिए अगणिपरिणामिए ह्यतेए गयतेए नट्टतेए भट्टतेए
लुत्ततेए विणट्टतेए जाए^२; एवामेव गोसाले मखलिपुत्ते मम बहाए सरीरगसि तेयं
निसिरित्ता ह्यतेए गयतेए^३ *नट्टतेए भट्टतेए लुत्ततेए^४ विणट्टतेए जाए, त
छंदेण अज्जो ! तुंभे गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह,
धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मिएणं पडोयारेण पडोयारेह, अट्टेहि य
हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्टपसिणवागरणं करेह ॥
११७. तए ण ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एव वुत्ता समाणा समणं
भगवं महावीर वदंति नमंसंति, वदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए
पडिचोएंति, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेति, धम्मिएणं पडोयारेण
पडोयारेति, अट्टेहि य हेऊहि य^५ *कारणेहि य निप्पट्टपसिणं वागरणं^६ करेति^७ ॥
११८. तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते समणेहि निग्गंथेहि धम्मियाए पडिचोयणाए
पडिचोइज्जमाणे^८, *धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणे, धम्मिएणं
पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणे, अट्टेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य
कारणेहि य^९ निप्पट्टपसिणवागरणे कीरमाणे आसुस्ते^{१०} *रुद्धे कुविए चंडिकिए^{११}
मिसिमिसेमाणे नो सचाएति समणाण निग्गंथाण सरीरगस्स किंचि आबाहं वा
वाबाह वा उप्पाएत्तए, छविच्छेद वा करेत्तए ॥

१. सम्मावादी (अ, क, ख, ब, स) ।
२. °ज्जामिए (ता, म) ।
३. जाव (अ, म, स) ।
४. सं० पा०—गयतेए जाव विणट्टतेए ।
५. सं० पा०—हेऊहि य जाव वागरण ।

६. °वाकरण (अ) ।
७. वाकरेति (अ); वा वागरेति (ता) ।
८. सं० पा०—पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्ट°
९. सं० पा०—आसुस्ते जाव मिसि° ।

गोसालस्स संघभेद-पदं

११६ तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मखलिपुत्तं समणेहि निग्गथेहि धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएण पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणं, अट्ठेहि य हेऊहि य^१ •पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं^२ कीरमाणं, आसुस्तं^३ •रुद्धं कुवियं चंडिकियं^४ •मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गथाणं सरीरगस्स किंचि आवाहं वा वावाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अतियाओ आयाए अवक्कमति, अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिव्वुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता समणं भगव महावीरं उवसपज्जित्ताणं विहरति । अत्येगतिया आजीविया थेरा गोसालं चैव मखलिपुत्तं उवसपज्जित्ताणं विहरति ॥

गोसालस्स पडिगमण-पदं

१२० तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठ असाहेमाणे^१, रुंदाइ पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाइ लुचमाणे, अबडुं कंडूयमाणे, पुयलि पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिद्धमाणे, दोहि वि पाएहि भूमि कोट्टेमाणे हा हा अहो ! हओहमस्सि त्ति कट्ठु समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अवक्कूणगहत्थगए, मज्जपापाणं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुभकारीए अंजलिक्कम्म करेमाणे, सीयलएण मट्ठियापाणएण आयंचिण-उदएणं गायाइ परिसिचमाणे^२ विहरइ ॥

गोसालेणं नाणासिद्धंत-परुवण-पदं

१२१. अज्जोति ! समणे भगव महावीरे समणे निग्गथे आमंतेत्ता एवं वयासी— जावतिए ण अज्जो ! गोसालेणं मखलिपुत्तेण ममं वहाए सरीरगसि तेये निसट्ठे से ण अलाहि पज्जत्ते सोलसण्ह जणवयाणं, तं जहा—१. अंगाणं २. वंगाणं ३. मगहाणं ४. मलयाणं ५. मालवगाणं^३ ६. अच्छाणं ७. वच्छाणं ८. कोच्छाणं

१. स० पा०—हेऊहि य जाव कीरमाण ।

४. अबट्ठु (अ, स); अबडुयं (ता) ।

२. स० पा०—आसुस्तं जाव मिसि^० ।

५. परिसिचमाणे २ (ता) ।

३. आसाहेमाणे (ख) ।

६. मालवगाणं (ख); मालवताणं (ता) ।

६. पाढाणं १०. लाढाणं ११. वज्जीणं १२. मोलोणं १३. कासीणं १४. कोस-
लाणं १५. अवाहाणं १६. सुभुत्तराणं १ घाताए वहाए उच्छादणयाए भासी-
करणयाए ।

जं पि य अज्जो ! गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारोए कुंभकारावणंसि
अवकूणगहत्थगाए, मज्जपाण पियमाणे, अभिक्खण गायमाणे, अभिक्खणं नच्च-
माणे, अभिक्खणं ॥ हालाहलाए कुभकारीए ० अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ,
तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाई अट्ठ चरिमाई पण्णवेइ, तं जहा—
१. चरिमे पाणे २. चरिमे गेये ३. चरिमे नट्टे ४. चरिमे अंजलिकम्मे ५. चरिमे
पोक्खलसवट्ठए महामेहे ६. चरिमे सेयणए गघहत्थो ७. चरिमे महासिला-
कटए सगांमे ८. अह च णं इमीसे ओसप्पिणिसमाए ९. चउवीसाए तित्थगराणं
चरिमे तित्थगरे सिज्झिस्स जाव १ अतं करेस्स ।

ज पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्ठियापाणएणं आर्यच्चिण-
उदएण गायाइ परिसिचमाणे विहरइ, तस्स वि णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए
इमाइ चत्तारि पाणगाइ चत्तारि अपाणगाइ पण्णवेति ॥

१२२. से कि त पाणए ?

पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. गोपुट्टए २. हत्थमदियए ३. आतवतत्तए
४. सिलापव्भट्टए । सेत्तं पाणए ॥

१२३. से कि तं अपाणए ?

अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. थालपाणए २. तयापाणए ३. सिबलि-
पाणए ४. सुद्धपाणए ॥

१२४. से किं ते थालपाणए ?

थालपाणए—जे णं दाथालगं वा दावारग वा दाकुभगं वा दाकलसं वा सीतलगं
उत्तलगं १ हत्थेहि परामुसइ, न य पाणियं पियइ । सेत्त थालपाणए ॥

१२५. से किं तं तयापाणए ?

तयापाणए—जे ण अवं वा अंवाडग वा जहा पओगपदे जाव १ बोर १ वा तेवरुय १

१. मालीण (अ, ख, ता, व, म) ।

७. आर्यच्चिण (अ, क, ख, व, म) ।

२. सुभुत्तराण (अ, क, म); सुभत्तराण (ख):
संभुत्तराण (ता, व); सुभत्तराण (स) ।

८. संवलि ० (अ, ख), सेवलि ० (व); संव-
एलि ० (म) ।

३. स० पा०—अभिक्खणं जाव अजलिकम्मं ।

९. ओलग्य (ख) ।

४. ओसप्पिणीए (स) ।

१०. प० १६ ।

५. तित्थकराण (अ, क, व, म, स); तित्थक-
राणं (ख) ।

११. पोर (अ), पोर (क, ता, म); चोरं (व) ।

१२. तेवरुय (अ, म); तेवरुय (ता); तेवरुयं
(व); तिदुख्यं (स) ।

६. म० १।४४ ।

वा तरुणं आमग^१ आसगसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ ।
सेत्तं तयापाणए ॥

१२६ से किं तं सिवलिपाणए ?

सिवलिपाणए—जे ण कलसंगलियं^२ वा मुग्गसगलिय वा माससगलिय वा सिवलि-
सगलिय वा तरुणियं आमिय आसगसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य
पाणियं पियति । सेत्तं सिवलिपाणए ॥

१२७. से किं तं सुद्धपाणए ?

सुद्धपाणए—जे णं छम्मासे सुद्धखाइम खाइ, दो मासे पुढविसथारोवगए, दो
मासे कटुसथारोवगए, दो मासे दग्गसथारोवगए, तस्स णं बहुपडिपुण्णाण छण्हं
मासाण अंतिमराईए इमे दो देवा महिड्डिया जाव^३ महेसक्खा अंतिय पाउग्ग-
वंति, त जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य । तए णं ते देवा सीयलएहि उत्तलएहि
हत्थेहि गायाइं परामुसति, जे ण ते देवे साइज्जति, से णं आसीविसत्ताए कम्म
पकरेति, जे ण ते देवे नो साइज्जति तस्स ण संसि^४ सरीरगसि अगणिकाए
संभवति, से ण सएण तेएण सरीरगं भायेति, भामेत्ता तत्रो पच्छा सिज्जति
जाव अतं करेति । सेत्तं सुद्धपाणए ॥

अयंपुल-आजीविओवासय-पदं

१२८. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले नाम आजीविओवासए परिवसइ—अइडे,
जहा हालाहला जाव^५ आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ । तए ण
तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स अण्णया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि
कुडुवजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^६ *चित्तिए पत्थिए मणोगए
संकप्पे^७ समुप्पज्जित्था—किसंठिया णं हत्थला पण्णत्ता ?

१२९. तए ण तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स दोच्चं पि अयमेयारूवे
अज्झत्थिए^८ *चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^९ समुप्पज्जित्था—एव खलु ममं
धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मल्लिपुत्ते उप्पन्ननाणदसणधरे^{१०} *जिणे
अरहा केवली^{११} सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए
कुभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंधसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं
भावेमाणे विहरइ, त सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव^{१२} उट्ठियम्मि

१. आमलग (ता) ।

२. *सिगलिय (क, ता) ।

३. भ० १।३३६ ।

४. तसि (ल, म, स) ।

५. भ० १५।१ ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

८. सं० पा०—उप्पन्ननाणदमणधरे जाव

९. भ० २।६६ ।

उट्टेइ, उट्टेत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ^१, •वंदिता नमंसित्ता जामेव दिसं पाळब्भूए^२ तामेव दिसं ° पडिगए ॥

गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पदं

१३६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोएत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गघोदएणं ण्हाणेह^३, ण्हाणेत्ता पम्हलसुकुमालाए गधकासाईए गयाइं लूहेह, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेण गयाइं अणुलिपह, अणुलिपित्ता महिरिहं हसलक्खणं पडसाडगं नियसेह, नियसेत्ता सव्वालंकारविभूसिय करेह, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीयं दुरुहेह^४, दुरुहेत्ता सावत्थीए नयरीए सिघाडगं-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह^५ °-पहेसु महया-महया सदेण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी^६, •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे ° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे, सिद्धे जाव^७ सव्वदुक्खप्पहीणे—इड्ढिसक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स नीहरण करेह ॥

१४०. तए ण ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमद्दं विणएणं पडिसुणेति ॥

गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्वं कालधम्म-पदं

१४१. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणसि पडिलद्ध-सम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए^१ •चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ° समु-प्पज्जित्था—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी^२, •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे ° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ते^३ अहण्ण गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए ऽअवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहि असव्भावुंभावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा

१. सं० पा०—नमंसइ जाव पडिगए ।

५. घोसेमाणा (अ, ख, ब) ;

२. 'ण्हावेह' इति रूपं समीचीन प्रतिभाति, किन्तु 'ण्हावेइ, ण्हाणेइ' इति रूपद्वयमपि लभ्यते ।

६. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।

७. भ० १।४३ ।

८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।

३. दूहेह (अ, क, ख, ता) ।

१०. विहरइ (क, ता, स) ।

४. सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाड्ढे समणे अतो सत्त-
रत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्ये चैव काल करेस्सं । समणे
भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी^१, *अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलप्प-
लावी, सव्वणू सव्वणुप्पलावी, जिणे^२ जिणसद् पगासेमाणे विहरइ—एवं
सपेहेति, सपेहेत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता उच्चावय^३—सवह—सावियए
पकरेति, पकरेत्ता एव वयासी—नो खलु अह जिणे जिणप्पलावी जाव पगासे-
माणे विहरिए । अहणं गोसाले चैव मंखलिपुत्ते समणघायए^४ *समणमारए
समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाण अयसकारए अवणकारए अकित्तिकारए
वहूहि असवभावुवभावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाण वा परं वा तदुभयं वा
वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएण तेएण अण्णाड्ढे समणे अतो सत्त-
रत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए^५ छउमत्ये चैव काल करेस्स ।
समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद् पगासेमाणे विहरइ, त
तुव्व णं देवाणुप्पिया । मम कालगय जाणित्ता वामे पाए सुवेण वधेह^६, वधेत्ता
तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभेह^७, उट्ठुभेत्ता सावत्थीए नगरीए सिघाडग^८—*तिग-चउक्क-
चच्चर-चउम्मुह-महापह^९—पहेसु आकट्ट-विकट्टि करेमाणा महया-महया सद्देणं
उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वदह—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंख-
लिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए । एस ण गोसाले चैव मंखलिपुत्ते
समणघायए जाव छउमत्ये चैव कालगए । समणे भगव महावीरे जिणे जिण-
प्पलावी जाव विहरइ । महया अणिड्ढी-असक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स
नीहरण करेज्जाह—एवं वदित्ता कालगए ॥

गोसालस्स नीहरण-पदं

१४२ तए ण आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्त कालगय जाणित्ता हालाहलाए
कुभकारीए कुभकारावणस्स दुवाराइ पिहेति, पिहेत्ता हालाहलाए कुभकारीए
कुभकारावणस्स बहुमज्झदेसभाए सावत्थि नगरि आलिहति, आलिहित्ता
गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरग वामे पदे सुवेण वधंति, वधित्ता तिक्खुत्तो मुहे
उट्ठुभति, उट्ठुभित्ता सावत्थीए नगरीए सिघाडग^८—*तिग-चउक्क-चच्चर-चउ-
म्मुह-महापह^९—पहेसु आकट्ट-विकट्टि करेमाणा णीय-णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा-

१. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद् ।

२. उच्चावय (अ, म) ।

३. स० पा०—समणघायए जाव छउमत्ये ।

४. वधहा (अ, व), वधह (ख, म, स); वधेहा (ता) ।

५. उट्ठुभह (अ, ख, व, स); उट्ठुभस्स(ता);

उट्ठुभह (वृगा)

६. स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

७. स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

उगधोसेमाणा एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए । एस णं गोसाले चैव मखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चैव कालगए । समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव^१ विहरइ—सवह-पडिमोक्खणग करेति, करेत्ता दोच्च पि पूया-सक्कार-थिरीकरण-ट्ठयाए गोसालस्स मखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुव मुयति, मुइत्ता हाला-हलाए कुंभकारीए कृभकारावणस्स 'दुवार-वयणाइ'^२ अवगुणंति^३, अवगुणित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग सुरभिणा गधोदएणं ण्हाणति, तं चैव जाव^४ महया इडिडसक्कारसमुदएण गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरण करेति ॥

भगवओ रोगायंक-पाउंभवण-पदं

१४३. तए णं समणे भगव महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्टयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥
१४४. तेणं कालेणं तेणं समएण मेढियगामे^१ नामं नगरे होत्था—वण्णओ^२ । तस्स ण मेढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ ण साणकोट्टए^३ नाम चेइए होत्था—वण्णओ जाव^४ पुढविसिलापट्टओ । तस्स णं साणकोट्टगस्स चेइयस्स अट्टरसामते, एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हं किण्हो-भासे जाव^५ महामेहनिकुरबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति । तत्थ ण मेढियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति—अड्ढा जाव^६ बहुजणस्स अपरिभूया ॥
१४५. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुर्व्वि चरमाणे^१ *गामाणु-गाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे^२ जेणेव मेढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्टए चेइए तेणेव उवागच्छइ जाव^३ परिसा पडिगया ॥
१४६. तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विपुलं रोगायके पाउंभूए—उज्जले^४ *विउले पगाढे कक्कसे कडुए चडे दुक्खे दुगे^५ तिन्वे * दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवकतिए^६ यावि विहरति, अवि याइं लोहिय-वच्चाइ

१. भ० १५।१४१ ।

२. दाराई (ता) ।

३. अवगुवति (ता) ।

४. भ० १५।१३६ ।

५. मेढिय^० (क); मिढिय^० (ब) ।

६. ओ० सू० १ ।

७. साल^० (अ, क, ब, म, स) ।

८. ओ० सू० २-१३ ।

९. ओ० सू० ४ ।

१०. भ० ३।६४ ।

११. स० पा०—चरमाणे जाव जेणेव ।

१२. भ० १।७, ८ ।

१३. स० पा०—उज्जले जाव दुरहियासे ।

१४. × (वृ); दुगे (वृपा) ।

१५. दाहवकंतीए (अ, ख, ता, म, स) ।

पि पकरेइ, चाउवण्ण^१ च ण वागरेति—एव खलु समणे भगव महावीरे गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे^२ समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चैव काल करेस्सति ॥

सीहस्स माणसियदुक्ख-पद

१४७. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी सीहे नामं अणगारे—पगइभइए जाव^३ विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिकित्तेण तवोकम्मेणं उड्डं बाहाओ^४ *पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे^० विहरति ॥

१४८ तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स भाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झ-
त्थिए^५ *चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे^० समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायके पाउव्भूए—उज्जले जाव^३ छउमत्थे चैव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चैव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाण-
सिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छग अतो-अतो अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया-महया सदेण कुहुकुहुस्स परुण्णे ॥

भगवया सीहस्स आसासण-पदं

१४९. अज्जोति ! समणे भगव महावीरे समणे निग्गये आमतेति, आमतेत्ता एवं वयासी—एव खलु अज्जो ! मम अतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभइए *जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिकित्तेण तवोकम्मेणं उड्डं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति ।

तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स भाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झ-
त्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु मम धम्माय-
रियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगा-
यके पाउव्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चैव काल करेस्सति, वदिस्सति य णं अण्णतित्थिया—छउमत्थे चैव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाणसि-
एणं दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव

१. चाउवण्ण (व) ।

२. आदिट्ठे (क, ता) ।

३. अ० १।२८८ ।

४. सं० पा०—बाहाओ जाव विहरइ ।

५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्थां

६. अ० १५।१४६ ।

७. सं० पा०—तं चैव सर्वं भाणियव्व जाव परुण्णे ।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छणं अंतो-अंतो अणु-
पविसइ ग्रणुपविसित्ता मह्या-मह्या सद्देण कुहुकुहुस्स^० परुण्णे । त गच्छह ण
अज्जे । 'उभे सीहं अणगारं सद्दाह' ॥

१५०. तए णं ते समणा निग्गथा समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ता समाणा समण
भगवं महावीर वदंति नमसंति, वदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स
अंतियाओ साणकोट्टगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता जेणेव
मालुयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीहं
अणगार एव वयासी—सीहा ! धम्मायरिया सद्दावेति ॥

१५१. तए णं से सीहे अणगारे समणेहि निग्गथेहि सद्धि मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्ख-
मइ, पडिनिक्खमिता जेणेव साणकोट्टए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे,
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-
पयाहिणं जाव^० पज्जुवासति ॥

१५२. सीहादि ! समणे भगवं महावीरे सीहं अणगार एव वयासी—से नून ते सीहा !
भ्माणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे^० *अज्भत्थिए चित्थिए पत्थिए मणोगए
सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स
भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव
छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णत्तित्थिया—छउमत्थे चेव
कालगए—इमेणं एयारूवेणं मह्या मणोमाणसिएणं दुक्खेण अभिभूए समाणे
आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता, जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छित्ता मालु-
याकच्छण अतो-अतो अणुपविसित्ता मह्या-मह्या सद्देण कुहुकुहुस्स^० परुण्णे ।
से नूनं ते सीहा ! अट्ठे समट्ठे ?

हता अत्थि ।

तं नो खलु अह सीहा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे
अंतो छण्ह मासाणं *पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव^० कालं
करेस्स अट्ठणं अट्ठ सोलस वासाइ जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छह णं
तुम सीहा ! मँडियगाम नगरं, रेवतीए गाहावतिणीए गिहं, तत्थ ण रेवतीए
गाहावतिणीए ममं अट्ठाए दुवे 'कवोय-सरीरा'^१ उवक्खडिया, तेहि नो अट्ठो,
अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए, तमाहराहि, एएणं
अट्ठो ॥

१. सद्दह (अ, क, तां) ।

२. भ० १।१० ।

३. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव परुण्णे ।

४. सं० पा०—मासाण जाव कालं ।

५. कवोतासरीरा (क, व); कतोयासरीरा
(ता) ।

सीहेण रेवईए मेसज्जाणयण-पदं

- १५३ तए ण से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एव वुत्ते समाणे हट्ठुट्ठ^१-
 •चित्तमाणदिए णदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणं^२ हियए
 समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता अतुरियमचवलमसंभंतं^३
 मुहपोत्तिय^४ पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता^५ •भायणवत्थाइ पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता
 भायणाइं पमज्जइ, पमज्जिता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता^६ जेणेव समणे
 भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं वंदइ
 नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ट-
 गाओ चेइयाओ पडिनिक्खमिति, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय^७ •मचवलमसंभंतं
 जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणे-सोहेमाणे^८ जेणेव मेढियगामे
 नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मेढियगाम नगर मज्झमज्झेण जेणेव
 रेवतीए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रेवतीए गाहावति-
 णीए गिह अणुप्पविट्ठे ॥
१५४. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगार एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठ-
 तुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणु-
 गच्छइ, अणुगच्छित्ता तिवखुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वदति
 नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! किमाग-
 मणप्पयोयण ?
१५५. तए ण से सीहे अणगारे रेवति गाहावइणि एवं वयासी—एव खलु तुमे देवाणु-
 प्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए बुवे कवोय-सरीरा उवक्खडिया,
 तेहि नो अट्ठो, अत्थि ते अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए एयमाह-
 राहि, तेण अट्ठो ॥
- १५६ तए ण सा रेवती गाहावइणी सीहं अणगारं एव वयासी—केस णं सीहा ! से
 नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव र्हस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ
 णं तुम जाणासि ?
१५७. •तए णं से सीहे अणगारे रेवइ गाहावइणि एवं वयासी—एवं खलु रेवई !
 मम धम्मयारिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणघरे अरहा

१. सं० पा०—हट्ठुट्ठ जाव हियए ।

आप्तमुपात्तम् ।

२. सं० २।१०७ सूत्रे आदर्शेषु अतुरियमचव-
 लमसमते^१ इति पाठोस्ति । अत्र च आदर्शेषु
 'अतुरियमचवलमसंभंतं' इति पाठोस्ति ।
 उभयमपि रूपं नास्ति अशुद्धमिति यथा

३. •पत्तिय (स) ।

४. सं० पा०—जहा गोयमसामी जाव जेरौव ।

५. सं० पा०—अतुरिय जाव जेरौव ।

६. सं० पा०—एवं जहा खंदए जाव जओ ।

जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वणू सव्वदरिसी जेणं मम एस
अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए^०, जओ ण अह जाणामि ॥

१५८. तए ण सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा
निसम्म^१ हट्ठुट्ठा जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पत्तग^२ मोएति,
मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहस्स अणगारस्स
पडिग्गहगंसि^३ तं सव्वं सम्म निससरति ॥

१५९. तए णं तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेण दव्वसुद्धेण^४ •दायगसुद्धेण पडिगाहग-
सुद्धेणं ति विहेण तिकरणसुद्धेणं^० दाणेण सीहे अणगारे पडिलाभिण समाणे
देवाउए निवद्धे, •संसारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पंच दिव्वाइ पाउब्भू-
याइ, तं जहा—वसुधारा बुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए,
आहयाओ देवदुद्धुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति
घुट्ठे ॥

१६०. तए णं रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मह-महापह-पहेसु
बहुजणो अणमणस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एव पणवेइ एव परूवेइ—
धन्ना णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयत्था ण देवाणुप्पिया ! रेवई
गाहावइणी, कयपुण्णा ण देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयलक्खणा ण
देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! रेवतीए गाहा-
वतिणीए, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले रेवतीए गाहाव-
तिणीए, जस्स णं गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिण समाणे इमाइ
पंच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा बुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे
त्ति घुट्ठे, तं धन्ना कयत्था कयपुण्णा कयलक्खणा, कया ण लोया, सुलद्धे माणु-
स्सए^० जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, रेवतीए गाहावतिणीए ॥

१६१. तए णं से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडि-
निक्खमित्ता मेढियगाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जहा
गोयमसामी जाव^५ भत्तपाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समणस्स भगवओ
महावीरस्स पाणिंसि त सव्व सम्म निससरति ॥

भगवओ श्रारोग-पदं

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिण^६ •अगिद्धे अगहिण^० अणज्झोववन्ने

१. निसम्मा (क, ता, ब) ।

२. पत्तं (क, ख, ता, ब, म) ।

३. पडिग्गहसि (ता) ।

४. सं० पा०—दव्वसुद्धेणं जाव दाणेण ।

५. सं० पा०—जहा विजयस्स जाव जम्म-
जीवियफले ।

६. भ० २।११० ।

७. सं० पा०—अमुच्छिणं जाव अणज्झोववन्ने ।

विलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेण तमाहार सरीरकोट्टगसि पक्खिवति ॥

१६३. तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहार आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायके खिप्पामेव उवसते, हट्ठे जाए, अरोगे^१, वलियसरीरे । तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावया, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे—हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे, हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे ॥

सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पदं

१६४. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी पाईणजाणवए^२ सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभट्टए जाव^३ विणीए, से ण भते ! तदा गोसालेण मखलि-पुत्तेण तवेण तेएण भासरासीकए समाणे कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

एव खलु गोयमा ! मम अतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभट्टए जाव विणीए, से ण तदा गोसालेणं मखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भास-रासीकए समाणे उड्ढ च्चदिम-सूरिय जाव^४ वभ-लतक-महासुक्के कप्पे वीइवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण अट्टारस साग-रोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्टारस सागरो-वमाइ ठिती पण्णत्ता ।

से ण भते ! सव्वाणुभूती देवे ताओ देवलोगओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइ-क्खएणं^५ अणतरं चय चइत्ता कहिं गच्छिहि^६ ? कहिं उववज्जिहि^७ ?

गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्जिहि^८ जाव^९ सव्वदुक्खाणं अत करेहि^{१०} ॥

सुनक्खत्तस्स उववाय-पदं

१६५. एव खलु देवाणुप्पियाणं अतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभट्टए जाव विणीए । से ण भते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे कालमासे काल किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

एवं खलु गोयमा ! मम अतेवासी सुनक्खत्ते नाम अणगारे पगइभट्टए जाव विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता सयमेव पच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य

१. आरोए (अ, म), आरोते (व) ।

४. भ० ११।१६६ ।

२. पत्तीण० (अ, स); पदीण० (क, व);

५. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे ।

पडीण० (ख, ता) ।

६. भ० २।७३ ।

३. भ० १।२८८ ।

खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्डं चंदिम-सूरिय जाव' आणय-पाणयारणे कप्पे वीइवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं वावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स वावीसं सागरोवमाइं ^{३०} ठिती पण्णत्ता । से णं भंते ! सुनक्खत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणत्तरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं^{३१} अंतं काहिति ॥

गोसालस्स भवब्भमण-पदं

१६६ एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते ! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ? एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघायए जाव' छउमत्थे चेव कालमासे कालं किच्चा उड्डं चंदिम-सूरिय जाव' अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं वावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण गोसालस्स वि देवस्स वावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

१६७. से णं भंते ! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं^{३२} •अणत्तरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति^{३३} ? कहि उववज्जिहिति ? गोयमा ! इहेव जंबुद्वीवे दीवे भारहे वासे विभ्रगिरिपायमूले पुडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे संमुत्तिस्स रण्णो भहाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए पच्चाया-हिति । से णं तत्थ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाणं^{३४} •अद्धदुमाणं य राइदियाणं^{३५} वीइक्कंताणं जाव' सुरूवे दारए पयाहिति ॥

१६८ जं रयणिं च णं से दारए जाइहिति, तं रयणिं च णं सयदुवारे नगरे सविभतर-वाहिरिए भारगसो य कुभगसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति ॥

१६९. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते^{३६} •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे^{३७} सपत्ते 'वारसमे दिवसे'^{३८} अयमेयारूव गोण्णं गुणनिप्फन्नं

१. भ० १५।१६४ ।

ताणं ।

२. सं० पा०—सेसं जहा सव्वाणुभूतिस्स जाव अंतं ।

७. भ० ११।१४६ ।

३. भ० १५।१४१ ।

८. सं० पा०—वीइक्कंते जाव संपत्ते ।

४. भ० १५।१६५ ।

९. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, व, म, स);

५. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव कहि ।

द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्प-

६. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कं-

णम् ।

नामधेज्जं काहिंति—जम्हा ण अम्हं इमसि दारगंसि जायसि समाणसि सयदुवारे नगरे सव्वितरवाहिरिण^१ •भारगसो य कुंभगसो य पउमवासे य • रयणवासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महापउमे-महापउमे । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति महापउमे त्ति ॥

१७० तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणिंत्ता सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तसि महया-महया रायाभिसेणेणं अभिसिचेहिंति । से णं तत्थ राया भविस्सति—महया हिमवत-महंत-मलय-मंदर-महिदसारे वण्णओ जाव^२ विहरिस्सइ ॥

१७१ तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कदायि दो देवा महिड्डिया जाव^३ महसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, त जहा—पुण्णभदे य माणिभदे य ॥ तए णं सयदुवारे नगरे वहवे राईसर-तलवर^४ •माडविय-कोडुविय-इव्व-सेट्ठि-सेणावइ^५ •सत्थवाहप्पभित्तओ^६ अण्णमण्ण सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं वदेहिंति—जम्हा णं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्डिया जाव महसक्खा सेणाकम्मं करेति, तजहा—पुण्णभदे य माणिभदे य, तं होउ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे-देवसेणे । तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो 'दोच्चे वि'^७ नामधेज्जे भविस्सति देवसेणे त्ति ॥

१७२ तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेते संखतल^८-विमल-सन्निगासे चउदुते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ । तए णं से देवसेणे राया तं सेय सखतल-विमल-सन्निगासं चउदुत हत्थिरयण दूढे^९ समाणे सयदुवारं नगरं मज्झमज्झेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं अतिजाहिंति य निज्जाहिंति य । तए णं सयदुवारे नगरे वहवे राईसर^{१०} •तलवर-माडविय-कोडुविय-इव्व-सेट्ठि-सेणावइ^{११} •सत्थवाह-प्पभित्तओ अण्णमण्ण सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता वदेहिंति—जम्हा ण देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतल-विमल-सन्निगासे चउदुते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे-विमलवाहणे । तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति^{१२} विमलवाहणे त्ति ॥

१. सं० पा०—सव्वितरवाहिरिण जाव रयण-वासे ।

२. ओ० सू० १४ ।

३. भ० १।३३६ ।

४. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह^५ ।

५. ०प्पभित्तओ (स) ।

६. दोच्चे पि (स) ।

७. सखदल (क, ख, ता, वृ) ।

८. दुरुढे (स) ।

९. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह^{१०} ।

१०. ठा० ६।६२ सूत्रानुसारेण एतत् पदं स्वी-

कृतम् ।

१७३. तए णं से विमलवाहणे राया अणया कदायि समणेहि निगगथेहि मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति—अप्पेगतिए आओसेहिति, अप्पेगतिए अवहसिहिति, अप्पेगतिए निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भच्छेहिति^१, अप्पेगतिए बवेहिति, अप्पेगतिए निरु भेहिति^२, अप्पेगतियाण छविच्छेद करेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिति, अप्पेगतिए उद्देहिति, अप्पेगतियाणं वत्थ पडिग्गह कवलं पायपुच्छण आच्छिदिहिति विच्छिदिहिति भिदिहिति अवहरिहिति, अप्पेगतियाण भत्तपाणं वोच्छिदिहिति, अप्पेगतिए निन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति ॥

१७४. तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर^३—*तलवर-माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ अणमण्ण सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एव^४ वदिहिति—एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलवाहणे राया समणेहि निगगथेहि मिच्छं विप्पडिवन्ने—अप्पेगतिए आओसति^५ जाव निव्विसए करेति, त नो खलु देवाणुप्पिया ! एय अम्हं सेय, नो खलु एय विमलवाहणस्स रण्णे सेय, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा बलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेय, जणं विमलवाहणे राया समणेहि निगगथेहि मिच्छं विप्पडिवन्ने । त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह विमलवाहण राय एयमट्ठ विण्णवेत्ताए त्तिकट्ठु अणमण्णस्स अतिय एयमट्ठ पडिसुणेहिति^६, पडिसुणेत्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छिहिति^७, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय^८ *दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्ठु^९ विमलवाहण रायं जएण विजएण वद्धावेहिति^{१०}, वद्धावेत्ता एव वदिहिति^{११}—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणेहि निगगथेहि मिच्छं विप्पडिवन्ता अप्पेगतिए आओसति जाव अप्पेगतिए निव्विसए करेति, त नो खलु एय देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एय अम्ह सेय, नो खलु एय रज्जस्स वा जावं जणवयस्स वा सेय, जणं देवाणुप्पिया ! समणेहि निगगथेहि मिच्छं विप्पडिवन्ता, त विरमतु ण देवाणुप्पिया ! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए ॥

१७५. तए ण से विमलवाहणे राया तेहि बहूहि राईसर^{१२}—*तलवर-माडविय-कोडुबिय-

१. निब्भत्थेहिति (अ, क); निब्भच्छेहिति (ख, ता) ।

२. भेहिति (अ, ता, व, म) ।

३. सं पा०—राईसर जाव वदिहिति ।

४. आउस्सइ (ब, स) ।

५. पडिसुणेति (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

६. उवागच्छति (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

७. सं पा०—करयलपरिग्गहिय ।

८. वद्धावेति (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

९. वदति (अ, क, ख, ता); वदासी (ब, म, स) ।

१०. सं पा०—राईसर जाव सत्थवाह^० ।

इवम-सेट्टि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईहि एयमट्ठं विण्णत्ते' समाणे नो धम्मो त्ति नो तवो त्ति मिच्छा-विणएण एयमट्ठं पडिसुणेहिति ॥

१७६. तस्स ण सयदुवारस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सुभूमिभागे नाम उज्जाणे भविस्सइ—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे वण्णओ' ॥

१७७. तेण कालेण तेणं समएण विमलस्स अरहओ पओप्पए' सुमगले नामं अणगारे जाइसपन्ने, जहा धम्मघोसस्स वण्णओ जाव' सखित्तविउलतेयलेस्से तिन्नाणो-वगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेणं अणिकित्तेण' •तवो-कम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१७८. तए ण से विमलवाहणे राया अण्णदा कदायि रहचरिय काउ निज्जाहिति ॥

१७९. तए ण से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते रहचरियं करेमाणे सुमगल अणगार छट्ठछट्ठेण' •अणिकित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे पासिहिति, पासित्ता आसुरुत्ते' •रुद्धे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमगलं अणगारं रहसिरेण नोत्तावेहिति ॥

१८०. तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रण्णा रहसिरेण नोत्ताविए समाणे सणिय-सणिय उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता दोच्चं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय' •सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१८१. तए ण से विमलवाहणे राया सुमगल अणगार दोच्च पि रहसिरेण नोत्ता-वेहिति ॥

१८२. तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रण्णा दोच्च पि रहसिरेण नोत्ता-विए समाणे सणिय-सणिय उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता ओहिं पउजेहिति, पउजित्ता विमल-वाहणस्स रण्णे तीतद्ध आभोएहिति, आभोएत्ता विमलवाहण राय एवं वइ-हिति—नो खलु तुम विमलवाहणे राया, नो खलु तुम देवसेणे राया, नो खलु तुम महापउमे राया, तुमण्ण इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले नाम मखलिपुत्तं होत्था—समणवायए जाव' छउमत्थे चेव कालगए, त जइ ते तदा सव्वाणु-भूतिणा अणगारेण पभुणा वि होऊणं° सम्म सहिय खमिय तित्तिक्खिय अहिया-

१. विण्णविए (ता) ।

२. म० ११।५७ ।

३. पओप्पए (ता) ।

४. म० ११।६२; राय० सू० ६८६ ।

५. स० पा०—अणिकित्तेण जाव आयावेमाणे ।

६. स० पा०—छट्ठछट्ठेण जाव आयावेमाणे ।

७. आसुरुत्ते (अ); स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि० ।

८. स० पा०—पगिज्झिय जाव आयावेमाणे ।

९. म० १५।१४१ ।

१०. होइत्तए (अ, ब); होइऊण (ख), होइऊणं

(म, स) ।

सियं, जइ ते तदा सुनक्खत्तेणं अणगारेणं पमुणा वि होऊणं सम्मं सहियं^१ •खमियं तित्तिक्खियं^२ अहियासियं, जइ ते तदा समणेण भगवया महावीरेणं पमुणा वि^३ •होऊणं सम्मं सहियं खमियं तित्तिक्खियं^४ अहियासियं, त नो खलु ते अह तहा सम्मं सहिस्सं^५ •खमिस्सं तित्तिक्खिस्सं^६ अहियासिस्सं, अहं ते नवरं—सहयं सरहं ससारहियं तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि करेज्जामि ॥

१८३. तए ण से विमलवाहणे राया सुमगलेण अणगारेण एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते^७ •रुद्धे कुविए चडिक्किए^८ मिसिमिसेमाणं सुमगलं अणगारं तच्च पि रहसिरेण नोल्लावेहिति ॥

१८४. तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रण्णा तच्च पि रहसिरेण नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्धाएण समोहण्हिति, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्कित्ता विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेण तेएण^९ •एगाहच्चं कूडाहच्चं^{१०} भासरासि करेहिति ॥

१८५. सुमंगले णं भते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव^{११} भासरासि करेत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! सुमंगले अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासि करेत्ता वहूहि छट्ठट्ठम-दसमं^{१२} •दुवालसेहि मासद्धमासखमणेहि^{१३} विचित्तेहि तवोक्कमेहि अप्पाण भावेमाणे वहूइ वासाइ सामण्णपरियागं पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए^{१४} छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते उड्ढं चदिम जाव^{१५} गेविज्जविमाणावाससयं वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पणत्ता । तत्थ ण सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पणत्ता ।

से णं भते ! सुमंगले देवे ताओ देवलोगाओ^{१६} •आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! •महाविदेहे वासे सिज्जिहिति जाव^{१७} सव्वदुक्खाणं अतं काहिति ॥

१. स० पा०—सहियं जाव अहियासिय ।

२. सं० पा०—वि जाव अहियासिय ।

३. स० पा०—सहिस्सं जाव अहियासिस्सं ।

४. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि ।

५. सं० पा०—तेएण जाव भासरासि ।

६. भ० १५।१८४।

७. स० पा०—दसमं जाव विचित्तेहि ।

८. अणं जाव (अ, क, ख, ता, व, स) ।

९. भ० १५।१६५ ।

१०. स० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।

११. भ० २।७३ ।

१८६ विमलवाहणे णं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेण सहये जाव^१ भासरासीकए समाणे कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! विमलवाहणे ण राया सुमंगलेण अणगारेण सहये जाव भासरासीकए समाणे अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उव-
वज्जिहिति ।

से ण ततो अणतरं उव्वट्ठित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्च पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोस-
कालट्टिइयसि^२ नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तत्रोणतर उव्वट्ठित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ ण वि सत्थवज्जे^३ •दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तत्रोहितो अणतरं उव्वट्ठित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे दाह^४ •वक्कतीए कालमासे काल किच्चा^५ दोच्चं पि छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल^६ •ट्टिइयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तत्रोहितो अणतरं उव्वट्ठित्ता दोच्चं पि इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे^७ •दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल^८ •ट्टिइयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतरं उव्वट्ठित्ता उरएसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थ-
वज्जे^९ •दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि पचमाए^{१०} •धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तत्रोहितो अणतरं उव्वट्ठित्ता दोच्चं पि उरएसु उववज्जिहिति^{११} । •तत्थ वि ण सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा चउत्थीए पक्कप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि^{१२} •नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतरं उव्वट्ठित्ता सीहेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ-
वज्जे^{१३} •दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि चउत्थीए पक्क^{१४} •-

१. म० ११।१८४ ।

२. •ट्टिइयसि (ता, म) ।

३. स० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा ।

४. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

५. स० पा०—दाह जाव दोच्च ।

६. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्ठित्ता ।

७. स० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा ।

८. स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्ठित्ता ।

९. स० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा ।

१०. स० पा०—पचमाए जाव उव्वट्ठित्ता ।

११. स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।

१२. स० पा०—उक्कोसकालट्टिइयसि जाव उव्वट्ठित्ता ।

१३. स० पा०—तहेव जाव किच्चा ।

१४. स० पा०—पक्क जाव उव्वट्ठित्ता ।

प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
 से णं तओण्हितो अणंतरं^१ उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति^२ । *तत्थ
 वि ण सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे काल^३ किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए
 पुढवीए उक्कोसकाल^४ट्टिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
 से ण ततो अणतरं^५ उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थ-
 वज्जे^६ दाहवक्कतीए कालमासे काल^७ किच्चा दोच्चं पि तच्चाए वालुय-
 प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
 से ण तओणतरं^८ उव्वट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उववज्जिहिति^९ । *तत्थ वि
 ण सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे काल^{१०} किच्चा दोच्चं पि सक्करप्पभाए^{११}
 *पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
 से णं ततो अणतरं^{१२} उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं
 सत्थ^{१३}वज्जे दाहवक्कतीए कालमासे काल^{१४} किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए
 सक्करप्पभाए^{१५} *पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए
 उववज्जिहिति ।
 से ण तओणतरं^{१६} उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति^{१७} । *तत्थ
 वि ण सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे काल^{१८} किच्चा इमीसे रयणप्पभाए
 पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति^{१९} ।
 *से ण ततो अणतरं^{२०} उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थ-
 वज्जे^{२१} दाहवक्कतीए कालमासे काल^{२२} किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति ।
 तत्थ वि णं सत्थवज्जे^{२३} दाहवक्कतीए कालमासे काल^{२४} किच्चा दोच्चं पि
 इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्टिइयंसि नरगंसि
 नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
 से ण ततो अणतरं^{२५} उव्वट्टित्ता जाइं इमाइ खहयरविहाणाइ भवति, तं जहा—
 चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीणं, समुग्गपक्खीणं, विययपक्खीणं, तेसु अणेगसयसह-
 स्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।
 सव्वत्थ वि ण सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा जाइ इमाइ

- | | |
|---|--|
| १. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा । | ८. सं० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता । |
| २. सं० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता । | ९. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा । |
| ३. सं० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा । | १०. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता । |
| ४. सं० पा०—वालुय जाव उव्वट्टित्ता । | ११. सं० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा । |
| ५. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा । | १२. सं० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा । |
| ६. सं० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता । | १३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । |
| ७. सं० पा०—सत्थ जाव किच्चा । | |

भुयपरिसप्पविहाणां भवन्ति, तं जहा—गोहाणं, नउलाणं, जहा पणवणापए जाव^१ जाहुगाण चउप्पाइयाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो^१ उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं^० किच्चा जाइं इमाइं उरपरिसप्पविहाणाइ भवति, तं जहा—अहीणं, अयगराणं, आसालियाणं, महोरगाणं, तेसु अणेगसयसह^१स्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं^० किच्चा जाइं इमाइं चउप्पदविहाणाइ भवति, तं जहा—एगखुराणं, दुखुराणं, गंडीपदाणं, सण-हप्पदाणं, तेसु अणेगसयसहस्स^१खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं^० किच्चा जाइं इमाइं जलयरविहाणाइ भवति, तं जहा—मच्छाणं, कच्छभाणं जाव^१ सुसुमाराणं, तेसु अणेगसयसहस्स^१खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं^० किच्चा जाइं इमाइं चउरिदियविहाणां भवन्ति, तं जहा—अंधियाणं, पोत्तियाणं, जहा पणवणापदे जाव^१ गोमयकीडाण, तेसु अणेगसय^१सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं^० किच्चा जाइं इमाइं तेइदियविहाणां भवति, तं जहा—उवचियाणं जाव^१ हत्थिसोडाणं, तेसु अणेग^१सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ॥

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कतीए कालमासे कालं^० किच्चा जाइं इमाइं वेइदियविहाणाइ भवन्ति, तं जहा—पुलाकिमियाणं जाव^१ समुद्दिलक्खाणं, तेसु

१. प० १ ।

२. स० पा०—सेस जहा खह्वराणं जाव किच्चा ।

३. स० पा०—अणेगसयसह जाव किच्चा ।

४. सणहप्पदाण (अ, ता, स) ।

५. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा ।

६. प० १ ।

७. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा ।

८. प० १ ।

९. स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा ।

१०. प० १ ।

११. स० पा०—अणेग जाव किच्चा ।

१२. प० १ ।

अणेगसय^१सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे^२ दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा^३ जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइं भवन्ति, तं जहा—रूक्खाणं, गुच्छाणं जाव^४ कुहणाण, तेसु अणेगसय^५सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो^६ पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं कडुयरूक्खेसु, कडुयवल्लीमु ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे^७ •दाहवक्कंतीए^८ कालमासे कालं^९ किच्चा जाइं इमाइं वाउक्काइयविहाणाइं भवन्ति, तं जहा—पाईणवायाण जाव^{१०} सुद्धवायाण तेसु अणेगसयसहस्स^{११}•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं^{१२} किच्चा जाइं इमाइं तेउक्काइयविहाणाइं भवन्ति, तं जहा—इंगालाण जाव^{१३} सूरकंतमणिनिस्सियाण, तेसु अणेगसयसहस्स^{१४}•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं^{१५} किच्चा जाइं इमाइं आउक्काइयविहाणाइं भवन्ति, तं जहा—ओसाण^{१६} जाव^{१७} खातोदगाण, तेसु अणेग-सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चाया-इस्सइ—उस्सन्नं च णं खारोदएसु खत्तोदएसु ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे^{१८} •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं^{१९} किच्चा जाइं इमाइं पुढविक्काइयविहाणाइं भवन्ति, तं जहा—पुढवीण, सक्कराणं जाव^{२०} सूरकताणं, तेसु अणेगसय^{२१}सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो^{२२} पच्चायाहिति—उस्सन्नं च णं खरबायरपुढविक्काइएसु ।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्जे^{२३} •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं^{२४} किच्चा रायगिहे नगरे बाहि खरियत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे^{२५}•दाहवक्कंतीए

१. स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा ।

६. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा ।

२. प० १ ।

१०. उस्साण (क, ख, ब) ।

३. सं० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ ।

११. प० १ ।

४. सं० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा ।

१२. स० पा०—सत्थवज्जे जाव च्चा ।

५. 'दाहवक्कंतीए' इति पाठः क्वचिद् शुन्यते,

१३. प० १ ।

किन्तु सर्वत्र प्रवाहपाती ऋयते ।

१४. स० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाहिति ।

६. प० १ ।

१५. सं० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा ।

७. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा ।

१६. स० पा०—सत्थवज्जे जाव किच्चा ।

८. प० १ ।

कालमासे कालं० किञ्चा दोच्चं पि रायगिहे नगरे अंतो खरियत्ताए उववज्जि-
हिति । तत्थ वि णं सत्थवज्जे^१ •दाहवक्कतीए कालमासे कालं० किञ्चा इहेव
जबुहीवे दीवे भारहे वासे विम्भगिरिपायमूले बेभेले सण्णिवेसे माहणकुलंसि
दारियत्ताए पच्चायाहिति ।

तए णं तं दारिय अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूव-
एणं सुवक्केण, पडिरूवएणं विणएण, पडिरूवयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दल-
इस्सति । सा ण तस्स भारिया भविस्सति—इट्ठा कंता जाव^२ अणुमया, भंडकरं-
डगसमाणा तेल्लकेला इव सुसगोविया, चेलपेडा इव सुसंपरिग्गहिया, रयणकरं-
डओ विव सुसारक्खिया, सुसंगोविया, मा ण सीयं, मा णं उण्हं जाव^३ परिस-
होवसग्गा फुसंतु । तए णं सा दारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी ससुरकुलाओ
कुलधर निज्जमाणी अतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किञ्चा दाहि-
णिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेषु देवत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहिंतो अणतर उव्वट्ठित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं
बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति ।
तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे कालमासे काल किञ्चा दाहिणिल्लेसु असुर-
कुमारेसु देवेषु देवत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहिंतो अणतर^४ उव्वट्ठित्ता माणुस्सं विग्गहं •लभिहिति, लभित्ता केवलं
बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति ।
तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे कालमासे काल किञ्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमा-
रेसु देवेषु देवत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहिंतो अणतरं एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु,
एवं विज्जुकुमारेसु, एवं अग्गिकुमारवज्जं जाव^५ दाहिणिल्लेसु अणियकुमारेसु ।
से ण 'तओहिंतो अणतरं' उव्वट्ठित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति^६ •लभित्ता
केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-
हिति । तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे जोइसिएसु देवेषु उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति^७, •लभित्ता

१. सं० पा०—सत्थवज्जे जाव किञ्चा ।

२. पू० प० २ ।

३. पडिरूविएण (अ, क, ख, ता, व, म) सर्वत्र ।

४. तयो जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

५. भ० २।५२ ।

६. सं० पा०—लभिहिति जाव विराहियसा-
मण्णे ।

७. भ० २।५२ ।

८. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

९. सं० पा०—लभिहिति जाव विराहिय-
सामण्णे ।

१०. सं० पा०—त चैव जाव तत्थ ।

११. अग्गिकुमार (ता) ।

केवलं बोहि बुज्झिहति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-
हिति । तत्थ वि य णं ° अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे
कप्पे देवत्ताए उववज्जिहति' ।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति । तत्थ वि णं
अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उवव-
ज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो एवं जहा सणकुमारे तहा बंभलोए, महासुक्के, आणए,
आरणे ।

से णं तओहिंतो ° अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता
केवलं बोहि बुज्झिहति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-
हिति । तत्थ वि य णं ° अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे
महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइ इमाइ कुलाइ भवति—
अड्डाई जाव' अपरिभूयाई, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए' पच्चायाहिति, एवं
जहा ओववाइए दहप्पइणवत्तव्वया सच्चेववत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा
जाव' केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ॥

१८७. तए णं से दहप्पइण्णे केवली अप्पणो तीतद्वं आभोएहिइ, आभोएत्ता समणे
निग्गंथे सद्दवेहिति, सद्दवेत्ता एवं वदिहिइ—एव खलु अहं अज्जो ! इओ
चिरातीयाए अट्ठाए गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव'
छउमत्थे चैव कालगए, तम्मूलगं च णं अहं अज्जो अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्वं
चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्ठिए, त मा णं अज्जो । 'तुब्भं केयि' भवतु
आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए
अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा णं से वि एव चैव अणादीयं अणवदग्गं
° दीहमद्वं चाउरंतं ° संसारकतारं अणुपरियट्ठिहिति, जहा णं अहं ॥

१. अतो अग्रे 'म, स' सङ्केतितादर्शयो. निम्न-
वर्ती पाठो विद्यते—
'से ए तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता
माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, केवलं बोहि
बुज्झिहिति, तत्थ वि य णं अविराहियसामण्णे
कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए
उववज्जिहिति', किन्तु सौधर्मादिदेवलोकेषु
सप्तभवा दृश्यन्ते—षट्सु दाक्षिणात्येषु कल्पेषु
सर्वार्थसिद्धेषु च तेन ईशानकल्पस्य पाठः न

- सगच्छते ।
२. सं० पा०—तओहिंतो जाव अविराहियसा-
मण्णे ।
३. ओ० सू० १४१ ।
४. पुमत्ताए (ब) ।
५. ओ० सू० १४२-१४३ ।
६. म० १५।१४१ ।
७. तुम केवि (ता) ।
८. सं० पा०—अणवदग्गं जाव ससार० ।

१८८. तए णं ते समणा निर्गथा दढप्पइणस्स केवलस्स अंतिय एयमट्ठं सोच्चा
निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभजव्विग्गा दढप्पइण केवलं वदिहिति
नमसिंहिति, वदिता नमसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएहिति' पडिक्कमिंहिति
निदिहिति जाव' अहारिय पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जिहिति ॥
१८९. तए ण से दढप्पइण्णे केवली वहुइ वासाइ केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणिता
अप्पणो आउसेस जाणेत्ता भत्त पच्चक्खाहिति, एवं जहा ओववाइए जाव'
सव्वदुक्खाणमंत काहिति ॥
१९०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

१. आलोइएहिति (स) ।

२. भ० ८।२५१ ।

३. ओ० सू० १५४ ।

४. भ० १।५१ ।

सौलसमं सतं

पढमो उद्देशो

१. अहिगरणि २. जरा ३. कम्मे, ४. जावतियं ५. गंगदत्त ६. सुमिणे य ।
७. उवओग ८. लोग ९. बलि १०. ओहि, ११. दीव १२. उदही १३. दिसा १४. थणिते १५.

वाउयाय-पवं

१. तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे जाव' पज्जुवासमाणे एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! अधिकरणिंसि वाउयाए वक्कमति ?
हता अत्थि ॥
२. से भंते ! कि पुट्टे उद्दाइ ? अपुट्टे उद्दाइ ?
गोयमा ! पुट्टे उद्दाइ, नो अपुट्टे उद्दाइ ॥
३. से भंते ! कि ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
'गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥
४. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए, । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहि निक्खमइ । से तेणट्टेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥ °

१. बलि (क, ब); पलि (ता) ।

२. थणिया (ता, स) ।

३. भ० ११४-१० ।

४. सं० पा०—एवं जहा खदए जाव से तेण-ट्टेणं नो असरीरी निक्खमइ; स्पृष्टः स्वकाय-शस्त्रादिना ससरीरश्च कडेवरान्निष्कामति

काम्मणाद्यपेक्षया औदारिकाद्यपेक्षया त्वसारी-रीति (वृ); पूरितः पाठः अस्य वृत्तिव्याख्या-नस्य संवादी वर्तते । आदर्शानां संक्षिप्तपाठे 'नोअसरीरी' ति पाठो लभ्यते । असी वृत्तिव्याख्यानात् भिन्नोस्ति ।

अगणिकाय-पदं

५. इगालकारियाए णं भते ! अगणिकाए केवतियं कालं सच्चिदुद् ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिण्णि राइंदियाइ । अण्णे वि तत्थ वाउयाए वक्कमति, न विणा वाउयाएणं अगणिकाए उज्जलति ॥

कत्तिकिरिय-पदं

६. पुरिसे णं भते ! अयं अयकोट्टसि अयोमएणं सडासएणं उव्विहमाणे वा पव्विहमाणे वा कत्तिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्टसि अयोमएणं सडासएणं उव्विहति वा पव्विहति वा, ताव च णं से पुरिसे काइयाए जावं पाणाइवायकिरियाए—पच्चहि किरियाहि पुट्ठे, जेसि पि णं जीवाणं सरीरेहितो अए निव्वत्तिए, अयकोट्टे निव्वत्तिए, सडासए निव्वत्तिए, इगाला निव्वत्तिया, इगालकड्ढणी निव्वत्तिया, भत्था निव्वत्तिया, ते वि ण जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पच्चहि किरियाहि पुट्ठा ॥

७. पुरिसे णं भते ! अयं अयकोट्टाओ अयोमएणं सडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिक्खमाणे वा निक्खिक्खमाणे वा कत्तिकिरिए ?

गोयमा ! जाव च णं से पुरिसे अयं अयकोट्टाओ^१ अयोमएणं सडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिक्ख वा^२ निक्खिक्ख वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पच्चहि किरियाहि पुट्ठे, जेसि पि णं जीवाणं सरीरेहितो अयो निव्वत्तिए, सडासए निव्वत्तिए, चम्मेट्टे निव्वत्तिए, मुट्ठिए निव्वत्तिए, अधिकरणी निव्वत्तिया, अधिकरणिखोडी निव्वत्तिया, उदगदोणी निव्वत्तिया, अधिकरणसाला निव्वत्तिया, ते वि ण जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पच्चहि किरियाहि पुट्ठा ॥

अधिकरणी-अधिकरण-पदं

८. जीवे णं भते ! किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?

गोयमा ! जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

९. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्टेणं* गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि°, अधिकरण पि ॥

१०. नेरइए णं भंते ! कि अधिकरणी ? अधिकरणं ?

गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि । एव जहेव जीवे तहेव नेरइए वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥

११. जीवे ण भंते ! कि साहिकरणी ? निरहिकरणी ?

गोयमा ! साहिकरणी, नो निरहिकरणी ॥

१२. से केणट्टेण—पुच्छ ।

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्टेणं जाव नो निरहिकरणी । एवं जाव वेमाणिए ॥

१३. जीवे णं भंते ! कि आयाहिकरणी ? पराहिकरणी ? तदुभयाहिकरणी ?

गोयमा ! आयाहिकरणी वि, पराहिकरणी वि, तदुभयाहिकरणी वि ॥

१४. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव तदुभयाहिकरणी वि ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्टेणं जाव तदुभयाहिकरणी वि । एवं जाव वेमाणिए ॥

१५. जीवाणं भंते ! अधिकरणे कि आयप्पयोगनिव्वत्तिए ? परप्पयोगनिव्वत्तिए ? तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए ?

गोयमा ! आयप्पयोगनिव्वत्तिए वि, परप्पयोगनिव्वत्तिए वि, तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि ॥

१६. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?

गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्टेणं जाव तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१७. कति णं भंते ! सरीरगा पणत्ता ?

गोयमा ! पंच सरीरगा पणत्ता, त जहा—ओरालिए*, वेउव्विए, आहारए, तेयए°, कम्मए ॥

१८. कति णं भंते ! इंदिया पणत्ता ?

गोयमा ! पंच इंदिया पणत्ता, तं जहा—सोइदिए*, चक्खिदिए, घाणिदिए, रसिदिए°, फासिदिए ॥

१९. कतिविहे णं भंते ! जोए पणत्ते ?

गोयमा ! तिविहे जोए पणत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

१. सं० पा०—तेणट्टेणं जाव अधिकरण ।

४. सं० पा०—ओरालिए जाव कम्मए ।

२. पू० प० २ ।

५. सं० पा०—सोइदिए जाव फासिदिए ।

३. निराधिकरणी (अ, ख, ता, ब, स) ।

२०. जीवे णं भते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ? अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥
२१. से केणट्टेणं भते ! एवं बुच्चइ—अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्टेण जाव अधिकरणं पि ॥
२२. पुढविकाइएण णं भते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ?
अधिकरणं ?
एवं चेव । एवं जाव मणुस्से । एवं वेउव्वियसरीर पि, नवरं—‘जस्स अत्थि’ ॥
२३. जीवे ण भते ! आहारगसरीर निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥
२४. से केणट्टेणं जाव अधिकरणं पि ?
गोयमा ! पमाय पडुच्च । से तेणट्टेणं जाव अधिकरणं पि । एवं मणुस्से वि ।
तेयासरीर जहा ओरालिय, नवरं—सव्वजीवाण भाणियव्वं । एवं कम्मगसरीरं
पि ॥
२५. जीवे णं भते ! सोइदिय निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव ओरालियसरीरं तहेव सोइदियं पि भाणियव्व, नवरं—जस्स अत्थि
सोइदिय । एवं चविखदिय-घाणियदिय-जिम्भियदिय-फासियदियाण वि, नवरं—
जाणियव्वं जस्स जं अत्थि ॥
२६. जीवे ण भते ! मणजोग निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव सोइदियं तहेव निरवसेस । वइजोगो एवं चेव, नवरं—एगिदिय-
वज्जाणं । एवं कायजोगो वि, नवरं—सव्वजीवाणं जाव वेमाणिए ।
२७. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

जीवाणं जरा-सोग-पदं

२८. [रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—जीवाणं भते ! कि जरा ? सोगे ?
गोयमा ! जीवाणं जरा वि, सोगे वि ॥

१. जस्सत्थि (अ) ।

३. भ० १।५१ ।

२. एवं सोइदिय (अ, क, छ, ता, व, म) ।

४. भ० १।४-१० ।

२९. से केणट्टेणं भते ! एवं वुच्चइ^१—●जीवाणं जरा वि^०, सोगे वि ?
 गोयमा ! जे णं जीवा सारीरं वेदणं वेदेति तेसि णं जीवाणं जरा, जे णं जीवा
 माणसं वेदणं वेदेति तेसि णं जीवाणं सोगे । से तेणट्टेणं^२ ●गोयमा ! एवं
 वुच्चइ—जीवाणं जरा वि^०, सोगे वि । एवं नेरइयाण वि । एवं जाव^३
 थणियकुमाराणं ॥
३०. पुढविकाइयाणं भंते ! किं जरा ? सोगे ?
 गोयमा ! पुढविकाइयाणं जरा, नो सोगे ॥
३१. से केणट्टेणं^४ ●भंते ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा^०, नो सोगे ?
 गोयमा ! पुढविकाइया णं सारीरं वेद ण वेदेति, नो माणसं वेदणं वेदेति । से
 तेणट्टेणं^५ ●गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा^०, नो सोगे । एवं
 जाव चरिदियाणं । सेसाणं जहा जीवाणं जाव वेमाणियाणं ॥
३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव^६ पज्जुवासति ॥

सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पदं

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव^७ दिव्वाइ
 भोगभोगाईं भुंजमाणे विहरइ । इमं च णं केवलकप्पं जंबुदीवं दीवं विपुलेणं
 ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति, 'एत्थ णं'^८ समणं भगव महावीर
 जंबुदीवे दीवे । एवं जहा ईसाणे तइयसए तहेव सक्के वि, नवरं—आभिओगे
 ण सद्दवेति, 'हरी पायत्ताणियाहिर्वई',^९ सुघोसा^{१०} घंटा, पालओ विमाणकारी,
 पालगं विमाणं, उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे, दाहिणपुरत्थिमिल्ले^{११} रतिकरपव्वए,
 सेसं तं चेव जाव^{१२} नामगं सावेत्ता पज्जुवासति । धम्मकहा जाव^{१३} परिसा
 पडिगया ॥
३४. तए णं से सक्के देविदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं घम्मं
 सोच्चा निसम्म हट्ठुट्ठे समणं भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता
 एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! ओग्गहे पणत्ते ?

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव सोगे ।

२. सं० पा०—तेणट्टेणं जाव सोगे ।

३. पू० प० २ ।

४. सं० पा०—केणट्टेणं जाव जरा ।

५. सं० पा०—तेणट्टेणं जाव नो ।

६. भ० १।५१ ।

७. भ० ३।१०६ ।

८. यत्थ (क, ख, ब); यत्था (ता) ।

९. पायत्ताणियाहिर्वई हरी (ख); हरी य
 पाय^० (ब) ।

१०. सुघोस णं (ता) ।

११. दाहिणिल्ले (ता) ।

१२. भ० ३।२७ ।

१३. ओ० सू० ७१-७६ ।

सक्का ! पंचविहे ओग्गहे पणत्ते, तं जहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारियओग्गहे, साहम्मिओग्गहे^१ ।

जे इमे भंते । अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एएसि ण ओग्गहं अणुजा-णामीति कट्टु समण भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता तमेव^२ दिव्वं जाणविमाणं द्रुहति, द्रुहित्ता जामेव दिसं पाउभूए तामेव दिसं पडिगए ॥

सक्क-संबंधि-वागरण-पदं

३५. भतेति ! भगवं गोयमे समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जणं भंते ! सक्के देविदे देवराया तुम्हे^३ एवं वदइ, सच्चे णं एसमट्ठे^४ ?

हता सच्चे ॥

३६. सक्के ण भंते ! देविदे देवराया कि सम्मावादी ? मिच्छावादी ?

गोयमा ! सम्मावादी, नो मिच्छावादी ॥

३७. सक्के णं भते ! देविदे देवराया कि सच्च भासं भासति ? भोस भासं भासति ? सच्चामोस भास भासति ? असच्चामोसं भास भासति ?

गोयमा ! सच्च पि भास भासति जाव असच्चामोस पि भास भासति ॥

३८. सक्के णं भंते ! देविदे देवराया कि सावज्जं भास भासति ? अणवज्जं भासं भासति ?

गोयमा ! सावज्ज पि भास भासति, अणवज्ज पि भास भासति ॥

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—सक्के देविदे देवराया सावज्ज पि^५ •भास भासति^६, अणवज्जं पि भास भासति ?

गोयमा ! जाहे ण सक्के देविदे देवराया सुहुमकायं अणिज्जूहिता^७ णं भास भासति ताहे ण सक्के देविदे देवराया सावज्ज भासं भासति, जाहे णं सक्के देविदे देवराया सुहुमकाय निज्जूहिता णं भासं भासति ताहे ण सक्के देविदे देवराया अणवज्ज भास भासति । से तेणट्ठेण^८ •गोयमा ! एव वुच्चइ—सक्के देविदे देवराया सावज्ज पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं^९ भासति ॥

४०. सक्के णं भंते ! देविदे देवराया कि भवसिद्धीए ? अभवसिद्धीए ? सम्मदिट्ठीए ? मिच्छदिट्ठीए ? परित्तसंसारिए ? अणतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभ-बोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

१. साहम्मियओग्गहे (अ, स) ।

२. तामेव (ता, म) ।

३. तुम्हे ण (अ, म) ।

४. एतमट्ठे (ता) ।

५. स० पा०—सावज्ज पि जाव अणवज्जं ।

६. अणिज्जूहिता (अ) ।

७. स० पा०—तेणट्ठेण जाव भासति ।

गोयमा ! सक्के णं देविदे देवराया भवसिद्धीए, नो अभवसिद्धीए । सम्मदिद्धीए, नो मिच्छदिद्धीए । परित्तससारिए, नो अणतससारिए । सुलभवोहिए, नो दुल्लभवोहिए । आराहए, नो विराहए । चरिमे, नो अचरिमे । एव जहा मोउ-
हेसए सणकुमारे जाव^१ नो अचरिमे ॥

चेय-अचेयकड-कम्म-पदं

४१. जीवाणं भते ! किं चेयकडा^१ कम्मा कज्जंति ? अचेयकडा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाणं चेयकडा^१ कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति ॥
४२. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ^२—●जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेय-
कडा कम्मा^३ कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया
पोग्गला तथा तथा णं ते पोग्गला परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा
समणाउसो ! दुट्ठणेषु, दुसेज्जासु, दुन्निसीहियासु तथा तथा णं ते पोग्गला
परिणमति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! आयंके से वहाए होति, सकप्पे
से वहाए होति, मरणते से वहाए होति तथा तथा णं ते पोग्गला परिणमंति,
नत्थिअचेयकडा कम्मा समणाउसो ! से तेणट्ठेणं^४ ●गोयमा ! एवं वुच्चइ—
जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा^५ कम्मा कज्जंति । एवं
नेरइयाणं वि । एवजाव^६ वेमाणियाणं ॥
४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव^७ विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

कम्म-पदं

४४. रायगिहे जाव^८ एवं वयासी—कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तजहा—नाणावरणिज्जं जाव^९
अंतराइयं, एव जाव^{१०} वेमाणियाणं ॥

१. भ० ३।७३ ।

२. चेत० (व) ।

३. चेदे० (ता) ।

४. सं० पा०—वुच्चइ जाव कज्जंति ।

५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जंति ।

६. पू० प० २ ।

७. भ० १।५१ ।

८. भ० १।४-१० ।

९. भ० ६।३३ ।

१०. पू० प० २ ।

४५. जीवे णं भते । नाणावरणिज्जं कम्म वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ?
 गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ—एवं जहा पणवणाए वेदावेउहेसओ^१ सो चेव
 निरवसेसो भाणियव्वो । वेदावंघो^२ वि तहेव, वंघावेदो^३ वि तहेव, वंघावंघो^४
 वि तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ति^५ ॥
४६. सेवं भते ! सेवं भते ! ति जाव विहरइ ॥

अंसिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पदं

४७. तए ण समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ
 चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥
४८. तेण कालेण तेण समएण उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ^१ । तस्स णं
 उल्लुयतीरस्स नगरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं एगजंबुए^२
 नाम चेइए होत्था—वण्णओ^३ । तए णं समणे भगव महावीरे अण्णदा कदायि
 पुक्खाणुपुक्खि चरमाणे^४ •गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे^५
 एगजंबुए समोसढे जाव^६ परिसा पडिगया ॥
४९. भतेति ! भगव गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता
 एवं वयासी - अणगारस्स ण भते ! भावियप्पणो छट्ठुछट्ठेणं अणिकित्तेण^१
 •तवोक्कम्मेण उडढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूरभिमुहे आयावणभूमीए^२
 आयावेमाणस्स तस्स ण पुरत्थिमेणं अवड्ढ दिवस नो कप्पति हत्थ वा पादं
 वा वाहं वा ऊरं आउटावेत्तए^३ वा पसारेतए वा, पच्चत्थिमेण से अवड्ढ
 दिवस कप्पति हत्थं वा^४ •पाद वा वाह वा^५ ऊर वा आउटावेत्तए वा पसारे-
 तए वा । तस्स ण असियाओ लंबंति । तं च वेज्जे अदक्खु । ईसि पाडेति,
 पाडेत्ता असियाओ छिदेज्जा । से नूण भंते ! जे छिदति तस्स किरिया कज्जति,
 जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णणत्थेगेण धम्मतराएण^६ ?

१. प० २७ ।

२. प० २६ ।

३. प० २५ ।

४. प० २४ ।

५. इह सग्रहाया क्वचिद् स्सयते—
 वेयावेओ पढमो, वेयावघो य वीयओ होइ ।
 वधावेओ तइओ, चउत्थओ वधवघो उ ॥
 (वृ) ।

६. ओ० सू० १ ।

७. एगजंबुए (स) ।

८. ओ० सू० २-१३ ।

९. स० पा०—चरमाणे जाव एगजंबुए ।

१०. भ० ६।७७ ।

११. सं० पा०—अणिकित्तेण जाव आयावे-
 माएस्स ।

१२. आउट्टा^० (क, ता); आउट्टा^० (स) ।

१३. स० पा०—हत्थ वा जाव ऊरं ।

१४. ० राइएण (स) ।

हंता गोयमा ! जे छिदति^१ •तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णणत्थेगेणं^२ धम्मंतराएणं ॥

५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति^३ ॥

चउत्थो उद्देसो

नेरइयाणं निज्जरा-पदं

५१. रायगिहे जाव^४ एव वयासी—

जावतियं णं भंते ! अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएणं^५ वा खवयंति ? नो इण्ठे समट्ठे ।

जावतियं णं भंते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससएणं वा वाससएहिं वा वाससहस्सेहिं^६ वा खवयति ? नो इण्ठे समट्ठे ।

जावतियं णं भंते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहिं वा वाससयसहस्सेण वा खवयति ? नो इण्ठे समट्ठे ।

जावतियं णं भंते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेण वा वाससयसहस्सेहिं वा वासकोडीए वा खवयति ? नो इण्ठे समट्ठे ।

जावतियं णं भंते ! दसमभत्तिए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासकोडीए वा वासकोडीहिं वा वासकोडाकोडीए वा खवयति ? नो इण्ठे समट्ठे ॥

५२. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—जावतियं अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएणं वा नो खवयति, जावतियं चउत्थभत्तिए—एवं तं चेव पुव्वभणियं उच्चारयेय्वं जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति ?

१. स० पा०—छिदति जाव धम्मंतराएण ।

२. भ० १।५१ ।

३. भ० १।४।१० ।

४. वाससएहिं (अ, क, ता, म, स) ।

५. वाससहस्सेहिं (क, ता, व) ।

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे जुणो जराजज्जरियदेहे सिद्धिलतयावलि-
तरंग-संपिणद्धगते^१ पविरल-परिसडिय-दंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे
भुसिए^२ पिवासिए दुव्वले किलते एणं मह कोसंव-गडियं सुक्क^३ जडिल^४ गंठिल्लं
चिक्कणं वाइद्ध अपत्तियं मुंडेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे महताइ-
महंताइ सद्दाइ करेइ, नो महंताइ-महंताइ दलाइ अवहालेइ, एवामेव गोयमा !
नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, *सिलिट्टीकयाइं,
खिलीभूताइ भवति । संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा^५
नो महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे अहिक्करणि आउडेमाणे महया^६—महया सदेणं, महया-
महया घोसेणं, महया-महया परंपराघाएणं नो संचाएइ, तीसे अहिगरणीए केइ
अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं
गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, सिलिट्टीकयाइं खिलीभूताइ भवति । संपगाढं पि
य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा^५ नो महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलव जाव^७ मेहावी निउणसिप्पोवगए एग महं
सामलि-गडियं उल्ल अजडिलं अगठिल्ल अचिक्कण अवाइद्ध सपत्तियं तिव्वेण
परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे नो महंताइ-महंताइ सद्दाइ करेति, महं-
ताइ-महंताइ दलाइ अवहालेति, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गंथाणं
अहाबादराइं कम्माइं सिद्धिलीकयाइं, निट्टियाइ कयाइं, विप्परिणामियाइं
खिप्पामेव परिविद्धत्थाइ भवति जावतिय तावतिय^८ *पि णं ते वेदणं वेदेमाणा
महानिज्जरा^५ महापज्जवसाणा भवति ।

से जहा वा केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थगं जायतेयसि पक्खिवेज्जा—*से नूणं
गोयमा ! से सुक्के तणहत्थगए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव
मसमसाविज्जति ?

हता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं, सिद्धिलीकयाइं,
निट्टियाइ कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवति । जावतिय
तावतिय पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवति ।

१. सविण^० (ख, ता) ।

२. भुमित (क, ख, म); जुज्जिते (व); भूरितः
इति टीकाकार. (वृ) ।

३. सुक्ख (अ, ख, ता, व) ।

४. जटिल (अ) ।

५. सं० पा०—एव जहा छट्ठसए जाव नो ।

६. सं० पा० महया जाव नो ।

७. सं० १४।३ ।

८. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

९. सं० पा०—तावतिय जाव महापज्जवसाणा ।

१०. सं० पा०—एव जहा छट्ठसए तहा अयो-
वत्ते वि जाव महापज्जवसाणा ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदगविदु पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगविदु तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ?

हता विद्धसमागच्छइ ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाणं अहावायराइ कम्माइ सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—जावतियं अन्नगिलायए° समणे निग्गथे कम्मं निज्जेरेति तं चेव जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयति ॥

५३. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

पंचमो उद्देशो

सक्करस उक्खित्तपसिणवागरण-पदं

५४. तेणं कालेण तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ° । एगजंबुए चेइए—वण्णओ° । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव' परिसा पज्जुवासति । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविदे देवराया वज्जपाणी—एवं जहेव वित्तियउद्देसए तहेव दिव्वेण जाणविमाणेण आगओ जाव' जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° •समण भगवं महावीर वंदइ नमंसइ, वदित्ता° नमंसित्ता एवं त्रयासी—

देवे णं भते ! महिड्ढिए जाव' महेसक्खे बाहिरए पोगले अपरियाइत्ता° पभू आगमित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव' महेसक्खे बाहिरए पोगले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ? हंता पभू ।

१. अन्नइलायए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. भ० १।५१ ।

३. ओ० सू० १ ।

४. ओ० सू० २-१३ ।

५. ओ० सू० २२-५२ ।

६. भ० १६।३३ ।

७. स० पा०—उवागच्छित्ता जाव नमसित्ता ।

८. भ० १।३३६ ।

९. अपरियादिइत्ता (क, ख, व) ।

देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे एवं एएणं अभिलावेण गमित्तए वा, भासित्तए वा, विआगरित्तए वा, उम्मिसावेत्तए वा, निमिसावेत्तए वा, आउंटा-वेत्तए वा, ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेइत्तए वा, विउक्खित्तए वा, परिया-रेत्तए वा जाव हंता पभू—इमाइ अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता सभतियवदणएण^१ वदति, वंदित्ता तमेव दिव्वं जाणविमाणं द्रुहति^२, द्रुहित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ॥

गंगदत्तदेवस्स संदग्गे परिणममाण-परिणय-पदं

५५ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—अण्णदा ण भते ! सक्के देविदे देवराया देवाणुप्पियं वंदति नमंसति सक्कारेति जाव^३ पज्जुवासति, किण्ण भते ! अज्ज सक्के देविदे देवराया देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइ पुच्छइ, पुच्छित्ता संभतियवदणएणं वदइ नमंसइ जाव^४ पडिगए ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएणं महामुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववन्त्ता, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए य ।

तए ण से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे तं अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोगला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोगला नो परिणया, अपरिणया ।

तए णं से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए देवे त मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोगला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोगला परिणया, नो अपरिणया । त मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नं एव पडिहणइ^५, पडिहणित्ता ओहिं पउजइ, पउजित्ता मम ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता अयमेयारूवे^६ *अज्जभत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^७ समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे उल्लुयतीरस्स नगरस्सं वहिया एगजुवुए चेइए अहापडिक्कं^८ *ओग्गह ओगिण्हित्ता सज्जेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे^९ विहरइ, त सेय खलु मे समणं भगव महावीर वंदित्ता जाव^{१०} पज्जुवासित्ता इम एयारूव वागरण पुच्छित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता

१. °वदण (अ, ख, व, स) ।

२. दुहइ (स) ।

३. भ० २।३० ।

४. भ० १६।५४ ।

५. पडिगणइ (ता) ।

६. स० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

७. स० पा०—अहापडिक्कं जाव विहरइ ।

८. भ० २।३० ।

चउर्हि सामाणियसाहस्सीहि *१०तिहि परिसाहि, सत्तहि अणिएहि, सत्तहि अणि-
याहिवर्द्धहि, सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि बहूहि महासामाणविमाण-
वासीहि वेमाणिएहि देवेहि देवीहि य सद्धि संपरिवुडे ° जाव' दुदुहि-निग्घोस-
नाइयरवेण जेणेव जंबुदीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव उल्लुयतीरे' नगरे,
जेणेव एगजंबुए चेइए, जेणेव ममं अंतिय तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तए ण से
सक्के देविदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्व देविहिट्ठ दिव्वं देवजुति दिव्वं
देवाणुभागं दिव्व तेयलेस्सं असहमाणे ममं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइ पुच्छित्ता
सभतियवदणएणं वंदित्ता जाव पडिगए ॥

५६. जाव च ण समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेति तावं
च णं से देवे तं देस हव्वमागए । तए ण से देवे समणं भगवं महावीर तिक्खुत्तो
आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
एवं खलु भंते ! महासुक्के कप्पे महासामाणे' विमाणे एगे मायिमिच्छदिट्ठि-
उववन्नए देवे मम एवं वयासी—परिणममाणा पोगगला नो परिणया,
अपरिणया; परिणमंतीति पोगगला नो परिणया, अपरिणया । तए ण अहं तं
मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एव वयासी—परिणममाणा पोगगला परिणया, नो
अपरिणया; परिणमंतीति पोगगला परिणया, नो अपरिणया, से कहमेयं भंते !
एवं ?

५७. गंगदत्तादि' ! समणे भगवं महावीरे गगदत्तं देवं एवं वयासी—अहं पि णं
गंगदत्ता ! एवमाइक्खामि भासेमि पणवेमि पख्वेमि—परिणममाणा पोगगला'
°परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोगगला परिणया°, नो अपरिणया,
सच्चमेसे अट्ठे ॥

५८. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा
निसम्म हट्ठुट्ठे समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता नच्चा-
सन्ने जाव' पज्जुवासति' ॥

गंगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं

५९. तए णं समणे भगव महावीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य' °महतिमहालियाए
परिसाए° धम्मं परिकहेइ जाव' आराहए भवति ॥

१. स० पा०—गरियारो जहा सूरियाभस्स जाव ।

२. राय० सू० ५८ ।

३. उल्लुया° (ख, ब, म) ।

४. महासमाणे (अ, क, ता, ब) ।

५. °दी (ता, ब, म) ।

६. स० पा०—पोगगला जाव नो ।

७. म० १।१० ।

८. पज्जुवाहति (म) ।

९. सं० पा०—तीसे य जाव धम्म ।

१०. जो० सू० ७१-७७ ।

६०. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठुत्ते उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अहण्णं भंते ! गंगदत्ते देवे किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? *सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ? गंगदत्ताइ ! समणे भगव महावीरे गगदत्तं देव एवं वयासी—गगदत्ता ! तुमण्ण भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए । सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी । परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए । सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए । आराहए, नो विराहए । चरिमे, नो अचरिमे ॥

गंगदत्तदेवेण नट्ट-उवदंसण-पदं

६१. तए ण से गगदत्ते देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समणे हट्ठुत्तचित्त-भाणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह ।

जाणति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्वि वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविइंढ दिव्वं देवजुइ दिव्वं देवाणुभाव लद्ध पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाण निग्गथाण दिव्वं देविइंढ दिव्वं देवजुइ दिव्वं देवाणुभाव दिव्वं वत्तीसतिवद्ध नट्टविहि उवदसित्तए ॥

६२. तए ण समणे भगव महावीरे गगदत्तेण देवेण एव वुत्ते समणे गगदत्तस्स देवस्स एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणइ, तुसिणीए सचिट्ठति ॥

६३. तए ण से गगदत्ते देवे समण भगव महावीर दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—तुब्भे ण भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह ।

जाणति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्वि वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविइंढ दिव्वं देवजुइ दिव्वं देवाणुभाव लद्ध पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाणं निग्गथाण दिव्वं देविइंढ दिव्वं देवजुइ दिव्वं देवाणुभाव दिव्वं वत्तीसतिवद्ध नट्टविहि उवदसित्तए त्ति कट्ठुं जाव वत्तीसतिवद्ध नट्टविहि उवदसेत्ति, उवदसेत्ता जाव तामेव दिसं पडिगए ॥

६४. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर^१ •वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता^२ एव वयासी—गगदत्तस्स ण भते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती^३ •दिव्वे देवाणुभावे कहि गते ? कहि^४ अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरीर गए, सरीर अणुप्पविट्ठे, कूडागारसालादिट्ठतो जाव^५ सरीर अणुप्पविट्ठे । अहो ण भते ! गगदत्ते देवे सहिड्ढिए^६ •महज्जुइए महव्वले महायसे^७ महेसक्खे ॥

गंगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पद

६५. गंगदत्तेणं भते^१ देवेण सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे^२ ? •किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? कि नामए वा ? कि वा गोत्तेणं ?
कयरसि वा गामंसि वा नगरसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कव्वडंसि वा मडंबसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहसि वा आगरंसि वा आसमसि वा संवाहंसि वा सण्णिवेससि वा ?
कि वा दच्चा ? कि वा भोच्चा ? कि वा किच्चा ? कि वा समायरित्ता ?
कस्स वा तहारुवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मियं सुवयण सोच्चा निसम्म जण्ण गंगदत्तेण देवेण सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते^३ •अभिसमण्णागए ?
६६. गोयमादी ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नाम त्तगरे होत्था—वण्णओ^४ । सहसववणे उज्जाणे—वण्णओ^५ । तात्थ ण हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नाम गाहावती परिवसति—अड्ढे जाव^६ बहुजणस्स अपरिभूए ॥
६७. तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव^७ सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केण^८, •आगासगएण छत्तेण, आगासियाहि चामराहि, आगास फालियामएण सपायवीढेण सीहासणेण, धम्मज्झएण पुरओ^९ पकडिड्ढ-ज्जमाणेणं-पकडिड्ढज्जमाणेण सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणु-

१. सं० पा०—महावीर जाव एव ।

६. ओ० सू० १ ।

२. सं० पा०—देवज्जुती जाव अणुप्पविट्ठे ।

७. अ० ११।५७ ।

३. राय० सू० १२३ ।

८. अ० २।९४ ।

४. सं० पा०—महिड्ढिए जाव महेसक्खे ।

९. अ० १।७ ।

५. सं० पा०—लद्धे जाव गगदत्तेण देवेण सा १०. सं० पा०—चक्केण जाव पकडिड्ढज्ज^० ।
दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।

- १ गामं^१ दृष्ट्वा ज्ञमाने सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे^२ जेणेव सहस्रवणे उज्जाणे जाव^३ विहरति । परिसा निग्गया जाव^३ पज्जुवासति ॥
- ६८ तए ण से गगदत्ते गाहावतो इमोसे कहाए लद्धे समाने हट्ठतुट्ठे ण्हाए^४ कयवलिकम्मे जाव^५ अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता पायविहारचारेण^६ हत्थिणापुरं^७ नगरं मज्झमज्झेण^८ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्रवणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ जाव^९ तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥
६९. तए ण मुणिसुव्वए अरहा गगदत्तस्स गाहावतस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव^{१०} परिसा पडिगया ॥
७०. तए ण से गगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठत्ता मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सइहामि ण भते ! निग्गय पावयण जाव^{११} से जहेयं तुव्वे वदह, ज नवर देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्त कुडुवे ठावेमि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे^{१२} *भवित्ता अगाराओ अणगारियं^{१३} पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ॥
- ७१ तए ण से गगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वएण अरहया एव वुत्ते समाने हट्ठतुट्ठे मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियाओ सहस्रवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता, जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विउलं असण-पाण^{१४}—खाइम-साइमं^{१५} उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग^{१६}—सयण-सवधि-परियणं^{१७} आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे जाव^{१८} जेट्ठपुत्त कुडुवे ठावेति । त मित्त-नाइ^{१९}—नियग-सयण-सवधि-परियणं^{२०} जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सोयं द्रुहति, द्रुहित्ता मित्त-नाइ-

१. सं० पा०—गामाणुगाम जाव जेणेव ।

८. ओ० सू० ६१ ।

२. भ० १।७ ।

९. ओ० सू० ७१-७९ ।

३. ओ० सू० ५२ ।

१०. भ० २।५२ ।

४. जाव (ख, स) ।

११. सं० पा०—मुडे जाव पव्वयामि ।

५. भ० २।६७ ।

१२. सं० पा०—पाण जाव उवक्खडावेति ।

६. हत्थिणापुर (अ, म); हत्थिणाउर (ता, व); हत्थिणापुर (स) ।

१३. सं० पा०—नियग जाव आमतेति ।

१४. भ० ३।१०२ ।

७. मज्झेण २ (अ, ख, ता, व, म) ।

१५. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।

नियग^१-सयण-संबंधि^०-परिजणेणं जेदुपुत्तेणं य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव^१ दुदुहि-निग्घोसनादितरवेणं हत्थिणागपुरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादिते तित्थगरातिसए पासति । एव जहा उद्दायणे जाव^१ सयमेव आभरणे ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेति, करेत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एवं जहेव उद्दायणे तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ जाव^१ मासियाए संलेहणाए अत्ताण भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जाव^१ गंगदत्तदेवत्ताए उववन्ते ॥

७२. तए णं से गगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्त-भावं गच्छति, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव^१ भासा-मणपज्जत्तीए]^० एवं खलु गोयमा ! गगदत्तेण देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी^१ *सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते^० अभिसमण्णागए ॥

७३. गगदत्तस्स ण भते ! देवस्स केवतिय काल ठिति पणत्ता ?

गोयमा ! सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पणत्ता ॥

७४. गगदत्ते ण भते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं^१ *भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! * महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव^१ सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

७५. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति^१ ॥

छट्ठो उद्देशो

सुविण-पदं

७६. कतिविहे ण भंते ? सुविणदसणे^१ पणत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे सुविणदसणे पणत्ते, तं जहा—अहातच्चे, पताणे, चित्तासुविणे, तन्निवरीए, अव्वत्तदसणे^१ ॥

१. सं० पा०—नियग जाव परिजणेण ।

२. भ० १।५२ ।

३. भ० १३।११७ ।

४. भ० ११।११८; १।१५०, १५१ ।

५. भ० ३।१७ ।

६. भ० ३।१७ ।

७. असी कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

८. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।

९. सं० पा०—आउक्खएणं जाव महाविदेहे ।

१०. भ० २।७३ ।

११. भ० १।५१ ।

१२. सुमिणं^० (अ) ।

१३. अवत्तं^० (अ, क, ख, ब) ।

७७. सुत्ते णं भंते ! सुविणं पासति ? जागरे सुविणं पासति ? सुत्तजागरे सुविणं पासति ?
गोयमा ! नो सुत्ते सुविण पासति, नो जागरे सुविण पासति, सुत्तजागरे सुविण पासति ॥
७८. जीवा णं भंते ! किं सुत्ता ? जागरा ? सुत्तजागरा ?
गोयमा ? जीवा सुत्ता वि, जागरा वि, सुत्तजागरा वि ॥
७९. नेरइयाण भंते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया सुत्ता, नो जागरा, नो सुत्तजागरा । एवं जाव' चउरिदिया ॥
८०. पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भंते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! सुत्ता, नो जागरा, सुत्तजागरा वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥
८१. सबुडे ण भंते ! सुविणं पासति ? असंबुडे सुविण पासति ? संबुडासंबुडे सुविण पासति ?
गोयमा ! सबुडे वि सुविणं पासति, असंबुडे वि सुविणं पासति, संबुडासंबुडे वि सुविण पासति । संबुडे सुविणं पासति अहातच्चं पासति । असंबुडे सुविणं पासति तहा वा त होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा । संबुडासंबुडे सुविणं पासति 'तहा वा तं होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा' ॥
८२. जीवा णं भंते ! किं संबुडा ? असंबुडा ? संबुडासंबुडा ?
गोयमा ! जीवा संबुडा वि, असंबुडा वि, संबुडासंबुडा वि । एव जहेव सुत्ताणं दडम्भो तहेव भाणियव्वो ॥
८३. कति णं भंते ! सुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वायालीस सुविणा पण्णत्ता ॥
८४. कति णं भंते ! महासुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं महासुविणा पण्णत्ता ॥
८५. कति णं भंते ! सब्वसुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वावत्तरि सब्वसुविणा पण्णत्ता ॥
८६. तित्थगरमायरो णं भंते ! तित्थगरंसि गव्वं वक्कममाणंसि कति महासुविणे^१ पासित्ता णं पडिबुज्झन्ति ?
गोयमा ! तित्थगरमायरो तित्थगरंसि गव्वं वक्कममाणंसि एएसि तीसाए महासुविणाणं इमे वोइस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झन्ति, तं जहा—गय-उसम जाव' सिहि च ॥

१. पू० प० २ ।

२. सं० पा०—एवं चेव ।

३. महासुविणे सुविणे (अ, क, ख, ता, व) ।

४. अ० ११।१४२ ।

८७. चक्कवट्टिमायरो ण भते ! चक्कवट्टिसि गव्वं वक्कममाणसि कति महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ?
 गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिसि गव्वं^१ वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुविणाणं^२ इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति, त जहा—
 गय-उसभ^३ जाव सिहि च ॥
८८. वासुदेवमायरो णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! वासुदेवमायरो^४ वासुदेवसि गव्वं^५ वक्कममाणसि एएसि चोद्द-
 सण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ॥
८९. बलदेवमायरो—पुच्छा ।
 गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसि चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि
 महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति ॥
९०. मंडलियमायरो ण भते !—पुच्छा ।
 गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसि चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे एग
 महासुविणं 'पासित्ता ण'^६ पडिबुज्झति ॥

भगवओ महासुविण-इंसण-पदं

९१. समणे भगव महावीरे छउमत्थकालियाए अतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—
१. एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसाय सुविणे पराजियं पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
 २. एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं^७ सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
 ३. एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं^८ पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
 ४. एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामय सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
 ५. एगं च णं महं सेय गोवगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
 ६. एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समता कुसुमिय सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
 ७. एगं च णं 'महं सागरं'^९ उम्मीवीथीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्ण सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।
 ८. एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलतं सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।

-
१. जाव (अ, ख, म); जाव गव्वं (क, ता, ४. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
 व, स) । ५. पुंसकोइल (अ, क, ख, ता, व) ।
 २. सं० पा०—एव जहा तित्थगरमायरो जाव । ६. चित्तपक्खगं (क, ता) ।
 ३. सं० पा०—वासुदेवमायरो जाव वक्कम^० । ७. महासागर (अ) ।

६ एग च ण मह हरिवेरुलियवण्णाभेण नियणेण अत्तेण भाणुसुत्तर पव्वयं सव्वओ समता आवेदिय परिवेदिय सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१० एगं च णं मह मदरे पव्वए मदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगय अप्पाण सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।

१. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह घोररूवदित्तधर तालपिसाय सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्ण समणेणं भगवया महावीरेण मोहणिज्जे । मूलाओ उग्घाइए ।

२. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सुक्किल*पक्खग पुसकोइलग सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरति ।

३. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह चित्तविचित्त*पक्खग पुसकोइलग सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे विचित्त ससमयपर-समइय दुवालसग गणिपिडग आघवेति पण्णवेति पुरूवेति दसेति निदसेति उवदसेति, त जहा—आयार, सूयगड जाव' दिट्ठिवाय' ।

४. जण्ण समणे भगव महावीरे एगं मह दामदुगं सव्वरयणामय सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे दुविहे धम्मे पण्णवेति, त जहा—अगार-धम्म वा, अणगारधम्मं वा ।

५. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सेयं गोवग्ग*सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्ण समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे समणसधे, त जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ।

६. जण्ण समणे भगव महावीरे एगं मह पउमसर*सव्वओ समता कुसुमिय सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, त जहा—भवणवासी, वाणमतरे, जोतिसिए, वेमाणिए ।

७. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सागर*उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहि तिण्ण सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्ण समणेणं भगवया महावीरेण अणा-दीए अणवदग्गे*दीहमद्धे चाउरते* ससारकतारे तिण्णे' ।

८. जण्ण समणे भगवं महावीरे एग मह दिणयर*तेयसा जलतं सुविणे पासित्ता

१. स० पा०—सुक्किल जाव पडिबुद्धे ।

२. स० पा०—चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे ।

३. भ० २०।७५ ।

४. दिट्ठिवात (अ, व); दिट्ठिवाव (ता) ।

५. स० पा०—गोवग्ग जाव पडिबुद्धे ।

६. स० पा०—पउमसर जाव पडिबुद्धे ।

७. स० पा०—सागर जाव पडिबुद्धे ।

८. अणवतग्गे (व); स० पा०—अणवदग्गे जाव ससार० ।

९. नित्थिण्णे (अ) ।

१०. स० पा०—दिणयर जाव पडिबुद्धे ।

ण ° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणते अणुत्तरे' •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे ° केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ते ।

६. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह हरिवेरुलिय' •वण्णाभेण नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तर पव्वय सव्वओ समता आवेदिय परिवेदिय सुविणे पासित्ता णं ° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्ति-वण्ण-सद्-सिलोया सदेवमणुयासुरे लोए परिभमति—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगव महावीरे ।

१०. जण्णं समणे भगव महावीरे मदरे पव्वए मंदरचूलियाए' •उवार सीहासण-वरगय अप्पाण सुविणे पासित्ता णं ° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली' धम्मं आघवेति' •पण्णवेति परूवेति दसेति निदसेति ° उवदसेति ॥

सुविण-फल-पदं

६२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं ह्यपति वा गयपति वा' •नरपति वा किन्नरपति वा किपुरिसपति वा महोरगपति वा गंधव्वपति वा ° वसभपति वा पासमाणे पासति, द्रुहमाणे द्रुहति, द्रूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव' सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं दामिणि' पाईणपडिणायतं दुहओ समुदे पुट्टं पासमाणे पासति, सवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव' बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं मह रज्जु पाईणपडिणायतं दुहओ लोगंते पुट्टं पासमाणे पासति, छिदमाणे छिदति, छिन्नमिति' अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं महं किण्हसुत्तगं वा' •नीलसुत्तगं वा लोहिय-सुत्तगं वा हालिहसुत्तगं वा ° सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे

१. सं० पा०—अणुत्तरे जाव केवल ° ।

२. सं० पा०—हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे ।

३. सं० पा०—मंदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे ।

४. केवलीण (क); केवलपण्णत्तं (ठा० १०।१०३)

५. सं० पा०—आघवेति जाव उवदसेति ।

६. सं० पा०—गयपति वा जाव वसभपति ।

७. भ० १।४४ ।

८. दाम (ख) ।

९. तक्खणामेव अप्पाण (ख); तक्खणा चव (ता)

१०. छिदणमिति (ता) ।

११. सं० पा०—किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किल ° ।

उगोवेति, उगोवितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

६६ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं अयरासि वा तंवरसि वा तउयरासि वा सीसगरासि वा पासमाणे पासति, दुख्हमाणे दुख्हति, दुख्हमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

६७ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं हिरण्णरासि वा सुवण्णरासि वा रयणरासि वा वडररासि वा पासमाणे पासति, दुख्हमाणे^१ दुख्हति, दुख्हमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

६८ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं तणरासि वा ^{१०}कट्ठरासि वा पत्तरासि वा तयरासि वा तुसरासि वा भुसरसि वा गोमयरसि वा^२ अवकररासि वा पासमाणे पासति, विक्खिरमाणे विक्खिरति, विक्खिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

६९ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं सरथभ वा वीरणथभवा वसीमूलथभं वा वल्लीमूलथभं वा पासमाणे पासति, उम्मूलेमाणे उम्मूलेति, उम्मूलितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

१०० इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं खीरकुभं वा दधिकुभं वा घयकुभं वा मधुकुभं वा पासमाणे पासति, उप्पाडेमाणे उप्पाडेति, उप्पाडितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

१०१ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं सुरावियडकुभं वा सोवीरवियडकुभं वा तेल्लकुभं वा वसाकुभं वा पासमाणे पासति, भिदमाणे भिदति, भिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अतं करेति ॥

१०२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं पउमसरं कुसुमिय पासमाणे पासति, ओगाहमाणे ओगाहति, ओगाहमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

१०३ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं सागर उम्मीवीयीसहस्सकलियं^३ पासमाणे

१. दुख्हमाणे (अ, ख, स) ।

३. उम्मीवीयी जाव कलियं (अ, क, ख, ता, व,

२. स० पा०—जहा तेयनिसणे जाव अवकररासि । म, स) ।

पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

१०४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह भवण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥
१०५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं विमाण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, दूहमाणे दूहति, दूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥

गंध-पोग्गल-पदं

१०६. अह भते ! कोट्टुपुडाण वा जाव^१ केयइपुडाण वा अणुवायसि उब्भिज्जमाणाण वा^२ उब्भिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा^३ ठाणाओ वा ठाणं सकामिज्जमाणाण कि कोट्टे वाति जाव केयई^४ वाति ? गोयमा ! नो कोट्टे वाति जाव नो केयई वाति, धाणसहगया पोग्गला वाति^५ ॥
१०७. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^६ ॥

सत्तमो उद्देशो

१०८. कतिविहे ण भंते ! उवओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, एव जहा उवओगपदं^१ पण्णवणाए तहेंव निरवसेस नेयव्व^२, पासण्यापदं^३ च नेयव्व^४ ॥
१०९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति^५ ॥

१. राय० सू० ३० ।

५. भ० १।५१ ।

२. स० पा०—उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ, रायपसेणइयसुत्ते (३०) 'उब्भिज्जमाणाण' इत्यादीनि पदानि किञ्चिदधिकानि भिन्नान्यपि च लभ्यन्ते ।

६. प० २६ ।

७. भाणियव्व (स) ।

८. पासण्यापद (अ, क, ख, ता, व, म), प० ३० ।

९. निरवसेस नेयव्व (स) ।

३. केयती (अ, क, म, स) ।

१०. भ० १।५१ ।

४. वाति (अ, क, व, म, स) ।

अट्ठमो उद्देशो

लोगस्स चरिमते जीवाजीवादिमग्गणा-पदं

११०. केमहालए^१ ण भते । लोए पण्णत्ते ?
 गोयमा ! महत्तिमहालए लोए पण्णत्ते, जहा वारसमसए तहेव जाव^२
 असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिकखेवेण ॥
१११. लोयस्स ण भते । पुरत्थिमिल्ले चरिमते किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा,
 अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपदेसा ?
 गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि,
 अजीवपदेसा वि । जे जीवदेसा ते नियम एगिदियदेसा य, अहवा एगिदियदेसा
 य वेइदियस्स य देसे—एवं जहा दसमसए अग्गेयी दिसा तहेव^३, नवर—देसेसु
 अण्णदियाण आइल्लविरहिओ । जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा, अद्दासमयो
 नत्थि । सेस त चेव निरवसेस^४ ॥
११२. लोगस्स ण भते । दाहिणिल्ले चरिमते किं जीवा ? एव चेव । एवं पच्चत्थि-
 मिल्ले वि, उत्तरिल्ले वि ॥
११३. लोगस्स ण भते । उवरिल्ले चरिमते किं जीवा—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि । जे जीवदेसा ते
 नियम^५ एगिदियदेसा य अण्णदियदेसा य, अहवा एगिदियदेसा य अण्णदियदेसा
 य वेइदियस्स^६ य देसे, अहवा एगिदियदेसा य अण्णदियदेसा य वेइदियाण य
 देसा, एव मज्झिल्लविरहिओ जाव पच्चिदियाण । जे जीवप्पदेसा ते नियमं
 एगिदियप्पदेसा य अण्णदियप्पदेसा य, अहवा एगिदियप्पदेसा य अण्णदियप्पदेसा
 य वेइदियस्स पदेसा य, अहवा एगिदियप्पदेसा य अण्णदियप्पदेसा य वेइदियाण
 य पदेसा, एव आदिल्लविरहिओ जाव पच्चिदियाण । अजीवा जहा^७ दसमसए
 तमाए तहेव निरवसेस ॥
११४. लोगस्स ण भते । हेट्ठिल्ले चरिमते किं जीवा—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि, जे जीवदेसा ते नियमं
 एगिदियदेसा, अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स देसे, अहवा एगिदियदेसा य
 वेइदियाण य देसा, एव मज्झिल्लविरहिओ जाव अण्णदियाणं । पदेसा आइल्ल-

१. किमहालए (अ, क, ख, ता, म, स) ।

५. नितमं (व) ।

२. भ० १२।१३०, २।४५ ।

६. वेदियस्स (म, स) ।

३. भ० १०।६ ।

७. भ० १०।७ ।

४. सव्व (अ, क, ता, व, म) ।

विरहिया सन्वेसि जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते तहेव । अजीवा जहेव उवरिल्ले चरिमंते तहेव ॥

११५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते कि जीवा पुच्छा । गोयमा ! नो जीवा, एवं जहेव लोगस्स तहेव चत्तारि वि चरिमंता जाव उत्तरिल्ले, उवरिल्ले तहेव, जहा^१ दसमसए विमला दिसा तहेव निरवसेसं । हेट्ठिल्ले चरिमंते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते तहेव, नवरं—देसे पच्चिदिएसु तियभगो त्ति सेस त चेव । एवं जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमंता भणिया एव सक्करप्पभाए वि । उवरिम-हेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ले । एवं जाव अहेसत्तमाए । एवं सोहम्मस्स वि जाव अच्चुयस्स । गेवेज्जविमाणाण एवं चेव, नवरं—उवरिम-हेट्ठिल्लेसु चरिमंतेसु देसेसु पच्चिदियाण वि मज्झिम्भल्लविरहिओ चेव, सेस तहेव । एवं जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, ईसिपम्भारा वि ॥

परमाणुपोगलस्स गति-पदं

११६. परमाणुपोगले णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ? पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पुरत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ? दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्लं^१ •चरिमंतं एगसमएणं^० गच्छति ? उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणिल्लं^१ •चरिमंतं एगसमएणं^० गच्छति ? उवरिल्लाओ चरिमताओ हेट्ठिल्लं चरिमंतं एगसमएणं^० गच्छति ? हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएणं^० गच्छति ? हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएणं^० गच्छति ? हता गोयमा ! परमाणुपोगले णं लोगस्स पुरत्थिमिल्लं तं चेव जाव उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ॥

किरिया-पदं

११७. पुरिसे ण भंते ! वासं वासति, वासं नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरु वा आउटावेमाणे^१ वा पसारमाणे वा कत्तिकिरिए ? गोयमा ! जावं च ण से पुरिसे वास वासति, वास नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरु वा आउटावेति वा पसारेति वा, तावं च णं से पुरिसे काइयाए^१ •अहिगरणियाए पाओसियाए पारितावणियाए पाणातिवायकिरियाए^०—पंचहि किरियाहि पुट्ठे ॥

१. भ० १०।७ ।

२. सं० पा०—उत्तरिल्लं जाव गच्छति ।

३. सं० पा०—दाहिणिल्लं जाव गच्छति ।

४. एव जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

५. आउटारेमाणे (ता) सर्वत्रापि ।

६. सं० पा०—काइयाए जाव पंचहि ।

अलोए गतिनिसेध-पदं

११८. देवे णं भते ! महिडिडए जाव^१ महेसक्खे लोगते ठिच्चा पभू अलोगसि हत्थं वा पायं वा वाह वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
११९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—देवे णं महिडिडए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू अलोगसि हत्थं वा^२ •पाय वा वाह वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा^३ पसारेत्तए वा ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोदिच्चिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला । पोग्गलामेव पप्प जीवाण य अजीवाण य गतिपरियाए आहिज्जइ । अलोए ण नेवत्थि जीवा, नेवत्थि पोग्गला । से तेणट्ठेणं^४ •गोयमा ! एव वुच्चइ—देवे महिडिडए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू आलोगंसि हत्थं वा पायं वा वाह वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा^५ पसारेत्तए वा ॥
१२०. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^६ ॥

नवमो उद्देशो

बलिस्स सभा-पद

१२१. कहिण्ण^१ भते ! बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जंबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण तिरियमसंखेज्जे जहेव च्चमरस्स जाव^२ बायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण बलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो ख्यगिदे नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते । सत्तरस एक-वीसे जोयणसए—एव पमाण जहेव तिगिच्छिक्कूडस्स पासायवडेसगस्स वि त चेव पमाण, सीहासण सपरिवार बलिस्स परिधारेण, अट्ठो तहेव^३, नवर—

१. भ० १।३३६ ।

२. स० पा०—हत्थं वा जाव पसारेत्तए ।

३. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव पसारेत्तए ।

४. भ० १।५१ ।

५. कहि ण (अ, क, ख, ता, व, य) ।

६. भ० २।११८ ।

७. यथा तिगिच्छकूटस्य नामान्वर्थमिधायकं वा तथाऽप्यापि वाच्यं, केवलं तिगिच्छकूटान् प्रवृत्तस्योत्तरे यस्मात्तिगिच्छिप्रभाभ्युत्प्लादी तत्र सन्ति तेन तिगिच्छकूट इत्युच्यत इत्यु-
इह तु रुचकेन्द्रप्रभाणि तानि सन्तीति वा
रुचकेन्द्रस्तु रत्नविशेष इति, तत्पुनर-

रुयगिदप्पभाइ-रुयगिदप्पभाइ-रुयगिदप्पभाइ । सेसं तं चेव जाव वलिचंचाए रायहाणीए अण्णेसि च जाव रुयगिदस्स ण उप्पायपव्वयस्स उत्तरे ण छक्कोडि-सए तहेव जाव चत्तालीस जोयणसहस्साइ ओगाहिता, एत्थ ण वलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो वलिचंचा नामं रायहाणी पणत्ता । एग जोयण-सयसहस्स पमाण, तहेव जाव वलिपेढस्स उववाओ जाव आयरक्खा सव्वं तहेव निरवसेस, नवरं—सातिरेग सागरोवम ठिती पणत्ता । सेसं त चेव जाव' बली वइरोयणिदे, बली वइरोयणिदे ॥

१२२. सेवं भते ! सेवं भते ! जाव' विहरइ ॥

दसमो उद्देशो

ओहि-पदं

१२३. कतिविहा' णं भंते ! ओही पणत्ता ?

गोयमा ! दुविहा ओही पणत्ता । ओहीपद निरवसेसं भाणियव्वं ॥

१२४. सेव भंते ! सेवं भते ! जाव' विहरइ ॥

इक्कारसमो उद्देशो

दीवकुमारादि-पदं

१२५. दीवकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समुस्सासनिस्सासा ?

नो इण्ठे समट्ठे । एव जहा पढमसए बित्थियउद्देसए दीवकुमाराणं वत्तव्वया तहेव जाव' समाउया, समुस्सासनिस्सासा" ॥

सूत्रमेवमव्येय—'से केणट्ठेण भंते । एव २ १।५१ ।

वुच्चइ—रुयगिदे-रुयगिदे उप्पायपव्वए ? ३. कतिविहे (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

गोयमा ! रुयगिदे ण बहूणि उप्पलाणि ४. प० ३३ ।

पउमाइ कुमुयाइ जाव रुयगिदवण्णाइ रुयगिद- ५. म० १।५१ ।

लेसाइ रुयगिदप्पभाइ, से तेण्ठेण रुयगिदे- ६. म० १।७४, ७५ ।

रुयगिदे उप्पायपव्वए' त्ति (वृ) । ७. °निस्सासा । एव नागा वि (अ, ता, व,

१. म० २।११८-१२१।

म, स) ।

१२६. दीवकुमाराणं भंते ! कति लेस्साओ पणत्ताओ ?
 गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पणत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा^१, *नीललेस्सा,
 काउलेस्सा^२, तेउलेस्सा ॥
१२७. एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणं य कयरे कयरे-
 हितो^३ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा^४ ? विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सब्बत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा,
 नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥
१२८. एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साणं य कयरे कयरे-
 हितो अप्पिड्डिया वा ? महिड्डिया वा ?
 गोयमा ! कण्हलेस्साहितो नीललेस्सा महिड्डिया जाव सब्बमहिड्डिया
 तेउलेस्सा ॥
१२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव^५ विहरइ ॥

१२-१४ उद्देसा

१३०. उदहिकुमारा ण भंते ! सब्बे समाहारा ? एवं चेव ॥
१३१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
१३२. एवं दिसाकुमारा वि ॥
१३३. एवं थणियकुमारा वि ॥
१३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव^५ विहरइ ॥

१. सं० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।

३. भ० १।५१ ।

२. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

४. भ० १।५१ ।

सत्तरसमं सतं

पढमो उद्देशो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. कुंजर २. संजय ३. सेलेसि, ४. किरिय ५. ईसाण ६, ७. पुढवि ८, ९. दग १०, ११. वाऊ ।
१२. एगिदिय १३. नाग १४. सुवण्ण, १५. विज्जु १६, १७. वातग्गि^१ सत्तरसे ॥१॥

हत्थिराय-पवं

१. रायगिहे जाव^२ एवं वयासी—उदायी णं भंते ! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! असुरकुमारोहितो देवेहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ॥
२. उदायी णं भंते ! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इमोसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितियंसि^३ निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥
३. से णं भंते ! तओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव^४ सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥
४. भूयाणंदे णं भंते ! हत्थिराया कओहितो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए उववन्ने ? एवं जहेव उदायी जाव अंतं काहिति ॥

१. वायुग्गि (अ, म, स) ।

२. म० १।४-१० ।

३. ०ट्ठितियसि (अ, ख, व, म) ।

४. म० २।७३ ।

किरिया-पदं

५. पुरिसे णं भंते । तलमारुहइ^१, आरुहिता तलाओ तलफलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
 गोयमा ! जावं च ण से पुरिसे तलमारुहइ, आरुहिता तलाओ तलफलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च ण से पुरिसे काइयाए जावं^२ पंचहिं किरियाहिं पुट्टे । जेसिं पि ण जीवाणं सरीरेहितो तले निव्वत्तिए, तलफले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जावं पचहिं किरियाहिं पुट्टा ॥
६. अहे णं भंते ! से तलफले अप्पणो गरुयत्ताए^३ *भारियत्ताए गरुयसंभारियत्ताए अहे वीससाए^४ पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइ जावं^५ जीवियाओ ववरोवेति, तए^६ णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
 गोयमा ! जावं च ण से^७ तलफले अप्पणो गरुयत्ताए जावं जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जावं चउहिं किरियाहिं पुट्टे । जेसिं पि ण जीवाणं सरीरेहितो तले निव्वत्तिए ते वि ण जीवा काइयाए जावं चउहिं किरियाहिं पुट्टा । जेसिं पि ण जीवाण सरीरेहितो तलफले निव्वत्तिए ते^८ ण जीवा काइयाए जावं पचहिं किरियाहिं पुट्टा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवमाहे बट्ठंति ते वि य ण जीवा काइयाए जावं पंचहिं किरियाहिं पुट्टा ॥
७. पुरिसे ण भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
 गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जावं पचहिं किरियाहिं पुट्टे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए जावं^९ बीए निव्वत्तिए, ते वि य णं जीवा काइयाए जावं पचहिं किरियाहिं पुट्टा ॥
८. अहे णं भंते ! से मूले अप्पणो गरुययाए जावं जीवियाओ ववरोवेति, तए^{१०} णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

१. तलमारुहइ (अ, ख, ता, व, म); ताल^० (क) ।
 २. म० १६।११७ ।
 ३. स० पा०—गरुयत्ताए जावं पच्चोवयमाणे ।
 ४. × (अ); म० ५।१३४ ।
 ५. ततो (व) ।
 ६. से पुरिसे (अ, क, ख, ता, व, म, स); अत्र 'पुरिसे' इति पद अशुद्धमस्ति । एतत् च लिपिदोषादागतम् । वृत्तौ तत्तालफलमिति लभ्यते । म० ५।१३५ सूत्रे 'जावं च एण से

- उसू' इति पाठोस्ति । तत्साहचर्यादत्रापि 'जावं च एण से तलफले' इति पाठः सङ्गतोस्ति ।
 ७. ते वि (अ, क, ख, ता, व, म, स); अत्र 'अपि' पद प्रवाहपाति आगतम् । वृत्तौ फल-निर्वर्तकास्तु पचक्रिया एव इति व्याख्यायां 'तु' पदेन पूर्वप्रकरणाद् भेदः सूचितः । अस्मिन्-नर्थे 'अपि' पदस्य प्रयोगः सङ्गतो न स्यात् ।
 ८. म० ७।६४ ।
 ९. ततो (क, ता, म) ।

गोयमा ! जावं च णं से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्टा । 'जेसि पि य ण जीवाणं सरीरेहितो कंदे' निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि ण जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्टा^१ । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए ते णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्टा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्टा ॥

९. पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स कंदे पंचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ? गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स कंदं पंचालेइ वा पवाडेइ वा ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्टे । जेसि पि य णं जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्टा ॥
१०. अहे णं भंते ! से कंदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ? गोयमा ! जाव च ण से कंदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्टे । जेसि पि य ण जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए, खंधे निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहि पुट्टा । जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहितो कंदे निव्वत्तिए ते^१ ण जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्टा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पंचहि किरियाहि पुट्टा । जहा कंदे, एव जाव बीय ॥
११. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव^४ कम्मए ॥
१२. कति ण भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव^५ फासिदिए ॥
१३. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ? गोयमा ! ति विहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥
१४. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए । एवं पुढविकाइए वि । एवं जाव मणुस्से ॥

१. मूले (ख, ता, ब) ।

४. म० १०।न ।

२. ×(अ) ।

५. म० २।७७ ।

३. ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

१५ जीवा णं भते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेभाणा कतिकिरिया ?
 गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं पुढविकाइया
 वि । एव जाव मणुस्सा । एव वेउव्वियसरीरेण वि दो दंडगा, नवरं—जस्स
 अत्थि वेउव्वियं । एव जाव कम्मगसरीर । एवं सोइदिय जाव फासिदियं । एवं
 मणजोगं, वइजोगं, कायजोगं, जस्स ज अत्थि त भाणियव्वं । एए एगत्त-
 पुहत्तेण छव्वीस दडगा ॥

भाव-पदं

१६. कतिविहे ण भते ! भावे पणत्ते ?
 गोयमा ! छविहे भावे पणत्ते, तं जहा—ओदइए^१, ओवसमिए^२ •खइए,
 खओवसमिए, पारिणामिए^३, सन्निवाइए ॥
१७. से कि त ओदइए ?
 ओदइए भावे दुविहे पणत्ते, त जहा—उदए य, उदयनिप्फन्ने^४ थ । एवं एएणं
 अभिलावेण जहा अणुओगदारे छन्नामं^५ तहेव निरवसेस भाणियव्वं जाव^६ सेत्तं
 सन्निवाइए भावे ॥
१८. सेव भते ! सेव भते ! ति^७ ॥

बीओ उद्देशो

धम्माधम्म-ठित-पदं

१९. से नून भते । संजत-विरत-पडिहृत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते ? अस्संजत-
 अविरत-अपडिहृत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते ? संजतासंजते धम्माधम्मे
 ठिते ?
 हुता गोयमा ! संजत-विरत^१ •पडिहृत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते, अस्सं-
 जत-अविरत-अपडिहृत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते, संजतासंजते^२
 धम्माधम्मे ठिते ॥

१. उदतिए (अ, क, व, म) ।

५. अ० २७३-२६७ ।

२. स० पा०—ओवसमिए जाव सन्निवाइए ।

६. म० ११५१ ।

३. निप्पन्ने (अ, म); निप्पन्ने (स) ।

७. सं० पा०—विरत जाव धम्माधम्मे ।

४. छणाम (अ, व, म) ।

२०. एयंसि' णं भंते ! धम्मंसि वा, अघम्मंसि वा, धम्माधम्मंसि वा चविकया केइ आसइत्तए वा^१, •सइत्तए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा^० तुयट्ठित्तए वा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
२१. से केण खाईं अट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ जाव संजतासंजते धम्माधम्मं ठिते ? गोयमा ! संजत-विरत^१-•पडिहत-पच्चक्खाता^० पावकम्मे धम्मं ठिते, धम्मं चेव उवसपज्जित्ताणं विहरति । अस्सजत^१-•अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खात^०-पावकम्मे अघम्मं ठिते, अघम्मं चेव उवसपज्जित्ताणं विहरति । संजतासंजते धम्माधम्मं ठिते, धम्माधम्मं उवसपज्जित्ताणं विहरति । से तेणट्ठेण जाव धम्माधम्मं ठिते ॥
२२. जीवा णं भंते ! किं धम्मं ठिता ? अघम्मं ठिता ? धम्माधम्मं ठिता ? गोयमा ! जीवा धम्मं वि ठिता, अघम्मं वि ठिता, धम्माधम्मं वि ठिता ॥
२३. नेरइयाणं—पुच्छा । गोयमा ! नेरइया नो धम्मं ठिता, अघम्मं ठिता, नो धम्माधम्मं ठिता । एवं जाव चउररिदियाणं ॥
२४. पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं—पुच्छा । गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मं ठिता, अघम्मं ठिता, धम्माधम्मं वि ठिता । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

बालपंडिय-पदं

२५. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेति—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासया बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे अणिकित्ते से णं एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥
२६. से कहमेयं भंते ! एवं ? गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासया बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे निक्खित्ते से णं नो एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥
२७. जीवा णं भते ! किं बाला ? पंडिया ? बालपंडिया ? गोयमा ! बाला वि, पंडिया वि, बालपंडिया वि ॥
२८. नेरइयाणं—पुच्छा । गोयमा ! नेरइया बाला, नो पंडिया, नो बालपंडिया । एवं जाव चउररिदिया ॥

१. एतेसि (अ, क, ब, म, स); अत्र षष्ठीबहु-वचनान्त पदं शुद्धं न प्रतिभाति ।

३. सं० पा०—विरत जाव पावकम्मे ।

४. सं० पा०—अस्सजत जाव पावकम्मे ।

२. सं० पा०—आसइत्तए वा जाव तुयट्ठित्तए ।

२९. पंचिदियतिक्खजोणियाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! पंचिदियतिरिक्खजोणिया वाला, नो पंडिया, वालपंडिया वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

जीवस्स जीवायाए एगत्त-पदं ✓

३०. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेति—एवं खलु पाणातिवाए, मुसावाए जाव^१ मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया । पाणाइयावेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव^२ मिच्छादसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया । उप्पत्तियाए^३ *वेणइयाए कम्मयाए^४ पारिणामियाए वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया । ओग्गहे, ईहा-अवाए धारणाए वट्टमाणस्स^५ *अण्णे जीवे, अण्णे^६ जीवाया । उट्ठाणे^७ *कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार^८ *परक्कमे वट्टमाणस्स^९ *अण्णे जीवे, अण्णे^{१०} जीवाया । नेरइयत्ते तिरिक्ख-मणुस्स-देवत्ते वट्टमाणस्स^{११} *अण्णे जीवे, अण्णे^{१२} जीवाया । नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणस्स^{१३} *अण्णे जीवे, अण्णे^{१४} जीवाया । एवं कण्हलेस्साए जाव सुवकलेस्साए, सम्मदिट्ठीए मिच्छदिट्ठीए सम्मामिच्छदिट्ठीए, एव चक्खुदसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिवोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे, मत्तिअण्णाणे सुयअण्णाणे विभंगनाणे, आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए, एवं ओरालियसरीरे वेजन्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, एवं मणजोगे बइजोगे कायजोगे सागारोवओगे, अणागारोवओगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया ॥

३१. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया ॥

रूवि-अरूवि-पदं

३२. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव^१ महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूवि^२ विउन्वित्ता ण चिट्ठित्तए ? नो इण्ठे समट्ठे ॥

१. भ० १।३८४ ।

२. भ० १।३८५ ।

३. सं० पा०—उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए ।

४. सं० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया ।

५. सं० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे ।

६. ७. सं० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया ।

७. भ० १।३९६ ।

८. रूपातीतमभूतंमात्मानमिति गम्यते (वृ) ।

३३. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं^१ •महिद्धिइ जाव महेसक्खे पुव्वामेव
रूवी भवित्ता^० नो पभू अरूवि विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं
अभिसमण्णागच्छामि^२, 'मए एयं' नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं
अभिसमण्णागयं—जण्णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स, सकम्मस्स, सरागस्स,
सवेदस्स^३, समोहस्स, सलेसस्स, ससरीरस्स, ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स
एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा,
दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा ।
से तेणट्टेणं गोयमा^४ ! •एवं वुच्चइ—देवे णं महिद्धिइ जाव महेसक्खे पुव्वामेव
रूवी भवित्ता नो पभू अरूवि विउव्वित्ता णं^० चिट्ठित्तए ॥
३४. सच्चेव णं भंते ! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूवि विउव्वित्ता णं
चिट्ठित्तए ?
नो इणट्टे समट्ठे^५ ॥
३५. •से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता
नो पभू रूवि विउव्वित्ता णं^० चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि^६, •अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं
अभिसमण्णागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं
अभिसमण्णागयं^०—जण्णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स,
अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स, ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स नो
एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा •जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा,
दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव^० लुक्खत्ते
वा । से तेणट्टेणं •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी
भवित्ता नो पभू रूवि विउव्वित्ता णं^० चिट्ठित्तए ॥
३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति^७ ॥

१. सं० पा०—णं जाव नो ।

२. अभिसमागच्छामि (अ, क, ख, ता, ब, म,
वृ) ।

३. मएतं (ता) सर्वत्र ।

४. सवेदणस्स (ता, स) ।

५. सं० पा०—गोयमा जाव चिट्ठित्तए ।

६. सं० पा०—समट्ठे जाव चिट्ठित्तए ।

७. सं० पा०—जाणामि जाव जण्णं ।

८. सं० पा०—कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते ।

९. सं० पा०—तेणट्टेणं जाव चिट्ठित्तए ।

१०. अ० १।५१ ।

तइओ उहेसो

एयणा-पदं

३७. सेलेसि पडिवन्तए णं भते ! अणगारे सया समियं एयति वेयति* •चलति फंदइ वट्टइ खुब्भइ उदीरइ° त त भाव परिणमति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, णणत्थेगेण परप्पयोगेण ॥
३८. कतिविहा णं भंते ! एयणा^१ पणत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पणत्ता, तं जहा—दब्बेयणा, खेत्येयणा, कालेयणा, 'भवे-
यणा, भावेयणा'^२ ॥
३९. दब्बेयणा णं भते ! कतिविहा पणत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पणत्ता, त जहा—नेरइयदब्बेयणा, तिरिक्खजोणियदब्बे-
यणा, मणुस्सदब्बेयणा, देवदब्बेयणा ॥
४०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदब्बेयणा-नेरइयदब्बेयणा ?
गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदब्बे वट्टिसु वा, वट्टति वा, वट्टिस्सति वा ते णं
तत्थ नेरइया नेरइयदब्बे वट्टमाणा नेरइयदब्बेयण एइसु^३ वा, एयंति वा, एइस्सति
वा । से तेणट्ठेण जाव नेरइयदब्बेयणा ।
से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—तिरिक्खजोणियदब्बेयणा-तिरिक्खजोणियदब्बे-
यणा ?
*गोयमा ! जण्णं तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदब्बे वट्टिसु वा, वट्टति वा,
वट्टिस्सति वा ते णं तत्थ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदब्बे वट्टमाणा
तिरिक्खजोणियदब्बेयण एइसु वा, एयति वा, एइस्सति वा । से तेणट्ठेण जाव
तिरिक्खजोणियदब्बेयणा ।
से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सदब्बेयणा-मणुस्सदब्बेयणा ?
गोयमा ! जण्ण मणुस्सा मणुस्सदब्बे वट्टिसु वा, वट्टति वा, वट्टिस्सति वा ते णं
तत्थ मणुस्सा मणुस्सदब्बे वट्टमाणा मणुस्सदब्बेयण एइसु वा, एयंति वा,
एइस्सति वा । से तेणट्ठेण जाव मणुस्सदब्बेयणा ।
से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—देवदब्बेयणा-देवदब्बेयणा ?
गोयमा ! जण्णं देवा देवदब्बे वट्टिसु वा, वट्टति वा, वट्टिस्सति वा ते णं तत्थ
देवा देवदब्बे वट्टमाणा देवदब्बेयण एइसु वा, एयति वा, एइस्सति वा । से
तेणट्ठेण जाव° देवदब्बेयणा ॥

१. स० पा०—वेयति जाव त ।

२. एतणा (ता, व) ।

३. भावेयणा, भवेयणा (म) ।

४. एयंसु (अ, व, म) ।

५. स० पा०—एवं चेव, नवरं—तिरिक्ख-
जोणियदब्बे भाणियन्वं, सेसं तं चेव, एवं
जाव देवदब्बेयणा ।

४१. खेत्तेयणा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयखेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा ॥
४२. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—नेरइयखेत्तेयणा-नेरइयखेत्तेयणा ?
 एवं चेव, नवरं—नेरइयखेत्तेयणा भाणियव्वा, एवं जाव देवखेत्तेयणा । एवं कालेयणा वि, एवं भवेयणा वि, एवं भावेयणा वि, एव जाव देवभावेयणा ॥

चलणा-पदं

४३. कतिविहा णं भते ! चलणा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! तिबिहा चलणा पण्णत्ता, तं जहा—सरीरचलणा, इंदियचलणा, जोगचलणा ॥
४४. सरीरचलणा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरचलणा जाव कम्मग-सरीरचलणा ॥
४५. इंदियचलणा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियचलणा जाव फासिंदियचलणा ॥
४६. जोगचलणा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! तिबिहा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगचलणा, वइजोगचलणा, कायजोग-चलणा ॥
४७. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—ओरालियसरीरचलणा-ओरालियसरीर-चलणा ?
 गोयमा ! जण्णं जीवा ओरालियसरीरे वट्टमाणा ओरालियसरीरपायोगाईं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए परिणामेमाणा ओरालियसरीरचलणं चलिं सु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा । से तेणट्ठेणं जाव ओरालियसरीरचलणा ।
 से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—वेउव्वियसरीरचलणा-वेउव्वियसरीरचलणा ?
 एवं चेव, नवर वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा । एवं जाव कम्मगसरीरचलणा ।
 से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सोइंदियचलणा—सोइंदियचलणा ?
 गोयमा ! जण्णं जीवा सोइंदिये वट्टमाणा सोइंदियपायोगाईं दव्वाइं सोइंदियत्ताए परिणामेमाणा सोइंदियचलणं चलिं सु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा । से तेणट्ठेणं जाव सोइंदियचलणा । एवं जाव फासिंदियचलणा ।
 से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—मणजोगचलणा-मणजोगचलणा ?
 गोयमा ! जण्णं जीवा मणजोगे वट्टमाणा मणजोगपाओग्गाईं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणा मणजोगचलणं चलिं सु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा । से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा । एवं वइजोगचलणा वि । एवं कायजोगचलणा वि ॥

संवेगादि-पदं

४८. अह भते ! सवेगे, निव्वेए, गुरूसाहम्मियसुस्सुसणया, आलोयणया, निंदणया, गरहणया, खमावणया^१, 'विउसमणया'^२, सुयसहायता^३ भावे अप्पडिवद्धया, विणिवट्टणया, विवित्तसयणासणसेवणया, सोइदियसवरे जाव फासिंदियसंवरे, जोगपच्चक्खाणे, सरीरपच्चक्खाणे, कसायपच्चक्खाणे, संभोगपच्चक्खाणे, उव-हिपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणे, खमा, विरागया, भावसच्चे, जोगसच्चे, करण-सच्चे, मणसमन्नाहरणया^४, वइसमन्नाहरणया, कायसमन्नाहरणया, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, नाणसंपन्नया, दसणसंपन्नया, चरित्तसंपन्नया, वेदणअहियासणया, मारणत्तियअहियासणया—एए णं^५ किपज्जवसाणफला पणत्ता समणाउसो !

गोयमा ! सवेगे, निव्वेए जाव मारणत्तियअहियासणया एए णं सिद्धिपज्जव-साणफला पणत्ता समणाउसो !

४९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति जाव^६ विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

५०. तेण कालेणं तेण समएणं रायगिहे नगरे जाव^७ एवं वयासी—अत्थि णं भते ! जीवाण पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ?

हत्ता अत्थि ॥

५१. सा भते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?

गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ “जाव^८ निव्वाधाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिंसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

५२. सा भते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?

गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

१. खमासणया (अ); खमायणया (क, ख, ता, ५. णं भते पदा (अ, क) ।

व, म, वृ) ।

६. भ० १।५१ ।

२. एतत्तं न ववचिद् न दृश्यते (वृ) ।

७. भ० १।४-१० ।

३. सुयसहायता विभोसरणता (ता); गुरूसाह-
यया विउसमणया (व) ।

८. सं० था०—एव जहा पढमसए छद्दुद्देसए
जाव नो ।

४. मणसमाधा (हा) रणया (उत्त० २६।१) ।

९. भ० १।२५६-२६६ ।

५३. सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥
५४. सा भंते ! किं आणुपुर्व्वि कडा कज्जइ ? अणानुपुर्व्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा आणुपुर्व्वि कडा कज्जइ, नो अणानुपुर्व्वि कडा कज्जइ । जा य कडा
कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुर्व्वि कडा °, नो अणानुपुर्व्वि कडा
ति वत्तव्वं सिया । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जीवाण एगिदियाण य
निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चरदिसि, सिय पंच-
दिसि । सेसाणं नियमं छद्दिसि ॥
५५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥
५६. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
जहा पाणाइवाएण दंडओ एवं मुसावाएण वि । एवं अदिन्नादाणेण वि, मेहुणेण^१
वि, परिग्गहेण वि । एवं एते पंच दंडगा ॥
५७. जं समयं णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा
कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव जाव^२ वत्तव्वं सिया जाव वेमाणियाणं ।
एवं जाव परिग्गहेण । एवं एते वि पंच दंडगा ॥
५८. ज देसं णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? एव चेव जाव
परिग्गहेणं । एते वि पंच दंडगा ॥
५९. जं पएसं णं भंते ! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा
कज्जइ ? एवं तहेव दंडओ । एवं जाव परिग्गहेणं । एवं एते वीसं दंडगा ॥

दुक्ख-वेदना-पदं

६०. जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे ? परकडे दुक्खे ? तदुभयकडे दुक्खे ?
गोयमा ! अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे दुक्खे, नो तदुभयकडे दुक्खे । एवं जाव
वेमाणियाणं ॥
६१. जीवा णं भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेति ? परकडं दुक्खं वेदेति ? तदुभयकडं
दुक्खं वेदेति ?
गोयमा ! अत्तकडं दुक्खं वेदेति, नो परकडं दुक्खं वेदेति, नो तदुभयकडं दुक्खं
वेदेति । एवं जाव वेमाणियाणं ॥
६२. जीवाणं भंते ! किं अत्तकडा वेयणा ? परकडा वेयणा ? ^{१०}तदुभयकडा
वेयणा ° ?

१. मेहुणेण (व) ।

३. सं० पा०—पुच्छा ।

२. १७।५१-५४ ।

गोयमा ! अत्तकडा वेयणा, नो परकडा वेयणा, नो तदुभयकडा वेयणा । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६३. जीवा ण भते ! किं अत्तकडं वेयणं वेदेति ? परकडं वेयणं वेदेति ? तदुभयकडं वेयणं वेदेति ?

गोयमा ! जीवा अत्तकडं वेयणं वेदेति, नो परकडं वेयणं वेदेति, नो तदुभयकडं वेयणं वेदेति । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६४. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति' ॥

पंचमो उद्देशो

ईसाण-पदं

६५. कहिं ण भते ! ईसाणस्स देविदस्स देवरणो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?

गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्डं चदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारा-रूवाण जहा ठाणप्रदे जाव' मज्जे ईसाणवडेसए । से ण ईसाणवडेसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइ—एवं जहा दसमसए सक्कविमाणवत्तव्वया सा इह वि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियव्वा जाव' आयरक्ख त्ति । ठिती सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ, सेस तं चेव जाव' ईसाणे देविदे देवराया, ईसाणे देविदे देवराया ॥

६६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति' ॥

छट्टो उद्देशो

पुढविकाइयादीणं देस-सव्व-मारणंतियसमुग्घाय-पदं

६७. पुढविकाइए णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! किं पुण्वि

१. म० ११५१ ।

२. प० २ ।

३. म० १०१६६ ।

४. म० १०१०० ।

५. म० ११५१ ।

उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? पुंवि संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुंवि वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुंवि वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६८. से केणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! पुढविकाइयाणं तओ समुग्घाया पणत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए । मारणंतियसमुग्घाएण समोहणमाणे देसेण वा समोहणति, सव्वेण वा समोहणति, देसेण वा समोहणमाणे पुंवि संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, सव्वेणं समोहणमाणे पुंवि उववज्जेज्जा पच्छा संपाउणेज्जा । से तेणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६९. पुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए^१ समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविकाइयत्ताए^० ? एवं चेव ईसाणे वि । एवं जाव अच्चुय-गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणे, ईसिपब्भाराए य एवं चेव ॥

७०. पुढविकाइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए^० ? एवं जहा रयणप्पभाए पुढविकाइओ उववाइओ एवं सक्करप्पभाए वि पुढविकाइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए । एव जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एवं जाव अहेसत्तमाए समोहए ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ॥

७१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति^१ ॥

सत्तमो उद्देशो

७२. पुढविकाइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्ताए, से ण भंते ! कि पुंवि उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? सेस तं चेव ? जहा रयणप्पभाए पुढविकाइए सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए ताव उववाइओ, एवं सोहम्मपुढविकाइओ वि सत्तसु वि पुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए । एवं जहा सोहम्मपुढविकाइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिपब्भारापुढविकाइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए ॥

७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति^१ ॥

१. पुढवीए जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । ३. भ० १।५१ ।

२. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देशो

७४. आउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुढविक्काइओ तहा आउक्काइओ वि सव्वकप्पेसु जाव ईसिपन्भाराए तहेव उववाएयव्वो । एवं जहा रयणप्पभआउक्काइओ उववाइओ तहा जाव अहेसत्तम-आउक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपन्भाराए ॥
७५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ॥

नवमो उद्देशो

७६. आउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेसं तं चेव, एव जाव अहेसत्तमाए । जहा सोहम्मआउक्काइओ एवं जाव ईसिपन्भाराआउक्काइओ जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ॥
७७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ॥

दसमो उद्देशो

७८. वाउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? जहा पुढविक्काइओ तहा वाउक्काइओ वि, नवरं—वाउक्काइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणा-समुग्घाए जाव' वेउव्वियसमुग्घाए । मारणतियसमुग्घाए णं समोहणमाणे देसेण वा समोहणइ, सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए समोहओ ईसिपन्भाराए उववाएयव्वो ॥
७९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ॥

इक्कारसमो उद्देसो

८०. वाउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे
 । रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए, तणुवाए, घणवायवलएसु, तणुवायवलएसु वाउ-
 क्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेस त चेव । एव जहा सोहम्मे
 वाउक्काइओ सत्तसु वि पुढवीसु उववाइओ एवं जाव ईसिपम्भारावाउक्काइओ
 अहेसत्तमाए जाव उववाएयव्वो ॥
८१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ॥

बारसमो उद्देसो

एगिदिय-पदं

८२. एगिदिया णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा पढमसए वितियउद्देसए
 पुढविककाइयाणं वत्तव्वया भणिया सा चेव एगिदियाणं इह भाणियव्वा जाव'
 समाउया, समोववन्नगा ॥
८३. एगिदियाणं भंते ! कति लेस्साओ पणत्ताओ ?
 गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पणत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा' • नीललेस्सा
 काउलेस्सा० तेउलेस्सा ॥
८४. एएसि णं भंते ! एगिदियाणं कण्हलेस्साणं' • नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउले-
 स्साणं य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?०
 विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणत्तगुणा, नीललेस्सा
 विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥
८५. एएसि णं भंते ! एगिदियाणं कण्हलेसाणं इड्ढी० ? जहेव' दीवकुमाराणं ॥
८६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' ॥

१. भ० १।५१ ।

२. भ० १।७६-८१ ।

३. सं० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।

४. सं० पा०—कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया ।

५. भ० १।६।१२८ ।

६. भ० १।५१ ।

१३-१७ उद्देशा

नागकुमारादि-पदं

८७. नागकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसे
तहेव निरवसेसं भाणियव्व जाव^१ इड्ढी ॥
८८. सेवं भते ! सेवं भते ! जाव^२ विहरइ ॥
८९. सुवण्णकुमारा णं भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ॥
९०. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^३ ॥
९१. विज्जुकुमारा णं भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ॥
९२. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति^४ ॥
९३. वायुकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥
९४. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति^५ ॥
९५. अग्गिकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ॥
९६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति^६ ॥

१. म० १६।१२५-१२८ ।

२. म० १।५१ ।

३. म० १।५१ ।

४. म० १।५१ ।

५. म० १।५१ ।

६. म० १।५१ ।

अट्ठारसमं सतं

पढमे उद्देशो

१. पढमे^१ २. विसाह ३. मायंदि ४. य ५. पाणाइवाय ६. असुरे य ।
६. गुल ७. केवलि ८. अणगारे, ९. भविए तह १०. सोमिलट्टारसे^२ ॥१॥

पढम-अपढम-पद

१. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव^३ एव वयासी—जीवे णं भते ! जीव-
भावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एव नेरइए जाव वेमाणिए ॥
२. सिद्धे ण भते ! सिद्धभावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे ॥
३. जीवा णं भते ! जीवभावेण कि पढमा ? अपढमा ?
गोयमा ! नो पढमा, अपढमा । एवं जाव वेमाणिया ॥
४. सिद्धा णं—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा, नो अपढमा ॥
५. आहारए णं भते ! जीवे आहारभावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एव जाव वेमाणिए । पोहत्तिए एवं चेव ॥
६. अणाहारए णं भते ! जीवे अणाहारभावेण—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे ॥
७. नेरइए णं भते ! जीवे अणाहारभावेण—पुच्छा । एवं नेरइए जाव वेमाणिए
नो पढमे, अपढमे । सिद्धे पढमे, नो अपढमे ॥

१. पढमा (अ, क, ख, ता, ब, म) ।

‘अ’ प्रतावपि एषा गाथा लभ्यते ।

२. उद्देशकद्वारसग्रहणी चैयं गाथा क्वचिद्दृश्यते— ३. भ० १।४-१० ।

जीवाहारग भवसन्निवेशादिद्वीय सजयकसाए ।

णाणे जोगुवओगे, तेए य सरीरपज्जत्ती ॥ (वृ);

- ८ अणाहारगा णं भते ! जीवा अणाहारभावेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा वि, अपढमा वि । नेरइया जाव वेमाणिया नो पढमा,
अपढमा । सिद्धा पढमा, नो अपढमा—एक्केक्के पुच्छा भाणियक्वा ॥
९. भवसिद्धीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, एवं अभवसिद्धीए वि । नोभवसिद्धीय-
नोअभवसिद्धीए ण भते ! जीवे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए ण भते ! सिद्धे
नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा । एवं पुहत्तेण वि दोण्ह वि ॥
- १० सण्णी ण भते ! जीवे सण्णीभावेण कि पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एव विगलियवज्जं जाव वेमाणिए । एवं
पुहत्तेण वि । असण्णी एव चेव एगत्त-पुहत्तेणं, नवर जाव वाणमंतर । नोसण्णी-
नोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, नो अपढमे । एवं पुहत्तेण वि ।
- ११ सलेसे ण भते ! — पुच्छा ।
गोयमा ! जहा आहारए, एव पुहत्तेण वि । कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं
चेव, नवर—जस्स जा लेसा अत्थि । अलेसे ण जीव-मणुस्स-सिद्धे जहा
नोसण्णी-नो असण्णी ॥
१२. सम्मदिट्ठीए णं भते ! जीवे सम्मदिट्ठीभावेणं कि पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं एगिदियवज्जं जाव वेमाणिए । सिद्धे
पढमे, नो अपढमे । पुहत्तिया जीवा पढमा वि, अपढमा वि । एवं जाव
वेमाणिया । सिद्धा पढमा, नो अपढमा । मिच्छादिट्ठीए एगत्त-पुहत्तेण जहा
आहारगा । सम्मामिच्छदिट्ठी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, नवरं—जस्स
अत्थि सम्मामिच्छत्तं ॥
१३. सजए जीवे मणुस्से य एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । असजए जहा आहारए ।
सजयासजए जीवे पच्चिदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा एगत्त-पुहत्तेण जहा
सम्मदिट्ठी । नोसजए नो अस्सजए नोसजयासजए जीवे सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं
पढमे, नो अपढमे ॥
- १४ सकसायी, कोहकसायी जाव लोभकसायी—एए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए ।
अकसायी जीवे सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं मणुस्से वि । सिद्धे पढमे, नो
अपढमे । पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा वि पढमा वि अपढमा वि । सिद्धा पढमा,
नो अपढमा ॥
१५. नाणी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । आभिणिवोहियनाणी जाव मणपज्जव-
नाणी एगत्त-पुहत्तेणं एव चेव, नवरं—जस्स ज अत्थि । केवलनाणी जीवे
मणुस्से सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा । अण्णाणी, मइअण्णाणी,
सुयअण्णाणी, विअण्णाणी य एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए ॥

१६. सजोगी, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं—
जस्स जो जोगो अत्थि । अजोगी जीव मणुस्स-सिद्धा एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो
अपढमा ॥
१७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्त-पुहत्तेणं जहा अणाहारए ॥
१८. सवेदगो जाव नपुंसगवेदगो एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं—जस्स जो वेदो
अत्थि । अवेदओ एगत्त-पुहत्तेणं तिसु वि पदेसु जहा अकसायी ॥
१९. ससरीरी जहा आहारए, एव जाव कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं, नवरं—
आहारगसरीरी^१ एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । असरीरी जीवो सिद्धो य
एगत्त-पुहत्तेणं 'पढमो, नो अपढमो'^२ ॥
२०. पंचहि पज्जत्तीहि पचहि अपज्जत्तीहि एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं—
जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा । इमा लक्खणगाहा—
जो जेण पत्तपुव्वो, भावो सो तेण अपढमओ होइ ।
सेसेसु होइ पढमो, अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥१॥

चरिम-अचरिम-पदं

२१. जीवे णं भंते ! जीवभावेणं किं चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! नो चरिमे, अचरिमे ॥
२३. नेरइए णं भंते ! नेरइयभावेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय चरिमे, सिय अचरिमे । एवं जाव वेमाणिए । सिद्धे जहा
जीवे ॥
२३. जीवा णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो चरिमा, अचरिमा । नेरइया चरिमा वि, अचरिमा वि । एवं जाव
वेमाणिया । सिद्धा जहा जीवा ॥
२४. आहारए सव्वत्थ एगत्तेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे; पुहत्तेणं चरिमा वि,
अचरिमा वि । अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगत्तेणं वि पुहत्तेणं वि 'नो चरिमो,
अचरिमो'^३ । सेसट्ठाणेषु एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारओ ॥
२५. भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्त-पुहत्तेणं चरिमे, नो अचरिमे । सेसट्ठाणेषु जहा
आहारओ । अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं नो चरिमे, अचरिमे ।
नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयजीवा सिद्धा य एगत्त-पुहत्तेणं जहा
अभवसिद्धीओ ॥

१. आहारासरीरी (क, ख, ता) ।

३. नो चरिमा अचरिमा (क, ख, ता, व, म) ।

२. पढमा नो अपढमा (अ, क, ख, ता, व, म) ।

- २६ सण्णी जहा आहारओ, एवं असण्णी वि । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमे, मणुस्सपदे चरिमे एगत्त-पुहुत्तेण ॥
२७. सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ, नवर—जस्स जा अत्थि । अलेस्सो जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ॥
२८. सम्मदिट्ठी जहा अणाहारओ । मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ । सम्मामिच्छदिट्ठी एगिदिय-विगलियवज्ज सिय चरिमे, सिय अचरिमे । पुहुत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि ॥
- २९ संजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ । अस्संजओ वि तहेव । सजयासंजए वि तहेव, नवरं—जस्स ज अत्थि । नोसजय-नोअसजय-नोसजयासजओ जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ॥
३०. सकसायी जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेषु जहा आहारओ । अकसायी जीवपदे सिद्धे य नो चरिमे, अचरिमे । मणुस्सपदे सिय चरिमे, सिय अचरिमे ॥
३१. नाणी जहा सम्मदिट्ठी सव्वत्थ । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी जहा आहारओ, नवर—जस्स ज अत्थि । केवलनाणी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी । अण्णाणी जाव विभगनाणी जहा आहारओ ॥
३२. सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ, जस्स जो जोगो अत्थि । अजोगी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ॥
३३. सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ ॥
३४. सवेदओ जाव नपुसगवेदओ जहा आहारओ । अवेदओ जहा अकसायी ॥
३५. ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ, नवर—जस्स ज अत्थि । असरीरी जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ॥
३६. पचहि पज्जत्तीहि पचहि अपज्जत्तीहि जहा आहारओ, सव्वत्थ एगत्त-पुहुत्तेणं दंडगा भाणियव्वा । इमा लक्खणगाहा—
जो ज पाविहिति पुणो, भाव सो तेण अचरिमो होइ ।
अच्चतविओगो जस्स, जेण भावेण सो चरिमो ॥१॥
३७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

सक्कस्स कत्तिथ-सेट्टिनाम-पुव्वभव-पदं

३८. तेण कालेणं तेणं समएणं विसाहा नाम नगरी होत्था—वण्णओ^१ । बहुपुत्तिए चेइए—वण्णओ^२ । सामी समोसढे जाव^३ पज्जुवासइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे—एवं जहा सोलसमसए वितियउद्देसए तहेव दिव्वेण जाणविमाणेणं आगओ, नवरं—एत्थं आभियोगा वि अत्थि जाव^४ बत्तीसतिविह नट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगए ॥

३९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं^५ *वदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता^६ एवं वयासी—जहा तइयसए ईसाणस्स तहेव कूडागारदिट्ठतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा जाव^७ अभिसमन्नागए ?

४०. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जंबुदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ^८ । सहसंबवणे^९ उज्जाणे—वण्णओ^{१०} । तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नाम सेट्ठी परिवसति अइढे जाव^{११} बहुजणस्स अपरिभूए, नेगमपढमासणिए, नेगमट्टसहस्सस्स वहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुवेसु य^{१२} *मतेसु य रहस्सेसु य गुज्जेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाण आहारे आलंबणं चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलबणभूए^{१३} चक्खुभूए, नेगमट्टसहस्सस्स सयस्स य कुडुबस्स आहेवच्च^{१४} *पोरेवच्च सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं^{१५} कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे जाव^{१६} अहापरिग्गहिएहि तवोक्कम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएण मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव जाव समोसढे जाव^{१७} परिसा पज्जुवासइ ॥

४२. तए णं से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धे समणे हट्टुट्टे एव जहा एक्कारसमसए सुदसणे तहेव निग्गओ जाव^{१८} पज्जुवासति ॥

१. ओ० सू० १ ।

२. ओ० सू० २-१३ ।

३. ओ० सू० २२-५२ ।

४. भ० १६।३३; ३।२७ ।

५. सं० पा०—महावीरं जाव एव ।

६. भ० ३।२८-३० ।

७. ओ० सू० १ ।

८. सहस्संबवणे (स) ।

९. भ० ११।५७ ।

१०. भ० २।६४ ।

११. सं० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए ।

१२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव कारेमाणे ।

१३. भ० २।६४ ।

१४. भ० १६।६७, ६८ ।

१५. भ० ११।११६ ।

४३. तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स ^{१०}तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ^० जाव^१ परिसा पडिगया ॥

४४. तए ण से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स^१ *अरहओ अतियं धम्मं सोच्चा^० निसम्म हट्ठुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठत्ता मुणिसुव्वय^२ *अरह वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता^० एव वयासी—एवमेयं भते । जाव^३—से जहेयं तुब्भे वदह ज, नवर—देवाणुप्पिया ! नेगमट्ठसहस्स आपुच्छामि, जेट्ठुत्त च कुडुबे ठावेमि, तए णं अह देवाणुप्पियाणं अतियं पव्वयामि ।
अहासुह देवाणुप्पिया^४ ! मा पडिबधं ॥

४५. तए ण से कत्तिए सेट्ठी जाव^५ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गेहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए । तए णं अह देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गे जाव^६ पव्वयामि, त तुब्भे णं देवाणुप्पिया । किं करेह, किं ववसह, किं^७ भे हियइच्छिए, किं^८ भे सामत्थे ?

४६. तए ण त नेगमट्ठसहस्स पि^९ कत्तिय, सेट्ठि एव वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा जाव पव्वयह^{१०}, अम्ह देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलबे वा, आहारे वा, पडिबधे वा ? अम्हे वि ण देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पिएहि सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियं मूढा भवित्ता अगाराओ अणगारिय^{११} पव्वयामो^{१२} ॥

४७. तए ण से कत्तिए सेट्ठी तं नेगमट्ठसहस्स एव वयासी—जदि णं देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मए सद्धिं मुणिसुव्वयस्स^{१३} *अरहओ अतियं मुढा भवित्ता अगाराओ अणगारिय^{१४} पव्वयह, त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु गिहेसु, विपुलं असणं^{१५} *पाण खाइमं साइमं^{१६} उवक्खडावेह,

१. स० पा०—धम्मकहा ।

११ तं (ख) ।

२. ओ० सू० ७१-७६ ।

१२. पव्वाति (अ), पव्वादि (क, ख, ता, व),

३. स० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव निसम्म ।

पव्वादि (म); पव्वाहिति (स) । नायाधम्म-

४. स० पा०—मुणिसुव्वय जाव एवं ।

कहाओ (५।६०) सूत्रानुसारेण एतत् क्रिया-

५. भ० २।५२ ।

पद स्वीकृतम् ।

६. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

१३. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

७. भ० १६।७१ ।

१४. पव्वाओ (अ, ख, ता, व, म) ।

८. भ० १८।४६ ।

१५. स० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव पव्वयह ।

९. के (क, ख, ता, व, म) ।

१६. स० पा०—असणं जाव उवक्खडावेह ।

१०. के (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं आभतेह, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालं-कारेण य सक्कारेह सम्माणेह, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ^० जेट्ठपुत्ते कुडुवे ठावेह, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं^० जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ द्रुहह, द्रुहित्ता मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि^०-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव^१ दुदुहि-निग्घोसनादियरवेण अकालपरिहीणं चैव मम अतिय पाउब्भवह ॥

४८. तए णं तं नेगमट्टसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेता जेणेव साइ-साइं गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुल असणं^१ •पाणं खाइमं साइमं^० उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालं-कारेण य सक्कारेह सम्माणेह^०, तस्सेव मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स^० पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुवे ठावेति, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं^० जेट्ठपुत्ते य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्स-वाहिणीओ सीयाओ द्रुहति, द्रुहित्ता मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि^० परिजणेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव^१ दुदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीणं चैव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अतिय पाउब्भवति ॥

४९. तए णं से कत्तिए सेट्ठी विपुल असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति जहा गंगदत्तो जाव^१ सीयं द्रुहति, द्रुहित्ता मित्त-नाइ^१-•नियग-सयण-संबंधि^०-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेणं नेगमट्टसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव^१ दुदुहि-निग्घोसनादियरवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झमज्झेणं निगच्छइ, जहा गंगदत्तो जाव^१ आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जाव^१ आणुगामियत्ताए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंते ! नेगमट्ट-सहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वावियं जाव^१ धम्ममाइक्खिय ॥

१. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
२. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
३. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं ।
४. भ० ११८२ ।
५. सं० पा०—असणं जाव उवक्खडावेति ।
६. सं० पा०—नाइ जाव तस्सेव ।
७. सं० पा०—नाइ जाव पुरओ ।
८. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।

९. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
१०. भ० ११८२ ;
११. भ० १६७१ ।
१२. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
१३. भ० ११८२ ।
१४. भ० १६७१; १२१४ ।
१५. भ० १२१४ ।
१६. भ० २१५२ ।

५०. तए ण मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं नेगमट्टसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेति जाव' धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एवं चिट्ठियव्वं जाव' संजमियव्व ॥
५१. तए णं से कत्तिए सेट्ठो नेगमट्टसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मिय उव्वदेसं सम्म पडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छति जाव' सजमेति ॥
५२. तए ण से कत्तिए सेट्ठो नेगमट्टसहस्सेण सद्धिं अणगारे जाए—ईरियासमिए जाव' गुत्तवभयारी ॥
५३. तए ण से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाण थेराण अत्तियं सामाइयमाइयाइ चोदस पुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहि चउत्थ छट्ठट्टम'-
 *दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोक्कम्मेहि° अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण भोसेइ, भोसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय'-*पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे° काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि° *देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए° सक्के देविदत्ताए उववन्ने ॥
५४. तए ण से सक्के देविदे देवराया अहुणोववण्णमेत्तए सेस जहा गगदत्तस्स जाव' सव्वदुक्खाणं अत काहिति, नवरं— ठिती दो सागरोवमाइ, सेस तं चेव ॥
५५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति' ॥

तइओ उद्देसो

सागंदियपुत्त-पदं

५६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे होत्था—वण्णओ । गुणसिलए चेइए—
 वण्णओ जाव' परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं ससणस्स भगवओ

१. भ० २।५३ ।

२. भ० २।५३ ।

३. भ० २।५४ ।

४. भ० २।५५ ।

५. सं० पा०—छट्ठम जाव अप्पाण ।

६. सं० पा०—आलोइय जाव कालं ।

७. सं० पा०—देवसयणिज्जसि जाव सक्के ।

८. भ० १६।७२-७५ ।

९. भ० १।५१ ।

१०. भ० १।२-५ ।

महावीरस्स^१ अंतेवासी मागदियपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए—जहा मडियपुत्ते जाव^२ पज्जुवासमाणे एव वयासी—

५७. से नूण भते ! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहितो पुढविकाइएहितो अणतर उव्वट्ठित्ता माणुस विग्गहं लभति, लभित्ता केवल बोहि बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव^३ सव्वदुक्खाण अत करेति ?

हता मागदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

५८. से नूण भते ! काउलेस्से^४ आउकाइए काउलेस्सेहितो आउकाइएहितो अणतरं उव्वट्ठित्ता माणुस विग्गहं लभति, लभित्ता केवल बोहि बुज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अत करेति ?

हता मागदियपुत्ता ! जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

५९. से नूण भते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए^५ काउलेसेहितो वणस्सइकाइएहितो अणतर उव्वट्ठित्ता माणुस विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहि बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

हता मागदियपुत्ता ! ० जाव सव्वदुक्खाणं अत करेति ॥

६०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति मागदियपुत्ते अणगारे समण भगवं महावीर^६ वंदइ नमसइ, वदित्ता^० नमसित्ता जेणेव समणा निग्गथा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणे निग्गथे एव वयासी—एव खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एव खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अत करेति ॥

६१. तए णं ते समणा निग्गथा मागदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं पख्वेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोएति, एयमट्ठ असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु भते ! मागदियपुत्ते अणगारे अम्ह एवमाइक्खति जाव पख्वेति—एव खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ! एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ॥

६२. से कहमेयं भते ! एवं ?

१. महावीरस्स जाव (स) ।

२. भ० ३।१३४; १।२८८, २८९ ।

३. भ० १।४४ ।

४. काउलेसे (अ, स) ।

५. स० पा०—एव चैव जाव ।

६. स० पा०—महावीर जाव नमसित्ता ।

अज्जोति ! समणे भगव महावीरे ते समणे निग्गये आमत्तित्ता एव वयासी—
जण्ण अज्जो ! मागदियपुत्ते अणगारे तुम्हे एवमाइक्खति जाव पख्वेति—एवं
खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति । एवं खलु
अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति । एव खलु
अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति । सच्चे
ण एसमट्ठे । अहं पि ण अज्जो ! एवमाइक्खामि एवं भासेमि एव पण्णवेमि
एव पख्वेमि—एव खलु अज्जो ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेहितो पुढवि-
काइएहितो जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति । एव खलु अज्जो ! नीललेस्से
पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति । एव काउलेस्से वि । जहा पुढवि-
काइए एव आउकाइए वि, एवं वणस्सइकाइए वि । सच्चे ण एसमट्ठे ॥

६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति समणा निग्गथा समण भगव महावीर वंदति नम-
सति, वदित्ता नमसित्ता जेणेव मागदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवा-
गच्छित्ता मागदियपुत्त अणगार वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठं सम्मं
विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति ॥

६४. तए ण से मागदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महा-
वीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति,
वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

६५. अणगारस्स ण भते ! भावियप्पणो सव्वं कम्म वेदेमाणस्स सव्वं कम्म निज्जरे-
माणस्स सव्वं मार मरमाणस्स सव्वं सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिम कम्म
वेदेमाणस्स चरिम कम्म निज्जरेमाणस्स चरिम मार मरमाणस्स चरिमं सरीर
विप्पजहमाणस्स, मारणतिय कम्म वेदेमाणस्स मारणतिय कम्म निज्जरेमाणस्स
मारणतिय मारं मरमाणस्स मारणतिय सरीर विप्पजहमाणस्स जे चरिमा
निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वं लोग पि
ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ?

हता मागदियपुत्ता ! अणगारस्स ण भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स जाव
जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वं
लोग पि ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ॥

निज्जरापोग्गल-जाणणादि-पदं

६६. छउमत्थे णं भते ! मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाण किंचि आणत्तं वा नाणत्तं
वा 'ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ ?

मागदियपुत्ता ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१. स० पा०—एव जहा इदियउहेसए पढमे
जाव वेमाणिथा, जाव तत्थ ण जे ते उवत्ता

ते जाणति-पासति, आहारंति । से तेणट्ठेणं
निषक्खेवो भाणियव्वो ।

६७. से केणट्टेण भते ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाणं नो किञ्चि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ ?

मागदियपुत्ता ! देवे वि य ण अत्थेगइए जे ण तेसि निज्जरापोग्गलाणं नो किञ्चि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ । से तेणट्टेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाणं नो किञ्चि आणत्तं वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ, सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोग पि य ण ते ओगाहित्ता चिट्ठि ॥

६८. नेरइया णं भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! नेरइया ण ते निज्जरापोग्गले न जाणति न पासति, आहारेति । एवं जाव पञ्चिदियतिरिक्खजोणिया ॥

६९. मणुस्सा ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति । अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति ॥

७०. से केणट्टेण भते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति ? अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य । तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं न जाणति न पासति, आहारेति । तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते ण न जाणति न पासति, आहारेति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते ण जाणति-पासति, आहारेति । से तेणट्टेण मागदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति । अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति । वाणमत-र-जोइसिया जहा नेरइया ॥

७१. वेमाणिया णं भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! जहा मणुस्सा, नवर—वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य । तत्थ णं जे ते मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा ते णं न जाणति न पासति, आहारेति । तत्थ णं जे ते अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरोववन्नगा य परंपरोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते अणतरोववन्नगा ते ण न जाणति न पासति, आहारेति । तत्थ णं जे ते परंपरोववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य । तत्थ ण जे ते अपज्जत्तगा ते णं न जाणति

न पासन्ति, आहारेति । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—
उवउत्ता य, अणुवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न जाणन्ति न
पासन्ति, आहारेति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणन्ति-पासन्ति, आहारेति ।
से तेणद्वेणं मागदियपुत्ता । एवं वृच्चइ—अत्थेगइया न जाणन्ति न पासन्ति,
आहारेति । अत्थेगइया जाणन्ति-पासन्ति, आहारेति ० ॥

बंध-पदं

७२. कतिविहे णं भते ! बंधे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे वधे पण्णत्ते, तं जहा—द्ववबंधे य, भावबंधे य ॥

७३. द्ववबंधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे ! पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

७४. वीससाबंधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससा-
बंधे य ॥

७५. पयोगबंधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धिलबधणबंधे य, धणियबधण-
बंधे य ॥

७६. भावबंधे णं भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य ॥

७७. नेरइयाणं भते ! कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तर-
पगडिबंधे य । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

७८. नाणावरणिज्जस्स णं भते ! कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडि-
बंधे य ॥

७९. नेरइयाणं भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते ?

मागदियपुत्ता ! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तर-
पगडिबंधे य । एवं जाव वेमाणियाणं । जहा नाणावरणिज्जेण ददओ भणियो
एव जाव अंतराइएणं भाणियव्वो ॥

कम्म-नाणत्त-पदं

८०. जीवाणं भते ! पावे कम्मे जे य कडे, *जे य कज्जइ^१ ०, जे य कज्जिस्सइ,
अत्थि याइ तस्स केइ नाणत्ते ?

हंता अत्थि ॥

८१. से केणट्टेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवाणं पावे कम्मे जे य कडे^१, *जे य कज्जइ^२, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स नाणत्तं ?
 मार्गदियपुत्ता ! से जहानामए—केइ पुरिसे घणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता आययकणायतं उसु करेति, करेत्ता उड्डं वेहास उव्विहइ, से नूणं मार्गदियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्डं वेहास उव्वी-
 ढस्स समाणस्स एयति वि नाणत्तं^३, *वेयति वि नाणत्तं, चलति वि नाणत्तं, फंदइ वि नाणत्तं, घट्टइ वि नाणत्तं, खुब्भइ वि नाणत्तं, उदीरइ वि नाणत्तं^४.
 तं तं भावं परिणमति वि नाणत्तं ?
 हुंता भगव ! एयति वि नाणत्तं जाव तं तं भाव परिणमति वि नाणत्तं ।
 से तेणट्टेणं मार्गदियपुत्ता ! एव वुच्चइ - एयति वि नाणत्तं जाव तं तं भावं परिणमति वि नाणत्तं ॥
८२. नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे^५ ? एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाण ॥
८३. नेरइया णं भते ! जे पोगले आहारत्ताए गेण्हति, तेसि ण भते ! पोगलाण सेयकालंसि कतिभाग आहारेति ? कतिभागं निज्जरेति ?
 मार्गदियपुत्ता ! असंखेज्जइभागं आहारेति, अणंतभागं निज्जरेति ॥
८४. चक्किया ण भंते ! केइ तेसु निज्जरापोग्लेसु आसइत्तए वा जाव^६ तुयट्ठित्तए वा ?
 णो इणट्ठे समट्ठे । अणाहारणमेय बूइय समणात्तसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ॥
८५. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति^७ ॥

चउत्थो उद्देशो

जीवाणं परिभोगापरिभोग-पदं

८६. तेणं कालेणं तेणं समएण रायगिहे जाव^८ भगवं गोयमे एवं वयासी—अह भते !
 पाणाइवाए, मुसावाए जाव^९ मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे जाव^{१०}

१. सं० पा०—कडे जाव जे ।

५. भ० ११४-१० ।

२. सं० पा०—नाणत्तं जाव तं ।

६. भ० ११३८४ ।

३. भ० ७१२१९ ।

७. भ० ११३८५ ।

४. ११५७ ।

मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवे असरीरपडिवद्धे, परमाणुपोगले, सेलेसि पडिवन्नए अणगारे, सव्वे य वादरबोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थे-गइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए^१ नो हव्वमागच्छति ॥

८७. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, सव्वे य वादरबोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति । पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसण-सल्लविवेगे, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोगले, सेलेसि पडि-वन्नए अणगारे—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परि-भोगत्ताए नो हव्वमागच्छति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छति ॥

कसाय-पदं

८८. कति ण भंते ! कसाया पणत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि कसाया पणत्ता, त जहा—कसायपद निरवसेस भाणियव्व जाव^१ निज्जरिस्सति लोभेण ॥

जुम्म-पदं

८९. कति ण भंते ! जुम्मा पणत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पणत्ता, त जहा—कडजुम्मे, तेयोगे^१, दावरजुम्मे^२, कलिओगे^३ ॥

९०. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—जाव कलिओगे ?

गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं कडजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं तेयोगे । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं दावरजुम्मे । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं कलिओगे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ जाव कलिओगे ॥

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, य, स) ।

तेयोदे (ता), तेजोगे (य), तियोगे (स) ।

२. प० १४ ।

४. वादरजुम्मे (अ, क); वादरजुण्णे (ता) ।

३. तेयोगे (अ), तेजोगे (क); तेयोदे (ख, व);

५. कलिओगे (ख); कलिओदे (ता) ।

६१. नेरइया णं भंते ! किं कडजुम्मा ? तेयोगा ? दावरजुम्मा ? कलिओगा ?
 गोयमा ! जहणपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहणुक्कोसपदे सियं
 कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । एव जाव थणियकुमारा ॥
६२. वणस्सइकाइया ण—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहणपदे अपदा, उक्कोसपदे य अपदा, अजहणुक्कोसपदे सिय
 कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा ॥
६३. बेदिया' णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहणपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे दावरजुम्मा, अजहणमणुक्कोसपदे
 सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । एवं जाव चउरिदिया । सेसा एगिदिया
 जहा बेदिया । पच्चिदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया । सिद्धा
 जहा वणस्सइकाइया ॥
६४. इत्थीओ णं भंते ! किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहणपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहणमणुक्को-
 सपदे सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलिओगाओ । एवं असुरकुमारित्थीओ वि
 जाव थणियकुमारित्थीओ । एव तिरिक्खजोणित्थीओ, एवं मणुसित्थीओ, एवं
 वाणमततर-जोइसिय-वेमाणियदेवित्थीओ ॥

अंधगवण्हिजीवाणं वर-पर-पदं

६५. जावतिया णं भंते ! वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो
 जीवा ?
 हुता गोयमा ! जावतिया वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधग-
 वण्हिणो जीवा ॥
६६. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देशो

वेउव्वियावेउव्विय-असुरकुमारादि-पदं

६७. दो भते ! असुरकुमारा एगसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए
 उववन्ता, तत्थ ण एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडि-
 रूवे, एगे असुरकुमारे देवे से ण नो पासादीए नो दरिसणिज्जे नो अभिरूवे नो
 पडिरूवे, से कहमेय भंते ! एव ?

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्वियसरीरा य, अवेउव्वियसरीरा य । तत्थ ण जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासादीए जाव पडिख्वे । तत्थ णं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए जाव नो पडिख्वे ॥

६८. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे तं चेव जाव नो पडिख्वे ?

गोयमा ! से जहानामए—इह मणुयलोगसि द्रुवे पुरिसा भवति—एगे पुरिसे अलंकियविभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकियविभूसिए । एएसि ण गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिख्वे, कयरे पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिख्वे । जे वा से पुरिसे अलंकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलंकिय-विभूसिए ?

भगवं ! तत्थ ण जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे पासादीए जाव पडिख्वे । तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से णं पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिख्वे । से तेणट्ठेण जाव नो पडिख्वे ॥

६९. दो भते ! नागकुमारा देवा एगसि नागकुमारावासिं ° ? एवं चेव जाव थणिय-कुमारा । बाणमत्तर-जोतिसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

नेरइयादीणं महाकम्मदि-पदं

१००. दो भते ! नेरइया एगसि नेरइयावासिं नेरइयत्ताए उववन्ता । तत्थ णं एगे नेरइए महाकम्मतराए चेव^१, *महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव °, महावेयणतराए चेव, एगे नेरइए अप्पकम्मतराए चेव^२, *अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव °, अप्पवेयणतराए चेव, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा^३ य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य । तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव । तत्थ णं जे से अमायि-सम्मदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव ॥

१०१. दो भते ! असुरकुमारा ° ? एवं चेव । एवं एगिदिय-विगलियवज्जं जाव वेमाणिया ॥

नेरइयादीणं आउय-पदं

१०२. नेरइए णं भते ! अणंतर उव्वट्ठिता जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कयं आउय पडिसंवेदेति ?

१. सं० पा०—चेव जाव महावेयण ° ।

३. मादिमिच्छ ° (व) ।

२. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण ° ।

गोयमा ! नेरइयाउयं पडिसवेदेति, पंचिदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठति । एवं मणुस्सेसु वि, नवरं—मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठति ॥

१०३. असुरकुमारे णं भंते ! अणंतरं उव्वट्ठित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उव्वज्जित्तए, ^{१०}से णं भंते ! कयरं आउयं पडिसवेदेति ? ०

गोयमा ! असुरकुमाराउयं पडिसवेदेति, पुढविकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठति । एवं जो जहिं भविओ उव्वज्जित्तए तस्स तं पुरओ कडं चिट्ठति, जत्थ ठिओ त पडिसवेदेति जाव वेमाणिए, नवरं—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उव्वज्जति, पुढविकाइयाउयं पडिसवेदेति, अण्णे य से पुढविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठति । एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववाएतव्वो, परट्ठाणे तहेव ॥

असुरकुमारादीणं विउव्वणा-पदं

१०४. दो भंते ! असुरकुमारा एगसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उव्वन्ना । तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ तं तहा विउव्वइ । एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, वक विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, जं जहा इच्छति नो त तहा विउव्वइ, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पणत्ता, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउव्वन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउव्वन्नगा य । तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउव्वन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति वक विउव्वइ जाव नो त तहा विउव्वइ । तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउव्वन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ जाव तं तहा विउव्वइ ॥

१०५. दो भंते ! नागकुमारा० ? एवं चेव । एवं जाव थणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

१०६. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

छट्ठो उद्देशो

नेच्छइय-ववहार-नय-पदं

१०७. फाणियगुले णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पणत्ते ?

गोयमा ! एत्थ णं दो नया भवन्ति, तं जहा—नेच्छइयनए^१ य, वावहारियनए य । वावहारियनयस्स गोड्डे^२ फाणियगुले, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे दुगधे पंचरसे अट्टफासे पण्णत्ते ॥

१०८ भमरे ण भते ! कतिवण्णे^३ कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते^४ ?

गोयमा ! एत्थ णं दो नया भवन्ति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य । वावहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे जाव अट्टफासे पण्णत्ते ॥

१०९ सुयपिच्छे ण भन्ते ! कतिवण्णे कतिगधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?

एव चेव, नवर वावहारियनयस्स नीलए सुयपिच्छे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे^५ जाव अट्टफासे पण्णत्ते^६ । एवं एएण अभिलावेण लोहिया मज्झिया, पीतिया हलिद्दा^७, सुक्किलए संखे, सुब्भिगधे कोट्ठे, दुब्भिगधे मयगसरीरे, तित्ते निंबे, कड्डया सुठी, कसाए^८ कविट्ठे, अवा अंवलिया, महुरे खडे, कक्खडे वड्डरे, मउए नवणीए, गरुए^९ अए, लहुए उलुयपत्ते^{१०}, सीए हिमे, उसिणे^{११} अगणिकाए, णिद्धे तेल्ले ॥

११० छारिया णं भते !—पुच्छा ।

गोयमा ! एत्थ दो नया भवन्ति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य । वावहारियनयस्स लुक्खा छारिया, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णा जाव अट्टफासा पण्णत्ता ॥

परमाणु-खंधाण वण्णादि-पदं

१११ परमाणुपोमले ण भते ! कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, टुफासे पण्णत्ते ॥

११२ दुपएसिए ण भते ! खंधे कतिवण्णे^{१२} जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे सिय दुरसे, सिय टुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११३^{१३} तिपएसिए ण भते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

१. निच्छइय^० (अ, क, व, स) ।

२. गोड्डु (अ); गोडे (स) ।

३. स० पा०—पुच्छा ।

४. स० पा०—सेस त चेव ।

५. हलिद्दा (अ, क, ता, व, म) ।

६. कसाए तुयरए (अ, क, ख, ता, व म) ।

७. गरुए (अ, व) ।

८. लउयपत्ते (ता) ।

९. उसुणे (अ, क, ख, ता, व) ।

१०. स० पा०—पुच्छा ।

११. स० पा०—एव तिपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिबण्णे । एव रसेसु वि, सेस जहा दुपएसियस्स । एवं चउपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे

- गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पणत्ते ॥
११४. चउपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पणत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पणत्ते ॥
११५. पचपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पणत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय पचरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पणत्ते ।°
जहा पंचपएसिओ एवं जाव असखेज्जपएसिओ ॥
११६. सुहुमपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पणत्ते ?
जहा पचपएसिए तहेव निरवसेस ॥
११७. बादरपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे °जाव कतिफासे पणत्ते ? °
गोयमा ! सिय एगवण्णे, जाव सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्टफासे पणत्ते ॥
११८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति° ॥

सत्तमो उद्देशो

केवल-भासा-पदं

११९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव पख्वेति—एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सइ°, एव खलु केवली जक्खाए-सेणं आइट्ठे° समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—मोसं वा, सच्चामोसं वा, से कहमेयं भंते ! एवं ?

जाव सिय चउवण्णे । एवं रसेसु वि, सेसं १. स० पा०—पुच्छा ।

त चेव । एव पंचपएसिए वि, नवर—सिय २. भ० १।५१ ।

एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एवं रसेसु ३. आतिस्सति (स) ।

वि, गधफासा तहेव । ४. आदिट्ठे (ता); आतिठे (स) ।

गोयमा ! जणं ते अण्णउत्थिया जाव^१ जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—नो खलु केवली जक्खाएसेण आइस्सइ, नो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, त जहा—मोस वा, सच्चामोसं वा । केवली णं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासति, त जहा—सच्चं वा, असच्चा-मोस वा ॥

उवहि-पदं

१२०. कतिविहे णं भते ! उवही पण्णत्ते ?

गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, वाहिरभंड-मत्तोवगरणोवही ॥

१२१. नेरइया ण भते !—पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहे उवही पण्णत्ते, त जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य । सेसाण तिविहे उवही एगिदियवज्जाण जाव वेमाणियाणं । एगिदियाण दुविहे उवही पण्णत्ते, त जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य ॥

१२२. कतिविहे णं भते ! उवही पण्णत्ते ?

गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—सच्चित्ते, अचित्ते, मीसाए^१ । एवं नेरइयाण वि । एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥

परिग्गह-पदं

१२३. कतिविहे ण भते ! परिग्गहे पण्णत्ते ?

गोयमा ! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे वाहिरगभंडमत्तोवगरणपरिग्गहे ॥

१२४. नेरइयाण भते ! कतिविहे परिग्गहे पण्णत्ते ? एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहा परिग्गहेण वि दो दंडगा भाणियब्बा ॥

पणिहाण-पदं

१२५. कतिविहे ण भते ! पणिहाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे ॥

१२६. नेरइयाणं भते ! कतिविहे पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

१२७. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।

- गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते । एवं जाव वणस्सइकाइयाण ॥
१२८. बेइंदियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पणिहाणे, पण्णत्ते तं जहा—वइपणिहाणे य, कायपणिहाणे य । एव जाव चउरिदियाण । सेसाणं तिविहे वि जाव वेमाणियाणं ॥
१२९. कतिविहे ण भंते ! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेणं दडगो भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो ॥
१३०. कतिविहे णं भते ! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ॥
१३१. मणुस्साण भंते ! कतिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥
१३२. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति जाव' विहरइ ॥
१३३. तए ण समणे भगवं महावीरे° अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिक्का° वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

कालोदाइ-पभितोणं पंचत्थिकाए संदेह-पदं

१३४. तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे नामं नगरे । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ । तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते बह्वे अण्णउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई, °सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए, सखवालए, सुहत्थी गाहावई ॥
१३५. तए णं तेसि अण्णउत्थियाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुत्तावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोमगलत्थिकायं ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अघम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, पोमगलत्थिकायं । एग च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकाय पण्णवेति ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अघम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवत्थिकायं । एगं च णं

१. भ० १।५१ ।

२. सं० पा०—महावीरे जाव वहिया ।

३. सं० पा०—एव जहा सत्तमसए अण्णउत्थिय-उद्देसए जाव से ।

समणे नायपुत्ते पोम्मलत्थिकाय रूविकाय अजीवकायं पणवेति । ° से कहमेयं मन्ते एव ?

१३६. तत्थ ण रायगिहे नगरे मद्दुए नामं समणोवासए परिवसति—अद्धे जाव बहुजणस्स अपरिभूए, अभिगयजीवाजीवे जाव^१ विहरइ ॥

१३७. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि पुब्बाणुपुत्तिं चरमाणे ° गामाणु-गाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव ° समोसढे परिसा जाव^१ पज्जुवासति ॥

१३८. तए ण मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धे समणे हट्टुट्टु ° चित्तमाणदिए णदिए पीईमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण ° हियए ण्हाए जाव^१ अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पादविहारचारेण रायगिह नगर मज्झमज्झेण^१ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता तेसि अण्णउत्थियाणं अट्टरसामंतेण वीईवयइ ॥

१३९. तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासय अट्टरसामंतेण वीईवयमाणं पासति, पासित्ता अण्णमण्ण सदावेति, सदावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा^१, इम च ण मद्दुए समणोवासए अम्ह अट्टरसामंतेण वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह मद्दुयं समणोवासय एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्ठु अण्णमण्णस्स अतियं एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मद्दुयं समणोवासय एवं वदासी—एव खलु मद्दुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पणवेइ, ° तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोम्मलत्थिकाय । त चेव जाव^१ रूविकाय अजीवकाय पणवेइ । ° से कहमेयं मद्दुया ! एवं ?

मद्दुय-समणोवासएण समाहाण-पदं

१४०. तए ण से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—जत्ति कज्जं कज्जति जाणामो-पासामो, अहे कज्जं न कज्जति न जाणामो न पासामो ॥

१४१. तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी—केस ण तुम मद्दुया ! समणोवासगाणं भवसि, जे णं तुमं एयमट्ठं न जाणसि न पाससि ?

१. भ० २।६४ ।

२. स० पा०—चरमाणे जाव समोसढे ।

३. ओ० सू० २२-५२ ।

४. स० पा०—हट्टुट्टु जाव हियए ।

५. भ० २।६७ ।

६. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

७. अविउप्पकडा (क, व, स, स); अविउप्पडा (ता) ।

८. स० पा०—जहा सत्तमे सए अण्णउत्थि-उद्देशे जाव से ।

९. भ० ७।२१३ ।

१४२. तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—
अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाति ?

हंता अत्थि ।

तुब्भे णं आउसो ! वाउयायस्स वायमाणस्स रुवं पासह ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोगला ?

हंता अत्थि ।

तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाण पोगलाणं रुवं पासह ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ?

हंता अत्थि ।

तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रुवं पासह ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रुवाइं ?

हंता अत्थि ।

तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रुवाइं पासह ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

अत्थि णं आउसो ! देवलोगगयाइं रुवाइं ?

हंता अत्थि ।

तुब्भे णं आउसो ! देवलोगगयाइं रुवाइं पासह ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

एवामेव आउसो ! अहं वा तुब्भे वा अण्णो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ
न पासइ त सव्वं न भवति, एवं भे सुबहुए लोए न भविस्सती ति कट्ठु ते
अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ^१, पडिभणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे
भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं
पंचविहेणं अभिगमेण जाव^२ पज्जुवासति ॥

भगवया मद्दुयस्स पसंसा-पदं

१४३. मद्दुयादी ! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासग एवं वयासी—सुट्ठु णं
मद्दुया ! तुम ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए
एवं वयासी, जे णं मद्दुया ! अट्ठ वा हेउ वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णायं
अदिट्ठं अस्सुत अमुयं अविण्णायं बहुजणमज्जे आघवेति पणवेति^३ पुरूवेति

१. पडिहणति (अ, ख, म, स) ।

३. स० पा०—पणवेति जाव उवदसेति ।

दंसेति निदसेति० उवदसेति, से णं अरहंताणं आसादणाए^१ वट्ठति, अरहंतपण-
त्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्ठति, केवलीणं आसादणाए वट्ठति, केवलपणत्तस्स
धम्मस्स आसादणाए वट्ठति, तं सुट्ठु णं तुमं मदुया ! ते अण्णउत्थिए एवं
वयासी, साहु णं तुमं मदुया^२ ! *ते अण्णउत्थिए० एव वयासी ॥

१४४. तए ण मदुए समणोवासए समणेण भगवया महावीरेण एव वृत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे
समणं भगव महावीरं वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे^३ *णातिदूरे
सुत्सुसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे० पज्जुवासइ ॥

१४५. तए णं समणे भगव महावीरे मदुयस्स समणोवासगस्स तीसे य महतिमहालियाए
परिसाए धम्म परिकहेइ जाव^४ परिसा पडिगया ॥

१४६. तए णं मदुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स^५ *अतिए धम्म
सोच्चा० निसम्म हट्ठतुट्ठे पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियति,
परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता^६
*नमंसित्ता जामेव दिसं पाउव्भूए तामेव दिसं० पडिगए ॥

१४७. भंतेति ! भगव गोयमे समणे भगव महावीर वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता
एवं वयासी—पभू ण भते ! मदुए समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय^७ *मुडे
भवित्ता अगाराओ अणगारिय० पव्वइत्तए ?

नो इण्ठे समट्ठे । एव जहेव सखे तहेव अरुणाभे जाव^८ अंतं काहिति ॥

विकुव्वणाए एगजीव-संबध-पदं

१४८. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव^९ महेसक्खे रुवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अणमण्णेणं
सद्धि संगाम संगामित्तए ?

हंता पभू ।

ताओ णं भंते ! बोदीओ किं एगजीवफुडाओ ? अणेगजीवफुडाओ ?

गोयमा ? एगजीवफुडाओ, नो अणेगजीवफुडाओ ।

ते ण भंते ! तासि^{१०} बोदीण अंतरा किं एगजीवफुडा ? अणेगजीवफुडा ?

गोयमा ! एगजीवफुडा, नो अणेगजीवफुडा ॥

१. आसायणाए (ख); आसातणाए (ता) ।

७. सं० पा०—अतिय जाव पव्वइत्तए ।

२. सं० पा०—मदुया जाव एव ।

८. भ० १२।२७, २८ ।

३. सं० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।

९. भ० १।३३६ ।

४. जो० सू० ७१-७६ ।

१०. ते ण भंते ! तेसि (अ, क, ख, ता, व);

५. सं० पा०—महावीरस्स जाव निसम्म ।

तेसि ण भंते (म, स) ।

६. सं० पा०—वदित्ता जाव पडिगए ।

१४६. पुरिसे णं भंते ! अतरे हत्थेण वा ^{१०}पादेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिवेण वा आमुसमाणे वा संमुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा, अण्णयरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएणं आच्छिदमाणे वा विच्छिदमाणे वा, अगणिकाएण वा समोढहमाणे तेसि जीवपएसाणं किंचि आवाहं वा विवाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?
नो इण्ठे समट्ठे^० । नो खलु तत्थ सत्थं कमति ॥

देवासुर-संगाम-पद

१५०. अत्थि णं भंते ! देवासुराणं संगामे, देवासुराणं संगामे ?
हंता अत्थि ॥
१५१. देवासुरेसु णं भते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किण्णं तेसि देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ?
गोयमा ! जण्णं ते देवा तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा परामुसंति^१ तण्णं तेसि देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ।
जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ? नो इण्ठे समट्ठे । असुरकुमाराणं निच्चं विज्जिविया पहरणरयणा पण्णत्ता ॥

देवस्स दीवसमुद्-अणुपरियट्ठण-पदं

१५२. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्ठित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?
हंता पभू ॥
१५३. देवे णं भंते ! महिड्ढिए ^{१०}जाव महेसक्खे पभू धायइसंडं दीवं अणुपरियट्ठित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?^०
हंता पभू । एवं जाव^२ ख्यगवरं दीवं^३ अणुपरियट्ठित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?^०
हंता पभू । तेण परं वीइवएज्जा, नो चेव णं अणुपरियट्ठेज्जा ॥

देवाणं कम्मखवण-काल-पदं

१५४. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचहि वाससएहि खवयति ?
हंता अत्थि ॥

१. सं० पा०—एवं जहा अट्टमसए ततिए उद्दे-
सए जाव नो ।

२. परामसति (ख, ता, वे) ।

३. सं० पा०—एवं धायइसंडं दीवं जाव हंता ।

४. जी० ३ ।

५. सं० पा०—दीवं जाव हंता ।

१५५. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्ममे जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोमेण पंचहि वाससहस्सेहि खवयति ?
हंता अत्थि ॥
१५६. अत्थि ण भंते ! देवा जे अणने कम्मसे जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोमेणं पंचहि वाससयसहस्सेहि खवयति ?
हंता अत्थि ॥
१५७. कयरे णं भंते ! ते देवा जे अणते कम्मसे जहण्णेणं एक्केण वा जाव पंचहि वाससएहि खवयति ? कयरे ण भंते ! ते देवा जाव पंचहि वाससहस्सेहि खवयति ?
गोयमा ! वाणमनरा देवा अणते कम्मसे एगेणं वाससएण खवयति । असुरिद-
वज्जिया भवणवानां देवा अणते कम्मसे दोहि वाससएहि खवयति । असुर-
कुमारा देवा अणते कम्ममे तीहि वाससएहि खवयति । गह-नवखत्त-तारारूवा
जोडसिया देवा अणते कम्मसे चडहि वाससएहि खवयति । चंदिम-सूरिया
जोडमिदा जोतिगरायाणो अणते कम्मसे पंचहि वाससएहि खवयति ।
सोहम्मीसाणगा देवा अणते कम्ममे एगेण वाससहस्सेण खवयति । सणकुमार-
माहिदगा देवा अणते कम्ममे दोहि वाससहस्सेहि खवयति । एव एएणं
अभिजावेणं वन्नोण-लंतगा देवा अणते कम्मसे तीहि वाससहस्सेहि खवयति ।
महामुक्क-महत्सारगा देवा अणते कम्मसे चडहि वाससहस्सेहि खवयति ।
आणय-पाणय-आरण-अच्चुयगा देवा अणते कम्मसे पंचहि वाससहस्सेहि
खवयति ।
हिट्ठिमगेवेज्जगा देवा अणते कम्मसे एगेण वाससयसहस्सेण खवयति । मज्झिम-
गेवेज्जगा देवा अणते कम्मसे दोहि वाससयसहस्सेहि खवयति । उवरिम-
गेवेज्जगा देवा अणते कम्मसे तिहि वाससयसहस्सेहि खवयति । विजय-वेजयत-
जयत-अपराजियगा देवा अणते कम्मसे चडहि वाससयसहस्सेहि खवयति ।
सट्ठवसिद्धगा देवा अणते कम्मसे पंचहि वाससयसहस्सेहि खवयति ।
एए ण गोयमा ! ते देवा जे अणते कम्मसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि
वा, उक्कोसेण पंचहि वाससएहि खवयति । एए ण गोयमा ! ते देवा जाव
पंचहि वाससहस्सेहि खवयति । एए ण गोयमा ! ते देवा जाव पंचहि
वाससयसहस्सेहि खवयति ॥
१५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देशो

ईरियं पडुच्च गोयमस्स संवाद-पदं

१५६. 'रायगिहे जाव एवं वयासी—अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स' अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिगच्छाए^१ वा परियावज्जेज्जा, तस्स णं भंते ! कि इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! अणगारस्स णं भावियप्पणो^२ •पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिगच्छाए वा परियावज्जेज्जा^३, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१६०. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ० ?

•गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवन्ति तस्स ण रियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोहमाण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवन्ति तस्स ण संपराइया किरिया कज्जइ । अहासुत्तं रीयमाणस्स रियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ । से ण अहासुत्तं रीयती । से तेणट्ठेणं^४ ॥

१६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव^५ विहरइ ॥

१६२. तए णं समणे भयव महावीरे^६ •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवविहार^७ विहरइ ॥

अण्णजत्थियाणं आरोव-पदं

१६३. तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ । तस्स ण गुणसिलस्स चेइयस्स अट्ठरसामंते बहवे अण्णजत्थिया परिवसति । तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव^८ परिसा पडिगया ॥

१६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती

१. पातस्स (ता) ।

२. ० छाते (ख, ब, म, स) ।

३. सं० पा०—भावियप्पणो जाव तस्स ।

४. सं० पा०—जहा सत्तमसए संबुद्धेसए जाव

बट्टो निक्खित्तो ।

५. भ० १।५१ ।

६. सं० पा०—महावीरे बहिया जाव विहरइ

७. भ० ८।२७ ।

नामं अणगारे जाव^१ उड्डं जाणू^२ •अहोसिरे भाणकोट्टोवगए संजमेणं तवसा
अप्पाण भावेमाणे^३ विहरइ ॥

१६५. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता
भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे ण अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय^४—
•विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगतदंडा^५, एगत-
बाला यावि भवह^६ ?

१६६. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव वयासी—केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे
तिविहं तिविहेणं अस्सजय जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१६७. तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो ! रीयं
रीयमाणा पाणे पेच्चेह, अभिहणह जाव^७ उड्डवेह^८, तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा
जाव उड्डवेमाणा^९ तिविहं तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१६८. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे
रीय रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उड्डवेमो, अम्हे णं अज्जो ! रीय रीयमाणा
काय च जोय च रीयं च पडुच्च दिस्सा^{१०}-दिस्सा पदिस्सा^{११}-पदिस्सा वयामो, तए णं
अम्हे दिस्सा-दिस्सा वयमाणा पदिस्सा-पदिस्सा वयमाणा नो पाणे पेच्चेमो जाव
नो उड्डवेमो, तए ण अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोड्डवेमाणा तिविहं
तिविहेण जाव एगतपंडिया यावि भवामो । तुब्भे ण अज्जो ! अप्पणा चेव
तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१६९. तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम एव वयासी—केणं कारणेणं अज्जो !
अम्हे तिविहं तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१७०. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे ण अज्जो ! रीय
रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उड्डवेह, तए ण तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव
उड्डवेमाणा तिविहं तिविहेण जाव एगंतबाला यावि भवह ॥

१७१. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव पडिभणइ^{१२}, पडिभणित्ता जेणेव समणे
भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगवं महावीरं वंदइ
नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे जाव^{१३} पज्जुवासति ॥

१. भ० १।६ ।

२. स० पा०—उड्डं जाणू जाव विहरइ ।

३. स० पा०—अस्सजय जाव एगत^४ ।

४. तुलना—भ० ८।२८५-२८६ ।

५. भ० ८।२८७ ।

६. उवड्डवेह (ख) ।

७. उवड्डवेमाणा (ख) ।

८. दिस्स (अ, ता, व, म) ।

९. पदिस्स (अ, ख, ता, व, म) ।

१०. पडिहणइ (अ, क, ख, व, म, स) ।

११. भ० १।१० ।

१७२. गीयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गीयमं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं गीयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वदासी, साहु णं तुमं गीयमा ! ते अण्णउत्थिए एव वदासी । अत्थि णं गीयमा ! ममं वह्वे अंतेवासी समणा निग्गथा छउमत्था, जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए, जहा ण तुमं । तं सुट्ठु णं तुमं गीयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु ण तुमं गीयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी ॥
१७३. तए णं भगवं गीयमे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समणे हट्ठुत्तुडे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

परमाणुपोग्गलादीणं जाणणा-पासणा-पदं

१७४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से^१ परमाणुपोग्गलं किं जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?
गीयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥
१७५. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से दुपएसियं खंवं किं जाणति-पासति ? *उदाहु न जाणति न पासति ?
गीयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति । ° एवं जाव असंखेज्जपएसियं ॥
१७६. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से अणंतपएसियं खंवं किं *जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ? °
गीयमा ! अत्थेगतिए जाणति-पासति, अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥
१७७. आहोहिए^४ णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं किं जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ? जहा छउमत्थे एवं आहोहिए वि जाव अणंतपएसियं ॥
१७८. परमाहोहिए ण भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति तं समयं जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
१७९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति ? जं समयं पासति नो तं समयं जाणति ?
गीयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ । से तेणट्ठेणं^५
*गीयमा ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं

१. मणूसे (अ, क, ता, व, म)

४. अहोहिए (ख, स) ।

२. सं पा०—एव चेव ।

५. सं पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।

३. सं पा०—पुच्छा ।

जाणति नो त समयं पासति, जं समयं पासति० नो त समयं जाणति । एवं जाव अणंतपदेसिय ॥

१८०. केवली ण भते ! मणुस्से परमाणुपोगल ^{१०}ज समय जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति त समयं जाणति ? नो इणट्टे समट्टे ॥

१८१. से केणट्टेण भते ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोगल ज समय जाणति नो तं समयं पासति ? जं समयं पासति नो तं समयं जाणति ? गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दसणे भवइ । से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोगलं जं समयं जाणति नो त समयं पासति, ज समय पासति नो त समयं जाणति । एवं^{११} जाव अणतपएसियं ॥

१८२. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

नवमो उद्देशो

भवियदव्व-पद

१८३. रायगिहे जाव एव बयासी—अत्थि णं भते ! भवियदव्वनेरइया-भवियदव्व-नेरइया ?

हुता अत्थि ॥

१८४. से केणट्टेण भते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वनेरइया-भवियदव्वनेरइया ? गोयमा ! जे भविए पच्चिदिए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए । से तेणट्टेण । एव जाव थणियकुमाराण ॥

१८५. अत्थि णं भते ! भवियदव्वपुढविकाइया-भवियदव्वपुढविकाइया ? हुता अत्थि ॥

१८६. से केणट्टेण ? गोयमा ! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाइएसु उववज्जित्तए । से तेणट्टेण । आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं एवं चेव । तेउ-वाउ-वेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा

तेउ-वाउ-वेइदिय-तेइदिय-चउरिदिएसु उववज्जित्तए । पंचिदियतिरिक्ख-
जोणियाण जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पच्चि-
दियतिरिक्खजोणिए वा पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए । एवं मणु-
स्सा वि । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया ण जहा नेरइया ॥

१८७ भवियदव्वनेरइयस्स ण भंते ! केवतियं कालं ठिती पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥

१८८ भवियदव्वअसुरकुमारस्स ण भंते ! केवतियं कालं ठिती पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । एवं जाव
थणियकुमारस्स ॥

१८९. भवियदव्वपुढविकाइयस्स ण—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ । एवं
आउक्काइयस्स वि । तेउ-वाउकाइयस्स वि जहा नेरइयस्स । वणस्सइकाइयस्स
जहा पुढविकाइयस्स । वेइदियस्स तेइदियस्स चउरिदियस्स जहा नेरइयस्स ।
पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरो-
वमाइ । एव मणुस्सस्स वि । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियस्स जहा असुर-
कुमारस्स ॥

१९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

दसमो उद्देशो

भावियप्पणो असिधारादि-ओगाहणादि-पदं

१९१. रायगिहे जाव एव वयासि—अणगारे णं भंते ! भावियप्पा असिधार वा
खुरधार वा ओगाहेज्जा ?

हंता ओगाहेज्जा ॥

से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?

नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९२. 'अणगारे णं भंते ! भावियप्पा अगणिकायस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?

हंता वीइवएज्जा ।

से णं भंते ! तत्थ भियाएज्जा ?

१. स० पा०—एव जहा पंचमसए परमाणुपोगलवत्तव्वया जाव अणगारेणं ।

गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९३. अणगारे ण भते ! भाविद्यप्पा पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?

हता वीइवएज्जा ।

से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?

गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९४. अणगारे णं भते ! भाविद्यप्पा गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?

हंता हव्वमागच्छेज्जा ।

से ण भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?

गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९५. अणगारे णं भते ! भाविद्यप्पा उदगावत्तं वा उदगविद्दुं वा ओगाहेज्जा ?

हंता ओगाहेज्जा ।

से णं भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?

गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

परमाणुपोग्लादीणं वाउकाय-फास-पदं

१९६. परमाणुपोगले णं भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा परमाणुपोगलेणं फुडे ?

गोयमा ! परमाणुपोगले वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए परमाणुपोगलेणं फुडे ॥

१९७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा दुप्पएसिएणं खंधेण फुडे ? एव चेव । एवं जाव असखेज्जपएसिए ॥

१९८. अणतपएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे—पुच्छा ।

गोयमा ! अणतपएसिए खंधे वाउयाएणं फुडे, वाउयाए अणतपएसिएणं खंधेणं सिय फुडे, सिय नो फुडे ॥

१९९. वत्थी भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा वत्थिणा फुडे ?

गोयमा ! वत्थी वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए वत्थिणा फुडे ॥

दव्वाणं वण्णादि-पदं

२००. अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ 'काल-नील'^१-लोहिय-हालिद्द-सुविकलाइं, गंधओ सुव्भिगंधाइं, दुव्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासओ कक्खड-मउय-गरुय-लहुय-सीय-उसिण-

१. काला नीला (अ, क, ख, ता, म) ।

निद्ध-लुक्खाइं, अण्णमण्णवद्धाइं, अण्णमण्णपुट्ठाइं, 'अण्णमण्णवद्धपुट्ठाइं',
अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?

हंता अत्थि । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

२०१. अत्थि णं भंते ! सोहम्मस्स कप्पस्स अहेदव्वाइं ? एवं चेव । एवं जाव
ईसिपव्वभाराए पुढवीए ॥

२०२. सेवं भते ! सेवं भंते ! जाव^१ विहरइ ॥

२०३. तए णं समणे भगवं महावीरे^१ *अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसि-
लाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता^० बहिया जणवयविहारं
विहरइ ॥

सोमिलमाहण-पदं

२०४. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था—वण्णओ । दूतिपलासए
चेइए—वण्णओ । तत्थ णं वाणियगामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति
अड्ढे जाव^१ बहुजणस्स अपरिभूए, रिउवेद^१ जाव^१ सुपरिनिट्ठिए, पच्चह
खंडियसयाणं, 'सयस्स य', कुडुंबस्स आहेवच्चं^० *पोरेवच्च सामितं भट्ठितं
आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे^० विहरइ । तए णं समणे भगव
महावीरे जाव समोसडे जाव^१ परिसा पज्जुवासति ॥

२०५. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे^१
*अज्झत्थिए चित्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे^० समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे
नायपुत्ते पुव्वाणुपुर्व्व चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे^१
इहमागए^१ *इहसपत्ते इहसमोसडे इहेव वाणियगामे नगरे^० दूतिपलासए चेइए
अहापडिरूव^१ *ओग्गहं ओगिण्हत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे^०
विहरइ । त गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अतियं पाउव्वभवामि, इमाइं च
णं एयारूवाइं अट्ठाइं^१ *हेऊइं पसिणाइं कारणाइं^० वागरणाइं पुच्छिस्सामि, त
जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिति ततो णं
वदीहामि नमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. भ० १।५१ ।

३. सं० पा०—महावीरे जाव बहिया ।

४. भ० २।६४ ।

५. रुवेद (अ, म); रिउवेद (क, स) ।

६. भ० २।२४ ।

७. सायस्स (अ, क, ख, ता, म) ।

८. सं० पा०—आहेवच्च जाव विहरइ ।

९. भ० १।१३७ ।

१०. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

११. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

१२. सं० पा०—इहमागए जाव दूतिपलासए ।

१३. सं० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ ।

१४. सं० पा०—अट्ठाइं जाव वागरणाइ ।

वागरणाई नो वागरेहिती तो ण एएहि चेव अट्टेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्टुपसिणवागरणं करेस्सामी ति कट्टु एवं सपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए जाव^१ अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण एगेण खंडियसएणं सद्धि संपरिवुडे वाणियगामं नगरं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्टरसामते ठिच्चा समणं भगव महावीर एव वयासी—

२०६ जत्ता^२ ते भते ? जवणिज्जं (ते भते ?) ? अग्वाबाहं (ते भते ?) ? फासुय-विहारं (ते भते ?) ?

सोमिला ! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अग्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे ॥

२०७ कि ते भते ! जत्ता ?

सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजय-सज्जाय-भाणावस्सगमादीएसु जोगेसु जयणा, सेत्त जत्ता ॥

२०८ कि ते भते ! जवणिज्जं ?

सोमिला ! जवणिज्जे^३ दुविहे पणत्ते, त जहा—इंदियजवणिज्जे य, नोइंदिय-जवणिज्जे य ॥

२०९ से किं त इंदियजवणिज्जे ?

इंदियजवणिज्जे—ज मे सोइंदिय-वक्खिंदिय-वाणिंदिय-जिन्धिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्ठंति, सेत्तं इंदियजवणिज्जे ॥

२१०. से किं त नोइंदियजवणिज्जे ?

नोइंदियजवणिज्जे—ज मे कोह-माण-माया^४-लोभा वोच्छिण्णा नो उदीरेति, सेत्तं नोइंदियजवणिज्जे, सेत्त जवणिज्जे ॥

२११ कि ते भते ! अग्वाबाहं ?

सोमिला ! ज मे वातिय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइया^५ विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उदीरेति, सेत्त अग्वाबाहं ॥

२१२ कि ते भते ! फासुयविहार ?

सोमिला ! जण्ण आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पडगविज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंप-ज्जित्तार्णं विहरामि, सेत्त फासुयविहार ॥

१. अ० २।१७ ।

४. माय (क, ख, ता) ।

२. तुलना—नायाधम्मकहाओ १।१।७१-७६ ।

५. सन्निवाइय (अ, ख) ।

३. जमणिज्जे (अ, ख, ता, म) ।

२१३. सरिसवा^१ ते भंते ! कि भक्खेया ? अभक्खेया ?
 सोमिला ! सरिसवा (मे ?) भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥
२१४. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ?
 से नूणं मे सोमिला ! वंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवा पणत्ता, तं जहा—
 मित्तसरिसवा य, धन्नसरिसवा य ।
 तत्थ णं जेते मित्तसरिसवा ते तिविहा पणत्ता, तं जहा—‘सहजायया, सह-
 वड्ढियया, सहपंसुकीलियया’^२, ते ण समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया ।
 तत्थ ण जेते धन्नसरिसवा ते दुविहा पणत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य,
 असत्थपरिणया य । तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गथाणं
 अभक्खेया । तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पणत्ता, तं जहा—एसणिज्जा
 य, अणेसणिज्जा य । तत्थ ण जेते अणेसणिज्जा ते समणाणं निग्गथाणं अभ-
 क्खेया । तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पणत्ता, तं जहा—जाइया य, अजा-
 इया य । तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया । तत्थ
 णं जेते जाइया ते दुविहा पणत्ता, तं जहा—लद्धा य, अलद्धा य । तत्थ णं जेते
 अलद्धा ते णं समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया । तत्थ ण जेते लद्धा ते णं समणाणं
 निग्गथाणं भक्खेया । से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ^३—●सरिसवा मे भक्खेया
 वि० अभक्खेया वि ॥
२१५. मासा ते भंते ! कि भक्खेया ? अभक्खेया ?
 सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि ॥
२१६. से केणट्ठेणं^४ भंते ! एवं वुच्चइ—मासा मे भक्खेया वि० अभक्खेया वि ?
 से नूणं मे^५ सोमिला ! वंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पणत्ता, तं जहा—
 दव्वमासा य, कालमासा य ।
 तत्थ णं जेते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पणत्ता,
 तं जहा—सावणे, भइवए, आसोए^६, कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फग्गुणे, चेत्ते,
 वइसाहे, जेट्टामूले, आसाढे । ते णं समणाणं निग्गथाणं अभक्खेया ।
 तत्थ णं जेते दव्वमासा ते दुविहा पणत्ता, तं जहा—अत्थमासा य, धण्णमासा
 य ।

१. सरिसवा (ना० १।१।७३) ।

२. सहजायए सहवड्ढियए सहपसुकीलियए
 (अ, क, ख, ता, व, म) ।

३. सं० पा०—वुच्चइ जाव अभक्खेया ।

४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव अभक्खेया ।

५. भते (अ, ता, व, म); × (ख) ।

६. अस्सोए (अ, क, ता, व, म)

तत्थ ण जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुवण्णमासा य, रूपमासा य । ते ण समणाणं निग्गथाण अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते घण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सत्थपरिणया य, असत्थ-परिणया य । एवं जहा घण्णसरिसवा जाव से तेणट्ठेण जाव अभक्खेया वि ॥

२१७. कुलत्था ते भते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सोमिला ! कुलत्था मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१८. से केणट्ठेण जाव अभक्खेया वि ?

से नूणं भे सोमिला ! वभण्णाएसु नएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, त जहा—इत्थिकुलत्था य, घण्णकुलत्था य ।

तत्थ ण जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—‘कुलवधुया इ वा, कुलमाउया इ वा, कुलधुया’ इ वा । ते ण समणाणं निग्गथाण अभक्खेया ।

तत्थ ण जेते घण्णकुलत्था एवं जहा घण्णसरिसवा । से तेणट्ठेण जाव अभक्खेया वि ॥

२१९. एगे भवं ? दुवे भवं ? अक्खए भव ? अक्खए भवं ? अवट्ठिए भवं ? अणेगभूय-भाव-भविए भव ?

सोमिला ! एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ॥

२२०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—‘एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ?

सोमिला ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदसणट्ठयाए दुविहे अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अक्खए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवयोगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं । से तेणट्ठेण जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ॥

२२१. एत्थ ण से सोमिले माहणे सबुद्धे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जहा खदओ जाव^१ से जहेय तुव्भे वदह । जहा णं देवाणुप्पियाणं अतिए वहवे राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इठम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ^२ ‘मुडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयति, नो खलु अहं तहा संचाएमि^३, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए दुवालस-विह सावगधम्म पडिवज्जिस्सामि^४ जाव दुवालसविह सावगधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं भगव महावीर वंदति^५ नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस^६ पडिगए ॥

१. कुलकण्णया इ वा कुलमाउया इ वा कुल-वहुया (अ, क, ता, व, स) ।

२. स० पा०—वुच्चइ जाव भविए ।

३. भ० २।५०-५२ ।

४. पू०—राय० सू० ६६५ ।

५. स० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते ।

६. पू०—राय० सू० ६६५ ।

७. स० पा०—वदति जाव पडिगए ।

२२२. तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव' अहा-
परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥
२२३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमसति, वंदित्ता नमंसित्ता
एव वयासी—पभू णं भते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडे भवित्ता
अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । जहेव संखे तहेव निरवसेसं जाव' सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥
२२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

एगूणवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेस्सा य २. गढभ ३. पुढवी, ४. महासवा ५. चरम ६. दीव ७. भवणा य ।
८. निव्वत्ति ९. करण १०. वणचरसुरा य एगूणवीसइमे ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! लेस्साओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पणत्ताओ, त जहा—एव जहा पणवणाए चउत्थो
लेसुद्देसो भाणियव्वो^१ निरवसेसो ॥
२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३. कति ण भंते ! लेस्साओ पणत्ताओ ? एवं जहा पणवणाए गढभुद्देसो सो चेव
निरवसेसो भाणियव्वो^१ ॥
४. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१०८८

१. प० १७।४ ।

२. प० १७।६ ।

तइओ उद्देसो

पुढविकाइय-पदं

५. 'रायगिहे जाव एव वयासी—सिय भंते ! जाव' चत्तारि पंच पुढविकाइया एगयओ साधारणसरीरं बंधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीरं वा बंधति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । पुढविकाइयाणं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयं सरीरं बंधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीरं वा बंधति ॥
६. तेसि णं भंते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा ॥
७. ते ण भंते ! जीवा कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥
८. ते णं भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मत्तिअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ॥
९. ते णं भंते ! जीवा कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ॥
१०. ते णं भंते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥
११. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?
गोयमा ! दव्वओ ण अणंतपदेसियाइ दव्वाइ—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव' सव्वप्पणयाए' आहारमाहारेति ॥
१२. ते णं भंते ! जीवा जमाहारेति त चिज्जति, जं नो आहारेति तं नो चिज्जति, चिण्णे वा से ओद्दाइ पलिसप्पति वा ?
हत्ता गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेति तं चिज्जति, जं नो आहारेति जाव पलिसप्पति वा ॥

-
१. इह चेयं द्वारगाथा क्वचिद् दूश्यते—
सिय लेसदिट्ठिणाणे,
जोगुवओगे तहा किमाहारो ।
पाणाइवाय उप्पायठिई,
समुग्घाय उव्वट्ठी (वृ) ।

२. यावत्करणाद् द्वौ वा त्रयो वा (वृ) ।
३. मिच्छादिट्ठी (क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. प० २८।१ ।
५. सव्वपयाए (ब) ।

१३. तेसि ण भते ! जीवाण एव सण्णाति वा पण्णाति वा मणोति वा वईति वा अम्हे ण आहारमाहारेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, आहारंते पुण ते ॥
१४. तेसि ण भते ! जीवाण एव सण्णाति वा^१ पण्णाति वा मणोति वा^२ वईति वा अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसवेदेति पुण ते ॥
१५. ते ण भते ! जीवा कि पाणाइवाए उवक्खाइज्जति, भुसावाए, अदिण्णादाणे जाव^३ मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादसणसल्ले वि उवक्खाइज्जति । जेसि पि णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जति तेसि पि णं जीवाणं नो विण्णाए नाणत्ते ॥
१६. ते णं भंते ! जीवा कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति^० ?
एव जहा वक्कतीए पुढविक्काइयाण उववाओ तहा भाणियव्वो^४ ॥
१७. तेसि ण भते ! जीवाणं केवतियं काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ ॥
१८. तेसि ण भते ! जीवाण कति समुग्घाया पण्णत्ता !
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥
१९. ते ण भते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहया मरति ? असमोहया मरति ?
गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरति ॥
२०. ते णं भते ! जीवा अणतर उव्वट्ठिता कहि गच्छति ? कहि उववज्जति ?
एव उव्वट्ठणा जहा वक्कतीए^५ ॥

आउक्काइयादि-पवं

२१. सियं भंते ! जाव चत्तारि पंच आउक्काइया एगयओ साहारणसरीरं बधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारंते^० ?
एव जो पुढविक्काइयाण गमो सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्ठति, नवरं—ठिती सत्त वाससहस्साइ उक्कोसेण, सेस तं चेव ॥
२२. सियं भते ! जाव चत्तारि पंच तेउक्काइया^० ? एवं चेव, नवरं—उववाओ

१. स० पा०—सण्णाति या जाव वईति ।

३. प० ६ ।

२. भ० १।३८४ ।

४. प० ६ ।

ठिती उव्वट्टणा य जहा^१ पण्णवणाए सेसं तं चेव । वाउकाइयाण एव चेव, नाणत्त नवरं - चत्तारि समुग्धाया ॥

२३. सिय भते ! जाव चत्तारि पंच वणस्सइकाइया—पुच्छा ।

गोयमा ! नो इण्ठे समट्ठे । अणता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेति वा सरीरं वा बंधंति । सेसं जहा तेउकाइयाण जाव उव्वट्टति, नवरं—आहारो नियमं छद्दिसि, ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

थावरजीवाणं ओगाहणाए अप्पाबहुत्त-पद

२४. एसि णं भंते ! पुढविकाइयाण आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाणं सुहुमाण बादराण पज्जत्तगाण अपज्जत्तगाणं जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरे-हितो^१ अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १. सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा २. सुहुमवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३. सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४. सुहुम-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५. सुहुम-पुढविकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ६. बादर-वाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ७. बादर-तेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ८. बादर-आउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ९. बादरपुढवि-काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १०, ११. पत्तेय-सरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बादरनिओयस्स एसि ण पज्जत्तगाणं एसि णं अपज्जत्तगाणं जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा १२. सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १३. तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५. सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १६. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १८-२० एवं सुहुमतेउकाइयस्स वि २१-२३ एव सुहुमआउका-इयस्स वि २४-२६ एवं सुहुमपुढविकाइयस्स वि २७-२९ एव बादरवाउका-इयस्स वि ३०-३२. एवं बादरतेउकाइयस्स वि ३३-३५ एवं बादरआउका-इयस्स वि ३६-३८ एवं बादरपुढविकाइयस्स वि सव्वेसि तिविहेणं गमेण भाणि-यव्वं, ३९ बादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा

४० तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४१. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४२. पत्तेयसरीरवादरवणस्सइ-काइयस्स पज्जत्तगस्स जहणिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४३ तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४४ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ॥

थावरजीवाण सव्वसुहुम-सव्ववादर-पदं

- २५ एयस्स णं भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काए सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वसुहुमे, वणस्सइकाए सव्वसुहुमतराए ॥
- २६ एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! वाउक्काए सव्वसुहुमे, वाउक्काए सव्वसुहुमतराए ॥
२७. एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! तेउक्काए सव्वसुहुमे, तेउक्काए सव्वसुहुमतराए ॥
२८. एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ? गोयमा ! आउक्काए सव्वसुहुमे, आउक्काए सव्वसुहुमतराए ॥
- २९ एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्ववादरे ? कयरे काये सव्ववादरतराए ? गोयमा ! वणस्सइकाए सव्ववादरे, वणस्सइकाए सव्ववादरतराए ॥
३०. एयस्स णं भते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्ववादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ? गोयमा ! पुढविकाए सव्ववादरे, पुढविकाए सव्ववादरतराए ॥
३१. एयस्स ण भते ! आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्ववादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ? गोयमा ! आउक्काए सव्ववादरे, आउक्काए सव्ववादरतराए ॥
- ३२ एयस्स ण भते ! तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्ववादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ? गोयमा ! तेउक्काए सव्ववादरे, तेउक्काए सव्ववादरतराए ॥

पुढवि-सरीरस्स महालयत्त-पदं

३३. केमहाले णं भते ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ? गोयमा ! अणंताण सुहुमवणस्सइकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउ-

सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं^१ जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावइयां सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमआउक्काइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे पुढवि-सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमपुढविकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे बादर-वाउसरीरे, असंखेज्जाणं बादरवाउक्काइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादर-तेउसरीरे, असंखेज्जाणं बादरतेउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरआउ-सरीरे, असंखेज्जाणं बादरआउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरपुढवि-सरीरे । एमहाल एणं गोयमा ! पुढविसरीरे पणत्ते ॥

पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पदं

३४. पुढविकाइयस्स णं भते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ?

गोयमा ! से जहानामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलव जुगवं जुवाणी अप्पायंका^२ थिरग्गहत्था दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरु-परिणता तलजमलजुयल-परिघनिभवाहू उरस्सबलसमण्णागया लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्था छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणा^३ निउण-सिप्पोवगया तिव्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिव्खेण वइरामएण वट्ठावर-एणं एणं महं पुढविकाइयं जतुगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय-पडिसाहरिय पडिसखिविय-पडिसखिविय जाव इणामेवत्ति कट्ठु तिसत्तक्खुत्तो ओप्पीसेज्जा, तत्थ णं गोयमा ! अत्थेगतिया पुढविकाइया आलिद्धा अत्थेगतिया पुढविका-इया नो आलिद्धा, अत्थेगतिया संघट्टिया अत्थेगतिया नो संघट्टिया, अत्थेग-तिया परियाविया अत्थेगतिया नो परियाविया, अत्थेगतिया उद्दविया अत्थेग-तिया नो उद्दविया, अत्थेगतिया पिट्ठा अत्थेगतिया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा ! एमहालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ॥

पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं

३५. पुढविकाइए ण भते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुढभवमाणे विहरइ ?

गोयमा ! से जहानामए—केइ पुरिसे तरुणे बलवं^१ जुगवं जुवाणे अप्पातके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-वाहू चम्मेट्ठु-दुहण-मुट्ठिय-समाहृत-विचित्तगतकाए उरस्सबलसमण्णागए लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे^२

१. सुहुमधाउकाइयाणं ति क्वचित्पाठः (वृ) ।

२. स० पा०—वण्णओ जाव निउणसिप्पोवगया,
नवरं—चम्मेट्ठु-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचिय-

गतकाया न भण्णति, सेसं त चेव जाव
निउण० ।

३. स० पा०—बलव जाव निउण० ।

निउणसिप्पोवगए एगं पुरिसं जुण्ण जरा-जज्जरिय-देहं^१ •आउरं भूसियं
पिवासियं^२ दुब्बल किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणेज्जा, से णं
गोयमा ! पुरिसे तेणं पुरिसेण जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहए समाणे
केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ?

अणिट्ठ समणाउसो !

तस्स ण गोयमा ! पुरिस्स वेदणाहिंतो पुढविकाइए अक्कते समाणे एत्तो
अणिट्ठतरिय चेव अकंततरिय^३ •अप्पियतरियं असुहतरियं अमणुणतरियं^४
अमणामतरिय चेव वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

आउकाइयादीणं वेदणा-पदं

३६ आउयाए ण भते ! संघट्टिए समाणे केरिसियं वेदण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?
गोयमा ! जहा पुढविकाइए एव चेव । एव तेउयाए वि । एवं वाउयाए वि ।
एवं वणस्सइकाए वि जाव^१ विहरइ ॥

३७. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

महासवादि-पदं

४८. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३९ सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
हता सिया ॥

४०. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४१. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४२. सिय भते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१. स० पा०—देहं जाव दुब्बल ।

३. स० १६।३५ ।

२. स० पा०—अकततरिय जाव अमणामतरियं ।

४३. सिय भते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४४. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो' इणट्ठे समट्ठे ॥
४५. सिय भते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४६. सिय भते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४७. सिय भते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४८. सिय भते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
४९. सिय भते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५०. सिय भते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५१. सिय भते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५२. सिय भते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
५३. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एते सोलस भंगा ॥
५४. सिय भते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चउत्थो भगो भाणियब्बो, सेसा पणरस भंगा खोडे
यब्बा । एवं जाव थणियकुमारा ॥
५५. सिय भंते ! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव—
५६. सिय भंते ! पुढविक्काइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुर
कुमारा ॥
५७. सेव भते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. सद्वाप्रकरणेषु पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'गोयमा' इति एतत् पद न दृश्यते ।
पद लभ्यते । अस्मिन्नुत्तरवर्तिसूत्रेषु च

पंचमो उद्देशो

चरम-परम-पदं

५८. अत्थि णं भते ! चरमा^१ वि नेरइया ? परमा वि नेरइया ?
हंता अत्थि ॥
५९. से नूणं भते ! चरमेहितो नेरइएहितो परमा नेरइया महाकम्मतरा चेव,
महाकिरियतरा चेव, महस्सवतरा चेव, महावेयणतरा चेव; परमेहितो वा
नेरइएहितो चरमा नेरइया अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पस्स-
वतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ?
हंता गोयमा ! चरमेहितो नेरइएहितो परमा जाव महावेयणतरा चेव, परमे-
हितो वा नेरइएहितो चरमा नेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥
६०. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ?
गोयमा ! ठित्ति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा
चेव ॥
६१. अत्थि णं भते ! चरमा वि असुरकुमारा ? परमा वि असुरकुमारा ? एवं
चेव, नवर—विवरीयं भाणियव्व, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा^२ ।
सेसं त चेव जाव थणियकुमारा ताव एमेव । पुढविकाइया जाव मणुस्सा
एते जहा नेरइया । वाणमतार-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

वेदणा-पदं

६२. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पणत्ता ?
गोयमा ! दुविहा वेदणा पणत्ता, त जहा—निदा य, अनिदा य ॥
६३. नेरइया ण भते ! किं निदाय वेदण वेदेति ? अनिदायं वेदण वेदेति ?
गोयमा ! निदायं पि वेदण वेदेति, अनिदायं पि वेदण वेदेति । जहा पणवणाए
जाव^३ वेमाणियत्ति ॥
६४. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

१. चरिमा (अ, छ, व, म) ।

३. प० ३५ ।

२. बहुकम्मा (अ, व) ।

छट्ठो उद्देशो

दीवसमुद्-पदं

६५. कहि णं भंते ! दीवसमुद्दा ? केवतिया ण भंते ! दीवसमुद्दा ? किसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? एवं जहा जीवाभिगमे दीवसमुद्दुद्देशो सो चेव इह वि जोइसमडिउद्देशगवज्जो^१ भाणियव्वो जाव परिणामो, जीवउववाओ जाव^२ अणतखुत्तो ॥
६६. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

सत्तमो उद्देशो

असुरकुमारादीणं भवणादि-पदं

६७. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पणत्ता ? गोयमा ! चोयट्ठि^३ असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पणत्ता ॥
६८. ते णं भंते ! किमया पणत्ता ? गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव^४ पडिह्वा । तत्थ णं बह्वे जीवा य पोगला य वक्कमति, विउक्कमति, चयति, उववज्जति । सासया ण ते भवणा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहि जाव^५ फासपज्जवेहि असासया । एवं जाव अणियकुमारावासा ॥
६९. केवतिया ण भंते ! वाणमतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पणत्ता ? गोयमा ! असखेज्जा वाणमतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पणत्ता ॥
७०. ते ण भंते ! किमया पणत्ता ? सेस तं चेव ॥
७१. केवतिया ण भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पणत्ता ? गोयमा ! असखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पणत्ता ॥
७२. ते णं भंते ! किमया पणत्ता ? गोयमा ! सव्वफालिहामया अच्छा, सेस त चेव ॥

१. जोइसियमडि^० (क, स) ।

२. जी^० ३ ।

३. चोवट्ठि (क, ता); चउसट्ठि (स) ।

४. अ० २।११८ ।

५. अ० २।४७ ।

७३. सोहम्मे ण भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥
७४. ते णं भते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणासया अच्छा, सेसं त चेव जाव अणुत्तरविमाणा, नवरं—
जाणेयव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणा वा ॥
७५. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देशो

जीवादि-निव्वत्ति-पदं

७६. कतिविहा णं भते ! जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—एगिदियजीवनिव्वत्ती जा
पंचिदियजीवनिव्वत्ती ॥
७७. एगिदियजीवनिव्वत्ती ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती जाव
वणस्सइकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती ॥
७८. पुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती य,
बादरपुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती य । एव एएण अभिलावेणं भेदो जहा
वहुगवंधो तेयगसरीरस्स जाव^१—
७९. सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियजीवनिव्वत्ती णं
भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातिय^१—
●कप्पातीतवेमाणिय० देवपंचिदियजीवनिव्वत्ती य, अपज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धाणुत्तरो-
ववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियजीवनिव्वत्ती य ॥
८०. कतिविहा ण भंते ! कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्म-
निव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती ॥
८१. नेरइयाणं भते ! कतिविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

गोयमा ! अट्टविहा कम्मनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्म-
निव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाण ॥

८२. कतिविहा णं भंते ! सरीरनिव्वत्ती पणत्ता ?

गोयमा ! पंचविहा सरीरनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरनिव्वत्ती
जाव कम्मासरीरनिव्वत्ती ॥

८३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहा सरीरनिव्वत्ती पणत्ता ? एवं चेव । एवं जाव
वेमाणियाण, नवरं—नायव्वं जस्स जइ सरीराणि ॥

८४. कतिविहा णं भंते ! सव्विदियनिव्वत्ती पणत्ता ?

गोयमा ! पंचविहा सव्विदियनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—सोइंदियनिव्वत्ती
जाव फासिदियनिव्वत्ती । एव^१ नेरइयाण जाव थणियकुमारणं ॥

८५. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! एगा फासिदियनिव्वत्ती पणत्ता । एवं जस्स 'जति इदियाणि'^२ जाव
वेमाणियाणं ॥

८६. कतिविहा णं भंते ! भासानिव्वत्ती पणत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा भासानिव्वत्ती पणत्ता, त जहा—सच्चभासानिव्वत्ती,
मोसभासानिव्वत्ती, सच्चाभोसभासा निव्वत्ती, असच्चाभोसभासानिव्वत्ती ।
एवं एगिदियवज्जं जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ॥

८७. कतिविहा णं भंते ! मणनिव्वत्ती पणत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा मणनिव्वत्ती पणत्ता त जहा—सच्चमणनिव्वत्ती जाव
असच्चाभोसमणनिव्वत्ती । एवं एगिदियविगलियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥

८८. कतिविहा ण भंते ! कसायनिव्वत्ती पणत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा कसायनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—कोहकसायनिव्वत्ती
जाव लोभकसायनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं ॥

८९. कतिविहा णं भंते ! वणनिव्वत्ती पणत्ता ?

गोयमा ! पचविहा वणनिव्वत्ती तं जहा—कालावणनिव्वत्ती जाव सुक्कला-
वणनिव्वत्ती । एव निरवसेस जाव वेमाणियाणं । एव गधनिव्वत्ती दुविहा
जाव वेमाणियाणं । रसनिव्वत्ती पचविहा जाव वेमाणियाणं । फासनिव्वत्ती
अट्टविहा जाव वेमाणियाणं ॥

९०. कतिविहा ण भंते ! संठाणनिव्वत्ती पणत्ता ?

गोयमा ! छव्विहा संठाणनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—समचउरंससंठाणनिव्वत्ती
जाव हुंडसंठाणनिव्वत्ती ॥

१. एवं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

२. जदिदियाणि (ता) ।

६१. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा हुंडसंठाणनिव्वत्ती पणत्ता ॥
६२. असुरकुमारणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा समचउरंसंठाणनिव्वत्ती पणत्ता । एव जाव थणियकुमारणं ॥
६३. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा मसूरचदसंठाणनिव्वत्ती^१ पणत्ता । एवं जस्स जं संठाणं जाव वेमाणियाणं ॥
६४. कतिविहा ण भते ! सण्णानिव्वत्ती पणत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा सण्णानिव्वत्ती पणत्ता, त जहा—आहारसण्णानिव्वत्ती जाव परिग्गहसण्णानिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं ॥
६५. कतिविहा ण भते ! लेस्सानिव्वत्ती पणत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा लेस्सानिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—कण्हलेस्सानिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्सानिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं, जस्स जति लेस्साओ ॥
६६. कतिविहा ण भते ! दिट्ठीनिव्वत्ती पणत्ता ?
गोयमा ! तिव्विहा दिट्ठीनिव्वत्ती पणत्ता, त जहा—सम्मादिट्ठिनिव्वत्ती, मिच्छा-दिट्ठिनिव्वत्ती, सम्मामिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं, जस्स जति-विहा दिट्ठी ॥
६७. कतिविहा ण भते ! नाणनिव्वत्ती पणत्ता ?
गोयमा ! पचविहा नाणनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—आभिणिवोहियनाणनिव्वत्ती जाव केवलनाणनिव्वत्ती । एवं एगिदियवज्जं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति नाणा ॥
६८. कतिविहा ण भते ! अण्णाणनिव्वत्ती पणत्ता ?
गोयमा ! तिव्विहा अण्णाणनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—मइअण्णाणनिव्वत्ती, सुयअण्णाणनिव्वत्ती, विभंगनाणनिव्वत्ती । एवं जस्स जति अण्णाणा जाव वेमाणियाणं ॥
६९. कतिविहा ण भते ! जोगनिव्वत्ती पणत्ता ?
गोयमा ! तिव्विहा जोगनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—मणजोगनिव्वत्ती, वइजोगनिव्वत्ती, कायजोगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविहे-जोगो ॥
१००. कतिविहा ण भते ! उवओगनिव्वत्ती पणत्ता ?

१. मसूरचंदा° (क); मसूराचंदा° (ता, व) ।

गोयमा ! दुविहा उवओगनिव्वत्ती पणत्ता, तं जहा—सागारोवओगनिव्वत्ती,
अणागारोवओगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं^१ ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देशो

करण-पदं

१०२. कतिविहे णं भंते ! करणे पणत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे करणे पणत्ते, तं जहा—दव्वकरणे, खेत्तकरणे, कालकरणे,
भवकरणे, भावकरणे ॥

१०३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे करणे पणत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे करणे पणत्ते, तं जहा—दव्वकरणे जाव भावकरणे । एवं
जाव वेमाणियाणं ॥

१०४. कतिविहे णं भंते ! सरीरकरणे पणत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पणत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकरणे जाव
कम्मासरीरकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति सरीराणि ॥

१०५. कतिविहे णं भंते ! इंदियकरणे पणत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियकरणे पणत्ते, तं जहा—सोइंदियकरणे जाव फासि-
दियकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति इंदियाइं । एवं एएणं कमेणं
भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घाय-
करणे सत्तविहे, सण्णाकरणे चउव्विहै, लेसाकरणे छविहे, दिट्ठीकरणे तिविहे,
वेदकरणे तिविहे पणत्ते, तं जहा—इत्थिवेदकरणे, पुरिसवेदकरणे, नपुसगवेद-
करणे । एए सव्वे नेरइयादी दडगा जाव वेमाणियाणं, जस्स जं अत्थि तं तस्स
सव्वं भाणियव्व ॥

१०६. कतिविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पणत्ते ?

१. अतोअं 'अ, क, व, स' प्रतिपु सङ्गहणीयाये
दृश्येते—
जीवाण निव्वत्ती,
कम्मप्पगढी सरीरनिव्वत्ती ।
संविदियनिव्वत्ती,

भासा य मणे कसाया य ॥१॥
वण्ण रस गघ फासे,
संठाणविही य होइ वोद्धवा ।
लेसा दिट्ठी नाणे,
उवओगे चैव जोगे य ॥२॥

- गोयमा ! पंचविहे पाणाइवायकरणे पणत्ते, त जहा—एगिदियपाणाइवायकरणे जाव पंचिदियपाणाइवायकरणे । एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥
१०७. कतिविहे णं भते ! पोगलकरणे पणत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पोगलकरणे पणत्ते, तं जहा—वण्णकरणे, गधकरणे, रस-
करणे, फासकरणे, सठाणकरणे ॥
१०८. वण्णकरणे णं भते ! कतिविहे पणत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, तं जहा—कालावण्णकरणे जाव सुक्किलवण्णकरणे ।
एव भेदो—गधकरणे दुविहे, रसकरणे पंचविहे, फासकरणे अट्ठविहे ॥
१०९. सठाणकरणे ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, तं जहा—परिमंडलसठाणकरणे जाव^१ आयत्तसंठाण-
करणे ॥
११०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

दसमो उद्देशो

१११. वाणमतारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्दे-
सस्यो जाव^२ अप्पिड्ढिय त्ति ॥
११२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

वीसइमं सतं

पढमो उद्देशो

१. बेइंदिय २. भागासे, ३. पाणवहे ४. उवचए य ५. परमाणू ।
६. अंतर ७. बंधे ८. भूमी, ९. चारण १०. सोवकमा जीवा ॥१॥

बेइंदियादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेदिया एगयओ साहरणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीर वा बंधति ?
नो इण्ठे समट्ठे । बेदिया ण पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीर बंधति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीर वा बंधंति ॥
२. तेसि णं भते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउ-लेस्सा । एव जहा एगूणवीसतिमे सए तेउक्काइयाण जाव उव्वट्ठति, नवरं—सम्मदिट्ठी वि मिच्छदिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं, नो मणजोगी, वइजोगी वि कायजोगी वि, आहारो नियमं छहिंसि ।
३. तेसि णं भते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
नो इण्ठे समट्ठे, पडिसवेदेति पुण ते । ठिठी जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस सबच्छराइं, सेस त चेव । एवं तेइदिया वि, एव चउरिदिया वि, नाणत्तं इदिएसु ठितीए य, सेसं त चेव, ठिठी जहा पण्णवणाए ॥
४. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिदिया एगयओ साहरणसरीरं बंधति ? एवं जहा बेदियाणं, नवरं—छल्लेसा, दिट्ठी तिविहा वि, चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहो जोगो ॥

५. तेसि ण भते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—
अम्हे णं आहारमाहारेमो ?
गोयमा ! अत्येगतियाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—
अम्हे णं आहारमाहारेमो । अत्येगतियाण नो एवं सण्णाति वा जाव वईति वा—
अम्हे णं आहारमाहारेमो, आहारेति पुण ते ।
६. तेसि ण भते ! जीवाण एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे
सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गधे, इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
गोयमा ! अत्येगतियाण एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे
सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो । अत्येगतियाण नो एव सण्णाति वा
जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो,
पडिसवेदेति पुण ते ।
७. ते ण भते ! जीवा कि पाणाइवाए उवक्खाइज्जति—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिया पाणातिवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादंसणसल्ले
वि उवक्खाइज्जति अत्येगतिया नो पाणाइवाए उवक्खाइज्जति, नो मुसावाए
जाव नो मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जति । जेसि पि ण जीवाणं ते जीवा
एवमाहिज्जति तेसि पि ण जीवाण अत्येगतियाण विण्णाए नाणत्ते । अत्येगति-
याणं नो विण्णाए नाणत्ते । उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्टिसिद्धाओ । ठित्ति
जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उवकोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ । छस्समुग्घाया केवल-
वज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छति जाव सव्वट्टिसिद्ध ति, सेस जहा वेदियाणं ॥
८. एएसि ण भते ! वेइदियाण जाव पच्चिदियाण य कयरे कयरेहितो^१ •अप्पा वा ?
वहुया वा ? तुल्ला वा ? • विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पच्चिदिया, चउरिदिया विसेसाहिया, तेइदिया विसेसा-
हिया, वेइदिया विसेसाहिया ॥
९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव^२ विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

अत्यिकाय-पदं

१०. कतिविहे णं भते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे य, अलोयागासे य ॥
११. लोयागासे णं भते ! किं जीवा ? जीवदेसा० ?—एवं जहा वित्तियसए

१. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया । २. भ० १।५१ ।

अत्थिउद्देसे तहेव इह वि भाणियव्वं, नवरं—अभिलावो जाव' धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहिता णं चिट्ठति । एवं जाव पोमगलत्थिकाए ॥

१२. अहेलोए णं भते ! धम्मत्थिकायस्स केवत्तिय ओगाढे ?

गोयमा ! सातिरेणं ग्रद्ध ओगाढे । एवं एएणं अभिलावेणं जहा वित्तियसए जाव'—

१३. ईसिपव्वभारा णं भते ! पुढवी लोयागासस्स किं सखेज्जइभागं ओगाढा—पुच्छा ।

गोयमा ! नो संखेज्जइभागं ओगाढा, असंखेज्जइभागं ओगाढा, नो संखेज्जे भागे ओगाढा, नो असंखेज्जे भागे ओगाढा, नो सव्वलोयं ओगाढा । सेसं तं चेव ॥

अत्थिकायस्स अभिवयणा-पदं

१४. धम्मत्थिकायस्स णं भते ! केवत्तिया अभिवयणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मं इ वा, धम्मत्थिकाये इ वा, पाणाइवायवेरमणे इ वा, मुसावायवेरमणे इ वा, एवं जाव परिगहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे इ वा, रियासमिती इ वा, भासासमिती इ वा, एसणासमिती इ वा, आयाणभंडमत्तनिक्खेवसमिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिती' इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१५. अघम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवत्तिया अभिवयणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—अधम्मं इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा)जाव मिच्छादंसणसल्ले इ वा, रियाअस्समिती इ वा जाव उच्चारपासवण'खेलसिघाणजल्ल'पारिट्ठावणियाअस्समिती इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अघम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१६. आगासत्थिकायस्स णं "भंते ! केवत्तिया अभिवयणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—आगासे इ वा, आगासत्थि-

१. भ० २।१३६-१४५ ।

२. भ० २।१४७-१५३ ।

३. °खेलजल्लसिघाण° (ख, म, स) ।

४. सं० पा०—उच्चारपासवण जाव पारिट्ठावणिया° ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

काए इ वा, गगणे इ वा, नभे इ वा, समे इ वा, विसमे इ वा, खहे इ वा, विहे इ वा, वीयी इ वा, विवरे इ वा, अवरे इ वा, अवरसे इ वा, छिड्डे इ वा, भुसिरे इ वा, मग्गे इ वा, विमुहे इ वा, 'अट्टे इ वा, वियट्टे इ वा', आधारे इ वा, वोमे इ वा, भायणे इ वा, अतलिव्खे' इ वा, सामे इ वा, ओवासंतरे इ वा, अगमे इ वा, फलिहे इ वा, अणते इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१७. जीवत्थिकायस्स णं भंते ! केवत्तिया अभिवयणा पणत्ता ?

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पणत्ता, तं जहा—जीवे इ वा, जीवत्थिकाए इ वा, पाणे इ वा, भूए इ वा, सत्ते इ वा, विण्णू इ वा, 'वेया इ वा', चेया इ वा, जेया इ वा, आया इ वा, रगणे' इ वा, हिंदुए' इ वा, पोग्गले इ वा, माणवे इ वा, कत्ता इ वा, विकत्ता इ वा, जए इ वा, जत्तु इ वा, जोणी' इ वा, सयभू इ वा, ससरीरी इ वा, नायए इ वा, अतरप्पा इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते जीवत्थिकायस्स' अभिवयणा ॥

१८. पोग्गलत्थिकायस्स णं भंते ! "केवत्तिया अभिवयणा पणत्ता ?

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पणत्ता, तं जहा—पोग्गले इ वा, पोग्गलत्थिकाए इ वा, परमाणुपोग्गले इ वा, दुपएसिए इ वा, तिपएसिए इ वा जाव असंखेज्ज-पएसिए इ वा, अणत्तपएसिए इ वा खधे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे पोग्गल-त्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तद्ग्रो उद्देशो

पाणाइवायादीणं आयाए परिणत्ति-पदं

२०. अहं भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, उप्पत्तिया' वेणइया कम्मया' पारिणामिया,

१. अहे इ वा, वियहे (स, वृ); अट्टे इ वा, वियट्टे (वृषा) ।

२. अंतरिव्खे (ख, स) ।

३. × (अ, क, ख) ।

४. रंगणा (अ, क, ख, ता, म) ।

५. हिंदुए (क्व०) ।

६. जोरिण्यं (ख) ।

७. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

८. स० पा०—पुच्छा ।

९. स० पा०—उप्पत्तिया जाव पारिणामिया ।

ओगहे^१ °ईहा अवाए° धारणा, उट्टाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-पर-
क्कमे, नेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, नाणावरणिज्जे जाव
अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छ-
दिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे
जाव विभंगनाणे, आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा, ओरालिय-
सरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, मणजोगे वड्ढजोगे
कायजोगे, सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते
नण्णत्थ आयाए परिणमंति ?

हुंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ॥

गढभं वक्कममाणस्स जण्णादि-पदं

२१. जीवे णं भते ! गढभं वक्कममाणे 'कतिवण्णं कतिगंधं'^१ °कतिरसं कतिफासं
परिणाम परिणमइ ?

गोयमा ! पंचवण्णं, दुगंधं, पंचरसं, अट्ठफासं परिणाम परिणमइ ॥

२२. कम्मओ ण भते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ? कम्मओ ण
जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?

हुता गोयमा ! कम्मओ ण जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ°,
कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ॥

२३. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति जाव^२ विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदियोवच्चय-पदं

२४. कतिविहे णं भंते ! इंदियोवचए पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियोवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियोवचए, एवं वित्तिओ
इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा^३ पण्णवणाए ॥

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव^४ विहरइ ॥

१. स० पा०—ओगहे जाव धारणा ।

४. भ० १।५१ ।

२. कतिवण्णे कतिगंधे (अ, क, ख, ता, म) ।

५. प० १।५२ ।

३. स० पा०—एव जहा बारसमसए पचमुद्देसे

६. भ० १।५१ ।

जाव कम्मओ ।

पंचमो उद्देशो

परमाणु-खंडाणं वण्णादिभंग-पदं

२६. परमाणुपोगले णं भंते ! कतिवण्णे, कतिगधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगगधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते^१ । जइ एगवण्णे ? सिय कालए, सिय नीलए, सिय लोहियए, सिय हालिहए, सिय सुक्किलए । जइ एगगधे ? सिय सुव्विगधे, सिय दुव्विगधे । जइ एगरसे ? सिय तित्ते, सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अंबिले, सिय महुरे । जइ दुफासे ? १. सिय सीए य निद्धे य, २. सिय सीए य लुक्खे य, ३. सिय उसिणे य निद्धे य, ४. सिय उसिणे य लुक्खे य ॥

२७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंघे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे^२, सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सिय सुक्किलए । जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य लोहितए य, ३. सिय कालए य हालिहए य, ४. सिय कालए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य, ६. सिय नीलए य हालिहए य, ७. सिय नीलए य सुक्किलए य, ८. सिय लोहियए य हालिहए य, ९. सिय लोहियए य सुक्किलए य, १०. सिय हालिहए य सुक्किलए य, एव एए दुयासजोगे दस भंगा । जइ एगगंधे ? सिय सुव्विगधे, सिय दुव्विगधे । जइ दुगधे ? सुव्विगधे य दुव्विगधे य । रसेसु जहा वण्णेषु । जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एव जहेव परमाणुपोगले ४ । जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ३. सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, ४. सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे । जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए नव भंगा फासेसु ॥

२८. तिपएसिए णं भंते ! खंघे कतिवण्णे^३ ? जहा अट्टारसमसए छट्ठुद्देसे जाव^४ चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सुक्किलए । जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, १. सिय कालए य लोहियए य, २. सिय कालए य लोहियगा य, ३. सिय कालगा य लोहियए य, एवं हालिहएण वि समं ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय नीलए य लोहियए य एत्थ वि भंगा ३, एवं

१. पं तं (अ, म) ।

इसए जाव सिय ।

२. सं० पा०—एव जहा अट्टारसमसए छट्ठु- ३. म० १८।११३ ।

हालिहएण वि समं भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं भंगा ४, सिय लोहियए य हालिहए य भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय हालिहए य सुक्किलए य भंगा ३, एवं सव्वे ते दस दुयासंजोगा भगा तीस भवति ।

जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए य हालिहए य, ३. सिय कालए य नीलए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए य हालिहए य, ५. सिय कालए य लोहियए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य हालिहए य सुक्किलए य, ७. सिय नीलए य लोहियए य हालिहए य, ८. सिय नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ९. सिय नीलए य हालिहए य सुक्किलए य, १०. सिय लोहियए य हालिहए य सुक्किलए य, एवं एए दस तियासंजोगा ।

जइ एगगंधे ? सिय सुब्भगंधे, सिय दुब्भगंधे । जइ दुगंधे ? सुब्भगंधे य दुब्भगंधे य भंगा ३ । रसा जहा वण्णा ।

जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एव जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भंगा ।

जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि भंगा तिण्णि, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि ।

जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ६. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ७. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ८. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, एवं एए तिपएसिए फासेसु पणवीसं भंगा ॥

२६. चउप्पएसिए णं भते ! खघे कतिवण्णे ? जहा अट्टारसमसए जाव' सिय चउफासे पणत्ते । जइ एगवण्णे ? सिय कालए य जाव सुक्किलए । जइ दुवण्णे ?

१. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, ४. सिय कालगा य नीलगा य, सिय कालए य लोहियए य एत्थ वि चत्तारि भंगा, सिय कालए य हालिहए य ४, सिय कालए य सुक्किलए य ४, सिय नीलए य लोहियए य ४, सिय नीलए य हालिहए य ४, सिय नीलए य सुक्किलए य ४, सिय लोहियए य हालिहए य ४, सिय लोहियए य सुक्किलए य ४,

सिय हालिहए य सुक्किलए य ४, एवं एए दस दुयसजोगा भंगा पुण चत्तालीसं । जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, एए भंगा ४, एवं कालानीलाहालिहएहि भंगा ४, कालनीलसुक्किल ४, काललोहियहालिह ४, काललोहियसुक्किल ४, कालहालिहसुक्किल ४, नीललोहिसहालिहगाणं भंगा ४, नीललोहियसुक्किल ४, नीलहालिहसुक्किल ४, लोहियहालिहसुक्किलगाणं भंगा ४, एवं एए दसतियासजोगा, एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा, 'सव्वे एते' चत्तालीसं भंगा ।

जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिहए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ३. सिय कालए य नीलए य हालिहए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए य हालिहए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य हालिहए य सुक्किलए य, एवमेते चउवकग-सजोगे पच्च भंगा । एए सव्वे नउइ भंगा ।

जइ एगगघे ? सिय सुब्भिगघे, सिय दुब्भिगघे । जइ दुगघे ? सुब्भिगघे य दुब्भिगघे य रसा जहा वण्णा ।

जइ दुफासे ? जहेव परमाणुपोग्गले ४ । जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे उंसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं भंगा ४, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उंसिणे ४, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उंसिणे ४, एए तिफासे सोलस भंगा ।

जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उंसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उंसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उंसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. देसे सीए देसे उंसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा, ५. देसे सीए देसा उंसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ६. देसे सीए देसा उंसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ७. देसे सीए देसा उंसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ८. देसे सीए देसा उंसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उंसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया देसा उंसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे एते फासेसु छत्तीसं भंगा ॥

३०. पच्चपएसिए णं भंते ! खवे कतिवण्णे० ? जहा अट्टारसमसए जाव^१ सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहेव चउप्पएसिए । जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए

य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, ६. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य, ७. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालए य नीलए य हालिद्ए य, एत्थ वि सत्त भंगा, एवं कालग-नीलग-सुक्किलएसु सत्त भंगा, कालग-लोहिय-हालिद्देसु ७, कालग-लोहिय-सुक्किलेसु ७, कालग-हालिद्-सुक्किलेसु ७, नीलग-लोहिय-हालिद्देसु ७, नीलग-लोहिय-सुक्किलेसु सत्त भंगा, नीलग-हालिद्-सुक्किलेसु ७, लोहिय-हालिद्-सुक्किलेसु वि सत्त भंगा, एवमेते तियासंजोएणं सत्तरि भंगा ।

जइ उच्चवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियय हालिद्ए २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहि-यगा य हालिद्गे य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्गे य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य, एए पंच भंगा, सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य एत्थ वि पंच भंगा, एवं कालग-नीलग-हालिद्-सुक्किलेसु वि पंच भंगा, कालग-लोहिय-हालिद्-सुक्किलएसु वि पंच भंगा, नीलग-लोहिय-हालिद्-सुक्किलेसु वि पंच भंगा, एवमेते चउक्कगसंजोएणं पणुवीसं भंगा ।

जइ पंचवण्णे ? कालए ण नीलए य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलए य, सव्व-मेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्क-पंचगसंजोएण ईयाल भंगसयं भवति । गंधा जहा चउप्पएसियस्स । रसा जहा वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥

३१. छप्पएसिए णं भंते ! खंवे कतिवण्णे ? एव जहा पंचपए सिए जाव सिय चउफासे पणत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहा पंचपएसियस्स ।

जइ तिवण्णे ! सिय कालए य नीलए य लोहियए य, एव जहेव पंचपएसियस्स सत्त भंगा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य, एए अट्ठ भंगा, एवमेते दस तियासंजोगा, एक्केक्कए सजोगे अट्ठ भंगा, एवं सव्वे वि तियगसजोगे असीति भंगा ।

जइ चउवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए हालिद्गा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा त हालिद्ए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्गा य, ५. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्ए य, ६. सिय कालए य नीलगा य लोहिए य हालिद्गा य, ७. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्ए य, ८. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य, ९. सिय

कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्गा य, १०. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्ए य, ११. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्ए य, एए एक्कारस भंगा, एवमेते 'पंच चउक्कसंजोगा'^१ कायव्वा, एक्केक्कसंजोए एक्कारस भंगा, सब्बे एते चउक्कसंजोएणं पणपणं भगा ।

जइ पंचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य, सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्ए य सुक्किलए य, ५. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलए य, ६. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलए य, एव एए छवभंगा भाणियव्वा, एवमेते सब्बे वि एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसंजोगेसु छासीय भगसयं भवति । गंधा जहा पचपएसियस्स । रसा जहा एयस्सेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥

३२. सत्तपएसिए णं भते । खवे कतिवण्णे^० ? जहा पंचपएसिए जाव सिय चउफासे पणत्ते । जइ एगवण्णे ? एव एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स । जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्ए य, एवमेते चउक्कगसंजोगेण पन्नरस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्ए य, एवमेते पंच चउक्का-संजोगा नेयव्वा, एक्केक्के संजोए पन्नरस भंगा, सब्बमेते पंचसत्तरि भंगा भवति ।

जइ पंचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गा य सुक्किलगा य, ५. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्ए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्गे य सुक्किलगा य, ७. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्गा य सुक्किलए य, ८. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलए य, ९ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलगा य, १०. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्गा य सुक्किलए य, ११. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्ए य सुक्किलए य, १२. सिय कालगा य नीलगे य लोहियए य हालिद्ए य सुक्किलए य, १३. सिय कालगा य नीलए

१. पंचचउक्का^० (क, ख, व), पचगचउक्का (ता) ।

य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलगा य, १४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्गए य सुक्किलए य, १५. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्गए य सुक्किलए य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्गए य सुक्किलए य, एए सोलस भंगा, एवं सव्वमेते एककग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोगेणं दो सोला' भंगसया भवन्ति । गंधा जहा चउप्पएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥

३३. अट्ठपएसिए णं भंते ! खंवे—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहेव सत्तपएसिए ।

जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गए य, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव, १५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्गए य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्गए य, एए सोलस भंगा, एवमेते पंच चउक्क-संजोगा, एवमेते असीति भंगा ।

जइ पंचवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्गए य सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलगा य, एवं एएणं कमेणं भंगा चारेयव्वा जाव १५. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्गए य सुक्किलगे य, एसो पन्नरसमो भंगो, १६. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलए य १७. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलगा य, १८. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलए य, १९. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलगा य, २०. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्गए य सुक्किलए य, २१. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्गए य सुक्किलगा य, २२. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्गए य सुक्किलए य, २३. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलए य, २४. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलगा य, २५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्गए य सुक्किलए य, २६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्गए य सुक्किलए य, एए पंचसंजोएणं छव्वीसं भंगा भवन्ति, एवमेव सपुव्वावरेण एककग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएहि दो एकक्तीसं भंगसया भवन्ति । गंधा जहा सत्तपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥

३४. नवपएसिए ण भते । खधे—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा अट्टपएसिए जाव सिय चउफासे पणत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव अट्टपएसियस्स । जइ पचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, एव परिवा-डीए एक्कतीस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, एए एकत्तीसं भगा, एव एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसजोएहि दो छत्तीसा भगसया भवन्ति । गघा जहा अट्टपएसियस्स । रसा जहा एसस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउपएसियस्स ॥

३५. दसपएसिए ण भते । खधे—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा नवपएसिए जाव सिय चउफासे पणत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव नवपएसियस्स । पचवण्णे वि तहेव, नवरं—वत्तीसतिमो भगो भण्णति, एवमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसजोएसु दोण्णि सत्ततीसा भगसया भवन्ति । गघा जहा नवपएसि-यस्स । रसा जहा एसस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स । जहा दसपएसिओ एव सखेज्जपएसिओ वि । एव असंजेज्जपएसिओ वि । सुट्ठम-परिणओ अणंतपएसिओ वि एव चेव ॥

३६. वायरपरिणए ण भते । अणतपएसिए खधे कतिवण्णे० ? एवं जहा अट्टारसम-साए जाव' सिय अट्टफासे पणत्ते । वण्ण-गघ-रसा जहा दसपएसियस्स ।

जइ चउफासे ? १. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ५. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, ६. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ७. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ८. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ९. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १०. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ११. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १२. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, १३. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १४. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, १५. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १६. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, एए सोलस भगा ।

जइ पचफासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लक्खे,

२. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एव एए कक्खडेण सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं मउएण वि सोलस भंगा, एवं बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे, एए बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, एव सव्वे एते पचफासे अट्ठावीस भगसय भवति ।

जइ छप्पासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, एवं जाव १६. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए सोलस भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा, एत्थ वि चउसट्ठि भंगा, १. सव्वे कक्खडे सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा मउया देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे एते छप्पासे तिण्णि चउरासीया भगसया भवति ।

जइ सत्तफासे ? १. सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा

देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे एते सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण एगत्तेण, लहुएण पुहत्तेण, एते वि सोलस भगा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, एवमेते चउसट्ठि भंगा कक्खडेण सम । सव्वे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव मउएण वि सम चउसट्ठि भगा भाणियव्वा । सव्वे गरुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा । सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव लहुएण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा । सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं सीतेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा । सव्वे उसिणे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव उसिणेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा । सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एवं निद्धेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा । सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एव लुक्खेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एव सत्तफासे पच्च वारसुत्तरा भगसया भवति ।

जइ अट्ठफासे ? देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउका सोलस भगा । देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव एते गरुएण एगत्तेण, लहुएण पुहत्तेण सोलस भगा कायव्वा । देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा कायव्वा । देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एते वि सोलस भगा कायव्वा । सव्वेवेते चउसट्ठि भंगा कक्खड-मउएहि

एगत्तएहिं । ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं, मउएणं पुहत्तएणं, एते चउसट्ठि भंगा कायव्वा । ताहे कक्खडेणं पुहत्तएणं, मउएणं एगत्तएणं चउसट्ठि भंगा कायव्वा । ताहे एतेहिं चेव दोहि वि पुहत्तेहि चउसट्ठि भंगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा देसा मउया देसा गहया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा एसो अपच्छिमो भंगो । सव्वे एते अट्ठफासे दो छप्पन्ना भगसया भवन्ति । एवं एते बादरपरिणए अणंतपएसिए खंधे सव्वेसु संजोएसु वारस छन्नउया भंगसया भवन्ति ॥

परमाणु-पदं

३७. कतिविहे णं भंते ! परमाणू पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे परमाणू पण्णत्ते, तं जहा—दव्वपरमाणू, खेत्तपरमाणू, कालपरमाणू, भावपरमाणू ॥
३८. दव्वपरमाणू णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छेज्जे, अमेज्जे, अडज्जे, अगेज्जे ॥
३९. खेत्तपरमाणू णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अणद्धे, अमज्जे, अपदेसे, अविभाइमे ॥
४०. कालपरमाणू १० णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ॥
४१. भावपरमाणू णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—वण्णमते, गंधमते, रसमते, फासमते ॥
४२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

छट्ठो उद्देशो

पुढविआदीणं आहार-पदं

४३. पुढविकाइए णं भंते ! इमोसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भंते ! कि पुंवि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा ? पुंवि आहारेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुंवि वा उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा एवं जहा सत्तरसमसए

छट्ठुद्देशे जाव' से तेणट्ठेण गोयमा । एवं वुच्चइ—पुंवि वा जाव उववज्जेज्जा, नवर—तेहि सपाउण्णा, इमेहि आहारो भण्णति, सेस तं चेव ॥

४४. पुढविकाइए ण भते ! इमोसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव ईसीपढभाराए उववाएयव्वो ॥
४५. पुढविकाइए ण भते ! सक्करप्पभाए बालुयप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपढभाराए, एवं एतेण कमेण जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए समाणे जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपढभाराए उववाएयव्वो ॥
४६. पुढविकाइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-माहिदाण य कप्पाण अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! किं पुंवि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा० ? सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव निक्खेवओ ॥
४७. पुढविकाइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-माहिदाण य कप्पाण अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एव सणकुमार-माहिदाण वभलोगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उवावाएयव्वो । एव वभलोगस्स खंतगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव जतगस्स महासुक्कस्स कप्पस्स य अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं सहस्सारस्स आणय-पाणय-कप्पाण य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव आणय-पाणयाण आरणच्चु-याण य कप्पाण अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं आरणच्चुयाणं गेवेज्ज-विमाणाण य अंतरा जाव अहेसत्तमाए । एव गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं अणुत्तरविमाणाण ईसीपढभाराए य पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ॥
४८. आउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस जहा पुढविकाइयस्स जाव से तेणट्ठेण । एवं पढम-दोच्चाणं अंतरा समोहए जाव ईसीपढभाराए उववाएयव्वो । एव एएण कमेण जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जाव ईसीपढभाराए उववाएयव्वो आउक्काइयत्ताए ॥

४९. आउयाए णं भंते ! सोहम्मोसाणाणं सणकुमार-माहिदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस त चेव । एव एएहि चेव अंतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो । एव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपव्वाराए य पुढवीए अतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववा-एयव्वो ॥
५०. वाउक्काइए ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, नवर—अतरेसु समोहणा नेयव्वा, सेसं त चेव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपव्वाराए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवल-एसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव उवव-ज्जज्जा ॥
५१. सेवं भते ! सेव भते ! ति' ॥

सत्तमो उद्देसो

बंध-पदं

५२. कतिविहे णं भंते ! वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वंधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबंधे, परंपर-बंधे ॥
५३. नेरइयाणं भते ! कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एवं चेव । एव जाव वेमाणियाण ॥
५४. नाणावरणिज्जस्स णं भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबंधे, परंपर-बंधे ॥
५५. नेरइयाणं भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव । एवं जाव वेमाणियाण । एवं जाव अंतराइयस्स ॥

५६. नाणावरणिज्जोदयस्स ण भते । कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
 गोयमा । तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव । एव नेरइयाण वि । एव जाव वेमाणि-
 याणं । एवं जाव अतराइओदयस्स ॥
५७. इत्थीवेदस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
 गोयमा । तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव ॥
५८. असुरकुमाराण भते ! इत्थीवेदस्स कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव ।
 एव जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स इत्थिवेदो अत्थि । एव पुरिसवेदस्स वि ।
 एव नपुसगवेदस्स वि जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स जो अत्थि वेदो ॥
५९. दसणमोहणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव ।
 निरतर जाव वेमाणियाणं । एव चरित्तमोहणिज्जस्स वि जाव वेमाणियाणं ।
 एव एएण कमेण ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स आहारसण्णाए जाव
 परिगहसण्णाए, कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए, सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए
 सम्मामिच्छादिट्ठीए, आभिणिवोहियनाणस्स जाव केवलनाणस्स, मइअण्णाणस्स
 सुयअण्णाणस्स विभगनाणस्स, एव आभिणिवोहियनाणविसयस्स भते ! कति-
 विहे वधे पण्णत्ते जाव केवलनाणविसयस्स, मइअण्णाणविसयस्स सुयअण्णाण-
 विसयस्स विभगनाणविसयस्स—एएसि सब्वेसि पदाण तिविहे वधे पण्णत्ते ।
 सब्वेवेते चउव्वीस दड्ढा भाणियव्वा, नवर—जाणियव्वं जस्स जं अत्थि ।
 जाव—
६०. वेमाणियाण भते ! विभगनाणविसयस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
 गोयमा । तिविहे वधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगवधे, अणतरवधे, परपर-
 वधे ॥
६१. सेव भते ! सेवं भते ! जाव विहरइ ॥

१. भ० १।५१ ।

२. इह सग्रहाये—

जीवप्पओगवधे, अणतरपरपरे च बोद्धव्वे ।

पगडी उदए वेए, दसणमोहे चरित्ते य ॥११॥

ओरालियवेउच्चिय-आहारगतेयकम्मए चेव ।

सण्णा लेस्सा दिट्ठी, नाणानाणेमु तत्थिसए ।२।

(वृ) ।

अट्ठमो उद्देशो

समयखेत्ते ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पदं

६२. कति णं भंते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! पन्नरस कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पंच भरहाइ, पंच एरवयाइं, पंच महाविदेहाइं ॥

६३. कति ण भते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! तीसं अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पंच हेमवयाइं, पंच हेरणवयाइं, पंच हरिवासाइं, पंच रम्मगवासाइं, पंच 'देवकुराओ, पंच उत्तरकुराओ'^१ ॥

६४. एयासु ण भते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. एएसु ण भते ! पचसु भरहेसु, पचसु एरवएसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?

हता अत्थि । एएसु ण पचसु महाविदेहेसु नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

पचमहव्वइय-चाउज्जाम-धम्म-पदं

६६. एएसु णं भंते ! पचसु महाविदेहेसु अरहता भगवतो पंचमहव्वइय^२ सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

एएसु णं पचसु भरहेसु, पचसु एरवएसु, पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवतो पचमहव्वइय^३ सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयति, अवसेसा णं अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्मं पण्णवयति । एएसु णं पचसु महाविदेहेसु अरहता भगवतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयति ॥

तित्थगर-पदं

६७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थगरा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पण्णत्ता, तं जहा—उसभ-अजिय-सभव-अभिनंदण-

१. देवकुरूओ पच उत्तरकुरूओ (अ, क, ख, २. पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता, स) ।

ब, म) ।

३. पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता) ।

सुमति-सुप्पभ-सुपास-ससि-पुप्फदंत-सीयल-सेज्जस-वासुपुज्ज-विमल-अणत-
धम्म-सति-कथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-नमि-नेमि-पास-वट्ठमाणा ॥

६८ एसि ण भंते ! चउवीसाए तित्थगराण कति जिणतरा पणत्ता ?
गोयमा ! तेवीसं जिणतरा पणत्ता ॥

जिणतरेसु कालियसुय-पदं

६९ एसि णं भते ! तेवीसाए जिणतरेसु कस्स कंहि कालियसुयस्स वोच्छेदे
पणत्ते ?

गोयमा ! एएसु ण तेवीसाए जिणतरेसु पुरिम-पच्छिमएसु अट्ठसु-अट्ठसु
जिणतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स अव्वोच्छेदे पणत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु
जिणतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स वोच्छेदे पणत्ते, सव्वत्थ वि ण वोच्छिण्णे
दिट्ठिवाए ॥

पुव्वगय-पदं

७०. जंबुद्दीवे ण भते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाण केवतिय
काल पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ?

गोयमा ! जंबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए मम एगं वाससहस्स
पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ॥

७१. जहा ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाण एगं
वाससहस्स पुव्वगए अणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे
इमीसे ओसप्पिणीए अवसेसाणं तित्थगराण केवतिय काल पुव्वगए
अणुसज्जित्था ?

गोयमा ! अत्थेगतियाणं सखेज्ज काल, अत्थेगतियाण असखेज्ज काल ॥

तित्थ-पदं

७२. जंबुद्दीवे ण भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं
केवतिय काल तित्थे अणुसज्जिस्सति ?

गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए मम एगवीस वास-
सहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति ॥

७३. जहा ण भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे वासे ओसप्पिणीए देवाणु-
प्पियाणं एकवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जंबुद्दीवे
दीवे भारहे वासे आगमेस्साणं चरिमत्तिथगरस्स केवतिय काल तित्थे
अणुसज्जिस्सति ?

१. भविष्यता महापद्मादीना जितानाम् (वृ) ।

गोयमा । जावति ए ण उसमस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइ सखेज्जाइ आगमेस्साण चरिमत्तिथगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सति ॥

७४. तित्थ भते ! तित्थ ? तित्थगरे तित्थ ?

गोयमा ! अरहा ताव नियम तित्थकरे, तित्थ पुण चाउवण्णे^१ समणसघे, तं जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ॥

७५. पवयणं भते ! पवयणं ? पावयणी पवयणं ?

गोयमा ! अरहा ताव नियम पावयणी, पवयण पुण दुवालसगे गणिपिडगे, त जहा—आयारो^२ सयगडो ठाण समवाओ विआहपणत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवाग-सुय = दिट्ठिवाओ ॥

उग्गादीणं निग्गयधम्माणुगमण-पदं

७६. जे इमे भते ! उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया^३, कोरव्वा—एए णं अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहिता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंतं करेति ?

हंता गोयमा ! जे इमे उग्गा, भोगा,^४ राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा—एए ण अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहिता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं^५ अंतं करेति, अत्थेगतिया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ॥

७७. कतिविहा ण भते ! देवलोया पणत्ता ?

गोयमा ! अउव्विहा देवलोया पणत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतारा, जोतिसिया, वेमाणिया ॥

७८. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

नवमो उद्देशो

विज्जा-जंघा-चारण-पदं

७९. कतिविहा णं भते ! चारणा पणत्ता ?

१. चाउवण्णाइण्णे (व, स, वृ); चाउवण्णे ३. नाता (अ, क, ब) ।

(वृषा) ।

४. स० पा०—तं चेव जाव अत ।

२. स० पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ ।

गोयमा ! दुविहा चारणा पणत्ता, तं जहा—विज्जाचारणा य, जंघा-
चारणा य ॥

८०. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—विज्जाचारणे—विज्जाचारणे ?
गोयमा ! तस्स ण छट्ठछट्ठेण अणिविखत्तेण तवोकम्मेण विज्जाए उत्तरगुणलद्धि
खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जइ । से तेणट्ठेणं * गोयमा !
एवं वुच्चइ °—विज्जाचारणे-विज्जाचारणे ॥

८१. विज्जाचारणस्स णं भते ! कह सीहा गती, कह सीहे गतिविसए पणत्ते ?
गोयमा ! अयण्ण जंवुद्दीवे दीवे जाव' किचिविसेसाहिए परिक्खेवेण । देवे ण
महिड्डीए जाव' महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्ठु' केवलकप्पं
जवुद्दीव दीव तिहि अच्छरानिवाएहि तिक्खुत्तो अणुपरियट्ठित्ता ण हव्वमाग-
च्छेज्जा, विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए
पणत्ते ॥

८२. विज्जाचारणस्स णं भते ! तिरिय केवतिय गतिविसए पणत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण माणसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेति,
करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता वित्तिएण उप्पाएण नदीसरवरे दीवे
समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तत्ति,
पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइ वदति । विज्जाचार-
णस्स ण गोयमा ! तिरिय एवतिए गतिविसए पणत्ते ॥

८३. विज्जाचारणस्स ण भते ! उड्ढं केवतिए गतिविसए पणत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण नदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि
चेइयाइ वदति, वदित्ता वित्तिएण उप्पाएण पडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता
तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तत्ति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ,
आगच्छित्ता इह चेइयाइ वदति । विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! उड्ढ एवतिए
गतिविसए पणत्ते । से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते' कालं करेति
नत्थि तस्स आराहणा । से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते कालं करेति
अत्थि तस्स आराहणा ॥

८४. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—जघाचारणे-जंघाचारणे ?
गोयमा ! तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेण अणिविखत्तेण तवोकम्मेण अप्पाणं भावेमा-

१. विज्जाचारणा (अ, क, ख, म, स) ।

४. भ० १।३३६ ।

२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव विज्जाचारणे ।

५. तुलना—भ० ६।१७३ ।

३. भ० ६।७५ ।

६. अणालोतिय० (स) ।

णस्स जंघाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जति । से तेणट्ठेण^१ •गोयमा ! एवं वुच्चइ^० —जघाचारणे-जंघाचारणे ॥

८५. जघाचारणस्स णं भते ! कह सीहा गती, कह सीहे गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे^२ •जाव किच्चिविसेसाहिए परिकखेवेणं । देवे णं महिड्डीए जाव महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीव दीव तिहिं अच्छरानिवाएहि^० तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्ठित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा, जघाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते^३ ॥

८६. जघाचारणस्स ण भते ! तिरियं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से णं इओ एगेण उप्पाएण रुयगवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वंदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे वितिएण उप्पाएणं नदीसर-वरदीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइ वदति, जघाचारणस्स ण गोयमा ! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते ॥

८७. जघाचारणस्स ण भते ! उड्ढ केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ? गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण पडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वंदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे वितिएण उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता इहमागच्छइ, आग-च्छित्ता इह चेइयाइ वंदति, जघाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढ एवतिए गति-विसए पण्णत्ते । से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा । से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा ॥

८८ सेव भते ! सेव भते ! जाव^४ विहरइ ॥

दसमो उद्देशो

आउय-पदं

८९. जीवा णं भते किं सोवक्कमाउया ? निरुवक्कमाउया ? गोयमा ! जीवा सोवक्कमाउया वि, निरुवक्कमाउया वि ॥

१. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव जघाचारणे ।

२. सं० पा०—एव जहेव विज्जाचारणस्स नवरं

तिसत्तखुत्तो ।

३. पण्णत्ते, सेस त चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

४. भ० १।५१ ।

६०. नेरइयाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! नेरइया नो सोवक्कमाउया, निरुवक्कमाउया । एवं जाव थणिय-कुमारा । पुढविकाइया जहा जीवा । एव जाव मणुस्सा । वाणमत-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।

उववज्जण-उव्वट्ठण-पदं

६१. नेरइया ण भते । किं आतोवक्कमेण^१ उववज्जति ? परोवक्कमेण उवव-ज्जति ? निरुवक्कमेण उववज्जति ?

गोयमा ! आतोवक्कमेण वि उववज्जति, परोवक्कमेण वि उववज्जति, निरुव-क्कमेण वि उववज्जति । एव जाव वेमाणिया ॥

६२. नेरइया ण भते । किं आतोवक्कमेण उव्वट्ठति ? परोवक्कमेण उव्वट्ठति ? निरुवक्कमेण उव्वट्ठति ?

गोयमा ! नो आतोवक्कमेणं उव्वट्ठति, नो परोवक्कमेणं उव्वट्ठति, निरुवक्क-मेणं उव्वट्ठति । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्ठति । सेसा जहा नेरइया, नवर—जोइसिय-वेमाणिया चयति ॥

६३. नेरइया ण भते । किं आइड्ढोए उववज्जति ? परिड्ढोए^२ उववज्जति ?

गोयमा ! आइड्ढोए उववज्जति, नो परिड्ढोए उववज्जति । एवं जाव वेमाणिया ॥

६४. नेरइया णं भते ! किं आइड्ढोए उव्वट्ठति ? परिड्ढोए उव्वट्ठति ?

गोयमा ! आइड्ढोए उव्वट्ठति, नो परिड्ढोए उव्वट्ठति । एव जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिया वेमाणिया य चयंतीति अमिलावो ॥

६५. नेरइया णं भते ! किं आयकम्मुणा उववज्जति ? परकम्मुणा उववज्जति ?

गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जति, नो परकम्मुणा उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एव उव्वट्ठणादडओ वि ॥

६६. नेरइया ण भते ! किं आयप्पओगेणं उववज्जति ? परप्पओगेण उववज्जति ?

गोयमा ! आयप्पओगेण उववज्जति, नो परप्पओगेण उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एवं उव्वट्ठणादडओ वि ॥

कतिसंचियादि-पदं

६७. नेरइयाणं भते ! किं कतिसंचिया ? अकतिसंचिया ? अवत्तव्वगसंचिया ?

१. आत्मना—स्वयमेवायुष उपक्रम आत्मोपक्रम- २. परिड्ढोए (क) ।

स्तेन मृत्वेति शेष (वृ) ।

गोयमा ! नेरइया कतिसंचिया वि, अकतिसंचिया वि, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

६८ से केणट्टेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?

गोयमा ! जे णं नेरइया सखेज्जएण पवेसणएणं पविसति ते णं नेरइया कति-
संचिया, जे ण नेरइया असखेज्जएणं पवेसणएणं पविसति ते णं नेरइया
अकतिसंचिया, जे ण नेरइया एक्कएण पवेसणएण पविसति ते णं नेरइया अवत्त-
व्वगसंचिया । से तेणट्टेण गोयमा ! जाव अवत्तव्वगसंचिया वि । एवं जाव
थणियकुमारा ॥

६९. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! पुढविकाइया नो कतिसंचिया, अकतिसंचिया, नो अवत्तव्वग-
संचिया ॥

१०० से केणट्टेण भते ! एव वुच्चइ—जाव नो अवत्तव्वगसंचिया ?

गोयमा ! पुढविकाइया असखेज्जएण पवेसणएणं पविसति । से तेणट्टेणं जाव नो
अवत्तव्वगसंचिया । एव जाव वणस्सइकाइया^१ । बेदिया जाव वेमाणिया जहा
नेरइया ॥

१०१. सिद्धाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! सिद्धा कतिसंचिया, नो अकतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०२. से केणट्टेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?

गोयमा ! जे णं सिद्धा सखेज्जएण पवेसणएणं पविसति ते ण सिद्धा कति-
संचिया, जे ण सिद्धा एक्कएण पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा अवत्तव्वग-
संचिया । से तेणट्टेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०३. एसि णं भते ! नेरइयाण कतिसंचियाण अकतिसंचियाण अवत्तव्वगसंचियाण
य कयरे कयरेहितो^२ *अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?^३ विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अवत्तव्वगसंचिया, कतिसंचिया सखेज्जगुणा,
अकतिसंचिया असखेज्जगुणा । एव एगिदियवज्जाण जाव वेमाणियाण अप्पा-
बहुग । एगिदियाण नत्थि अप्पाबहुग ॥

१०४ एसि ण भते ! सिद्धाण कतिसंचियाण अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहितो^२
*अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^३ विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया सखेज्जगुणा ॥

. वनस्पतयस्तु यद्यप्यनन्ता उत्पद्यन्ते तथाऽपि
प्रवेशनक विजातीयेभ्य आगताना यस्त-
त्रोत्पादस्तद्विषयित, असङ्ख्याता एव

विजातीयेभ्य उद्भूतास्तत्रोत्पद्यन्त इति सूत्रे
उक्तम् (वृ) ।

२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

छक्कसमज्जियादि-पदं

१०५. नेरइयाण भते ! किं छक्कसमज्जिया ? नोछक्कसमज्जिया ? छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ? छक्केहि समज्जिया ? छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया छक्कसमज्जिया वि, नोछक्कसमज्जिया वि, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया वि, छक्केहि समज्जिया वि, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ॥

१०६. से केणट्ठेणं भते ! एव बुच्चइ—नेरइया छक्कसमज्जिया वि जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण नेरइया छक्कएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया छक्क-समज्जिया । जे ण नेरइया जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पच्चएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया नोछक्कसमज्जिया । जे ण नेरइया एगेणं छक्कएण अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पच्चएणं पवेसणएण पविसति तेणं नेरइया छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया । जे ण नेरइया नेगेहिं छक्केहिं पवेसणएहिं पविसति ते ण नेरइया छक्केहिं सम-ज्जिया । जे ण नेरइया नेगेहिं छक्केहिं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण पच्चएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया छक्केहिं य नोछक्केण य समज्जिया । से तेणट्ठेण तं जेव जाव समज्जिया वि । एव जाव थणियकुमारा ॥

१०७. पुढविक्काइयाण—पुच्छा ।

गोयमा ! पुढविक्काइया नो छक्कसमज्जिया, नो नोछक्कसमज्जिया, नो छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया, छक्केहिं य नोछक्केण य समज्जिया वि ॥

१०८. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण पुढविक्काइया नेगेहिं छक्कएहिं पवेसणएहिं पविसति ते ण पुढविक्काइया छक्केहिं समज्जिया । जे ण पुढविक्काइया नेगेहिं छक्कएहिं य अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण पच्चएण पवेसण-एण पविसति ते ण पुढविक्काइया छक्केहिं य नोछक्केण य समज्जिया । से तेण-ट्ठेण जाव समज्जिया वि । एव जाव वणस्सइकाइया । वेदिया जाव वेमाणिया, सिद्धा जहा नेरइया ॥

१०९. एसि ण भंते ! नेरइयाणं छक्कसमज्जियाण, नोछक्कसमज्जियाण, छक्केण य नोछक्केण य समज्जियाणं, छक्केहिं समज्जियाणं, छक्केहिं य नोछक्केण य

१. पवेसणएण (अ, क, व, स), पवेसण (ख, म) ।

समज्जियाण य कयरे कयरेहितो' *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? °
विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा
छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा, छक्केहि समज्जिया असखेज्ज-
गुणा, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा । एव जाव थणिय-
कुमारा ॥

११०. एसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं छक्केहि समज्जियाण, छक्केहि य नोछक्केण
य समज्जियाण य कयरे कयरेहितो' *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? °
विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया छक्केहि समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण
य समज्जिया संखेज्जगुणा । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । वेइदियाण जाव
वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ॥

१११. एसि ण भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं नोछक्कसमज्जियाण जाव छक्केहि
य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहितो' *अप्पा वा ? बहुया वा ?
तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहि सम-
ज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसम-
ज्जिया संखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया सखेज्जगुणा ॥

बारससमज्जियादि-पद

११२. नेरइया णं भंते ! कि वारससमज्जिया ? , नोवारससमज्जिया ? वारसएण य
नोवारसएण य समज्जिया ? वारसएहि समज्जिया ? वारसएहि य नोवारस-
एण य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया बारससमज्जिया वि जाव वारसएहि य नोवारसएण य सम-
ज्जिया वि ॥

११३. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण नेरइया बारसएण पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया बारस-
समज्जिया । जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण
एक्कारसएण पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया नोवारससमज्जिया । जे ण
नेरइया बारसएण अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण
एक्कारसएण पवेसणएणं पविसंति ते ण नेरइया बारसएण य नोवारसएण य

१. स० पा० — कयरेहितो जाव विसेसाहिया । ३. स० पा० — कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

२. सं० पा० — कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

समज्जिया । जे ण नेरइया नेगेहि वारसएहि पवेसणएहि पविसंति ते णं नेरइया वारसएहि समज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहि वारसएहि अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएणं पवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया वारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया । से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ॥

११४. पुढविककाइयाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! पुढविककाइया नोवारससमज्जिया, नो नोवारससमज्जिया, नो बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया, बारसएहि समज्जिया, बारसेहि य नोबारसेण य समज्जिया वि ॥

११५. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण पुढविककाइया नेगेहि वारसएहि पवेसणएहि पविसंति ते णं पुढविककाइया वारसएहि समज्जिया । जे णं पुढविककाइया नेगेहि वारसएहि अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएणं पवेसणएण पविसंति ते ण पुढविककाइया वारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया । से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि । एव जाव वणस्सइकाइया । वेइदिया जाव सिद्धा जहा नेरइया ॥

११६. एसि ण भते । नेरइयाण वारससमज्जियाणं—सव्वेसि अप्पाबहुणं जहा छक्कसमज्जियाण, नवर—बारसाभिलावो, सेसं त चेव ॥

चुलसीतिसमज्जियादि-पद

११७. नेरइया ण भते ! किं चुलसीतिसमज्जिया ? नोचुलसीतिसमज्जिया ? चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया ? चुलसीतीहि समज्जिया ? चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया चुलसीतिसमज्जिया वि जाव चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि ॥

११८. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण नेरइया चुलसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतिसमज्जिया । जे ण नेरइया जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण तेसीतिपवेसणएण पविसंति ते ण नेरइया नोचुलसीतिसमज्जिया । जे णं नेरइया चुलसीतीए णं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहि चुलसीतीएहि पवेसणएहि पविसंति

ते णं नेरइया चुलसीतीएहिं समज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहिं य
अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा^१ *दोहि वा तीहि वा^२, उक्कोसेणं तेसीतीएण
पवेसणएणं^३ पविसति ते णं नेरइया चुलसीतीहिं य नोचुलसीतीए य समज्जिया ।
से तेणट्टेणं जाव समज्जिया वि । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया
तहेव पच्छिल्लएहिं दोहि, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ । एव जाव वणस्सइ-
काइया । बेदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ॥

११६. सिद्धाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया वि, नोचुलसीतिसमज्जिया वि, चुलसीतीए
य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि, नो चुलसीतीहिं समज्जिया, नो चुलसीतीहिं
य नोचुलसीतीए य समज्जिया ॥

१२०. से केणट्टेणं जाव समज्जिया ?

गोयमा ! जे णं सिद्धा चुलसीतीएणं पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा चुलसीति
समज्जिया । जे ण सिद्धा जहण्णेणं एक्केणं वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण
तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसति ते णं सिद्धा नोचुलसीतिसमज्जिया । जे ण
सिद्धा चुलसीतीएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्को-
सेणं तेसीतीएण पवेसणएण पविसति ते णं सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए
य समज्जिया । तेणट्टेण जाव समज्जिया ॥

१२१. एसि ण भंते ! नेरइयाणं चुलसीतिसमज्जियाणं नोचुलसीतिसमज्जियाणं^४ ।
—सव्वेसि अप्पावहुग जहा छक्कसमज्जियाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—
अभिलाओ चुलसीतीओ ॥

१२२. एसि णं भंते ! सिद्धाणं चुलसीतिसमज्जियाणं, नोचुलसीतिसमज्जियाणं,
चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो^५ *अप्पा वा ?
बहुया वा ? तुल्ला वा^६ ? विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया,
चुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा, नोचुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा ॥

१२३. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव^७ विहरइ ॥

१. सं० पा०—एक्केण वा जाव उक्कोसेणं ।

२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

३. पू०—भ० २०।१०६ ।

४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

५. भ० १।५१ ।

एगवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

पढमो उद्देसो

१. सालि २ कल ३ अयसि ४. वसे, ५. इक्खू ६. दग्गे य ७. अग्गं ८. तुलसी य ।
अट्टेए दस वग्गा, असीति^१ पुण होति उद्देसा ॥१॥

सालिआदिजीवाण उववायादि-पदं

१. रायगिहे जाव एव वयासी—अह भते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवाणं—
एएसि ण भते ! जीवा मूलत्ताए वक्कमति, ते णं भते^१ ! जीवा कअ्रोहितो
उववज्जति—किं नेरइएहितो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?
मणुस्सेहितो उववज्जति ? देवेहितो उववज्जति ? जहा^१ वक्कतीए तहेव उव-
वाओ, नवरं—देववज्ज ॥
२. ते णं भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा
असखेज्जा वा उववज्जति । अवहारो जहा^१ उप्पलुद्देसे ॥
३. तेसि ण भते ! जीवाण केमहालिया सरीरोगाहणा पणत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण धणुपुहत्त ॥
४. ते ण भते ! जीवा नाणावरणज्जस्स कम्मस्स किं वधगा ? अवधगा ? जहा^१
उप्पलुद्देसे । एव वेदे वि, उदए वि, उदीरणा^१ वि ॥
५. ते ण भते ! जीवा किं कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा छव्वीसं भगा,
दिट्ठी जाव इंदिया जहा^१ उप्पलुद्देसे ॥

१. असीति (क, व, स) ।

२. प० ६ ।

३. भ० ११।४ ।

४. भ० ११।६-११ ।

५. उदीरणाए (अ, क, ख, ता, म, स) ।

६. भ० ११।१३-२८ ।

६. ते णं भंते ! साली-बीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे कालओ केवच्चिरं^१ होति ?
 गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥
७. से णं भते ! साली-बीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे पुढवीजीवे, पुणरवि साली-बीही-जव-जवजवगमूलगजीवे केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? एव जहा उप्पलुद्देसे । एएण अभिलावेणं जाव^२ मणुस्स-जीवे, आहारो जहा^३ उप्पलुद्देसे, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, समुग्धाया, समोहया, उव्वट्टणा य जहा^४ उप्पलुद्देसे ॥
८. अहं भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली-बीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलग-जीवत्ताए उववण्णपुव्वा ?
 हंता गोयमा ! असति अदुवा अणतखुत्तो ॥
९. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

२-१० उद्देसो

१०. अहं भंते ! साली-बीही-गोधूम-जव-जवजवाणं—एएसि णं जे जीवा कंदत्ताए वक्कमंति ते ण भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं कदाहि-गारेण सच्चवे मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असति अदुवा अणतखुत्तो ॥
११. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
१२. एवं खंधे वि उद्देसओ नेयव्वो । एवं तयाए वि उद्देसो भाणियव्वो । साले वि उद्देसो भाणियव्वो । पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो । पत्ते वि उद्देसो भाणि-यव्वो । एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तहा नेयव्वा । एवं पुप्फे वि उद्देसओ, नवरं—देवा उववज्जंति जहा^५ उप्पलुद्देसे । चत्तारि लेस्साओ, असीति भगा । ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण अंगुलपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥
१३. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
१४. जहा पुप्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो । एवं बीए वि उद्देसओ । एए दस उद्देसगा ॥

१. केवच्चिरं (अ, क, ख, व) ।

२. भ० ११।३०-३४ ।

३. भ० ११।३५ ।

४. भ० ११।३७-३९ ।

५. सं० पा०—बीही जाव जवजवाण ।

६. भ० ११।२ ।

वीओ वग्गो

१५. अह भते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसदग-सतीण^१-पलिमथगाण^२—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते णं भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीण निरवसेसं तहेव ॥

तइयो वग्गो

१६. अह भते ! अयसि-कुसुभ-कोद्व-कंगु-रालग-वरा-कोदूसा-सण-सरिसव-मूलग-वीयाण एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते णं भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं निरवसेस तहेव भाणियव्वा ॥

चउत्थो वग्गो

१७. अह भते ! वस-वेणु-कणक-कक्कावंस-चारुवस^३-दडा^४-कुडा^५-विमा-कंडा-वेलुया-कल्लाणाण^६—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीण, नवर—देवो सव्वत्थ वि न उववज्जति । तिणि लेसाओ । सव्वत्थ वि छव्वीसं भगा, सेस त चेव ॥

१. सडिण (अ), सन्विण (क), सडिण (ख); सडिण (ता, स); सतिण (व), सडिण (म)
 २. पलिमिथगाणं (अ, ता); पलिमिथगाण (क), पलिमिथगाणं (ख, व, म) ।
 ३. यारुवस (अ); यारुवंस (व); वगरवंस (म) ।
 ४. उडा (ता); दडगा (व) ।
 ५. कुडा (अ, ता, स) ।
 ६. कल्लाणीण (अ, क, ता, व, म) ।

पंचमो वग्गो

१८. अह भंते ! उक्खु-उक्खुवाडिय-वीरण-इक्कड-भमास-सुव'-सर-वेत्त-तिमिर-सतपोरग'-नलाणं—एएसि णं जे जीवा भूलत्ताए वक्कमति० ? एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि भूलादीया दस उद्देसगा, नवरं—खंधुद्देसे देवो उववज्जति । चत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव ॥

छट्ठो वग्गो

१९. अह भंते ! सेडिय'-भंतिय'-कोत्तिय-दब्भ-कुस-पव्वग-पोदइल' अज्जुण आसाढग-रोहियस-मुय'-वखीर'-भुस'-एरड-कुरुकुंद'-करकर सुठ-विभगु महुरतण'-थुरग'-सिप्पिय-सुकलितणाण—एएसि ण जे जीवा भूलत्ताए वक्कमति० ? एव एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वसवग्गो ॥

सत्तमो वग्गो

२०. अह भंते ! अब्भरुह'-वोयाण'-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-पोरग'-मज्जार-पाइ'-विल्लि'-पालवक-दगपिप्पलिय-दव्वि-सोत्थिक-सायमडुविक'-भूलग-सरि-सव-अंबिलसाग-जियतगाण—एएसि ण जे जीवा भूलत्ताए वक्कमति० ? एव एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वसवग्गो ॥

१. मुंडे (अ); सुठे (क, ख, ता) ।

२. सतवोरग (ख) ।

३. सेडिय (स) ।

४. भंतिय (अ); भात्तिय (क); भति (ता);
भंतिय (ब) ।

५. पदेइल (अ); वोदइल (ता) ।

६. मुत (क, ख, ब, स) ।

७. पक्खीर (ता) ।

८. भूस (अ, क, ता, ब) ।

९. कडुकुरुकुद (ता) ।

१०. बहुरयण (क, ब); महुरयण (ख) ।

११. छुरग (ता) ।

१२. अज्जुण (क, ख, ता, ब) ।

१३. वेताण (अ); बायाण (ख) ।

१४. वोरग (अ), चोरग (स) ।

१५. याइ (ख, स) ।

१६. विलि (ता); चिल्लि (ब) ।

१७. सायमडुविक (ख, ता, स) ।

अट्ठमो वग्गो

- २१ अह भते । कुलसी-कण्ह-दराल-फणज्जा-अज्जा-भूयणा^१-चोरा-जीरा-दमणा-
भरुया-इदीवर-सयपुप्फाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति० ? एत्थ वि
दस उद्देसगा निरवसेसं जहा वसाण । एवं एएसु अट्ठसु वग्गेषु असीति उद्देसगा
भवति ॥

बावीसमं सतं

पढमो वग्गो

१, २. तालेगट्ठिय ३. बहुवीयगा य ४. गुच्छा य ५. गुम्म ६. वल्ली य ।

छद्दस वग्गा एए, सट्ठि पुण होति उद्देसा ॥१॥

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भते ! ताल-तमाल-तक्कलि-तेतलि^१-साल-सरला-‘सारकल्लाण-जावति-केयइ’^२-कदलि-कंदलि-चम्मरुक्ख-भुयरुक्ख-हिगुरु-क्ख-लवंगरुक्ख-पूयफलि-खज्जूरि-नालिएरीणं—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते ण भते ! जीवा कओहितो उववज्जति० ? एव एत्थ वि मूला-दीया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीणं, नवर—इमं नाणत्तं—मूले कदे खधे तथाए साले य एएसु पंचसु उद्देसगेसु देवो न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ । ठिती जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइ । उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जति । चत्तारि लेसाओ । ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं । ओगाहणा मूले कदे घणुहुपुहुत्तं, खधे तथाए साले य गाउयपुहुत्तं, पवाले पत्ते घणुहुपुहुत्तं, पुप्फे हत्थपुहुत्तं, फले वीए य अंगुलपुहुत्तं । सव्वेसि जहण्णेणं अंगुलस्स असखेज्जइभाग । सेसं जहा सालीण । एव एए दस उद्देसगा ॥

१. तेवलि (अ, म) ।

२. सारकल्लाणं जाव केवइ (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र सर्वेष्व्वादेशेषु ‘सारकल्लाण जाव केवइ’ इति पाठो लभ्यते । म० ८।२१७ तथा प्रज्ञापनायाः प्रथमपदे यथा पाठोस्ति तदाधारेण ज्ञायते लिपिअमोअौ

जातः । वस्तुतः ‘सारकल्लाण जावति केयइ’ इति पाठः समीचीनोस्ति । अत्र जाव शब्दस्य किमपि प्रयोजनं नावगम्यते ।

३. गुवरुक्ख (अ); गुयरुक्ख (क, ख); गुदरुक्ख (ता) । × (ब); गुत्तरुक्ख (म) गुत्तरुक्ख (स) ।

वीओ वग्गो

२. अह भंते ! निवव जंबु-कोसंव-साल^१-अकोत्त-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-वउल-पलास-करज-पुत्तजीवग-अरिट्ठ-विहेलग^२-हरितग-भल्लाय-उवभरिय^३-खीरणि-घायइ-पियाल-पूइयणिवारग-सेण्हय^४-पासिय^५-सीसव-असण^६-पुण्णाग-नाग-रुक्ख-सीवणि^७-असोगाणं—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति० ? एव मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा निरवसेसं जहा तालवग्गो ॥

तइओ वग्गो

३. अह भंते ! अत्थिय-तिट्ठय-वोर-कविट्ठ—अवाडग-माउलिग^१-विल्ल^२-आमलग-फणस-दाडिम^३-आसोत्थ^४-उवर-वड-नग्गोह-नदिरुक्ख-पिप्पलि-सतरि^५-पिलक्खुरुक्ख-काउवरिय-कुत्थुभरिय^६-देवदालि-तिलग-लउय-छत्तोह-सिरीस-सत्तिवण्ण^७-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-वदण-अज्जुण-नीम^८-कुडग-कलवाण—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति, ते ण भंते ! जीवा कओहितो उववज्जति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा नेयव्वा जाव वीय ॥

१. ताल (क, ख, ता, व, म, स) ।

२. वेहेलग (ता) ।

३. उवरिभरीय (अ) ।

४. सेण्हण (ता), सिण्हण (व), सण्हय (स) ।

५. पासिय (अ), पसिय (म) ।

६. अयसि (अ, क, ख, ता, व, म, स); १२. सतरा (अ); सतर (क, ख, स); सेतर (व)

सर्वासु प्रतिपु 'अयसि' इति पाठो लिखि-

तोस्ति, किंतु प्रज्ञापनाया. (प० १) १३. कोच्छुभरिय (ख); कुच्छुभरिय (स) ।

अनुसारेण 'असण' इति पद गृहीतम् ।

७. सीवण्ण (अ, क, ख, ता, म, स) ।

८. मालुग (अ, क, ख, व, म) ।

९. वेल्ल (व) ।

१०. दालिम (ख, ता, स) ।

११. असोलु (अ, म); असोट्ठ (क, ख, व);

असोह (ता) ।

१२. सतरा (अ); सतर (क, ख, स); सेतर (व)

१३. कोच्छुभरिय (ख); कुच्छुभरिय (स) ।

१४. सत्तवण्ण (स) ।

१५. नीव (ख) ।

चउत्थो वग्गो

- ४ अह भते ! वाइगणि-अल्लइ-पोडइ, एव जहा पणवणाए गाहाणुसारेण नेयव्वं जाव^१ गज-पाडला-दासि^२-अकोल्लाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्क-मत्ति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा नेयव्वा जाव बीय ति निरवसेस जहा वसवग्गो ॥

पंचमो वग्गो

५. अह भते ! सेरियक^१-नवभा-लय-कोरेटग-वधुजीवग-मणोज्जा^२, जहा पणवणाए पढमपदे गाहाणुसारेण जाव^३ नवणीतिय^४-कुद-महाजाईणं—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीण ॥

छट्ठो वग्गो

६. अह भते ! पूसफनि-कार्लिगी-तुंबी-तउसी-एलावालुकी, एवं पदाणि छिंदिय-व्वाणि पणवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव^१ दधिफोल्लइ-काकलि-मोकलि^२-अक्कबोदीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहा तालवग्गो, नवरं—फलउद्देसे ओगाह-णाए जहण्णेणं अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण धणुपुहत्त । ठिती सव्वत्थ जहण्णेणं अंतोमुहत्त, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव । एवं छसु वि वग्गेसु सट्ठि उद्देसगा भवति ॥

१. प० १, गुच्छवग्गो ।

२. पालुलावासि (अ); पाडलावासि (ख, स);
पायलायसि (ब); पातुलावासि (म) ।

३. सिरियका (क); ससियक (ता); सरियक
(ब) ।

४. मणोज्जा (अ, म) ।

५. प० १, गुम्भवग्गो ।

६. नवणीय (ख, ब, म); नलणीय (स) ।

७. प० १, वल्लवग्गो ।

८. मोकलि (ख, ब, स) ।

तेवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

१. आलुय २. लोही ३. अवए, ४. पाढा तह ५. मासवण्णि-वल्ली य ।
पंचेते दसवग्गा, पन्नास होति उद्देसा ॥१॥

१. रायगिहे जाव एव वयासी—अह भते ! आलुय-मूलग-सिगबेर-हलिद्दा^१-रु-
कंडरिय-जारु-छीरबिरालि-किट्टि-कट्टु^२-कण्हकडभु^३-मधु-पुयलइ^४-महुसिगि-
निरुहा^५-सप्पसुगघा^६-छिण्णरुह-वीयरुहाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्क-
मति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वसवग्गसरिसा, नवरं—
परिमाण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा
वा अणत्ता वा उववज्जंति । अवहारो—गोयमा ! ते ण अणत्ता समये-समये
अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणत्ताहि ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं एवत्तिकालेण
अवहीरति, नो चेव ण अवहिया^७ सिया । ठिती जहण्णेण वि उक्कोसेण वि
अंतोमुहुत्त, सेस त चेव ॥

वीअो वग्गो

२. अह भते ! लोही-णीहू^८-वीहू^९-थिभगा-अस्सकण्णी-सीहकण्णी-सिउंडी-मुसुडीण^{१०}
—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति० ? एव एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव
आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं त चेव ॥
३. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

१. हालिद्दा (अ, म), हलिद् (ख, ता, स), ६. सुपासगघा (अ) ।

हालिद् (व) ।

७. अवहरिया (स) ।

२. कट्टु (अ, क, व); कट्टु (ता) ।

८. जेहू (व) ।

३. कण्हकडड (अ, स), कण्हकडलु (व) ।

९. वीहू (अ, व); वीहू (स) ।

४. पुयलइ (अ) ।

१०. मुसुडीण (ता) ।

५. नोरुहा (ख) ।

तइओ वग्गो

४. अह भते ! आय-काय-कुहुण-कुदुरुक्क-उव्वेहलिया^१-सका-सज्जा-छत्ता-वंसाणिय-कुराण^२—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति^३ ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेस जहा आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेस त चेव ॥
५. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

चउत्थो वग्गो

६. अह भते ! पाढा-मियवालकि-मधुररसा-रायवल्लि-पउमा-मोढरि-दत्ति-चडीण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति^३ ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा आलुवग्गसरिसा, नवर - ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेस त चेव ॥
७. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

पंचमो वग्गो

८. अह भते ! मासपण्णी-मुग्गपण्णी-जीवग-सरिसव-करेणुय-काओलि-खीरकाकोलि-भगि-णहि- किमिरासि- भद्दमुत्थ- णगलइ-पयुय^४-किण्हा^५-‘पउल-हढ’-हरेणुया-लोहीण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमत्ति^३ ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेस आलुवग्गसरिसा । एवं एत्थ पंचसु वि वग्गेसु पन्नासं उद्देसगा भाणियव्वा । सव्वत्थ देवा न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ ॥
९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

१. उव्वेहलिया तिव्वेहलिया (ता) ।

२. कुरवाणं (ता) ।

३. पडुय (क); पेसुय (ख); पेयुय (ब, म) ।

४. किराणा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

५. पउयलपाढे (अ, क); पउयलपाढे (ख, म,

स); पउयलपाढे (ब) ।

चउवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. उववाय २. परीमाणं, ३, ४. सघयणुच्चत्तमेव ५ सठाण ।
 ६ लेस्सा ७ दिट्ठी ८. नाणे, अण्णाणे ९. जोग १०. उवओगे ॥१॥
 ११ सण्णा १२ कसाय १३. इदिय, १४ समुग्घाया १५ वेदणा य १६ वेदे य ।
 १७. आउं १८. अज्झवसाणा, १९. अणुबघो २०- कायसवेहो ॥२॥
 जीवपदे जीवपदे, जीवाण दंडगम्मि उद्देसो ।
 चउवीसतिमम्मि सए, चउव्वीस होंति उद्देसा ॥३॥

नेरइयादीसु उववायादि-गमग-पदं

१. रायगिहे जाव एव वयासी—नेरइया णं भंतं ! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ? मणुस्सेहितो उववज्जति ? देवेहितो उववज्जति ?
 गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, मणु-स्सेहितो वि उववज्जति, नो देवेहितो उववज्जति ॥
२. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति जाव पच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?
 गोयमा ! नो एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, नो वेदिय, नो तेइदिय, नो चउरिदिय, पच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ॥
३. जइ पच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि सण्णिपच्चिदियतिरिक्ख-जोणिएहितो उववज्जति ? असण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?
 गोयमा ! सण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, असण्णिपच्चिदिय-तिरिक्खजोणिएहितो वि उववज्जति ॥

१. इय च गाथा पूर्वोक्तद्वारायाद्द्वयात् क्वचित् पूर्वं दृश्यत इति (वृ) ।

४. जइ असणिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति — किं जलचरेहितो उव-
वज्जंति ? थलचरेहितो उववज्जंति ? खहचरेहितो उववज्जंति ?
गोयमा ! जलचरेहितो उववज्जति, थलचरेहितो वि उववज्जति, खहचरेहितो
वि उववज्जंति ॥
५. जइ जलचर-थलचर-खहचरेहितो उववज्जति — किं पज्जत्तएहितो उववज्जंति ?
अपज्जत्तएहितो उववज्जति ?
गोयमा ! पज्जत्तएहितो उववज्जति, नो अपज्जत्तएहितो उववज्जति ॥
६. पज्जत्ताअसणिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जि-
त्तए, से ण भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा ॥
७. पज्जत्ताअसणिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए रयणप्पभाए
पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइ-
भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
८. ते णं भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असं-
खेज्जा वा उववज्जंति ॥
९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा^१ किसंघयणी^२ पण्णत्ता ?
गोयमा ! छेवट्टसंघयणी^३ पण्णत्ता ॥
१०. तेसि ण भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्सं असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्स ॥
११. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुडसठिया^४ पण्णत्ता ॥
१२. तेसि ण भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तिण्णि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा,
काडलेस्सा ॥
१३. ते ण भंते ! जीवा कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ॥
१४. ते ण भंते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य,
सुयअण्णाणी य ॥

१. सरीरा (ता) ।

२. संघयणा (ख, ता, स) ।

३. छेवट्ट^० (ता) ।

४. हुडसठिया (स) ।

१५. ते णं भते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि ॥
१६. ते ण भते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणगारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणगारोवउत्ता वि ॥
१७. तेसि ण भते ! जीवाण कति सण्णाओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पणत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा,
मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ॥
१८. तेसि णं भते ! जीवाणं कति कसाया पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि कसाया पणत्ता, तं जहा—कोहकसाए, भाणकसाए, माया-
कसाए, लोभकसाए ॥
१९. तेसि णं भते ! जीवाण कति इदिया पणत्ता ?
गोयमा ! पचेदिया पणत्ता, तं जहा—सोइदिए जाव फासिदिए ॥
२०. तेसि ण भते ! जीवाण कति समुग्घाया पणत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पणत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए,
मारणंतियसमुग्घाए ॥
२१. ते ण भते ! जीवा किं सायावेयगा ? असायावेयगा ?
गोयमा ! सायावेयगा वि, असायावेयगा वि ॥
२२. ते ण भते ! जीवा किं इत्थीवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा ॥
२३. तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिती पणत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥
२४. तेसि ण भते ! जीवाण केवतिया अज्झवसाणा पणत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा अज्झवसाणा पणत्ता ॥
२५. ते ण भते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था वि, अप्पसत्था वि ॥
२६. से ण भते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं
होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ॥
२७. से णं भते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए पुढवीए
नेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतिय कालं
सेवेज्जा ? केवतिय कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइ
अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडि-
मव्वहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

- २८ पज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालद्विती-
एसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइकालद्वितीएसु
उववज्जेज्जा ।
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सद्वितीएसु
उववज्जेज्जा ॥
२९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एव सच्चेव वत्तव्वया
निरवसेसा भाणियव्वा जाव' अणुबंधो त्ति ॥
३०. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालद्वितीयरयण-
प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णि^१पच्चिदियतिरिक्खजोणिएत्ति
केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल० गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ
अतोमुहुत्तमव्वभहियाइ, उक्कोसेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अव्वभहिया,
एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा २॥
३१. पज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए णं जे भविए उक्कोसकालद्वितीएसु
रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालद्वितीएसु
उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागद्वितीएसु, उक्कोसेण वि
पलिओवमस्स असखेज्जइभागद्वितीएसु उववज्जेज्जा ॥
३२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अव्वसेसं त चेव जाव'
अणुबंधो ॥
३३. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालद्वितीयरयण-
प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ता^२असण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिएत्ति
केवतिय कालं सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति० करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेणं पलिओवमस्स
असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तमव्वभहिय, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग
पुव्वकोडिमव्वभहिय,^३ एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति
करेज्जा ३॥
३४. जहण्णकालद्वितीयपज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए
रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालद्वितीएसु
उववज्जेज्जा ?

१. भ० २४।८-२६ ।

४. स० पा०—पज्जत्ता जाव करेज्जा ।

२. स० पा—पज्जत्ताअसण्णि जाव गतिरागति ।

५. पुव्वकोडिमव्वभहिय (अ, क, ख, व, म, स) ।

३. भ० २४।८-२६ ।

- गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-
भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
३५. ते णं भन्ते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, नवरं—
इमाइं तिण्णि नाणत्ताइ—आउं, अज्झवसाणा, अणुबधो य । जहण्णेणं ठिती
अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥
३६. तेसि णं भन्ते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥
३७. ते णं भन्ते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! नो पसत्था, अप्पसत्था अणुबधो अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥
३८. से णं भन्ते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए रयण-
प्पभाए जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं
अंतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्त-
मव्वहिय, एवतिय कालं सेवेज्जा, 'एवतियं कालं' गतिरागतिं करेज्जा ४॥
३९. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भन्ते ! जे भविए
जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भन्ते !
केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिती-
एसु उववज्जेज्जा ॥
४०. ते णं भन्ते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? सेसं तं चेव, ताइं चेव
तिण्णि नाणत्ताइ जाव—
४१. से णं भन्ते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ता*असण्णिपंचिदियतिरिक्ख०जोणिए
जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविनेरइए पुणरवि जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं
अंतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण वि दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमव्वहियाइ,
एवतिय कालं सेवेज्जा, *एवतिय कालं गतिरागतिं० करेज्जा ५॥
४२. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भन्ते ! जे भविए
उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भन्ते !
केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

१. नवरं (व) ।

२. भ० २४।२७ ।

३. जाव (अ, क, ख, ता, च, म, स) ।

४. भ० २४।८-२६, ३५-३७ ।

५. स० पा०—०पज्जत्ता जाव जोणिए ।

६. स० पा०—सेवेज्जा जाव करेज्जा ।

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलि-
ओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

४३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसं तं चेव, ताइं
चेव तिण्णि नाणत्ताइ जाव^१—

४४. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोस-
कालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव^२ गतिरागति करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखे-
ज्जइभाग अतोमुहुत्तमव्वहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अतो-
मुहुत्तमव्वहियं, एवतियं कालं^३ सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति^४ करेज्जा ६॥

४५. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए
रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु^५
उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-
भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

४६. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसं जहेव ओहिय-
गमएणं तहेव अणुगतव्व, नवरं—इमाइ दोण्णि नाणत्ताइ—ठिती जहण्णेणं
पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुवधो वि । अवसेसं तं चेव^६ ॥

४७. से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए^७ रय-
णप्पभाए जाव^८ गतिरागति करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं
वाससहस्सेहिं अव्वहिया, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग पुव्वकोडीए
अव्वहियं, एवतियं^९ कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति^{१०} करेज्जा ७॥

४८. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए
जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केव-
तियकालट्ठितीएसु^{११} उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिती-
एसु उववज्जेज्जा ॥

१. भ० २४।८-२६, ३५-३७ ।

२. भ० २४ २७ ।

३. सं० पा०—काल जाव करेज्जा ।

४. °काल जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

५. असंखेज्जइ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) १०. केवति जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

६. भ० २४।८-२६ ।

७. °असण्णि जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

८. भ० २४।२७ ।

९. सं० पा०—एवतियं जाव करेज्जा ।

- ४६ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? सेस तं चेव, जहा सत्तम-
गमए जाव^१—
- ५० से ण भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए^२
जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव^३ गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं
वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं वि पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भ-
हिया, एवतिय^४ *कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं^५ करेज्जा ८॥
५१. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए^६ ण भंते ! जे भविए
उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु^७ उववज्जित्तए, से ण भंते ! केव-
तियकालट्ठितीएसु^८ उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं पल्लिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेणं वि पल्लि-
ओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
५२. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? सेसं जहा सत्तमगमए
जाव^९—
- ५३ से ण भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए^{१०}
उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव^{११} गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं पल्लिओवमस्स
असखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं वि पल्लिओवमस्स असखेज्जइ-
भाग पुव्वकोडीए अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, 'एवतिय काल'^{१२} गतिरागतिं
करेज्जा ९। एव एते ओहिया तिण्णि गमगा, जहण्णकालट्ठितीएसु तिण्णि
गमगा, उक्कोसकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, सव्वेते नव गमगा भवति ॥
- ५४ जइ सण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति —किं सखेज्जवासाउयसण्णि-
पच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो^{१३} उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिपच्चिदिय-
तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?

१ भ० २४।४६।

७. °काल जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

२. °ट्ठितीय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क,
ख, ता, व, म, स)।

८ भ० २४।४६।

९ °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क,
ख, ता, व, म, स)।

३. भ० २४।२७।

४. स० पा०—एवतिय जाव करेज्जा।

१० भ० २४।२७।

५. °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क,
ख, ता, व, म, स)।

११ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

१२ °तिरिक्ख जाव (अ, क, ख, ता, व, म,
स)।

६. रयण जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

- गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहि^१तो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउय^२सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहि^३तो^० उववज्जंति ॥
५५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहि^४तो^१ उववज्जति—किं जल-चरेहि^५तो उववज्जति—पुच्छा !
- गोयमा ! जलचरेहि^६तो उववज्जंति, जहा असण्णो जाव^७ पज्जत्तएहि^८तो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहि^९तो उववज्जंति ॥
५६. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जत्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
- गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए ॥
५७. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु उववज्जत्तए, से ण भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
- गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
५८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? जहेव^{१०} असण्णी ॥
५९. तैसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंघयणी पणत्ता ?
- गोयमा ! छव्विहसंघयणी पणत्ता, तं जहा—वइरोसभनारायसघयणी, उसभनारायसंघयणी जाव^{११} छेवट्ठसंघयणी^{१२} । सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ॥
६०. तैसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किसंठिया पणत्ता ?
- गोयमा ! छव्विहसंठिया पणत्ता, तं जहा—समच्चउरंसा, निग्गोहा जाव^{१३} हुडा ॥
६१. तैसि णं भंते ! जीवाण कति लेस्साओ पणत्ताओ ?
- गोयमा ! छल्लेस्साओ पणत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ।
- दिट्ठो ति विहा वि । तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । जोगो ति विहो वि । सेसं जहा असण्णीणं जाव^{१४} अणुबंधो, नवर—पच समुग्धाया आदिल्लगा । वेदो ति विहो वि, अवसेसं तं चेव जाव—

१. सं० पा०—असंखेज्जवासाउय जाव उव-
वज्जति ।

४. भ० २४।८ ।

२. ०पंचिदिय जाव (अ, क, ख, ता, व, म,
स) ।

५. ठा० ९।३० ।

३. सेवट्ठ^० (अ, ख, व, म); छेवट्ठ^० (ता) ।

७. भ० १४।८ ।

३. भ० २४।४, ५ ।

८. भ० २४।१६-२६ ।

६२. से णं भंते ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए^१ रयणप्पभाए जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
 गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडोहिं अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १॥
६३. पज्जत्तसंखेज्ज^२ वासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! ° जे भविए जहण्णकाल^३ द्वितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए^४, से णं भते ! केवतियकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सद्विती-एसु उववज्जेज्जा ॥
६४. ते णं भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? एवं सो चेव पढमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव^५ कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससह-स्सेहिं अब्भहियाओ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा २॥
६५. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमद्वितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा । अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्ज-वसाणो सो चेव पढमगमो नेयव्वो जाव^६ कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥
६६. जहण्णकालद्वितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु^७ उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा ॥
६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव गमओ, नवरं — इमाइं अट्ठ नाणत्ताइं—१. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेण षण्णुपुहत्तं २. लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ ३. नो

१. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ४. भ० २४।५८-६२ ।

ख, ता, व, म, स) ।

५. भ० २४।५७-६२ ।

२. स० पा०—पज्जत्तसंखेज्ज जाव जे ।

६. °पुढवि जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

३. स० पा०—जहण्णकाल जाव से ।

सम्मद्विटी, मिच्छाद्विटी, नो सम्मामिच्छाद्विटी ४. नो नाणी, दो अण्णाणा नियमं ५. समुग्घाया आदिल्ला तिण्णि ६. आउं ७. अज्झवसाणा ८. अणुवधो य जहेव असण्णीण । अवसेसं जहा पढमगमए जाव^१ कालादेसेणं जह्णणेण दसवाससहस्साइं अतोमुहुत्तमव्वहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि अतोमुहुत्तेहि अव्वहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-
गति करेज्जा ४॥

६८ सो चेव जह्णणकालद्वितीएसु उववण्णो जह्णणेण दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सद्वितीएसु उववज्जेज्जा ॥

६९. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सो चेव चउत्थो गमयो निरवसेसो भाणियव्वो जाव^१ कालादेसेण जह्णणेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्वहियाइं, उक्कोसेण चत्तालीस वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ५॥

७०. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जह्णणेण सागरोवमद्वितीएसु, उक्को-
सेण वि सागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७१ ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव^१ कालादेसेण जह्णणेण सागरोवम अतोमुहुत्त-
मव्वहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

७२. उक्कोसकालद्वितीयपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए^४ ण भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-
कालद्वितीएसु उववज्जेज्जा !

गोयमा ! जह्णणेण दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो^५ चेव पढमगमओ नेयव्वो,^६ नवरं—ठिती जह्णणेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एव अणुवधो वि, सेस तं चेव । काला-
देसेणं जह्णणेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अव्वहिया, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७॥

१. भ० २४।५८-६२ ।

२. भ० २४।६७ ।

३. भ० २४।६७ ।

४. ०वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

५. एएसिं (अ, क, ख, ता व, स) ।

६. भ० २४।५८-६२ ।

७४. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
७५. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव^१ भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८ ॥
७६. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए^२ णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु^३ •रयणप्पभापुढविनेरइएसु^४ उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
७७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सो चेव सत्तमगमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव^५ भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ९ । एवं एते नव गमका । उक्खेव-निकखेवओ नवसु वि जहेव^६ असण्णीण ॥
७८. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
७९. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जंतगस्स लद्धी सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा जाव^७ भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमव्वहियं, उक्कोसेणं वारस सागरोवमाइं चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा । एवं रयणप्पभापुढविगमसरिसा नव वि गमगा भाणियव्वा, नवर-सव्वगमएसु वि नेरइयट्ठिती-संवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा, एवं जाव छट्ठपुढवि त्ति, नवरं-नेरइयठिई जा जत्थ पुढवीए जहण्णुक्कोसिया सा तेणं

१. भ० २४।७३ ।

४. भ० २४।७३ ।

२. °पज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

५. असन्नि-प्रकरणं ४ सूत्राव ५३ पर्यन्तं विद्यते ।

६. भ० २४।५८-६२ ।

३. सं० पा०—उक्कोसकालट्ठितीएसु जाव उववज्जित्तए ।

चेव कमेण चउगुणा कायव्वा । वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीस सागरोवमाइं
चउगुणिया भवति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठि, तमाए अट्ठा-
सीइं । संघयणाइं—वालुयप्पभाए पंचविहसंघयणी, तं जहा—वइरोसभनाराय-
संघयणी जाव^१ खीलियासंघयणी^२, पंकप्पभाए चउव्विहसंघयणी, धूमप्पभाए
तिविहसंघयणी, तमाए दुविहसंघयणी, त जहा—वइरोसभनारायसंघयणी य,
उसभनारायसंघयणी य, सेस त चेव ॥

८०. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसणिपचिदियतिरिक्खजोणिए^३ ण भते ! जे भविए
अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवत्तिकालट्ठितीएसु
उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण वावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवम-
ट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८१. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव रयणप्पभाए
नव गमका, लद्धी वि सच्चेव, नवर—वइरोसभनारायसंघयणी । इत्थिवेदगा
न उववज्जति, सेस त चेव जाव^४ अणुवधो त्ति । सवेहो भवादेसेणं जहण्णेण
तिणिण भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गहणाइं । कालादेसेण जहण्णेण वावीस
सागरोवमाइ दोहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ
चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-
गति करेज्जा १ ॥

८२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति ।
कालादेसेणं जहण्णेण कालादेसो वि तहेव जाव^५ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहि-
याइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा २ ॥

८३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव^६ अणुवधो त्ति ।
भवादेसेण जहण्णेण तिणिण भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं पच भवग्गहणाइ । काला-
देसेणं जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण
छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा,
एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ३ ॥

८४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सच्चेव रयणप्पभपुढावेज्जहण्णकाल-
ट्ठितीयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव^७ भवादेसो त्ति, नवर—पढमं संघयणं, नो
इत्थिवेदगा । भवादेसेण जहण्णेण तिणिण भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गह-

१. ठा० ६।३० ।

२. कीलिया ० (अ) ।

३. वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क,
ख, ता, व, म, स) ।

४. भ० २४।५८-६२ ।

५. भ० २४।६३, ६४ ।

६. भ० २४।६५ ।

७. भ० २४।६६, ६७ ।

णाइ । कालादेसेण जहण्णेणं वावीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहि-
याइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय
काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ४ ॥

८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो
भाणियव्वो जाव' कालादेसो त्ति ५ ॥

८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव' अणुवधो त्ति । भवा-
देसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं पच्च भवग्गहणाइ, कालादेसेण
जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेणं
छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा,
एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६ ॥

८७. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जहण्णेणं वावीससागरोवमट्ठितीएसु,
उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८८. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसा सच्चेव
सत्तमपुढविपढमगमवत्तव्वया भाणियव्वा जाव' भवादेसो त्ति, नवरं—ठिती
अणुवधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेस त चेव ।
कालादेसेण जहण्णेण वावीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ,
उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय
काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७ ॥

८९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी सवेहो वि तहेव' सत्तम-
गमगसरिसो ८ ॥

९०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, 'एस चेव' लद्धी जाव' अणुवधो त्ति ।
भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण पच्च भवग्गहणाइ । काला-
देसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण
छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा,
एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ ॥

९१. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—किं सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असण्णि-
मणुस्सेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो असण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ॥

९२. जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो

१. भ० २४।८४ ।

२. भ० २४।८४ ।

३. भ० २४।८१ ।

४. भ० २४।८७, ८८ ।

५. एवं सच्चेव (व) ।

६. भ० २४।८७, ८८ ।

उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो' उववज्जति ?

गोयमा ! सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो असखेज्जवासा-
उयसण्णिमणुस्सेहितो' उववज्जति ॥

६३. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो' उववज्जति—कि पज्जत्तसखेज्जवासा-
उयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? अपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो
उववज्जति ?

गोयमा ! पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो अपज्जत्त-
सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ॥

६४. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जि-
त्तए, से ण भते ! कतिमु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! सत्तमु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्त-
माए ॥

६५. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए
नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएमु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु
उववज्जेज्जा ॥

६६. ते णं भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा उवव-
ज्जति । सघयणा छ, सरीरोगाहणा जहण्णेणं अगुलपुहत्तं, उक्कोसेण पंचघणु-
सयाइ । एवं सेस जहा सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणियाण जाव' भवादेसो त्ति,
नवर—चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । छ समुग्घाया केवलिवज्जा ।
ठिती अणुवधो य जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी, सेसं तं चेव ।
कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि
सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं
काल गतिरागति करेज्जा १॥

६७. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएमु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण
जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पुव्व-
कोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एव-
तियं काल गतिरागति करेज्जा २॥

१. असखेज्ज जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. असखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता,

व, म, स) ।

३. सखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व,

म, स) ।

४. भ० २४।५६-६२ ।

६८. सो चेव उक्कोसकालट्टितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवम मासपुहत्तमव्वमहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि पुव्वकोडीहि अव्वमहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-
गतिं करेज्जा ३॥
६९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्टितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवर—इमाइ पच्च नाणत्ताइ—१. सरोरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्त, उक्कोसेणं वि अंगुलपुहत्त २ तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ३ पच्च समुग्घाया आदित्ता ४, ५ ठिती अणुबधो य जहण्णेणं मासपुहत्त, उक्कोसेणं वि मास-
पुहत्त, सेस त चेव जाव' भवादेसोत्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमव्वमहियाइ, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइ चउहि मासपुहत्तेहि अव्वमहियाइ एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ४॥
१००. सो चेव जहण्णकालट्टितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा', नवर—कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमव्वमहियाइ, उक्कोसेणं चत्तालीस वाससहस्साइ चउहि मासपुहत्तेहि अव्वमहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ५॥
१०१. सो चेव उक्कोसकालट्टितीएसु उववण्णो, एस चेव गमगो, नवर—कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवम मासपुहत्तमव्वमहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइ चउहि मासपुहत्तेहि अव्वमहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गति-
रागतिं करेज्जा ६॥
१०२. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्टितीओ जाओ, सो चेव पढमगमओ नेयव्वो', नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पच्चघणुसयाइ, उक्कोसेणं वि पच्चघणुसयाइ । ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेणं वि पुव्वकोडी । एव अणुबधो वि । काला-
देसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अव्वमहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अव्वमहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा ७॥
१०३. सो चेव जहण्णकालट्टितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया', नवर—कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अव्वमहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहि अव्वमहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा ८॥
१०४. सो चेव उक्कोसकालट्टितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवर—

कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१०५. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु^१ उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु^२ उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१०६. ते णं भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? सो चेव रयणप्पभपुढविगमओ नेयव्वो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचघणुसयाइ^३ । ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं अणुवंधो वि । सेसं तं चेव जाव^४ भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं वासपुहत्तमव्भहिय, उक्कोसेण वारस सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा । एवं एसा ओहि-एसु तिसु गमएसु मणुसस्स लद्धी, नाणत्त -नेरइयट्ठितं^५ कालादेसेण सवेहं च जाणेज्जा १-३॥

१०७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव लद्धी, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेण रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं । ठिती जहण्णेण वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं । एवं अणुवंधो वि । सेस जहा^६ ओहियाणं । संवेहो उवजुज्जिऊण भाणियव्वो ४-६॥

१०८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ । तस्स वि तिसु वि गमएसु इमं नाणत्तं—सरीरोगाहणा जहण्णेण पंचघणुसयाइ, उक्कोसेण वि पंचघणुसयाइ । ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एव अणुवंधो वि । सेसं जहा^७ पढमगमए, नवरं—नेरइयठिइं कायसवेहं च जाणेज्जा ७-९ । एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्क सघयण परिहायति जहेव तिरिक्खजोणिगाण । कालादेसो वि तहेव, नवरं—मणुस्सट्ठिती जाणियव्वा^८ ॥

१०९. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

१. नेरइएसु जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । ५. भ० २४।१०५, १०६ ।

२. केवति जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) । ६. भ० २४।१०५, १०६ ।

३. भ० २४।६६ ।

७. भाणियव्वा (क, म) ।

४. ट्ठिती (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

- गोयमा ! जहण्णेणं वावीससागरोवमट्टितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवम-
ट्टितीएसु उववज्जेज्जा ॥
११०. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव सक्क-
रप्पभापुढविगमओ नेयव्वो, नवर—पढमं सघयणं, इत्थिवेदगा न उववज्जति,
सेसं तं चेव जाव^१ अणुबधो त्ति । भवादेसेण दोभवग्गहणाइ । कालादेसेणं
जहण्णेणं वावीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरो-
वमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा-
गति करेज्जा १॥
१११. सो चेव जहण्णकालट्टितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—नेरइयट्ठित्ति
सवेह च जाणेज्जा २॥
११२. सो चेव उक्कोसकालट्टितीएसु उववण्णो, एस् चेव वत्तव्वया, नवर—सवेह च
जाणेज्जा ३॥
११३. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्टितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव
वत्तव्वया, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणि-
पुहत्त । ठित्ती जहण्णेण वासपुहत्त, उक्कोसेण वि वासपुहत्त । एव अणुबधो वि ।
सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो ४-६॥
११४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्टितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव
वत्तव्वया, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण पच्चघणुसयाइ, उक्कोसेण वि पच्चघणु-
सयाइ । ठित्ती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबधो वि ।
नवसु वि एतेसु गमएसु नेरइयट्ठित्ति संवेह च जाणेज्जा । सव्वत्थ भवग्गहणाइ
दोण्णि जाव नवमगमए । कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए
अब्भहियाइ उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एव-
तिय काल सेवेज्जा एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥
११५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव^२ विहरइ ॥

बीओ उहेसो

११६. रायगिहे जाव एवं वयासी—असुरकुमारा णं भंते ! कओहितो उववज्जति—
कि नेरइएहितो उववज्जति ? तिरिक्खजोगिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, मणु-
स्सेहितो उववज्जति, नो देवेहितो उववज्जति । एवं जहेव नेरइयउदेसए
जाव'—

११७. पज्जत्ताग्रसण्णिपाचिदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए असुरकुमारेसु
उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितोएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितोएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइ-
भागट्ठितोएसु उववज्जेज्जा ॥

११८. ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एव रयणप्पभागमग-
सरिसा नव वि गमा भाणियव्वा^१, नवरं—जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितोओ
भवति ताहे अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था तिसु वि गमएसु । अवसेसं
तं चेव १-६॥

११९. जइ सण्णिपाचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउय-
सण्णिपाचिदियतिरिक्खजोणिएहितो^१ उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिपाचि-
दियतिरिक्खजोणिएहितो^१ उववज्जति ?

गोयमा ! सखेज्जवासाउय जाव उववज्जति, असखेज्जवासाउय जाव उवव-
ज्जति ॥

१२०. असखेज्जवासाउयसण्णिपाचिदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए असुर-
कुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितोएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितोएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितोएसु
उववज्जेज्जा ॥

१२१. ते ण भते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उवव-
ज्जति । वइरोसभनारायसघयणी । ओगाहणा जहण्णेणं घणुपुहत्तं, उक्कोसेण
छ गाउयाइं । समचउरंससंठिया^१ पण्णत्ता । चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाओ । नो
सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, नियम
दुअण्णाणी—मत्तिअण्णाणी सुयअण्णाणी य । जोगो तिविहो वि । उवओगो
दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया । तिण्णि समु-
ग्घाया आदिल्ला^१ । समोहया वि मरति, असमोहया वि मरति । वेदणा दुविहा
वि—सायावेदगा, असायावेदगा । वेदो दुविहो वि—इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा

१. भ० २४१२-६ ।

२. भ० २४१८-५३ ।

३. °सण्णि जाव (अ, क, ख, ता, व, य, स) ।

४. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)

५. समचउरंससंठाणमठिया (स) ।

६ आदिल्ला (अ, क, व, म, स) ।

वि, नो नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुवधो जहेव ठिती । कायसवेहो भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अम्भहिया, उक्कोसेण छप्पलिओवमाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

१२२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो—एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुर-कुमारट्ठिं सवेह च जाणेज्जा २ ॥

१२३ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा—एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती से जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ । एवं अणुवधो वि । कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा, सेस त चेव ३ ॥

१२४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥

१२५. ते ण भते । जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस त चेव जाव भवादेसो त्ति, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण घणुपुहत्त, उक्कोसेणं सातिरेग घणुसहस्स । ठिती जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि सातिरेगा पुव्वकोडी । एव अणुवधो वि । कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अम्भहिया, उक्कोसेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४ ॥

१२६ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुर-कुमारट्ठिं सवेह च जाणेज्जा ५ ॥

१२७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु, उक्कोसेण वि सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा, सेस त चेव, नवर—कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६ ॥

१२८ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमो भाणियव्वो,^१ नवर—ठिती जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ । एव अणुवधो वि । कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ दसहि वाससहस्सेहि अम्भहियाइ, उक्कोसेण छ पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७ ॥

१. चेव अप्पणा (अ, क, ख, ता, व, य) ।

२. अ० २४१२०, १२१ ।

१२६. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—असुर-कुमारद्विति सवेहं च जाणेज्जा ८ ॥
१३०. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिपलिओवमाइं, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण छप्पलि-ओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ ॥
१३१. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—कि जलचरेहितो उववज्जति ? एव जाव^१—
१३२. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगसागरोवमद्विती-एसु उववज्जेज्जा ॥
१३३. ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव एतेसि रयणप्पभ-पुढविगमगसरिसा नव गमगा नेयव्वा,^२ नवर जाहे अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ भवइ ताहे तिसु वि गमएसु, इम नाणत्त—चत्तारि लेस्साओ, अउभ्वसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था । सेसं त चेव । सवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो १-६ ॥
१३४. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—कि सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असण्णि-मणुस्सेहितो उववज्जति ? गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो असण्णिमणुस्सेहितो उववज्जंति ॥
१३५. जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? गोयमा ! सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो^३ उववज्जति, 'असखेज्जवासाउय-सण्णिमणुस्सेहितो वि'^४ उववज्जति ॥
१३६. असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से ण भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमद्वितीएसु उववज्जेज्जा । एव असखेज्जवासाउयतिरिक्खजोणियसरिसा आदित्ता तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवर—सरीरोगाहणा पढमबितिएसु गमएसु जहण्णेणं सातिरे-गाइ पंचघणुसयाइ, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइं, सेस त चेव । तइयगमे ओगा-

१. भ० २४।४, ५ ।

२. भ० २४।५८-७७ ।

३. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)

४. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

हणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं । सेसं जहेव तिरिक्खजोणियाणं १-३ ॥

१३७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि जहण्णकालट्ठितीयतिरिक्खजोणियसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइ पंचघणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइ पंचघणुसयाइ । सेसं त चेव ४-६ ॥

१३८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि ते चेव पच्छिल्ला^१ तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइ । अक्कोसेसं त चेव ७-९ ॥

१३९. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—किं पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? अपज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो अपज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ॥

१४०. पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगासागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१४१. ते ण भते ! जोवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव एतेसि रयणप्पभाए उववज्जमाणाण नव गमगा तहेव इह वि नव गमगा भाणियव्वा^१, नवरं—सवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो । सेस त चेव १-९ ॥

१४२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

तइओ उहेसो

१४३. रायगिहे जाव एवं वयासी—नागकुमाराणं भते ! कओहितो उववज्जति—किं नेरइएहितो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, मणुस्सेहितो उववज्जति, नो देवेहितो उववज्जति ॥

१४४. जइ तिरिखजोणिएहि तो ०? एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया तथा एतेसि पि जाव^१ असण्णित्ति १-६ ॥
१४५. जइ सण्णिपचिदियतिरिखजोणिएहि तो उववज्जति—किं संखेज्जवासाउय ०? असखेज्जवासाउय ०?
- गोयमा ! सखेज्जवासाउय, असखेज्जवासाउय जाव उववज्जति ॥
१४६. असखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिखजोणिए ण भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण देसूणदुपलिओवमट्ठिती-एसु उववज्जेज्जा ॥
१४७. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियव्वो जाव^१ भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडो दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेणं देसूणाइ पंच पलिओवमाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा १ ॥
१४८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—नागकुमारट्ठित्ति संवेहं च जाणेज्जा २॥
१४९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ । सेसं तं चेव जाव^१ भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेणं देसूणाइ चत्तारि पलिओवमाइ, उक्कोसेण देसूणाइ पच पलिओवमाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा ३॥
१५०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जहण्णकालट्ठितियस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ॥
१५१. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तहेव तिण्णि गमगा जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठित्ति संवेह च जाणेज्जा । सेसं त चेव ७-९ ॥
१५२. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिखजोणिएहि तो उववज्जति—किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय ०? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ०?
- गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ॥
१५३. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिखजोणिए ण भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

- गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं । एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तज्वया तहेव इह वि नवसु वि गम-
एसु, नवर—नागकुमारद्विती सवेहं च जाणेज्जा । सेसं त चेव १-६ ॥
१५४. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—किं सण्णिमणुस्सेहितो ? असण्णिमणुस्सेहितो ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो, नो असण्णिमणुस्सेहितो, जहा असुरकुमारेसु उव-
वज्जमाणस्स जाव'—
- १५५ असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जि-
त्तए, से णं भते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइं दो पलिओवमाइ ।
एवं जहेव असखेज्जवासाउयाण तिरिक्खजोणियाण नागकुमारेसु आदिल्ला
तिण्णि गमगा तहेव इमस्स वि, नवर—पढमवित्तिएसु गमएसु सरीरोगाहणा
जहण्णेणं सातिरेगाइं पचघणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइ । तइयगमे
ओगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइ । सेस तं
चेव १-३ ॥
- १५६ सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स
चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ॥
- १५७ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स
चेव उक्कोसकालद्वितीयस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवर—नागकुमार-
द्विती सवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव ७-६ ॥
१५८. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—किं पज्जत्तसखेज्ज ?
अपज्जत्तसखेज्ज ?
गोयमा ! पज्जत्तसखेज्ज, नो अपज्जत्तसखेज्ज ॥
- १५९ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जि-
त्तए, से ण भते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण देसूणदोपलिओवमद्वि-
तीएसु उववज्जेज्जा । एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी
निरवसेसा नवसु गमएसु, नवर—नागकुमारद्विती सवेह च जाणेज्जा १-६ ॥
१६०. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

१६१. अरुसेसा सुवण्णकुमारादी जाव थणियकुमारा एए अट्ट वि उद्देसगा जहेव नागकुमारा तहेव निरुवसेसा भाणियव्वा ॥
 १६२. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

दुवालसमो उद्देसो

१६३. पुढविकाइया णं भंते ! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहिसो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जति ?
 गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जंति ॥
 १६४. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो एव जह्वा वक्कतीए उववाओ जाव—
 १६५. जइ वायरपुढविकाइयएगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—कि पज्जत्ता-बादर जाव उववज्जंति, अपज्जत्ताबादरपुढवि ?
 गोयमा ! पज्जत्ताबादरपुढवि, अपज्जत्ताबादरपुढवि जाव उववज्जति ॥
 १६६. पुढविकाइए ण भते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जितए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
 १६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण—पुच्छा ।
 गोयमा ! अणुसमय अविरहिया असंखेज्जा उववज्जति । छेवट्टसघयणी । सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग । मसूराचदासठिया । चत्तारि लेस्साओ । णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, दो अण्णाणा नियमं । नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । एगे फासिदिए पणत्ते । तिण्णि समुग्घाया । वेदणा दुविहा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेण

१. देवेहितो वि (अ) ।

२. प० ६ ।

३. सेवट्ट° (अ, म); सेवट्ट° (क, ख); छेवट्ट°

(त) ।

- अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । अज्भवसाणा पसत्था वि^१, अपसत्था वि । अणुबधो जहा ठिती ॥
१६८. से ण भते ! पुढविकाइए पुणरवि पुढविकाइएत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ? गोयमा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं असखेज्जाइ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज काल एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ॥
१६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, एव चेव वत्तव्वया निरवसेसा २ ॥
१७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु । सेस त चेव जाव अणुबधो त्ति, नवर—जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जेज्जा । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण 'छावत्तर वाससयसहस्स', एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३ ॥
१७१. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमिल्लओ गमओ भाणियव्वो^२ नवर—लेस्साओ तिण्णि । ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त । अप्पसत्था अज्भवसाणा । अणुबधो जहा ठिती । सेस त चेव ४ ॥
१७२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो सच्चेव चउत्थगमगवत्तव्वया भाणियव्वो^३ ५ ॥
१७३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा जाव भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेणं बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीइं वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अव्वहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ६ ॥
१७४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एव तइयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियव्वो^४, नवर—अप्पणा से ठिई जहण्णेण बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं ७ ॥

१. × (ता) ।

४. म० २४।१७।१ ।

२. छावत्तरि वाससहस्सुत्तर सयसहस्स (स) ।

५. म० २४।१७० ।

३. म० २४।१६६, १६७ ।

१७५. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । एवं जहा सत्तमगमगो जाव' भवादेसो । कालादेसेण जहण्णेणं बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं अट्ठासीइ वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८॥

१७६. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसवाससहस्सद्वितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सद्वितीएसु, एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा' जाव' भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं चोयालीस वाससहस्साइ, उक्कोसेण छावत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९॥

१७७. जइ आउक्काइयएगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—किं सुहुमआउ० ? वादरआउ० ? एव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविककाइयाणं ॥

१७८. आउक्काइए ण भते ! जे भविए पुढविककाइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवइकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तद्वितीएसु उक्कोसेण बावीसवाससहस्सद्वितीएसु उववज्जेज्जा । एव पुढविककाइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवर—थिवुगाविदुसठिए । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइ । एव अणुबधो वि । एव तिसु वि गमएसु । ठिती संवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमनवमेसु गमएसु—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ, सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण असंखेज्जाइ भवग्गहणाइ । ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं सोलसुत्तर वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । छट्ठे गमए कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । सत्तमे गमए कालादेसेणं जहण्णेण सत्त वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सोलसुत्तर वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । अट्ठमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीस वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । नवमे गमए भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ,

कालादेसेणं जहण्णेणं एकूणतीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससय-
सहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं नवसु
वि गमएसु आउक्काइयिठिई जाणियव्वा १-६॥

१७९. जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जति० ? तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया,
नवर—नवसु वि गमएसु तिण्णि लेस्साओ । तेउक्काइया णं सुईकलावसठिया ।
ठिई जाणियव्वा । तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेण वावीस वाससहस्साइं
अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइं वारसहि राइदिएहि
अव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा । एवं
सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-६॥

१८०. जइ वाउक्काइएहिंतो० ? वाउक्काइयाण वि एव चेव नव गमगा जहेव तेउक्का-
इयाण, नवर—पडागासठिया पणत्ता । सवेहो वाससहस्सेहि कायव्वो । तइय-
गमए कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्को-
सेणं एग वाससयसहस्स । एव सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-६॥

१८१. जइ वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जति० ? वणस्सइकाइयाण आउक्काइयगम-
सरिसा नव गमगा भाणियव्वो, नवर - नाणासठिया । सरीरोगाहणा पढमएसु
पच्छिलएसु य तिसु गमएसु जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण
सातिरेग जोयणसहस्सं, मज्झिलएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाणं । सवेहो
ठिती य जाणियव्वो । तइयगमे कालादेसेणं जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ
अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीसुत्तरं वाससयसहस्स, एवतिय कालं
सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा । एव सवेहो उवजुजिऊण भाणि-
यव्वो १-६॥

१८२. जइ बेदिएहिंतो उववज्जति—किं पज्जत्ताबेदिएहिंतो उववज्जति ? अपज्जत्ता-
बेदिएहिंतो उववज्जति ?

गोयमा ! पज्जत्ताबेदिएहिंतो उववज्जति, अपज्जत्ताबेदिएहिंतो वि उव-
वज्जति ॥

१८३. बेदि ए भते ! जे भविए पुढविककाइएसु उववज्जत्ताए, से णं भते ! केवतिकाल-
द्वितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेण वावीसवाससहस्सद्वितीएसु ॥

१८४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ?

गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असं-
खेज्जा वा उववज्जति । खेवट्टसंघयणी । ओगाहणा जहण्णेणं अगुलस्स असंखेज्ज-
इभाग, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं । हुंडसठिया । तिण्णि लेसाओ । सम्मदिट्ठी

१. उववज्जिऊण (अ, ता, म), उवजुजिऊण (क); उववज्जित्तण (व) ।

वि, मिच्छादिद्वी वि, नो सम्मामिच्छादिद्वी । दो नाणा, दो अण्णाणा नियम । नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि । उवग्रो गो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । दो इदिया पण्णत्ता, त जहा—जिब्भदि ए य फासिदि ए य । तिण्णि समुग्घाया । सेस जहा पुढविकाइयाण, नवर—ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण वारस सवच्छराइ । एव अणुबधो वि । सेस त चेव । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्जं काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१८५. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २॥

१८६. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो एस चेव वेदियस्स लद्धी, नवरं—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ३॥

१८७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु, नवरं—इमाइ सत्ता नाणत्ताइ—१. सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं २. नो सम्मदिद्वी, मिच्छादिद्वी, नो सम्मामिच्छादिद्वी ३. दो अण्णाणा नियमं ४. नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ५. ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अतोमुहुत्तं ६. अउभवसाणा अपसत्था ७. अणुबधो जहा ठिती । सवेहो तहेव आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ४-६॥

१८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—तिसु वि गमएसु, ठिती जहण्णेण वारस सवच्छराइ, उक्कोसेण वि वारस सवच्छराइ । एव अणुबधो वि । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण उवजुजिऊण भाणियव्व जाव नवमे गमए जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ वारसहि सवच्छरेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

१८९. जइ तेइदिहो उववज्जंति० ? एवं चेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेण अणुलस्स असखेज्जइभाणं,

उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइ^१ । तिण्णि इंदियाइ । ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण एगुणपन्नं राइदियाइ । तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्वमहियाइ, उक्कोसेणं अट्ठासीति वाससहस्साइ छण्णउयराइदियसयमव्वमहियाइ,^२ एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरा- गतिं करेज्जा । मज्झिमा तिण्णि गमगा तहेव, पच्छिमा वि तिण्णि गमगा तहेव, नवरं—ठिती जहण्णेण एगुणपन्नं राइदियाइ; उक्कोसेण वि एगुणपन्नं राइदियाइ । सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-६ ॥

१६०. जइ चउरिंदिएहितो उववज्जति० ? एव चेव चउरिंदियाण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—एतेसु चेव ठाणेषु नाणत्ता जाणियव्वा । सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण य छम्मासा । एवं अणुबंधो वि । चत्तारि इंदियाइ । सेस तहेव जाव नवमगमए—कालादेसेण जहण्णेण वावीसं वाससहस्साइं छाहि मासेहि अव्वमहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहि अव्वमहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १-६ ॥

१६१ जइ पच्चिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं सण्णिपच्चिंदियतिरिक्ख- जोणिएहितो उववज्जति ? असण्णिपच्चिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ? गोयमा ! सण्णिपच्चिंदिय, असण्णिपच्चिंदिय ॥

१६२. जइ असण्णिपच्चिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं जलचरेहितो उववज्जति जाव^३ किं पज्जत्तएहितो उववज्जति ? अपज्जत्तएहितो उवव- ज्जति ?

गोयमा ! पज्जत्तएहितो वि उववज्जति, अपज्जत्तएहितो वि उववज्जति ॥

१६३. असण्णिपच्चिंदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जि- त्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ॥

१६४. ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एव जहेव वेइदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव,^४ नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइ- भागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । पच्च इंदिया । ठिती अणुबंधो य जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी । सेस त चेव । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दो अतो- मुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतोए वाससहस्सेहि अव्वमहियाओ,

१. कोसा (ता) ।

३. भ० २४।४, ५ ।

२. छण्णउइ० (स) ।

४. भ० २४।१८४ ।

एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । नवसु वि गमएसु कायसंवेहो—भवदेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेणं उवज्जुजिऊण भाणियव्व, नवरं—मज्झिमएसु तिसु गमएसु जहेव' वेइ-दियस्स, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एतस्स चैव पढमगमएसु, नवरं—ठिती अणुबधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेणं वि पुव्वकोडी । सेसं त चैव जाव नवमगमएसु—जहण्णेणं पुव्वकोडी वावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्को-सेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-६ ॥

१६५. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयं ? असंखेज्जवासाउयं ?

गोयमा ! संखेज्जवासाउयं, नो असंखेज्जवासाउयं ।

१६६. जइ संखेज्जवासाउयं किं जलयरेहितो ? सेसं जहा असण्णीणं जाव'—

१६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एवं जहा' रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सण्णिस्स तहेव इह वि, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । सेसं तहेव जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं संवेहो नवसु वि गमएसु जहा असण्णीणं तहेव निरवसेसो' । लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चैव, मज्झिमएसु तिसु वि गमएसु एस चैव, नवरं—इसाइं नव नाणत्ताइं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्को-सेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं । तिण्णि लेसाओ । मिच्छादिट्ठी । दो अण्णाणा । कायजोगी । तिण्णि समुग्घाया । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं । अप्पसत्था अज्झवसाणा । अणुबधो जहा ठिती । सेसं तं चैव । पच्छिल्लएसु तिसु वि गमएसु जहेव पढमगमए, नवरं—ठिती अणुबधो य—जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेणं वि पुव्वकोडी । सेसं त चैव १-६ ॥

१६८. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—किं सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असण्णि-मणुस्सेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, असण्णिमणुस्सेहितो वि उववज्जति ॥

१६९. असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जितए, से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणि-

यस्स जहण्णकालट्ठितीयस्स तिण्णि गमगा तहा एयस्स वि ओहिया तिण्णि गमगा भाणियव्वा तहेव निरवसेस १-३। सेसा छ न भण्णति ॥

२००. जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—कि संखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ॥

२०१. जइ संखेज्जवासाउय० कि पज्जत्तासंखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय० ?

गोयमा ! पज्जत्तासंखेज्जवासाउय, अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव उववज्जति ॥

२०२. सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीयएसु उववज्जति ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीयएसु, उक्कोसेण वावीसवाससहस्सट्ठितीयएसु ॥

२०३. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स तहेव तिसु वि गमएसु लद्धी, नवर—ओगाहणा जहण्णेणं अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण पचधणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी । एव अणुवधो । सवेहो नवसु गमएसु जहेव सण्णिपंचिदियस्स । मज्झिमलएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सण्णिपंचिदियस्स मज्झिमलएसु तिसु । सेस त चेव निरवसेसं । पच्छिल्ला तिण्णि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण पच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइ । ठिती अणुवधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेस तहेव १-६॥

२०४. जइ देवेहितो उववज्जति—कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमंतरदेवेहितो, जोइसियदेवेहितो, वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति जाव वेमाणियदेवेहितो वि उववज्जति ॥

२०५. जइ भवणवासिदेवेहितो उववज्जति—कि असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ॥

२०६. असुरकुमारेण भते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीयएसु उववज्जेज्जा ?

१. तहेव नवर पच्छिल्लएसु गमएसु संखेज्जा (ख, ता, व, म) ।

उववज्जति नो असखेज्जा उववज्जति (अ,

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्कोसेण वावीसवाससहस्सद्वितीएसु ॥

२०७. ते णं भंते ! जीवा १० एगसमएणं केवतिया उववज्जति ० ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा वा असं-
खेज्जा वा उववज्जति ॥

२०८. तेसि णं भंते ! जीवाण सरीरगा किसघयणी पण्णत्ता ?

गोयमा ! छण्ह संघयणाण असंघयणी जाव^१ परिणमति ॥

२०९. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ?

गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा^१ पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य उत्तर-
वेउव्विया य । तत्थ ण जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइ-
भागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ । तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा
जहण्णेण अंगुलस्स सखेज्जइभागं, उक्कोसेण जोयणसयसहस्सं ॥

२१०. तेसि ण भंते ! जीवाणं सरीरगा किसठिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य ।
तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरससंठिया पण्णत्ता । तत्थ णं जे ते
उत्तरवेउव्विया ते नाणासठिया^१ पण्णत्ता । लेस्साओ चत्तारि । दिट्ठी तिविहा
वि । तिण्णि नाणा नियम, तिण्णि अण्णाणा भयणाए । जोगो तिविहो वि ।
उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया ।
पंच समुग्घाया । वेयणा दुविहा वि । इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा वि, नो
नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेणं सातिरेग सागरोवमं ।
अज्झवसाणा असखेज्जा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबधो जहा ठिती ।
भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्त-
मब्भहियाइ, उक्कोसेण सातिरेग सागरोवम वावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं,
एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा । एवं नव वि गमा
नेयव्वा, नवर—मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु असुरकुमाराणं
ठिइविसेसो जाणियव्वो, सेसा ओहिया चेव लद्धी कायसवेह च जाणेज्जा ।
सव्वत्थ दो भवग्गहणाइ जाव नवमगमए कालादेसेण जहण्णेण सातिरेग
सागरोवम वावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, उक्कोसेणं वि सातिरेगं सागरो-
वमं वावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल
गतिरागतिं करेज्जा १-६ ॥

१ स० पा०—पुच्छा ।

२. म० १।२४५, २२४ ।

३. × (क, ख, ता, य, स) ।

४. नाणासठाणसठिया (स) ।

२११. णागकुमारणं भते । जे भविए पुढविककाइएसु० ? एस चेव वत्तव्वया जाव' भवादेसो त्ति, नवर—ठित्ति जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ । एव अणुबधो वि । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ वावीसाए वाससहस्सेहि अव्वहियाइ । एव नव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवर—ठित्ति कालादेसं च जाणेज्जा १-६ । एवं जाव थणियकुमाराण ॥
२१२. जइ वाणमंतरेहिंतो उववज्जति—किं पिसायवाणमतरदेवेहिंतो जाव गधव्व-वाणमतरदेवेहिंतो ?
गोयमा ! पिसायवाणमंतरदेवेहिंतो जाव गधव्ववाणमतरदेवेहिंतो ॥
२१३. वाणमतरदेवे णं भते । जे भविए पुढविककाइएसु उववज्जित्तए० ? एतेसिं पि असुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा', नवर—ठित्ति कालादेसं च जाणेज्जा । ठित्ति जहण्णेणं दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवम । सेसं तहेव १-६ ॥
२१४. जइ जोइसियदेवेहिंतो उववज्जति—किं चदविमाणजोइसियदेवेहिंतो उववज्जति जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतो'० ?
गोयमा ! चंदविमाण जाव ताराविमाण ॥
२१५. जोइसियदेवे ण भते । जे भविए पुढविककाइएसु उववज्जित्तए० ? लद्धी जहा असुरकुमाराण, नवर—एगा तेउलेस्सा पणत्ता । तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियम । ठित्ति जहण्णेण अट्ठभागपलिओवम, उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्समव्वहिय । एव अणुबधो वि । कालादेसेण जहण्णेण अट्ठभाग-पलिओवम अतोमुहुत्तमव्वहिय, उक्कोसेण पलिओवम वाससयसहस्सेण वावीसाए वाससहस्सेहि अव्वहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा । एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठित्ति कालादेस च जाणेज्जा १-६ ॥
२१६. जइ वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति—किं कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ? कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो ॥
२१७. जइ कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति—किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो ईसाणकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो सणकुमार जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो ॥

१. भ० २४।२०६-२१० ।

३. तारविमाण^० (अ, क, ख, ता, व, म) ।

२. भ० २४।२०६-२१० ।

२१८. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा जोइसियस्स गमगो, नवरं—ठिती अणुबंधो य जहण्णेण पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमव्वहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं वावीसाए वाससहस्सेहि अव्वहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा । एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिति कालादेस च जाणेज्जा ॥
२१९. ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए० ? एव ईसाणदेवेण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिती अणुबंधो जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं । सेसं तं चेव १-९ ॥
२२०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव' विहरइ ॥

तेरसमो उद्देसो

२२१. आउक्काइया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति० ? एवं जहेव पुढविकाइय-उद्देसए जाव'—
२२२. पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए आउक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा । एवं पुढविकाइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो', नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तहेव ॥
२२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चोद्देसमो उद्देसो

२२४. तेउक्काइया णं भते ! कओहितो उववज्जति० ? एवं पुढविकाइयउद्देसग-
सरिसो उद्देसो भाणियव्वो, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा । देवेहितो न
उववज्जति । सेसं त चेव ॥
२२५. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

पणरसमो उद्देसो

२२६. वाउक्काइया ण भते ! कओहितो उववज्जति० ? एवं जहेव तेउक्काइय-
उद्देसओ तहेव, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा ॥
२२७. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

सोलसमो उद्देसो

२२८. वणस्सइकाइया णं भते ! कओहितो उववज्जति० ? एवं पुढविकाइयसरिसो
उद्देसो, नवर—जाहे वणस्सइकाइओ वणस्सइकाइएसु उववज्जति ताहे पढम-
वित्तिथ-चउत्थ-पचमेसु गमाएसु परिमाण अणुसमय अविरहियं अणता उवव-
ज्जति । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणताइं भवग्गहणाइं ।
कालादेसेणं जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंत कालं, एवतियं कालं
सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा । सेसा पंच गमा अट्ठभवग्ग-
हणिया तहेव, नवर—ठिति सवेहं च जाणेज्जा ॥
२२९. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१. एवं जहेव (अ, म) ।

२. उद्देसासरिसो (ता, व, स) ।

३. भ० १।५१ ।

सत्तरसमो उद्देसो

२३०. वेदिया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति० ? जाव^१—
 २३१. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए बेदिएसु उववज्जितए, से णं भंते ! केवति-
 कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? सच्चेव पुढविक्काइयस्स लद्धी जाव कालादेसेणं
 जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं सखेज्जाइ भवग्गहणाइ—एवतिय काल
 सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा । एवं तेसु चेव चउसु गमएसु
 सवेहो, सेसेसु पंचसु तहेव अट्ठ भवा । एव जाव चउरिदिएण समं चउसु संखेज्जा
 भवा, पंचसु अट्ठ भवा । पच्चिदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु सम तहेव अट्ठ भवा ।
 देवेसु न^२ उववज्जति । ठिति सवेहं च जाणेज्जा ॥
 २३२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

अट्ठारसमो उद्देसो

२३३. तेइदिया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति० ? एवं तेइदियाणं जहेव बेइदियाणं
 उद्देसो, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा । तेउक्काइएसु सम ततियगमे उक्को-
 सेणं अट्ठुत्तराइं बेराइदियसयाइं, बेइदिएहि सम ततियगमे उक्कोसेण अडया-
 लीस सवच्छराइं छन्नउयराइदियसतमब्भहियाइ, तेइदिएहि सम ततियगमे
 उक्कोसेण बाणउयाइं तिण्णि राइदियसयाइ । एव सव्वत्थ जाणेज्जा जाव
 सण्णिमणुस्स त्ति ॥
 २३४. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

एगूणवीसइमो उद्देसो

२३५. चउरिदिया ण भंते ! कओहितो उववज्जंति० ? जहा तेइदियाण उद्देसओ
 तहेव चउरिदियाणं वि, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा ॥
 २३६. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

वीसइमो उद्देसो

२३७. पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो उववज्जति ?
 गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो वि, देवेहिंतो वि उववज्जति ॥
- २३८ जइ नेरइएहिंतो उववज्जति—किं रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जति ?
 गोयमा ! रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जति ॥
- २३९ रयणप्पभपुढविनेरइए णं भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥
२४०. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? एवं जहा^१ असुरकुमाराणं वत्तव्वया, नवर—सघयणे पोगला अणिट्ठा अकता जाव परिणमंति । ओगाहणा दुविहा पणत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, उक्कोसेणं सत्त घणूइं तिण्णि रयणीओ छच्चगुलाइ । तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेण पण्णरस घणूइ अड्ढाइज्जाओ रयणीओ ॥
- २४१ तेसि णं भते ! जीवाणं सरीरगा किसिठिया पणत्ता ?
 गोयमा ! दुविहा पणत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पणत्ता । तत्थ ण जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुडसठिया पणत्ता । एगा काउलेस्सा पणत्ता । समुग्घाया चत्तारि । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा । ठिठी जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण सागरोवम । एव अणुवधो वि । सेस तहेव । भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडोहि अव्वहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

२४२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु । अवसेसं तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं तहेव, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं सेसा वि सत्त गमगा भाणियव्वा जहेव नेरइयउद्देसए सण्णिपचिदिएहि समं । नेरइयाणं 'मज्झिम-एसु तिसु गमएसु' पच्छिमएसु य तिसु गमएसु ठितिनानत्तं भवति । सेसं तं चेव । सव्वत्थं ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २-६ ॥
२४३. सक्करप्पभापुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए० ? एव जहा रयणप्पभाए नव गमगा तहेव सक्करप्पभाए वि, नवरं—सरीरोगाहणा जहा ओगाहणसंठाणे । तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियमं । ठिती अणुवंधा पुव्वभणिया । एवं नव वि गमगा उवजुंजिऊण भाणियव्वा १-६ । एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुवंधा सवेहो य जाणियव्वा ॥
२४४. अहेसत्तमपुढवीनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए० ? एवं चेव नव गमगा, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुवधा जाणियव्वा । संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छव्वभवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमव्वहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । आदिल्लएसु छसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं । पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं । लद्धी नवसु वि गमएसु जहा पढमगमए, नवरं—ठितीविसेसो कालादेसो य वितियगमएसु जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमव्वहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । तइयगमए जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं । चउत्थगमए जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमव्वहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं । पंचमगमए जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं । अंतोमुहुत्तमव्वहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं तिहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइं । छट्ठगमए जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं ।

१. मज्झिमएसु गमएसु (अ); मज्झिमएसु य २. प० २१ ।

तिमु गमएसु (क, व); मज्झिमगमएसु (ख, ३. ओगाहणासंठाणे (अ, म) ।

ता); मज्झिमएसु य तिसु वि गमएसु (स) ।

उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं । सत्तमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइ दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ । अट्ठमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ । नवमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-६॥

२४५ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं एगिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो ? एव उववाओ जह्वा पुढविकाइयउद्देशए जाव—

२४६. पुढविकाइए णं भते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जितए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२४७ ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एवं परिमाणादीया अणुवषपज्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सच्चेव पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा, नवरं—नवसु वि गमएसु परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिणिं वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति । भवादेसेणं वि नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइ । सेस त चेव । कालादेसेणं उभओ ठितीए करेज्जा १-६॥

२४८. जइ आउक्काइएहिंतो उववज्जति ? एवं आउक्काइयाणं वि । एव जाव चउरिदिया उववाएयव्वा, नवर—सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा । नवसु वि गमएसु भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेणं उभओ ठितिं करेज्जा सव्वेसिं सव्वगमएसु । जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणेणं लद्धी तहेव सव्वत्थं ठितिं सवेहं च जाणेज्जा १-६॥

२४९ जइ पंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? गोयमा ! सण्णिपंचिदिय, असण्णिपंचिदिय, भेओ जहेव पुढविकाइएसु उववज्जमाणस्स जाव—

२५०. असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जितए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जि-भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

२५१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहेव पुढविकका-
इएसु उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव भवादेसो त्ति । काला-
देसेणं जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभागं पुव्व-
कोडिपुहत्तमब्भहिय, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।
वितियगमए एस चेव लद्धी, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता,
उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ, एवतियं
कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १,२॥
२५२. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइ-
भागद्वितीएसु, उक्कोसेणं वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागद्वितीएसु उवव-
ज्जेज्जा ॥
२५३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए
उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव^१ कालादेसो त्ति, नवरं—
परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति ।
सेसं तं चेव ३॥
२५४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तद्वितीएसु, उक्को-
सेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥
२५५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहा एयस्स
पुढविककाइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मज्झिमेसु
तिसु गमएसु जाव^१ अणुबधो त्ति । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ,
उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं
चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ४॥
२५६. सो चेव जहण्णकालद्वितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं
जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अट्ठ अंतोमुहुत्ता, एवतियं कालं सेवेज्जा,
एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ५॥
२५७. सो चेव उक्कोसकालद्वितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेणं
वि पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं
जाणेज्जा ६॥
२५८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं
—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेणं वि पुव्वकोडी । सेसं तं चेव । काला-
देसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स अस-
खेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहिय, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं
गतिरागतिं करेज्जा ७॥

- २५६ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया जहा' सत्तमगमे, नवर—कालदेसेण जहण्णेणं पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमव्वहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अव्वहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ८॥
२६०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभाग । एवं जहा रयणप्पभाए उववज्ज-माणस्स असण्णस्स नवमगमए तहेव निरवसेसं जाव' कालादेसो त्ति, नवरं—परिमाण जहा' एयस्सेव ततियममे । सेस तं चेव ६ ॥
२६१. जइ सण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयं ? असखेज्जवासाउयं ? गोयमा ! सखेज्जवासाउयं, नो असखेज्जवासाउयं ॥
२६२. जइ सखेज्जवासाउयं जाव किं पज्जत्तसखेज्जवासाउयं ? अपज्जत्तसखेज्जवासाउयं ? दोसु वि ॥
- २६३ सखेज्जवासाउयसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिएणं भते ! जे भविए पच्चिदिय-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
- २६४ ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस जहा' एयस्स चेव सण्णस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स । सेस त चेव जाव भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेणं दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडी पुहुत्तमव्वहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १ ॥
२६५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अव्वहियाओ २ ॥
२६६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवर—परिमाण जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उववज्जति । ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं जोयणसहस्स ।

सेसं तं चेव जाव—अणुबंधो त्ति । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ अतोमुहुत्तमग्गहियाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अग्गहियाइं ३ ॥

२६७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जातो जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा । लद्धी से जहा^१ एयस्स चेव सण्णिपच्चिदियस्स पुढविक्काएसु उववज्जमाणस्स मज्झिम्बलएसु तिसु गमएसु सच्चवेव इह वि मज्झिम्मेसु तिसु गमएसु कायव्वा । सवेहो जहेव^२ एत्थ चेव असण्णिमणुस्सेहो तिसु गमएसु ४-६ ॥

२६८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ जहा पढमगमओ, नवर—ठिती अणुबंधो जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । कालादेसेणं जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमग्गहिया, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीपुहत्तमग्गहियाइं ७ ॥

२६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर कालादेसेण—जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमग्गहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अग्गहियाओ ८ ॥

२७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओमट्ठितीएसु । अवसेस त चेव, नवरं—परिमाण ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अग्गहियाइं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अग्गहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ९ ॥

२७१. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति—कि सण्णिमणुस्सेहितो ? असण्णिमणुस्सेहितो ?

गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो वि, असण्णिमणुस्सेहितो वि उववज्जंति ॥

२७२. असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतिए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा । लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव^३ पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स । सवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपच्चिदियस्स मज्झिम्मेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो १-३ ॥

१. भ० २४।१९७ ।

३. भ० २४।१९९ ।

२. भ० २४।२५५-२५७ ।

- २७३ जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो ?
असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ॥
- २७४ जइ सखेज्जवासाउय० कि पज्जत्त० ? अपज्जत्त० ?
गोयमा ! पज्जत्तसखेज्जवासाउय, अपज्जत्तसखेज्जवासाउय ॥
२७५. सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पच्चिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से
ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु
उववज्जेज्जा ॥
- २७६ ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? लद्धो से जहा एयस्सेव
सण्णिमणुस्सस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव^१—भवादेसो
त्ति । कालादेसेणं जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं
पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइ १ ॥
२७७. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं
जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि
अब्भहियाओ २ ॥
२७८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु,
उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, सच्चवेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा
जहण्णेण अगुलपुहत्तं, उक्कोसेण पच घणुसयाइ । ठिती जहण्णेण मासपुहत्तं,
उक्कोसेण पुव्वकोडी । एवं अणुववो वि । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, काला-
देसेण जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेणं तिण्णि
पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ,—एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय
काल गतिरागति करेज्जा ३ ॥
२७९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, जहा^१ सण्णिपच्चिदियतिरिक्खजो-
णियस्स पच्चिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु
वत्तव्वया भणिया एस चेव एयस्स वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा
भाणियव्वा, नवरं—परिमाण उक्कोसेण सखेज्जा उववज्जति । सेसं तं
चेव ४-६ ॥
२८०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जातो, सच्चवेव पढमगमगवत्तव्वया,
नवरं—ओगाहणा जहण्णेण पंच घणुसयाइ, उक्कोसेण वि पच घणुसयाइ ।
ठिती अणुववो जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव

जाव भवादेसो त्ति कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमव्वहिया,
उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहुत्तमव्वहियाइ, एवतिय कालं
सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७ ॥

२८१. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेण
जहण्णेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमव्वहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ
वउहि अतोमुहुत्तेहि अव्वहियाओ ८ ॥

२८२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितिएसु उववण्णो, जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्को-
सेण वि तिण्णि पलिओवमाइ, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे । भवादेसेण दो
भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अव्व-
हियाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अव्वहियाइ, एवतिय
काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा ९ ॥

२८३. जइ देवेहितो उववज्जति—किं भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमंतरे-
जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो ?

गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो जाव वेमाणियदेवेहितो वि ॥

२८४. जइ भवणवासिदेवेहितो—किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो जाव थणिय-
कुमारभवणवासिदेवेहितो ?

गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो ॥

२८५. अमुरकुमारे ण भते ! जे भविए पच्चिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से
ण भंते ! केवत्तिकालट्ठितिएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तट्ठितिएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जे-
ज्जा । असुरकुमारणं लद्धी नवसु वि गमएसु जहा' पुढविककाइएसु उववज्ज-
माणस्स । एव जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी । भवादेसेणं सव्वत्थं अट्ठ भवग्ग-
हणाइ, उक्कोसेण जहण्णेण दोण्णि भवग्गहणाइ । ठिति सवेहं च सव्वत्थं
जाणेज्जा १-९ ॥

२८६. नागकुमारे णं भंते ! जे भविए ० ? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिति सवेहं
च जाणेज्जा १-९ ॥ एवं जाव थणियकुमारे ॥

२८७. जइ वाणमंतरेहितो किं पिसाय ० ? तहेव जाव—

२८८. वाणमंतरे णं भते ! जे भविए पच्चिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ० ?
एव चेव, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९ ॥

२८९. जइ जोतिसिय ० ? उववाओ तहेव जाव—

२९०. जोतिसिए णं भंते ! जे भविए पच्चिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ० ?
एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविककाइउहेसए । भवग्गहणाइ नवसु वि गमएसु

- अट्ट जाव कालादेसेणं जहण्णेणं अट्टभागपलिओवम अंतोमुहुत्तमन्महियं,
उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि चउहि य वाससयसह-
स्सेहि अन्महियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ।
एव नवसु वि गमएसु, नवर—ठित्ति सवेह च जाणेज्जा १-६॥
२६१. जइ वेमाणियदेवेहितो ० कि कप्पोवावेमाणिय ०? कप्पातीतावेमाणिय ०?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणिय, नो कप्पातीतावेमाणिय ॥
- २६२ जइ कप्पोवा जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहितो वि उववज्जति, नो आणय
जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणिय ॥
- २६३ सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से
णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु । सेस
जहेव^१ पुढविक्काइयउद्देसए नवसु वि गमएसु, नवर—नवसु वि गमएसु
जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ट भवग्गहणाइ । ठित्ति कालादेसं च
जाणेज्जा १-६। एवं ईसाणदेवे वि । एव एएण कमेण अवसेसा वि जाव सहस्सा-
रदेवेसु उववाएयव्वा, नवरं—ओगाहणा जहा^२ ओगाहणसठाणे, लेस्सा सणकु-
मार-माहिद-वंभलोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाण एगा सुक्कलेस्सा । वेदे नो
इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नो नपुसगवेदगा । आउ-अणुवधा जहा^३ ठित्तिपदे । सेसं
जहेव ईसाणगाण कायसवेह च जाणेज्जा ॥
२६४. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

एगवीसतिमो उद्देसो

२६५. मणुस्सा णं भंते ! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति जाव
देवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! नेरइएहितो वि उववज्जति 'जाव देवेहितो वि उववज्जति'^४ । एवं
उववाओ जहा पचिदियतिरिक्खजोणिउद्देसए जाव^५ तमापुढविनेरइएहितो वि
उववज्जति, नो अहेसत्तमपुढविनेरइएहितो उववज्जति ॥

१. म० २४।२१८ ।

४. × (अ, क, ख., ता, व, य) ।

२. प० २१ ।

५. म० २४।२३८ ।

३. प० ४ ।

२६६. रयणप्पभपुढविनेरइए ण भते ! से भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु । अवसेसा वत्तव्वया जहा^१ पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव, नवरं—परिमाणे जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा उववज्जति । जहा तहि अंतोमुहुत्तेहि तहा इह मासपुहत्तेहि सवेह करेज्जा । सेसं तं चेव १-६।

जहा रयणप्पभाए 'तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया'^२, नवरं—जहण्णेण मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडो आउएसु । ओगाहणा-लेस्सा-नाण-ट्ठिती-अणुबध-सवेह-नाणत्त च जाणेज्जा जहेव^३ तिरिक्खजोणियउद्देसए । एव जाव तमापुढविनेरइए ॥

२६७. जइ तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?

गोयमा ! एगिदियतिरिक्खजोणिएहितो भेदो जहा पंचिदियतिरिक्खजोणिय-उद्देसए, नवरं—तेउ-वाळ पडिसेहेयव्वा । सेसं त चेव । जाव^४—

२६८. पुढविकाइए णं भते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेण पुव्वकोडोआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२६९. ते णं भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव पंचिदिय-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविकाइयस्स वत्तव्वया सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा^५ नवसु वि गमएसु, नवरं—ततिय-छट्ठ-नवमेसु गमएसु परिमाणं जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण संखेज्जा उववज्जति । जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे पढमगमए अज्जभव-साणा पसत्था वि अप्पसत्था वि वितियगमए अप्पसत्था, ततियगमए पसत्था भवति । सेसं त चेव निरवसेसं १-६॥

३००. जइ आउक्काइए० ? एवं आउक्काइयाण वि । एवं वणस्सइकाइयाण वि । एव जाव चर्जरदियाण वि । असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिय-सण्णिपंचिदियतिरि-जोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एते सव्वे वि जहा पंचिदियतिरिक्ख-

१. भ० २४।२४०-२४२ ।

३. भ० २४।२४३ ।

२. वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि (अ, क, व); वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया (स) ।

४. भ० २४।२४५ ।

५. भ० २४।२४७ ।

जोगियउद्देसए तहेव भाणियव्वा', नवरं—एयाणि चेव परिमाण-अज्भवसाण-
नाणत्ताणि जाणिज्जा पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि । सेसं तहेव
निरवसेसं १-६॥

३०१. जइ देवेहितो उववज्जति—कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमंतर-
जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि जाव वेमाणियदेवेहितो वि उववज्जति ॥

३०२. जइ भवणवासिदेवेहितो—कि असुरकुमार जाव थणियकुमार० ?

गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमार ॥

३०३. असुरकुमारे ण भते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवति-
कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उवव-
ज्जेज्जा । एव जच्चेव पच्चिदियतिरिक्खजोगियउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव एत्थ
वि भाणियव्वा, नवरं—जहा तहि जहण्णं अंतोमुहत्तट्ठितीएसु तहा इह मास-
पुहत्तट्ठितीएसु । परिमाणं जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं
सखेज्जा उववज्जति । सेस त चेव १-६ । एवं जाव ईसाणदेवो त्ति । एयाणि
चेव नाणत्ताणि । सणकुमारादीया जाव सहस्सारो त्ति जहेव पच्चिदियतिरिक्ख-
जोगियउद्देसए, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-
सेणं सखेज्जा उववज्जति । उववाओ जहण्णेण वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण
पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा । सेस तं चेव । सवेह वासपुहत्त पुव्वकोडीसु
करेज्जा । सणकुमारे ठिती चउगुणिया 'अट्ठावीससागरोवमा भवति' माहिदे
ताणि चेव सातिरेगाणि, बम्हलोए चत्तालीस, लतए छप्पन्न, महासुक्के अट्ठसट्ठि,
सहस्सारे बावत्तारि सागरोवमाई । एसा उक्कोसा ठिती भणिया । जहण्णट्ठिति
पि चउगुणेज्जा ॥

३०४. आणयदेवे ण भते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवति-
कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीठितीएसु उवव-
ज्जेज्जा ॥

३०५. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव जहेव सहस्सार-
देवाण वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा-ठिति-अणुबवे य जाणेज्जा । सेसं तं चेव ।
भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण छ भवग्गहणाइ । कालादेसेणं

१. अ० २४।२४८-२८२ ।

२. अ० २४।२८५-२९३ ।

३. अ० २४।२९३ ।

४. अट्ठावीस सागरोवमा भवति (अ, क, ख,
ता, ब, म, घ) ।

जहण्णेणं अट्टारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण सत्तावन्न सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा । एव नव वि गमा, नवर—ठिती अणुवध सवेह च जाणेज्जा १-६। एवं जाव अच्चुयदेवो, नवर—ठिती अणुवध सवेह च जाणेज्जा । पाणयदेवस्स ठिती तिगुणिया सट्ठि सागरोवसाइ, आरणगस्स तेवट्ठि सागरो-वमाइं, अच्चुयदेवस्स छावट्ठि सागरोवमाइ ॥

३०६. जइ कप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जंति—किं गेवेज्जाकप्पातीता० ? अणुत्तरोववातियकप्पातीता० ?

गोयमा ! गेवेज्जाकप्पातीता, अणुत्तरोववातियकप्पातीता ॥

३०७. जइ गेवेज्जा०—किं हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जगकप्पातीता जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा० ?

गोयमा ! हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जा जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा ॥

३०८. गेवेज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीट्ठितीएसु । अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा^१—एगे भवधारणज्जे सरीरए । से जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण दो रयणीओ । सठाण^२—एगे भवधारणज्जे सरीरे । से समच्चउरंससठिए पणत्ते । पंच समुग्घाया पणत्ता, त जहा - वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, नो चेव ण वेउव्वियतेयगसमुग्घा-एहि समोहणिसु वा, समोहणति वा, समोहणिसंति वा । ठिती अणुवधो जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइ, उक्कोसेण एकतीस सागरोवमाइ । सेस तं चेव । कालादेसेण जहण्णेण बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्को-सेण तेणउति सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा । एव सेसेसु वि अट्ठगमएसु, नवरं—ठिती सवेहं च जाणेज्जा १-६॥

३०९. जइ अणुत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जंति—किं विजयअणु-त्तरोववाइय० ? वेजयंतअणुत्तरोववाइय जाव सब्बदुसिद्ध० ?

गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सब्बदुसिद्धअणुत्तरोववाइय ॥

३१०. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एव जहेव गेवेज्जगदेवाणं, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं एगा रयणी ।

१. ओगाहणा गो (अ, क, ख, ता, व, म, स) । २. सठाणं गो (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी । नाणी, नो अण्णाणी, नियमं तिण्णाणी, त जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । ठिती जहण्णेण एकतीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ । सेसं तं चेव । भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण चत्तारि भवग्गहणाइ । कालादेसेणं जहण्णेण एकतीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीह अव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा । एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिंति अणुवध सवेध च जाणेज्जा । सेस एवं चेव १-६ ॥

३११ सव्वट्ठसिद्धदेवे ण भंते । जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए० ? सा चे . विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा, नवर—ठिती अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइ । एव अणुवंधो वि । सेसं तं चेव । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

३१२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएमु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमव्वहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइ वासपुहत्तमव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा २ ॥

३१३ सो चेव उक्को कालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेणं जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अव्वहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अव्वहियाइ एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा ३ । एते चेव तिण्णि गमगा, सेसा न भण्णति ॥

३१४. सेव भंते । सेव भंते । त्ति ॥

बावीसइमो उद्देसो

३१५ वाणमंतरा णं भंते ! कयोहितो उववज्जति—किं नेरइएहितो उववज्जति ? तिरिक्ख० ? एवं जहेव' नागकुमारउद्देसए असण्णी तहेव निरवसेस ॥

३१६. जइ सण्णिपच्चिदिय^० तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?

१. भ० २४।१४३, १४४ ।

२. स० पा०—सण्णिपच्चिदिय जाव असखेज्जवासाउय ।

गोयमा ! सखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति० ॥

३१७. सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए वाणमंतरेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालाट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएसु । सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव^१ कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्व-कोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एव-तियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

३१८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहेव^१ नागकुमारारणं वितियगमे वत्त-व्वया २ ॥

३१९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं वि पलिओवमट्ठितीएसु । एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती से जहण्णेण पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइ । सवेहो जहण्णेण दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरा-गति करेज्जा । मज्झिमगमगा तिण्णि वि जहेव^१ नागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा^१ नागकुमारुद्देसए, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा । सखे-ज्जवासाउय तहेव^१ नवरं—ठिती अणुवंधो सवेहं च उभओ ठितीए जाणे-ज्जा ३-६ ॥

३२०. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति० ? असखेज्जवासाउयाणं जहेव^१ नागकुमारारणं उद्देसे तहेव वत्तव्वया, नवरं—तइयगमए ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । ओगाहणा जहण्णेणं गाउय, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । सेस तहेव । सवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदि-याणं । सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से जहेव^१ नागकुमारुद्देसए, नवरं—वाणमतरे ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-६ ॥

३२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० २४।१४७ ।

२. भ० २४।१४८ ।

३. भ० २४।१५० ।

४. भ० २४।१५१ ।

५. भ० २४।१५२, १५३ ।

६. भ० २४।१५४-१५७ ।

७. भ० २४।१५८, १५९ ।

तेवीसइमो उद्देसो

३२२. जोइसिया णं भते । कओहितो उववज्जति - किं नेरइएहितो ० ? भेदो जाव' सण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, नो असण्णिपच्चिदियतिरिक्ख ॥
३२३. जइ सण्णि० किं संखेज्ज० ? असंखेज्ज० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय ॥
३२४. असंखेज्जवासाउयसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए ण भते । जे भविए जोतिसि-
एसु उववज्जित्तए, से णं भते । केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमवाससय-
सहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, अवसेस जहा' असुरकुमारुद्देसए, नवर—ठिती
जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवम, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एव अणुबधो
वि । सेस तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेण दो अट्ठभागपलिओवमाइ, उक्को-
सेण चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समव्वहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा,
एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा १ ॥
३२५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु,
उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु । एस चेव वत्तव्वया, नवर—काला-
देसेण जाणेज्जा २ ॥
३२६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती
जहण्णेण पलिओवम वाससयसहस्समव्वहिय, उक्कोसेण तिण्णि पलिओव-
माइ । एव अणुवधो वि । कालादेसेण जहण्णेण दो पलिओवमाइं दोहि वास-
सयसहस्सेहि अव्वहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ वाससयसहस्स-
मव्वहियाइ ३ ॥
३२७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु,
उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
३२८. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एस चेव वत्तव्वया,
नवर—ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेण सातिरेगाइ अट्ठारसधणुसयाइ ।
ठिती जहण्णेण अट्ठभागपलिओवम, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवम । एवं
अणुवधो वि । सेस तहेव । कालादेसेण जहण्णेण दो अट्ठभागपलिओवमाइ,
उक्कोसेण वि दो अट्ठभागपलिओवमाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल
गतिरागति करेज्जा । जहण्णकालट्ठितियस्स एस चेव एक्को गमो' ४ ॥

३२९. सो चेव अप्पणा उक्कीसकालट्ठितोओ जाओ, सा चेव ओहिया वत्तव्वया, नवरं—ठितो जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ । एवं अणुवंधो वि । सेस तं चेव । एवं पच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा^१, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा ७-९ । एते सत्त गमगा ॥
३३०. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपच्चिदियं ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव^२ असुर-कुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा, नवरं—जोतिसिय-ठिति सवेहं च जाणेज्जा । सेसं तहेव निरवसेसं^३ १-९ ॥
३३१. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंतिं ? भेदो तहेव जाव^४—
३३२. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितोएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असंखेज्जवासाउय-सण्णिपच्चिदियस्स जोइसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि, नवरं—ओगाहणाविसेसो पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेण सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइ । मज्झिमगमए जहण्णेण सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं नव धणुसयाइं । पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं वि तिण्णि गाउयाइ । सेसं तहेव निरवसेसं जाव^५ सवेहो त्ति ॥
३३३. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव^६ असुर-कुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—जोतिसियठिति सवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव निरवसेसं १-९ ॥
३३४. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

चउवीसइमो उद्देसो

३३५. सोहम्मदेवा ण भते ! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जंति ? भेदो जहा^७ जोइसियउद्देसए ॥
३३६. असंखेज्जवासाउयसण्णिपच्चिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए सोहम्मग-देवेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितोएसु उववज्जेज्जा ?

१. भाणियव्वा (अ, क) ।

२. भ० २४।१३१-१३३ ।

३. निरवसेस भाणियव्व (स) ।

४. भ० २४।१३४, १३५ ।

५. भ० २४।३२४-३२९ ।

६. भ० २४।१३९-१४२ ।

७. भ० २४।३२२, ३२३ ।

- गोयमा । जहण्णेण पलिओवमट्ठितीएसु उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥
३३७. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? अवसेस जहा' जोइसिएसु उववज्जमाणस्स, नवरं—सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नाणी वि, अण्णाणी वि, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं । ठिती जहण्णेणं पलिओवम, उक्कोसेण तिणिण पलिओवमाइं । एवं अणुवघो वि । सेसं तहेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा १ ॥
३३८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा २ ॥
३३९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं तिणिण पलिओवमाइ, उक्कोसेणं वि तिणिण पलिओवमाइं । सेसं तहेव । कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेणं वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥
३४०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं वि पलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्त, उक्कोसेणं दो गाउयाइं । ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं वि पलिओवम । सेसं तहेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइ, उक्कोसेणं वि दो पलिओवमाइं, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४-६ ॥
३४१. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिणिण गमगा नेयव्वा, नवरं—ठिति कालादेसं च जाणेज्जा ७-९ ॥
३४२. जइ सखेज्जवासाउयसणिपच्चिदियं ? सखेज्जवासाउयस्स जहेव' असुर-कुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव नव वि गमा, नवरं—ठिति सवेह च जाणेज्जा । जाहेय अप्पणा जहण्णकालट्ठित्थिओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । दो नाणा दो अण्णाणा नियम । 'सेस त चेव' १-९ ॥
३४३. जइ मणुस्सेहितो उववज्जतिं ? भेदो जहेव जोतिसिएसु उववज्जमाणस्स, जाव'—

३४४. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा, नवरं—आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं । ततियगमे जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइ । चउत्थ-गमए जहण्णेण गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं । पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, सेसं तहेव निरवसेसं ॥
३४५. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो० ? एवं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साणं जहेव^१ असुरकुमारेसु उववज्जमाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं सोहम्मदेवद्वित्ति संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव १-६ ॥
३४६. ईसाणदेवा णं भंते ! कम्मोहितो उववज्जंति० ? ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मग-देवसरिसा वत्तव्वया, नवरं—असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणि-यस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पलिओवमठिती तेसु ठाणेसु इह सातिरेग पलिओवम कायव्व । चउत्थगमे ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो गाउयाइं । सेस तहेव ॥
३४७. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सस्स वि तहेव ठिती जहा^१ पंचिदियतिरिक्खजो-णियस्स असंखेज्जवासाउयस्स । ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउय तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउय । सेसं तहेव ॥
३४८. सखेज्जवासाउयाण तिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्ज-माणं तहेव निरवसेसं नव वि गमगा, नवरं—ईसाणठित्ति सवेह च जाणेज्जा ॥
३४९. सणकुमारदेवा ण भंते ! कम्मोहितो उववज्जंति० ? उववाओ जहा^१ सक्कर-प्पभापुढविनेरइयाणं, जाव—
३५०. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सणकुमारदेवेसु उववज्जित्तए० ? अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा^१ सोहम्मे उववज्जमाणस्स, नवरं—सणकुमार-द्वित्ति सवेह च जाणेज्जा । जाहे य अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ । सेसं तं चेव ॥
३५१. जइ मणुस्सेहितो उववज्जंति० ? मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा^१, नवरं—सणकुमारद्वित्ति सवेहं च जाणेज्जा ॥

१. भ० २४।१३६-१४१ ।

४. भ० २४।३४२ ।

२. भ० २४।३३६-३४१ ।

५. भ० २४।१०५-१०८ ।

३. भ० २४।७८, १०५ ।

३५२. माहिदगदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? जहा सणकुमारगदेवाणं वत्तव्वया तहा माहिदगदेवाण वि भाणियव्वा^१, नवरं—माहिदगदेवाण ठिती सातिरेगा भाणियव्वा सच्चेव । एव वभलोगदेवाण वि वत्तव्वया, नवरं—वभलोगट्ठितं सवेह च जाणेज्जा । एवं जाव सहस्सारो, नवरं—ठितं सवेहं च जाणेज्जा । लतगादीण जहण्णकालट्ठितियस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्साओ कायव्वाओ । संघयणाइं वभलोग-लंतएसु पंच आदिल्लगाणि, महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि । तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि । सेस तं चेव ॥
३५३. आणयदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? उववाओ जहा सहस्सारदेवाणं, नवरं—तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा, जाव—
३५४. पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए आणयदेवेसु उववज्जित्तए ०? मणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्जमाणान, नवरं—तिण्णि सघयणाणि, सेसं तहेव जाव अणुबधो । भवादेसेण जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गहणाइ । कालादेसेणं जहण्णेणं अट्टारस सागरोवमाइ दोहिं वासपुहत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेणं सत्तावन्नं सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितं सवेहं च जाणेज्जा । सेस त चेव । एव जाव अच्चुयदेवा, नवरं—ठितं सवेहं च जाणेज्जा । चउसु वि संघयणा तिण्णि आणयादीसु ॥
३५५. गेवेज्जगदेवा णं भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—दो संघयणा । ठितं सवेह च जाणेज्जा ॥
३५६. विजय-वेजयंत-जयत-अपराजितदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव अणुबधो त्ति, नवरं—पढम संघयण । सेसं तहेव । भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण पंच भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण एक्कतीसं सागरोवमाइ दोहिं वासपुहत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितं सवेह च जाणेज्जा । मणूसलद्धी^२ नवसु वि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—पढमसघयण ॥
३५७. सव्वट्ठगसिद्धगदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति ०? उववाओ जहेव विजयादीण, जाव—

३५८. से णं भंते ! केवतिकालद्वितीएसु उववज्जेज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीससागरोवमद्वितीएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवम-
 द्वितीएसु उववज्जेज्जा । अवसेसा जहा विजयाइसु उववज्जंताणं, नवरं—
 भवादेसेणं तिणिण भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं
 दोहिं वासपुहत्तोहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं
 पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं
 करेज्जा १॥
३५९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालद्वितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—
 ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि । सेसं तहेव । सवेह च
 जाणेज्जा २॥
३६०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालद्वितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—
 ओगाहणा जहण्णेणं पंच घणुसयाइं, उक्कोस्सेण वि पंच घणुसयाइं । ठिती
 जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव जाव भवादेसो त्ति ।
 कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं,
 उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं
 कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३। एते तिणिण गमगा
 सव्वट्टसिद्धगदेवाणं ॥
३६१. सेवं भते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव' विहरइ ॥

पंचवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेसा य २. दब्ब ३. सठाण ४. जुम्म ५. पज्जव ६. नियठ ७. समणा य ।
८. ओहे ९, १०. भवियाभविए, ११. सम्मा १२. मिच्छे य उद्देसा ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे जाव^१ एवं वयासी—कति ण भते ! लेस्साओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पणत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा जहा पढमसए वित्तिए उद्देसए तहेव लेस्साविभागो । अप्पाबहुगं च जाव^२ चउव्विहाण देवाण चउव्विहाण देवीण मीसग अप्पाबहुगति ॥

जोगस्स अप्पाबहुग-पदं

२. कतिविहा ण भते ! ससारसमावन्नगा जीवा पणत्ता ?
गोयमा ! चोद्दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पणत्ता, तं जहा—१. सुहुमा अप्पज्जत्तगा २. सुहुमा पज्जत्तगा ३. बादरा अप्पज्जत्तगा ४. बादरा पज्जत्तगा ५. वेइदिया अप्पज्जत्तगा ६. वेइदिया पज्जत्तगा ७. तेइदिया अप्पज्जत्तगा ८. तेइदिया पज्जत्तगा ९. चउरिदिया अप्पज्जत्तगा १०. चउरिदिया पज्जत्तगा ११. असण्णिपंचिदिया अप्पज्जत्तगा १२. असण्णिपंचिदिया पज्जत्तगा १३. सण्णिपंचिदिया अप्पज्जत्तगा १४. सण्णिपंचिदिया पज्जत्तगा ॥
३. एतेसि णं भते ! चोद्दसविहाण ससारसमावण्णगाण जीवाणं जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहि^३तो^४ अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^५ विसेसाहिया वा ?

१. भ० १।४-१० ।

२. भ० १।२०२; प० १७।२ ।

३. सं० पा०—एव तेइदिया एव चउरिदिया ।

४. सं० पा० कयरेहि^३तो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! १. सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए २ वादरस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ३. वेदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ४. एवं तेइदियस्स ५. एव चउररदियस्स ६ असणिस्स पंचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ७ सण्णिस्स पंचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ८. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ९ वादरस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १० सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ११ वादरस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १२. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १३. वादरस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १४. वेदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १५. एवं तेदियस्स, एव जाव १८ सण्णिपंचिदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १६. वेदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २०. एव तेदियस्स वि, एव जाव २३. सण्णिपंचिदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २४. वेदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २५ एव तेइदियस्स वि, एवं जाव २८ सण्णिपंचिदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ॥

समजोगि-विसमजोगि-पदं

४. दो भंते ! नेरइया पढमसमयोववन्तगा कि समजोगी ? विसमजोगी ?
गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ॥
५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ?
गोयमा ! आहारयाओ वा से अणाहारए, अणाहारयाओ वा से आहारए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा, सखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जगुणमब्भहिए वा, असंखेज्जगुणमब्भहिए वा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी, सिय विसमजोगी । एव जाव वेमाणियाण ॥

जोग-पदं

६. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पण्णरसविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—१ सच्चमणजोए २. मोसमण-

१. किं विसमजोगी (अ,म); असमजोगी (ता) । ३. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव सिय ।

२. आहारओ (अ,ख); आहारओ (क,व,म) ।

जोए^१ ३ सच्चामोसमणजोए ४. असच्चामोसमणजोए ५. सच्चवइजोए ६. मोसवइजोए ७ सच्चामोसवइजोए ८ असच्चामोसवइजोए ९. ओरालिय-सरीरकायजोए १०. ओरालियमीसासरीरकायजोए ११. वेउव्वियसरीरकाय-जोए १२ वेउव्वियमीसासरीरकायजोए १३. आहारगसरीरकायजोए १४ आहारगमीसासरीरकायजोए १५ कम्मासरीरकायजोए ॥

७ एयस्स^२ ण भंते ! पण्णरसविहस्स जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहितो^३ *अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ० विसेसाहिया वा ? गोयमा ! १. सव्वत्थोवे कम्मासरीरस्स^४ जहण्णए जोए २ ओरालियमीसगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ३. वेउव्वियमीसगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ४ ओरालियसरीरस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ५. वेउव्वियसरीरस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ६. कम्मासरीरस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ७ आहारगमीसगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ८. तस्स चैव उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ९, १० ओरालियमीसगस्स, वेउव्वियमीसगस्स य—एएसि णं उक्कोसए जोए दोण्हि तुल्ले असखेज्जगुणे ११. असच्चामोसमणजोगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १२. आहारासरीरस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १३-१६ ति विहस्स मणजोगस्स चउव्विहस्स वइजोगस्स—एएसि ण सत्तण्ह वि तुल्ले जहण्णए जोए असखेज्जगुणे २०. आहारासरीरस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २१-३०. ओरालियसरीरस्स, वेउव्वियसरीरस्स, चउव्विहस्स य मणजोगस्स, चउव्विहस्स य वइजोगस्स—एएसि ण दसण्ह वि तुल्ले उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ॥

८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देशो

दव्व-पदं

९. कतिविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ?

गोयमा ! दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—जीवदव्वा य, अजीवदव्वा य ॥

१०. अजीवदव्वा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

१. असच्चमणजोए । (अ, क, व, म) ।

४. कम्मग^० (क, ख, व, म); कम्मसरीरगस्स

२. तस्स (क) ।

(ता) ।

३. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! दुविहा पणत्ता, तं जहा—रुविअजीवदव्वा य, अरुविअजीवदव्वा य ॥

११. *अरुविअजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पणत्ता ?

गोयमा ! दसविहा पणत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्दासमए ॥

१२. रुविजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पणत्ता ?

गोयमा ! चउविहा पणत्ता, तं जहा—खघा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणु-पोगले ॥

१३. ते ण भते ! किं सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ॥

१४. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ?

गोयमा ! अणता परमाणुपोगला, अणता दुपदेसिया खंधा जाव अणता दसपदेसिया खघा, अणता सखेज्जपदेसिया खघा, अणता असंखेज्जपदेसिया खघा, अणता अणतपदेसिया खंधा ।* से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—ते ण नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ॥

१५. जीवदव्वा णं भंते ! किं सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?

गोयमा ? नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ॥

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवदव्वा णं नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ?

गोयमा ! असंखेज्जा नेरइया जाव असंखेज्जा वाउक्काइया, अणता वणस्सइ-काइया, असंखेज्जा बेदिया, एवं जाव वेमाणिया, अणता सिद्धा । से तेणट्ठेणं जाव अणता ॥

जीवाणं अजीवपरिभोग-पदं

१७ जीवदव्वाणं भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?

गोयमा ! जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ॥

१८. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—*जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए

१. स० पा०—एव एएण अभिलावेण जहा २. स० पा०—वुच्चइ जाव हव्वमागच्छति ।
अजीवपज्जवा जाव से ।

हृवमागच्छति, नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए० हृवमागच्छति ?
 गोयमा ! जीवदव्वा णं अजीवदव्वे परियादियति परियादिइत्ता ओरासिय
 वेउव्विय आहारग तेयग कम्मग, सोइदिय जाव फासिदिय, मणजोग वइजोग
 कायजोग, आणापाणुत्त^१ च निव्वत्तयति । से तेणट्टेण^२ गोयमा ! एवं वुच्चइ
 —जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हृवमागच्छति, नो अजीवदव्वाण
 जीवदव्वा परिभोगत्ताए० हृवमागच्छति ॥

१६. नेरइयाण भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हृवमागच्छति ? अजीवदव्वाण
 नेरइया परिभोगत्ताए हृवमागच्छति ?
 गोयमा ! नेरइयाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए^३ हृवमागच्छति, नो अजीव-
 दव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हृवमागच्छति ॥

२०. से केणट्टेण ?
 गोयमा ! नेरइया अजीवदव्वे परियादियति, परियादिइत्ता वेउव्विय-तेयग-
 कम्मग, सोइदिय जाव फासिदिय, (मणजोग वइजोग कायजोग ?)^४ आणा-
 पाणुत्त च निव्वत्तयति । से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयाण अजीव-
 दव्वा परिभोगत्ताए हृवमागच्छति, नो अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए
 हृवमागच्छति । एव जाव वेमाणिया, नवर—सरीरइदियजोगा भाणियव्वा
 जस्स जे अस्थि ।

अवगाह-पदं

२१. से नूण भते ! असखेज्जे लोए अणताइ दव्वाइ आगासे भइयव्वाइ ?
 हता गोयमा ! असखेज्जे लोए^५ अणताइ दव्वाइ आगासे० भइयव्वाइ ॥

पोगलाण चयादि-पदं

२२. लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसि पोगला चिज्जति ?
 गोयमा ! निव्वाचाएण छट्ठिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि,
 सिय पचदिसि ॥

२३. लोगस्स णं भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसि पोगला छिज्जति ? एवं
 चेव । एवं उवचिज्जति, एव अवचिज्जति ॥

१. आणापाणुत्त (अ) ।

२. सं० पा०—तेणट्टेण जाव हृवमागच्छति ।

३. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

४. कोष्ठकवर्ती पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते,

किन्तु पूर्वसूत्रानुसारेण असौ युज्यते ।

५. सं० पा०—लोए जाव भइयव्वाइ ।

पोगलगहण-पदं

२४. जीवे णं भंते ! जाइ दव्वाइ ओरालियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ कि ठियाइ गेण्हइ ? अट्टियाइ गेण्हइ ?
 गोयमा ! ठियाइ पि गेण्हइ, अट्टियाइ पि गेण्हइ ॥
२५. ताइ भंते ! कि दव्वओ गेण्हइ ? खेत्तओ गेण्हइ ? कालओ गेण्हइ ? भावओ गेण्हइ ?
 गोयमा ! दव्वओ वि गेण्हइ, खेत्तओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावओ वि गेण्हइ । ताइ दव्वओ अणतपदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगा-
 ढाइ—एवं जहा पणवणाए पढमे आहारुदेसए जाव^१ निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पचदिसि ॥
२६. जीवे ण भंते ! जाइं दव्वाइ वेउव्वियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ कि ठियाइ गेण्हइ ? अट्टियाइं गेण्हइ ? एव चेव, नवरं—नियम छद्दिसि । एवं आहारग-
 सरीरत्ताए वि ॥
२७. जीवे ण भंते ! जाइं दव्वाइ तेयगसरीरत्ताए गेण्हइ—^२पुच्छा ।
 गोयमा ! ठियाइ गेण्हइ, नो अट्टियाइ गेण्हइ । सेसं जहा ओरालियसरीरस्स । कम्मगसरीरे एव चेव । एव जाव भावओ वि गेण्हइ ॥
२८. जाइ दव्वाइं दव्वओ गेण्हइ ताइ कि एगपदेसियाइं गेण्हइ ? दुपदेसियाइ गेण्हइ ? एव जहा भासापदे जाव^३ आणपुव्वि गेण्हइ, नो अणाणपुव्वि गेण्हइ ॥
२९. ताइ भंते ! कतिदिसि गेण्हइ ?
 गोयमा ! निव्वाघाएण जहा ओरालियस्स ॥
३०. जीवे ण भंते ! जाइ दव्वाइ सोइदियत्ताए गेण्हइ ० ? जहा वेउव्वियसरीर । एवं जाव जिब्भदियत्ताए । फासिदियत्ताए जहा ओरालियसरीरं । मणजोग-
 त्ताए जहा कम्मगसरीर, नवरं—नियम छद्दिसि । एवं वइजोगत्ताए वि । कायजोगत्ताए^४ जहा ओरालियसरीरस्स ॥
३१. जीवे ण भंते ! जाइ दव्वाइं आणापाणुत्ताए गेण्हइ ० ? जहेव ओरालियसरीर-
 त्ताए जाव सिय पंचदिसि ॥
३२. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥^५

१. प० २८।१ ।

२. प० ११ ।

३. कायजोगत्ताए वि (क, स) ।

४. त्ति केइ चउवीसदंडएण एताणि पदाणि

भण्णति जस्स ज अत्थि (अ, क, ख, ता, व, म, स); असौ पाठ. वाचनान्तराभिधाय-
 कोस्ति । उद्देशकपूर्वो लिखितस्यास्य मूले
 प्रवेशो जात इति सम्भाव्यते ।

तइओ उहेसो

संठाण-पदं

३३. कति णं भंते ! संठाणा पणत्ता ?

गोयमा ! छ संठाणा पणत्ता, तं जहा—परिमंडले, वट्टे, तसे, चउरसे, आयते, अणित्थये ॥

३४. परिमंडला णं भंते ! संठाणा दव्वट्टयाए कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ? गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

३५. वट्टा णं भंते ! संठाणा ० ? एवं चेव । एवं जाव अणित्थंथा । एवं पएसट्टयाए वि । 'एवं दव्वट्ट-पएसट्टयाए वि' ॥

३६. एसि णं भंते ! परिमंडल-वट्ट-तंस-चउरस-आयत-अणित्थथाण संठाणा दव्वट्टयाए पएसट्टयाए दव्वट्ट-पएसट्टयाए कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुत्ता वा ?^० विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा परिमंडलसंठाणा दव्वट्टयाए, वट्टा संठाणा दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, चउरसा संठाणा दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, तसा संठाणा दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, आयता संठाणा दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, अणित्थथा संठाणा दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा । पएसट्टयाए—सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा पएसट्टयाए, वट्टा संठाणा पएसट्टयाए संखेज्जगुणा, जहा दव्वट्टयाए तहा पएसट्टयाए वि जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा । दव्वट्टपएसट्टयाए—सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा दव्वट्टयाए, सो चेव दव्वट्टयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा, अणित्थयेहितो संठाणेहितो दव्वट्टयाए परिमंडला संठाणा पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा, वट्टा संठाणा पएसट्टयाए संखेज्जगुणा, सो चेव पएसट्टयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थथा संठाणा पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा ॥

रयणप्पभादिसंदव्वे संठाण-पदं

३७. कति णं भंते ! संठाणा पणत्ता ?

गोयमा ! पंच संठाणा पणत्ता, तं जहा—परिमंडले जाव आयते ॥

३८. परिमंडला णं भंते ! संठाणा कि सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता ॥

३९. वट्टा णं भंते ! संठाणा कि सखेज्जा ० ? एवं चेव । एवं जाव आयता ॥

४०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए परिमंडला संठाणा कि सखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?

१. X (अ, क, ता, व, भ, स) ।

२ सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

४१. वट्ठा णं भंते ! संठाणा कि संखेज्जा ० ? एवं चेव । एव जाव आयता ॥
४२. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए परिमडला सठाणा ० ? एवं चेव । एवं जाव आयता । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥
४३. सोहम्मि णं भंते ! कप्पे परिमडला सठाणा ० ? एवं जाव अच्चुए ॥
४४. गेवेज्जविमाणे णं भंते ! परिमडला सठाणा ० ? एवं चेव । एवं अणुत्तरविमाणेसु वि । एव ईसिपव्वभाराए वि ॥
४५. जत्थ णं भंते ! एगे परिमडले सठाणे जवमज्जे तत्थ परिमडला सठाणा कि संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणता ?
- गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥
४६. वट्ठा णं भंते ! सठाणा कि संखेज्जा ० ? एवं चेव । एव जाव आयता ॥
४७. जत्थ णं भंते ! एगे वट्ठे सठाणे जवमज्जे तत्थ परिमडला सठाणा ० ? एवं चेव । वट्ठा सठाणा एवं चेव । एवं जाव आयता । एव एक्केक्केणं सठाणेण पंच वि चारेयव्वा 'जाव आयतेण' ॥
४८. जत्थ णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमडले सठाणे जवमज्जे तत्थ णं परिमडला सठाणा कि संखेज्जा—पुच्छा ।
- गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।
४९. वट्ठा णं भंते ! सठाणा कि संखेज्जा ० ? एवं चेव । एव जाव आयता ॥
५०. जत्थ णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे वट्ठे सठाणे जवमज्जे तत्थ णं परिमडला सठाणा कि संखेज्जा—पुच्छा ।
- गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणता । वट्ठा सठाणा एव चेव । एव जाव आयता । एवं पुणरवि एक्केक्केणं सठाणेण पंच वि चारेयव्वा जहेव हेट्ठिल्ला जाव आयतेणं । एव जाव अहेसत्तमाए । एव कप्पेसु वि जाव ईसीपव्वभाराए पुढवीए ॥

पएसवगाहूतो सठाणनिख्वण-पदं

५१. वट्ठे णं भंते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
- गोयमा ! वट्ठे सठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणवट्ठे य, पतरवट्ठे य ।
- तत्थ णं जे से पतरवट्ठे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पंचपदेसिए पंचपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे ।

तत्थ ण जे से घणवट्टे से दुविहे पणत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण सत्तपदेसिए सत्तपदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पणत्ते । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण वत्तोसपदेसिए वत्तोसपदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पणत्ते ॥

५२ तसे ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पणत्ते ?

गोयमा ! तसे ण सठाणे दुविहे पणत्ते, त जहा—घणतसे य, पतरतसे य ।

तत्थ ण जे से पतरतसे से दुविहे पणत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण तिपदेसिए तिपदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पणत्ते । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पणत्ते ।

तत्थ ण जे से घणतसे से दुविहे पणत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पणतोसपदेसिए पणतोसपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^१ । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण चउप्पदेसिए चउप्पदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^२ ॥

५३. चउरसे ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा ।

गोयमा ! चउरसे संठाणे दुविहे पणत्ते,^३ त जहा—घणचउरसे य, पतरचउरसे य ।

तत्थ ण जे से पतरचउरसे से दुविहे पणत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य^४ । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण नवपदेसिए नवपदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पणत्ते । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण चउपदेसिए चउपदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^५ ।

तत्थ ण जे से घणचउरसे से दुविहे पणत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण सत्तावीसइपदेसिए सत्तावीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^६ । तत्थ ण जे से

१. त चेव (अ, ख, ता, व, य, स) ।

४. त चेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. त चेव (अ, ख, व, म, स), एव चेव (ता) ।

५. तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

३. स० पा०—भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ ।

जुम्पपदेसिए से जहण्णेणं अट्टपदेसिए अट्टपदेसोगाढे पणत्ते, उक्कोसेण अणंत-
पदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^१ ॥

५४. आयते ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पणत्ते ?

गोयमा ! आयते णं सठाणे तिविहे पणत्ते, त जहा—सेढिआयते, पतरायते,
घणायते ।

तत्थ ण जे से सेढिआयते से दुविहे पणत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्पपदे-
सिए य । तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं तिपदेसिए तिपदेसोगाढे,
उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^२ । तत्थ णं जे से जुम्पपदेसिए से
जहण्णेणं दुपदेसिए दुपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^३ ।
तत्थ ण जे से पतरायते से दुविहे पणत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य जुम्पपदे-
सिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पणरसपदेसिए पणरसपदे-
सोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'^४ । तत्थ ण जे से जुम्पप-
देसिए से जहण्णेणं छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणतपदेसिए असखे-
ज्जपदेसोगाढे'^५ ।

तत्थ ण जे से घणायते से दुविहे पणत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्पपदेसिए
य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पणयालीसपदेसिए पणयालीसपदेसो-
गाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'^६ । तत्थ ण जे से जुम्पपदे-
सिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणतपदेसिए
असखेज्जपदेसोगाढे'^७ ॥

५५. परिमडले ण भंते ! सठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा ।

गोयमा ! परिमडले ण सठाणे दुविहे पणत्ते, त जहा—घणपरिमडले य,
पतरपरिमडले य ।

तत्थ णं जे से पतरपरिमडले से जहण्णेणं वीसइपदेसिए वीसइपदेसोगाढे,
उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे^८ ।

तत्थ णं जे से घणपरिमडले से जहण्णेणं चत्तालीसइपदेसिए चत्तालीसइपदेसो-
गाढे पणत्ते, उक्कोसेणं अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पणत्ते ॥

संठाणाणं कडजुम्मादि-पदं

५६. परिमडले ण भते ! सठाणे दब्बट्टयाए कि कडजुम्मे ? तेओए ? दावरजुम्मे ?
कलिओए ?

१. तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

६, ७. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

२. तं चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

८. तहेव (अ, क, ख, ता, म, स) ।

३. तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

९. दावरजुम्मे (अ, क, ख, ता, म) सर्वत्र ।

४, ५. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

- गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए^१ ॥
- ५७ वट्टे ण भते ! संठाणे दव्वट्टयाए^० ? एवं चेंव । एवं जाव आयते ॥
५८. परिमडला ण भते ! सठाणा दव्वट्टयाए कि कडजुम्मा, तेयोया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, सिय तेओगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेओगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एवं जाव आयता ॥
५९. परिमडले ण भते ! सठाणे पएसट्टयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे, सिय तेयोगे, सिय दावरजुम्मे, सिय कलियोगे । एवं जाव आयते ॥
६०. परिमडला ण भते ! सठाणा पदेसट्टयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि, तेओगा वि, दावरजुम्मा वि, कलियोगा वि । एवं जाव आयता ॥
६१. परिमडले ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे जाव कलियोगपदेसोगाढे ?
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥
- ६२ वट्टे ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥
६३. तंसे णं भते ! सठाणे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥
६४. चउरसे ण भते ! सठाणे^० ? जहा वट्टे तहा चउरसे वि ॥
- ६५ आयते णं भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥
६६. परिमडला ण भते ! सठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा ॥
६७. वट्टा ण भते ! सठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१. कलिओदे (ता) ।

६८. तंसा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्म-
 पदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि,
 तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ।
 चउरंसा जहा वट्ठा ॥
६९. आयता णं भंते ! सठाणा—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा नो दावर-
 जुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा
 वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ॥
७०. परिमंडले णं भंते ! सठाणे किं कडजुम्मसमयठितीए^१ ? तेयोगसमयठितीए ?
 दावरजुम्मसमयठितीए ? कलियोगसमयठितीए ?
 गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयठितीए जाव सिय कलियोगसमयठितीए । एव
 जाव आयते ॥
७१. परिमंडला णं भंते ! सठाणा किं कडजुम्मसमयठितीया—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयठितीया जाव सिय कलियोगसमय-
 ठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयठितीया वि जाव कलियोगसमयठितीया
 वि । एवं जाव आयता ॥
७२. परिमंडले णं भंते ! सठाणे कालवण्णपज्जवेहि किं कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
 गोयमा ! सिय कडजुम्मे । एव एएणं अभिलावेणं जहेव ठितीए । एवं
 नीलवण्णपज्जवेहि^२ । एवं पच्चहिं वण्णेहिं, दोहिं गंधेहिं, पच्चहिं रसेहिं, अट्ठहिं
 फासेहिं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं ॥

सेढि-पद

७३. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जाओ ? असखेज्जाओ ? अणंताओ ?
 गोयमा ! नो सखेज्जाओ, नो असखेज्जाओ, अणताओ ॥
७४. पाईणपडीणायताओ^१ णं भंते ! सेढीओ दव्वट्ठयाए किं सखेज्जाओ^० ? एव
 चेव । एव दाहिणुत्तरायताओ वि । एव उड्ढमहायताओ वि ॥
७५. लोगागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जाओ ? असखेज्जाओ ?
 अणताओ ?
 गोयमा ! नो सखेज्जाओ, असखेज्जाओ, नो अणंताओ ॥
७६. पाईणपडीणायताओ णं भंते ! लोगागाससेढीओ दव्वट्ठयाए किं सखेज्जाओ^० ?
 एवं चेव । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ॥

१. °ट्टितीए (अ, ब, म) ।

३. पादीण° (ख); पातीणपडिणताओ (ता) ।

२. नीलावण्ण ° (क, ख, ब) ।

७७. अलोगागाससेढीओ णं भते ! दव्वट्टयाए किं संखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणताओ ?^१

गोयमा ! नो सखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणताओ । एवं पाईणपडीणाय-
ताओ वि । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ॥

७८. सेढीओ णं भते ! पएसट्टयाए किं संखेज्जाओ ? जहा दव्वट्टयाए तहा पएस-
ट्टयाए वि जाव^२ उड्ढमहायताओ वि । सव्वाओ अणताओ ॥

७९. लोगागाससेढीओ णं भते ! पएसट्टयाए किं संखेज्जाओ—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, नो अणताओ । एवं पाईण-
पडीणायताओ वि । दाहिणुत्तरायताओ वि एवं चेव । उड्ढमहायताओ^३ नो
सखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणताओ ॥

८०. अलोगागाससेढीओ णं भते ! पदेसट्टयाए—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणताओ ॥

८१. पाईणपडीणायताओ ण भते ! अलोगागाससेढीओ—पुच्छा ।

गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणताओ । एवं दाहिणुत्तराय-
ताओ वि ॥

८२. उड्ढमहायताओ—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय सखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणताओ ॥

८३. सेढीओ णं भते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ ? सादीयाओ अपज्जव-
सियाओ ? अणादीयाओ सपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ?
गोयमा ! नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ,
नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । एवं जाव
उड्ढमहायताओ ॥

८४. लोगागाससेढीओ ण भते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा ।

गोयमा ! सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो
अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । एवं जाव
उड्ढमहायताओ ॥

८५. अलोगागाससेढीओ णं भते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा ।^४

गोयमा ! सिय सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ,
सिय अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ।
पाईणपडीणायताओ दाहिणुत्तरायताओ य एव चेव, नवर—नो सादीयाओ

१. पुच्छा (क, ता, व, म) ।

३. ०ताओ वि (अ, स) ।

२. एव जाव (क, व) ।

सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ । सेसं तं चेव । उड्ढमहाय-
ताओ जहा ओहियाओ तहेव चउभंगो ॥

८६. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्टयाए किं कडजुम्माओ, तेओयाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ ।
एवं जाव उड्ढमहायताओ । लोगागाससेढीओ एव चेव । एवं अलोगागास-
सेढीओ वि ॥

८७. सेढीओ णं भंते ! पदेसट्टयाए किं कडजुम्माओ ०? एवं चेव । एव जाव
उड्ढमहायताओ ॥

८८. लोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्टयाए—पुच्छा ॥
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलियो-
गाओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि ॥

८९. उड्ढमहायताओ णं भंते ! पदेसट्टयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ ॥

९०. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्टयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ । एव पाईणपडीणाय-
ताओ वि । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । उड्ढमहायताओ वि एव चेव, नवर
—नो कलियोगाओ । सेसं तं चेव ॥

९१. कति णं भंते ! सेढीओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त सेढीओ पणत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगओवका,
दुहओवका, एगओखहा, दुहओखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ॥

अणुसेढि-विसेढि-गति-पदं

९२. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! किं अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ?
गोयमा ! अणुसेढि गती पवत्तति, नो विसेढि गती पवत्तति ॥

९३. दुपएसियाण भंते ! खंधाण अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ?
एवं चेव । एव जाव अणंतपदेसियाण खंधाणं ॥

९४. नेरइयाणं भंते ! किं अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ? एवं
चेव । एव जाव वेमाणियाण ॥

निरयावास-पदं

९५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा
पणत्ता ?

गोयमा । तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए जाव' अणुत्तरविमाण' त्ति ॥

गणिपिडय-पदं

६६. कतिविहे ण भते ! गणिपिडए पण्णत्ते ?

गोयमा । दुवालसंगे गणिपिडए पण्णत्ते, त जहा—आयारो जाव' दिट्ठिवाओ ॥

६७. से कि त आयारो ? आयारे ण समणण निग्गथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-विस्तीओ आघविज्जति, एव अगपरूवणा भाणियव्वा जहा नदीए जाव'—

सुत्तत्थो खलु पढमो, वीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।

तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥१॥

अप्पाबहुय-पदं

६८. एसि ण भते ! नेरइयाणं जाव देवाण सिद्धाण य पचगतिसमासेण कयरे कयरेहितो *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

गोयमा । अप्पाबहुय जइ' बहुवत्तव्वयाए, अट्ठगतिसमासप्पावहुग' च ॥

६९. एसि ण भते ! सइदियाणं, एगिदियाण जाव अणिदियाण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एय पि जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पय भाणियव्वं, सकाइयअप्पाबहुगं तहेव ओहियं भाणियव्वं ॥

१००. एसि ण भते ! जीवाण पोगलाण' *अद्धासमयाण सव्वदव्वाण सव्वपदेसाणं सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? जहा बहुवत्तव्वयाए ॥

१०१. एसि ण भते ! जीवाण, आउयस्स कम्मस्स बधगाण अबधगाणं ? जहा बहुवत्तव्वयाए जाव' आउयस्स कम्मस्स अवधगा विसेसाहिया ॥

१०२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

१ भ० ११२१२-२१५ ।

२ एगा अणु० (अ) ।

३. भ० २०।७५ ।

४. नदी सू० ८१-१२७ ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

६. प० ३ ।

७. *समायप्पा० (ता, ब, म) ।

८. सकायअप्पा० (व) ।

९. प० ३ ।

१०. सं० पा०—पोगलाण जाव सव्वपज्जवाण । अस्य पूर्ति प्रज्ञापनायाः तृतीयपदात् कृता, वृत्ती किञ्चिद्भेदो लभ्यते—इह यावत्करणादिद दृश्यं—‘समयाण दव्वाण पएसाण’ ति ।

११. प० ३ ।

चउत्थो उद्देसो

जुम्म-पदं

- १०३ कति णं भते ! जुम्मा पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पणत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव' कलियोगे ॥
१०४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—चत्तारि जुम्मा पणत्ता—कडजुम्मे जाव कलियोगे ? एवं जहा अट्टारसमसते चउत्थे उद्देसए तहेव जाव' से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ ॥
१०५. नेरइयाण भते ! कति जुम्मा पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पणत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव' कलियोगे ॥
१०६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयाण चत्तारि जुम्मा पणत्ता, तं जहा—कडजुम्मे ? अट्टो तहेव । एवं जाव वाउकाइयाणं ॥
१०७. वणस्सइकाइयाण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! वणस्सइकाइया सिय कडजुम्मा, सिय तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा ॥
१०८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—वणस्सइकाइया जाव कलियोगा ?
गोयमा ! उववायं पडुच्च । से तेणट्ठेणं त चेव । बेदियाणं जहा नेरइयाणं । एवं जाव वेमाणियाणं । सिद्धाणं जहा वणस्सइकाइयाणं ॥
१०९. कतिविहा ण भते ! सव्वदव्वा पणत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा सव्वदव्वा पणत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अघम्मत्थिकाए जाव अट्ठासमए ॥
११०. धम्मत्थिकाए णं भते ! दव्वदुयाए कि कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एव अघम्मत्थिकाए वि । एव आगासत्थिकाए वि ॥
१११. जीवत्थिकाए णं भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥
११२. पोगगलत्थिकाए ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । अट्ठासमए जहा जीवत्थिकाए ॥
११३. धम्मत्थिकाए ण भते ! पदेसदुयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । एव जाव अट्ठासमए ॥

- ११४ एसि ण भते । धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाण दव्वट्ट-
याए ०? एसि ण अप्पावहुगं जहा' बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेस ॥
- ११५ धम्मत्थिकाए ण भते । कि ओगाढे ? अणोगाढे ?
गोयमा ! ओगाढे, नो अणोगाढे ॥
- ११६ जइ ओगाढे कि सखेज्जपदेसोगाढे ? असंखेज्जपदेसोगाढे ? अणंतपदेसोगाढे ?
गोयमा ! नो संखेज्जपदेसोगाढे, असंखेज्जपदेसोगाढे, नो अणंतपदेसोगाढे ॥
- ११७ जइ असंखेज्जपदेसोगाढे कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे,
नो कलियोगपदेसोगाढे । एवं अधम्मत्थिकाए वि । एव आगासत्थिकाए वि ।
जीवत्थिकाए, पोगलत्थिकाए, अद्धासमए एव चेव ॥
- ११८ इमा ण भते । रयणप्पभा पुढवी कि ओगाढा ? अणोगाढा ? जहेव धम्म-
त्थिकाए । एव जाव अहेसत्तमा । सोहम्मए एव चेव । एव जाव ईसिपव्वभारा
पुढवी ॥
- ११९ जीवे ण भते ! दव्वट्टयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं नेरइए
वि । एवं जाव सिद्धे ॥
- १२० जीवा ण भते ! दव्वट्टयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा;
विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥
- १२१ नेरइया ण भते ! दव्वट्टयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण नो
कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एवं जाव सिद्धा ॥
- १२२ जीवे ण भते ! पदेसट्टयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलि-
योगे । सरीरपदेसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एव जाव
वेमाणिए ॥
- १२३ सिद्धे ण भते ! पदेसट्टयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥
- १२४ जीवा ण भते ! पदेसट्टयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो
तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा । सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय

- कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एव नेरइया वि । एवं जाव वेमाणिया ॥
१२५. सिद्धा ण भते !—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावर-
 जुम्मा, नो कलियोगा ॥
१२६. जीवे ण भते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
 गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एव
 जाव सिद्धे ॥
१२७. जीवा ण भते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावर-
 जुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा
 वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ॥
१२८. नेरइयाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मपदेसोगाढा जाव सिय कलियोगपदेसोगाढा;
 विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एवं
 'एगिदिय-सिद्धवज्जा सव्वे वि' । सिद्धा एगिदिया य जहा जीवा ॥
१२९. जीवे ण भते ! कि कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा ।
 गोयमा ! कडजुम्मसमयट्ठितीए, नो तेयोगसमयट्ठितीए, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीए,
 नो कलियोगसमयट्ठितीए ॥
१३०. नेरइए ण भते !—पुच्छा ।
 गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए । एव
 जाव वेमाणिए । सिद्धे जहा जीवे ॥
१३१. जीवा ण भते !—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयट्ठितीया, नो तेयोग-
 समयट्ठितीया, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीया, नो कलियोगसमयट्ठितीया ॥
१३२. नेरइयाण—पुच्छा ।
 गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमय-
 ट्ठितीया वि; विहाणादेसेण कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमय-
 ट्ठितीया वि । एव जाव वेमाणिया । सिद्धा जहा जीवा ॥
१३३. जीवे ण भते ! कालावण्णपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
 गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलियोगे । सरीरपदेसे

पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एवं जाव वेमाणिए । सिद्धो ण चेव पुच्छिज्जति ॥

१३४. जीवा ण भंते ! कालावणपज्जवेहि—पुच्छा ।

गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि नो कडजुम्मा जाव नो कलियोगा । सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एवं जाव वेमाणिया । एव नीलावणपज्जवेहि दडओ भाणियव्वो एगत्तपुहत्तेण । एवं जाव लुक्खफासपज्जवेहि ॥

१३५. जीवे ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एव एगिदियवज्ज जाव वेमाणिए ॥

१३६. जीवा ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एव एगिदियवज्ज जाव वेमाणिया । एव सुयनाणपज्जवेहि वि । ओहिनाणपज्जवेहि वि एव चेव, नवर—विगल्लिदियाण नत्थि ओहिनाण । मणपज्जवनाण पि एवं चेव, नवर—जीवाण मणुस्साण य, सेसाण नत्थि ॥

१३७. जीवे ण भते ! केवलनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा ।

गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । एव मणुस्से वि । एव सिद्धे वि ॥

१३८. जीवा ण भते ! केवलनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावर-जुम्मा, नो कलियोगा । एव मणुस्सा वि । एव सिद्धा वि ॥

१३९. जीवे ण भते ! मइयण्णाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे ? जहा आभिणिवोहिय-नाणपज्जवेहि तहेव दो दडगा । एवं सुयअण्णाणपज्जवेहि वि । एव विभगनाण-पज्जवेहि वि । चक्खुदसण-अचक्खुदसण-ओहिदंसणपज्जवेहि वि एव चेव, नवरं—जस्स ज अत्थि त भाणियव्वं । केवलदसणपज्जवेहि जहा केवलनाण-पज्जवेहि ॥

सरीर-पदं

१४०. कति णं भंते ! सरीरगा पणत्ता ?

गोयमा ! पच सरीरगा पणत्ता, त जहा—ओरालिए जाव कम्मए । एत्थ सरीरगपद निरवसेसं भाणियव्वं जहा पणवणाए ॥

१. लुक्खफास° (ता) ।

३. प० १२ ।

२. °पज्जवेहि (ता, स) ।

सेय-निरेय-पदं

१४१. जीवा णं भते ! किं सेया ? निरेया ?
 गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि ॥
१४२. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ—जीवा सेया वि, निरेया वि ?
 गोयमा ! जीवा दुविहा पणत्ता, त जहा—‘संसारसमावण्णगा य, असंसार-
 समावण्णगा’ य । तत्थ ण जे ते असंसारसमावण्णगा ते ण सिद्धा । सिद्धा णं
 दुविहा पणत्ता, त जहा—अणंतरसिद्धा य, परपरसिद्धा य । तत्थ णं जे ते
 परपरसिद्धा ते णं निरेया । तत्थ णं जे ते अणतरसिद्धा ते ण सेया ॥
१४३. ते णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
 गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया । तत्थ णं जे ते ससारसमावण्णगा ते दुविहा
 पणत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ ण जे
 ते सेलोसिपडिवण्णगा ते णं निरेया, तत्थ णं जे ते असेलेसीपडिवण्णगा ते
 ण सेया ॥
१४४. ते ण भते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
 गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि । से तेणट्ठेणं^१ गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवा
 सेया वि,^० निरेया वि ॥
१४५. नेरइया णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
 गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि ॥
१४६. से केणट्ठेण जाव सव्वेया वि ?
 गोयमा ! नेरइया दुविहा पणत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावण्णगा य,
 अविग्गहगतिसमावण्णगा य । तत्थ णं जे ते विग्गहगतिसमावण्णगा ते ण
 सव्वेया, तत्थ णं जे ते अविग्गहगतिसमावण्णगा ते णं देसेया । से तेणट्ठेणं जाव
 सव्वेया वि । एव जाव वेमाणिया ॥

पोगल-पदं

१४७. परमाणुपोगला णं भंते ! किं सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणंता ?
 गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता । एवं जाव अणंतपदेसिया
 खंधा ॥
१४८. एगपदेसोगाढा णं भते ! पोगला किं सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ? एव
 चेव । एव जाव असखेज्जपदेसोगाढा ॥

१. अससारसमावण्णगा य संसार^० (ता) ।

२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव निरेया ।



१४६. एगसमयद्वितीया^१ ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव । एव जाव असखेज्जसमयद्वितीया ॥
१५०. एगगुणकालया ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव । एव जाव अणंत-गुणकालया । एव अवसेसा वि वण्णगघरसफासा नेयव्वा जाव अणतगुण-लुक्ख त्ति ॥
१५१. एसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खघाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो बहुया^२ ?
गोयमा ! दुपदेसिएहितो खघेहितो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया ॥
१५२. एसि णं भते ! दुपदेसियाण तिपदेसियाण य खघाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो बहुया ?
गोयमा ! तिपदेसिएहितो खघेहितो दुपदेसिया खघा दव्वट्ठयाए बहुया । एव एएण गमएण जाव दसपदेसिएहितो खघेहितो नवपदेसिया खघा दव्वट्ठयाए बहुया ॥
१५३. एसि ण भते ! दसपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! दसपदेसिएहितो खघेहितो सखेज्जपदेसिया खघा दव्वट्ठयाए बहुया ॥
१५४. एसि णं भते ! सखेज्जपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! सखेज्जपदेसिएहितो खघेहितो असखेज्जपदेसिया खघा दव्वट्ठयाए बहुया ॥
१५५. एसि णं भते ! असखेज्जपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणतपदेसिएहितो खघेहितो असखेज्जपदेसिया खघा दव्वट्ठयाए बहुया ॥
१५६. एसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खघाण पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो बहुया ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहितो दुपदेसिया खघा पदेसट्ठयाए बहुया । एव एएणं गमएणं जाव नवपदेसिएहितो खघेहितो दसपदेसिया खघा पदेसट्ठयाए बहुया । एव सव्वत्थ^३ पुच्छियव्वं । दसपदेसिएहितो खघेहितो सखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया । सखेज्जपदेसिएहितो खघेहितो असखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया ॥
१५७. एसि ण भते ! असखेज्जपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणंतपदेसिएहितो खघेहितो असखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया ॥

१५८. एसि णं भते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्टयाए कयरे कयरेहितो^१ विसेसाहिया^२ ?

गोयमा ! दुपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्टयाए विसेसाहिया । एव एएण गमएणं तिपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दुपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्टयाए विसेसाहिया जाव दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो नवपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्टयाए विसेसाहिया । दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्टयाए बहुया । सखेज्जपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्टयाए बहुया । पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा ॥

१५९. एसि ण भते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं पदेसट्टयाए कयरे कयरेहितो विसेसाहिया^३ ?

गोयमा ! एगपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दुपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्टयाए विसेसाहिया । एव जाव नवपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दसपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्टयाए विसेसाहिया । दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्टयाए बहुया । सखेज्जपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्टयाए बहुया ॥

१६०. एसि ण भते ! एगसमयट्ठितीयाण दुसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण दव्वट्टयाए० ? जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एवं ठितीए वि ॥

१६१. एसि णं भते ! एगगुणकालगाण दुगुणकालगाण य पोग्गलाण दव्वट्टयाए० ? एसि ण जहा परमाणुपोग्गलादीण तहेव वत्तव्वया निरवसेसा^४ । एवं सव्वेसि वण्ण-नाध-रसाणं ॥

१६२. एसि ण भते ! एगगुणकक्खडाण दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्टयाए कयरे कयरेहितो विसेसाहिया^५ ?

गोयमा ! एगगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए विसेसाहिया । एव जाव नवगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए विसेसाहिया । दसगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए बहुया । सखेज्जगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए बहुया । असखेज्जगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए बहुया । एवं पदेसट्टयाए वि^६ । सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा । जहा कक्खडा एव मउय-नअय-लहुया वि । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ।

१. कयरेहितो जाव (ता, स) ।

४. निरवसेस (अ, ता) ।

२. विसेसाहिया वा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

५. जाव विसेसाहिया (ता) ।

३. जाव विसेसाहिया वा (अ, ता, स) ।

६. × (अ) ।

१६३. एएसि ण भंते ! परमाणुपोगलाणं, सखेज्जपदेसियाणं, असंखेज्जपदेसियाणं, अणंतपदेसियाण य खधाण दब्बट्टयाए, पदेसट्टयाए, दब्बट्ट-पदेसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो' *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दब्बट्टयाए, परमाणुपोगला दब्बट्टयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दब्बट्टयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा दब्बट्टयाए असखेज्जगुणा । पदेसट्टयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खधा पदेसट्टयाए, परमाणुपोगला अपदेसट्टयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्टयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा । दब्बट्ट-पदेसट्टयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दब्बट्टयाए, 'ते चेव' पदेसट्टयाए अणतगुणा, परमाणुपोगला दब्बट्ट-पदेसट्टयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दब्बट्टयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्टयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खधा दब्बट्टयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा ॥
१६४. एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाण, सखेज्जपदेसोगाढाण, असंखेज्जपदेसोगाढाण य पोगलाण दब्बट्टयाए, पदेसट्टयाए, दब्बट्ट-पदेसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो' *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोगला दब्बट्टयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोगला दब्बट्टयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसोगाढा पोगला दब्बट्टयाए असखेज्जगुणा । पदेसट्टयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोगला अपदेसट्टयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोगला पदेसट्टयाए सखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसोगाढा पोगला पदेसट्टयाए असंखेज्जगुणा । दब्बट्ट-पदेसट्टयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोगला दब्बट्ट-अपदेसट्टयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोगला दब्बट्टयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्टयाए संखेज्जगुणा । असखेज्जपदेसोगाढा पोगला दब्बट्टयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा ॥
१६५. एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं, सखेज्जसमयट्ठितीयाण, असंखेज्जसमयट्ठितीयाण य पोगलाण ° ? जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि भाणियव्वं अप्पावहुग ॥
१६६. एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाण, सखेज्जगुणकालगाण, असंखेज्जगुणकालगाणं, अणतगुणकालगाण य पोगलाणं दब्बट्टयाए, पदेसट्टयाए, दब्बट्ट-पदेसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एएसि जहा परमाणुपोगलाण अप्पावहुग तहा एएसि पि अप्पावहुगं । एव सेसाण वि वण्ण-गघ-रसाणं ॥

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

२. तेच्चेव (ता) ।

१६७. एसि णं भते ! एगगुणकक्खडाणं, संखेज्जगुणकक्खडाणं, असखेज्जगुणकक्खडाणं, अणतगुणकक्खडाणं य पोग्गलाणं दव्वट्टयाए, पदेसट्टयाए, दव्वट्ट-पदेसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो' *अप्पा वा ? त्हुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा, अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए अणतगुणा । पदेसट्टयाए एव चेव, नवर—संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा । सेसु त चेव । दव्वट्ट-पदेसट्टयाए—सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ट-पदेसट्टयाए । संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्टयाए संखेज्जगुणा । असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा । अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्टयाए अणतगुणा, ते चेव पदेसट्टयाए अणतगुणा । एव मउय-गरुय-लहुयाणं वि अप्पावहुय । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खणं तद्वा वण्णाणं तद्देव ॥

१६८. परमाणुपोग्गले ण भते ! दव्वट्टयाए किं कडजुम्मे ? तेयोए ? दावरजुम्मे ? कलियोगे ?

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एव जाव अणत-पदेसिए खंधे ॥

१६९. परमाणुपोग्गला ण भते ! दव्वट्टयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा ; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एव जाव अणतपदेसिया खंधा ॥

१७०. परमाणुपोग्गले ण भते ! पदेसट्टयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे ॥

१७१. दुपदेसिय—पुच्छा ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१७२. तिपदेसिए—पुच्छा ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१७३. चउप्पदेसिए—पुच्छा ।

गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । पचपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले । छप्पदेसिए जहा दुप्पदेसिए । सत्तपदेसिए जहा

तिपदेसिए । अट्टपदेसिए जहा चउप्पदेसिए । नवपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले । दसपदेसिए जहा दुप्पदेसिए ॥

१७४. सखेज्जपदेसिए ण भते ! पोग्गले—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एव असखेज्जपदेसिए वि, अणतपदेसिए वि ॥

१७५. परमाणुपोग्गला णं भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१७६. दुप्पदेसिया णं—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा, नो तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७७. तिपदेसिया ण—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७८. चउप्पदेसिया ण—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा । पंचपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला । छप्पदेसिया जहा दुप्पदेसिया । सत्तपदेसिया जहा तिपदेसिया । अट्टपदेसिया जहा चउपदेसिया । नवपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला । दसपदेसिया जहा दुपदेसिया ॥

१७९. सखेज्जपदेसिया णं—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एवं असखेज्जपदेसिया वि, अणतपदेसिया वि ॥

१८०. परमाणुपोग्गले ण भते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।

गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८१. दुपदेसिए ण—पुच्छा ।

गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८२. तिपदेसिए ण—पुच्छा ।

गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८३. चउप्पदेसिए ण—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एवं जाव अणतपदेसिए ॥

१८४. परमाणुपोगला णं भंते ! कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा ॥

१८५. दुप्पदेसिया णं—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८६. तिप्पदेसिया णं—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मपदेसोगाढा, तेयोगपदेसोगाढा वि, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८७. चउप्पदेसिया णं—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

१८८. परमाणुपोगले ण भंते ! कि कडजुम्मसमयद्वितीए—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयद्वितीए जाव सिय कलियोगसमयद्वितीए । एवं जाव अणतपदेसिए ॥

१८९. परमाणुपोगला णं भंते ! कि कडजुम्म—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयद्वितीया जाव सिय कलियोगसमयद्वितीया; विहाणादेसेण कडजुम्मसमयद्वितीया वि जाव कलियोगसमयद्वितीया वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥

१९०. परमाणुपोगले णं भंते ! कालावण्णपज्जवेहि कि कडजुम्मे ? तेयोगे ? जहा ठितीए वत्तव्वया एव वण्णेसु वि सव्वेसु । गधेसु वि एव चेव । रसेसु वि जाव महुरो रसो त्ति ॥

१९१. अणतपदेसिए ण भंते ! खघे कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे ॥

१९२. अणतपदेसिया ण भंते ! खघा कक्खडफासपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा ।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एवं मत्तय-गस्य-लहुया वि भाणियव्वा । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ॥

१६३. परमाणुपोगले णं भंते ! किं सङ्घे ? अणङ्घे ?
गोयमा नो सङ्घे, अणङ्घे ॥
१६४. दुपदेसिए णं—पुच्छा ।
गोयमा ! सङ्घे, नो अणङ्घे । तिपदेसिए जहा परमाणुपोगले । चउपदेसिए जहा दुपदेसिए । पचपदेसिए जहा तिपदेसिए । छप्पदेसिए जहा दुपदेसिए । सत्तपदेसिए जहा तिपदेसिए । अट्ठपदेसिए जहा दुपदेसिए । नवपदेसिए जहा तिपदेसिए । दसपदेसिए जहा दुपदेसिए ॥
१६५. सखेज्जपदेसिए णं भंते ! खंघे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सङ्घे, सिय अणङ्घे । एवं असखेज्जपदेसिए वि । एव अणंतपदेसिए वि ॥
१६६. परमाणुपोगला ण भते ! किं सङ्घा ? अणङ्घा ?
गोयमा ! सङ्घा वा, अणङ्घा वा । एव जाव अणतपदेसिया ॥
१६७. परमाणुपोगले ण भते ! किं सेए ? निरेए ?
गोयमा ! सिय सेए, सिय निरेए । एव जाव अणंतपदेसिए ॥
१६८. परमाणुपोगला ण भते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! सेया वि, निरेया वि । एव जाव अणतपदेसिया ॥
१६९. परमाणुपोगले ण भते ! सेए कालओ केवच्चिर^१ होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जभागं ॥
२००. परमाणुपोगले ण भते ! निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्जं काल । एव जाव अणतपदेसिए ॥
२०१. परमाणुपोगला ण भते ! सेया कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥
२०२. परमाणुपोगला ण भते ! निरेया कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! सव्वद्ध । एवं जाव अणतपदेसिया ॥
२०३. परमाणुपोगलस्स ण भते ! सेयस्स केवत्तिथि काल अतरं होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्ज काल । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्ज कालं ॥
२०४. निरेयस्स केवत्तिथि काल अतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जभाग । परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्ज कालं ॥

१. साढा (ख, ता) ।

२. केवच्चिर (अ, क, ख, म) ।

२०५. द्रुपदेसियस्स णं भंते ! खंघस्स सेयस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।
परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं ॥

२०६. निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?

गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए
असंखेज्जइभागं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं
कालं । एवं जाव अणंतपदेसियस्स ॥

२०७. परमाणुपोग्गलाणं भते ! सेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ?

गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥

२०८. निरेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ?

गोयमा ! नत्थि अंतरं । एवं जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं ॥

२०९. एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सेयाणं निरेयाणं य कयरे कयरेहितो^१

•अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? • विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सेया, निरेया असंखेज्जगुणा । एव जाव
असंखेज्जपदेसियाणं खंधाणं ॥

२१०. एएसि णं भंते ! अणंतपदेसियाणं खंधाणं सेयाणं निरेयाणं य कयरे कयरेहितो^१

•अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? • विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा निरेया, सेया अणंतगुणा ॥

२११. एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, सखेज्जपदेसियाणं, असंखेज्जपदेसियाणं,

अणंतपदेसियाणं य खंधाणं सेयाणं निरेयाणं य दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-
पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो^१ •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? •
विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए २. अणंतपदेसिया
खंधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३ परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठयाए अणंत-
गुणा ४. सखेज्जपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ५. असंखेज्ज-
पदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६. परमाणुपोग्गला निरेया
दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ७ सखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्ज-
गुणा ८. असंखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए
एव चेव, नवर—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा । सखेज्जपदेसिया
खंधा निरेया पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । सेस तं चेव । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—
१. सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए २. ते चेव पदेसट्ठयाए

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३. सं० पा०—कयरेहितो जाय विसेसाहिया ।

२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

४. असंखेज्जगुणा (ख, ता) ।

अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा सेया दव्वट्टयाए अणंतगुणा ४. ते चैव पदेसट्टयाए अणंतगुणा ५. परमाणुपोगला सेया दव्वट्ट-अपदेसट्टयाए अणंतगुणा ६ संखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्टयाए असखेज्जगुणा ७ ते चैव पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा ८ असखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्टयाए असखेज्जगुणा ९. ते चैव पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा १० परमाणुपोगला निरेया दव्वट्ट-अपदेसट्टयाए असखेज्जगुणा ११ सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्टयाए असखेज्जगुणा १२ ते चैव पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा १३ असखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्टयाए असखेज्जगुणा १४. ते चैव पदेसट्टयाए असखेज्जगुणा ॥

२१२. परमाणुपोगले ण भते ! किं देसेए ? सव्वेए ? निरेए ?
 गोयमा ! नो देसेए, सिय सव्वेए, सिय निरेए ॥
२१३. दुपदेसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
 गोयमा ! सिय देसेए, सिय सव्वेए, सिए निरेए । एवं जाव अणतपदेसिए ॥
२१४. परमाणुपोगला ण भते ! किं देसेया ? सव्वेया ? निरेया ?
 गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया वि, निरेया वि ॥
२१५. दुपदेसिया णं भते ! खंधा—पुच्छा ।
 गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि, निरेया वि । एवं जाव अणतपदेसिया ॥
२१६. परमाणुपोगले ण भते ! सव्वेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥
२१७. निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्ज काल ॥
२१८. दुपदेसिए ण भते ! खधे देसेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥
२१९. सव्वेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥
२२०. निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एवं जाव अणत-
 पदेसिए ॥
२२१. परमाणुपोगला णं भते ! सव्वेया कालओ केवच्चिरं होति ?
 गोयमा ! सव्वद्ध ॥
२२२. निरेया कालओ केवच्चिरं होति ? सव्वद्ध ॥
२२३. दुपदेसिया णं भते ! खंधा देसेया कालओ केवच्चिरं होति ? सव्वद्धं ॥
२२४. सव्वेया कालओ केवच्चिरं होति ? सव्वद्ध ॥

२२५. निरेया कालओ केवच्चिर होंति ? सव्वद्धं । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥
२२६. परमाणुपोगलस्स णं भते ! सव्वेयस्स केवतिय काल अंतर होइ ?
 गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्जं कालं ।
 परट्ठाणंतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण एव चेव ॥
२२७. निरेयस्स केवतिय काल अंतर होइ ?
 सट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइ-
 भागं । परट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्जं काल ॥
२२८. दुपदेसियस्स ण भते ! खंधस्स देसेयस्स केवतियं काल अंतरं होइ ?
 सट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज कालं । परट्ठाणतरं
 पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणंतं कालं ॥
२२९. सव्वेयस्स केवतिय काल अंतर होइ ? एव चेव जहा देसेयस्स ॥
२३०. निरेयस्स केवतिय काल अंतरं होइ ?
 सट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइ-
 भागं । परट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणंतं कालं । एवं
 जाव अणंतपदेसियस्स ॥
२३१. परमाणुपोगलार्णं भते ! सव्वेयाण केवतियं कालं अंतरं होइ ? 'नत्थि
 अंतरं' ॥
२३२. निरेयाणं केवतिय कालं अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं ॥
२३३. दुपदेसियाणं भते ! खघाण देसेयाणं केवतियं काल अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं ॥
२३४. सव्वेयाण केवतिय काल अंतर होइ ? नत्थि अंतर ॥
२३५. निरेयाण केवतियं काल अंतर होइ ? नत्थि अंतर । एव जाव अणंतपदेसि-
 याण ॥
२३६. एएसि ण भते ! परमाणुपोगलार्णं सव्वेयाण निरेयाण य कयरे कयरेहितो^१
 •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? • विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोगला सव्वेया, निरेया असखेज्जगुणा ॥
२३७. एएसि ण भते ! दुपदेसियाण खघाण देसेयाण, सव्वेयाणं, निरेयाण य कयरे
 कयरेहितो^१ •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? • विसेसाहिया वा ?
 गोयमा ! सव्वत्थोवा दुपदेसिया खघा सव्वेया, देसेया असखेज्जगुणा, निरेया
 असखेज्जगुणा । एव जाव असखेज्जपदेसियाण खघाण ॥
२३८. एएसि ण भते ! अणंतपदेसियाण खघाणं देसेयाण, सव्वेयाणं, निरेयाण य

१. नत्थितर (अ, क, ख, ता, भ) ।

३. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

२. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया, निरेया अणतगुणा, देसेया
अणतगुणा ॥

२३६. एसि ण भते ! परमाणुपोगलाण, सखेज्जपदेसियाण असखेज्जपदेसियाणं
अणतपदेसियाण य खधाण देसेयाणं, सव्वेयाण, निरेयाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठ-
याए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो^१ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला
वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ अणत-
पदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा देसेया
दव्वट्ठयाए अणतगुणा ४ असखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा
५ सखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ६ परमाणुपोगला
सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७. सखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए
असखेज्जगुणा ८ असखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा
९ परमाणुपोगला निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १०. सखेज्जपदेसिया
खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा ११ असखेज्जपदेसिया खधा निरेया
दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया । एव
पदेसट्ठयाए वि, नवर—परमाणुपोगला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा । सखेज्जपदे-
सिया खधा निरेया पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा । सेसं त चेव । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए
—१ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ ते चेव पदेसट्ठयाए
अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ४ ते चेव
पदेसट्ठयाए अणतगुणा ५. अणतपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा
६ ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा ७. असखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठ-
याए अणतगुणा ८. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ९ सखेज्जपदेसिया
खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १०. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा^१
११ परमाणुपोगला सव्वेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १२ सखेज्ज-
पदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १३ ते चेव पदेसट्ठयाए अस-
खेज्जगुणा १४ असखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १५.
ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १६ परमाणुपोगला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठ-
याए असखेज्जगुणा १७. सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा

१. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया । ३. सखेज्जगुणा (ता) ।

२. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

१८. ते चेव पदेसद्वयाए संखेज्जगुणा १९. असंखेज्जपदेसिया निरेया द्व्वद्वयाए
असंखेज्जगुणा २०. ते चेव पदेसद्वयाए असंखेज्जगुणा ॥

मज्झपदेसा-पदं

२४०. कति णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पणत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पणत्ता ॥
२४१. कति णं भंते ! अधम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पणत्ता ? एव चेव ॥
२४२. कति णं भंते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपदेसा पणत्ता ? एव चेव ॥
२४३. कति णं भंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पणत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पणत्ता ॥
२४४. एए णं भंते ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा कतिसु आगासपदेसेसु
ओगाहति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एवकसि वा दोहिं वा तीहि वा चउहि वा पंचहि वा छहि
वा, उक्कोसेणं अट्ठसु, नो चेव णं सत्तसु ॥
२४५. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देशो

पज्जव-पदं

२४६. कतिविहा णं भंते ! पज्जवा पणत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पज्जवा पणत्ता, तं जहा—जीवपज्जवा य, अजीवपज्जवा
य । पज्जवपदं^१ निरवसेसं भाणियव्वं जहा^२ पणवणाए ॥

काल-पद

२४७. आवलिया णं भंते ! किं सखेज्जा समया ? असखेज्जा समया ? अणता
समया ?
गोयमा ! नो संखेज्जा समया, असंखेज्जा समया, नो अणता समया ॥
२४८. आणापाणू णं भंते ! किं सखेज्जा० ? एवं चेव ॥

- गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असंखेज्जाओ आवलियाओ, सिय अणंताओ आवलियाओ । एव जाव उस्सप्पिणीओ ॥
२६०. पोग्गलपरियट्ठा णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, अणंताओ आवलियाओ ॥
२६१. थोवे णं भते ! कि संखेज्जाओ आणापाणूओ ? असंखेज्जाओ ? जहा आवलियाए वत्तव्वया एवं आणापाणूओ वि निरवसेसा । एव एतेण गमएण जाव सीसपहेलिया भाणियव्वा ॥
२६२. सागरोवमे ण भते ! कि संखेज्जा पलिओवमा ?—पुच्छा ।
गोयमा ! संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, नो अणंता पलिओवमा । एव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥
२६३. पोग्गलपरियट्ठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा । एव जाव सव्वद्धा ॥
२६४. सागरोवमा ण भते ! कि संखेज्जा पलिओवमा—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जा पलिओवमा, सिय असंखेज्जा पलिओवमा, सिय अणता पलिओवमा । एव जाव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥
२६५. पोग्गलपरियट्ठा ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा ॥
२६६. ओसप्पिणी ण भते ! कि संखेज्जा सागरोवमा ? जहा पलिओवमस्स वत्तव्वया तहा सागरोवमस्स वि ॥
२६७. पोग्गलपरियट्ठे ण भते ! कि संखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ । एवं जाव सव्वद्धा ॥
२६८. पोग्गलपरियट्ठा ण भते ! कि संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥
२६९. तीतद्धा णं भते ! कि संखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, नो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्ठा, अणता पोग्गलपरियट्ठा । एव अणागयद्धा वि । एव सव्वद्धा वि ॥
२७०. अणागयद्धा ण भते ! कि संखेज्जाओ तीतद्धाओ ? असंखेज्जाओ ? अणताओ ?

गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणताओ तीतद्धाओ । अणागयद्धा ण तीतद्धाओ समयाहिया, तीतद्धा ण अणागयद्धाओ समयूणा ॥

२७१ सव्वद्धा ण भते ! कि सखेज्जाओ तीतद्धाओ—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणताओ तीतद्धाओ । सव्वद्धा ण तीतद्धाओ सातिरेगदुगुणा, तीतद्धा ण सव्वद्धाओ थोवू-णए अद्धे ॥

२७२. सव्वद्धा ण भते ! कि सखेज्जाओ अणागयद्धाओ—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो असखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो अणताओ अणागयद्धाओ । सव्वद्धा ण अणागयद्धाओ थोवूणगदुगुणा । अणागयद्धा ण सव्वद्धाओ सातिरेगे अद्धे ॥

निगोद-पदं

२७३ कतिविहा ण भते ! निओदा^१ पणत्ता ?

गोयमा ! दुविहा निओदा पणत्ता, त जहा—निओयगा य, निओयगजीवा य ॥

२७४. निओदा ण भते ! कतिविहा पणत्ता ?

गोयमा ! दुविहा पणत्ता, त जहा—सुहुमनिगोदा^१ य, वायरनिओदा^१ य । एव निओदा भाणियव्वा जहा^१ जीवाभिगमे तहेव निरवसेस ॥

नाम-पदं

२७५ कतिविहे ण भते ! नामे पणत्ते ?

गोयमा ! छव्विहे नामे पणत्ते, तं जहा—ओदइए जाव^१ सण्णिवाइए ॥

२७६. से कि तं ओदइए नामे ?

ओदइए नामे दुविहे पणत्ते, तं जहा—उदए य, उदयनिप्फण्णेय—एवं जहा सत्तरसमसए पढमे उद्देसए भावो तहेव इह वि, नवरं—इमं नामनाणत्त,^१ सेस तहेव जाव^१ सण्णिवाइए ॥

२७७ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

१. नियोमा (अ, ता) ।

५. भ. १७।१६ ।

२. सुहुमा नि० (ता) ।

६. नाणत्त (अ, ख, ता, अ, म, स) ।

३. वातरनि० (क), वादरा नि० (ता) ।

७. भ० १७।१७ ।

४. जी० ५।२ ।

छद्मो उद्देशो

१. पणवण २. वेद ३. रागे, ४. कप्प ५. चरित्त ६. पडिसेवणा ७. नार्णे ।
 ८. तित्थे ९. लिंग १०. सरीरे, ११. खेत्ते १२. काल १३. गइ १४. सज्जम
 १५. निकासे ॥१॥
 १६, १७. जोगुवओग १८. कसाए, १९. लेसा २०. परिणाम २१ 'बध
 २२ वेदे य' ।
 २३. कम्मोदीरण २४. उवसंपजहण, २५. सण्णा य २६. आहारो ॥२॥
 २७. भव २८. आगरिसे, २९, ३०. कालतरे य ३१. समुग्घाय ३२ खेत्त
 ३३ फुसणा य ।
 ३४. भावे ३५ परिमाणे खलु, ३६, अप्पाबहुय नियठाण ॥३॥

पणवण-पदं

२७८. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भत्ते ! नियंठा पणत्ता ?
 गोयमा ! पंच नियंठा पणत्ता, त जहा—पुलाए, बउसे, कुसीले, नियठे,
 सिणाए ॥
 २७९. पुलाए णं भत्ते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, त जहा—नाणपुलाए, दसणपुलाए, चरित्तपुलाए,
 लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए नाम पंचमे ॥
 २८०. बउसे ण भत्ते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, त जहा—आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, संवुडबउसे,
 असंवुडबउसे, अहासुहुमबउसे नाम पंचमे ॥
 २८१. कुसीले ण भत्ते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! दुविहे पणत्ते, त जहा—पडिसेवणाकुसीले य, कसायकुसीले य ॥
 २८२. पडिसेवणाकुसीले ण भत्ते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, त जहा—नाणपडिसेवणाकुसीले, दसणपडिसेवणा-
 कुसीले, चरित्तपडिसेवणाकुसीले, लिंगपडिसेवणाकुसीले, अहासुहुमपडिसेवणा-
 कुसीले नाम पंचमे ॥
 २८३. कसायकुसीले णं भत्ते ! कतिविहे पणत्ते ?
 गोयमा ! पंचविहे पणत्ते, त जहा—नाणकसायकुसीले, दंसणकसायकुसीले,
 चरित्तकसायकुसीले, लिंगकसायकुसीले, अहासुहुमकसायकुसीले नाम पंचमे ॥

१. बधणे वेदे (ता, ब) ।

३. या (ता) ।

२. परिणामे (अ, स) ।

- २८४ नियठे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयनियठे, अपढमसमयनियठे,
 चरिमसमयनियठे^१, अचरिमसमयनियठे, अहासुहुमनियठे नाम पचमे ॥
- २८५ सिणाए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
 गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छवी, असवले, अकम्मसे, ससुद्धनाण-
 दसणधरे अरहा जिणे केवली^२, अपरिस्सावी^३ ॥

वेद-पदं

- २८६ पुलाए ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
 गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥
- २८७ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिसनपुसग-
 वेदए होज्जा ?
 गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा
 होज्जा ॥
- २८८ वउसे ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
 गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥
- २८९ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-
 नपुसगवेदए होज्जा ?
 गोयमा ! इत्थिवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा
 होज्जा । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥
- २९० कसायकुसीले ण भते ! कि सवेदए—पुच्छा ।
 गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ॥
- २९१ जइ अवेदए कि उवसतवेदए ? खीणवेदए होज्जा ?
 गोयमा ! उवसतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥
- २९२ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए—पुच्छा ।
 गोयमा ! तिसु वि जहा बउसो ॥

१. चरम^० (स) ।

२. उत्तराध्ययनेषु त्वहं जिन केवलीत्यय
 पञ्चमो भेद उक्त । अपरिश्रावीति तु
 नाधीतमेव, इह चावस्थाभेदेन भेदो न
 केनचिद् वृत्तिकृतेहात्यत्र च ग्रन्थे व्याख्यात-
 स्तत्र चैवं सभावयाम —शब्दनयापेक्षयैतेषा
 भेदो भावनीय शक्रपुरन्दरावदिति (वृ),

स्थानाङ्गवृत्ती भाष्योल्लेखपूर्वकमेतज्जचित्त-
 मस्ति—निष्क्रियत्वात् सकलयोगिनरोधे
 अपरिश्रावीति पञ्चम, क्वचित्पुनरहं
 जिन इति पञ्चम । अत्र भाष्यगाथा—
 अच्छवि अस्सवले या, अकम्म संसुद्ध अरह-
 जिणा ।

३. अपरिस्साती (ता) ।

२६३. नियंठे णं भते ! किं सवेदए—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ॥
२६४. जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए—पुच्छा ।
 गोयमा ! उवसतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥
२६५. सिणाए णं भते ! किं सवेदए होज्जा ० ? जहा नियंठे तहा सिणाए वि, नवरं
 —नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ॥

राग-पदं

२६६. पुलाए णं भते ! किं सरागे होज्जा ? वीतरागे होज्जा ?
 गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीतरागे होज्जा । एव जाव कसायकुसीले ॥
२६७. नियंठे णं भते ! किं सरागे होज्जा—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो सरागे होज्जा, वीतरागे होज्जा ॥
२६८. जइ वीतरागे होज्जा किं उवसंतकसायवीतरागे होज्जा ? खीणकसायवीतरागे
 होज्जा ?
 गोयमा ! उवसंतकसायवीतरागे वा होज्जा, खीणकसायवीतरागे वा होज्जा ।
 सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसंतकसायवीतरागे होज्जा, खीणकसायवीत-
 रागे होज्जा ॥

कप्प-पदं

२६९. पुलाए णं भते ! किं ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
 गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा । एवं जाव सिणाए ॥
३००. पुलाए णं भते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते
 होज्जा ?
 गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा ॥
३०१. वउसे णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा ।
 एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥
३०२. कसायकुसीले णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, कप्पातीते वा होज्जा ॥
३०३. नियंठे णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, नो थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा । एवं
 सिणाए वि ॥

चरित्त-पदं

३०४. पुलाए णं भते ! किं सामाइयसंजमे होज्जा ? छेओवट्ठावणियसंजमे होज्जा ?
 परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा ? सुहुमसंपरागसंजमे होज्जा ? अहक्खायसंजमे
 होज्जा ?

गोयमा ! सामाइयसजमे वा होज्जा, छेओवट्ठावणियसजमे वा होज्जा, नो परिहारविसुद्धियसजमे होज्जा, नो सुहुमसपरागसजमे होज्जा, नो अहक्खाय-सजमे होज्जा । एव वउसे वि । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३०५. कसायकुसीले ण—पुच्छा ।

गोयमा ! सामाइयसजमे वा होज्जा जाव सुहुमसपरागसजमे वा होज्जा, नो अहक्खायसजमे होज्जा ॥

३०६ नियठे ण—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सामाइयसजमे होज्जा जाव नो सुहुमसपरागसजमे होज्जा, अहक्खायसजमे होज्जा । एव सिणाए वि ॥

पडिसेवणा-पदं

३०७. पुलाए ण भते ! कि पडिसेवए होज्जा ? अपडिसेवए होज्जा ?

गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो अपडिसेवए होज्जा ॥

३०८ जइ पडिसेवए होज्जा कि मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?

गोयमा ! मूलगुणपडिसेवए वा होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए वा होज्जा । 'मूलगुणे पडिसेवमाणे' पच्चह आसवाण अण्णयर पडिसेवेज्जा, 'उत्तरगुणे पडिसेवमाणे' दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अण्णयर पडिसेवेज्जा ॥

३०९ वउसे ण—पुच्छा ।

गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो अपडिसेवए होज्जा ॥

३१०. जइ पडिसेवए होज्जा कि मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?

गोयमा ! नो मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा । उत्तरगुणे पडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स अण्णयर पडिसेवेज्जा । पडिसेवणा-कुसीले जहा पुलाए ॥

३११ कसायकुसीले ण—पुच्छा ।

गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा । एवं नियठे' वि । एवं सिणाए वि ॥

नाण-पदं

३१२. पुलाए ण भते ! कतिसु नाणसु होज्जा ?

गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होज्जा । दोसु होमाणे दोसु आभिणिवोहियनाण-

१. मूलगुणपडि° (क, म) ;

३. निगये (स) ।

२. उत्तरगुणपडि° (अ, ख, ब, म) ।

सुयनाणेषु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेषु होज्जा । एवं वउसे वि । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३१३. कसायकुसीले णं—पुच्छा ।

गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा । दोसु होमाणे दोसु आभिणिबो-
हियनाण-सुयनाणेषु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-
ओहिनाणेषु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-
मणपज्जवनानेषु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-
ओहिनाण-मणपज्जवनानेषु होज्जा । एवं नियठे वि ॥

३१४. सिणाए ण—पुच्छा ।

गोयमा ! एगम्मि केवलनाणे होज्जा ॥

३१५. पुलाए ण भंते ! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयारवत्थु, उक्कोसेण नव
पुव्वाइं अहिज्जेज्जा ॥

३१६. वउसे—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा ।
एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३१७. कसायकुसीले—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा ।
एवं नियठे वि ॥

३१८. सिणाए—पुच्छा ।

गोयमा ! सुयवतिरित्ते होज्जा ॥

तित्थ-पद

३१९. पुलाए ण भंते ! किं तित्थे होज्जा ? अतित्थे होज्जा ?

गोयमा ! तित्थे होज्जा, नो अतित्थे होज्जा । एवं वउसे वि । एव पडिसेवणा-
कुसीले वि ॥

३२०. कसायकुसीले—पुच्छा ।

गोयमा ! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा ॥

३२१. जइ अतित्थे होज्जा किं तित्थकरे होज्जा ? पत्तेयबुद्धे होज्जा ?

गोयमा ! तित्थकरे वा होज्जा, पत्तेयबुद्धे वा होज्जा । एवं नियठे वि । एव
सिणाए वि ॥

लिङ्ग-पदं

३२२. पुलाए णं भंते ! किं सल्लिगे होज्जा ? अण्णल्लिगे होज्जा ? गिहिल्लिगे होज्जा ?

गोयमा ! दव्वलिंगं पडुच्च सलिंगे वा होज्जा, अण्णलिंगे वा होज्जा, गिहिलिंगे वा होज्जा । भावलिंगं पडुच्च नियम सलिंगे होज्जा । एवं जाव सिणाए ॥

सरीर-पदं

३२३. पुलाए ण भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?

गोयमा ! तिसु ओरालिय-तेया^१-कम्मएसु होज्जा ॥

३२४ वउसे ण भंते !—पुच्छा ।

गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होज्जा । तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३२५ कसायकुसीले—पुच्छा ।

गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा होज्जा । तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा, पंचसु होमाणे पंचसु ओरालिय-वेउव्विय-आहारण-तेया-कम्मएसु होज्जा । नियंठो सिणाओ य जहा पुलाओ ॥

स्वतन्त्र-पदं

३२६. पुलाए णं भंते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण-संतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, णो अकम्मभूमीए होज्जा ॥

३२७ वउसे णं—पुच्छा ।

गोयमा ! जम्मण-संतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, नो अकम्मभूमीए होज्जा । साहरणं पडुच्च कम्मभूमीए वा होज्जा, अकम्मभूमीए वा होज्जा । एव जाव सिणाए ॥

काल-पदं

३२८. पुलाए ण भंते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ?

गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ॥

३२९ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले होज्जा ? सुसमाकाने होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले^२ होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ?

१. तेय (अ) ।

२. °दुस्समाकाले (अ, ना, म) ।

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा । सतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ॥

३३०. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा कि दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमसुसमाकाले होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा । सतिभावं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा ॥

३३१. जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा कि सुसमसुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा ? दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण-सतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा, दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ॥

- ३३२ वउसे णं—पुच्छा ।

गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि—नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ॥

- ३३३ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा कि सुसमसुसमाकाले होज्जा—पुच्छा ।

गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा । सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा । साहरण पडुच्च अण्ण-यरे समाकाले होज्जा ॥

३३४. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा कि दुस्समदुस्समाकाले होज्जा - पुच्छा ।

गोयमा ! जम्मण पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा जहेव पुलाए । संति-

भाव पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा । एवं संतिभावेण वि जहा पुलाए जाव नो सुसमसुसमाकाले होज्जा । साहरणं पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा ॥

३३५ जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा—पुच्छा ।

गोयमा ! जम्मण-संतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा जहेव पुलाए जाव दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा । साहरण पडुच्च अण्णयरे पलिभागे होज्जा । जहा वउसे । एवं पडिसेवणाकुसीले वि । एव कसायकुसीले वि । नियठो सिणाओ य जहा पुलाओ, नवर—एतेसि अब्भहिय साहरण भाणियव्वं । सेस त चेव ॥

गति-पद

३३६. पुलाए ण भते । कालगए समाणे क' गतिं गच्छति ?

गोयमा ! देवगतिं गच्छति ॥

३३७. देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा ? वाणमतरेसु उववज्जेज्जा ? जोइसिएसु उववज्जेज्जा ? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! नो भवणवासीसु, नो वाणमतरेसु, नो जोइसिएसु, वेमाणिएसु उववज्जेज्जा । वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उवकोसेण सहस्सारे कप्पे उववज्जेज्जा । वउसे ण एव चेव, नवर—उवकोसेण अचुए कप्पे । पडि-सेवणाकुसीले जहा वउसे । कसायकुसीले जहा पुलाए, नवर—उवकोसेण अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा । नियठे णं एव चेव जाव वेमाणिएसु उववज्ज-माणे अजहण्णमणुवकोसेण अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा ॥

३३८ सिणाए ण भंते ! कालगए समाणे क' गतिं गच्छइ ?

गोयमा ! सिद्धिगतिं गच्छइ ॥

३३९ पुलाए ण भते ! देवेसु उववज्जमाणे किं इदत्ताए उववज्जेज्जा ? सामाणिय-त्ताए उववज्जेज्जा ? तावत्तीसाए' उववज्जेज्जा ? लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा ? अहमिदत्ताए' उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इदत्ताए उववज्जेज्जा, सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा, तावत्तीसाए उववज्जेज्जा, लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, नो अहमिद-त्ताए उववज्जेज्जा । विराहण पडुच्च अण्णयरेसु' उववज्जेज्जा । एव वउसे वि । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३४० कसायकुसीले—पुच्छा ।

१. किं (अ, स) ।

२. तावत्तीसगत्ताए (तर) ।

३. अहमिदत्ताए वा (स) ।

४. भवनपत्थादीनामन्यतरेषु देवेषु (वृ) ।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए वा उववज्जेज्जा जाव अहमिदत्ताए वा उववज्जेज्जा । विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४१. नियंठे—पुच्छा ।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च नो इंदत्ताए उववज्जेज्जा जाव नो लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, अहमिदत्ताए उववज्जेज्जा । विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४२. पुलायस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उवकोसेण अट्टारस्स सागरोवमाइं ॥

३४३. बउसस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उवकोसेणं बावीसं सागरोवमाइ । एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि ॥

३४४. कसायकुसीलस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उवकोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ ॥

३४५. नियंठस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

संजमट्टाण-पदं

३४६. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्टाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्टाणा पण्णत्ता । एव जाव कसायकुसीलस्स ॥

३४७. नियंठस्स ण भंते ! केवतिया संजमट्टाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्टाणे । एवं सिणायस्स वि ॥

३४८. एतेसि ण भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणा-कसायकुसील-नियंठ-सिणायानं संजमट्टाणाण कयरे कयरेहितो ? अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सम्बत्थोवे नियंठस्स सिणायस्स य एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्टाणे । पुलागस्स णं संजमट्टाणा असंखेज्जगुणा । बउसस्स संजमट्टाणा असंखेज्जगुणा । पडिसेवणाकुसीलस्स संजमट्टाणा असंखेज्जगुणा । कसायकुसीलस्स संजमट्टाणा असंखेज्जगुणा ॥

निगास-पदं

३४९. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता । एवं जाव सिणायस्स ॥

३५०. पुलाए णं भते ! पुलागस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिं ?
 गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिं ।
 जइ हीणे अणंतभागहीणे वा, असखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा, अणतगुणहीणे वा । अहं अब्भहिं अणंतभागमब्भहिं वा, असंखेज्जइभागमब्भहिं वा, संखेज्जभागमब्भहिं वा, संखेज्जगुणमब्भहिं वा, असखेज्जगुणमब्भहिं वा, अणंतगुणमब्भहिं वा । ॥
३५१. पुलाए णं भते ! वउसस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिं ?
 गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिं; अणतगुणहीणे । एव पडिसेवणाकुसीलस्स वि । कसायकुसीलेणं समं छट्ठाणवडिं जहेव सट्ठाणे । नियठस्स जहा वउसस्स । एव सिणायस्स वि ॥
३५२. वउसे णं भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिं ?
 गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिं—अणंतगुणमब्भहिं ॥
३५३. वउसे णं भते ! वउसस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा ।
 गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिं । जइ हीणे छट्ठाणवडिं ॥
३५४. वउसे णं भते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? छट्ठाणवडिं । एवं कसायकुसीलस्स वि ॥
३५५. वउसे णं भते ! नियठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा ।
 गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिं, अणतगुणहीणे । एवं सिणायस्स वि । पडिसेवणाकुसीलस्स एव चेव वउसवत्तव्वया भाणियव्वा । कसायकुसीलस्स एस चेव वउसवत्तव्वया, नवरं—पुलाएणं वि समं छट्ठाणवडिं ॥
३५६. नियठे णं भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा ।

१. वृत्तौ असदभावस्थापनया षट्स्थानपतितमेतद् उदाहृतमस्ति—

हीन			अधिक		
१. अनन्तभागहीन	१००००	६६००	१. अनन्तभागअधिक	६६००	१००००
२. असंख्यातभागहीन	१००००	६८००	२. असंख्यातभागअधिक	६८००	१००००
३. संख्यातभागहीन	१००००	६०००	३. संख्यातभागअधिक	६०००	१००००
४. संख्यातगुणहीन	१००००	१०००	४. संख्यातगुणअधिक	१०००	१००००
५. असंख्यातगुणहीन	१००००	२००	५. असंख्यातगुणअधिक	२००	१००००
६. अनन्तगुणहीन	१००००	१००	६. अनन्तगुणअधिक	१००	१००००

गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिंए—अणंतगुणमव्वहिंए । एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३५७. नियंठे णं भंते ! नियंठस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा ।

गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिंए ॥

३५८. 'नियंठस्स णं भंते ! सिणायस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा ।

गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिंए ॥°

३५९. सिणाए णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं 'चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा ।

गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिंए—अणंतगुणमव्वहिंए । एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३६०. सिणाए णं भंते ! नियंठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा ।

गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिंए ° ॥

३६१. सिणाए णं भंते ! सिणायस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा ।

गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिंए ॥

३६२. एएसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं जहण्णुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरेहितो' °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १. पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा २. पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ३. बउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ४. बउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ५. पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ६. कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ७. नियंठस्स सिणायस्स य एतेसि णं अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

जोग-पदं

३६३. पुलाए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?

गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ॥

३६४. जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?

गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा । एवं जाव नियंठे ॥

१. सं० पा०—एवं सिणायस्स वि ।

तह्हा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए ।

२. सं० पा०—एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया ३. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३६५ सिणाए णं—पुच्छा ।

गोयमा ! सजोगी वा होज्जा, अजोगी वा होज्जा । जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा—सेसं जहा पुलागस्स ॥

उवओग-पदं

३६६ पुलाए ण भते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?

गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा । एवं जाव सिणाए ॥

कसाय-पदं

३६७. पुलाए ण भते । सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?

गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३६८. जइ सकसायी होज्जा, से णं भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?

गोयमा ! चउसु कोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा । एवं वउसे वि । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३६९ कसायकुसीले णं—पुच्छा ।

गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३७०. जइ सकसायी होज्जा, से णं भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?

गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एगम्मि वा होज्जा । चउसु होमाणे चउसु सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु संजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे सजलणलोभे होज्जा ॥

३७१ नियठे ण—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा ॥

३७२ जइ अकसायी होज्जा किं उवसंतकसायी होज्जा ? खोणकसायी होज्जा ?

गोयमा ! उवसतकसायी वा होज्जा, खीणकसायी वा होज्जा । सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसतकसायी होज्जा, खोणकसायी होज्जा ॥

लेस्सा-पदं

३७३ पुलाए ण भते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?

गोयमा ! सलेस्सो होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७४. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?

गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, त जहा—तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए । एवं वउसस्स वि । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३७५. कसायकुसीले—पुच्छा ।

गोयमा ! सलेस्सं होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७६. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
 गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ॥
३७७. नियंठे णं भंते !—पुच्छा ।
 गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥
३७८. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
 गोयमा ! एक्काए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥
३७९. सिणाए—पुच्छा ।
 गोयमा ! सलेस्से वा होज्जा, अलेस्से वा होज्जा ॥
३८०. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
 गोयमा ! एगाए परमसुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

३८१. पुलाए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे^१ होज्जा ?
 अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा,
 अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा । एव जाव कसायकुसीले ॥
३८२. नियंठे णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे होज्जा, नो हायमाणपरिणामे होज्जा, अवट्ठिय-
 परिणामे वा होज्जा । एवं सिणाए वि ॥
३८३. पुलाए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्तं ॥
३८४. केवतियं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा !
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्तं ॥
३८५. केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण सत्तं समय। एवं जाव
 कसायकुसीले ॥
३८६. नियंठे णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ॥
३८७. केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण अतोमुहुत्तं ॥
३८८. सिणाए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! 'जहण्णेण वि'^२ अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ॥

१. हीयमाण° (म, स) ।

२. जहण्णेणं (अ. क. ख. ब, म, स) ।

३८६. केवतिथं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुण्वकोडी ॥

बंध-पदं

३९०. पुलाए ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ?
गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति ॥
३९१. वलसे—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा । सत्त वंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वंधति, अट्ठ वधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वंधति । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥
३९२. कसायकुसीले पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा, छव्विहवधए वा । सत्त वधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति, अट्ठ वधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ वधति, छ वधमाणे आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छव्वकम्मप्पगडीओ वंधति ॥
३९३. नियंटे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! एग वेयणिज्ज कम्म वधइ ॥
३९४. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एगविहवधए वा, अवधए वा । एग वधमाणे एग वेयणिज्ज कम्म वधइ ॥

वेदण-पदं

३९५. पुलाए णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेइ ?
गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेइ । एव जाव कसायकुसीले ॥
३९६. नियंटे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥
३९७. सिणाए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! वेयणिज्ज-आउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥

उदीरणा-पदं

३९८. पुलाए णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥
३९९. वलसे—पुच्छा ।

गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्टविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा । सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ट उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ट कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-वज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति । पडिसेवणाकुसीले एव चेव ॥

४००. कसायकुसीले—पुच्छा ।

गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्टविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा, पच-विहउदीरए वा । सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ट उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ट कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥

४०१. नियंठे—पुच्छा ।

गोयमा ! पंचविहउदीरए वा, दुविहउदीरए वा । पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पच कम्मप्पगडीओ उदीरेति, दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ॥

४०२. सिणाए—पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहउदीरए वा, अणुदीरए वा । दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ॥

उवसंपज्जहण-पदं

४०३. पुलाए णं भते ! पुलायत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?

गोयमा ! पुलायत्तं जहति । कसायकुसील^१ वा अस्संजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०४. बउसे णं भते ! बउसत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?

गोयमा ! बउसत्तं जहति । पडिसेवणाकुसीलं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा सज्जमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०५. पडिसेवणाकुसीले णं^२—पुच्छा ।

गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहति । बउसं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०६. कसायकुसीले णं—पुच्छा ।

गोयमा ! कसायकुसीलत्तं जहति । पुलायं वा बउसं वा पडिसेवणाकुसीलं वा नियंठं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

१. इह भावप्रत्ययलोपात् कसायकुशीलत्वमित्यादि २. णं भते ! पडि (अ, क, ख, व, म, स) । दृश्यम् (वृ) ।

४०७. गियठे—पुच्छा ।

गोयमा ! नियंठत् जहति । कसायकुसील वा सिणाय वा अस्संजम वा उवसप-
ज्जति ॥

४०८. सिणाए—पुच्छा ।

गोयमा ! सिणायत्तं जहति । सिद्धिगति उवसपज्जति ॥

सण्णा-पदं

४०९. पुलाए णं भंते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा ? नोसण्णोवउत्ते होज्जा ?

गोयमा ! नोसण्णोवउत्ते होज्जा ॥

४१०. वउसे णं भते !—पुच्छा ।

गोयमा ! सण्णोवउत्ते वा होज्जा, नो सण्णोवउत्ते वा होज्जा । एवं पडिसेवणा-
कुसीले वि । एव कसायकुसीले वि । नियंठे सिणाए य जहा पुलाए ॥

आहार-पदं

४११. पुलाए ण भंते ! किं आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ?

गोयमा ! आहारए होज्जा, नो अणाहारए होज्जा । एवं जाव नियंठे ॥

४१२. सिणाए—पुच्छा ।

गोयमा ! आहारए वा होज्जा, अणाहारए वा होज्जा ॥

भव-पदं

४१३. पुलाए ण भते ! कति भवग्गहणाइं होज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्कं, उक्कोसेणं तिण्णि ॥

४१४. वउसे—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण एक्कं, उक्कोसेणं अट्ठ । एवं पडिसेवणाकुसीले वि । एवं
कसायकुसीले वि । नियंठे जहा पुलाए ॥

४१५. सिणाए—पुच्छा ।

गोयमा ! एक्कं ॥

आगरिस-पदं

४१६. पुलागस्स णं भते ! एगभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पणत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेणं तिण्णि ॥

४१७. वउसस्स णं—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेणं सतग्गसो । एवं पडिसेवणाकुसीले वि,
कसायकुसीले^१ वि ॥

१. एवं कसाय^० (व) ।

४१८. नियंठस्स णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥
४१९. सिणायस्स णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! एक्को^१ ॥
४२०. पुलागस्स णं भते ! नाणाभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
 गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं सत्त ॥
४२१. बउसस्स—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं सहस्सग्गसो^२ । एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥
४२२. नियंठस्स णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेणं पंच ॥
४२३. सिणायस्स—पुच्छा ।
 गोयमा ! नत्थि एक्को वि ॥

काल-पदं

४२४. पुलाए ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्तं ॥
४२५. बउसे—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी । एवं पडिसेवणा-
 कुसीले वि, कसायकुसीले वि ॥
४२६. नियठे—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्तं ॥
४२७. सिणाए—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥
४२८. पुलाया ण भते ! कालओ केवच्चिर होति ?
 गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्तं ॥
४२९. बउसा ण—पुच्छा ।
 गोयमा ! सव्वद्ध । एवं जाव कसालकुसीला । नियठा जहा पुलागा । सिणाया
 जहा बउसा ॥

अंतर-पदं

४३०. पुलागस्स णं भते ! केवतिय कालं अतरं होइ ?

१. एक्को वि नत्थि (म, स) ।

२. सहस्ससो (अ, क, ख, ता, म) ।

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणत्त काल—अणत्ताओ ओसप्पिणि-
उत्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ठ देसूणं । एव जाव
नियठस्स ।

४३१. सिणायस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! 'नत्थि अतरं' ॥

४३२. पुलायाण भते ! केवतिय काल अंतर होइ ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण सखेज्जाइ वासाइ ॥

४३३. वउसाणं भते !—पुच्छा ।

गोयमा ! नत्थि अतर । एव जाव कसायकुसीलाण ॥

४३४. नियठाण—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण छम्मासा । सिणायानं जहा
वउसाण ॥

समुग्घाय-पदं

४३५. पुलागस्स ण भते ! कति समुग्घाया पणत्ता ?

गोयमा ! तिणिणं समुग्घाया पणत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसाय-
समुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥

४३६. वउसस्स ण भते !—पुच्छा ।

गोयमा ! पच्च समुग्घाया पणत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव तेया-
समुग्घाए । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

४३७. कसायकुसीलस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! छ समुग्घाया पणत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव आहार-
समुग्घाए ॥

४३८. नियठस्स ण—पुच्छा ।

गोयमा ! नत्थि एक्को वि ॥

४३९. सिणायस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! एगे केवलिसमुग्घाए पणत्ते ॥

खेत्त-पदं

४४०. पुलाए ण भते ! लोगस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असंखेज्जइभागे होज्जा ?

संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सब्बलोए होज्जा ?

गोयमा ! नो संखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु

भागेषु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेषु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा । एवं जाव नियंठे ॥

४४१. सिणाए णं—पुच्छा ।

गोयमा ! नो संखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेषु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेषु होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा ॥

फुसणा-पदं

४४२. पुलाए ण भंते ! लोगस्स कि संखेज्जइभागं फुसइ ? असंखेज्जइभागं फुसइ ? एवं जहा ओगाहणा भणिया तहा फुसणा वि भाणियव्वा जाव सिणाए ॥

भावे-पदं

४४३. पुलाए णं भंते ! कतरम्मि भावे होज्जा ?

गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा । एवं जाव कसायकुसीले ॥

४४४. नियंठे—पुच्छा ।

गोयमा ! ओवसमिए वा खइए वा भावे होज्जा ॥

४४५. सिणाए—पुच्छा ।

गोयमा ! खइए भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

४४६. पुलाया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया होज्जा ?

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं ॥

४४७. वडसा णं भंते ! एगसमएणं—पुच्छा ।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसयपुहत्तं, उक्कोसेणं वि कोडिसयपुहत्तं । एवं पडिसेवणा-कुसीले वि ॥

४४८. कसायकुसीलाण—पुच्छा ।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसहस्सपुहत्तं, उक्कोसेणं वि कोडिसहस्सपुहत्तं ॥

४४९. नियंठाणं—पुच्छा ।

१. भावे वा (ता) ।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण वावट्ठु सतं—अट्ठसयं खवगणं, चउप्पन्नं उवसामगणं^१ । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयपुहत्त ॥

४५०. सिणायाण—पुच्छो ।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अट्ठसत । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिपुहत्त ॥

अप्पावहुयत्त-पदं

४५१. एसि ण भते ! पुलाग-वउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाण कयरे कयरेहितो^२ •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नियठा, पुलागा सखेज्जगुणा, सिणाया सखेज्जगुणा, वउसा सखेज्जगुणा, पडिसेवणाकुसीला सखेज्जगुणा, कसायकुसीला सखेज्जगुणा ॥

४५३. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव^३ विहरइ ॥

सत्तमो उद्देशो

पणवण-पद

४५३. कति ण भते ! संजया पणत्ता ?

गोयमा ! पच संजया पणत्ता, तं जहा—सामाइयसंजए, छेदोवट्ठावणियसंजए^४, परिहारविसुद्धियसंजए^५, सुहुमसपरायसंजए, अहक्खायसंजए ॥

४५४. सामाइयसंजए ण भते ! कतिविहे पणत्ते ?

गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ॥

४५५. छेदोवट्ठावणियसंजए ण—पुच्छा ।

गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—सातियारे य, निरत्तियारे य ॥

४५६. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा ।

१. उवसमगण (स) ।

२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

३. भ० १।५१ ।

४. °ट्ठाणिय° (ता) ।

५. °विसुद्धिसंजए (ख) ।

- गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—निव्विसमाणए य, निव्विट्ठुकाइए य ॥
 ४५७. सुहुमसंपरायसजए—पुच्छा ।
 गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—सकिलिस्समाणए य, विसुज्झमाणए^१ य ॥
 ४५८. अहक्खायसजए—पुच्छा ।
 गोयमा ! दुविहे पणत्ते, तं जहा—छउमत्थे य, केवली य ॥

संगहणी-गाहा

सामाइयम्मि उ कए, चाउज्जाम अणुत्तरं धम्मं ।
 तिविहेण फासयतो, सामाइयसंजओ स खलु ॥१॥
 छेत्तूण उ परियागं, पोराण जो ठवेइ अप्पाण ।
 धम्मम्मि पचजामे, छेदोवट्ठावणो स खलु ॥२॥
 परिहरइ जो विसुद्ध, तु पचयामं अणुत्तर धम्म ।
 तिविहेण फासयतो, परिहारियसजओ स खलु ॥३॥
 लोभाणू^२ वेदेतो^३, जो खलु उवसामओ व खवओ वा ।
 सो सुहुमसंपराओ, अहक्खाया^४ ऊणओ किचि ॥४॥
 उवसते खीणम्मि व, जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि ।
 छउमत्थो व जिणो वा, अहक्खाओ सजओ स खलु ॥५॥

वेद-पदं

४५९. सामाइयसंजए ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
 गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा । जइ सवेदए—एवं जहा^५
 कसायकुसीले तहेव निरवसेसं । एव छेदोवट्ठावणियसजए वि । परिहारविसुद्धिय-
 संजओ जहा^६ पुलाओ । सुहुमसंपरायसंजओ अहक्खायसजओ य जहा^७ नियठो ॥

राग-पदं

४६०. सामाइयसंजए ण भते ! कि सरागे होज्जा ? वीयरगे होज्जा ?
 गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीयरगे होज्जा । एव जाव सुहुमसंपरायसंजए ।
 अहक्खायसजए । जहा^८ नियठे ॥

- | | |
|---|---------------------|
| १. विसुद्धमाणए (ता) । | ५. भ० २५।२९१, २९२ । |
| २. लोममणु (अ, क); लोभाणु (ख, ता, म,
स); लोभाणु (ब) । | ६. भ० २५।२८६, २८७ । |
| ३. वेदयतो (अ); वेयतो (ता) । | ७. भ० २५।२९३, २९४ । |
| ४. अहक्खाया (अ, क, ख, ब, म, स) । | ८. भ० २५।२९७, २९८ । |

कप्प-पदं

४६१. सामाज्यमजगं ण भते ! किं ठियकप्पे होज्जा ? अट्टियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्टियकप्पे वा होज्जा ॥
४६२. छेदोवट्ठावणियसजगं—पुच्छा ।
गोयमा ! ठियकप्पे होज्जा, नो अट्टियकप्पे होज्जा । एव परिहारविसुद्धिय-
नजगं वि । मेमा जहा मामाज्यमजगं ॥
४६३. सामाज्यमजगं ण भते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते
होज्जा ?
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, जहा' कमायकुसीले तहेव निरवसेस । छेदो-
वट्ठावणिमो परिहारविमुद्धिमो य जहा' वडसो । सेसा जहा' नियठे ॥

नियठ-पदं

४६४. सामाज्यमजगं ण भते ! किं पुलाणं होज्जा ? वडमे जाव सिणाए होज्जा ?
गोयमा ! पुलाणं वा होज्जा, वडमे जाव कसायकुसीले वा होज्जा, नो नियठे
होज्जा, नो मिणाए होज्जा । एव छेदोवट्ठावणियं वि ॥
४६५. परिहारविमुद्धियमजगं ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पुलाणं, नो वडमं, नो पडिसेवणाकुसीले होज्जा; कसायकुसीले
होज्जा, नो नियठे होज्जा, नो मिणाए होज्जा । एव सुद्धमसपराए वि ॥
४६६. अहक्खायमजगं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पुलाणं होज्जा जाव नो कमायकुसीले होज्जा, नियठे वा होज्जा,
मिणाए वा होज्जा ॥

पडिसेवणा-पदं

४६७. सामाज्यमजगं ण भते ! किं पडिसेवए होज्जा ? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए वा होज्जा, अपडिसेवए वा होज्जा । जइ पडिसेवए
होज्जा—किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, सेस जहा' पुलागस्स । जहा' सामाज्य-
मजगं एव छेदोवट्ठावणियं वि ॥
४६८. परिहारविमुद्धियमजगं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा । एव जाव अहक्खाय-
सजगं ॥

नाण-पदं

४६६. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु नाणेषु होज्जा ?
 गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेषु होज्जा । एवं जहा^१ कसायकुसी-
 लस्स तद्देव चत्तारि नाणाइं भयणाए । एवं जाव सुहुमसंपराए । अहक्खाय-
 संजयस्स पंच नाणाइं भयणाए जहा^१ नाणुद्देसए ॥
४७०. सामाइयसंजए णं भंते ! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, जहा^१ कसायकुसीले । एवं छेदोवट्ठाव-
 णिए वि ॥
४७१. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयावत्थं, उक्कोसेणं असंपुण्णाइं
 दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा । सुहुमसंपरायसंजए जहा सामाइयसंजए ॥
४७२. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा,
 सुयवतिरित्ते वा होज्जा ॥

तित्थ-पदं

४७३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं तित्थे होज्जा ? अतित्थे होज्जा ?
 गोयमा ! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा, जहा^१ कसायकुसीले ।
 छेदोवट्ठावणिए परिहारविसुद्धिए य जहा^१ पुलाए । सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

लिंग-पदं

४७४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलिंगे होज्जा ? अण्णलिंगे होज्जा ? गिहिंलिंगे
 होज्जा ? जहा^१ पुलाए । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥
४७५. परिहारविसुद्धियसंजए णं भंते ! किं—पुच्छा ।
 गोयमा ! दव्वलिंगं पि भावलिंगं पि पडुच्चं सलिंगे होज्जा, नो अण्णलिंगे
 होज्जा, नो गिहिंलिंगे होज्जा । सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

सरीर-पदं

४७६. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
 गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा जहा^१ कसायकुसीले । एवं छेदोवट्ठाव-
 णिए वि । सेसा जहा^१ पुलाए ॥

१. भ० २५।३१३ ।

५. भ० २५।३१६ ।

२. भ० ८।१०५ ।

६. भ० २५।३२२ ।

३. भ० २५।३१७ ।

७. भ० २५।३२५ ।

४. भ० २५।३२१ ।

८. भ० २५।३२३ ।

लेख-पदं

४७७. सामाज्यसंज्ञं णं भन्ते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-गतिभावं पडुच्च जहा' वउसे । एव छेदोवट्ठावणिए वि ।
परिहारविमुद्धिए ग जहा' पुलाए । सेसा जहा सामाज्यसजए ॥

काल-पदं

४७८. सामाज्यसंज्ञं णं भन्ते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले
होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले जहा' वउसे । एव छेदोवट्ठावणिए वि, नवर—
जम्मण-नंनिभाव पडुच्च चउमु वि पत्तिभागेमु नत्थि, साहरण पडुच्च अणयरे
पडिभागे होज्जा, मेसं तं चेव ॥
४७९. परिहारविमुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओस-
प्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले नो होज्जा । जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा—जहा'
पुलाओ । उस्सप्पिणिकाले वि जहा' पुलाओ । सुहुमसपराइओ जहा' नियठे ।
एवं अहक्खाओ वि ॥

गति-पदं

४८०. सामाज्यसंज्ञं णं भन्ते ! कालं गणं समाणे कं गतिं गच्छति ?
गोयमा ! देवगतिं गच्छति ॥
४८१. देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासोमु उववज्जेज्जा ? वाणमतरेसु उववज्जेज्जा ?
जोडसिणमु उववज्जेज्जा ? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो भवणवासोमु उववज्जेज्जा—जहा' कसायकुसीले । एवं छेदोव-
ट्ठावणिए वि । परिहारविमुद्धिए जहा' पुलाए । सुहुमसपराए जहा' नियठे ॥
४८२. अहक्खाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एव अहक्खायसजए वि जाव अजहणमणुवकोसेण अणुत्तरविमाणेसु
उववज्जेज्जा; अत्येगतिए सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अतं करेति ॥
४८३. सामाज्यसंज्ञं णं भन्ते ! देवलोगेसु उववज्जमाणे किं ईदत्ताए उववज्जति—
पुच्छा ।

१. भ० २५।३२७ ।

२. भ० २५।३२६ ।

३. भ० २५।३३२-३३३ ।

४. भ० २५।३२६ ।

५. भ० २५।३३० ।

६. भ० २५।३३५ ।

७. किं (अ, स) ।

८. भ० २५।३३७ ।

९. भ० २५।३३६, ३३७ ।

१०. भ० २५।३३७ ।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च एवं जहा^१ कसायकुसीले । एवं छेदोवट्टावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहा^२ पुलाए । सेसा जहा^३ नियठे ॥

४८४. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स^४ केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! जहण्णेण दो पलिओवमाइं, उवकोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । एवं छेदोवट्टावणिए वि ॥

४८५. परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! जहण्णेण दो पलिओवमाइं, उवकोसेणं अट्टारस सागरोवमाइं, सेसाणं जहा^५ नियठस्स ॥

संजमट्टाण-पदं

४८६. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्टाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा संजमट्टाणा पण्णत्ता । एवं जाव परिहारविसुद्धियस्स ॥

४८७. सुहुमसंपरायसंजयस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! असखेज्जा अंतोमुहुत्तिया संजमट्टाणा पण्णत्ता ॥

४८८. अहक्खायसंजयस्स—पुच्छा ।

गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्टाणे पण्णत्ते ॥

४८९. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्टावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराग-अहक्खायसंजयाणं संजमट्टाणाणं कयरे कयरेहितो^६ *अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?^७ विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवे अहक्खायसंजमस्स एगे अजहण्णमणुक्कोसए सजमट्टाणे, सुहुमसंपरागसंजयस्स अतोमुहुत्तिया संजमट्टाणा असखेज्जगुणा, परिहारविसुद्धियसंजयस्स संजमट्टाणा असखेज्जगुणा, सामाइयसंजयस्स छेदोवट्टावणिय-संजयस्स य^८ एएसि णं संजमट्टाणा दोण्ह वि तुल्ला असखेज्जगुणा ॥

निगास-पदं

४९०. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता । एवं जाव अहक्खायसंजयस्स ॥

४९१. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स सट्टाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहि किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?

गोयमा ! सिय हीणे—छट्टाणवडिए ॥

१. भ० २५।३४० ।

२. भ० २५।३३६ ।

३. भ० २५।३४१ ।

४. भ० २५।३४५ ।

५. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

६. × (अ, क, ख, स) ।

- ४६२ सामाद्वयसंजए ण भंते ! छेदोवट्ठावणियसंजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-
पज्जवेहि—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए । एवं परिहारविसुद्धियस्स वि ॥
४६३. सामाद्वयसंजए ण भंते ! सुहुमसंपरायसजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-
पज्जवेहि—पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे । एवं अहक्खाय-
सजयस्स वि । एव छेदोवट्ठावणिए वि हेट्ठिल्लेसु तिसु वि सम छट्ठाणवडिए,
उवरिल्लेसु दोसु तहेव हीणे । जहा छेदोवट्ठावणिए तहा परिहारविसुद्धिए वि ॥
- ४६४ सुहुमसंपरायसजए ण भंते ! सामाद्वयसजयस्स परट्ठाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमव्भहिए । एव छेओवट्ठा-
वणिय परिहारविसुद्धिएसु वि सम । सट्ठाणे सिय हीणे, नो तुल्ले, सिय अब्भ-
हिए । जइ हीणे अणंतगुणहीणे, अह अब्भहिए अणंतगुणमव्भहिए ॥
४६५. सुहुमसंपरायसजयस्स अहक्खायसजयस्स परट्ठाण—पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे । अहक्खाए हेट्ठिल्लाणं
चउण्ह वि नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमव्भहिए । सट्ठाणे नो
हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥
४६६. एसि ण भंते ! सामाद्वय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-
अहक्खायसजयाण जहण्णुक्कोसगाण चरित्तपज्जवाण कयरे कयरेहिंतो^१ अप्पा
वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सामाद्वयसंजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एसि ण जहण्णगा
चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा, परिहारविसुद्धियसजयस्स जहण्णगा
चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, तस्स चैव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा,
सामाद्वयसजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एसि ण उक्कोसगा चरित्तपज्जवा
दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा, सुहुमसंपरायसजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा
अणंतगुणा, तस्स चैव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, अहक्खायसजयस्स
अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ॥

जोग-पदं

- ४६७ सामाद्वयसजए ण भंते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी जहा^२ पुलाए । एव जाव सुहुमसंपरायसंजए । अहक्खाए
जहा^३ सिणाए ॥

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ३. म० २५।३६३ ।

२. म० ३५।३६३, ३६४ ।

उवओग-पदं

४६८. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ? गोयमा ! सागरोवउत्ते जहा^१ पुलाए । एवं जाव अहक्खाए, नवरं—सुहुमसंपराए सागारोवउत्ते होज्जा, नो अणागारोवउत्ते होज्जा ॥

कसाय-पदं

४६९. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ? गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा जहा^१ कसायकुसीले । एवं छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहा^१ पुलाए ॥

५००. सुहुमसंपरागसंजए—पुच्छा ।

गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

५०१. जइ सकसायी होज्जा, से ण भंते ! कतिसु कसायेसु होज्जा ?

गोयमा ! एगम्मि संजलणलोभे होज्जा । अहक्खायसजए जहा^१ नियंते ॥

लेस्सा-पदं

५०२. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?

गोयमा ! मलेस्से होज्जा जहा^१ कसायकुसीले । एव छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहा^१ पुलाए । सुहुमसंपराए जहा^१ नियंते । अहक्खाए जहा^१ सिणाए, नवरं—जइ सलेस्से होज्जा, एगाए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

५०३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे^१ ? अवट्ठियपरिणामे ?

गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे जहा^१ पुलाए । एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५०४. सुहुमसंपराए—पुच्छा ।

गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, नो अवट्ठियपरिणामे होज्जा । अहक्खाए जहा^१ नियंते ॥

५०५. सामाइयसजए णं भंते ! केवइय काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय जहा^१ पुलाए । एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

१. भ० २५।३६६ ।

२. भ० २५।३७० ।

३. भ० २५।३६७, ३६८ ।

४. भ० २५।३७१, ३७२ ।

५. भ० २५।३७५, ३७६ ।

६. भ० २५।३७३, ३७४ ।

७. भ० २५।३७७, ३७८ ।

८. भ० २५।३७९, ३८० ।

९. हीय^० (स) ।

१०. भ० २५।३८१ ।

११. भ० २५।३८२ ;

१२. भ० २५।३८३ ।

५०६. सुहुमसपरागसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्तं ॥
५०७. केवतियं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा ? एवं चेव ॥
५०८. अहक्खायसंजए ण भते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥
५०९. केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
 गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

बंघ-पदं

५१०. सामाइयसंजए ण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ वधइ ?
 गोयमा ! सत्तविह्वधए वा, अट्ठविह्वधए वा, एव जहा^१ वउसे । एव जाव परिहारविसुद्धि ॥
५११. सुहुमसपरागसंजए—पुच्छा ।
 गोयमा ! आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ वधति । अहक्खायसंजए जहा^१ सिणाए ॥

वेदण-पदं

५१२. सामाइयसंजए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
 गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति । एवं जाव सुहुमसपराए ॥
५१३. अहक्खाए—पुच्छा ।
 गोयमा ! सत्तविह्वेदए वा, चउव्विह्वेदए वा । सत्त वेदेमाणे मोहणिज्ज-
 वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति, चत्तारि वेदेमाणे वेयणिज्जाउय-नाम-
 गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

उदीरणा-पदं

५१४. सामाइयसंजए ण भते ! कति^१ कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
 गोयमा ! सत्तविह्वउदीरए वा जहा^१ वउसो । एव जाव परिहारविसुद्धि ॥
५१५. सुहुमसपराए—पुच्छा ।
 गोयमा ! छव्विह्वउदीरए वा, पंचविह्वउदीरए वा । छ उदीरेमाणे आउय-
 वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पंच उदीरमाणे आउय-
 वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ॥
५१६. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।

१. म० २५।३६१ ।

२. म० २५।३६४ ।

३. केवइ (ता) ।

४. म० २५।३६६ ।

गोयमा ! पंचविहउदीरए वा दुविहउदीरए वा अणुदीरए वा । पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ । सेसं जहा^१ नियठस्स ॥

उवसंपज्जहण-पदं

५१७. सामाइयसंजए ण भंते ! सामाइयसंजयत्त^१ जहमाणे कि जहति ? कि उवसंपज्जति ?

गोयमा ! सामाइयसंजयत्तं जहति । छेदोवट्ठावणियसंजय^२ वा, सुहुमसंपराग-सजय वा, असंजमं वा, संजमासजम वा उवसंपज्जति ॥

५१८. छेओवट्ठावणिए—पुच्छा ।

गोयमा ! छेओवट्ठावणियसंजयत्तं जहति । सामाइयसजयं वा, परिहारविसुद्धिय-संजयं वा, सुहुमसंपरागसंजय वा असंजमं वा, संजमासंजम वा उवसंपज्जति ॥

५१९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।

गोयमा ! परिहारविसुद्धियसंजयत्तं जहति । छेदोवट्ठावणियसंजय वा असंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५२०. सुहुमसंपराए—पुच्छा ।

गोयमा ! सुहुमसंपरायसजयत्तं जहति । सामाइयसंजयं वा, छेओवट्ठावणियसंजयं वा, अहक्खायसंजय वा, असंजम वा उवसंपज्जइ ॥

५२१. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।

गोयमा ! अहक्खायसजयत्तं जहति । सुहुमसंपरागसंजय वा, असंजमं वा, सिद्धिगति वा उवसंपज्जइ ॥

सण्णा-पदं

५२२. सामाइयसंजए ण भंते ! कि सण्णोवउत्ते होज्जा ? नो सण्णोवउत्ते होज्जा ?

गोयमा ! सण्णोवउत्ते जहा^३ बउसो । एवं जाव परिहारविसुद्धिए । सुहुमसंपराए अहक्खाए य जहा^४ पुलाए ॥

आहार-पदं

५२३. सामाइयसंजए ण भंते ! कि आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ? जहा^५ पुलाए । एवं जाव सुहुमसंपराए । अहक्खायसंजए जहा^६ सिणाए ॥

१. भ० २५।४०।१ ।

४. भ० २५।४०।६ ।

२. उपसंपत्तिप्रसङ्गे सर्वत्रापि भावप्रत्ययलोपो दृश्यते ।

५. भ० २५।४१।१ ।

६. भ० २५।४१।२ ।

३. भ० ४।१० ।

भव-पदं

५२४. सामाद्वयसंजए ण भते ! कति भवग्गहणाइ होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण अट्ठ । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥
- ५२५ परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण तिण्णि । एव जाव अहक्खाए ॥

आगरिस-पद

५२६. सामाद्वयसजयस्स ण भते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पणत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण जहा^१ वउसस्स ॥
५२७. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को^२, उक्कोसेण^३ वीसपुहत्त ॥
५२८. परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण तिण्णि ॥
५२९. सुहुमसपरायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण चत्तारि ॥
५३०. अहक्खायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥
५३१. सामाद्वयसजयस्स ण भते ! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पणत्ता ?
गोयमा ! जहा^४ बउसे ॥
५३२. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण उव्वरि^५ नवण्ह सयाण अंतो सहस्सस्स ।
परिहारविसुद्धियस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण सत्त । सुहुमसपरायस्स जहण्णेण^६
दोण्णि, उक्कोसेण नव । अहक्खायस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण पंच ॥

काल-पद

५३३. सामाद्वयसजए ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणएहि नवहि वासेहि ऊणिया
पुव्वकोडी । एव छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहण्णेण^७ एक्कं समय,
उक्कोसेण देसूणएहि एकूणतीसाए वासेहि ऊणिया पुव्वकोडी । सुहुमसंपराए
जहा^८ नियठे । अहक्खाए जहा सामाद्वयसंजए ॥
५३४. सामाद्वयसजया ण भते ! कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

१. भ० २५।४१७ ।

२. एक्क (अ, ख, ता, व, भ) ।

३. भ० २५।४२१ ।

४. भ० २५।४२६ ।

५३५. छेदोवट्टावणियसजया—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठाइज्जाइ वाससयाइं, उक्कोसेण पण्णासं सागरोवम-
 कोडिसयसहस्साइं ॥
५३६. परिहारविसुद्धीयसंजया—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेण देसूणाइ दो वाससयाइं, उक्कोसेणं देसूणाओ दो पुव्व-
 कोडीओ ॥
५३७. सुहुमसंपरागसजया—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अहक्खायसंजया जहा
 सामाइयसंजया ॥

अंतर-पदं

५३८. सामाइयसजयस्स णं भते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ? ।
 गोयमा ! जहण्णेण जहा' पुलागस्स । एवं जाव अहक्खायसजयस्स ॥
५३९. सामाइयसजयाण भते !—पुच्छा ।
 गोयमा ! 'नत्थि अंतरं' ॥
५४०. छेदोवट्टावणियाणं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं तेवट्ठि वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्टारस सागरोवमकोडा-
 कोडीओ ॥
५४१. परिहारविसुद्धियाणं—पुच्छा ।
 गोयमा ! जहण्णेणं चउरासीइं वाससहस्साइ, उक्कोसेणं अट्टारस सागरोवम-
 कोडाकोडीओ । सुहुमसपरायाणं जहा' नियंठाणं । अहक्खायाणं जहा सामाइय-
 सजयाण ॥

समुग्घाय-पदं

५४२. सामाइयसंजयस्स णं भते ! कति समुग्घाया पणत्ता ?
 गोयमा ! छ समुग्घाया पणत्ता जहा' कसायकुसीलस्स । एव छेदोवट्टावणियस्स
 वि । परिहारविसुद्धियस्स जहा' पुलागस्स । सुहुमसपरागस्स जहा' नियठस्स ।
 अहक्खायस्स जहा' सिणायस्स ॥

खेत्त-पदं

५४३. सामाइयसंजए ण भते ! लोगस्स कि सखेज्जइभागे होज्जा, असखेज्जइभागे—
 पुच्छा ।

१. भ० २५।४३० ।

५. भ० २५।४३५ ।

२. नत्थतर (अ, क, ख, ता, व, म) ।

६. भ० २५।४३८ ।

३. भ० २५।४३४ ।

७. भ० २५।४३६ ।

४. भ० २५।४३७ ।

गोयमा ! नो सखेज्जइभागे जहा^१ पुलाए । एव जाव सुहुमसंपराए । अह्वखाय-
सजए जहा^१ सिणाए ॥

फुसणा-पदं

५४४. सामाइयसजए ण भते ! लोगस्स किं सखेज्जइभाग फुसइ० ? जहेव होज्जा
तहेव फुसइ ॥

भाव-पदं

५४५. सामाइयसजए ण भते ! कयरम्मि भावे होज्जा ?
गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा । एव जाव सुहुमसंपराए ॥
५४६. अह्वखायसजए - पुच्छा ।
गोयमा ! उवसमिए वा खइए^१ वा भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

५४७. सामाइयसजया ण भते ! एगसमएण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च जहा^१ कसायकुसीला तहेव निरवसेसं ॥
५४८. छेदोवट्ठावणिया—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण
एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय
अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण कोडिसयपुहत्तं, उक्कोसेणं वि कोडि-
सयपुहत्तं । परिहारविसुद्धिया जहा^१ पुलागा । सुहुमसंपराया जहा^१ नियठा ॥
५४९. अह्वखायसजया ण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण
एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं वावट्ठं सयं—अट्ठत्तरसयं^१ खवगाण,
चउप्पण्ण उवसामगाणं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्तं, उक्को-
सेणं वि कोडिपुहत्तं ॥

अप्याबहुयत्त-पदं

५५०. एसि णं भते ! सामाइय-छेओवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-
अह्वखायसजयाणं कयरे कयरेहितो^१ अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?
विसेसाहिया वा ?

१. भ० २५।४४० ।

२. भ० २५।४४१ ।

३. खतिए (अ,क,ख,व,म,स); खविए (ता) ।

४. भ० २५।४४८ ।

५. भ० २५।४४६ ।

६. भ० २५।४४९ ।

७. अट्ठसयं (क, ता, व) ।

८. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमसपरायसंजया, परिहारविसुद्धियसजया सखेज्जगुणा,
अहक्खायसजया सखेज्जगुणा, छेओवट्ठावणियसजया सखेज्जगुणा, सामाइय-
सजया सखेज्जगुणा ॥

संगहणी-गाहा

पडिसेवण दोसालोयणा य, आलोयणारिहे चेव ।

तत्तो सामायारी, पायच्छित्ते तवे चेव ॥ १ ॥

पडिसेवणा-पदं

५५१. कइविहा णं भते ! पडिसेवणा पणत्ता ?

गोयमा ! दसविहा पडिसेवणा पणत्ता, तं जहा—

दप्पप्पमादणाभोगे, आउरे आवतीति य ।

सकिण्णे^१ सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमंसा ॥ १ ॥

आलोयणा-पदं

५५२. दस आलोयणादोसा पणत्ता, तं जहा—

आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, ज दिट्ठ बादर व सुहुमं वा ।

छन्न सद्दाउलयं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥ १ ॥

५५३. दसहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोस आलोइत्तए, तं जहा—
जातिसपण्णे, कुलसंपण्णे, विणयसपण्णे, नाणसंपण्णे, दसनसपण्णे, चरित्तसपण्णे,
खते, दते, अमायी, अपच्छाणुतावी ॥

५५४. अट्ठहि ठाणेहि संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा—
आयारवं, आहारवं, ववहारवं, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी, निज्जवए,
अवायदसी ॥

सामायारी-पदं

५५५. दसविहा सामायारी पणत्ता, तं जहा—

इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य निसीहिया ।

आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छदणा य निमंतणा ।

उवसंपया य काले, सामायारी भवे दसहा ॥ १ ॥

पायच्छित्त-पदं

५५६. दसविहे पायच्छित्ते पणत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तट्ठभ-
यारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेदारिहे, मूलारिहे, अणवट्ठप्पा-
रिहे, पारंशियारिहे ॥

१. सकित्ते (अ, क, ख, ता, व, म, वृषा); २. आघारव (अ, क, व); अवघारव (म) ।

निशीथपाठे तु 'तित्तिण' इत्यभिधीयते (वृ) ।

तव-पदं

५५७. दुविहे तवे पण्णत्ते, तं जहा—वाहिरए य, अग्निभतरए य ॥
५५८. से किं त वाहिरए तवे ? वाहिरए तवे छविहे पण्णत्ते, त जहा—अणसण, ओमोदरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाओ, कायकिलेसो, पडिसलीणता ॥
५५९. से किं त अणसणे ? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—इत्तरि य, आवकहिए य ॥
५६०. से किं त इत्तरि ? इत्तरि अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—वउत्थे भत्ते, छट्टे भत्ते, अट्टमे भत्ते, दसमे भत्ते, दुवालसमे भत्ते, चोदसमे भत्ते, अट्ठमासिए भत्ते, मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते जाव छम्मासिए भत्ते । सेत्त इत्तरि ॥
५६१. से किं त आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, त जहा पाओवगमणे^१ य, भत्तपच्चक्खाणे य ॥
५६२. से किं त पाओवगमणे ? पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियम अपडिकम्मे । सेत्त पाओवगमणे ॥
५६३. से किं त भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियम सपडिकम्मे । सेत्त भत्तपच्चक्खाणे । सेत्त आवकहिए । सेत्त अणसणे ॥
५६४. से किं त ओमोदरिया ? ओमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—दव्वोमोदरिया य, भावोमोदरिया य ॥
५६५. से किं त दव्वोमोदरिया ? दव्वोमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणदव्वोमोदरिया य, भत्तपाणदव्वोमोदरिया य ॥
५६६. से किं त उवगरणदव्वोमोदरिया ? उवगरणदव्वोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—एगे वत्थे, एगे पाए,^२ चियत्तोवगरणसात्तिज्जणया । सेत्त उवगरणदव्वोमोदरिया ॥
५६७. से किं त भत्तपाणदव्वोमोदरिया ? भत्तपाणदव्वोमोदरिया अट्ठकुक्कुडिअङ्ग-गप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालस^३ कुक्कुडिअङ्ग-पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोदरिए, सोलस कुक्कुडिअङ्ग-पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीस कुक्कुडिअङ्ग-पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए, वत्तीसं कुक्कुडिअङ्गपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणमेत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेणं ऊणग

१. पादोव^० (ख) ।

२. पादे (अ, क, व) ।

३. स० पा०—जहा सत्तमसए पडमोहेमए जाव तो ।

आहारमाहारेमाणे समणे निगथे० नो पकामरसभोजीति वत्तव्व सिया ।
सेत्तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया । सेत्तं दव्वोमोदरिया ॥

५६८. से कि तं भावोमोदरिया ? भावोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—
अप्पकोहे^१, *अप्पमाणे, अप्पमाए, *अप्पलोमे, अप्पसद्दे, अप्पक्कंभे,
अप्पत्तुमत्तुमे । सेत्तं भावोमोदरिया । सेत्तं ओमोदरिया ॥

५६९. से कि तं भिक्खायरिया ? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—
दव्वाभिग्गहचरणे^१, *खेत्ताभिग्गहचरणे, कालाभिग्गहचरणे, भावाभिग्गहचरणे,
उक्खित्तचरणे, णिक्खित्तचरणे, उक्खित्तणिक्खित्तचरणे, णिक्खित्तउक्खित्तचरणे,
वट्टिज्जमाणचरणे, साहरिज्जमाणचरणे, उवणीयचरणे, अवणीयचरणे,
उवणीयअवणीयचरणे, अवणीयउवणीयचरणे, संसट्ठचरणे, असंसट्ठचरणे,
तज्जायससट्ठचरणे, अण्यचरणे, मोणचरणे^०, सुद्धेसणिए, संखादत्तिए ।
सेत्तं भिक्खायरिया ॥

५७०. से कि त रसपरिच्चाए ? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—
निव्विगितिए, पणीयरसविबज्जए, *आर्यविलए, आर्यामसिस्थभोई, अरसाहारे,
विरसाहारे, अताहारे, पताहारे^०, लूहाहारे । सेत्तं रसपरिच्चाए ॥

५७१. से कि तं कायकिलेसे ? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठाणादीए,
उक्कुड्डयासणिए, *पडिमट्टाई, वीरासणिए, नेसज्जिए, आयावए, अवाउडए,
अपडुयए, अणिट्ठुहए^०, सव्वगायपरिकम्म-विभूसविप्पमुक्के । सेत्तं
कायकिलेसे ॥

५७२. से कि त पडिसलीणया ? पडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—
इंदियपडिसलीणया, कसायपडिसलीणया, जोगपडिसलीणया, विवित्तसयणा-
सणसेवणया ॥

५७३. से कि तं इंदियपडिसलीणया ? इंदियपडिसलीणया पचविहा पण्णत्ता, तं
जहा—सोइंदियविसयप्पयारणिरोहो वा, सोइंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु
रागदोसविणिग्गहो । चक्खिंदियविसयप्पयारणिरोहो वा एवं जाव
फासिंदियविसयप्पयारणिरोहो वा, फासिंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु
रागदोसविणिग्गहो । सेत्तं इंदियपडिसलीणया ॥

५७४. से कि त कसायपडिसलीणया ? कसायपडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं
जहा—कोहोदयनिरोहो वा, उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरण । एव

१. सं० पा०—अप्पकोहे जाव अप्पलोमे ।

३. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव लूहाहारे ।

२. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए ।

४. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव सव्वगाय^० ।

जाव लोभोदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोभस्स विफलीकरणं । सेत्त कसायपडिसलीणया ॥

५७५. से किं त जोगपडिसलीणया ? 'जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—मणजोगपडिसलीणया, वड्जजोगपडिसलीणया, कायजोगपडिसलीणया ॥

५७६. से किं त मणजोगपडिसलीणया ? मणजोगपडिसलीणया अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरण । सेत्त मणजोगपडिसलीणया ॥

५७७. से किं तं वड्जजोगपडिसलीणया ? वड्जजोगपडिसलीणया अकुसलवड्जनिरोहो वा, कुसलवड्जउदीरण वा, वड्ज वा एगत्तीभावकरण । सेत्त वड्जजोगपडिसलीणया' ॥

५७८. से किं त कायजोगपडिसलीणया ? कायजोगपडिसलीणया जण्ण सुसमाहिय-पसत-साहरियपाणिपाए कुम्भो इव गुत्तिदिए अल्लीण-पल्लीणे चिट्ठत्ति । सेत्त कायपडिसलीणया । सेत्त जोगपडिसलीणया ॥

५७९. से किं त विवित्तसयणासणसेवणया ? विवित्तसयणासणसेवणया जण्ण आरामेसु वा उज्जाणेसु वा 'देवकुलेसु वा सभासु वा पवासु वा इत्थी-पसु-पडगविवज्जियासु वा वसहीसु फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग ०-सेज्जा-सथारग उवसपज्जित्ताणं विहरइ । सेत्त विवित्तसयणासणसेवणया । सेत्त पडिसलीणया । सेत्त बाहिरए तवे ॥

५८०. से किं त अम्भितरए तवे ? अम्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पायच्छित्तं, विणम्भो, वेयावच्च, सज्झाम्भो, भाण, विउसग्गो ॥

५८१. से किं त पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे जाव' पारच्चियारिहे । सेत्त पायच्छित्ते ॥

५८२. से किं त विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणविणए, दसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वड्जविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥

१. 'जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता' इति पाठे सूचिता योगप्रतिसलीनतायास्त्रयः प्रकारा प्रस्तुतप्रकरणे निदिष्टा न सन्ति तथा 'से किं त कायपडिसलीणया' इति पाठेनापि 'से किं त मणपडिसलीणया, से किं त वड्जपडिसलीणया' इति सूत्रयोरपि सक्तेो लभ्यते । प्रतीयते लिपिकरणे सङ्कोपो जातः । तस्य पूर्तिरूपपात्तिक (सू० ३७)—वति-

पाठानुसारेण कृता । प्रस्तुतपाठस्य सक्षेप-
एवमस्ति—जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभाव-करण । अकुसलवड्जनिरोहो वा, कुसलवड्जउदीरण वा, वड्ज वा एगत्तीभावकरण ।

२. स० पा०—जहा सोमिलुद्देसए जाव सेज्जा ।

३. अ० २५।५५६ ।

५८३. से किं तं नाणविणए ? नाणविणए पंचविहे पणत्ते, तं जहा—आभिणिवोहिय-
नाणविणए,^१ •सुयनाणविणए ओहिनाणविणए, मणपज्जवनाणविणए,^२
केवलनाणविणए । सेत्त नाणविणए ॥
५८४. से किं तं दसणविणए ? दसणविणए दुविहे पणत्ते, तं जहा—सुस्सुसणाविणए
य, अणच्चासादणाविणए य ॥
५८५. से किं तं सुस्सुसणाविणए ? सुस्सुसणाविणए अणेगविहे पणत्ते, तं जहा—
सक्कारे इ वा सम्माणे इ वा •किङ्कम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा अजलिपग्गहे
इ वा आसणाभिग्गहे इ वा आसणाणुप्पदाणे इ वा, एतस्स पच्चुग्गच्छणया,
ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स^३ पडिससाहणया । सेत्त सुस्सुसणाविणए ॥
५८६. से किं तं अणच्चासादणाविणए ? अणच्चासादणाविणए पणयालीसइविहे
पणत्ते, तं जहा—अरहंताण अणच्चासादणया^४, अरहतपणत्तस्स धम्मस्स
अणच्चासादणया, आयरियाण अणच्चासादणया, उवज्झायाण अणच्चासादणया,
थेराण अणच्चासादणया, कुलस्स अणच्चासादणया, गणस्स अणच्चासादणया,
संघस्स अणच्चासादणया, किरियाए अणच्चासादणया, सभोगस्स अणच्चासा-
दणया, आभिणिवोहियनाणस्स अणच्चासादणया, जाव केवलनाणस्स
अणच्चासादणया, एसिं चैव भत्ति-बहुमाणेण, एसिं चैव वण्णसज्जणया ।
सेत्त अणच्चासादणयाविणए । सेत्तं दसणविणए ॥
५८७. से किं तं चरित्तविणए ? चरित्तविणए पंचविहे पणत्ते, तं जहा—सामाइय-
चरित्तविणए जाव अहक्खायचरित्तविणए । सेत्त चरित्तविणए ॥
५८८. से किं तं मणविणए ? मणविणए दुविहे पणत्ते, तं जहा—पसत्थमणविणए
य, अप्पसत्थमणविणए य ॥
५८९. से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए^५ सत्तविहे पणत्ते, तं जहा—
अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरुक्कसे^६, अणण्हवकरे, अच्छविकरे,
अभूयाभिसक्के^७ । सेत्तं पसत्थमणविणए ॥

१. स० पा०—आभिणिवोहियनाणविणए जाव
केवल^० ।

२. स० पा०—जहा चोद्दसमसए ततिए जहेसए
जाव पडिससाहणया ।

३. अणच्चासायणया (अ, ख); अणच्चासात-
णया (क, ता) ।

४. पसत्थमणविणए—जे य भणो असावज्जे

अकिरिए अक्कक्कसे अक्कडुए अणिट्ठुरे
अफरुसे अणण्हयकरे अछेयकरे अभेयकरे
अपरितावणकरे अणुहवणकरे अभूओववाइए
तहप्पगार भणो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०) ।

५. निरुक्कसे (अ, क) ।

६. ० संकमणे (क, ता) ।

५६०. से किं तं अप्ससत्थमणविणए ? अप्ससत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्कोसे^१, अण्हयकरे, छविकरे, भूयाभिसकणे ।
सेत्त अप्ससत्थमणविणए । सेत्त मणविणए ॥
५६१. से किं तं वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थवइविणए
य, अप्ससत्थवइविणए य ॥
५६२. से किं तं पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
अपावए, असावज्जे जाव अभूयाभिसकणे । सेत्त पसत्थवइविणए ॥
५६३. से किं तं अप्ससत्थवइविणए ? अप्ससत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
पावए, सावज्जे जाव भूयाभिसकणे । सेत्त अप्ससत्थवइविणए । सेत्त वइविणए ॥
५६४. से किं तं कायविणए ? कायविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थकायविणए
य, अप्ससत्थकायविणए य ॥
५६५. से किं तं पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
आउत्तं गमण, आउत्तं ठाणं, आउत्तं निसीयण, आउत्तं तुयट्टण, आउत्तं
उल्लघण, आउत्तं पल्लघण, आउत्तं सव्विदियजोगजुजणया । सेत्त पसत्थकाय-
विणए ॥
५६६. से किं तं अप्ससत्थकायविणए ? अप्ससत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं
जहा—अणाउत्तं गमण जाव अणाउत्तं सव्विदियजोगजुजणया । सेत्त
अप्ससत्थकायविणए । सेत्त कायविणए ॥
५६७. से किं तं लोगोवयारविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—
अव्मासवत्तिय^२, परच्छदाणुवत्तिय, कज्जहेउ^३, कयपडिकइया^४, अत्तगवेसणया,
देसकालण्णया^५, सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया । सेत्त लोगोवयारविणए । सेत्त
विणए ॥
५६८. से किं तं वेयावच्चे ? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—आयरियवेयावच्चे,
उवज्जायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे,
सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, सघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे ।
सेत्त वेयावच्चे ॥

१. अप्ससत्थमणविणए—जे य मणे सावज्जे ३ पूर्ववत् अत्रापि औपपातिकस्य पाठभेदो
सकिरिए सकक्कोसे कइए णिट्ठुरे फरुसे दृश्य ।
अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे ४ °पत्तिय (ता) ।
उद्वणकरे भूओवघाडए तइयगार मणो णो ५ ज्ञानादिनिमित्त भक्तादिदानमिति गम्यम्(वृ) ।
पहारेज्जा (ओ० सू० ४०) । ६. कइपडिकइयाए (ता) ।
२. सउवक्कोसे (क, ख) । ७. देसकालण्णया (ओ० सू० ४०) ।

५६६. से किं तं सज्भाए ? सज्भाए पंचविहे पणत्ते, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्ठणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा । से तं सज्भाए ॥
६००. से किं तं भाणे ? भाणे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा—अट्टे भाणे, रोद्धे भाणे, धम्मे भाणे, सुक्के भाणे ॥
६०१. अट्टे भाणे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा अमणुणसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोग-सतिसमन्नागए यावि भवइ, मणुणसंपयोगसंपउत्ते तस्स अविप्पयोगसतिसम-न्नागए यावि भवइ, आयंकसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, परिभुसियकामभोगसंपयोगसंपउत्ते^१ तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ ॥
६०२. अट्टस्स ण भाणस्स चत्तारि लक्खणा पणत्ता, तं जहा—कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया ॥
६०३. रोद्धे भाणे चउव्विहे पणत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधी, मोसाणुबधी, तेयाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी ॥
६०४. रोद्धस्स णं भाणस्स चत्तारि लक्खणा पणत्ता, तं जहा—ओस्सन्नदोसे, वहुलदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे ॥
६०५. धम्मे भाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पणत्ते, तं जहा—आणाविजए, अवाय-विजए, विवागविजए, संठाणविजए ॥
६०६. धम्मस्स णं भाणस्स चत्तारि लक्खणा पणत्ता, तं जहा—आणारुयी, निसग-रुयी, सुत्तरुयी, ओगाढरुयी ॥
६०७. धम्मस्स णं भाणस्स चत्तारि आलंबणा पणत्ता, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्ठणा, धम्मकहा ॥
६०८. धम्मस्स णं भाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पणत्ताओ, तं जहा—एगत्ताणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, ससाराणुप्पेहा ॥
६०९. सुक्के भाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पणत्ते, तं जहा—पुहत्तवितक्के^१ सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अणियट्ठी, समोच्छिण्णकिरिए^१ अप्पडिवायी ॥
६१०. सुक्कस्स णं भाणस्स चत्तारि लक्खणा पणत्ता, तं जहा—खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दे ॥
६११. सुक्कस्स णं भाणस्स चत्तारि आलंबणा पणत्ता, तं जहा—अव्वहे, असंमोहे, विवेगे, विउसग्गे ॥

१. परिज्जुसिय° (ख); परिज्जुसिय° (ता) । ३. समोच्छिण्ण° (ख, ता, म); समुच्छिण्ण°

२. °वियक्के (ख) ।

(क्व०) ।

- ६१२ सुक्कस्स णं भाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—‘अणंतवत्तिया-
णुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा’ । सेत्तं भाणे ॥
- ✓ ६१३ से कि तं विउसग्गे ? विउसग्गे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वविउसग्गे य,
भावविउसग्गे य ॥
- ६१४ से कि त दव्वविउसग्गे ? दव्वविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—
गणविउसग्गे, सरीरविउसग्गे, उवहिउसग्गे, भत्तपाणविउसग्गे । सेत्तं
दव्वविउसग्गे ॥
- ६१५ से कि त भावविउसग्गे ? भावविउसग्गे तिउविहे पण्णत्ते^१ त जहा—
कसायविउसग्गे, ससारविउसग्गे, कम्मविउसग्गे ॥
६१६. से कि त कसायविउसग्गे ? कसायविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—
कोहविउसग्गे, माणविउसग्गे, मायाविउसग्गे, लोभविउसग्गे । सेत्तं
कसायविउसग्गे ॥
- ६१७ से कि त ससारविउसग्गे ? ससारविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—
नेरइयससारविउसग्गे जाव देवससारविउसग्गे । सेत्तं ससारविउसग्गे ॥
- ✓ ६१८ से कि त कम्मविउसग्गे ? कम्मविउसग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—
नाणावरणिज्जकम्मविउसग्गे जाव अतराइयकम्मविउसग्गे । सेत्तं कम्मविउ-
सग्गे । सेत्तं भावविउसग्गे । सेत्तं अर्हभत्तरए तवे ॥
६१९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देशो

नेरइयादीण-पुणवभव-पदं

- ६२० रायणिहे जाव एव वयासी—नेरइया ण भंते ! कह उववज्जति ?
गोयमा^१ ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएण करणोवाएणं
सेयकाले त ठाण विप्पजहिता पुरिम ठाण उवसपज्जित्ताणं विहरइ, एवामेव
एए वि जीवा पवओ विव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं
सेयकाले त भव विप्पजहिता पुरिम भव उवसंपज्जित्ताणं विहरति ॥

१. अवायाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अणतवत्तियाणुप्पेहा, विपरिणामाणुप्पेहा (ओ० सू० ४३)

छवीसइमं सतं

पढमो उद्देशो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. जीवा य २. लेस्स ३. पक्खिय, ४. दिट्ठि ५. अण्णाण ६. नाण ७. सण्णाओ ।
८. वेय ९. कसाए १०. उवओग ११. जोग एक्कारस वि ठाणा ॥१॥

जीवाणं लेस्सादिविसेसितजीवाणं च बंधाबंध-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव' एवं वयासी—जीवा णं भते ! पावं कम्मं कि बंधी बधइ बधिस्सइ ? बधी बधइ न बधिस्सइ ? बंधी न बधइ बंधिस्सइ ? बधी न बधइ न बंधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्येगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्येगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्येगतिए बधी न बंधइ बधिस्सइ, अत्येगतिए बंधी न बधइ न बंधिस्सइ ॥
२. सलेस्से णं भते ! जीवे पावं कम्मं कि बंधी बंधइ बधिस्सइ ? बधी बधइ न बधिस्सइ—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए बंधी बधइ बधिस्सइ, अत्येगतिए एव चउभंगो ॥
३. कण्हलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्मं कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्येगतिए बंधी बंधइ न बधिस्सइ । एव जाव पम्हलेस्से । सव्वत्थ पढम-वित्तियभंगा । सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभंगो ॥
४. अलेस्से णं भते ! जीवे पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! बधी न बधइ न बधिस्सइ ॥
५. कण्हपक्खिए णं भते ! जीवे पावं कम्मं—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए बधी, पढम-वित्तिया^३ भगा ॥

- ६ सुक्कपक्खिए णं भते । जीवे—पुच्छा ।
गोयमा ! चउभंगो भाणियब्बो ॥
- ७ सम्मदिट्ठीणं चत्तारि भगा, मिच्छादिट्ठीण पढम-वितिया, सम्मामिच्छादिट्ठीणं
एव चेव ॥
- ८ नाणीणं चत्तारि भगा, आभिणिवोहियनाणीणं जाव मणपज्जवनाणीणं चत्तारि
भंगा, केवलनाणीणं चरिमो भगो जहा अलेस्साणं ॥
- ९ अण्णाणीणं पढम-वितिया, एव मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीण,
विभगनाणीणं वि ॥
- १० आहारसण्णोवउत्ताण जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण पढम-वितिया, नोसण्णोव-
उत्ताण चत्तारि ॥
- ११ सवेदगाण पढम-वितिया । एव इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा वि ।
अवेदगाणं चत्तारि ॥
- १२ सकमाईणं चत्तारि, कोहकसाईण पढम-वितिया भगा, एव माणकसायिस्स वि,
मायाकसायिस्स वि । लोभकसायिस्स चत्तारि भगा ॥
- १३ अकसायी ण भते । जीवे पाव कम्मं कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए वधी न वधइ वधिम्सइ, अत्येगतिए वंधी न वंधइ न
वधिम्सइ ॥
१४. सजोगिस्स चउभगो, एवं मणजोगिस्स वि, वडजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि ।
अजोगिस्स चरिमो ॥
- १५ सागारोवउत्ते चत्तारि, अणगारोवउत्ते वि चत्तारि भंगा ॥

नेरइयादीणं लेस्सादिविसेसितनेरइयादीणं च वंधाबंध-पदं

- १६ नेरइए ण भते । पाव कम्म कि वधी वंधइ वधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्येगतिए वधी, पढम-वितिया ॥
१७. सलेस्से ण भते । नेरइए पाव कम्म० ? एव चेव । एव कण्हलेस्से वि, नील-
लेस्से वि, काउलेस्से वि । एव कण्हपक्खिए सुक्कपक्खिए, सम्मदिट्ठी मिच्छा-
दिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, नाणी आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी ओहिताणी,
अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी, आहारसण्णोवउत्ते जाव
परिग्गहसण्णोवउत्ते, सवेदए नपुसकवेदए, सकसायी जाव लोभकसायी, सजोगी
मणजोगी वडजोगी कायजोगी, सागरोवउत्ते अणगारोवउत्ते—एएसु सव्वेसु
पदेसु पढम-वितिया भगा भाणियब्बा । एव अमुरकुमारस्स वि वत्तव्वया
भाणियब्बा, नवर—तेउलेसा, इत्थिवेदग-पुरिसवेदगा य अन्नहिया, नपुसगवेदगा
न भण्णति, सेस त चेव, सव्वत्थ पढम-वितिया भगा । एव जाव थणियकुमारस्स ।

एवं पुढविकाइयस्स वि, आउकाइयस्स वि जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स वि सव्वत्थ वि पढम-वितिया भंगा, नवरं—जस्स जा लेस्सा । दिट्ठी, नाण, अण्णाणां, वेदो, जोगो य अत्थि तं तस्स भाणियव्वं, सेस तहेव । मणुसस्स जच्चेव जीवपदे वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा । वाणमंतरस्स जहा असुरकुमारस्स । जोइसियस्स वेमाणियस्स एवं चेव, नवरं—लेस्साओ जाणि-यव्वाओ, सेसं तहेव भाणियव्वं ॥

जीवादीणं नाणावरणादिकम्मं पडुच्च बंधाबंध-पदं

१८. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ बधिस्सइ० ? एवं जहेव पावकम्मस्स वत्तव्वया तहेव नाणावरणिज्जस्स वि भाणियव्वा, नवर—जीव-पदे मणुसपदे य सकसाइम्मि जाव लोभकसाइम्मि य पढम-वितिया भगा, अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिया । एवं दरिसणावरणिज्जेण वि दंडगो भाणि-यव्वो निरवसेसो ॥

१९. जीवे ण भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।

गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बंधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । सलेस्से वि एव चेव ततियविहूणा भगा । कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-वितिया भंगा । सुक्कलेस्से ततियविहूणा भगा । अलेस्से चरिमो भगो । कण्हपक्खिए पढम-वितिया । सुक्कपक्खिया ततिय-विहूणा । एवं सम्मदिट्ठिस्स वि, मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढम-वितिया । नाणिस्स ततियविहूणा । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी पढम-वितिया । केवलनाणी ततियविहूणा । एवं नोसण्णोवउत्ते, अवेदए, अकसायी । सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु ततियविहूणा । अजोगिम्मि य चरिमो । सेसेसु पढम-वितिया ॥

२०. नेरइए ण भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? एवं नेरइया जाव वेमा-णिय ति । जस्स जं अत्थि सव्वत्थ वि पढम-वितिया, नवर – मणुस्से जहा जीवे ॥

२१. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिज्जं पि निरवसेसं जाव वेमाणिए ॥

२२. जीवे णं भंते ! आउयं कम्म किं बधी बंधइ—पुच्छा ।

गोयमा अत्थेगतिए बंधी चउभंगो । सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भंगा । अलेस्से चरिमो भगो ॥

२३. कण्हपक्खिए ण—पुच्छा ।

गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बंधइ बधि-स्सइ । सुक्कपक्खिए सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भंगा ॥

२४. सम्मामिच्छादिद्वी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए वधी न वधइ वधिस्सइ, अत्येगतिए वधी न वधइ न वधिस्सइ । नाणी जाव ओहिनाणी चत्तारि भगा ॥
२५. मणपज्जवनाणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए वधी वधइ वधिस्सइ, अत्येगतिए वधी न वधइ वधिस्सइ, अत्येगतिए वधी न वधइ न वधिस्सइ । केवलनाणे चरिमो भगो । एव एएण कमेण नोसण्णोवउत्ते वितियविहूणा जहेव मणपज्जवनाणे । अवेदए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिच्छते । अजोगिम्मि चरिमो, सेसेसु पदेसु चत्तारि भगा जाव अणागारोवउत्ते ॥
२६. नेरइए ण भते ! आउय कम्म कि वधी - पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए चत्तारि भगा, एव सव्वत्थ वि नेरइयाण चत्तारि भगा, नवर—कण्हलेस्से कण्हपविस्सए य पढम-ततिया भगा; सम्मामिच्छते ततिय-चउत्था । असुरकुमारे एव चेव, नवर—कण्हलेस्से वि चत्तारि भगा भाणियव्वा, सेस जहा नेरइयाण । एवं जाव थणियकुमाराण । पुढविककाइयाणं सव्वत्थ वि चत्तारि भगा, नवर—कण्हपविस्सए पढम-ततिया भगा ॥
२७. तेउलेस्से—पुच्छा ।
गोयमा ! वधी न वधइ वधिस्सइ, सेसेसु सव्वत्थ चत्तारि भगा । एव आउ-वकाइय-वणत्सइकाइयाण वि निरवसेस । तेउकाइय-वाउवकाइयाण सव्वत्थ वि पढम-ततिया भगा । वेइदिय-तेइदिय-चउरदियाण पि सव्वत्थ वि पढम-ततिया भगा, नवर—सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ततिओ भंगो । पचिदियतिरिक्खजोणियाण कण्हपविस्सए पढम-ततिया भगा, सम्मामिच्छते ततियचउत्थो भंगो । सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएमु पचसु वि पदेसु वितियविहूणा भगा, सेसेसु चत्तारि भगा । मणुस्साण जहा जीवाण, नवर—सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहि-नाणे—एएसु वितियविहूणा भगा, सेस त चेव । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । नाम गोय अतराय च एयाणि जहा नाणावरणिज्जं ॥
२८. सेव भते ! सेव भते ! ति जाव विहरइ ॥

वीओ उद्देशो

विसेसितनेरइयादीणं वंधाबंध-पदं

२९. अणंतरोववन्नए ण भते ! नेरइए पाव कम्मं कि वंधी—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! अत्येगतिए वंधी, पढम-वितिया भगा ॥

३०. सलेस्से ण भते ! अणंतरोववन्नए नेरइए पावं कम्मं कि बधी—पुच्छा ।
 गोयमा ! पढम-बितिया भगा । एव खलु सव्वत्थ पढम-बितिया भगा, नवर—
 सम्मामिच्छत्त मणजोगो वइजोगो य न पुच्छिज्जइ । एव जाव थणियकुमाराण ।
 बेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण वइजोगो न भण्णइ । पविदियतिरिक्खजोणियाण
 पि सम्मामिच्छत्त, ओहिनाण, विभंगनाणं, मणजोगो, वइजोगो—एयाणि पंच
 न भण्णति । मणुस्साण अलेस्स-सम्मामिच्छत्त-मणपज्जवनाण-केवलनाण-विभग-
 नाण-नोसण्णोवउत्त-अवेदग-अकसाय-मणजोग-वइजोग-अजोगि—एयाणि एक्का-
 रस्स पदाणि न भण्णति । वाणमत-जोइसिय-वेमाणियाण जहा नेरइयाण तहेव
 ते तिण्णि न भण्णति । सव्वेसि जाणि सेसाणि ठाणाणि सव्वत्थ पढम-बितिया
 भगा । एगिदियाणं सव्वत्थ पढम-बितिया भगा । जहा पावे एवं नाणा-
 वरणिज्जेण वि दड्ढो, एव आउयवज्जेसु जाव अतराइए दंडओ ॥
३१. अणतरोववन्नए ण भते ! नेरइए आउय कम्मं कि बधी—पुच्छा ।
 गोयमा ! बंधी न बधइ बधिस्सइ ॥
३२. सलेस्से ण भते ! अणतरोववन्नए नेरइए आउय कम्मं कि बधी० ? एवं चेव
 ततिओ भगो । एव जाव अणागारोवउत्ते । सव्वत्थ वि ततिओ भंगो । एव
 मणुस्सवज्ज जाव वेमाणियाण । मणुस्साणं सव्वत्थ ततिय-चउत्था भगा, नवर
 —कण्हपक्खिएसु ततिओ भगो । सव्वेसि नाणत्ताइ ताइ चेव ॥
३३. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३-१० उद्देसा

३४. परंपरोववन्नए ण भते ! नेरइए पावं कम्मं कि बधी—पुच्छा ।
 गोयमा ! अत्थेगतिए पढम-बितिया । एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परंपरो-
 ववन्नएहि वि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाईओ तहेव नवदंडगसगहिओ ।
 अट्ठण्ह वि कम्मप्पगडीण जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमतिरित्ता
 नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता ॥
३५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
३६. अणतरोगाढए ण भते ! नेरइए पावं कम्मं कि बंधी—पुच्छा ।
 गोयमा ! अत्थेगतिए एव जहेव अणंतरोववन्नएहि नवदंडगसगहिओ' उद्देसो

- भणिओ तहेव अणतरोगाढएहि वि अहीणमतिरित्तो भाणियव्वो नेरइयादीए जाव वेमाणिए ॥
- ३७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
- ३८ परपरोगाढए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी ? जहेव परंपरोववन्नएहि उद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥
३९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
४०. अणतराहारए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा । एवं जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसं ॥
४१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
- ४२ परपराहारए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥
४३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
४४. अणतरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेस ॥
४५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
- ४६ परपरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥
४७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥
४८. चरिमे ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव चरिमेहि निरवसेस ॥
४९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

एककारसमो उद्देसो

५०. अचरिमे ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगइए एव जहेव पढमोद्देसए, पढम-वितिया भंगा भाणियव्वा सव्वत्थ जाव पच्चिदियतिरिक्खजोणियाण ॥
५१. अचरिमे ण भते ! मणुस्से पाव कम्म कि वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्येगतिए वधी वधइ वधिस्सइ, अत्येगतिए वधी वंधइ न वधिस्सइ, अत्येगतिए वधी न वंधइ वधिस्सइ ॥

५२. सलेस्से णं भते ! अचरिमे मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी ०? एव चेव तिणिण भगा चरमविहूणा भाणियव्वा एव जहेव पढमुद्देसे, नवरं—जेसु तत्थ वीससु^१ चत्तारि भगा तेसु इह आदित्ता तिणिण भंगा भाणियव्वा चरिमभगवज्जा । अलेस्से केवलनाणी य अजोगी य—एए तिणिण वि न पुच्छिज्जति, सेस तहेव । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा नेरइए ॥
५३. अचरिमे णं भते ! नेरइए नाणावरणिज्ज कम्मं किं बंधी—पुच्छा । गोयमा ! एवं जहेव पाव, नवरं—मणुस्सेसु सकसाईसु^२ लोभकसाईसु य पढम-वित्तिया भगा, सेसा अट्टारस चरमविहूणा, सेसं तहेव जाव वेमाणियाणं । दरिसणावरणिज्ज पि एव चेव निरवसेसं । वेयणिज्जे सव्वत्थ वि पढम-वित्तिया भगा जाव वेमाणियाण, नवरं—मणुस्सेसु अलेस्से केवली अजोगी य नत्थि ॥
५४. अचरिमे ण भते ! नेरइए मोहणिज्ज कम्म किं बंधी—पुच्छा । गोयमा ! जहेव पावं तहेव निरवसेस जाव वेमाणिए ॥
५५. अचरिमे ण भते ! नेरइए आउय कम्म किं बंधी—पुच्छा । गोयमा ! पढम-वित्तिया भंगा । एव सव्वपदेसु वि । नेरइयाण पढम-तत्तिया भंगा, नवर—सम्मामिच्छत्ते तत्तिओ भंगो । एवं जाव थणियकुमाराण । पुढविक्काइय-आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं तेउलेस्साए तत्तिओ भंगो । सेसेसु पदेसु सव्वत्थ पढम-तत्तिया भगा । तेउकाइय-वाउक्काइयाणं सव्वत्थ पढम-तत्तिया भंगा । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिदियाण एव चेव, नवर—सम्मत्ते ओहि-नाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चउसु वि ठाणेषु तत्तिओ भंगो । पचिदियतिरिक्खजोणियाण सम्मामिच्छत्ते तत्तिओ भंगो । सेसपदेसु^३ सव्वत्थ पढम-तत्तिया भगा । मणुस्साण सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य तत्तिओ भंगो, अलेस्स-केवलनाण-अजोगी य न पुच्छिज्जति । सेसपदेसु सव्वत्थ पढम-तत्तिया भंगा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया । नामं गोय अंतराइयं च जहेव नाणावरणिज्ज तहेव निरवसेस ॥
५६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

१. वीसेसु (व) ।

३. सेसेसु पदेसु (स) ।

२. कसायीसु (क, स, स) ।

सत्तवीसइमं सतं

१-११ उद्देसा

जीवाण पावकम्म-करणाकरण-पद

१. जीवे ण भत्ते ! पाव कम्म किं करिं सु करेति करेस्सति ? करिं सु करेति न-
करेस्सति ? करिं सु न करेति करेस्सति ? करिं सु न करेति न करेस्सति ?
गोयमा ! अत्थेगतिं एं करिं सु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिं एं करिं सु करेति न
करेस्सति, अत्थेगतिं एं करिं सु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिं एं करिं सु न करेति
न करेस्सति ॥
२. सलेस्से णं भत्ते ! जीवे पाव कम्म ० ? एवं एएण अभिलावेण जच्चेव वधिसं
वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तहेव नवदडगसगहिया एवकारस
उद्देसगा भाणियव्वा ॥

अट्ठावीसइमं सतं

पढभो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-समज्जिण-समायरण-पदं

१. जीवा णं भंते ! पाव कम्म कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा २. अहवा तिरिक्ख-
जोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा ३. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा
४. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा ५. अहवा तिरिक्खजोणिएसु
य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ६. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य
देवेसु य होज्जा ७. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा
८. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ॥
२. सलेस्सा ण भंते ! जीवा पाव कम्म कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
एवं चेव । एव कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा । कण्हपक्खिया, सुक्कपक्खिया । एवं
जाव अणागारोवउत्ता ॥
३. नेरइया णं भंते ! पावं कम्मं कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एवं चेव अट्ठ भगा
भाणियव्वा । एव सव्वत्थ अट्ठभंगा जाव अणागारोवउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणि-
याणं । एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ । एव जाव अतराइएण । एवं एए
जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दडगा भवति ॥
४. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

५. अणंतरोववन्तगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं कहि समज्जिणिसु ? कहि
समायरिसु ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एव एत्थ^१ वि अट्ठ भंगा ।
एव अणत्तरोवन्नगण नेरइयार्इण जस्स ज अत्थि लेसादीय अणागारोवओग-
पज्जवसाण त सव्व एयाए भयणाए भाणियव्व जाव वेमाणियाण, नवर—
अणत्तरेणु जे परिहरियव्वा ते जहा वधिसए तहा इह पि । एव नाणावरणिज्जेण
वि दडओ । एव जाव अतराडएण निरवसेसं । एसो वि नवदडगसगहिओ
उद्देसओ भाणियव्वो ॥

६ सेव भत्ते । सेव भत्ते । त्ति ॥

३-११ उद्देसा

७ एव एगण कमेण जहेव वधिसए उद्देसगाण परिवाडी तहेव इह पि अट्ठसु भगेसु
नेयव्वा, नवर—जाणियव्व जं जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व जाव अचरिमु-
द्देसो । सव्वे वि एए एक्कारस्स उद्देसगा ॥

८ सेव भत्ते । सेव भत्ते । त्ति जाव विहरइ ॥

१. सव्वत्थ (ता) ।

एगूणतीसइमं सतं

पढमो उद्देशो

जीवाणं पावकम्म-पटुवण-निटुवण-पदं

१. जीवा ण भंते ! पावं कम्मं किं समायं पटुविसु समायं निटुविसु ? समायं पटुविसु विसमायं निटुविसु ? विसमायं पटुविसु समायं निटुविसु ? विसमायं पटुविसु विसमायं निटुविसु ?
 गोयमा ! अत्येगतिया समायं पटुविसु समायं निटुविसु जाव अत्येगतिया विसमायं पटुविसु विसमायं निटुविसु ॥
२. से केणट्टेण भंते ! एव वुच्चइ—अत्येगतिया समायं पटुविसु समायं निटुविसु, त चेव ?
 गोयमा ! जीवा चउव्विहा पणत्ता, त जहा—अत्येगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्येगतिया समाउया विसमोववन्नगा, अत्येगतिया विसमाउया समोववन्नगा, अत्येगतिया विसमाउया विसमोववन्नगा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण पावं कम्मं समायं पटुविसु समायं निटुविसु । तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्मं समायं पटुविसु विसमायं निटुविसु । तत्थ ण जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते ण पाव कम्मं विसमायं पटुविसु समायं निटुविसु । तत्थ ण जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्मं विसमायं पटुविसु विसमायं निटुविसु । से तेणट्टेण गोयमा ! त चेव ॥
३. सलेस्सा ण भंते ! जीवा पावं कम्मं ? एवं चेव, एवं सव्वट्ठाणेषु वि जाव अणगारोवउत्ता । एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा ॥
४. नेरइया ण भंते ! पावं कम्मं किं समायं पटुविसु समायं निटुविसु—पुच्छा ।
 गोयमा ! अत्येगतिया समायं पटुविसु, एव जहेव जीवाणं तहेव भाणियव्व जाव अणगारोवउत्ता । एवं जाव वेमाणियाणं जस्स ज अत्थि तं एएण चेव

कमेणं भाणियव्वं । जहा पावेण दडओ । एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मप्पगडोसु
अट्ठ दडगा भाणियव्वा जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा । एसो नवदंडगसंग-
हिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो ॥

५. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसा

६. अणंतरोववन्नगा ण भते ! नेरइया पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं
निट्ठविंसु—पुच्छा ।

गोयमा ! अत्येगतिया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु, अत्येगतिया समायं
पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु ॥

७. से केणट्ठेणं भते ! एव बुच्चइ—अत्येगतिया समायं पट्ठविंसु, त चेव ?

गोयमा ! अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पणत्ता, त जहा—अत्येगतिया
समाउया समोववन्नगा, अत्येगतिया समाउया विसमोववन्नगा । तत्थ णं जे ते
समाउया समोववन्नगा ते ण पावं कम्म समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु ।
तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म समायं पट्ठविंसु विस-
मायं निट्ठविंसु । से तेणट्ठेण त चेव ॥

८. सलेस्सा ण भते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया पाव० ? एवं चेव, एवं जाव
अणागारोवउत्ता । एव असुरकुमारा वि । एवं जाव वेमाणिया^१, नवर जं जस्स
अत्थि त तस्स भाणियव्वं । एव नाणावरणिज्जेण वि दडओ । एवं निरवसेस
जाव अतराइएण ॥

९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३-११ उद्देसा

१०. एव एएण गमएणं जच्चेव वधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इह वि भाणियव्वा
जाव अचरिमो त्ति । अणंतरउद्देसगाणं चउण्ह वि एक्का वत्तव्वया, सेसाण
सत्तण्हं एक्का ॥

१. वेमाणियाण (ता) ।

तीसइमं सतं

पढमो उद्देशो

समोसरण-पदं

१. कइ णं भंते ! समोसरणा पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पणत्ता, तं जहा—किरियावादी, अकिरिया-
वादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी ॥
२. जीवा णं भंते ! किं किरियावादी ? अकिरियावादी ? अण्णाणियवादी ?
वेणइयवादी ?
गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि,
वेणइयवादी वि ॥
३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी
वि । एव जाव सुक्कलेस्सा ॥
४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी, नो अकिरियावादी, नो अण्णाणियवादी, नो वेणइय-
वादी ॥
५. कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी
वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी
जहा कण्हपक्खिया ।
६. सम्मामिच्छादिट्ठी णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइय-
वादी वि । नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से । अण्णाणी जाव विभंग-
नाणी जहा कण्हपक्खिया । आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता

जहा सलेस्सा । नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा । सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा । अवेदगा जहा अलेस्सा । सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा । अकसायी जहा अलेस्सा । सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा । अजोगी जहा अलेस्सा । सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा ॥

७. नेरइया ण भते ! किं किरियावादी—पुच्छा ।

गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि ॥

८. सलेस्सा णं भते ! नेरइया किं किरियावादी ? एवं चेव । एव जाव काउलेस्सा । कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया । एव एएणं कमेणं जच्चेव जोवाण वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाण वि जाव अणागारोवउत्ता, नवर—ज अत्थि त भाणियव्वं, सेसं न भण्णति । जहा नेरइया एव जाव अणियकुमारा ॥

९. पुढविकाइया णं भते ! किं किरियावादी—पुच्छा ।

गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, नो वेणइयवादी । एवं पुढविकाइयाण जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइ दो मज्झिक्खलाइ समोसरणाइ जाव अणागारोवउत्ता वि । एव जाव चउरिदियाण । सव्वद्वाणंसु एयाइ चेव मज्झिक्खलाइ दो समोसरणाइ । सम्मत्त-नाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिक्खलाइ दो समोसरणाइ । पच्चिदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवर—ज अत्थि तं भाणियव्व । मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरव्वसेस । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

१०. किरियावादी ण भते ! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेति ? तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउयं पकरेति ?

गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति ॥

११. जइ देवाउयं पकरेति किं भवणवासिदेवाउयं पकरेति जाव वेमाणिय देवाउयं पकरेति ?

गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेति, नो वाणमतरदेवाउयं पकरेति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेति, वेमाणियदेवाउयं पकरेति ॥

१२. अकिरियावादी णं भते ! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं—पुच्छा ।

गोयमा ! नेरइयाउयं पकरेति जाव देवाउयं पकरेति । एव अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

१३. सलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेति—पुच्छा ।

गोयमा ! नो नेरइयाउयं, एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहि भाणियव्वा ॥

- १४ कण्हलेस्सा णं भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति,
 मणुस्साउयं पकरेति, नो देवाउयं पकरेति । अकिरियावादी अण्णाणियवादी
 वेणइयवादी य चत्तारि वि आउयाइं पकरेति । एवं नीललेस्सा वि,
 काउलेस्सा वि ॥
१५. तेउलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेति—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, मणुस्सा-
 उयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति । जइ देवाउयं पकरेति तहेव' ॥
१६. तेउलेस्सा ण भते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेति, तिरिक्खजोणि-
 याउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेति । एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी
 वि । जहा तेउलेस्सा एवं पण्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा ॥
१७. अलेस्सा णं भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो
 मणुस्साउयं पकरेति, नो देवाउयं पकरेति ॥
१८. कण्हपक्खिया ण भते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
 गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, एव चउविह पि । एवं अण्णाणियवादी वि,
 वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा ॥
१९. सम्मदिट्ठी ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति,
 मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ॥
२०. सम्मामिच्छादिट्ठी णं भते ! जीवा अण्णाणियवादी किं नेरइयाउयं ? जहा
 अलेस्सा । एव वेणइयवादी वि । नाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य
 ओहिनाणी य जहा सम्महिट्ठी ॥
२१. मणपज्जवनाणी ण भते !—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेति, नो
 मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति ॥
२२. जइ देवाउयं पकरेति किं भवणवासि—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेति, नो
 जोइसियदेवाउयं पकरेति, वेमाणियदेवाउयं पकरेति । केवलनाणी जहा
 अलेस्सा । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । सण्णासु चउसु वि

जहा सलेस्सा । नोसण्णोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी । सवेदगा जाव नपुंसग-
वेदगा जहा सलेस्सा । अवेदगा जहा अलेस्सा । सकसायी जाव लोभकसायी
जहा सलेस्सा । अकसायी जहा अलेस्सा । सजोगी जाव कायजोगी जहा
सलेस्सा । अजोगी जहा अलेस्सा । सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा
सलेस्सा ॥

२३ किरियावादी ण भते । नेरइया कि नेरइयाउयं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति,
मणुस्साउयं पकरेति, नो देवाउयं पकरेति ॥

२४ अकिरियावादी ण भते । नेरइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेति, मणुस्साउय पि
पकरेति, नो देवाउयं पकरेति । एव अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

२५ सलेस्सा ण भते । नेरइया किरियावादी कि नेरइयाउयं ? एव सव्वे वि
नेरइया जे किरियावादी ते मणुस्साउयं एगं पकरेति, जे अकिरियावादी
अण्णाणियवादी वेणइयवादी ते सव्वट्ठाणेषु वि नो नेरइयाउय पकरेति,
तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, नो देवाउयं पकरेति,
नवर—सम्मामिच्छते उवरिल्लेहि दोहि वि समोसरणेहि न किंचि वि पकरेति
जहेव जीवपदे । एव जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया ॥

२६ अकिरियावादी ण भते ! पुढविकाइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय
पकरेति, नो देवाउय पकरेति । एव अण्णाणियवादी वि ॥

२७. सलेस्सा ण भते ! एव जं जं पदं अत्थि पुढविकाइयाणं तहि तहि मज्झिमेसु
दोसु समोसरणेसु एवं चैव दुविह आउय पकरेति, नवर—तेउलेस्साए न किं पि
पकरेति । एव आउक्काइयाण वि, वणस्सइकाइयाण वि । तेउकाइआ
वाउकाइआ सव्वट्ठाणेषु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउय पकरेति,
तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति ।
वेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण जहा पुढविकाइयाण, नवर—सम्मत्त-नाणेषु न
एक्क पि आउय पकरेति ॥

२८. किरियावादी ण भते । पचिदियतिरिक्खजोणिया कि नेरइयाउयं पकरेति—
पुच्छा ।

गोयमा ! जहा मणपज्जवनाणी । अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी
य चउव्विह पि पकरेति । जहा ओहिया^१ तहा सलेस्सा वि ॥

२६. कण्हेस्सा णं भंते ! किरियावादी पंचिदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।

गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेति । अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी चउव्विहं पि पकरेति । जहा कण्हेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि । तेउलेस्सा जहा सलेस्सा, नवरं—अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी य नो नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति । एवं पम्हलेस्सा वि । एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा । कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउयं पकरेति । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउय पकरेति । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया । सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एवकं पि पकरेति जहेव नेरइया । नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मदिट्ठी । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा । जहा पचिदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एव मणुस्साण वि भाणियव्वा, नवर - मणपज्जवनाणी नोसण्णोवउत्ता य जहा सम्मदिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा । अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसायी अजोगी य एए न एग पि आउय पकरेति । जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव । वाणमंतर-जोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

३०. किरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?

गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

३१. अकिरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया—पुच्छा ।

गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि । एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

३२. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा ।

गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

३३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा ।

गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि । एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि जहा सलेस्सा । एव जाव सुक्कलेस्सा ॥

३४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा ।

गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेषु भयणाए । सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेषु भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कण्ह-

पक्खिया । सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा । नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । अण्णाणी जाव विभगनाणी जहा कण्हपक्खिया । सण्णामु चउसु वि जहा सलेस्सा । नोसण्णोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी । सवेदगा जाव नपुसगवेदगा जहा सलेस्सा । अवेदगा जहा सम्मदिट्ठी । सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा । अकसायी जहा सम्मदिट्ठी । सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा । अजोगी जहा सम्मदिट्ठी । सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा । एव नेरइया वि भाणियव्वा, नवरं—नायव्वं^१ ज अत्थि । एव असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा । पुढविक्काइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिमेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया वि, अभवमिद्धीया वि । एव जाव वणस्सइकाइया । वेइदिय-तेइदिय-चउरिदिया एव चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिवोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया, सेसं त चेव । पच्चिदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवरं—नायव्वं ज अत्थि । मणुस्सा जहा ओहिया जीवा । वाणमत-र-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

३५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उहेसो

- ३६ अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं किरियावादी—पुच्छा । गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि ॥
३७. सलेस्सा ण भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावादी० ? एवं चेव । एवं जहेव पढमुहेसे नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा, नवरं—ज ज^१ अत्थि अणंतरोववन्नगाण नेरइयाणं तं त^२ भाणियव्वं । एव सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—अणंतरोववन्नगाण ज जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं ॥
- ३८ किरियावादी णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेति—पुच्छा । गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं,

१. नेयव्व (अ, क) ।

३. तस्स (अ, न) ।

२. जम्स (अ, स) ।

- नो देवाउयं पकरेंति । एवं अकिरियावादी वि अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥
३६. सलेस्सा णं भंते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउय पकरेंति—पुच्छा ।
 गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति । एवं जाव वेमा-
 णिया । एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचि वि आउय
 पकरेंति जाव अणागारोवउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—ज जस्स अत्थि
 तं तस्स भाणियव्वं ॥
४०. किरियावादी णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धीया ? अभव-
 सिद्धीया ?
 गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥
४१. अकिरियावादी णं—पुच्छा ।
 गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि । एवं अण्णाणियवादी वि वेणइय-
 वादी वि ॥
४२. सलेस्सा ण भंते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धीया ?
 अभवसिद्धीया ?
 गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहि ए
 उद्देस ए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव अणागारो-
 वउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणियाण, नवर—जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्व ।
 इमं से लक्खणं—जे किरियावादी सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छदिट्ठीया एए सव्वे
 भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । सेसा सव्वे भवसिद्धीया वि,
 अभवसिद्धीया वि ॥
४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

४४. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किरियावादी० ? एवं जहेव ओहिओ
 उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि नेरइयादीओ तहेव निरवसेस भाणियव्व,
 तहेव तियदडगसगहिओ ॥
४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥ ॥

४-११ उद्देसा

४६ एव एएण कमेण जच्चेव वधिसए उद्देसगाण परिवाडी सच्चेव डह पि जाव
अचरिमो उद्देसो, नवर—अणतरा चत्तारि वि एक्कगमगा, परपरा चत्तारि
वि एक्कगमएण । एव चरिमा वि, अचरिमा वि एव चेव, नवरं—अलेस्सो
केवली अजोगी न भण्णति, सेस तहेव ॥

४७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति । एए एक्कारस वि उद्देसगा ॥

—

इक्कतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

खुड्डुजुम्म-नेरइयादीणं उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति ण भंते ! खुड्डा जुम्मा पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पणत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावर-
जुम्मे^१, कलियोगे ॥
२. से केणट्टेणं भंते ! एव वुच्चइ—चत्तारि खुड्डा जुम्मा पणत्ता, तं जहा—
कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं
खुड्डागकडजुम्मे । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए
सेत्तं खुड्डागतेयोगे । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए
सेत्तं खुड्डागदावरजुम्मे । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे
एगपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकलियोगे से तेणट्टेणं जाव कलियोगे ॥
३. खुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहितो
उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहितो—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जंति । एवं नेरइयाणं उववाओ जहा^१ वक्कंतीए
तहा भाणियव्वो ॥
४. ते ण भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा
उववज्जंति ॥
५. ते ण भंते ! जीवा कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं,

१. वातर° (क); वादर° (ता); वायर° २. प० ६ ।

(म) ।

एवं जहा पचविसतिमे सए अट्टमुहेसए नेरइयाण वत्तव्वया तहेव इह वि भाणि-
यव्वा जाव^१ आयप्पओगेण उववज्जति नो परप्पयोगेणं उववज्जति ॥

६. रयणप्पभापुढविखुड्ढागकडजुम्मनेरइया णं भते । कओ उववज्जति० ? एवं
जहा ओहियनेरइयाण वत्तव्वया सज्जेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव नो
परप्पयोगेण उववज्जति । एव सक्करप्पभाए वि, एव जाव अहेसत्तमाए । एवं
उववाओ जहा^२ वक्कतीए ।

अस्सण्णी खलु पढम, दोज्जं व सरीसवा तइय पक्खी ।

^१सीहा जति चउत्थि, उएगा पुण पचमि पुढवि ॥१॥

छट्ठि च इत्थियाओ, मज्जा मणुमा य सत्तमि पुढवि ।

एसो परमुववाओ, बोधव्वो नरयपुढवीणं ॥२॥^०

सेस तहेव ॥

- ७ खुड्ढागतेयोगनेरइया ण भते । कओ उववज्जति—कि नेरइएहिंतो ० ? उववाओ
जहा वक्कतीए ॥

८. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा
वा उववज्जति । सेस जहा कडजुम्मस्स । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

- ९ खुड्ढागदावरजुम्मनेरइया ण भते । कओ उववज्जति ? एव जहेव खुड्ढागकड-
जुम्मे, नवर—परिमाण दो वा छ वा दस वा चोहस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा
वा, सेस त चेव जाव अहेसत्तमाए ॥

- १० खुड्ढागकलिओगेनेरइया ण भते । कओ उववज्जति ? एवं जहेव खुड्ढागकड-
जुम्मे, नवर—परिमाण एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा
असंखेज्जा वा उववज्जति, सेस तं चेव । एव जाव अहेसत्तमाए ॥

११. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उहेसो

१२. कण्हलेस्सखुड्ढागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव जहा
ओहियगमो जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जति, नवर—उववाओ जहा वक्कतीए
धूमप्पभापुढविनेरइयाण, सेस त चेव ॥

१. अ० २५।६२०-६२६ ।

३. स० पा०—गाहा एनं उववाएण्णा ।

२. प० ६ ।

१३. धूमप्पभापुढविकण्हलेस्सखुट्ठागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति ? एव चेव निरवसेस । एवं तमाए वि, अहेसत्तमाए वि, नवरं—उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कंतीए ॥
१४. कण्हलेस्सखुट्ठागतेओगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवरं—तिणिण वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेसं त चेव । एवं जाव अहेसत्तमाए वि ॥
१५. कण्हलेस्सखुट्ठागदावरजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवरं—दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा, सेसं तं चेव । एव धूमप्पभाए वि जाव अहेसत्तमाए ॥
१६. कण्हलेस्सखुट्ठागकलियोगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवरं—एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेसं त चेव । एव धूमप्पभाए वि, तमाए वि, अहेसत्तमाए वि ॥
१७. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१८. नीललेस्सखुट्ठागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव जहेव कण्हलेस्सखुट्ठागकडजुम्मा, नवरं—उववाओ जो वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव । वालुयप्पभापुढविनीललेस्सखुट्ठागकडजुम्मनेरइया एव चेव । एवं पक्कप्पभाए वि, एव धूमप्पभाए वि । एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाण जाणियव्वं । परिमाण जहा कण्हलेस्सउद्देसए । सेसं तहेव ॥
१९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

२०. काउलेस्सखुट्ठागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एवं जहेव कण्हलेस्सखुट्ठागकडजुम्मनेरइया, नवरं—उववाओ जो रयणप्पभाए, सेसं त चेव ॥
२१. रयणप्पभापुढविकाउलेस्सखुट्ठागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०?

एव चेव । एवं सक्करप्पभाए वि, एवं वालुयप्पभाए वि । एवं चउसु, वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाणं जाणियव्व जहा कण्हलेस्सउद्देसए, सेस त चेव ॥

२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देशो

२३. भवसिद्धीयखुड्ढागकडजुम्मनेरइया ण भते । कओ उववज्जति—किं नेरइए-
हिंतो ०? एव जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव नो परप्पयोगेण
उववज्जति ॥

२४. रयणप्पभपुढविभवसिद्धीयखुड्ढागकडजुम्मनेरइया ण भते ! ०? एव चेव निरव-
सेस । एव जाव अहेसत्तमाए । एव भवसिद्धीयखुड्ढागतेयोगनेरइया वि । एव
जाव कलियोगत्ति, नवर—परिमाणं जाणियव्व, परिमाणं पुव्वभणिय जहा
पढमुद्देसए ॥

२५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

छठो उद्देशो

२६. कण्हलेस्सभवसिद्धीयखुड्ढागकडजुम्मनेरइया णं भते । कओ उववज्जति ०?
एव जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेसं चउसु वि जुम्मेसु
भाणियव्वो जाव—

२७. अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सखुड्ढागकलियोगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ०?
तहेव ॥

२८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

७-२८ उद्देशा

२९. नीललेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा ओहिए नील-
लेस्सउद्देसए ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३१. काउलेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए
काउलेस्सउद्देसए ॥
३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३३. जहा भवसिद्धीएहि चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धीएहि वि चत्तारि
उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्सउद्देसओ त्ति ॥
३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३५. एवं सम्मदिट्ठीहि वि लेस्सासजुत्तेहि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—सम्मदिट्ठी
पढमवित्तिएसु दोसु वि उद्देसगेसु अहेसत्तसपुढवीए न उववाएयव्वो, सेसं तं
चेव ॥
३६. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥
३७. मिच्छादिट्ठीहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धीयाणं ॥
३८. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥
३९. एवं कण्हपक्खिएहि वि लेस्सासजुत्तेहि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव
भवसिद्धीएहि ॥
४०. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥
४१. सुक्कपक्खिएहि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभपुढवि-
काउलेस्ससुक्कपक्खियखुट्ठागकस्सिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति ?
तहेव जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥
४२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा ॥

बत्तीसइमं सतं

१-२८ उद्देसा

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उव्वट्टण-पवं

१. खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहिं उव-
वज्जति—किं नेरइएसु उव्वज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उव्वज्जति ? उव्वट्टणा
जहा' वक्कतीए ॥
२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवइया उव्वट्टति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा वारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा
उव्वट्टति ॥
६. ते ण भंते ! जीवा कह उव्वट्टति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए, एवं तहेव । एवं सो चेव गमओ जाव' आयप्प-
योगेणं उव्वट्टति, नो परप्पयोगेणं उव्वट्टति ॥
४. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्म० ? एवं रयणप्पभाए वि । एवं जाव अहेसत्त-
माए । एव खुड्डागतेयोग-खुड्डागदावरजुम्म-खुड्डागकलियोगा, नवरं—परिमाणं
जाणियव्व, सेसं त चेव ॥
५. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥
६. कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया० ? एवं एएण कमेण जहेव उववायसए अट्ठावीसं
उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा,
नवर—उव्वट्टति त्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेसं तं चेव ॥
७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

तेत्तीसइमं सतं पढमं एगिदियं सतं पढमो उद्देसो

एगिदियाणं कम्मप्पगडि-पइं

१. कत्तिविहा णं भंते ! एगिदिया पणत्ता ?
गोयमा ! पच्चविहा एगिदिया पणत्ता, तं जहा—पुढविव्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥
२. पुढविव्काइया ण भंते ! कत्तिविहा पणत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पणत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविव्काइया य, वादरपुढविव्काइया य ॥
३. सुहुमपुढविव्काइया ण भंते ! कत्तिविहा पणत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पणत्ता, तं जहा—पज्जत्तासुहुमपुढविव्काइया य, अप्पज्जत्तासुहुमपुढविव्काइया य ॥
४. वादरपुढविव्काइया ण भंते ! कत्तिविहा पणत्ता ? एव चेव । एव आउक्काइया वि चउक्कएण भेदेण भाणियव्वा, एवं जाव वणस्सइकाइया ॥
५. अपज्जत्तासुहुमपुढविव्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥
६. पज्जत्तासुहुमपुढविव्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥
७. अपज्जत्तावादरपुढविव्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?
एवं चेव ॥
८. पज्जत्तावादरपुढविव्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ? एवं

- चेव । एव एएणं कमेण जाव वादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ति' ॥
९. अप्पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ?
 गोयमा ! सत्तविह्वधगा वि, अट्ठविह्वधगा वि । सत्त वधमाणा आउय-
 वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वधति, अट्ठ वधमाणा पडिपुण्णाओ अट्ठ
 कम्मप्पगडीओ वधति ॥
१०. पज्जत्तासुहुमपुढविकाइया णं भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एवं चेव,
 एव सव्वे जाव—
११. पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वधति ? एव चेव ॥
१२. अप्पज्जत्तासुहुमपुढविकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
 गोयमा ! चोहस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव
 अतराइय' सोइदियवज्जं, चक्खिदियवज्जं, घाणिदियवज्जं, जिह्विदियवज्जं,
 इत्थिवेदवज्जं, पुरिसवेदवज्जं । एव चउक्कएण भेदेण जाव—
१३. पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
 गोयमा ! एव चेव चोहस कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥
१४. सेव भते ! सेव भते ! ति ॥

बीओ उहेत्तो

१५. कतिविहा ण भते ! अणंतरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता ?
 गोयमा ! पचविहा अणंतरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता, त जहा—पुढविका-
 इया जाव वणस्सइकाइया ॥
१६. अणंतरोववन्नगा ण भते ! पुढविकाइया कतिविहा पणत्ता ?
 गोयमा ! दुविहा पणत्ता, त जहा—सुहुमपुढविकाइया य, वादरपुढविका-
 इया य । एव दुपएणं भेदेणं जाव वणस्सइकाइया ॥
१७. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?
 गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्जं जाव
 अतराइयं ॥
१८. अणंतरोववन्नगवादरपुढविकाइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?

- गोयमा ! अद्दु कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं जाव अणंतरोववन्नगवादरवणस्सइकाइयाणं^१ ति ॥
१९. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति । एवं जाव अणंतरोववन्नगवादरवणस्सइकाइय ति ॥
२०. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदंति ? गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्जं, तहेव जाव पुरिसवेदवज्जं । एवं जाव अणंतरोववन्नगवादरवणस्सइकाइयति ॥
२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ॥

तइओ उद्देसो

२२. कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता ? गोयमा ! पच्चविहा परंपरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता, तं जहा—पुढविकाइया एवं चउक्कओ भेदो जहा ओहिउद्देसए ॥
२३. परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चोद्दस वेदेति ॥
२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति ॥

४-११ उद्देसो

२५. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
२६. परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥
२७. अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
२८. परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥
२९. अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
३०. परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥
३१. चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा तहेव ॥
३२. एवं अचरिमा वि । एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥
३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! ति जाव विहरइ ॥

१. °गाणं (अ, ख, व, म, स) ।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

- ३४ कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिदिया पणत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिदिया पणत्ता, तं जहा—पुढविकाइया
जाव वणस्सइकाइया ॥
३५. कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढविकाइया कतिविहा पणत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पणत्ता, त जहा—सुहुमपुढविकाइया य, बादरपुढविका-
इया य ॥
३६. कण्हलेस्सा ण भंते ! सुहुमपुढविकाइया कतिविहा पणत्ता ? एवं एएण
अभिलावेणं चउक्कओ भेदो जहेव ओहिउद्देसए^१ ॥
- ३७ कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण-
त्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव पणत्ताओ, तहेव
बंधति, तहेव वेदेति ॥
- ३८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

- ३९ कतिविहा ण भंते ! अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सएगिदिया पणत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया एवं एएणं अभिला-
वेणं तहेव दुयओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

१. °उद्देसए जाव वणस्सइकाइयत्ति (स) ।

४०. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्ससुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडोओ पण्णत्ताओ ? एव एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववन्नगाण उद्देसओ तहेव जाव वेदेति ॥
४१. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

४२. कतिविहा णं भंते ! परपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया, एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥
४३. परपरोववन्नगकण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडोओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ परंपरोववन्नगउद्देसओ तहेव जाव वेदेति । एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ एगिदियसए एक्का-रस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससते वि भाणियव्वा जाव अचरिमचरिम-कण्हलेस्सा एगिदिया ॥

३,४ सताइं

४४. जहा कण्हलेस्सेहि भणिय एव नीललेस्सेहि वि सय भाणियव्व ॥
४५. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥
४६. एवं काउलेस्सेहि वि सय भाणियव्व, नवर—काउलेस्से ति अभिलावो भाणि-यव्वो ॥

पंचमं सतं

भवसिद्धीयएगिदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

४७. कतिविहा णं भंते ! भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

४८. भवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविव्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिदियसयं तहेव भवसिद्धीयसयं पि भाणियव्वं । उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव अचरिमो' त्ति ।
४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

छट्ठं सतं

५०. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविव्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥
५१. कण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविव्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविव्काइया य, वादरपुढविव्काइया य ॥
५२. कण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविव्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य । एवं वादरा वि । एएण अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो ॥
५३. कण्हलेस्सभवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविव्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेति ॥
५४. कतिविहा णं भंते ! अणतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया ॥
५५. अणतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविव्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविव्काइया, एवं दुयओ भेदो ॥
५६. अणतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविव्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणतरोववन्नउद्देसओ तहेव जाव वेदेति । एव एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति ॥

७,८ सताई

५७. जहा कण्हलेस्सभवसिद्धीएहि सयं भणियं एवं नीललेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं भाणियव्वं ॥
५८. एवं काउलेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं ॥

६-१२ सताई

अभवसिद्धीयएगिदियाणं कम्मपगडि-पदं

५९. कइविहा णं भंते ! अभवसिद्धीया एगिदिया पणत्ता ?
 गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धीया एगिदिया पणत्ता, तं जहा—पुढविकाइया
 जाव वणस्सइकाइया । एवं जहेव भवसिद्धीयसतं भणियं, नवरं—नव उहेसगा
 चरिमअचरिमउहेसगवज्जं, सेस तहेव ॥
६०. एवं कण्हलेस्सअभवसिद्धीयएगिदियसतं पि ॥
६१. नीललेस्सअभवसिद्धीयएगिदिएहि वि सतं ॥
६२. काउलेस्सअभवसिद्धीयसतं । एवं चत्तारि वि अभवसिद्धीयसताणि, नव-नव
 उहेसगा भवन्ति । एवं एयाणि बारस एगिदियसताणि भवन्ति ॥

चोतीसइमं सतं

पढमं एगिदियसतं

पढमो उद्देसो

एगिदियाणं विग्गहगइ-पदं

- १ कइविहा ण भते ! एगिदिया पणत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा एगिदिया पणत्ता, तं जहा—पुढविवकाइया जाव वणस्सइ-
काइया । एवमेते चउक्कएण भेदेण भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया ॥
- २ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले
चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-
मिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! कइ-
समएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उव-
वज्जेज्जा ॥
- ३ से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उव-
वज्जेज्जा ॥
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पणत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता सेढी,
एगओवका, दुहुओवका, एगओखहा^१, दुहुओखहा^२, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ।
उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ।
एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । दुहुओ-
वकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेणं
गोयमा ! जाव उववज्जेज्जा ॥
- ४ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले
चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-

१. °खुहा (अ) ।

२. °खुहा (अ) ।

मिल्ले चरिमंते पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विगहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा सेसं तं चेव जाव^१ से तेणट्ठेणं^२ गोयमा ! एवं वुच्चइ-एगसमइएणं वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा ० विगहेणं उववज्जेज्जा । एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बादरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो, ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु । एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहि अपज्जत्त-एहि, ताहे पज्जत्तएहि, बादरेहि अपज्जत्तएहि, ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो । एवं चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहि ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो ॥

५. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादर-तेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विगहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तं चेव । एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो । वाउक्काइएसु सुहुमधादरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो । एवं वणस्सइ-काइएसु वि ॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ० ? एव पज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव वादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि । एव अपज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि । एवं पज्जत्ताबादर-पुढविकाइओ वि । एवं आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरि-मते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो । सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो ।

७. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुम-पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विगहेण उववज्जेज्जा ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेण । एवं पुढविकाइएसु चउविहेसु वि उववाएयव्वो, एवं आउकाइएसु चउविहेसु वि, तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववाएयव्वो ॥

८. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते !

कतिसमइएण० ? सेसं तं चेव । एवं पज्जत्तावादरतेउक्काइयत्ताए वि उववा-
एयव्वो । वाउक्काइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव
चउक्काएण भेदेण उववाएयव्वो । एवं पज्जत्तावादरतेउक्काइयो वि समयखेत्ते
समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसाए ठाणेषु उववाएयव्वो । जहेव अपज्जत्तओ
उववाइओ, एव सव्वत्थ वि वादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समय-
खेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्या वि । वाउक्काइया वणस्सइकाइया य जहा
पुढविकाइया तहेव चउक्काएण भेदेण उववाएयव्वा जाव—

६. पज्जत्तावादरवणस्सइकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले
चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-
मिल्ले चरिमते पज्जत्तावादरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते !
कतिसमइएण० ? सेसं तहेव जाव से तेणट्टेण ॥

१०. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-
मिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए
पुरत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण
भते ! कइसमइएण० ? सेस तहेव नरवसेस । एव जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते
सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, जे य
समयखेत्त समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, एव एएणं
चेव कमेण पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरि-
मते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं । एवं एएणं गमएणं दाहिणिल्ले
चरिमते समोहयाण उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाओ । एव चेव
उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमते समयखेत्ते य
उववाएयव्वा तेणेव गमएणं ॥

११. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले
चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले
चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहेव रयण-
प्पभाए जाव से तेणट्टेण । एव एएणं कमेण जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउक्काइएसु ॥

१२. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले
चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तावादरतेउक्काइ-
यत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! कतिसमइएणं—पुच्छा ।

गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

१३. से केणट्टेणं ?

एवं खुलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव
अद्धचक्कवाला । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उवव-
ज्जेज्जा । दुहुओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ।

से तेणट्टेणं । एवं पज्जत्ताएसु वि बादरतेउक्काइएसु । सेसं जहा रयणप्पभाए । जे वि बादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते पुढविकाइएसु चउव्विहेसु, आउक्काइएसु चउव्विहेसु, तेउक्काइएसु दुविहेसु, वाउक्काइएसु चउव्विहेसु, वणस्सकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जति, ते वि एवं चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववाएयव्वा । बादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइयविग्गहा भाणियव्वा, सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेस । जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एव जाव अहेसत्तमाए^१ भाणियव्वा ॥

१४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! अहेल्लोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढल्लोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

१५. से केणट्टेण भते ! एव वुच्चइ—तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण अहेल्लोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढल्लोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरंसि अणुसेढि^२ उववज्जित्तए, से ण तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढि^३ उववज्जित्तए, से णं चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । से तेणट्टेणं जाव उववज्जेज्जा । एवं पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए वि, एव जाव पज्जत्तासुहुमतेउक्काइयत्ताए ॥

१६. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! अहेल्लोय^४खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए,^० समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

१७. से केणट्टेणं ?

एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा, दुहुओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ।

१. अहेसत्तमाए वि (स) ।

२. अणुसेढीए (अ, क, ख, व, म, स) ।

३. विसेढी (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

४. स० पा—अहेल्लोय जाव समोहणित्ता ।

से तेणट्टेण । एव पज्जत्ताएसु वि वादरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो । वाउक्का-
इय-वणस्सइकाइत्ताए चउक्कएण भेदेण जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाए-
यव्वो । एव जहा अपज्जत्तासुहुमपुढविककाइयस्स गमओ भणिओ एवं पज्जत्ता-
सुहुमपुढविककाइयस्स वि भाणियव्वो, तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएव्वो ॥

१८. [अपज्जत्तावादरपुढविककाइए ण भते ?] अहेलोयखेत्तनालीए वाहिरिल्ले
खेत्ते समोहए०? एव वादरपुढविककाइयस्स वि अपज्जत्तगस्स पज्जत्तगस्स य
भाणियव्व । एवं आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्व । सुहुमतेउक्काइयस्स
दुविहस्स वि एव चेव ॥

१९ अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते । समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे
भविए उड्डलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविककाइयत्ताए
उववज्जित्ताए, से ण भते । कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा । दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उवव-
ज्जेज्जा ॥

२०. से केणट्टेण ? अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं जाव—

२१. अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते । समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए
उड्डलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्ताए,
से ण भते ०? सेस त चेव ॥

२२ अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए
समयखेत्ते अपज्जत्तावादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्ताए, से ण भते ! कइसम-
इएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा । एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

२३. से केणट्टेण ?

अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं पज्जत्तावादरतेउकाइयत्ताए
वि । वाउकाइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढविककाइएसु उववाइओ तहेव
चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वो । एव पज्जत्तावादरतेउकाइओ वि एएसु चेव
ठाणेसु उववाएयव्वो । वाउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं जहेव पुढविककाइयत्ते
उववाओ तहेव भाणियव्वो ॥

२४. अपज्जत्तासुहुमपुढविककाइए ण भते । उड्डलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते
समोहए, समोहणित्ता जे भविए अहेलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्ता-
सुहुमपुढविककाइयत्ताए उववज्जित्ताए, से ण भते ! कइसमइएण ०? एवं उड्ड-
लोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाणं अहेलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले
खेत्ते उववज्जंताण सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव वादरवणस्सइ-
काइओ पज्जत्ताओ वादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्ताएसु उववाइओ ॥

२५. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२६. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पणत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला । उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा । दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढि उववज्जित्तए, से ण तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से ण चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेण जाव उववज्जेज्जा । एव अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्ताएसु पज्जत्ताएसु सुहुमपुढविकाइएसु, अपज्जत्ताएसु पज्जत्ताएसु सुहुमआउकाइएसु, अपज्जत्ताएसु पज्जत्ताएसु सुहुमतेउवकाइएसु, अपज्जत्ताएसु पज्जत्ताएसु सुहुमवाउकाइएसु, अपज्जत्ताएसु पज्जत्ताएसु वादरवाउकाइएसु, अपज्जत्ताएसु पज्जत्ताएसु सुहुमवणस्सइकाइएसु, अपज्जत्ताएसु पज्जत्ताएसु य बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेण भाणियव्वो । सुहुमपुढविकाइओ पज्जत्ताओ एव चेव निरवसेसो वारससु वि ठाणेसु उववाएयव्वो । एवं एएण गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्ताओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्ताएसु चेव भाणियव्वो ॥

२७. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ ० ? एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पणत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढि उववज्जित्तए, से णं तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए दाहिणिल्ले चरिमंते

उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएमु पज्जत्तएमु चेव । सव्वेसि दुसमइओ तिसमइयो चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो ॥

२९ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

३०. से केणट्टेण ?

एव जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया परत्थिमिल्ले चेव चरिमते उववाइया तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते उववाएयव्वो सव्वे ॥

३१. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते? ० एव जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहयओ' दाहिणिल्ले चरिमते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमते उववाएयव्वो ॥

३२. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते ! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए? ० एव जहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ पुरत्थिमिल्ले चेव उववाइओ तहेव दाहिणिल्ले समोहए दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो, तहेव निरवसेस जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएमु चेव पज्जत्तएमु दाहिणिल्ले चरिमते उववाइओ, एव दाहिणिल्ले समोहयओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमते उववाएयव्वो, नवर—दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो, सेस तहेव । एव दाहिणिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव । एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो । पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले, तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो । पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समोहयाण पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाण जहा सट्ठाणे । उत्तरिल्ले उववज्जमाणाण एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेस तहेव । पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे, दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेस त चेव । उत्तरिल्ले समोहयाण उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाण जहा सट्ठाणे । उत्तरिल्ले समोहयाण पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाण एव चेव, नवरं—एगसमइओ विग्गहो नत्थि ।

उत्तरिल्ले समोह्याणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे, उत्तरिल्ले समोह्याण पञ्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेस तहेव जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव ॥

एगिदियाणं ठाण-पदं

३३. कहि णं भते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पणत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु जहा^१ ठाणपदे जाव सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमाणात्ता सव्वलोग-परियावन्ता पणत्ता समाउसो !

एगिदियाणं कम्म-पदं

३४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ, तं जहा—ताणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एव चउक्कएणं भेदेण जहेव एगिदियसएसु जाव^२ बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ॥

३५. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बधत्ति ?
गोयमा ! सत्तविहवधगा वि, अट्ठविहवधगा वि, जहा एगिदियसएसु जाव^३ पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ॥

३६. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेत्ति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेत्ति, तं जहा—ताणावरणिज्जं, जहा एगिदियसएसु जाव पुरिसवेदवज्झ । एव जाव^४ बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाण ॥

एगिदियाणं उववत्ति-पदं

३७. एगिदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति—कि नेरइएहितो उववज्जंति० ? जहा^५ वक्कंतीए पुढविकाइयाणं उववाओ ॥

एगिदियाणं समुग्घाथ-पद

३८. एगिदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया पणत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पणत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए जाव वेउब्बिय-समुग्घाए ॥

१. प० २

४. भ० ३३।१२, १३ ।

२. भ० ३३।६-८ ।

५. प० ६ ।

३. भ० ३३।९-११ ।

एगिदियाणं तुल्ल-विसेसाहिय-कम्मकरण-पदं

३६ एगिदिया णं भते ! किं तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति ? तुल्ल-द्वितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ? वेमायद्वितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति ? वेमायद्वितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ?

गोयमा ! अत्येगइया तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति, अत्येगइया तुल्लद्वितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति, अत्येगइया वेमायद्वितीया तुल्ल-विसेसाहिय कम्म पकरेति, अत्येगइया वेमायद्वितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ॥

४०. से केणद्वेणं भते ! एवं वुच्चइ—अत्येगइया तुल्लद्वितीया जाव वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ?

गोयमा ! एगिदिया चउद्विहा पणत्ता, त जहा—अत्येगइया समाउया समोव-वन्नगा, अत्येगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्येगइया विसमाउया समोव-वन्नगा, अत्येगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण तुल्लद्वितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति । तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण तुल्लद्वितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति । तत्थ ण जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते ण वेमायद्वितीया तुल्ल-विसेसाहिय कम्म पकरेति । तत्थ ण जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते ण वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति । से तंणद्वेण गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ॥

४१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरति ॥

वीओ उद्देसो

विसेसित-एगिदियाणं ठाणादि-पदं

४२. कइविहा ण भते ! अणंतरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता ?

गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता, तं जहा—पुढवि-क्काइया, दुयाभेदो जहा एगिदियसएसु जाव वादरवणस्सइकाइया य ॥

४३. कहि ण भते ! अणंतरोववन्नगाण वादरपुढविव्काइयाणं ठाणा पणत्ता ?

गोयमा ! सट्ठाणेण अट्ठसु पुढवीसु, त जहा—रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव

दीवेसु समुद्देशु, एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं वादरपुढविकाइयाणं ठाणा पणत्ता, उववाएण सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणं लोगस्स असखेज्जइभागे । अणंतोववन्नगसुहुमपुढविवकाइया एगविहा अविसेसमणात्ता सव्वलोए परियावन्ना पणत्ता समणाउसो ! एवं एएणं कमेणं सव्वे एगिदिया भाणियव्वा, सट्ठाणाइं सव्वेसि जहा ठाणपदे । तेसि पज्जत्तगाण वादराणं उववाय-समुग्घाय-सट्ठाणाणि जहा तेसि चेव अपज्जत्तगाण वादराण । सुहुमाण सव्वेसि जहा पुढविकाइयाणं भाणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

४४. अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढविवकाइयाण भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पणत्ताओ । एव जहा एगिदियसएसु अणंतरोववन्नगउद्देशेए तहेव पणत्ताओ, तहेव वंधति, तहेव वेदेति जाव अणंतरोववन्नगा वादरवणस्सइकाइया ॥

४५. अणंतरोववन्नगएगिदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहेव ओहिण उद्देशओ भाणिओ तहेव ॥

४६. अणंतरोववन्नगएगिदियाण भंते ! कति समुग्घाया पणत्ता ?

गोयमा ! दोन्नि समुग्घाया पणत्ता त जहा—वेदणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य ॥

४७. अणंतरोववन्नगएगिदिया णं भंते ! कि तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति—पुच्छा तहेव ॥

गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्म पकरेति ।

४८. से केणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति ?

गोयमा ! अणंतरोववन्नगा एगिदिया दुविहा पणत्ता, तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा । तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेति । तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति । से तेणट्ठेण जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेति ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइयो उद्देसो

५०. कडविहा णं भत्ते ! परंपरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिदिया पणत्ता, त जहा—पुढविका-
इया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥
५१. परंपरोववन्नगअपज्जत्तामुहुमपुढविवकाइए ण भत्ते ! इमीसे रयणप्पभाए
पुढवीए पुरत्तिमिल्ले चरिमत्ते समोहए, समोहणत्ता जे भविए इमीसे
रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्तिमिल्ले चरिमत्ते अपज्जत्तामुहुमपुढविकाइयत्ताए
उववज्जित्तए० ? एव एएण अभिलावेण जहेव पढमो उद्देसओ जाव
लोगचरिमत्तो त्ति ॥
५२. कहि णं भत्ते ! परंपरोववन्नगवादरपुढविकाइयाणं ठाणा पणत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेण अट्ठमु पुढवीमु । एवं एएण अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए
जाव तुल्लट्ठितीयत्ति ॥
५३. नेव भत्ते ! सेव भत्ते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

५४. एवं सेसा वि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमो त्ति, नवर—अणतरा अणतरसरिसा,
परंपरा परंपरसरिसा, चरिमा य अचरिमा य एवं चेव । एव एते एक्कारस
उद्देसगा ॥

१. जाव (अ, ता, व); पुढवीए जाव (घ) । ३. °वात्तर° (क, ङ) ।

२. म० ३४१२-३२ ।

विइयं सतं

१-११ उद्देसा

५५. कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिदिया पणत्ता ?
गोयमा ! पचविहा कण्हलेस्सा एगिदिया पणत्ता, भेदो चउक्कओ जहा
कण्हलेस्सएगिदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥
५६. कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविककाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए
पुरत्थिमिल्ले ? एव एएणं अभिलावेण जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोगचरिमते
त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सु चेव उववाएयव्वो ॥
५७. कहि ण भते ! कण्हलेस्सअपज्जत्तावादरपुढविककाइयाणं ठाणा पणत्ता ?
एवं एएणं अभिलावेण जहा ओहिउद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइय त्ति ॥
५८. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
५९. एव एएणं अभिलावेण जहेव पढम सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा
भाणियव्वा ॥

३-५ सताइं

६०. एवं नीललेस्सेहि वि सतं । काउलेस्सेहि वि सत एवं चेव । भवसिद्धिय-
एगिदिएहि सत ॥

छट्ठं सत्तं

- ६१ कइविहा ण भते कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पणत्ता ? जहेव ओहिउद्देसओ ॥
- ६२ कइविहा ण भंते ! अणंतरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पणत्ता ? जहेव अणंतरोववन्नाउद्देसओ ओहिओ तहेव ॥
- ६३ कइविहा ण भंते ! परपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पणत्ता ? गोयमा ! पचविहा परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पणत्ता, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥
- ६४ परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! इसीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमतं त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो ॥
६५. कहि ण भते ! परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियपज्जत्तावादरपुढविकाइयाण ठाणा पणत्ता ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति । एव एएण अभिलावेण कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त छट्ठ सत्त ॥

७-१२ सत्ताइं

- ६६ नीललेस्सभवसिद्धियएगिदिएसु सत्त । एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि सत्त । जहा भवसिद्धिएहि चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवरं—चरिमअचरिमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा, सेस त चेव । एव एयाइं बारस एगिदियसेढीसत्ताइं ॥
६७. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

पणतीसइमं सतं पढमं एगिदियमहाजुम्मसतं पढमो उद्देसो

महाजुम्म-एगिदियाण उववायादि-पदं

१. कइ णं भंते ! महाजुम्मा पणत्ता ?

गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पणत्ता, तं जहा—१ कडजुम्मकडजुम्मे, २ कड-
जुम्मेतेओगे, ३ कडजुम्मदावरजुम्मे^१, ४ कडजुम्मकलियोगे, ५ तेओगकडजुम्मे,
६ तेओगेतेओगे, ७ तेओगेदावरजुम्मे, ८ तेओगकलिओगे, ९ दावरजुम्मकड-
जुम्मे, १० दावरजुम्मेतेओगे, ११ दावरजुम्मदावरजुम्मे, १२ दावरजुम्मकलि-
योगे, १३ कलिओगकडजुम्मे १४ कलियोगेतेओगे, १५ कलियोगदावरजुम्मे,
१६. कलियोगकलिओगे ॥

२. से कणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोलस महाजुम्मा पणत्ता, तं जहा—कडजुम्म-
कडजुम्मे जाव कलियोगकलियोगे ?

गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे^१ चउपज्जवसिए, जे
णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कडजुम्मा, सेतं कडजुम्मकडजुम्मे १ ।
जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स
रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेतं कडजुम्मतेयोगे २ । जे ण रासी चउ-
क्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहार-
समया कडजुम्मा, सेतं कडजुम्मदावरजुम्मे ३ । जे णं रासी चउक्कएणं अव-
हारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कड-
जुम्मा, सेतं कडजुम्मकलियोगे ४ । जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीर-
माणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, सेतं तेओग-
कडजुम्मे ५ । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए,

१. ^० दावरजुम्मे (अ, ख, ता, म); ^० वातरजुम्मे २. अवहारमाणा (अ); अवहारमाणे (म) ।
(क) ।

जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगतेओगे ६ । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दोपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्त तेओगदावरजुम्मे ७ । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगकलियोगे ८ । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मकडजुम्मे ९ । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मतेओ १० । जे णं रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मदावरजुम्मे ११ । जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मकलियो १२ । जे णं रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलिओगकडजुम्मे १३ । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोगतेओ १४ । जे ण रासी चउक्कएण अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोगदावरजुम्मे १५ । जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोगकलियोगे १६ । से तेणद्वेण जाव कलिओगकलियोगे ॥

३. कडजुम्मकडजुम्मएगिदिया णं भते ! कओ उववज्जति—किं नेरइएहिंते ० ? जहा' उप्पलुद्देसए तहा उववाओ ॥
४. ते ण भते । जीवा एगसमएण केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जंति ॥
५. ते ण भते । जीवा समए समए—पुच्छा । गोयमा ! ते ण अणता समए समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरति, णो चेव णं अवहिया' सिया । उच्चत्तं जहा' उप्पलुद्देसए ॥
६. ते ण भते । जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अवधगा ? गोयमा ! बंधगा, नो अबधगा । एवं सन्वेसि आउयवज्जाणं । आउयस्स वधगा वा अबंधगा वा ॥

७. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! वेदगा, नो अवेदगा । एवं सव्वेसि ॥
८. ते णं भंते ! जीवा कि सातावेदगा ? असातावेदगा^१ ?
गोयमा ! सातावेदगा वा असातावेदगा वा । एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी^२ ।
सव्वेसि कम्माण उदई, नो अणुदई । छण्ह कम्माण उदीरगा, नो अणुदीरगा ।
वेदणिज्जाउयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा ॥
९. ते णं भंते ! जीवा कि कण्हलेस्सा—पुच्छा ।
गोयमा ! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा, तेउलेस्सा वा । नो
सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी—नियम^३
दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । नो मणजोगी, नो
वइजोगी, कायजोगी । सागारोवउत्ता वा, अणागारोवउत्ता वा ॥
१०. तेसि णं भंते^४ जीवाणं सरीरगा^५ कतिवण्णा^६ जहा^७ उप्पलुद्देसए सव्वत्थ—पुच्छा ।
गोयमा ! जहा उप्पलुद्देसए उसासगा वा, नीसासगा वा, नो उस्सासनीसासगा
वा । आहारगा वा अणाहारगा वा । नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया ।
सकिरिया, नो अकिरिया । सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा । आहारसण्णो-
वउत्ता वा जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वा । कोहकसायी वा जाव लोभकसायी
वा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा । इत्थिवेदबधगा वा
पुरिसवेदबधगा वा नपुसगवेदबधगा वा । नो सण्णी, असण्णी । सइदिया, नो
अणिदिया ॥
११. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मएगिदिया कालओ केवच्चिर^८ होति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणंतं काल—अणता ओसप्पिणि-
उस्सप्पिणीओ, वणस्सइकाइयकालो । सवेहो न भण्णइ, आहारो जहा^९ उप्पलु-
द्देसए नवरं—निव्वाघाएणं छट्ठिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउ-
दिसि, सिय पचदिसि, सेसं तहेव । ठिठी जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस
वाससहस्साइं । समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि । मारणतियसमुग्घातेण समोहया
वि मरति, असमोहया वि मरति । उव्वट्ठणा जहा^{१०} उप्पलुद्देसए ॥
१२. अह भते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्मएगिदियत्ताए उववन्न-
पुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

१. पुच्छा (अ, क, ख, ता, व, म) ।

२. भ० ११।९-११ ।

३. नियमा (अ, ब) ।

४. सरीरा (ख, स) ।

५. भ० ११।१७-२८ ।

६. केवच्चिरं (अ, क, ख, व, म) ।

७. भ० ११।३५ ।

८. भ० ११।३६ ।

१३. कडजुम्मतेओयएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव ॥
- १४ ते ण भते ! जीवा एगसमए—पुच्छा ।
गोयमा ! एकूणवीसा वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति,
सेसं जहा कडजुम्मकडजुम्माण जाव अणतखुत्तो ॥
- १५ कडजुम्मदावरजुम्मएगिदिया ण भते ! कओहितो उववज्जति० ? उववाओ तहेव ॥
- १६ ते ण भते ! जीवा एगसमएण—पुच्छा ।
गोयमा ! अट्ठारस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेसं
तहेव जाव अणतखुत्तो ॥
- १७ कडजुम्मकलियोगएगिदिया ण भते ! कओहितो उववज्जति० ? उववाओ तहेव
परिमाणं सत्तरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा, सेसं तहेव जाव
अणतखुत्तो ॥
- १८ तैयोगकडजुम्मएगिदिया णं भते ! कओहितो उववज्जति० उववाओ तहेव,
परिमाणं वारस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेसं
तहेव जाव अणतखुत्तो ॥
- १९ तैयोगतैयोगएगिदिया णं भते ! कओहितो उववज्जति० ? उववाओ तहेव ।
परिमाणं पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा, सेसं तहेव जाव
अणतखुत्तो । एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ, नवर—परिमाणे
नाणत्त—तैयोगदावरजुम्मेसु परिमाणं चौहस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा
अणता वा उववज्जति । तैयोगकलियोगेसु तेरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा
अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा सखेज्जा वा असखेज्जा
वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मतेयोगेसु एक्कारस वा सखेज्जा वा
असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा सखेज्जा
वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मकलियोगेसु नव वा
सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगकडजुम्मे चत्तारि
वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगतैयोगेसु सत्त
वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगदावरजुम्मेसु छ
वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति ॥
२०. कलियोगकलियोगएगिदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव ।
परिमाणं पच वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेसं तहेव
जाव अणतखुत्तो ॥
- २१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

२२. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ?
 गोयमा ! तहेव, एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बित्तिओ^१
 भाणियव्वो, तहेव सव्वं, नवर—इमाणि दस नाणत्ताणि—१. ओगाहणा जहण्णेणं
 अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उवकोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । २
 आउयकम्मस्स नो बंधगा, अबंधगा । ३. आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा ।
 ४. नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासनिस्सासगा । ५. सत्तविहवंधगा,
 नो अट्ठविहवंधगा ॥
२३. ते ण भंते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदियत्ति कालओ केवच्चिर होइ ?
 गोयमा ! ६. एकं समयं । ७. एवं ठिती वि । ८. समुग्घाया आदित्ता
 दोन्ति । ९. समोहया न पुच्छिज्जंति । १०. उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ, सेस तहेव
 सव्वं निरवसेसं सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो ॥
२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

२५. अपढमसमयकडजुम्मएगिदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एसो जहा
 पढमुद्देसो सोलसहि वि जुम्मेसु^३ तहेव नेयव्वो जाव कलियोगकलियोगत्ताए
 जाव अणतखुत्तो ॥
२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२७. अरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं
 जहेव पढमसमयउद्देसओ, नवर—देवा न उववज्जंति, तेउलेस्सा न पुच्छिज्जति,
 सेसं तहेव ॥
२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२९. अचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा
 अपढमसमयउद्देसो^१ तहेव निरवसेसो भाणितव्वो ॥
३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. बित्तिओ वि (अ, क, ख, ब, म) ।

३. पढम० (अ, क, ख, ता, ब) ।

२. जुम्मेहिंसु (ता) ।

३१. पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कअओ उववज्जति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥
३२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३३. पढमअपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कअओ उववज्जति० ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव भाणियव्वो ॥
३४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
३५. पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कअओ उववज्जति० ? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेस ॥
३६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
३७. पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया णं भते ! कअओ उववज्जति० ? जहा 'वीओ उद्देसओ' तहेव निरवसेस ॥
३८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३९. चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया णं भते ! कअओ उववज्जति० ? जहा चउत्थो उद्देसओ तहेव निरवसेस ॥
४०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
४१. चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कअओ उववज्जति० ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेस ॥
४२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरति ॥
४३. एव एए एवकारस उद्देसगा । पढमो ततिओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ट सरिसगमा, नवर—चउत्थे अट्टमे दसमे य देवा न उववज्जति । तेउलेस्सा नत्थि ॥

वितियं एगिदियमहाजुम्मसतं

४४. कण्णलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया णं भते ! कअओ उववज्जति० ? गोयमा ! उववाओ तहेव, एवं जहा ओहिउद्देसए, नवरं इम नाणत्तं ॥
४५. ते णं भते ! जीवा कण्णलेस्सा ? हंता कण्णलेस्सा ॥

१. पढमउ० (अ, क, ख) ।

२. चउत्थुद्देसओ (ता) ।

३. पंचमगो (अ, क, व, म); पंचमवो (ख, ता) ।

४. चउत्थे छट्ठे (अ, व) ।

४६. ते णं भंते ! कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं ठिती वि । सेसं
तहेव जाव अणतखुत्तो । एव सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा ॥
४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
४८. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ?
जहा पढमसमयउद्देसओ, नवर—
४९. ते ण भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेस तहेव' ॥
५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
५१. एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस
उद्देसगा भाणियव्वा । पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि
सरिसगमा, नवर—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स ॥
५२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-१२ एगिंदियमहाजुम्मसताइं

५३. एवं नीललेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं, एक्कारस उद्देसगा तहेव ॥
५४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
५५. एवं काउलेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं ॥
५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
५७. भवसिद्धिकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा
ओहियसतं तहेव, नवरं—एक्कारससु वि उद्देसएसु ॥
५८. अह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धिकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिय-
त्ताए उववन्नपुव्वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सेसं तहेव ॥
५९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
६०. कण्हलेस्सभवसिद्धिकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ?
एवं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सतं वितियसतकण्हलेस्ससरिस भाणि-
यव्वं ॥
६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६२. एवं नीललेस्सभवसिद्धियएगिदियएहि वि सतं ॥
६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
६४. एव काउलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि तहेव एक्कारसउहेसगसजुत्त सत । एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धिएसु सताणि । चउसु वि सएसु सन्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥
६५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
६६. जहा भवसिद्धिएहि चत्तारि सताइ भणियाइं एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सताणि लेस्सासजुत्ताणि भाणियव्वाणि । सन्वे पाणा तहेव नो इणट्ठे समट्ठे । एव एयाइ वारस एगिदियमहाजुम्मसताइ भवति ॥
६७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥



छत्तीसइमं सतं पढमं बेदियमहाजुम्मसतं पढमो उद्देसो

महाजुम्म-बेदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मबेदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ जहा^१ वक्कतीए । परिमाण सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति । अवहारो^२ जहा^१ उप्पलुद्देसए । ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण बारस जोयणाइ । एवं जहा एगिदियमहाजुम्माण पढमुद्देसए तहेव, नवरं—तिण्णि लेस्साओ, देवा न उववज्जति । सम्मदिट्ठी वा मिच्छदिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नाणी वा अण्णाणी वा । नो मणजोगी, वइजोगी वा कायजोगी वा ॥
२. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मबेदिया कालओ केवच्चिरं होति ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण सखेज्ज कालं । ठिती जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइ । आहारो नियम छद्दिसि । तिण्णि समुग्घाया, सेस तहेव जाव अणतंखुत्तो । एव सोलससु वि जुम्मेसु ॥
३. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

२-११ उद्देसा

४. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मबेदिया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा एगिदियमहाजुम्माणं पढमसमयउद्देसए । दस नाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि ।

१. प० ६ ।

३. अ० ११/४ ।

२. आहारो (अ, क, ता, ब) ।

एक्कारसमं इम नाणत्तं—नो मणजोगी, नो वड्जोगी, कायजोगी । सेसं जहा वेदियाणं चेव पढमुद्देसए ॥

५. सेव भत्ते ! सेव भत्ते ! त्ति ॥

६. एव एए वि जहा एगिदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, नवर—चउत्थ-अट्टम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भण्णत्ति । जहेव एगिदिएसु पढमो तइओ पचमो य एक्कगमा, सेसा अट्ट एक्कगमा ।

२-१२ वेदियमहाजुम्मसताइं

७. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मवेदिया ण भत्ते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव । कण्हलेस्सेसु वि एक्कारसउद्देसगसजुत्त सत, नवर—लेस्सा, सच्चिट्ठणा^१ जहा एगिदियकण्हलेस्साण ॥

८. एव नीललेस्सेहि वि सत ॥

९. एव काउलेस्सेहि वि ॥

१०. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मवेदिया ण भत्ते० ? एवं भवसिद्धियसता वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएण नेयव्वा, नवर—सव्वे पाणा० ? णो तिणट्ठे समट्ठे । सेस तहेव ओहियसताणि चत्तारि ॥

११. सेव भत्ते ! सेव भत्ते ! त्ति ॥

१२. जहा भवसिद्धियसताणि चत्तारि एव अभवसिद्धियसताणि चत्तारि भाणियव्वाणि, नवर—सम्मत्त-नाणाणि सव्वेहि नत्थि, सेस त चेव । एव एयाणि वारस वेदियमहाजुम्मसताणि भवत्ति ॥

१३. सेव भत्ते ! सेव भत्ते ! त्ति ॥

सत्ततीसइमं सतं

महाजुम्म-तेंदियाणं उववायादि-पद

१. कडजुम्मकडजुम्मतेदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एवं तेदिएसु वि बारस सता कायव्वा बेदियसतसरिसा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण तिणि गाउयाइ । ठिती जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण एकूणवण्णं राइंदियाइ, सेस तहेव् ॥
 २. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
-

अट्ठतीसइमं सतं

महाजुम्म-चउरिंदियाणं उववायादि-पदं

१. चउरिदिएहि वि एवं चेव बारस सता कायव्वा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ । ठिति जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा । सेसं जहा बेदियाण ॥
 २. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
-

एगूणयालीसइमं सतं

महाजुम्म-असण्णिपचिंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मअसण्णिपचिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा बेदि-याण तहेव असण्णिसु वि बारस सता कातव्वा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्सं । सच्चिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण पुव्वकोडीपुहत्त । ठिती जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेस जहा बेदियाण ॥
 २. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
-

चत्तालीसतिमं सत

पदमं सण्णिपंचीदियमहाजुम्मसतं

महाजुम्म-सण्णिपंचीदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचीदिया ण भते । कओ उववज्जति०? उववाओ चउमु वि गईसु । सखेज्जवासाउय-असखेज्जवासाउय-पज्जत्ता-अपज्जत्ताएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति । परिमाण अवहारो ओगाहणा य जहा असण्णिपंचीदियाण । वेयणिज्जवज्जाण सत्तण्ह पगडीण वधगा वा अवधगा वा, वेयणिज्जस्स वधगा, नो अवधगा । मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा, सेसाण सत्तण्ह वि वेदगा, नो अवेदगा । सायावेदगा वा असायावेदगा वा । मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा, सेसाण सत्तण्ह वि उदई, नो अणुदई । नामस्स गोयस्स य उदीरगा, नो अणुदीरगा, सेसाण छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । सम्मदिट्ठी वा मिच्छा-दिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा । नाणी वा अण्णाणी वा । मणजोगी वइजोगी कायजोगी । उवओगो, वण्णमादी, उस्सासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिदियाण । विरया य अविरया य विरयाविरया य । सकिरिया, नो अकिरिया ॥
२. ते ण भते । जीवा किं सत्तविहवधगा ? अट्ठविहवधगा ? छव्विहवधगा ? एगविहवधगा वा ?
गोयमा ! सत्तविहवधगा वा जाव एगविहवधगा वा ॥
३. ते ण भते । जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिगहसण्णोवउत्ता ? नोसण्णोवउत्ता ?
गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता जाव नोसण्णोवउत्ता वा । सव्वत्थ पुच्छा भाणि-यव्वा-कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा, अकसायी वा । इत्थीवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुसगवेदगा वा अवेदगा वा । इत्थिवेदवधगा वा पुरिसवेद-वधगा वा नपुसगवेदवधगा वा अवधगा वा । सण्णी, नो असण्णी । सइदिया,

नो अणिदिया । संचिट्टणा जहण्णेणं एकं समयं, उक्कोसेण सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेग । आहारो तहेव जाव नियम छहिसि । ठिती जहण्णेणं एक समय, उक्कोसेण तेत्तोसं सागरोवमाइ । छ समुग्घाया आदिल्लगा । मारणतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । उव्वट्टणा जहेव उववाओ, न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति ।

४. अहं भते ! 'सव्वेपाणा'^१ जाव अणतखुत्तो । एव सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणतखुत्तो, नवरं—परिमाणं जहा वेइदियाण, सेस तहेव ॥
५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

२-११ उद्देसा

६. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? उववाओ, परिमाण आहारो जहा एएसि चैव पढमोद्देसए । ओगाहणा बधो वेदो वेदणा उदयी उदीरगा य जहा वेदियाण पढमसमइयाण, तहेव कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । सेस जहा वेदियाण पढमसमइयाण जाव अणतखुत्तो, नवरं—इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुसगवेदगा वा, सण्णिणो नो असण्णिणो, सेसं तहेव । एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्व ।
७. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
८. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव, पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा । चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो ॥
९. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

वितियं सण्णिपचिंदियमहाजुम्मसत्तं

१०. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिदिया णं भते ! कओ उववज्जति०? तहेव पढमुद्देसओ सण्णिणं, नवरं—बंध-वेद-उदइ-उदीरण-लेस्स-वधग-सण्ण^१-कसाय-वेदबधगा य एयाणि जहा वेदियाणं । कण्हलेस्साण वेदो ति विहो, अवेदगा नत्थि । सचिट्टणा जहण्णेणं एकं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइ अंतो-मुहुत्तमब्भहियाइं । एवं ठिती वि, नवरं—ठितीए अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं न

१. सव्वपाणा (अ, क, ख, ता, ब, स) ।

२. सण्णि (ता); सण्णा (म, स) ।

भण्णंति । सेसं जहा एएसि चेव पढमे उद्देसए जाव अणतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

११. सेव भते । सेव भते । त्ति ॥

१२. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया णं भंते । कओ उव-
वज्जति०? जहा सण्णिपंचिदियपढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं, नवरं—

१३. ते ण भते । जीवा कण्हलेस्सा ?

हता कण्हलेस्सा, सेस त चेव । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

१४. सेव भंते । सेव भते । त्ति ॥

१५. एव एए वि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्ससए । पढम-ततिय-पचमा सरिसगमा,
सेसा अट्ठ वि सरिसगमा ॥

१६. सेव भते । सेव भते । त्ति ॥

३-१४ सण्णिमहाजुम्मसताइं

१७. एव नीललेस्सेसु वि सतं, नवरं—सच्चिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं
दस सागरोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जइभागमव्वहियाइ । एव ठिती वि ।
एव तिसु उद्देसएसु^१, सेस त चेव ॥

१८. सेव भंते । सेव भते । त्ति ॥

१९. एव काउलेस्ससत पि, नवरं—सच्चिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण तिण्णि
सागरोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जइभागमव्वहियाइ । एव ठितीवि । एव
तिसु वि उद्देसएसु, सेस तं चेव ॥

२०. सेव भते । सेव भंते । त्ति ॥

२१. एव तेउलेस्सेसु वि सत, नवरं—सच्चिट्ठणा जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण दो
सागरोवमाइ पलिओवमस्स असखेज्जइभागमव्वहियाइ । एव ठितीवि, नवर
—नोसण्णोवउत्ता वा । एव तिसु वि उद्देसएसु^१, सेस त चेव ॥

२२. सेव भते । सेव भंते । त्ति ॥

२३. जहा तेउलेस्ससत तथा पम्हलेस्ससत पि, नवरं—सच्चिट्ठणा जहण्णेण एक्क,
समय, उक्कोसेण दस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तमव्वहियाइ । एवं ठितीवि
नवरं—अतोमुहुत्तं न भण्णति, सेस त चेव । एव एएसु पचसु सतेसु जहा कण्ह-
लेस्ससते गमओ तथा नेयव्वो जाव अणतखुत्तो ॥

१. प्रथम-तृतीय-पञ्चमेसु (वृ) ।

२. गमएसु (अ, क, ख, ता, व, म) ।

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२५. सुक्कलेस्ससत्तं जहा ओहियसत्तं, नवरं—संचिट्ठणा ठिती य जहा कण्हलेस्ससत्ते, सेसं तहेव जाव अणतखुत्तो ॥
२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
२७. भवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया ण भते ! कअो उववज्जति०? जहा पढम सण्णिसत्तं तहा नेयव्वं भवसिद्धीयाभिलावेण, नवरं—
२८. सव्वे पाणा०?
- नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं त चेव ।
२९. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
३०. कण्हलेस्सभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया णं भंते ! कअो उवव-
ज्जति०? एवं एएण अभिलावेणं जहा ओहियकण्हलेस्ससत्त ॥
३१. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३२. एव नीललेस्सभवसिद्धीए वि सत्त ॥
३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३४. एव जहा ओहियाणि सण्णिपंचिदियाणं सत्त सताणि भणियाणि, एवं भवसिद्धी-
एहि वि सत्त सताणि कायव्वाणि, नवरं—सत्तसु वि सत्तेसु सव्वे पाणा जाव
नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस तं चेव ॥
३५. सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१५-२१ सण्णिमहाजुम्मसताइं

३६. अभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया णं भंते ! कअो उववज्जति०? उववाअो तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो । परिमाण अवहारो उच्चत्त बधो वेदो वेदण उदअो उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससत्ते । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, एवं जहा कण्हलेस्ससत्ते, नवरं—नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । संचिट्ठणा ठिती य जहा ओहिउहेसए । समुग्धाया आदिल्लगा पच । उव्वट्ठणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस जहा कण्ह-
लेस्ससत्ते जाव अणतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ।
३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

- ३८ पढमसमयअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिदिया ण भंत ! कओ उवव-
ज्जति० ? जहा सण्णीण पढमसमयउद्देसए तहेव, नवरं—सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं
नाण च सव्वत्थ नत्थि, सेस तहेव ॥
- ३९ सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
- ४० एव एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढम-तइय-पचमा एक्कगमा, सेसा
अट्ट वि एक्कगमा ॥
- ४१ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
- ४२ कण्हलेस्सअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिदिया ण भते ! कओ उव-
वज्जति० ? जहा एएसि चेव ओहियसत तहा कण्हलेस्ससय पि, नवरं—
- ४३ ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हता कण्हलेस्सा । ठिती, सच्चिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससते, सेस त चेव ॥
- ४४ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
- ४५ एव छहि वि लेस्साहि छ सता कायव्वा जहा कण्हलेस्ससत्तं, नवरं—सच्चिट्ठणा
ठिती य जहेव ओहियसते तहेव भाणियव्वा, नवर—सुक्कलेस्साए उक्कोसेण
इक्कतीसं सागरोवमाइं अतोमुहुत्तमवभहियाइ । ठिती एव चेव, नवर—अतो-
मुहुत्त नत्थि जहण्णग तहेव सव्वत्थ सम्मत्त-नाणाणि नत्थि । विरई विरया-
विरई अणुत्तरविमाणोववत्ति—एयाणि नत्थि । सव्वे पाणा० ? नो तिण्ठे समट्ठे ॥
- ४६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥
- ४७ एव एयाणि सत्त अभवसिद्धीयमहाजुम्मसताइं भवति ।
- ४८ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
- ४९ एव एयाणि एक्कवीस सण्णिमहाजुम्मसताणि । सव्वाणि वि एकासीतिमहा-
जुम्मसताइ ॥

एगचत्तालीसतिमं सतं

पहमो उद्देशो

रासीजुम्म-नेरइयादीणं उववायादि-पदं

१. कति णं भंते ! रासीजुम्मा पणत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि रासीजुम्मा पणत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि रासीजुम्मा पणत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?

गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, सेत्तं रासीजुम्मकडजुम्मे । एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं एगपज्जवसिए, सेत्तं रासीजुम्मकलियोगे । से तेणट्ठेण जाव कलियोगे ॥

३. रासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ जहा^१ वक्कंतीए ॥

४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जति ?

गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा वारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा किं संतरं^२ उववज्जति ? निरंतरं उववज्जति ?

गोयमा ! संतरं पि उववज्जति, निरंतरं पि उववज्जति । संतरं उववज्जमाणा जहण्णेण एक्कं समयं, उक्कोसेण असखेज्जे समए अतरं कट्ठु उववज्जति । निरंतरं उववज्जमाणा जहण्णेणं दो समयया, उक्कोसेण असखेज्जा समयया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जति ॥

६. ते णं भंते ! जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ? जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा ?

नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

७. जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा त समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥
८. जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ? जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥
९. ते णं भंते ! जीवा कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, एवं जहा उववायसते जाव' नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥
१०. ते णं भंते ! जीवा किं आयजमेण उववज्जति ? आयजसेण उववज्जति ?
गोयमा ! नो आयजसेण उववज्जति, आयजसेण उववज्जति ॥
११. जइ आयजसेण उववज्जति—किं आयजसं उवजीवति ? आयजस उव-
जीवति ?
गोयमा ! नो आयजसं उवजीवति, आयजसं उवजीवति ॥
१२. जइ आयजसं उवजीवति—किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥
१३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥
१४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥
१५. रासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जति ? जहेव नेरतिया
तहेव निरवसेस । एव जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिया, नवरं—वणस्सइकाइया
जाव असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस एवं चेव । मणुस्सा वि एवं
चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जति, आयजसेण उववज्जति ॥
१६. जइ आयजसेण उववज्जति—किं आयजसं उवजीवति ? आयजसं उव-
जीवति ?
गोयमा ! आयजस पि उवजीवति, आयजसं पि उवजीवति ॥
१७. जइ आयजस उवजीवति किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा वि अलेस्सा वि ॥
१८. जइ अलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा नो सकिरिया, अकिरिया ॥
१९. जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

२०. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥
२१. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥
२२. जइ आयअजसं उवजीवंति किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥
२३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥
२४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ॥
२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

२६. रासीजुम्मतेओयनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो, नवरं—परिमाणं तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । संतरं तहेव ॥
२७. ते णं भंते ! जीवा जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥
२८. जं समयं तेयोगा तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा तं समयं तेयोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं कलियोगेण वि समं, सेस तं चेव जाव वेमाणिया नवरं—
उववाओ सव्वेसि जहा^१ वक्कंतीए ॥
२९. सेवं भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

तद्ग्रो उद्देशो

३०. रासीजुम्मदावरजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देशओ,
नवरं—परिमाण दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति,
सवेहो ॥
३१. ते णं भते ! जीवा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कड-
जुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एवं तैयोएण वि समं, एवं कलियोगेण वि समं, सेस जहा
पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥
३२. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देशो

३३. रासीजुम्मकलिओगेनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—
परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा उवव-
ज्जंति, संवेहो ॥
३४. ते णं भते ! जीवा जं समयं कलियोगा त समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा
तं समयं कलियोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं तैयोएण वि समं, एवं दावरजुम्मेण वि समं, सेसं जहा
पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥
३५. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

५-२८ उद्देशः

३६. कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ
जहा धूमप्पभाए, सेस जहा पढमुद्देसए । असुरकुमारणं तहेव, एवं जाव वाणमंत-
राणं । मणुस्साण वि जहेव नेरइयाण आयब्जसं उवजीवंति । अलेस्सा, अकि-
रिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति एवं न भाणियब्वं, सेसं जहा पढमुद्देसए ॥
३७. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
३८. कण्हलेस्सतैयोएहि वि एवं चेव उद्देशओ ॥
३९. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥
४०. कण्हलेस्सदावरजुम्मेहि एवं चेव उद्देशओ ॥
४१. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सकलिओएहि वि एवं चेव उद्देसओ । परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु ॥
४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
४४. जहा कण्हलेस्सेहि एवं नीललेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा वालुयप्पभाए, सेसं तं चेवं ॥
४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
४६. काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए, सेसं तं चेवं ॥
४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
४८. तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेवं, नवरं—जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वा' । एवं एए वि कण्हलेस्सा-सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥
४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
५०. एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा । पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं भणुस्साणं वेमाणियाणं य एएसि पम्हलेस्सा, सेसाणं नत्थि ॥
५१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
५२. जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—भणुस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु, सेसं तं चेवं । एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा, ओहिया चत्तारि, सव्वे ते अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥
५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२६-५६ उद्देसा

५४. भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं, एए चत्तारि उद्देसगा ॥
५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
५६. कण्हलेस्स भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ।
५७. एवं नीललेस्स भवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

५८. एव काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
 ५९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ॥
 ६०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
 ६१. सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा । एवं एए वि भवसिद्धिएहि
 वि अट्ठावीस उद्देसगा भवति ॥
 ६२. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

५७-८४ उद्देसा

६३. अभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? जहा
 पढमो उद्देसगो, नवरं—मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा, सेसं तहेव ॥
 ६४. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
 ६५. एव चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ॥
 ६६. कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ?
 एव चैव चत्तारि उद्देसगा ॥
 ६७. एव नीललेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा ।
 ६८. काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
 ६९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
 ७०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
 ७१. सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा । एवं एएसु अट्ठावीसाए वि
 अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा ॥
 ७२. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

८५-११२ उद्देसा

७३. सम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा
 पढमो उद्देसओ । एव चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा
 कायव्वा ॥
 ७४. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ॥
 ७५. कण्हलेस्ससम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एए
 वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा । एव सम्मदिट्ठीसु वि भव-
 सिद्धियसरिसा अट्ठावीस उद्देसगा कायव्वा ॥
 ७६. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

११३-१४० उद्देसा

७७. मिच्छादिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठिअभिलावेण अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ।
 ७८. सेवं भते । सेवं भते ! त्ति ॥

१४१-१६८ उद्देसा

७९. कण्हपक्खयरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं भते ! कओ उववज्जति० ? एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥
 ८०. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१६९-१८६ उद्देसा

८१. सुक्कपक्खयरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जति० ? एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवति । एव एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवति रासीजुम्मसय जाव सुक्कलेस्ससुक्कपक्खयरासीजुम्मकलि-योगेवेमाणिया जाव—
 ८२. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
 नो इणट्ठे समट्ठे ॥
 ८३. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥
 ८४. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भते ! तहमेयं भते ! अवितहमेयं भते ! असदिद्धमेयं भते ! इच्छियमेयं भते ! पडिच्छियमेयं भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भते ! सच्चे ण एसमट्ठे, जे णं तुव्वे वदह त्ति कट्ठु अपुव्ववयणां खलु अरहता भगवंतो, समणं भगवं महावीरं वंदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

॥ इति भगवई समत्ता ॥

ग्रंथाग्र

कुलगाथा १६३१६ अक्षर १६

कुल अक्षर ६१८२२४

परिसेसो

सव्वाए भगवईए अट्ठतीस सतं सयाणं (१३८), उद्देसगाणं एगूणविसतिसताणो पचविसइअहियाणी (१६२५) ।

सगहणी-गाहा

चुलसीइ सयसहस्सा, पदाण पवरवरनाणदसीहिं ।
भावाभावमणता, पणत्ता एत्थमंगम्मि ॥ १ ॥
तवनियमविणयवेलो, जयति सदा नाणविमलविपुलजलो ।
हेतुसतविपुलवेगो, सचसमुद्दो गुणविसालो ॥ २ ॥

पोत्थयलेहगकया नमोवकारा

णमो गोयमार्इण गणहराणं, णमो भगवईए विवाहपण्णत्तीए, णमो दुवालसंगस्स गणिपिडगस्स ॥

कुम्मसुसठियचलणा, अमलियकोरेंटवेटसंकासा ।
सुयवेवया भगवई, भम भतितिमिर पणासेउ ॥१॥

उद्देस-विधि

पण्णत्तीए आइमाण अट्ठह सयाण दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति, नवर—चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति । नवमाओ सताओ आरद्ध जावइय-जावइय ठवेति तावतिय-तावतिय^१ उद्दिसिज्जति, उक्कोसेण सत पि एगदिवसेण, मज्झिमेण दोहि दिवसेहिं सत, जहण्णेण तिहिं दिवसेहिं सत । एव जाव वीसतिमं सत, नवरं—गोसालो एगदिवसेण उद्दिसिज्जति, जदि ठियो एगेण चेव आयबिलेणं अणुण्णवति^२ । अहण्ण ठितो आयबिलेण छट्ठेण अणुण्णवति । एक्कवीस-बावीस-तेवीसतिमाइ सताहं एक्केक्कदिवसेण उद्दिसिज्जति । चउवीसतिमं सत दोहि दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा । पचवीसतिम दोहि दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा । बंधिसयाइ अट्ठसयाइ एगेणं दिवसेण, सेढिसयाइ बारस एगेण, एगिदियमहाजुम्मसयाइं बारस एगेणं, एव वेदियाणं बारस, तेदियाण बारस, चउरिदियाणं बारस एगेण, असण्णि-

१. ° तिय एगदिवसेण (ख, स) ।

२. अणुण्णच्चति (ता, स); अणुण्णज्जति (अ, ब)

पंचिदियाणं बारस, सण्णपंचिदियमहाजुम्मसयाइं एक्कवीसं एगदिवसेणं
उद्दिसिज्जंति, रासीजुम्मसतं एगदिवसेण उद्दिसिज्जति ॥

गाहातिगं

केषुचिदादर्शेषु पुस्तकलेखककृता अन्यापि गाथात्रयी लभ्यते—

वियसियअरविदकरा, नासियतिमिरा सुयाहिया देवी ।
मज्झं पि देउ मेहं, बुहविबुहणमसिया णिच्चं ॥१॥
सुयदेवयाए पणमिमो, जीए पसाएण सिक्खियं नाणं ।
अण्णं पवयणदेवि, संतिकारि तं नमंसांमि ॥२॥
सुयदेवया य जक्खो, कुभघरो वंभसंतिवेरोट्टा ।
विज्जा य अंतहुंडी, देउ अविग्घं लिहंतस्स ॥३॥

परिशिष्ट :



परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिय जाव पव्वइत्तए	१८१४७	६१६७
अवकूणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्म	१५१२६	१५१२०
अकततरिय जाव अमणामतरियं	१६१३५	११२२४
अकता जाव अमणामा	७१११६	११३५७
अकिट्ठे जाव विहरामि	३१२२६	३१२२६
अगामियाए जाव अडवीए	१५१८७	१५१८६
अगामियाए जाव सम्मवो	१५१८८	१५१८६
अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे	६११७६	६११७६
अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे	१४४४२	११११
अच्चासाइए जाव तं	३१२२६	३१२२६
अच्छे जाव पडिरूवे	२१११८	वृत्ति
अजीवदव्वदेसे जाव अण्णतभागूणे	११११०८	११११०८
अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स	११११०८	२११४
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ	३११३१	२१३१
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	२१६७; ३१३३, ३६, ११२, ११५, ११६, ५१८५; ६११५८, २२८; १११५६, ७२, ८५, १८८; १२१६; १३११०३; १०६, ११६; १५१५३, ७५; १२८, १२६, १४१, १४८	२१३१
अज्झत्थिय जाव समुप्पन्न	१३११०४	२१३१
अट्ठं जाव जाणामो	१४२४	१४२३
अट्ठं वा जाव वागरण	५११०४	५११०४
अट्ठं वा जाव वागरेइ	५११०५	५११०४

अट्टाई जाव वागरणाई	१८२०५	५।१०४
अट्टे जाव विउसग्गस्स	१।४२६	१।४२३
अणंतपएसिय जाव पासइ	१४।१५४	१४।१५४
अणंताओ जाव आवलियाए	८।३६६	८।३८४
अणवदग्ग जाव ससार०	१५।१८७	१५।१८७
अणवदग्गे जाव संसार०	१६।६१	१।४५
अणालोइय जाव नत्थि	१०।२०	१०।१६
अणिंदा जाव ठिठि०	३।४०	३।३८
अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स	१६।४६	३।३३
अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे	१५।१७७	३।३३
अणिट्ठ जाव अमणामं	३।११३; १।४।०	१।३५७
अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा	७।११६	१।३५७
अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार०	१४।१४४	१।१४६
अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे	१३।१२	वृत्ति
अणुत्तरे जाव केवल०	१६।६१	६।४६
० अणुत्तरोववाइय जाव उव०	१२।१८८	१२।१८८
० अणुत्तरोववातिय जाव देव०	१६।७७	१६।७७
अणेगगणणायग जाव संपरिवुडे	१३।११४	७।१६६
अणेगगणणायग जाव दूय	७।१६६	ओ० सु० ६३
अणेग जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव पच्चायाहिंति	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसयसइ जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसयसइस्स जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणमण्णपुट्टाई जाव घट्ठाए	११।७८, ७६	वृत्ति
अणमण्णपुट्टा जाव अणमण्ण०	११।१११	११।७८
अतुरिय जाव जेणेव	१५।१५३	२।१०८
अतुरिय जाव सोहेमाणे	२।११०	२।१०८
अतुरियमचवल जाव गईए	११।१३५, १४४	११।१३३
अत्थमण जाव दीसंति	८।३३१	८।३२६
अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं	८।३३१	८।३३०
अत्थमे जाव अधारणिज्ज०	७।२०४	७।२०३

अत्येगतिए जाव नो	६।३१	६।३१
अत्येगतिए जाव नो	६।३१	६।३१
अत्येगतियाणं जाव साहू	१२।५४	१२।५३
अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए	१२।५४	१०।११४
अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए	३।१४८	३।१४५
अवम्मत्थिकाए एव चेव नवर गुणओ ठाणगुणे	२।१२६	२।१२५
अवम्मत्थिकाए जाव पोम्मलत्थिकाए	१३।५५	२।१२४
अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण ^०	३।११३	३।१०६
अप्पकोहे जाव अप्पलोभे	२५।५६८	ओ० सू० ३३
अप्पणो जाव पासइ	१४।१२३	१४।१२३
अन्मुगयाओ जाव पडिरूवाओ	१५।८८	१५।८७
अभिवक्खण जाव अजलिकम्म	१५।१२१	१५।१२०
अभिमुहा जाव पज्जुवासत्ति	५।८४	१।१०
अभिहणमाणा जाव उह्वेमाणा	८।२८७	८।२८७
अमापत्त जाव पसत्थ	१।४१८	१।४१८
अमुच्छिण जाव अणज्झोवबन्ने	१५।१६२	७।२३
अमुच्छिण जाव आहारे	१४।८३	१४।८२
अमुच्छिण जाव आहारेइ	७।२३	७।२२
अम्मताओ जाव पव्वइत्तए	६।१७४	६।१६७
अम्मेहि जाव पव्वइहिसि	६।१७७	६।१६६
अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवइ	१६।७	१६।७
अयमेयारूवे जाव परुण्णे	१५।१५२	१५।१४८
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१२।१५; १६।५५; १८।२०५	२।३१
अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे	६।२४३	६।२४०
अवण्णे जाव अरूवी	२।१२८	२।१२५
अवसेसं जहा सिवस्स जाव सब्ब-		
दुक्खप्पहीणे नवर—तिदड-कुडियं		
जाव धाउरत्तवत्थपरिहिण परि-		
वडियविग्गणे आलमिय नगारि		
मज्झमज्झेण निग्गच्छति जाव		
उत्तरपुरत्थिमं दिसीभार्ग अवक्क-		
मत्ति, अवक्कमिक्का तिदंडकुडियं च		
जहा खदओ जाव पव्वइओ सेसं		
जहा सिवस्स जाव	११।१६३-१६७	११।८३-८८

असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जति	२४।५४	२४।५४
असणं जाव उवक्खडावेति	१८।४८	३।३३
असणं जाव उवक्खडावेह	१८।४७	३।३३
असणं जाव साइम	१२।१२	१२।४
असणं ४ जाव विहरह	१२।१४	१२।४
असणं जाव विहरिस्सामो	१२।१८	१२।४
असदपरिणए जहा एगगुणकालए	५।१७४	५।१७२
असयं जाव उववज्जति	६।१३२	६।१३२
असुरकुमारराया जाव विहरित्तए	१०।६८	१०।६७
असुरकुमारा जाव उववज्जति	६।१२६	६।१२८
असुरकुमारा जाव उववज्जति	६।१३०	६।१३०
असोगवडसेए जाव मज्जे	१०।६६	३।२४६
अस्संजए जाव देवे०	१।५०	१।४८
अस्संजत जाव पावकम्मो	१७।२१	१७।१६
अस्संजय जाव एगंत०	१८।१६५	८।२७३
अस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स	१२।१३	१२।६
अस्साएमाणा जाव पडिजागरमाणा	१२।१२	१२।४
अस्साएमाणा जाव विहरह	१२।१३	१२।४
अहापडिल्लं जाव विहरइ	६।१३६, १५७; ११।८५; १६।५५;	
	१८।२०५	२।३०
अहिगरणियाए जाव पाणा०	१।३७२	१।३६५
अहेलोग जाव समोहणित्ता	३४।१६	३४।१४
आउक्खएणं जाव कर्हि	३।५३, ७५; ६।२४४	२।७३
आउक्खएण जाव चइत्ता	१५।१०१	२।७३
आउक्खएण जाव महाविदेहे	१६।७४	२।७३
आओसइ जाव सुहमत्थि	१५।१०६	१५।१०३
आगयपण्हया जाव समूसविय०	६।१४८	६।१४७
आगासत्थिकाए वि एवं चेव नवरं		
खेत्तओ णं आगासत्थिकाए लोया-		
लोयप्पमाणमेत्ते अणते चेव जाव		
गुणओ	२।१२७	२।१२५
आगासपदेसेसु जाव चिट्ठति	५।१११	५।११०
आघवेति जाव उवदसेति	१६।६१	१६।६१

आढति जाव पञ्जुवासति	३।५१	३।३३
आढाइ जाव तुसिणीए	६।२१६	६।२१७
आणदा जाव करेत्तए	१५।६८	१५।६८
आणा जाव चिट्ठति	३।२५७	३।२५२
आवाह वा जाव करेति	११।११२	११।१११
आभियवोहियनाणविणए जाव केवल०	२५।५८३	ओ० सू० ४०
आयारभा जाव अणारभा	१।३४	१।३३
आयारो जाव दिट्ठिवाओ	२०।७५	स० पङ्कणगस० ८८
आरंभिया जाव भिच्छा०	१।७१, ८०	१।७१
आराहेत्ता जाव सव्व०	६।१५१	१।४३३
आहेत्ता त चेव सव्व अविसेसित		
नेयव्व जाव आलोइय	२।७१	२।६८, ६९
आलभियाए नगरीए एवं एएणं		
अमिलावेण जहा सिक्खस्स त चेव जाव से	११।१८६	११।७३
आलोइय जाव कालं	१८।५३	३।१७
आलोएस्सामि जाव पडिबज्जिस्सामि	१०।२०	८।२५१
आसइत्तए वा जाव तुयट्ठित्तए	१७।२०	७।२१६
आसि जाव णिच्चे	२।१२८, १२९	२।१२५
आसी जाव निच्चे	२।४६	२।४५
आसुख्त जाव मिसि०	१५।११६	३।४५
आसुख्ते जाव मिसि०	७।२०१, २०२; १५।६४, ८०,	
	६४, ११८, १७६, १८३	३।४५
आसुख्ते जाव मिसिमिसेमाण	३।११३	३।४५
आहेवच्च जाव कारेमाणे	१८।४०	३।४
आहेवच्च जाव विहरइ	१८।२०४	ना० १।५।६
इरियासमितस्स जाव गुत्तवमयारिस्स	३।१४८	२।५५
इसि जाव धम्मकहा	६।१६३	ओ० सू० ७१
इसिपरिसाए जाव	६।१४६	ओ० सू० ७१
इहमागए जाव दूतिपलासए	१८।२०५	२।३०
उक्किट्ठाए जाव जेणेव	३।११२	३।३८
उक्किट्ठाए जाव तिरिय	३।११२	३।३८
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	११।१०६, ११०	३।३८
उक्कोसकाल जाव उव्वट्ठित्ता	१५।१८६	१५।१८६

उक्कोसकालद्विद्वयंसि जाव उव्वट्टित्ता	१५।१८६	१५।१८६
उक्कोसकालद्वितीएसु जाव उव्वज्जित्तए	२४।७६	२४।३१
उक्खित्ते जाव रत्ते	८।२५५	८।२५५
उत्तमण जाव उच्चत्तेणं	८।३३०	८।३३०
उच्चारपासवण जाव परिट्ठावणिया०	२०।१५	२०।१४
उज्जले जाव दुरहियासे	१५।१४६	१।२२४
उट्ठाणे जाव परक्कमे	१।३७८; १७।३०	१।१४६
उड्डंजाणू जाव विहरइ	५।८५; १०।४३; १८।१६४	१।६
उत्तर जाव राई	५।७	५।६
उत्तरिल्लं जाव गच्छति	१६।११६	१६।११६
उदएणं जाव पयोग०	८।४२१	८।४२०
उदगविदु जाव हंता	६।४	६।४
उदगरयणे जाव तच्चाए	१५।६२	१५।६१
उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे	१।२२८	१।११
उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए	१७।३०	१२।१०६
उप्पत्तिया जाव पारिणामिया	२०।२०	१२।१०६
उप्पन्नानाणदंसणधरा जाव सव्व०	१२।१६७	२।३८
उप्पन्नानाणदंसणधरे जाव समोसरण	२।२२	वृत्ति
उप्पन्नानाणदंसणधरे जाव सव्वण्णू	१५।१२६	वृत्ति
उप्पाडेज्जा जाव केवल	१।३१	१।२३, २५
उब्भिज्जमाणाय वा जाव ठाणाओ	१६।१०६	वृत्ति
उम्मुक्कवालभावे जाव रज्जवई	११।१४२	११।१३४
उव्वट्टवेह जाव उव्वट्टवेति जाव पच्चप्पिणति	१२।३५, ३६	१।१६०, १६१
उव्वट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणति	११।१३७	११।१३६
उव्वज्जिहिंति जाव उव्वट्टित्ता	१५।१८६	१५।१८६
उव्वज्जिहिंति जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
उवागच्छइ जाव नमसित्ता जाव एवं	१४।१३२	१।१०
उवागच्छित्ता जाव एयंतमंते	१५।७३	१५।५६
उवागच्छित्ता जाव दुरूढा	१२।३७	१।१४४
उवागच्छित्ता जाव नमसित्ता	१६।५४	२।५७
उवागच्छित्ता जाव विहरइ	१३।१०१	१।७
उसभ जाव भत्तिचित्तं	११।१३८	ओ० सू० १३
उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाए वि निसिरणयाए		
वि नो दहणयाए चउहिं, जे भविए उस्सवणयाए		

वि निसिरण्याए वि दहण्याए वि ताव च ण से

पुरिसे काइयाए जाव पचहि ११३६७ ११३६५

एक्केण वा जाव उक्कोसेण २०१११८ २०११८

एगळ्वं जाव हंता ७११६८ ७११६७

एगवण्णाइ आणमति वा पाणमंति वा ऊससति

वा नीससति वा आहारमो नेयव्वो जाव पचदिसि २१४,५ ५० २८१

एगिंदिय जाव परिणए ८५१ ८५१

एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा २११३६ २११३६

एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा २११३६ २११३६

एगिंदियपयोगपरिणया जाव पचिंदिय० ८२ २११३६

एतेण अभिलावेणं चत्तारि भया ३१५६ ३१५४

एतो आढलं जहा जीवाभियमे जाव से ६११५६-१५६ वृत्ति; जी. ३

एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवरं अणुदिण्ण
उवसामेइ सेसापडिसेहेयव्वा निण्णि । ज त भते !

अणुदिण्ण उवसामेइ तं किं उट्टाणेण जाव

पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा । से नूणं भते ! अप्पणा

चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि मच्चेव

परिवाडी, नवरं उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण

वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ।

से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प०

एत्थ वि, सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअण-

तरपच्छाकड कम्म निज्जरेइ एव जाव

परक्कमेइ वा १११५१-१६२ १११४७-१५०

एमहिड्डीए जाव एमहाणुभागे ३१४ ३१४

एयति जाव अते ३१४८ ३१४४

एयति जाव त ३१४३ ३१४३

एयति जाव नो ३१४६-१४८ ३१४३

एयति जाव परिणमइ ३१४५ ३१४३

एयाणि वि तहेव नवर सत्त

संवच्छराइ सेस त चेव ६१३१ ६१२६

एव अगणिकायस्स मज्झमज्जेण तहि नवरं

भियाएज्ज भाणियव्व । एव पुक्खलसंबट्टगस्स

महामेहस्स मज्झमज्जेणं तहि उत्ते सिया ।

एवं गंगाए महाणदीए पडिसीयं हृव्वमागच्छेज्जा
तहिं विणिहायमावज्जेज्जा । उदगावत्तं वा
उदगविदुं वा ओगाहेज्जा से णं तत्थ

परियावज्जेज्जा

५।१५७-१५६

५।१५४-१५६

एव अणागयमणंतं पि

१४।४६

१४।४५

एव अधम्मत्थिकाए लोयाकासे जीवत्थिकाए

पोगलत्थिकाए पंच वि एक्कामिलावा

२।१४२-१४५

२।१४१

एवं अधम्मत्थिकायस्स वि

११।१०४

११।१०४

एव अप्पाबहुगाणि तिणिण वि जहा पढमित्थए

दंडए, नवरं—सव्वत्थोवा पंचिदियतिरिक्खजोणिया

देसमूलगुणपच्चक्खाणी अपच्चक्खाणी असस्सेज्जगुणा

७।५०,५१

७।४१,४२

एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो

परप्पयोगेण उस्सिओदयं वा गच्छइ पयोदयं

वा गच्छइ

३।२१३-२१५

३।२१२

एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं

जंबुद्वीवप्पमाणमेत्त बोदि विसेणं विसपरिगयं

सेसं तं चेव जाव करिस्संति

८।६०

८।८८

एव एएणं अभिलावेणं उदयते, पोयते छिहते

दूसतं छायते आयवत्तं जाव नियमा

१।२७३-२७५

१।२७२

एवं एएणं अभिलावेणं जहा अजीवपज्जवा जाव से

२५।११-१४

५०-५

एव एएणं कमेण जहेव खंदओ तहेव पव्वइओ

६।१५०,१५१

२।५२,५३

एव एककेक्कं सचारंतेण जाव अहवा

१२।७७

१२।७७

एव एककेक्कं सचारंतेहिं जाव अहवा

१२।७६

१२।७६

एव एककेक्कं पुच्छा । सचित्ते वि काये, अचित्ते

वि काये जीवे वि काये अजीवे वि काये जीवाण

वि काये अजीवाण वि काये

१३।१२८

१३।१२४

एव कालओ वि, एवं भावओ वि

८।१८४

८।१८४

एवं किं मूलं पासइ कंदं पासइ ? षट्ठमंगो

३।१५८

३।१५४

एव खवेण वि तिणिण आलावगा एव जीवेण

वि तिणिण आलावगा माणियव्वा

१।१६४-१६६

१।१६१-१६३

एवं खेतओ कालओ

८।१६०

८।१६०

एवं खेतओ वि, कालओ वि

८।१८५

८।१८५

एवं चक्खिदियवसट्ठे वि एवं जाव फाग्गिदिय-

वसट्ठे वि जाव अणुपरियट्ठइ

१।२।६०-६३

१।२।५६

एवं चरित्तावरणिज्जाणं जयणावरणिज्जाणं
अज्झवसाणावरणिज्जाणं आभिणिबोहिअनाणा-
वरणिज्जाणं जाव मणपज्जव०

एवं चेव	६।३२	६।३२, ३१
एवं चेव	३।१५५	३।१५४
एवं चेव	६।१	६।१
एवं चेव	८।४५६	८।४५८
एवं चेव	६।२५५	६।२५४
एवं चेव	११।८०	११।७८
एवं चेव	१२।१३०	१२।१३०
एवं चेव	१२।१४८	१२।१४७
एवं चेव	१४।२	१४।१
एवं चेव	१६।८१	१६।८१
एवं चेव	१८।१७५	१८।१७४
एवं चेव एवं छाया एवं लेस्ता	१४।१३३-१३५	१४।१३२
एवं चेव एवं मज्झिमिअं चरित्ताराहणं पि एवं चेव, एवं मायवसट्ठेवि, लोभवसट्ठेवि जाव अणुपरियट्ठ	८।४६२, ४६३	८।४६१
एवं चेव जहा छउमत्ये जाव महा०	१२।२३-२५	१२।२२
एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महा०	७।१४७	७।१४६
एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महा०	७।१४६	७।१४८
एवं चेव जाव	१८।५६	१८।५७
एवं चेव जाव अफासा	१२।११०	१२।१०८
एवं चेव जाव अफासे	१२।११२	१२।१०८
एवं चेव जाव एवं	१२।८५	१२।८४
एवं चेव जाव बिसरीरेसु	१२।१५७	१२।१५४
एवं चेव जाव वत्तव्वं	१२।१६०	१२।१५६
एवं चेव तिविहा वि, एवं चरित्ताहणा वि	८।४५३, ४५४	८।४५२
एवं चेव नवर अत्येगतिए	८।४६०	८।४५८
एवं चेव नवर—कैवलनाणावरणिज्जाणं खए भाणियव्वे, सेसं त चेव	६।२६, ३०	६।२१, २२
एवं चेव नवर तिरिक्खजोणियदव्वे भाणियव्वं सेस तं चेव एवं जाव देवदव्वेयणा	१७।४०	१७।४०
एवं चेव वित्तिओ वि आलावगो नवर परियातिइत्ता पभू	३।१८६	३।१८८
एवं छत्ते जम्मे दंढे दूसे आउहे मोदए	२।१३३	२।१३३

एवं जहा अट्टमसए ततिए उहेसए जाव नो	१८१४६	८१२२३
एवं जहा अट्टारसमसए छट्टुहेसए जाव सिय	२०१२७	१८११२
एव जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल०	६१६६-६८	६१४४-४६
एव जहा आभिणित्रोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया		
तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा नवरं—सुयनाणा-		
वरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वा । एवं चेव		
केवलं ओहिनाणं भाणियव्व, नवर—ओहिनाणावर-		
णिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे । एव केवल		
मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा नवरं—मणपज्जवनाणाव-		
रणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वो	६१२३-२८	६१२१,२२
एवं जहा इंदादिसा तहेव निरवसेस भाणियव्व		
जाव अट्टासमए	११११००	१०१५
एव जहा इंदियउहेसए पढमे जाव वेमाणिया		
जाव तत्थ य जे ते उवत्ता ते जाणंति, पासंति,		
आहरति । से तेणट्टेणं निक्खेवो भाणियव्वो	१८१६६-७१	५० ४
एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पंचहिं		
पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव	६१२१४,२१५	६११५०,१५१
एव जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव	१४११०-११२	ओ० सू० ११८-१२०
एव जहा ओववाइए कूणिओ जाव निगच्छइ	६१२०६	ओ० सू० ६६
एव जहा ओववाइए जाव आराहगा	१४११०७-१०६	ओ० सू० ११५-११७
एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्व		
जाव आलोय	६१२०४	ओ० सू० ६४
एव जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व		
जाव सव्व०	६११३३-१३५	११४३१-४३३
एव जहा कोहवपट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ	१२१५६	१२१२२
एव जहा खदए जाव जओ	१५११५७	२१३८
एव जहा खदए जाव से तेणट्टेण जाव नो असरीरी	१६१३,४	२१११,१२
एवं जहा खदओ जाव एय	७१२०३	२१६८
एवं जहा छट्टसए जाव नो	१६१५२	६१४
एवं जहा छट्टसए तहा अयोक्कवले वि जाव		
महापज्जवसाणा	१६१५२	६१४
एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं		
जाव जोतिसिया	१२११६८	जी० ३; भ० वृत्ति
एव जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउहेसए	१३१४५	जी० ३; भ० वृत्ति

एव जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि	१३।१६६	३।१६२
एवं जहा तइयसए पचमुद्देसए जाव नो	१३।१५०	३।१६६
एव जहा तामन्नी जाव सक्कारेइ	११।६३	३।३३
एवं जहा तित्थगग्गमायरो जाव	१६।८७	१६।८६
एव जहा तुगिउद्देसए जाव पञ्जुवासति	११।१७८	२।१८७, ओ० सू० ५२
एव जहा तेयगसरीरस्स अतरं तहेव	८।४३६	८।४१७
एव जहा तेयगस्स सच्चिट्ठणा तहेव	८।४३५	८।४१६
एव जहा दवियाया कसायाया भणिया		
तहा दवियाया जोगाया भणियब्बा	१२।२०२	१२।२०१
एवं जहा दसमसए जाव नामधेज्जेत्ति	१३।५०, ५१	१०।३, ४
एव जहा नवमसए उसमदत्तो जाव भविस्सइ	१२।३३	६।१३६
एवं जहा नाणावरणिज्ज नवर दंसणनाम		
धेत्तव्व जाव दसण०	८।४२१	८।४२०
एव जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स		
वि भाणियब्बा जाव सिणाए	२५।३५६, ३६०	२५।३५६, ३५७
एव जहा नेरइयउद्देसए जाव	१३।४६	जी० ३, भ० वृत्ति
एव जहा पच्चमसए परमाणुपोगलवत्तव्वया		
जाव अणगारेणं	१८।१६२-१६५	५।१५७
एव जहा पढमं पारणगं नवर	११।६६	११।६४
एव जहा पढमसए असवुडस्स अणगारस्स		
जाव अणुपरिमट्ठइ	१२।२२	१।४५
एव जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा		
भाणियव्व जाव अलमत्थु	७।१५६, १५७	१।२००, २०६
एव जहा पढमसए छट्ठउद्देसए जाव नो	१७।५१-५४	१।२७७-२८०
एव जहा पढमसए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्व	७।१६५	१।४३६
एव जहा बारसमसए पंचमुद्देस जाव कम्मओ	२०।२१, २२	१२।११६, १२०
एवं जहा वित्तियसए अत्थिकायउद्देसए		
जाव उवमोग	१३।५६	२।१३७
एव जहा वित्तियसए जाव तिक्किहाए	६।१४६	२।६७
एव जहा वित्तियसए नियउद्देसए जाव अट्ठमाणे	१५।६-१२	२।१०६, १०७
एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए	१८।४०	राय०सू० ६७५
एव जहा रायपसेणइज्जो चित्तो	१८।२२१	राय०सू० ६४५
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण	६।१८२	राय०सू० २७६
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव खुट्ठियं	७।१५७, १५८	राय०सू० ७७२

एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणिया तहा		
आउएण वि सम भाणियव्वं	८४८८	८४८६
एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए		
जाव से	१८१३४,१३५	७२१२,२१३
एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव		
अपरिया०	८४२२	७११४
एव जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से	१०११४	७२१
एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलस्स	११२४	५६७
एव जहा सुत्तस्स तहा दुव्वलियवत्तव्वया		
भाणियव्वा, वलियस्स जहा जागरस्स तहा		
भाणियव्व जाव सजोएत्तारो	१२१५६	१२१४
एव जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं	१११०	राय०सू०२७५
एवं जहा सूरियाभो	१६६०-६३	राय०सू०६२-६५
एवं जहेव नेरइयाण नवरं देवे	१४११६,२०	१४१७,१८
एव जहेव भासां	१३१२६	१३१२४
एव जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं		
भोयणेण पडिलाभेइ सेसं त चेव जाव चउत्थ	१५१३६-४४	१५१२५-३०
एवं जहेव विजयस्स नवरं ममं विउलाए		
खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं		
तं चेव जाव तच्चं	१५१३२-३७	१५१२५-३०
एवं जहेव विज्जाच्चारस्स नवरं तिसत्तखुत्तो	२०१८५	२०१६
एवं जहेव सव्वकस्स जाव तए	१४१२५	१४१२२
एव जाव अलोए	११११०८	११११०८
एव जाव उत्तर०	१११११०	१११११०
एवं जाव भावओ	८१८८	८१८८
एवं जाव भावओ	८१६१	८१६१
एव जाव मणपज्जवनाण	११३१	११३१
एवं जाव जोए	११११०८	११११०८
एवं जाव से	१३११५६	ओ०सू०१५०
एव जाव हुंडे	१४८१	ठा०६१३१
एवं जोगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं,		
उच्चत्त, आउयं च एयाणि सव्वाणि जहा		
असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि	११५८-६३	११३६-४१

एव तं चेव नवरं	११।७०	११।६४
एव त चेव नवर नियम सपडिक्कमे	१३।१४५	१३।१४४
एव तवे संजमे	१।४२, ४३	१।४१
एव तिण्णि वि भाणियव्वा	६।३६	६।३६
एव तिपएसिय वि, नवर सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे सिय तिचण्णे । एवं रसेसु वि, सेसं जहा दुपएसियस्स । एवं चउपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे । एव रसेसु वि, सेस त चेव । एवं पचपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एवं रसेसु वि, गंधफासा तहेव ।	१८।११३-११५	१८।११२
एव तेइदिया एव चउरिदिया	२५।२	२५।२
एअ दसणाराहुणं पि एव चरित्ताराहुण पि	८।४६५, ४६६	८।४६४
एव दरिसणावरणिज्ज पि	६।३४	६।३४
एवं वायइसड दीवं जाव हुंता	१८।१५३	१८।१५२
एव नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विअमगनाणी एएसि दसणह वि [अट्ठणह वि (अ)] संचिट्ठणा जहा कायट्ठितीए अतर सब्ब जहा जीवामिगमे अप्पावहुयाणि तिण्णि जहा बह्वत्तव्वयाए	८।१६३-२०७	प० १८, जी० १०, प० ३; म० वृत्ति ।
एव नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा । नो आयप्पयोगेण, परप्पयोगेण । उप्पिओदयं वा		
गच्छइ, पयोदय वा गच्छइ	३।१७५-१७७	३।१७४
एव पडिउच्चारेतव्व	१।३४	१।३३
एव परउत्थियवत्तव्वया नेयव्वा जाव इत्थिवेदं	२।७६	१।४२०
एवं बाहिरए पोगले परियाइत्ता पभू	३।२१०	३।२०६
एव वित्तिओ वि आलावगो नवर बाहिरए पोगले परियाइत्ता पभू	३।२४१	३।२४०
एवं वोरियायाए वि सभं	१२।२०३	१२।२०३
एव वेदणापरिणार्म	१४।४१	१४।४०
एवं सपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहा असपत्तेण	८।२५१	८।२५१
एव सवरेण वि	६।३१	६।३१

एवं संसार आउलीकरेति एवं परिस्तीकरेति
एव दीहीकरेति एव ह्मस्तीकरेति एव अणु-
परिग्रहेति एवं वीईवयति पसस्था चत्तारि
अपसस्था चत्तारि

एवं स प सु आ च पसस्थं नेयव्व

एव सव्वजीवा वि अणतखुत्तो

एवं सिणायस्स वि

एवतियं जाव करेज्जा

एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो

एवमाइक्खइ जाव एवं

एवमाइक्खति जाव एवं

एवमाइक्खति जाव परूवेति

एवमाइक्खामि जाव एवामेव

एवमाइक्खामि जाव परूवेमि

एसणिज्जं जाव साइम

ओग्गहं जाव विहरइ

ओग्गहे जाव धारणा

ओग्गहो जाव धारणा

ओभासंति जाव पभासेति

ओभासेइ जाव छद्दिंसि

ओराल जाव अतीव

ओरालि ए जाव कम्मए

ओवसमि ए जाव सन्निवाइए

ओसप्पिणी जाव समणाउसो

ओहिनाणी रुविदव्वाइं जाणइ पासइ जहा

नंदीए जाव भावओ

ओरालेणं जाव किसे

कखिए जाव कलुसं

कखियस्स जाव कलुसं

कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं—

घम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहिय-

विणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ । एवं

खलु देवाणुप्पिया ! विगलस्स अरहओ

१।३८६-३९१

३।७२

१२।१५२

२५।३५८

२४।४७,५०

७।१६३

१५।७,२७

१।४४४

१।४४२

५।१३७

१।४२१

७।२४

६।१५६

२०।२०

८।१००

७।२२६

१।२५८-२६६

२।४३

१०।८; १६।१७

१७।१६

५।२३

५।१८६

२।६६

५।२३२

११।८४

१।३८४, ३८५

३।७२

१२।१५१

२५।३५७

२४।२७

७।१६२

१।४२०

१।४२०

१।४२०

५।१३६

१।४२०

७।२२

२।३०

१२।११०

८।६८

७।२२८

वृत्ति; प०११

२।४२

८।३६६

१४।८१

५।१६

नंदी सू० २२

२।६४

२।२७

२।२७

पञ्चोप्पए धम्मघोसे तामं अणगारे सेस

त चेव जाव सो वि तहेव	११।१६४-१६६	६।१५८
कत्ते जाव किमंग	६।२१०; १३।११०	६।१६६
कदजीवफुडा जाव बीया	७।६४	ठा० १०।१५५
कडच्छुय जाव भंडगं	११।६३, ७२	११।५६
कडे जाव जे	१८।८०, ८१	७।१६०
कडे जाव निसिट्टे	१।३७१	१।३७१
कडे जाव सन्वेण	१।१२१	१।११६
कणग जाए सतसार	६।१७५, ११।१५६	३।३३
कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा	१६।१२६, १७।८३	१।१०२
कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया	१७।८४	१७।८३, १।१०२
कण्हमुत्तग जाव सुक्किल०	१६।६५	८।३६
कत्तिवण्णे जाव कत्तिफासे	२।१२६	२।१२५
कप्पे जाव उववण्णे	६।२४३	६।२४३
कम्माइं जाव महुा०	६।४	६।४
कम्मा जाव कज्जति	७।२२५	७।२२४
० कम्मा जाव पओग०	८।४२३, ४२६-४३२	८।४२०
० कम्मा जाव वंवे	८।४२२	८।४२०
कम्मे जाव सुहे	७।१६०	७।१६०
कय जाव गहिय०	६।२०२	६।२०१
कय जाव पायच्छित्ते	११।११६	२।६७
कय जाव सरीरा	११।१४०	२।६७
कयवलिकम्मे जाव विभूसिए	६।२०५	७।१७६
कयवलिकम्मे जाव सरीरे	६।१८६	२।६७
कयरे जाव विसेसाहिए वा	१।११६	१।१०८
कयरेहितो जाव अप्पावहुग जहा तेयगस्स	८।४३७	८।४१८
कयरेहितो जाव विसेसाहिया	५।१८१, २०६, ६।५२, ७।३६, ४६, १४५, ८।८४, २१२-२१४, ३८५, ४०५, ४११, ४१८, ४४७; ६।१०१, १०६, ११३, ११८, ११९; ११।११३; १२।६६, १००, ११६७, ११८, २०५; १३।६१, १६।१२७, १६।२४, २०।८, १०३, १०४, १०६-१११, १३२; २५।३, ७, ३६, १६३, १६४, १६७, २०६-२११, २३६-२३६, २४६, ३६२, ४५१, ४८८, ४८६, ५५०	१।१०८

कयाइ जाव णिच्चे	२।१२५	२।४५
करयल०	६।१४२, १६०, १८६; ११।१४०, १४७	२।६८
करयल जाव एव	६।१८८; ११।१३५, १४४	२।६८
करयल जाव कट्ठ	७।२०३; ६।१४०; ११।६१, १४३	२।६८
करयल जाव कूणियस्स	७।१७५	७०।१३६
करयल जाव जएण	६।१८२	३।१७
करयल जाव पडिसुणेत्ता	६।१८५	६।१४२
करयल जाव वढावेत्ता	६।२०१	६।१८२
करयलपरिग्गहिं	११।१६८; १५।१७४	२।६८
करेइ जाव नमंसित्ता	२।६८; ३।११२; ६।१५०	१।१०
करेइ जाव पज्जुवासइ	२।४३	१।१०
करेत्ता जाव तिबिहाए	२।६७; ६।१६२	ओ० सू० ६६
करेत्ता जाव नमंसित्ता	२।५२	१।१०
कलहे जाव मिच्छा०	१२।१०७	१।३८४
कल्लाण जाव विट्ठे	११।१४२	११।१३४
काइयाए जाव पचहिं	१।३७१; १६।११७	१।३६५
काइयाए जाव पाणाइवाय०	५।१३४	३।१३४
काइयाए जाव पारिया०	१।३७१	१।३६५
कालओ य भावओ य जहा लोयस्स तहा		
भाणियन्वा, तत्थ	२।४७	२।४५
काल जाव करेज्जा	२।४४४	२।४।२७
कालगएहिं जाव पव्वइहिंसि	६।१७३	६।१६६
कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते	१७।३५	१७।३३
० कालस्स जाव देवसंसार जाव विसेसाहिं	११।१११	१।१०३, १०८
कालाओ जाव खिप्पामेव	६।१०२	६।८५
कालोदायी जाव अण्यवेयण०	७।२२७	७।२२७
किच्चा जाव उववन्ना	१०।५६	१०।४८
किच्चा जाव कहिं	१४।१०३, १०५	१४।१०१
कुथुस्स य जाव कज्जइ	७।१६३	७।१६३
कुभकारीए जाव वीइवयामि	१५।६७	१५।८२
कूडागारसालविट्ठंतो भाणियन्वो	३।२६	राय० सू० १२३
केणट्ठेण जाव अपरिग्गहा	५।१८३	५।१८२
केणट्ठेण जाव अभक्खेया	१८।२१६	१८।२१५
केणट्ठेण जाव इओ	१।४६	१।३४, ४८

केणट्टेण जाव केवली	५।१०६	५।६७
केणट्टेण जाव रेण्हित्तए	३।११८	३।११७
केणट्टेण जाव जरा	१६।३१	१६।३०
केणट्टेण जाव ण	५।१०२	५।१०१
केणट्टेण जाव नो	१।४५	१।३४, ४४
केणट्टेण जाव नो	१।६७	१।६१
केणट्टेण जाव नो	५।७०	५।६६
केणट्टेण जाव पभू णं अणुत्त रोववाइया		
देवा जाव करेत्तए	५।१०४	५।१०३
केणट्टेण जाव परायिज्जति	१।३७४	१।३७३
केणट्टेण जाव पासइ	३।२३०	३।२२४
केणट्टेण जाव पासति	५।१०६	५।१०५
केणट्टेण जाव पासति	१४।७६	१४।७८
केणट्टेण जाव भवइ	३।१४८	३।१४७
केणट्टेण जाव वत्तव्व	२।१३७	२।१३६
केणट्टेण जाव सपराइया	७।५	७।४
केणट्टेण जाव समया	५।२४६	५।२४८
कोलट्टिमायमवि जाव उवदसेत्तए	६।१७३	६।१७१
कोहं जाव मिच्छादंसणसल्ले	१।२८६	१।३८४
खदया जाव अणता	२।४६	२।४५, ४४
खदया जाव किं अणते सिद्धे त चेव जाव इव्वओ	२।४८	२।४५, ४४
खदया पुच्छा	२।४७	२।४५, ४४
खलु जाव दव्वओ	२।४६	२।४५
खीणे जाव अत	१।४१६	१।४१६
खीरघाईओ जाव अट्ट	११।१५६	आयारचूला १५।१४
खेत्तं जाव पभासेइ	१।२५७	१।२५७
खेत्तादेसेण वि एव चेव कालादेसेण वि भावादेसेण		
वि एवं चेव	५।२०५	५।२०५
खेत्तोहिमरणे जाव भवो०	१३।१३६	१३।१३१
गगेया जाव उववज्जति	६।१२६	६।१२६
गच्छमाणस्स जाव आसत्तं	७।१२५	३।१४८
गतिनामनिहत्ता जाव अणुभाग०	६।१५२	६।१५१
गमणिज्ज जाव तहा	१।१३६	१।१३६
गय जाव सण्णाहेत्ति	७।१७५	७।१७४

गधतेए जाव विणटुतेए	१५।११६	१५।११६
गयपति वा जाव वसभर्षति	१७।६२	८।१०३
गरुयत्ताए जाव पच्चोवयमाणे	१७।७	५।१३५
गरुया जाव अग्ररुय °	१।३६७,४०८	१।३६२
गाढीकयाइं जाव नो	६।४	६।४
गामाणुगामं जाव जेणेव	१६।६७	१।७
गामाणुगामं जाव विहरमाणे	१३।१०४	१।७
गामाणु जाव विहरमाणे	१३।१०५	१।७
गाहा एव उववाएयव्वा	३१।६	५० ६
गाहावइ जाव केइ	८।२५०	८।२४८
गुणसिलाओ जाव विहरइ	१३।१००	२।५६
गुणोववेयं जाव ससि०	११।१४६	११।१३४
गेण्हमाणे जाव अदिन्नं	८।२७६	८।२७६
गेण्हमाणे जाव दिन्न	८।२८०	८।२७६
गेण्हइ जाव अदिन्नं	८।२७७	८।२७६
गेण्हइ जाव दिन्नं	८।२७६	८।२७६
गोत्तेणं जाव छट्टुछट्टेणं	१५।६	१।६, २।१०६
गोयमा जाव अघयारे	५।२३७	५।२३७
गोयमा जाव अणत्तखुत्तो	१२।१३६-१४१, १४७, १४६, १५१	१२।१३४
गोयमा जाव अत्थे	१।३५४	१।३५४
गोयमा जाव चिट्ठित्तए	१७।३३	१७।३३
गोयमा जाव न	७।७५	७।७५
गोयमा जाव न	७।७७	७।७७
गोयमा जाव नवहा	१२।७६	१२।७४
गोयमा जाव नो	८।२३५	८।२३५
गोयमा जाव पच्चायाती	२।६	२।६
गोयमा जाव परिणमइ	१।१३३	१।१३३
गोयमा जाव भोगी	७।१३६	७।१३६
गोयमा जाव समे	७।१५६	७।१५६
गोयमा जाव सव्व०	१।२०१	१।२०१
गोव्वगं जाव पडिबुद्धे	१६।६१	१६।६१
गोसालस्स जाव करेत्तए	१५।६८	१५।६८
गोसाला जाव नो	१५।१११	१५।१०४
गोसाले जाव करेत्तए	१५।६८	१५।६८

घणवाए०	११३०५	११२६७
चउक्क जाव पहेसु	६१२०८	२१३०
चउत्थ जाव विचित्तेहिं	११११६६	२१६३
चउभगो	३११५७	३११५४
चउभगो जहा छट्टसए नवमे उहेसए तहा		
इह वि भाणियव्व, नवर अणगारे इह गइं		
अ इह गते चेव पोगले परियाइत्ता विकुव्वइ,		
सेस तं चेव जाव लुक्खपोम्मलं निद्धपोम्मलत्ताए		
परिणामेत्ताए हत्ता पभू ! से भते ! कि इहगए		
पोगले परियाइत्ता जाव नो अणत्थगए पोम्मले		
परियाइत्ता विकुव्वइ	७११६६-१७२	६११६३-१६७
चंदिम जाव ताराख्वा	६११४३	६१८३
अक्केण जाव पक्खिज्ज०	१६१६७	ओ० सू० १६
अक्खिदिय जाव परिणया	८१३४	८१३४
अक्खर जाव बहुजणसद्धे इ वा जहा		
ओववाइए जाव एव	६११५७	ओ० सू० ५२
०अडगर जाव परिकिज्जत	६११६५	६११६२
अरमाणे जाव एगज्जुए	१६१४८	११७
अरमाणे जाव जेणव	१५११४५	११७
अरमाणे जाव विहरमाण	१३११०१	११७
अरमाणे जाव समोसडे	१८११३७	११७
अरमाणे जाव सुहपुहेणं	६१२२३	११७
अलिए जाव निज्जरिज्जमाणे	११११,४४३	११११
अितिए जाव समुप्पज्जित्था	२१४६,६६	२१३१
अिट्ठामि जाव गिलामि जाव एवामेव	२१६६	२१६४
अित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे	१६१६१	१६१६१
अेव जाव अप्पवेयण०	७१२२६	७१२२६
अेव जाव अप्पवेयण०	१८११००	५११३३
अव जाव चिट्ठिए	५११११	५१११०
अेव जाव महावेयण०	७१२२६	७१२२६
अेव जाव महावेयण०	१८११००	५११३३
अट्टअट्टेण जाव आयावेमाणं	१५११७६	३१३३
अट्टअट्टेणं जाव आयावेमाणस्स	११११८७	११११८६
अट्टं त अेव जाव जिणसद्धं	१५११३	२१११०; १५११२

छट्टुम जाव अप्पाणं	७२३०; १८५३	२१६३
छट्टुम जाव मासद्ध	६२१५	२१६३
छहं जाव कालं	१५११४	१५११३
छिदति जाव घम्मंतराएणं	१६४६	१६४६
छिण्णे जाव दड्ढे	८२५५	८२५५
जणवूहे इ वा परिसा निगच्छइ	२१३०	वृत्ति; ओ०सू० ५२
जलते जाव आपुच्छइ २ तामलितीए एगते		
एडेइ जाव भत्त०	३१३६	३१३६
जहणकाल जाव से	२४१६३	२४१२८
जहा अम्मडो जाव वंमलोए	११११६६	ओ०सू० १६२; भ०वृत्ति
जहा आयड्डीए एवं आयक्कम्मणा वि		
आयप्पयोगेण वि भाणियव्वं	३११६७, १६८	३११६६
जहा आवस्सए जाव सव्व०	६१७७	वृत्ति
जहा उक्कोसिया नाणाराहणा य दंसणाराहणा		
य भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा		
य चरित्तराहणा य भाणियव्वा	८४५६	८४५५
जहा उदिण्णेण दो आलावगा तहा उवसत्तेण		
वि दो आलावगा भाणियव्वा, नवरं		
उवट्ठाएज्जा पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा		
बालपंडियवीरित्ताए	१११८१-१८६	११७५-१८०
जहा उववज्जमाणे तहेव उव्वट्टमाणे वि		
दड्डो भाणियव्वो । नेरइए ण भते ! नेरइएहितो		
उव्वट्टमाणे किं देसेणं देसं आहारेइ तहेव		
जाव सव्वेणं वा देसं आहारेइ सव्वेण वा सव्वं		
आहारेइ । एवं जाव वेमाणिया । नेरइए ण भते !		
नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देसं उववण्णे		
एसो वि तहेव जाव सव्वेणं सव्व उववण्णे ।		
जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणे य चत्तारि		
दड्डा तहा उववण्णेणं उव्वट्टेणं वि चत्तारि		
दड्डा भाणियव्वा सव्वेणं सव्वं उववण्णे, सव्वेण		
वा देसं आहारेइ, सव्वेण वा सव्व आहारेइ ।		
एएणं अमिलानेणं उववण्णे वि उव्वट्टे वि नेयव्वं	११३२२-३३३	११३१८-३२१
जहा ओराला तहा	६१६७, ६८	६१६५, ६६
जहा ओववाइए कूणियस्स जाव परमाउं	१११६१	ओ०सू० ६८

जहा ओववाइए जाव अभिनंदता	६१२०८	ओ०सू० ६८
जहा ओववाइए जाव गणण०	६१२०४	ओ०सू० ६४
जहा ओववाइए जाव गहण्याए	१११८५	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव लूहाहारे	२५१५७१	ओ०सू० ३५
जहा ओववाइए जाव सत्थवाह०	६११५८	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव सब्बगाय०	२५१५७१	ओ०सू० ३६
जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए	२५१५६६	ओ०सू० ३४
जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे	१२११६०	७११२२
जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते	७११६६	७११७६
जहा कोहे तहेव	१२११०४	१२११०३
जहा खंदए जाव अणंता	११११०८	२१४५
जहा खंदए जाव गद्धपट्टे	१३११४२	२१४६
जहा खंदए जाव परिकखेवण	१११११०	२१४७
जहा खंदए जाव सब्बणू	१२१२१	२१३८
जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा		
नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्टे उद्दाइ		
ससरीरी निबलमइ	५१४६-५०	२१८-१२
जहा खंदओ जाव अण्णेषु	६११३७	२१२४
जहा खंदओ जाव से	६११५०	२१५२
जहा गोयमसामी जाव जेणेव	१५११५३	२११०७
जहा जोद्दसमसए तत्तिए उद्देसए जाव		
पडिसंसाहणया	२५१५८५	१४१३२
जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहि	१११५६	३१३३
जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा,		
नवरं वज्जपुडय दारुमयं पडिग्गहयं		
करेत्ता जाव विउलं असणपाणखाइम-		
साइम जाव सयमेव	३११०१,१०२	३१३२,३३
जहा तेयनिसगो जाव अबकररासि	१६१६८	१५११६
जहा देवाणदा जाव पडिसुणेइ	१२१३४	६११४०
जहा नंदीए जाव भावओ	८११८७	नंदी सू० २५
जहा नाणावरणिज्जं	६१३४	६१३४
जहा नियठुद्देसए जाव तेण	१११७६	२१११०,१११७३
जहा पंचमसए जाव जे	६११२२	५१२५५
जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सब्बट्टुक्ख०	७१२३१	११४३३

જહા પળવળાણે જાવ નાલિયરી	૮૧૨૧૭	૫૦ ૧
જહા પળવળાપદે જાવ ફલા	૮૧૨૧૮, ૨૧૯	૫૦ ૧
જહા પરમાહોહિં તહા કેવલી વિ જાવ	૧૮૧૧૮૦, ૧૮૧	૧૮૧૧૭૮, ૧૭૯
જહા પરિણમડ દો આલાવગા તહા ગમણિજ્ઞેણ		
વિ દો આલાવગા ભાણિયન્વા જાવ તહા	૧૧૧૩૬-૧૩૮	૧૧૧૩૩-૧૩૫
જહા પાળાડવાં નવર ઋદ્ધાસે	૧૨૧૧૧૩	૧૨૧૧૦૨
જહા પાદુભવળા તહા દો વિ આલાવગા ણેયન્વા	૩૧૬૦-૬૩	૩૧૫૬-૫૯
જહા પાદુભવા	૩૧૬૫-૬૭	૩૧૫૭-૫૯
જહા વિતિયસણે જાવ જીવિયાસ	૮૧૨૭૨	૨૧૬૫
જહા ભાસા તહા ભાણિયન્વા કિરિયાવિ જાવ		
કરણઓ	૧૧૪૪૩	૧૧૪૪૩
જહા ભાસા તહા મળે વિ જાવ નો	૧૩૧૧૨૬	૧૩૧૧૨૪
જહા રાયપસેણહજ્જે જાવ ઋદ્ધ	૧૧૧૧૫૯	રાય૦સૂ૦ ૧૬૧
જહા રાયપસેણહજ્જે જાવ કલ્લાણ૦	૧૩૧૧૬૮	રાય૦સૂ૦ ૧૮૫
જહા રાયપસેણહજ્જે જાવ દુવારવળાઈ	૧૩૧૧૮૭	રાય૦સૂ૦ ૭૫૫
જહા રોહે જાવ ડહ્દજાણૂ જાવ વિહરહ	૧૦૧૪૪	૧૧૨૮૮
જહા વિજયસ્સ જાવ જમ્મજીવિયફલે	૧૫૧૧૫૯, ૧૬૦	૧૫૧૨૬, ૨૭
જહા સવુઢે નવરં આઝયં ન ણ કમ્મં સિયવધહ		
સિય નો વંધહ સેસ તહેવ જાવ વીરૂવયહ	૧૧૪૩૮	૧૧૪૭
જહા સત્તમસણે જાવ ઇગતપંઢિયા	૮૧૨૭૮	૭૧૨૮
જહા સત્તમનણે દુસ્સમાઢહેસણે જાવ પરિયા૦	૮૧૪૨૩	૭૧૧૧૬
જહા સત્તમસણે પઢમુદ્દેસણે જાવ અંતં	૧૧૧૧૬૮, ૧૩૧૧૬૦	૭૧૩
જહા સત્તમસણે પઢમોદ્દેસણે જાવ નો	૨૫૧૫૬૭	૭૧૨૪
જહા સત્તમસણે વિતિયે ડહેસણે જાવ ઇગંતવાલા	૮૧૨૭૩	૭૧૨૮
જહા સત્તમસણે સવુઢુદ્દેસણે જાવ ઋદ્ધો નિક્કિલ્લો	૧૮૧૧૫૯	૭૧૨૦
જહા સત્તમસણે સત્તમુદ્દેસણે જાવ સે	૧૦૧૧૪	૭૧૧૨૬
જહા સત્તમે સણે અણ્ણઉત્થિયહેસણે જાવ સે	૧૮૧૧૩૯	૭૧૨૧૬
જહા સવ્વાણુભૂતી તહેવ જાવ સન્નેવ	૧૫૧૧૦૭	૧૫૧૧૦૪
જહા સાલીળં તહા ઇયાણિ વિ નવરં પચ		
સવચ્છરાઈ સેસં ત ચેવ	૬૧૧૩૦	૬૧૧૨૯
જહા સિવમદ્દે જાવ પચ્ચુવેક્કમાણે	૧૩૧૧૦૨	૧૧૧૫૮; રાય૦ સૂ૦ ૬૭૩, ૬૭૪
જહા સિવસ્સ જાવ વિવમ્મે	૧૧૧૧૮૭	૧૧૧૧૭૧
જહા સિવે જાવ પઢિગયા	૧૫૧૭૮	૧૧૧૮૨

जहा सिवो जाव खत्तिण	१११५३	१११६३
जहा सुत्ता तहा आत्ता भाणियन्वा,		
जहा जागरा तहा दक्खा भाणियन्वा		
जाव संजोएत्तारो	१२१५८	१२१५४
जहा सोमिलुद्देसए जाव सेज्जा	२५१५७६	१८१२१२
जहा हसेज्ज वा तहा नवर दरिस्सणा-		
वरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण निहायति		
वा पयसायति वा, से णं केवनिस्स तत्ति		
अण्ण त चेव	५१७३,७४	५१६६,७०
जहेव कोहे	१२११०५,१०६	१२११०३
जहेव कोहे तहेव चउफासे	१२११०७	१२११०३
जहेव तेयगस्स जाव देसवघए	८४३६	८४३६
जहेव लोए य अलोए य तहेव जीवा य		
अजीवा य । एवं भवसिद्धिया य अमवसि-		
द्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा	११२६१-२६४	११२६०
जागरिया जाव सुवक्खुं	१२१२१	१२१२१
जाणइ जाव निव्वुडे दसणे केवलिस्स		
से तेणट्ठेण	५११०६	५१६७
जाणामि जाव जण्ण	१७१३५	१७१३३
जायसद्धे जाव भत्तापाणं पडिदंसेइ		
जाव पज्जुवासमाणे	१५११३	२१११०,१११०
जाव वणस्सई जहा एयणुद्देसए पविदियति-		
रिक्खजोणियाण वत्तव्वया तहा भाणियन्वा		
जाव सचित्ताचित्त	५१२३५	५११८६
जाव समोसरण	११७	वृत्ति
जिणप्पसावी जाव जिणसद्धं	१५१७७,१३६,१४१	१५१७
जिणप्पसावी जाव पयासेमाणे	१५१७,७७	१५१६
जीवा जाव अणारंभा	११३४	११३३
जीवा जाव नो	२११४०	२११३६
जीवा पुच्छा तहू चेव	२११४०	२११३६
जुगव जाव निज्जणं	१४१३	अ०सु० ४१३
जुती जाव परक्कमे	१५१५३	१५१५३
जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए	१२११४६	२१३०
ओयण जाव अंतरे	१४१६४	१४१६०

भियाइ जाव नो	८१२५६	८१२५६
ठाणस्स जाव अत्थि	५११४१	५११३६
ठिइक्खएणं जाव कहिं	११११८३; १५११६७	२१७३
ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे	१५११६४	२१७३
ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिञ्जिहिति		
जाव अंतं	७१२०७	२१७३
ठिच्चा जाव तस्स	१०१११	१०१११
णं जाव नो	१७१३३	१७१३२
णं जाव संपाउणंति	११११०६	११११०६
णच्चवासणे जाव पज्जुवासइ	३११३; १८१४४	१११०
णावकंखइ जाव तसकाय	१४३७	६१२
ण्हाए जाव सरीरे	१११६३	३३३
तओहिंतो जाव अविराहियसामण्णे	१५११८६	१५११८६
तं चेव	३१६६	३३०
तं चेव	५११२०	५१११६
तं चेव	५११८३	५११८३
तं चेव	५१२०२	५१२०२
तं चेव	८११६०	८११६०
तं चेव	१०१२३	१०१२३
तं चेव	१४१८२, ८३	१४१८२
तं चेव उच्चारेयव्व	१११४७	१११४७
तं चेव उच्चारेयव्व	१११६२	१११६२
तं चेव उच्चारेयव्वं	१११६३	१११६३
तं चेव उच्चारेयव्व	५१११८	५१११७
तं चेव केवलीणं आरगयं वा पारगय वा		
जाव पासइ	५१६७	५१६६
तं चेव जाव अंतं	११२०१	११२००
तं चेव जाव अत	२०१७६	२०१७६
तं चेव जाव अजीवपदेसा	१०१५	१०१५
तं चेव जाव अणतखुत्तो	१२११३५	१२११३४
तं चेव जाव अणतेहिं	११११०७	२११४०
तं चेव जाव अत्यमण०	८१३२६	८१३२६
तं चेव जाव अफासा	१२११०६	१२११०८
तं चेव जाव अफासे	१२११११	१२११०८

तं चेव जाव अमिग्गह	१११६३	१११५६
तं चेव जाव आयावण०	३११०२	३१३३
तं चेव जाव आहारंति	१४१७३	१४१७२
तं चेव जाव उवदसेत्ताए	६११७२	६११७१
तं चेव जाव गाहावइस्स	८१२८४	८१२७७
तं चेव जाव छविच्छेद	१११११२	१११११२
तं चेव जाव जीवियफले	१५१५२	१५१२७
तं चेव जाव तत्थ	१५११८६	१५११८६
तं चेव जाव तस्स	३१२२६, २२७	३१२२३, २२४
तं चेव जाव तस्स	१५१७३	१५१५६
तं चेव जाव तेण	१११७७	१११७३
तं चेव जाव तेण	११११८०	११११७६
तं चेव जाव तेसि	१११११०	११११०६
तं चेव जाव वेव०	६१२३५	६१२३४
तं चेव जाव न	१०१४०	१०१४०
तं चेव जाव न	१२११३२	१२११३२
तं चेव जाव नो	६११२४	६११२३
तं चेव जाव नोआयाति	१२१२१२	१२१२१२
तं चेव जाव पच्चायाइस्सति	१५१७२	१५१५८
तं चेव जाव पज्जुवासति	१५११११	१५११०४
तं चेव जाव परिणमह	१२११२०	१२११२०
तं चेव नवरं परिणामेतित्ति भाणियव्व	६११६७	६११६५
तं चेव जाव पव्वइत्ताए	६११७२, १७६	६११७०
तं चेव जाव वेमेलस्स	३११०३, १०४	३१३५, ३६
तं चेव जाव रोमकूवा	६११४८	६११४७
तं चेव जाव वोच्छिण्णा (न्ना)	१११७५, ७७	१११७२
तं चेव जाव साहू	१२१५६	१२१५६
तं चेव जाव साहू	१२१५८	१२१५७
तं चेव जाव साहू	१२१५८	१२१५८
तं चेव पलमावती पडिच्छइ जाव		
घडियव्व सामी जाव नो	१३१११८	६१२१३
तं चेव पडिउच्चारियव्वं	१२१२२५	१२१२२४
तं चेव सव्व जाव	६१२२८	६१२२८
तं चेव सव्वं जाव अजिणे	१५१७७	१५१३-६

तं चेव सव्वं भाणियव्व जाव पणुणे	१५।१४६	१५।१४७, १४८
तणुयस्स जाव कज्जइ	१४३५	१४३४
तणुवाए०	१।३०३	१।२६७
तत्थगए जाव वदइ	७।२०३	२।६८
तब्भत्तिया जाव विट्ठति	३।२६२, २६७	३।२५२
तया णं जाव मंदरस्स	५।१४	५।१४
०तरागा तहेव	१।६५	१।६३
तलवर जाव सत्थवाह०	१३।१०२, १०४; १५।१७१	२।३०
तवसा जाव विहरेज्जा	१३।१०४	१।७
तवेण जाव करेत्तए	१५।६८	१५।६८
तस्स०	५।१४३	५।१३६
तस्स जाव अरिय	५।१४५	५।१३६
तहू चेव	५।२०२	५।२०२
तहू चेव नेयव्व अविसेसियं जाव पभू		
समिय आउज्जियपत्तिउज्जिय जाव सच्चे	२।११०	२।११०
तहेव	५।११८	५।११८
तहेव	५।१८५	५।१८४
तहेव	५।२०२	५।२०२
तहेव जाव अडमाणे	१५।३८	१५।२४
तहेव जाव उस्सुत्तं	७।२२६	७।२१
तहेव जाव एगं	७।२१७	७।२१२
तहेव जाव ओहिं	३।११६	३।११५
तहेव जाव कासवग	६।१८५	६।१८४
तहेव जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
तहेव जाव गवेसणं	६।५५	६।३३
तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुजेज्जा,		
नो अण्णेसि दावए, सेसं तं चेव जाव		
परिट्टवेयव्वे	८।२५०	८।२४८
तहेव जाव दिसोदिस्सि	७।१८६, १८७	७।१७७, १७८
तहेव जाव ममं विउलेणं महुघयसजुत्तेणं		
परमण्णेणं पडिलामेस्सामीत्ति तुट्ठे सेम जहा		
विजयस्स जाव बहुले माहणे २	१५।४८-५०	१५।२५-२७
तहेव जाव वोच्छिण्णा	११।१८८	११।१८८

तहेव जाव सपरिनिस्तान	११।११०	११।१०६
तहेव जाव हुता	११।१६१	११।७८
तायत्तीसाए जाव अण्णेहि	१०।६६	३।४
तावतियं जाव महापज्जवसाणा	१६।५२	१६।४
तावत्तीसगाण जाव विहरइ	३।४	वृत्ति
तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता	६।१५०, १६४, १६५	
	२१०, २१२, ११।११८	१।१०
तिग जाव पहेसु	११।७२, ७३	२।३०
तिण्णिवि	७।५२	७।५२
तिण्णि वि	७।५४	७।५४
तिण्णि वि	७।५५ -	७।५५
तियगसजोगे एक्को न पडइ	१२।२२४	१२।२२४
तिरिय जाव पल्लघत्तेए	१४।६६	१४।६८
तीसे य जाव वम्म	१६।५६	२।५१
तुट्ठि जाव भगल्लकारए	११।१३४, १४२	११।१३४
तुल्लसखेज्ज	१४।८१	१४।८१
तेएण जाव करेतए	१५।६८	१५।६८
तेएणं जाव भासरारिं	१५।१८४	१५।१८२
ते जाव सद्दाविया	१४।२२	१४।२२
तेणट्ठेण जण इहगए केवली जाव पासति	५।१०६	५।१०६
तेणट्ठेण जाव अण्णहाभाव	३।२२७	३।२२४
तेणट्ठेण जाव अविकरण	१६।६	१६।६
तेणट्ठेण जाव अब्बावाहा	१४।११४	१४।११४
तेणट्ठेण जाव आदिच्चे	१२।१२६	१२।१२६
तेणट्ठेण जाव आवासे	१३।६८	१३।६८
तेणट्ठेण जाव उदएण	१८।१६१	१४।१८
तेणट्ठेण जाव उवदसेत्तए	५।११३	५।११२
तेणट्ठेण जाव कज्जइ	७।१६४	७।१६४
तेणट्ठेणं जाव कज्जति	१६।४२	१६।४२
तेणट्ठेणं जाव कालसुल्लए	१४।८१	१४।८१
तेणट्ठेण जाव खेत्तसुल्लए	१४।८१	१४।८१
तेणट्ठेण जाव चिट्ठित्तए	१७।३५	१७।३५
तेणट्ठेण जाव जघाचारणे	२०।८४	२०।८४
तेणट्ठेणं जाव देवात्ति०	१२।१६७	१२।१६७

तेणट्टेणं जाव घम्म०	१२।१६६	१२।१६६
तेणट्टेणं जाव नर०	१२।१६५	१२।१६५
तेणट्टेणं जाव निरेया	२५।१४४	२५।१४२
तेणट्टेणं जाव नो	१।३६	१।३५
तेणट्टेणं जाव नो	१।३४६	१।३४६
तेणट्टेणं जाव नो	३।१६१	३।१६१
तेणट्टेणं जाव नो	५।७०	५।७०
तेणट्टेण जाव नो	६।२६	६।२५
तेणट्टेण जाव नो	१६।३१	१६।३१
तेणट्टेणं जाव नो	१८।१७६	१८।१७६
तेणट्टेणं जाव पंच	१।३६५	१।३६५
तेणट्टेणं जाव पसारत्तए	१६।११६	१६।११६
तेणट्टेणं जाव पासइ	३।२२४, २३०	३।२२४
तेणट्टेणं जाव पासइ	५।६७	५।६७
तेणट्टेणं जाव भाव०	१२।१६८	१२।१६८
तेणट्टेणं जाव भावतुल्लए	१४।८१	१४।८१
तेणट्टेणं जाव भासति	१६।३६	१६।३६
तेणट्टेण जाव रह०	७।१८८	७।१८८
तेणट्टेण जाव लवसत्तमा	१४।८५	१४।५८
तेणट्टेण जाव बागरेज्ज	१४।१४४	१४।१४४
तेणट्टेणं जाव विग्गहेणं	३४।४	३४।२, ३
तेणट्टेण जाव विज्जाचारणे	२०।८०	२०।८०
तेणट्टेणं जाव वुच्चइ केवलीणं		
अस्सि समयसि जाव चिट्ठिए	५।१११	५।१११
तेणट्टेणं जाव संठाणतुल्लए	१४।८१	१४।८१
तेणट्टेणं जाव ससी	१२।१२५	१२।१२५
तेणट्टेणं जाव सिय	१४।५०	१४।५०
तेणट्टेणं जाव सिय	२५।५	२५।५
तेणट्टेणं जाव सोणे	१६।२६	१६।२६
तेणट्टेणं जाव हव्व०	२।८८	२।८८
तेणट्टेणं जाव हव्वमागच्छंति	२५।१८	२५।१८
तेयासरीस्स जाव देसबंधए	८।४४६	८।४४५
दंडनायग जाव संघिवाण	११।६१	७।१४६
दंसणपि एमेव	१।४०	१।३६

दरिसणावरणिज्ज जाव अतराइय	६।३३	६।३४
दन्वओ जाव गुणओ	२।१२८	२।१२५
दन्वसुद्धेण जाव दाणेण	१५।१५६	१५।२६
दसम जाव विवित्तेहि	६।१५१;१५।१८५	२।६३
दाह जाव दोच्च	१५।१८६	१५।१८६
दाहिणिल्ल जाव गच्छति	१६।११६	१६।११६
दिणयर जाव पडिबुद्धे	१६।६१	१६।६१
दिसाचक्कवालेण जाव आयावेमाणस्स	११।७१	११।५६
दीव जाव हुता	१८।१५३	१८।१५२
दीवे जाव अद्धमास	६।६२	६।७५
दूसमा जाव चत्तारि	६।१३४	६।१३४
देवज्जुती जाव अणुप्पविट्ठे	१६।६४	राय०सू० १२२
देवलोमाओ जाव महाविदेहे	१५।१८५	२।७३
देवसयणिज्जति जाव मक्के	१८।५३	३।१७
देवाउय चउव्विह	५।६२	म० १
देवाणुप्पिया जाव उत्तर०	३।१२६	३।११६
देवाणुप्पिया जाव से	११।१४३	११।१३५
देविह्दीए जाव दिव्वे	३।१०६	३।१७
देविह्दी जाव अभि०	३।१३०	३।२८
देविह्दी जाव अमिसमण्णागए	३।५०, ५१	३।१७
देविह्दी जाव अमिसमण्णागए	१६।७२	१६।६५
देविह्दी जाव लद्धे	३।५०	३।१७
देह जाव दुव्वलं	१६।३५	अ० ३।६५
धम्मकहा	१८।४३	११।११७
धम्मतिथिकाए जाव जीवतिथिकाए चउत्थमएण	१।४००-४०३	१।३६२; २।१२३
धम्मतिथिकाय जाव करेत्सइ	८।६६	८।६६
धम्मतिथ जाव आगासतिथिकायसि	१३।८७	१३।८६
धम्माणुया जाव धम्मेण	१२।५४	१२।५४
धम्मोवएसमत्स जाव परिकहेहि	१५।६७	१५।६६
धारेमाणे जाव भवति	१।१३२	१।१३२
नवखत्त जाव काम०	१२।१२८	१२।१२८
नगर जाव विहराहि	११।६१	ओ०सू० ६८
नगरे जाव अढमारो	२।१०६, १५।३१	२।१०८
नमंसइ जाव पज्जुवासइ	१४।३०	२।३०

नमसइ जाव पडिगए	१५।१३८	२।१०३
नमसति जाव कल्लाणं	१५।१०४	२।३१
नमसामो जाव पज्जुवासामो	२।३६; ३।३८; ६।१३६	२।३०
नमसामो जाव पज्जुवासामो जाव भविस्सति	२।६७	२।३०
नमसित्ता जाव पज्जुवासित्ता	२।६६	१।१०
नमसित्ता जाव पडिगया	१३।११८	६।२१३
नमसित्ता जाव विहरइ	१२।१२६	१।५१
नरदेवाण जाव भावदेवाणं	१२।१६७	१२।१६३
नवर एगओ चक्कवालांपि दुहओ		
चक्कवालांपि भाणियव्वं	३।१८१	३।१६६
नाइ जाव जेट्टुत्तं	१६।७१	३।३३
नाइ जाव जेट्टुत्ते	१८।४७, ४८	३।३३
नाइ जाव तस्सेव	१८।४८	३।३३
नाइ जाव परिजणेणं	१८।४७-४९	३।३३
नाइ जाव परिय(ज) ण	३।३३; ११।६३	३।३३
नाइ जाव परियणस्स	३।३३	३।३३
नाइ जाव पुरओ	१८।४८	३।३३
नाइ जाव राईण	११।१५३	११।६३
नाण जाव समुद्दा	११।८३	११।७२
नाणत्त जाव तं	१८।८१	३।१४३
नाणदसणे जाव तेण	११।७३	११।७२
नातिदूरे जाव पंजलिकडे	११।८५	१।१०
नासि जाव निच्चे	६।२३३	६।२३३
नासि जाव निच्चे	११।१०८	२।४५
निदिज्जमाण जाव आकड्डे	३।४६	३।४५
निकखेवो	६।२५०	६।२५०
निग्गंथाणं जाव महा०	६।४	६।४
निग्गथे वा जाव पडिगाहेत्ता	७।२२, २३	७।२२
निग्गथे वा जाव साइमं	७।२४	७।२२
नियठे जाव नो	२।१६	२।१३
नियग जाव आमत्तेति	१६।७१	३।३३
नियग जाव परिजणं	११।६३	३।३३
नियग जाव परिजणेणं	१६।७१	३।३३
निरंगणयाए जाव पुब्ब०	७।१५	७।११

निरुद्धभवपवचे जाव निट्टिय०	२।१६	२।१३
निसते जाव अमिरुइए	६।१६७	६।१६५
निसिरामि जाव पडिहय	१५।६८	१५।६५, ६६
निस्सीला जाव उवबन्ना	७।१६०	७।१८१
निस्सीला जाव निप्पच्चक्खणा	७।१८१	७।१२१
नीय जाव अहमाणे	१५।२४, ४७, ६७	२।१०६
नीय जाव अणत्थ	१५।२३	१५।१६
नेरइयाउय वा जाव देवाउयं	५।६२	५।६२
नोआया जाव नोआयाति	१२।२१४	१२।२११
पईणवाया इ वा जाव सबट्टयवाया	३।२५३	वृत्ति, प० १
पउमसर जाव पडिबुद्धे	१६।६१	१६।६१
पंक जाव उव्वट्टित्ता	१५।१८६	१५।१८६
पचमाए जाव उव्वट्टित्ता	१५।१८६	१५।१८६
पच्चियओरासिय जाव परिणए	८।५०	८।५०
पच्चियसरीरे जाव ससि०	११।१३४	ओ०सू० १४३
पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ	१।४३६	१।४५
पकरेति जाव देवाउयं	१।३६०	१।३५६
पकरेति जाव देवाउयं	१।३६२	१।३६०
पगइभइए जाव विणीए	३।१७, ५।७८, १५।१०४	१।२८८
पगइभइए जाव से णं	२।७१	२।७०
पगइभइयाए जाव विणीययाए	११।७१	१।२८८
पगिज्झिय जाव आयावेमाणे	१५।१८०	३।३३
पगिज्झिय जाव विहरइ	१५।७०, ७६	३।३३
पगिज्झिय जाव विहरित्तए	११।५६	३।३३
पच्चक्खणीणं जाव विसेसाहिया	७।५७	७।५५, ४६
पज्जत्तससेज्ज जाव जे	२४।६३	२४।५६
पज्जत्ताअसण्णि जाव गतिरागति	२४।३०	२४।२७
पज्जत्ता जाव करेज्जा	२४।३३	२४।२७
०पज्जत्ता जाव जोणिए	२४।४१	२४।२७
पज्जत्ताउत्तुमुदविकाइय जाव परिणया	८।१८	८।१८
पज्जवासणयाए जाव गहणयाए	२।६७	२।३०
पडिबोइज्जमाणे जाव निप्पट्ट०	१५।११६	१५।११६
पडिबोएउ जाव मिच्छं	१५।१००	१५।६६
पडिसंवेदेइ जाव से	५।५७	१।४२०

पणवेति जाव उवदमेति	१८१४३	१६११
पभासेमाणे जाव पडिखे	२१८०	वृत्ति
०पमत्त जाव आहार०	८४०६	८४०६
पमाणे जाव आहार०	७२४	७२४
पमादपचया जाव आउथ	८३७२	८३६६
पयाहिण जाव नमसित्ता	३१२६; ६११५२	१११०
पयाहिणं जाव नमसित्ता	१५१५४	१५१२५
परउत्थियवत्तव्वयं णेयव्व ससमय-		
वत्तव्वयाए णेयव्वं जाव इरियावहिय	१४४४, ४४५	१४२०, ४२१
परमाणुपोगला जाव किं	१२१८०	१२१६६
परामुसइ जाव उव्विहड	५११३४	५११३४
परारभा जाव अणारभा	११३४	११३३
परियारो जहा सूरियाभस्स जाव	१६१५५	राय० सु० ५८
परिसा जाव पडिगया	१११७४	६१७७
पलोदुइ जाव पडियत्तं	१४४०	१४४०
पवरकुट्टुक्क जाव गंध ०	११११३६	११११३३
पवर जाव सण्णाहेत्ता	७११६४	७११७४
पव्वयं त चेव निरवसेस जाव आणुपुव्वीए	२१७०	२१६८, ६६
पव्वाविए जाव भए	१५११११	१५११०४
पव्वावेइ जाव धम्म०	२१५३	२१५२
पसत्थं नेयव्व जाव आदेज्ज०	११३५७	११३५७
पसत्थ नेयव्वं जाव सुहत्ताए	६१२२	६१२०
पाणक्खया जाव तेसि	३१२६३	३१२५३
पाण जाव उवक्खडावेति	१६१७१	३१३३
पाण जाव किं	८२४७	८२४५
पाण जाव पडिलाभेमाणस्स	८२४६	८२४५
पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छा०	११३८५	११३८४
पाणातिवाएण जाव मिच्छादसणसत्त्वेणं		
एवं खलु जीवा गस्यत्तं हव्वमागच्छंति	१२४१-४८	११३८४-३६१
एवं जहा पढमसए जाव वीतिवयंति	७१११४, ११६; १२१५४	७१११४
पाणाणं जाव सत्ताणं	८१८६	८१८६
पासइ जाव भावओ	३११६१	वृत्ति
पासवणत्ताए जाव सोणियत्ताए	१५१८७	२१८०
पासादियाओ जाव पडिख्वाओ		

पासादीए जाव पढिरुवे
पासादीयं जाव पढिरुवं
पिवासापरीसहे जाव दंसण०

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

पुच्छा

११११७

११११७

११११६

११११७

११११४

१११७३, १७५

१११६

१११६८-३००

११४२३-४३३

११४६२

११४६४

११४६५

११४६६

११४६७

११४६८

११६४

१०१५७, ६१

१११७२-७६

१११११७, ११८

१११२२२

११३१७, ११

११३१६०

११३१६४

११३१२८

११३१२८

१४१५६, ५६

१४१६३, ६४, ६६, १००

१४११२८

१७१६२

१८११०३

१८११०८, ११२, ११७

१८११७६

२०११६, १८

२०१४०

२१८०

२१८०

वृत्ति

११२६०

३११८३

३१२७२

८१८८

८१२६५

८१४२०

८१४६२

८१४६४

८१४६५

८१४६६

८१४६८

८१४६७

६१४२

१०१४६

१२१६६

१२११०२

१२१२२२

१३१२

१३१५६

१३१६१

१३१२४

१३१२४

१४१५४

१४१६०

१४१२६

१७१६०

१८११०२

१८११०७

१८११७४

२०११४

२०१३८

पुच्छा	२४।२०५	२४।८
पुच्छा	२५।६८	१।१०८
पुच्छा जहा अग्नेयीए	१३।५४	१३।५३
पुट्टा जाव नो	१।३७४	१।३५७
पुट्टे जाव अणतेहि	१३।६८	१३।६१
पुढविकाइयएगिदियपयोगपरिणया		
जाव वणस्सइ०	८।३	१।४३७
०पुढविकाइय जाव परिणया	८।१८	८।१८
पुढविकाइया जाव उववज्जंति	६।१३१, १३२	६।१२८
०पुढवि जाव बंधे	८।३६०	८।३६०
पुढवीए जाव एगमेगंसि	१।२२१	१।२१६
पुप्फिया जाव चिट्ठंति	७।६३	७।६३
पुरंदर जाव दस	३।१०६	उवा० २।४०
पुरत्थाभिमुहे जाव अजलि	७।२०४	७।२०३
पुरिसे जाव अप्पवेयण०	७।२२७	७।२२६
पुरिसे जाव पचिहि	१।३६६	१।३६५
पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि जाव किसंठिया	१५।१३२	१५।१२८
पुव्वरत्तावरत्त जाव जागर०	२।६७	२।६६
पुव्वि भते लोयंते पच्छा सव्वद्धा	१।२६६-३०१	१।२६७
पेते जाव अणाणुपुव्वी	१।२६७	१।२६०
पोगला जाव दुहा	१२।७७	१२।७०
पोगला जाव नो	१६।५७	१६।५५
पोगलाणं जाव सव्वपज्जवाण	२५।१००	५०३
पोगले जाव विकुव्वइ	७।१६६	७।६१६
पोराणाण जाव एगंतसोक्खय	११।५६	३।३३
पोरेवच्चं जाव कारेमाणे	१३।१०२	३।४
पोसहसालाए जाव विहरिए	१२।१८	१२।८
पोसहियस्स जाव विहरित्तए	१२।१३	१२।६
फरिसे जाव पचविहे	१२।१२८	ओ०सू०१५
फासेत्ता जाव आराहेत्ता	२।५६	२।५६
बंधइ जाव नो नपुसगो	८।३०४	८।३०४
बभचारी जाव पक्खिय	१२।६	१२।६
बभचारी जाव विहरइ	१२।११	१२।६

बलमदेण जाव इस्सरिय०	८४३२	८४३१
बलव जाव निउण०	१६१५	१४१३
बहुपडिपुण्णाण जाव वीइक्कताण	११११४२; १५११६७	११११३५
बाह्माओ जाव आयावेमाणे	११११८६	३१३३
बाह्माओ जाव विहरइ	१५११४७	३१३३
बाहिरिय जाव पच्चप्पिणति	१३१११०	१११५६
त्रित्तो वि आलावगो एवं चेव		
नवर क्षणारसीए नगरीए समोहणा नेयव्वा		
रायगिहे नगरे रुवाइ जाणइ पासइ	३१२३३-२३६	३१२३१-२३३
बुज्झति जाव अत	६१२४१	१४४
बुज्झिमु जाव सव्व०	११२००	१४४
वेइंदिया जाव पच्चिदिया	१०१५	२११३६
भइ जाव घणे य से अणुवणीए सिया		
एय पि जहा भडे उवणीए तहा नेयव्व		
चउत्थो आलावगो—'घणे य से		
उवणीए सिया' जहा पढयो आलावगो—		
'भडे य से अणुवणीए सिया', तहा नेयव्वो ।		
पढमचउत्थाण एक्को गमो,		
वित्तियतइयाण एक्को गमो	५११३१, १३२	५११३०, १२६
भंते जाव केवली	५११११	५११०६
भंते जाव विट्ठति	११३१३	११३१२
भंते जाव बालपडियवीरियत्ताए	१११७६, १८०	१११७६, १७७
भंते जाव रण्णो	१०१७३	१०१६५
भंते जाव से	६११६४; ११११७२, १३११०८	२१५२
भंते पुच्छा	२११४७, १४८	२११४६
भगवओ जाव पव्वइए	१३११२०	६११६७
भगवओ जाव पव्वइत्ताए	१३१११०	६११६७
भगव जाव एव	३१२०	२१५७
भगव जाव नमसित्ता	२१५६	२१५७
०भत्ति जाव अउमुट्टेइ	११११४४	११११३५
भवइ जाव दुहा	१२१७५	१२१७४
भवसिद्धिए जाव नो	३१७३	३१७२
भवित्ता जाव नो	६११४	६११३
भवित्ता जाव पव्वइत्ताए	१३१११०	६११६७

भविता जाव पन्वयामि	१३।१०८,११०	६।१६७
भविस्सइ जाव निच्चे	१०।५१	२।४५
भावियप्पणो जाव तस्स	१८।१५६	१८।१५६
भासासमिया जाव गुत्तवंभचारी	१२।२१	२।५५
भिज्जति जाव काये	१३।१२८	१३।१२४
भीए जाव संजायभए	१५।६६	२।४६
भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ	२५।५३	२५।५०
भेदो सव्वो भाणियव्वो	५।६२	२।१३८
भोगा पुच्छा	७।१३४	७।१२६
मंखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए	१५।६८	१५।६८
मदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे	१६।६१	१६।६१
मज्झमज्जेणं जाव पज्जुवासति अभिगमो नत्थि	१२।१५	२।६७
मज्झिमाइ जाव अडमाणे	१५।८२	२।१०६
मट्ठिया जाव गायानं	१५।१२६	१५।१२०
मट्ठिया जाव विहरइ	१५।१३२	१५।१२०
मदुदुया जाव एव	१८।१४३	१८।१४३
मणुस्स जाव बवे	८।३६८	८।३६८
मणुस्साउए वि एव चैव, देवा जहा नेरइया	१।११५	१।११५
मणुस्साउयं दुविहं	५।६२	५० १
मणुस्सा जहा ओहिया जीवा णवरं		
सिद्धवज्जा भाणियव्वो	१।३८०,३८१	१।३७५,३७६
मणुस्सा जहा जीवा	७।४६	७।४२
मणुस्सा जहा णेरइया नाणत्त जे महासरीरा		
ते बहुतराए पोगले आहारेति आहच्च		
आहारेति जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए		
पोगले आहारेति अभिक्खण आहारेति सेस		
जहा नेरइयाणं जाव वंयणा	१।८६-६५	१।६०-६६
मणुस्सा जाव उववत्तारी	७।२०५	७।१६२
मणुस्साण जाव वेमाणियाणं	१४।३५	१४।३३
मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाण	१।१०६,१०७	१।१०४
मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तिया०	२।६५	वृत्ति; ओ०सू० २६; राय० सू० ६८६
महज्जुईए जाव कहिं	३।६८	३।२८

य जाव भविस्सइ	११।८५	
रट्टे य जाव जणवए	१३।११०	२।३०
रयण जाव सत०	११।५६	राय०सू०७६०
रयणप्पभा जाव तमतमा	१।२११	३।३३
रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमा०		२।७१
रयणाणं जाव रिट्ठाणं	५।६२	२।७५
रह जाव संपरिवुडे	३।४	राय०सू१०
रह जाव सण्णाहेति	७।१६६	७।१७७
राईसर जाव कारेमाणे	७।१६५	७।१७४
राईसर जाव बदिहिंति	१३।१११	१३।१०२
राईसर जाव सत्थवाहं	१५।१७४	१५।१७१
राईसर जाव सत्थवाह०	१५।१७२, १७५	२।३०
रायं वा जाव सत्थवाहं	३।३४	२।३०
रायगिहं जाव अस्सपत्ते	८।२६२	८।२६१
रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसभत्तं जाव रियं	७।२१४	२।११०
लद्धे जाव गंगदत्तेण देवेण सा दिव्वा		
देविद्धी जाव अभिसमण्णागए	१६।६५	राय०सू०६६७
लभिहिंति जाव अविराहियसामण्णे	१५।१८६	१५।१८६
लभिहिंति जाव विराहियसामण्णे	१५।१८६	१५।१८६
लाघविय जाव पसत्थं	१।४१७	१।४१७
लुक्खे जाव वमणि०	३।३५	२।६४
लोए जाव केण	२।२८	२।२६
लोए जाव दीवा	११।७२	११।७२
लोए जाव भइयव्वाहं	२५।२१	२५।२१
लोगस्स	११।१०६	११।१०५
लोहकडाह जाव किट्ठिण	११।८५, ८७	११।७२
लोह जाव घडावेत्ता	११।५६	११।५६
वदति जाव पडिगए	१८।१२१	११।१८१
वंदिता जाव पडिगए	१८।१४६	११।१८१
वंदिय जाव भविस्सइ	१४।१०५	१४।१०१
वंदिय जाव लाउल्लोइय०	१४।१०३	१४।१०१
वज्जं जह्वा सक्कस्स तहेव नवरं		
विसेसाहियं कायव्वं	३।१२२	३।१२०

वि जाव लुक्ख०	८३६	८० ८१३
वि जाव ह्व०	१२५६	१२५६
वित्तिक्किणं जाव एस	३१६६	३१४
विपुलेणं जाव उदग्गेण	३३६	२६४
विरत्तं जाव पावकम्मे	१७११	१७११
विरत्तं जाव धम्माधम्मो	१७१६	१७१६
विरयं जाव एगंतवाला	८२७४	८२७३
विरसजीवी जाव तुच्छजीवी	६२४२	६२४२
विसंजोएइ जाव बीईवयइ	२४६	२४६
वीइक्कते जाव सपत्ते	१५१६६	१११५३
वीत्तिक्कते जाव बारसमे	१५१८	१११५३
वीही जाव जवजवाण	२११०	२११
वुच्चइ जाव अणत्तर	१४५	१४४
वुच्चइ जाव अभक्खेया	१८२१४	१८२१४
वुच्चइ जाव आहारंति	१४७३	१४७२
वुच्चइ जाव उववज्जति	६१२६	६१२५
वुच्चइ जाव कज्जइ	७१६४	७१६३
वुच्चइ जाव कज्जंति	१६४२	१६४१
वुच्चइ जाव नो	३१६१	३१६०
वुच्चइ जाव नो	१४३०	१४३०
वुच्चइ जाव नोइसि	६२५०	६२४६
वुच्चइ जाव पासंति	१४७६	१४७८
वुच्चइ जाव पोग्गले	८५०३	८५०२
वुच्चइ जाव भविए	१८२२०	१८२१६
वुच्चइ जाव साहू	१२१५६	१२१५५
वुच्चइ जाव सिय	७२८	७२८
वुच्चइ जाव सिय	७५६	७५६
वुच्चइ जाव से	१३७१	१३७०
वुच्चइ जाव सोगे	१६१२६	१६१२८
वुच्चइ जाव ह्व०	२१८	२१८
वुच्चइ जाव ह्वमागच्छंति	२५११८	२५११७
०वेंउव्विय जाव बंधे	८३८६	८३८८
वेदणे जाव पसत्थनिज्जराए	६१४	६११
वेयति जाव तं	५११५०; १७३७	३१४३

छिउमत्थस्स जहा नवरं सिज्झिस्सु

सिज्झंति सिज्झिस्सति

१।२०५-२०७

१।२०१-२०३

समया कम्माणि य चउत्थपदेण

१।४०६,४०७

१।३६२

समणा जाव पच्चप्पिणंति

६।१६१

६।१६०

समाणे जाव तुसिणीए

३।४०

३।३६

समाणे जाव दुहियाए

१।३५७

१।३५७

समारंभति जाव तसकायं

५।१८३

१।४३७

समितं जाव अंते

३।१४५

३।१४३

समितं जाव नो

३।१४६

३।१४३

समितं जाव परिणमद्द

३।१४४,१४५

३।१४३

समोसडे जाव परिसा

१।१।१६०

६।७७

सयभूरमणसयुदे जाव हुता

१।१।८१

१।१।७८

सरित्तयं जाव सद्दावेति

६।२००

६।१६६

सरिसया जाव सरिसभंडं

७।२२६

७।१६८

ंसरीर जाव पयोगं

८।४२४

८।४२०

सव्वओ जाव करेमाणे

१।५।५३

१।५।५३

सव्वं त चेव जाव सुहमत्थि

१।५।११०

१।५।१०३

सव्वति जाव वत्तव्व

१।२६८

१।२६८

सव्वजीवाण एवं चेव

१।२।१५०

१।२।१४६

सव्वदीव जाव परिकखेवेणं

१।१।१०६

६।७५

सव्वसत्तेहि जाव सिय

७।२८

७।२७

सव्विद्धीए जाव रवेणं

६।१८२

ओ०सू०६७

सत्तिसरीए जाव पडिक्खे

२।१।१३

२।१।१३

सहियं जाव अहियासिय

१।५।१८२

१।५।१८२

सहिस्स जाव अहियासिस्सं

१।५।१८२

१।५।१८२

सागर जाव पडिबुद्धे

१।६।६१

१।६।६१

सावज्जं वि जाव अणवज्जं

१।६।३६

१।६।३८

ंसामणियसाहस्सीओ जाव कहि

३।१।१२

उवा०२।४०

सामाणियसाहस्सीण जाव चउण्हं

३।१६

उवा०२।४०

सासय जाव करिस्संति

१।२०८

१।२०१

साहणणा जाव मक्खाया

१।२।८१

१।२।८१

साहण्णति जाव पुच्छा

१।२।७१

१।२।६६

सिगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए

१।२।१२८

६।१६५

सिगारागारचारुवेसा जाव कलिया

१।१।११२

६।१६५

सिंगारागार जाव कलिया	६।१६६-१६८	६।१६५
सिंघाडग जाव पहेसु	२।३०;१।१८३,१८८,१५।७, २७,११५,१३६,१४१,१४२	ओ०सू० ५२
सिंघाडग जाव बहुजणो	१५।७६	१।१८३
सिंघाडग जाव समुहा	१।१८३	१।१७२
सिज्झ जाव अत	१।४६,४७,४१६,७।३,१।४।३६	१।४४
सिज्झता जाव अत	१।४।८५	१।४४
सिज्झति जाव अत करिस्संति	१।२०८	१।२०१
सिज्झति जाव अत	३।५३,७५,५।८०,६।२४४,१।१।८३	२।७३
०सिद्ध जाव पयोगवघे	८।३८७	८।३८७
सिद्धा जाव सव्व०	५।२५७	१।४३३
सिया जाव अण्णमण्णघडत्ताए	५।५८	५।५७
सिरिवच्छ जाव दप्पणा	६।२०४	ओ०सू० ६४
सुम्भिल जाव पडिबुद्धे	१६।६१	१६।६१
सुचिणाण जाव कडाण	३।३३	३।३३
सुणेइ जाव नियमा	५।६४	८०११
सुहकामगस्स जाव हिय	१५।६३	१५।६३
सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खणाण०	१।४३४	१।४३४
सेवेज्जा जाव करेज्जा	२४।४१	२४।२७
सेस इत्थिभद्दपुत्तस्स जाव अंतं	१२।२७,२८	११।१८२,१८३
सेस जहा अग्गेयीए नवर ख्यगसठिया	१३।५४	१३।५३
सेस जहा असुरकुमाराण जाव अणत्तखुत्तो		
नो च्वे ण देवित्ताए	१२।१४२	१२।१३६
सेस जहा आलभियाए जाव पडिगया	१२।२६	११।१८१
सेस जहा खहुचराण जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
सेस जहा छउमत्थस्स	७।१४८	७।१४६
सेस जहा नेरइयस्स	७।७३	७।६८
सेस जहा पढम जाव पज्जुवासति	१२।१६	१२।२;११।१७८
सेस जहा महासि ताकटए, नवर		
भूयाणदे हत्थिराया जाव रहमुसल संगामं		
ओयाए । पुराओ य मे सक्के देविदे देवराया		
एव तहेंव जाव चिट्ठई	७।१८३-१८६	७।१७४-१७७
सेस जहा सव्वाणभूतिस्स जाव अत	१५।१६५	१५।१६४
सेस जहा सालक्खस्स जाव अंतं	१४।१०४	१४।१०२

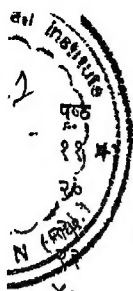
सेसं तं चेव	१४।२०	१४।१८
सेसं तं चेव	१८।१०६	१८।१०८
सेसं तं चेव जाव अंतं	१४।१०६	१४।१०२
सेसं तं चेव जाव करिस्संति	८।८६	८।८८
सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा	८।२४६	८।२४८
सेसं तं चेव जाव वत्तव्व	१२।१६१	१२।१५६
सेसं तं चेव नवरं	११।६८	११।६४
सेसं तं चेव सव्व०	६।१५५	६।१५१
सोइदिए जाव फांसिदिए	१६।१८	२।७७
सोइदियत्ताए जाव फांसिदियत्ताए	१।३४७; ३।१६१	२।७७
सोयणयाए जाव परियावणयाए	७।११४; १।२।५४	७।११४
सोहम्मकप्पउड्डलोगखेत्तलोए		
जाव अच्चुय०	११।६४	अ०सू०१८६
सोहम्मकप्पो जाव कम्मासीविसे	८।६५	८।६५
हता जाव भवइ	३।१४७	३।१४७
हट्ठ जाव हियए	६।१३६; १६४	२।४३
हट्ठ जाव हियया	५।८७; ६।१४०; १४२	२।४३
हट्ठतुट्ठ	१५।२५	२।४३
हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीव जाव कूवे	११।१४८	११।१३४
हट्ठतुट्ठ जाव सद्दवेति	२।६७	२।४२; राय०सू०६६०
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	२।६८; ११।१३४; १५।१३८; १५३; १८।१३८	२।४३
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३।११०; ५।८४; ११।१३३	२।४३
हट्ठतुट्ठे जाव हियए	२।५२	२।४३
हत्थ वा जाव ऊरुं	१६।४६	१६।४६
हत्थ वा जाव ओगाहिता	५।११०	५।११०
हत्थ वा जाव चिट्ठति	५।१११	५।११०
हत्थ वा जाव चिट्ठित्तए	५।१११	५।११०
हत्थ वा जाव पसारेत्तए	१६।११६	१६।११८
हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे	१६।६१	१६।६१
हालाहलाए जाव पासित्ता	१५।६७	१५।८३
हियकामए जाव हिय	१५।६५	१५।६२
हिरणं वा जाव परिभाएउं	११।१६०	११।१५६
हीलेत्ता जाव आकड्ड	३।४५	३।४५
हेऊहि य जाव कीरमाणं	१५।११६	१५।११६
हेऊहि य जाव वागरण	१५।११७	१५।११६

परिशिष्ट—२

पूरकपाठ

(‘नेरइया जाव बेसाणिया’ तथा ‘नेरइया जाव सिद्धा’ का पूरक पाठ)

१. नेरइय
२. असुरकुमार
३. नागकुमार
४. सुवण्णकुमार
५. विज्जुकुमार
६. अग्गिकुमार
७. दीवकुमार
८. उदहिकुमार
९. दिसाकुमार
१०. वायुकुमार
११. थणियकुमार
१२. पुढविकाइय
१३. वाउकाइय
१४. तेउकाइय
१५. वाउकाइय
१६. वणस्सइकाइय
१७. वेइदिय
१८. तेइदिय
१९. चउरिदिय
२०. पच्चिदिय
२१. मणूत्स
२२. बाणमत
२३. जोइसिय
२४. बेसाणिय
२५. सिद्ध



शुद्ध-पत्र

मूलपाठ

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	० भय ०	० भया ०	२६१	५	दीणस्सरा ^१	दीणस्सरा
१७	परिणामेति	परिणामेति	३४०	१४	अणिट्स्सरा ^१	अणिट्स्सरा ^१
१७	मस्साणु	मणुस्सा			तस्स० भयणाए	यह पंक्ति
६	नेरइइ	नेरइए	३४७	१८	१६३ सूत्र	के अत मे है
५	० वउत्ताय	० वउते य	४३७	१०	अणादिय ०	अणादीय ०
६	वट्टमाण	वट्टमाण	५०३	३	माइणे	माहणे
४६	पुट्टं	पुट्ट	५२३	१७	अज्झस्थिए	अज्झस्थिए
३१	वेदेति	वेदेति	५२८	१६	अणुद्वय ०	अणुद्वय ०
४८	उड्डंजाणू	उड्डंजाणू	५७६	१८	सया—	राया—
५१	० द्विति	० द्वितो	७६०	७	उवज्जति	उवज्जति
७७	दुक्तावा	दुक्खा	७७६	२५	० गम्ममण-	० गम्ममाण-
८६	वलय ०	वलय ०	७८७	१३	माग्गा	मग्गा
६३	तोरेइ	तोरेइ	८२१	१४	सव्वट्ठ	सव्वट्ठ
१०३	० सुद्धि ०	० मुद्धि ०	६२०	१२	सजय	सजम
१०३	० वासेहि	० वासेहि			महिदाण	—महिदाण
१०४	विउलस्य	विउलस्य	पृष्ठ	पंक्ति	पाठांतर	
११७	घम्मत्थि ०	घम्मत्थि ०	१६	२	अशुद्ध	शुद्ध
१२८	जारिसिया	तारिसिया	२६	५	परित्थणो ०	परित्थणे ०
१३७	ठिच्चा	ठिच्चा	३६	१०	अणू ०	अणू
१४४	जंजूदीवे	जवूदीवे	८६	११	अते	अत
१४७	जाव	जाव ४	६३	२	० भोति	० भोती
१४७	न० ४, ५, ६ नं० ५, ६, ७		६८	६	(७१३)	(७१३)
१४७	जाव ७	जाव	१००	४	मणुस्सा	मणुस्सा
१५१	अमुररणो	अमुररणो	१०३	१२	अहियजिय	अहियजिय
१५७	सहत्थ ०	सहत्थ ०	११२	१	त्रयुक्ता	तयुक्ता
१६३	गमित्तए	गमित्तए	११२	६	० द्वयोवर्नयो ०	द्वयोवर्नयो ०
१७४	उड्डावाया	उड्डावाया	१४४	१२	चउव्वीसाए	चउव्वीसाए
१७७	पलिअ	पलिअोवमं	१६०	३	एतद्वर्णन ... सन्निभि	एतद्वर्णन ... सन्निभि
८४	० जोयसणसय-	० जोयणसय-	१८६	१	दितिय	तितिय
८५	हस्साइं	सहस्साइं	२००	४ प० १	व्मायु	० मायु
८५	-वग्गणायण ०	-वग्गणाठाण ०	२००	४	हरिणगेमेसि	जेगमेसि
६१	वि, तथा	तथा	२१०	६, १-६	वर्चानायो:	वर्चनयो
६१	० समुहस्स	० समुहस्स	४८५	२	१-१०	६, १-६
०६	२२, २४, २५ नं० ६, ७, ८	नं० ७, ८, ९	५१६	११	प्रमो ०	प्रथमो ०
			८६५	३	पडिबुद्ध	पडिबुद्धा
					० षठ	षष्ठ ०

